चिकित्सा-चन्द्रोदय

पाँचवाँ भाग

लेखक

बाबू हरिदास वैद्य

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी

मुद्रक

सत्यपाल शर्मा,

कान्ति प्रेस, माईथान-आगरा।

सन् १९३४ ई०

तीसरी बार } २००० { अजिल्द का मूल्य ५)
सजिल्द का मूल्य ५॥)

भक्तवत्सल आनन्दकन्द भगवान् कृष्णचन्द्रको अनेकानेक धन्यवाद हैं कि, उनकी असीम दयासे, आज, चिकित्सा-चन्द्रोदयके सातों भागोंकी क़दर हिन्दी-भापा-भाषी संसारमें आशातीत हो रही है। सचमुच ही मुझे उम्मीद नहीं थी कि, यह ग्रन्थ भी "स्वास्थ्यरक्षा" की तरह भारतकी रामायण हो जावेगा। आज चिकित्सा-चन्द्रोदयके ५ वें भागका तीसरा संस्करण, अपने जीवनमे ही, होते देखकर मेरे आनन्दका पारावार नहीं है। इस ग्रन्थके पहले, तीसरे, चौथे, छठे प्रभृति भागोके भी तीसरे और चौथे संस्करण हो रहे हैं। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि इस भागको मैं परिवर्द्धित करता, पर अचानक मेरे एकमात्र उत्तराधिकारी, तीन सालके, चिरञ्जीव राजेन्द्रकुमारके सख़्त बीमार हो जानेकी वजहसे, मैं इच्छा होने पर भी इस कामको न कर सका। क्या करूँ, दिल नहीं लगता। विना चित्तकी एकाग्रताके यह काम होते नहीं। हिन्दी-भाषा-भाषी दुनियासे मेरी विनीत प्रार्थना है कि, वह मेरी लिखी पुस्तकोको जिस चाव और शौकसे अब तक ख़रीद कर मेरा उत्साह बढ़ाती रही है, उसी चाव और शौक़से मेरे नन्हेसे उत्तराधिकारीको भी उत्साहित करके, मेरी आत्माको परलोकमे भी ऐहसानमन्द करती रहेगी। विशेष छठे भागमे निवेदन करूँगा, जो १०।१५ दिनमे ही प्रेससे आउट होने वाला है। मैं चाहता हूँ, मेरी किताबोंके सच्चे प्रेमी पाठक मेरे छोटेसे उत्तराधिकारी राजेन्द्रको, उसके शतायु होनेका, आशीर्वाद देकर मुझे ममनून और मशकूर करेंगे।

निवेदक

मथुरा २६-११-१६२४.

हरिदास वैद्य।

निवेदन।

जगदाधार, जगदात्मा श्रीकृष्णचन्द्रको अनन्त धन्यवाद हैं, कि सैकड़ों विघ्न-वाधा और आपदाओंके होते हुए भी आज "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पाँचवें भागको उन्होंने पूरा करा दिया। हिन्दी-प्रेमी पाठकोंको भी हार्दिक धन्यवाद है, जिनकी क़द्रदानी और उत्साहवर्द्धनसे हम अपना धन और समय लगा कर इस ग्रन्थके भाग-पर-भाग निकाल रहे हैं। अगर पवलिककी रुचि न होती, उसे यह ग्रन्थ न रुचता, पसन्द न आता, तो हम इस ग्रन्थका दूसरा भाग निकाल कर ही रुक जाते। पर पहले और दूसरे भागके, वारह महीनोंमें ही, नवीन संस्करण छप जानेसे मालूम होता है कि, पवलिकने इस ग्रन्थको पसन्द किया है। अगर सर्वसाधारणकी ऐसी ही कृपा रही, तो इसके शेष तीन भाग भी शीघ्र ही निकल जायँगे।

इस भागमें हमारा विचार, आयुर्वेदके और ग्रन्थोंकी तरह, क्रम से श्वास, खाँसी, हिचकी आदि लिखनेका था, पर हज़ारों ग्राहकोंमें से कितनों ही ने लिखा कि, पाँचवें भागमें स्थावर और जंगम विष-चिकित्सा लिखिये। हमारे युक्तप्रान्तमें ही और ज़हरीले जानवरोंके अलावः केवल सर्पके काटनेसे गतवर्ष प्रायः सत्तावन हज़ार आदमी कालके कराल गालमें समा गये। कितने ही गाँवोंके लोग विच्छुओं, कनखजूरों और मैंडक, छिपकली आदिके काटनेसे कष्ट भोगते और बहुधा मर भी जाते हैं। कितने ही ग्राहकोंने लिखा, कि आप इस भागमें स्त्रियोंके रोगोंकी चिकित्सा लिखिये। आजकल जिस तरह ९९ फी सदी पुरुषोंको प्रमेह-राक्षसने अपने भयानक चंगुलोंमें फँसा रखा है; उसी तरह स्त्रियाँ प्रदर रोग, सोम रोग और बहुमूत्र आदि

रोगोंकी शिकार हो रही हैं। अनेकों स्त्रियोंको मासिक धर्म समयपर और ठीक नहीं होता, अनेक रमणियाँ गर्भाशयमें दोष हो जानेसे सन्तानके लिये तरसती और ठगोको ठगाकर घरका धन और इज्ज़त-हुर्मत नष्ट करती हैं और अनेकों स्त्रियाँ प्रदर आदि रोगोसे ग्रसित होने और आयुर्वेदके नियम न पालनेकी वजहसे क्षय रोगके फन्देमें फँस कर, छोटी उम्रमें ही परमधाम की यात्रा करती हैं।

यद्यपि इस भागमें स्थावर-जंगम विष-चिकित्सा और स्त्री-रोग-चिकित्सा लिखनेसे हमारा क्रम विगड़ता था, पर हमें ग्राहकोंकी सलाह पसन्द आगई। मनमें सोचा, ज़िन्दगीका भरोसा नही, आज है कल न रहे। श्वास, खाँसी, वातरोग आदिककी चिकित्साके लिए तो वहुतसे वैद्य-डाक्टर मिल जायँगे; पर सर्प आदिसे जान बचानेके लिए ग़रीबोको सद्वैद्य कहाँ मिलेंगे? ग़रीब ग्रामीणोंकी स्त्रियाँ जो प्रदर आदि रोगो और यक्ष्मा या क्षय आदिसे असमय या भर-जवानी में ही मर जाती है, अपनी निर्धनताके मारे किन वैद्य-डाक्टरोसे इलाज कराकर जान बचायेंगी? अतः इन्ही रोगों पर लिखना उचित होगा।

हमने इस भागके तीन खण्ड किये हैं। पहले खण्डमें "स्थावर विष-चिकित्सा" लिखी है। दूसरे खण्डमें "जंगम विष-चिकित्सा" लिखी है। उसमें अफीम, संखिया आदि नाना प्रकारके विषों के नाश करनेकी तरकीबें मय उनकी पहचान आदिके लिखी गई हैं और इसमें सर्प, बिच्छू, कनखजूरे, मैंडक, छिपकली, बर्र, ततैया, मक्खी, मच्छर आदि प्रायः सभी जहरीले जीवों के काटनेकी चिकित्सा लिखी है। जो लोग थोड़ी भी हिन्दी जानते होंगे, वे इन खण्डोंको पढ़-समझ कर अनेको प्राणियोंको अकाल मृत्युसे बचा सकेंगे। अगर प्रत्येक गाँवमें इस भागकी एक-एक प्रति भी होगी, तो बहुतों की जीवन-रक्षा होगी। हमने विष चिकित्सापर समस्त प्राचीन और अर्वाचीन ग्रन्थोको मथ कर, कौड़ियोंमें तैयार होनेवाले और समय

पर अक्सीरका काम करनेवाले अचूक नुसख़े लिखे हैं। दिहाती लोग, बिना एक पैसा भी ख़र्च किये, सब तरहके विषैले जानवरोंसे अपनी जीवन-रक्षा कर सकेंगे।

तीसरे खण्डमें स्त्रियोंके प्रायः सभी रोगोंके निदान-कारण, लक्षण और चिकित्सा खूब समझा-समझाकर विस्तारसे लिखी है। एक-एक बात आगे पीछे तीन-तीन जगह लिखनेकी भी दरकार समझी है, तो तीन ही जगह लिखी है, विद्वान् लोग पुनरुक्ति-दोष बतलायेंगे, इसकी परवा नहीं की है। पाठकोंको सुभीता हो, वही काम किया है। इस खण्डमें पहले प्रदररोग और साम रोगके निदान लक्षण और चिकित्सा लिखी है। उसके बाद योनिरोगों और मासिक धर्मकी चिकित्सा लिखी है। उसके भी बाद बाँझके दोष नष्ट होकर, बन्ध्याके पुत्र होने की अपूर्व्व तरकीबें लिखी हैं और गर्भ गिराने या मरा बच्चा पेटसे निकालने, योनिदोष निवारण करने, मूढ़गर्भ निकालने, प्रसूताकी चिकित्सा करने, धायका दूध शुद्ध करने और बढ़ानेके अत्युत्तम उपाय लिखे हैं। जो लोग जरा भी ध्यान देंगे, वे आसानीसे स्त्रियोंको रोगमुक्त करके उनके आशीर्व्वाद-भाजन होंगे। जिनके सन्तान नहीं होती, जो पुत्र पानेके लिए मारे मारे फिरते हैं, उनके सहजमें पुत्र होंगे। स्त्रियाँ सहजमें, बिना बहुत तकलीफके बच्चे जन सकेंगी।

इसी खण्डमें हमने राजयक्ष्माके भी निदान लक्षण और चिकित्सा विस्तारसे लिखी है, क्योंकि इस मूंजी रोगसे हमारे देशके लाखों स्त्री-पुरुष बे-मौत मरते हैं। जब यह रोग बढ़ जाता है, करोड़ो खर्च करनेवाले सेठ साहूकार और राजा महाराजा भी अपने प्यारोंको बचा नही सकते। जो लोग इस खण्डको पढ़ेंगे, वे रोगके कारण जान जाने से सावधान हो जायँगे और जिन्हें यह रोग होगा, वे सहजमें अपना इलाज आप कर सकेंगे। यद्यपि इस रोगका इलाज सद्वैद्यसे ही कराना चाहिये, पर जो वैद्य-डाक्टरको बुला नही सकते, दवाके लिए चार पैसे भी ख़र्च कर नहीं सकते, वे कौड़ियोंकी दवा, जंगलकी

जड़ी-बूटी, घरका दूध, घी और दवा मात्र सेवन करके अपने तईं रोग-मुक्त कर सकेंगे।

इस भागमें रोगोंका सिलसिला ठीक नहीं है एवं अवकाश न मिलने और आफ़तमें फँसे रहनेके कारण अनेकों दोष भी रह गये हैं, उनके लिए पाठक हमें क्षमा प्रदान करेंगे। अगर हम अपनी ज़िन्दगीमें इस ग्रन्थको पूरा कर सके, तो शेषमें हम इसकी एक कुञ्जी (Key) भी बनायेंगे। जो बातें इन भागोमें छूट गई हैं, उन सबपर उसमें लिखा जायगा। उस कुञ्जीके होनेसे जो ज़रा-बहुत संशय खड़ा हो जाता है, वह भी मिट जायगा। यद्यपि वह कुञ्जी तीन चार सौ पृष्ठोंसे कम की न होगी, पर उसे हम ग्राहकोंको धेली आठ आना लागत-ख़र्च लेकर ही दे देंगे। उसमें एक कौड़ी भी नफा न लेंगे।

यद्यपि यह ग्रन्थ पूर्ण वैद्योके लिए नहीं है, फिर भी सैकड़ों वैद्य-शास्त्री और आयुर्वेद केसरी आदि इसे बड़े शौकसे ख़रीद रहे हैं। उन्हें ऐसे 'भाषा'के ग्रन्थ देखनेकी ज़रूरत नहीं। हम समझते हैं, वे साधारण लोगोंके उपकारके लिए या हमारा उत्साह बढ़ानेके लिए ही इसे ख़रीद रहे हैं। अतः हम उन्हें धन्यवाद देकर, उनसे सविनय प्रार्थना करते हैं कि, वे जहाँ कोई त्रुटि देखें, उसे दया कर हमें लिख भेजें। क्योंकि एक आदमीके जल्दीके किये काममें अनेको दोष रह जाते हैं और इस ग्रन्थमें भी अनेकों दोष होंगे। कितनी ही जगह तो अर्थका अनर्थ हुआ होगा। यद्यपि इस ग्रन्थकी आयको हम खाते हैं, तथापि उदारहृदय सज्जन इस बातकी पर्वा न करके, इस ग्रन्थके दोष दूर करानेमें हमारी सहायता करके अक्षय पुण्य और धन्यवादके पात्र होंगे। दोषपूर्ण होने पर भी, इस ग्रन्थसे पबलिकका बड़ा उपकार हो रहा है और होगा, यह जानकर हमें बड़ी खुशी है, पर यदि यह ग्रन्थ परोपकार-परायण विद्वानोंकी सहायतासे निर्दोष या दोषरहित हो जायगा, तो कितना उपकार होगा और हमारी खुशीका

टेम्परेचर कितना ऊँचा चढ़ जायगा, यह लिखकर बता नहीं सकते। इस भागमें सैकड़ों नये-पुराने ग्रन्थोंके सिवा, "वैद्यकल्पतरु" अहमदाबाद और "हमारी शरीर रचना" से दो एक जगह काम लिया गया है। अतः हम उनके लेखक और प्रकाशक दोनोंका तहेदिलसे शुक्रिया अदा करते हैं।

जो लोग यह समझते है कि, इस ग्रन्थके प्रकाशक इसके भाग-पर-भाग निकाल कर मालामाल होना चाहते हैं, उनकी ग़लती है। हम यह नहीं कह सकते, कि हम इसकी आमदनीसे अपना काम नहीं चलाते। ऐसा कहना वृथा असत्य भाषण करना है। "एक पन्थ दो काज" की कहावत-अनुसार, हमारा उद्देश पबलिककी सेवा करना, आयुर्वेद-प्रेम बढ़ाना, देशका पैसा बचवाना और साथ ही अपनी गुज़र करना है। काम हम यह करेंगे, तो खायेंगे किसके घर? भाग-पर-भाग हम अपनी आमदनी बढ़ानेके लिए नही निकाल रहे हैं। यह विषय ही ऐसा है, कि इसे जितना ही बढ़ाओ बढ़ सकता है और जितनाही विस्तारसे लिखा जाता है, उतनाही लाभदायक सिद्ध होता है। हम क्या लिख रहे हैं, होमियोपैथीमें एक एक रोगके निदान लक्षण और चिकित्सा सैकड़ों ही पेजों में है। अगर पाठक आफ़त ही कटवाना चाहते हैं, तो फिर हमसे इसके लिखवानेकी क्या दरकार? क्या ग्रन्थोंका अभाव है? इस ग्रन्थमें कुछ भी नूतनता और सरलता तो होनी चाहिये।

निन्न्यानवे फी सदी ग्राहक "चिकित्सा-चन्द्रोदय" की क़ीमतपर ज़रा भी आपत्ति नहीं करते, पर चन्द मिहरबान ऐसे भी हैं जो लिखा करते हैं, कि आपने क़ीमत ज़ियादा रक्खी है। हमारे ऐसे समझदार ग्राहकों को समझना चाहिये, कि इस राजनगरीमें सब तरहके ख़र्च बहुत ज़ियादा हैं। अगर हम इतनी क़ीमत भी न रखें, जोशमें आकर, अख़बारी प्रशंसा लाभ करनेके लिये, हिन्दीके सच्चे सेवककी पदवी प्राप्त करनेके लिये, एकदम कम मूल्य रखें, तो अन्तमें हमें फेल होना

पड़ेगा, काम बन्द कर देना होगा। जिन लोगोंने ऐसा किया है, वे हिन्दी-सेवासे रिटायर हो गये और जो ऐसा कर रहे हैं, उनको भी एक न एक दिन टाट उलटना ही पड़ेगा। परमात्मा हमें इन बातोंसे बचावे, हमारी इज़्ज़त-आबरू बनाये रक्खे!

बहुतसे पाठक, उकताकर लिखते हैं—"आपने यह ग्रन्थ लिखकर बड़ा उपकार किया है। ग्रन्थ निस्सन्देह सर्वाङ्ग सुन्दर है। हमने इससे बहुत लाभ उठाया है। इसके नुसख़ोंने अच्छा चमत्कार दिखाया है। पर एक-एक भाग निकालना और उसके लिये चातककी तरह टक-टकी लगाये राह देखना अखरता है। मूल्यकी परवाह नहीं, आप जल्दी ही सब भाग ख़तम कीजिये इत्यादि।" हमारे ऐसे प्रेमी और उतावले ग्राहकोंको यह समझकर, कि जल्दीमें काम ख़राब होता है और आयुर्वेद बड़ा कठिन विषय है, इसका लिखना बालकोंका खेल नहीं, ज़रा धैर्य रखना चाहिये और देरके लिये हमें कोसना न चाहिये।

अगले छठे भागमें हम रक्तपित्त, खाँसी, श्वास, उदररोग, वायु-रोग आदि समस्त रोगोंके निदान, लक्षण और चिकित्सा विस्तारसे लिखेंगे और जगदीश कृपा करे, तो प्रायः सभी रोगोंको उस भागमें ख़तम करेंगे। सातवें और आठवें भागोंमें औषधियोंके गुण रूप वग़ैरः मय चित्रोंके लिखेंगे। यह भाग चाहे ग्राहकोंको पसन्द आ जाय और निश्चय ही पसन्द होगा, इससे उनका काम भी खूब निकलेगा और हज़ारों प्राणी कष्ट और असमयकी मौतसे बचेंगे, इसमें शक नहीं, पर हमें इसमें अनेकों त्रुटियाँ दीखती हैं। अतः आयन्दः हम जल्दीसे काम न लेंगे। पाठकोंसे भी कर जोड़ विनय है कि, छठे भागके लिये धैर्य धरें, अगर इस दफ़ाकी तरह विघ्न-बाधायें उपस्थित न हुईं, ईश्वरने कुशल रक्खी और वह सानुकूल रहे तो छठा भाग पाँच-छै महीनोंमें ही निकल जायगा। एवमस्तु।

विनीत—

हरिदास।

मेरी राम कहानी

अपने दोष-अदोषों, अपने गुण-अवगुणों, अपनी कमज़ोरियों और ख़ामियों, अपनी अल्पज्ञता और बहुज्ञता एवं अपनी विद्वत्ता और अविद्वत्ता प्रभृतिके सम्बन्धमें मनुष्य जितना खुद जानता और जान सकता है, उतना दूसरा कोई न तो जानता ही है और न जान ही सकता है। मैं जब-जब अपने सम्बन्धमें विचार करता हूँ, अपने गुण-दोषोंकी स्वयं आलोचना करता हूँ, तब-तब इस नतीजे पर पहुँचता हूँ, कि मैं प्रथम श्रेणीका अज्ञानी हूँ। मुझमें कुछ भी योग्यता और विद्वत्ता नहीं। जब मुझे अपनी अयोग्यताका पूर्ण रूपसे निश्चय हो जाता है, तब मुझे अपनी "चिकित्साचन्द्रोदय" जैसे उत्तरदायित्व-पूर्ण ग्रन्थ लिखनेकी धृष्टता पर सख़्त अफसोस और घर-घरमें उसका प्रचार होते देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। मेरी समझमें नहीं आता, कि मेरे जैसे प्रथम श्रेणीके अयोग्य लेखक और आयुर्वेदके मर्मको न समझने वालेकी क़लमसे लिखी हुई पुस्तकोंका अधिकांश हिन्दी भाषा-भाषी जनता इतना आदर क्यों करती है? अङ्गरेज़ी विद्याके धुरन्धर पण्डित—आजकलके बाबू और बड़े-बड़े जज, मुन्सिफ, वकील और प्रोफेसर प्रभृति, जो हिन्दीके नामसे भी चिढ़ते हैं, हिन्दीको गन्दी और ख़ासकर वैद्यक-विद्याको जंगलियोंकी अधूरी विद्या समझते हैं, इस आयुर्वेद-सम्बन्धी ग्रन्थको इतने शौक़से क्यो अपनाते और अगले भागोंके लिये क्यों लालायित रहते हैं? मैं घण्टों इसी उलझनमें उलझा रहता हूँ, पर यह उलझन सुलझती नहीं, समस्या हल होती नहीं।

पाठक ! आप ही विचारिये, अगर पंखहीन उड़ने लगे, पंगु दौड़ने लगे, नेत्रहीन देखने लगे, बहरा सुनने लगे, गूँगा बोलने लगे, मूक व्याख्यान फटकारने लगे और निरक्षर लिखने लगे, तो क्या आपको अचम्भा न होगा ?

मेरे जैसे आयुर्वेदकी ए बी सी डी भी न जानने वाले विद्या-बुद्धि-हीन धीठ लेखककी लिखी हुई "स्वास्थ्यरक्षा" और "चिकित्साचन्द्रोदय" आदि पुस्तकोंको पबलिक इतने चावसे क्यों पढ़ती है ? इस नगण्य लेखककी लिखी हुई पुस्तकोंका प्रचार भारतके घर-घरमें, रामायणकी तरह, क्यों होता जा रहा है ? हिन्दी और आयुर्वेदको नफ़रतकी नज़रसे देखने वाले आधुनिक बाबू, जज, डिप्टी कलक्टर, तहसीलदार, मुन्सिफ, सदर आला, स्टेशनमाष्टर और एम० ए०, बी० ए०, की डिग्रियो वाले ग्रेजुएट प्रभृति इस तुच्छ लेखककी लिखी हुई "चिकित्साचन्द्रोदय" और "स्वास्थ्यरक्षा" को बड़े आदर-सम्मान और इज़्ज़तकी नज़रसे क्यों देखते हैं ? इन प्रश्नोंका सही उत्तर निकालनेकी कोशिश में, मैं कोई बात उठा नहीं रखता, पर फिर भी जब मैं इन सवालोंका ठीक जवाब निकाल नहीं सकता, इन सवालोंको हल कर नहीं सकता, तब मेरा अन्तरात्मा—कॉन्शेन्स कहता है—इन ग्रन्थोंकी इतनी प्रसिद्धि, इतनी लोक-प्रियता और इज़्ज़तका कारण तेरी योग्यता और विद्वत्ता नहीं, वरन जगदीशकी कृपामात्र है।

अन्तरात्माका यह जवाब मेरे दिलमें जँच जाता है, मेरी उलझन सुलझ जाती है और मुझे राईभर भी संशय नहीं रहता। अगर मैं विद्वान् होता, शास्त्री या आचार्य्य-परीक्षा-पास होता, आयुर्वेद मार्त्तण्ड या आयुर्वेद पञ्चानन प्रभृति पदवियोंको धारण करने वाला होता, तो कदाचित मुझे अन्तरात्माकी बात पर सन्देह होता। इस लम्बी-चौड़ी प्रसिद्धि और लोकप्रियताको अपनी योग्यता और विद्वत्ताका फल समझता, पर चूँकि मैं अपनी अयोग्यताको अच्छी तरह जानता हूँ,

इसलिये मुझे मानना पड़ता है, कि यह सब उन्हीं अनाथनाथ, असहायों के सहाय, निरावलम्बोंके अवलम्ब, दीनबन्धु, दयासिन्धु, भक्तवत्सल, जगदीश—कृष्णकी ही दयाका नतीजा है, जो नेत्रहीनको सनेत्र, गूँगे को वाचाल, मूर्खको विद्वान्, अल्पज्ञको बहुज्ञ, असमर्थको समर्थ, कायरको शूर, निर्धनको धनी, रङ्कको राव और फ़क़ीरको अमीर बनानेकी सामर्थ्य रखते हैं।

हमारे जिन भारतीय भाइयों और अँगरेज़ी-शिक्षा-प्राप्त बाबुओंको देवकीनन्दन, कंसनिकन्दन, गोपीवल्लभ, व्रजविहारी, मुरारि, गिरवर-धारी, परम मनोहर, आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्रपर विश्वास न हो, जो उन्हें महज़ एक ज़बर्दस्त आदमी अथवा एक शक्तिशाली पुरुषमात्र समझते हों, उनके सर्वशक्तिमान जगदीश होने में सन्देह करते हों, वे अब से उनपर विश्वास ले आवें, उन्हे जगदात्मा परमात्मा समझें, उनकी सच्चे और साफ दिलसे भक्ति करें और हाथो-हाथ पुरस्कार लूटें। कम-से-कम मेरे ऊपर घटनेवाली घटनाओंसे तो शिक्षा लाभ करें। मैं नकटोकी तरह अपना दल बढ़ानेकी ग़रज़से नहीं, वरन अपने भाइयोंके सुख शान्तिसे जीवनका बेड़ा पार करनेकी सदिच्छा से अपबीती सच्ची बातें यदाकदा कहा करता हूँ। जो शुद्ध अशुद्ध मंत्र मुझे आता है, जिससे मुझे स्वयं लाभ होता है, उसे अपने भाइयोको बता देना मैं बड़ा पुण्य-कार्य समझता हूँ। पाठको! मैं आपसे अपनी सच्ची और इस जीवनमें अनुभव की हुई बातें कहता हूँ। जो सरल, शुद्ध और संशय-रहित चित्तसे जगदात्मा कृष्णको जपते हैं, उनकी भक्ति करते हैं, उनको हर समय अपने पास समझ कर निर्भय रहते हैं, अभिमानसे कोसों दूर भागते है, किसी का भी अनिष्ट नहीं चाहते, अपने सभी कामोको उनका किया हुआ मानते हैं, अपने तईं कुछ भी नहीं समझते, घोर संकट कालमें उनको ही पुकारते और उनसे साहाय्य-प्रार्थना करते हैं, भक्तभयहारी कृष्ण-

-मुरारि उनको क्षणभरके लिये भी नहीं त्यागते, उनको प्रत्येक संकट से वचाते, उनके विपद्के बादलोंको हवाकी तरह उड़ा देते हैं, उनकी -मदद्के लिये, लक्ष्मीको त्याग कर क्षीर सागरसे नंगे पैरों दौड़े आते हैं। मैंने जो बातें कही हैं, वे राई-रत्ती सच हैं। इनमें ज़रा भी संशय नहीं। अगर दो और दो के चार होने में सन्देह हो सकता है, तो मेरी इन बातोंमें भी सन्देह हो सकता है।

एक घटनाके सम्बन्धमें, मैं "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भागमें लिख ही चुका हूँ। उसी घटनाको बारम्बार दुहराना, पिसेको पीसना और विद्वानोको अप्रसन्न करना है, पर क्या करूँ जिस घटनासे कृष्णका सम्बन्ध है उसे एक बार, दो बार, हज़ार बार और लाखों-करोड़ों बार सुनानेसे भी मनको सन्तोष नहीं होता। इसके सिवा, उन्ही कृष्णकी प्रेरणासे मेरे साथ अभूतपूर्व भलाई करने वाले, मुझे अभयदान देनेवाले सज्जनोको बारम्बार धन्यवाद दिये बिना भी मेरी आत्माको शान्ति नही मिलती, इसीसे अपनी लिखी हर पुस्तक में मै इस गानको गाया करता हूँ। सुनिये पाठक! भारतके अभूतपूर्व वायसराय और गवर्नर जनरल लार्ड चेम्सफर्ड महोदय जैसे प्रसिद्ध सङ्गदिल बड़े लाटने जो मेरे जैसे एक तुच्छ जीवपर अभूतपूर्व कृपा की, वह सब क्या था? वह उन्ही कृष्णकी कृपाका फल था। उन्ही जगदात्माकी इच्छासे वायसराय मेरे लिये मोमसे भी नर्म हुए। उन्हींकी मर्ज़ीसे वे मुझपर सदय हुए। उन्हीकी इच्छासे, उन्होने मुझे घोर संकटसे बड़ी ही आसानीसे बचा दिया। इसके लिये मैं जगदीशका तो कृतज्ञ हूँ ही, पर साथ ही वायसराय महोदयकी दयालुताको भी भूल नही सकता। परमात्मा करें, हमारे भूतपूर्व वायसराय लार्ड चेम्सफर्ड महोदय और बंगालके लाटके भू० पू० प्रायवेट सेक्रेटरी मिस्टर गोरले महोदय एम० ए०, सी० आई० ई०, आई० सी० ऐस० चिरजीवन लाभ करते हुए जगदीशकी उत्तम से उत्तम न्यामतोंको भोगें।

यह घटना तो अब पुरानी हो चली, इसे हुए दो साल बीत गये। पाठक! अब एक नयी घटनाकी बात भी सुनें और उसे पागलोंका प्रलाप या मूर्ख बकवादीकी थोथी बकवाद न समझ कर, उसपर ग़ौर भी करें।—

अभी गत नवम्बरमें, जब मैं इस पञ्चम भागका प्रायः आधा काम कर चुका था, मेरी घरवाली सख्त बीमार हो गयी। इधर बच्चा हुआ, उधर महीनोंसे आनेवाले पुराने ज्वरने ज़ोर किया। आँव और खूनके दस्तोंने नम्बर लगा दिया, मरीज़ाकी ज़िन्दगी ख़तरेमें पड़ गई। मित्रोंने डाक्टरी इलाजकी राय दी। कलकत्तेके नामी-नामी तजुर्बेकार डाक्टर बुलाये गये। इलाज होने लगा। घण्टे-घण्टे और दो-दो घण्टेमें नुसख़े बदले जाने लगे। पैसा पानीकी तरह बखेरा जाने लगा; पर नतीजा कुछ नहीं—सब व्यर्थ। "ज्यों-ज्यो दवाकी मर्ज़ बढ़ता गया" वाली कहावत चरितार्थ होने लगी। न किसीसे बुख़ार कम होता था और न दस्त ही बन्द होते थे। अच्छे-अच्छे एम० डी० डिग्रीधारी वलायत और अमेरिकासे पास करके आये हुए पुराने डाक्टर दवाओंपर दवाएँ बदल-बदलकर किं कर्त्तव्य विमूढ़ हो गये। उनका दिमाग़ चक्कर खाने लगा। किसीने माथा खुजलाते हुए कहा—"अजी! पुराना बुख़ार है, ज्वर हड्डियोंमें प्रविष्ट हो गया है, यकृतमें सूजन आ गई है। हमने अच्छी-से-अच्छी दवाएँ तजवीज की, ऐक्सपर्टोंसे सलाहें भी लीं, पर कोई दवा लगती ही नहीं, समझमें नहीं आता क्या करें।" किसीने कहा—"अजी! अब समझे, यह तो एनीमिया है, रोगीमें खूनका नाम भी नहीं, नेत्र सफेद हो गये हैं, हालत नाज़ुक है, ज़िन्दगी ख़तरेमें है। खैर, हम उद्योग करते हैं, पर सफलताकी आशा नहीं—अगर जगदीशको रोगिणीको जिलाना मंजूर है अथवा मरीज़ाकी ज़िन्दगीके दिन बाक़ी है, तो शायद दवा लग जाय।" बस, कहाँ तक लिखें, बड़े-बड़े डाक्टर आकर मरीज़ाकी नब्ज़ देखने, स्टेथस-

कोपसे लंग्ज़ वगैरःकी जाँच करते, नुसख़ा लिखते और आठ-आठ, सोलह-सोलह एवं बत्तीस-बत्तीस रुपया जेबके हवाले करके चलते बनते। यह तमाशा देख हमारी नाकों दम आगया। एक तरफ तो अनाप-शनाप रुपया व्यर्थ व्यय होने लगा; दूसरी ओर गृहिणीके चल बसनेसे घरकी क्या दशा होगी, छोटे-छोटे चार बच्चे किस तरह पलेंगे, इस चिन्ताने हमें चूर कर दिया। हम खुद भी मरीज़ बन गये। बीच-बीचमें, जब कभी हम निराश होकर डाक्टरी इलाज त्यागकर अपना इलाज करना चाहते, हमारे ही आदमी हमपर फबतियाँ उड़ाते, हमें अव्वल नम्बर का माइज़र या कंजूस मक्खीचूस कहते। इसी लिहाज़से हम डाकृरों को न छोड़ सके। अन्तमें होमियोपैथीके एक सुप्रसिद्ध और अद्वितीय चिकित्सक भी आये। उन्होंने भी अपने सब तीर चला लिये। जब उनके तरकशमें कोई भी तीर रह न गया तब एक दिन सन्ध्या-समय वह भी सिर पकड़कर बैठ गये। उस दिन रोगीकी हालत अब-तब हो रही थी।

हमारी, मरीज़ाकी या छोटे-छोटे बच्चोंकी खुशक़िस्मतीसे, उसी दिन हमारे पूज्यपाद माननीय वयोवृद्ध पण्डितवर कन्हैयालालजी वैद्य सिरसावाले, रोगिणीकी ख़बर पूछनेके लिए तशरीफ ले आये। आप रोगिणीको देख-भालकर इस प्रकार कहने लगे—"बेशक मामला कराग है, ज्वर पुराना है, अतिसार भी साथ है, ज्वर धातुगत हो गया है, शरीरमें पहले ही बल और मांस नहीं है, फिर अभी १० दिन की जच्चा होनेसे कमज़ोरी और भी बढ़ गई है। ईश्वर चाहता है, तो ज़मीनमें लिया हुआ मनुष्य भी बच जाता है, पर मुझे आप पर सख़्त गुस्सा आता है। अफसोस है कि, आप आयुर्वेदमें इतनी गति रखकर भी, डाक्टरोंके जालमें बुरी तरह फँस रहे हो! मालूम होता है, आपके पास रुपया फालतू है, इसीसे निर्दयताके साथ उसे फेंक रहे हो। डाक्टर तो जवाब दे ही चुके। कहिये, और कोई नामी ग्रामी डाकृर बाक़ी है? अगर है, तो उसे भी बुला लीजिये। मगर अब देर

करना सिरपर जोखिम लेना है। अगर आप हमारी बात मानें तो मरीज़ा का इलाज बतौर ट्रायलके तीन दिन स्वयं करें, नहीं तो हमारे हाथमें सौंपें। मैं आपकी इस कार्रवाईसे मन-ही-मन बहुत कुढ़ता हूँ। आप तो आजकल कई दिनसे कटरेमें आते ही नहीं। मैं नित्य आपके आफिसमें जाकर, बा० बद्रीप्रसाद जीसे समाचार पूछा करता हूँ। वह कहते हैं, आज सवेरे फलाँ डाक्टर आया था, दोपहर को फलाँ आया और अब बाबू रामप्रताप जी अमुकको लेने गये हैं, तब मेरे शरीरका खून खौल उठता है। आज मैं बहुत ही दुखी होकर यहाँ आया हूँ। मित्रवर! अपने आयुर्वेदमें क्या नहीं है? आप काञ्चनको त्याग कर काँचके पीछे भटक रहे हैं!" पण्डितजीका तत्वपूर्ण उपदेश काम कर गया, सबके दिलोंमें उनकी बात जँच गई। रोगिणीने हमारी चिकित्साके लिये इशारा किया। बस, फ़िर क्या था, हम जगदीशका नाम ले कर, इष्टदेव कृष्णके सुपरविज़नमें, चिकित्सा करने लगे।

अब हम अपने वैद्य-विद्या सीखनेके अभिलाषियोके लाभार्थ यह बता देना अनुचित नहीं समझते, कि मरीज़ाको मर्ज़ क्या था और उन्हें किन-किन मामूली दवाओंसे आराम हुआ। यद्यपि जो आयुर्वेद के धुरन्धर विद्वान्, प्राणाचार्य या भिषक्श्रेष्ठ हैं, उन्हें इन पंक्तियोंसे कोई लाभ होनेकी सम्भावना नहीं, उनका अमूल्य समय वृथा नष्ट होगा, पर चूँकि हमारा यह ग्रन्थ बिल्कुल नौसिखियोंके लिये, आयुर्वेद का ककहरा भी न जानने वालोंके लिये लिखा जा रहा है; अत इस अनुभूत चिकित्सासे उन्हें लाभकी सम्भावना है, क्योंकि ऐसे ही इलझे हुए रोगियो या पेचीदा केसोंको देखने-सुननेसे चिकित्सा सीखने वाले अनुभवी बनते हैं। ये बातें कहीं-कहीं पर बड़ा काम दे जाती हैं।

रोगिणीको गर्भावस्थामें ही ज्वर होता था। वह होमियोपैथी दवा पसन्द करती हैं, अतः उन्हें वही दवा दी जाती और ज्वर दब जाता था। महीनेमें चार बार ज्वर आता और आराम हो जाता।

मरीज़ा खाने-पीनेके कष्टके मारे, हल्का-हल्का ज्वर होनेपर भी उसे छिपाती और जब ज्वरका ज़ोर होता तब दवा खा लेतीं और फिर अपनी इच्छासे छोड़ देती। वह कहतीं, कि ज्वर चला गया, पर वास्तवमें वह जाता नही था, भीतर बना रहता था। इस तरह दो-तीन महीनोमें वह पुराना हो गया, धातुओंमें प्रवेश कर गया। इस समय वह दिन-रात चौबीसो घण्टे बना रहने लगा। महीने-भर तक एक क्षणको भी कम न हुआ। ज्वरने शरीरकी सब धातुएँ चर ली। बल और मांस नाममात्रको रह गये। अतिसार भी आ धमका। दम-दम पर आँव और खूनके दस्त होने लगे। अग्नि मन्द हो गयी। भोजन का नाम भी बुरा लगने लगा। हमने सबसे पहले अतिसारका दूर करना उचित समझा, क्योंकि दस्तोके मारे रोगीकी हालत ख़तरनाक होती जा रही थी। सोचा गया "कर्पूरादिवटी", जो चिकित्सा-चन्द्रोदय तीसरे भागके पृष्ठ ३४० में लिखी है, इस मौक़ेपर अच्छा काम करेगी। उनसे अतिसार तो नाश होगा ही, पर ज्वर भी कम होगा, क्योकि ऐसे हठीले ज्वरोमें, ख़ासकर सिल या उरःक्षतके ज्वरोमें, जब ज्वर सैकड़ो उपायोंसे ज़रा भी टस-से-मस न होता था, हम कपूरके योगसे बनी हुई दवाएँ देकर, उनका अपूर्व चमत्कार देख चुके थे। निदान, छै-छै घण्टोके अन्तरसे "कर्पूरादिवटी" दी जाने लगी। पहली ही गोलीने अपना आश्चर्यजनक फल दिखाया। चौबीस घण्टोंमें ज्वर कुछ देरको हटा। दस्त भी कुछ कम आये। दूसरे दिन आँव और खूनका आना बन्द हो गया। ज्वर १८ घण्टेसे कम रहा। तीसरे दिन ८।१० पतले दस्त हुए, जिनमें आँव और खून नही था और ज्वर बारह घण्टे रहा। उस दिन हमने हर चार-चार घण्टेपर दो-दो और तीन-तीन माशे बिल्वादि चूर्ण, जो तीसरे भागके पृ० २७० में लिखा है, अर्क़ सौंफ और अर्क़ गुलाबके साथ दिया। चौथे दिन दस्त एक दम बँधकर आया, ज्वर ३।४ घण्टे रहा और उतर गया। पाँचवें दिन ज्वर और अतिसार दोनो विदा हो गये।

पाठक ! जब कभी आपको ज्वर और अतिसार या ज्वरातिसार का रोगी मिले, उसे चाहे बड़े-बड़े चिकित्सक न आराम कर सके हों, आप ऊपरकी विधिसे दवा दें, निश्चय ही आराम होगा और लोगोंको आश्चर्य्य होगा। जिसे केवल ज्वर हो, अतिसार न हो, उसे ये गोलियाँ न देनी चाहियें। हाँ, जिसे केवल आमातिसार या रक्तातिसार हो, ज्वर न हो, उसे भी ये गोलियाँ दी जा सकती हैं। हाँ, मरीज़ाके हाथ-पैरों और मुखपर वरम या सूजन भी आ गई थी, अतः शरीरके शोथ या सूजन नाश करनेके लिये, हमने "नारायण तेल" की मालिश कराई और आगे छठे दिनसे, पहलेकी दवाएँ बन्द करके, "सितोपलादि चूर्ण," जो दूसरे भागके पृष्ठ ४४० में लिखा है, खानेको देते रहे और भोजनके साथ "हिंगाष्टक चूर्ण" सेवन कराते रहे। पर एक तरह ज्वरके चले जानेपर भी, मरीज़ाकी ज़बानका ज़ायका न सुधरा, मुँहका स्वाद ख़राब रहने लगा, भूख लगनेपर भी खानेके पदार्थ अरुचिके मारे अच्छे न लगते थे। हमने समझ लिया कि, अभी ज्वरांश शेष है, अतः तीन माशे चिरायता रातको दो तोले पानीमें भिगोकर, सवेरे ही उसे छानकर, उसमें दो रत्ती कपूर और दो रत्ती शुद्ध शिलाजीत मिला कर पिलाना शुरू किया। सात दिनमे रोगिणीने पूर्ण आरोग्य लाभ किया। इस नुसख़ेने हमारे एक ज्योतिषी-मित्रकी घरवालीको चार ही दिनमें चंगा कर दिया। वह कोई चार महीनेसे ज्वर पीड़ित थी। कई डाक्टर-वैद्योंका इलाज हो चुका था।

इसमें कृष्णकी कृपाका क्या फल देखा गया, यह हमने नहीं कहा। क्योंकि रोगी तो और भी अनेक, हर दिन असाध्य अवस्थामें पहुँच जाने पर भी, आरोग्य लाभ करते हैं। बात यह है, कि जिस दिन रातको दस्तोंका नम्बर लग गया, ज्वर धीमा न पड़ा, अवस्था और भी निराशाजनक हो गई, डाक्टर हताश होकर जवाब दे गये, हमने कृष्णसे प्रार्थना की कि, रोगीका जीवन है तो रोगी दस पाँच

दिनमें या महीने दो महीनेमें आराम हो ही जायगा। अगर साँस पूरे हो गये हैं, तो किसी तरह बचेगा नहीं और बचनेकी कोई उम्मीद बाक़ी भी नही है। ऐसी निराशाजनक अवस्था होने पर भी, रोगीकी हालत अगर ठीक कल सवेरे सुधर जायगी और चार पाँच दिनमें रोगी निरोग हो जायगा। नाथ! हमने आपके कई करिश्मे पहले तो देखे ही हैं, पर आज फिर देखनेकी इच्छा है। हमारी प्रार्थना स्वीकार हुई। हमारी केवल एक गोली खानेके बाद, सवेरे ही मरीज़ाने कहा—"आज मेरी तबियत कुछ ठीक जान पड़ती है। इसके बाद मरीज़ा जैसे चंगी हुई, हम लिख ही चुके हैं। पाठक! इस चमत्कार को देखकर, हम तो उस मोहन पर मोहित हो गये—सब तरह उसके हो गये। कहिये, आप भी उसके होंगे या नहीं?

विनीत—

हरिदास।

विषय-सूची

दूसरा खण्ड

जंगमविष-चिकित्सा ।

तीसरा खण्ड

स्त्री-रोगोंकी चिकित्सा ।

पहला अध्याय ।

विष-वर्णन ।

विषकी उत्पत्ति ।

प्राचीन कालमें, अमृतके लिये, देवता और राक्षसोंने समुद्र मथा। उस समय, अमृत निकलनेसे पहले, एक घोर-दर्शन भयावने नेत्रोंवाला, चार दाढ़ोंवाला, हरे-हरे बालों वाला और आगके समान दीप्ततेजा पुरुष निकला। उसे देखकर जगत्‌को विषाद हुआ—उसे देखते ही जगत्‌के प्राणी उदास होगये। चूँकि उस भयंकर पुरुषके देखनेसे दुनियाको विषाद हुआ था, इसलिये उसका नाम "विष" हुआ। ब्रह्माजीने उस विषको अपनी स्थावर और जंगम—दोनों तरहकी—सृष्टिमें स्थापन कर दिया, इसलिये विष स्थावर और जंगम दो तरहका होगया। चूँकि विष समुद्र या पानीसे पैदा हुआ और आग के समान तीक्ष्ण था, इसीलिये वर्षाकालमें—पानीके समयमें—विष

का क्लेद बढ़ता है और वह गीले गुड़की तरह फैलता है; यानी बरसातमें विषका बड़ा ज़ोर रहता है। किन्तु वर्षाऋतुके अन्तमें, अगस्तमुनि विषको नष्ट करते हैं, इसलिये वर्षाकालके बाद विष हीनवीर्य—कमज़ोर हो जाता है। इस विषमें आठ वेग और दश गुण होते हैं। इसकी चिकित्सा बीस प्रकारसे होती है। विषके सम्बन्ध में "चरक"में यही सब बातें लिखी हैं। सुश्रुतमें थोड़ा भेद है।

सुश्रुतमें लिखा है, पृथ्वीके आदि कालमें, जब ब्रह्माजी इस जगत् की रचना करने लगे, तब कैटभ नामका दैत्य, मदसे माता होकर, उनके कामोंमें विघ्न करने लगा। इससे तेजनिधान ब्रह्माजीको क्रोध हुआ। उस क्रोधने दारुण शरीर धारण करके, उस कैटभ दैत्यको मार डाला। उस क्रोधसे पैदा हुए कैटभके मारनेवालेको देखकर, देवताओंको विषाद हुआ—रंज हुआ, इसीसे उसका नाम "विष" पड़ गया। ब्रह्माजीने उस विषको अपनी स्थावर और जंगम सृष्टिमें स्थान दे दिया; यानी न चलने-फिरनेवाले वृक्ष, लता-पता आदि स्थावर सृष्टि और चलने-फिरनेवाले साँप, बिच्छू, कुत्ते, बिल्ली आदि जंगम सृष्टिमें उसे रहनेकी आज्ञा दे दी। इसीसे विष स्थावर और जंगम—दो तरहका हो गया।

नोट—विष नाम पड़नेका कारण तो दोनों ग्रन्थोंमें एक ही लिखा है, पर "चरक"में उसकी पैदायश समुद्र या पानीसे लिखी है और सुश्रुतमें ब्रह्माके क्रोध से। चरक और सुश्रुत—दोनोंके मतसे ही विष अग्निके समान गरम और तीक्ष्ण है। सुश्रुतमें तो विषकी पैदायश क्रोधसे लिखी ही है। क्रोधसे पित्त होता है और पित्त गरम तथा तीक्ष्ण होता है। चरकने विषको अम्बुसम्भव—पानीसे पैदा हुआ—लिखकर भी, अग्नि व तीक्ष्ण लिखा है। मतलब यह, विषके गरम और तेज़ होनेमें कोई मत-भेद नहीं। चरक मुनि उसे जलसे पैदा हुआ कहकर, यह दिखाते हैं, कि जलसे पैदा होनेके कारण ही विष वर्षाऋतुमें बहुत ज़ोर करता है और यह बात देखनेमें भी आती है। बरसातमें साँपका ज़हर बड़ी तेज़ीपर होता है। बादल देखते ही बावले कुत्तेका ज़हर दबा हुआ भी—कुपित हो उठता है इत्यादि।

विषकी उत्पत्ति क्रोधसे है। इसीपर भगवान् धन्वन्तरि कहते हैं, कि जिस तरह पुरुषोंका वीर्य सारे शरीरमें फैला रहता है, और स्त्री आदिकके देखनेके हर्षसे, वह सारे शरीरसे चल कर, वीर्यवाहिनी नसोंमें आ जाता है और अत्यन्त आनन्दके समय स्त्रीकी योनिमे गिर पड़ता है, उसी तरह क्रोध आनेसे साँपका विष भी, सारे शरीरसे चलकर, सर्पकी दाढ़ोंमें आ जाता है और सर्प जिसे काटता है, उसके घावमें गिर जाता है। जब तक साँपको क्रोध नहीं आता, उसका विष नहीं निकलता। यही वजह है, जो साँप बिना क्रोध किये, बहुधा, किसीको नहीं काटते। साँपोंको जितना ही अधिक क्रोध होता है, उनका दंश भी उतना ही सांघातिक या मारक होता है।

सुश्रुतमें लिखा है, चूँकि विषकी उत्पत्ति क्रोधसे है, अतः विष अत्यन्त गरम और तीक्ष्ण होता है। इसलिये सब तरहके विषोंमें प्रायः शीतल परिषेक करना; यानी शीतल जलके छींटे वगैरः देना उचित है। 'प्रायः' शब्द इसलिये लिखा है, कि कितने ही मौकोंपर गरम सेक करना ही हितकारक होता है। जैसे कीड़ोका विष बहुत तेज़ नहीं होता, प्रायः मन्दा होता है। उनके विषमे वायु और कफ जियादा होते हैं। इसलिये कीड़ोके काटनेपर, बहुधा गरम सेक करना अच्छा होता है, क्योंकि वात-कफकी अधिकतामें, गरम सेक करके, पसीने निकालना लाभदायक है। बहुधा, वात-कफके विषसे सूजन आ जाती है, और वह वात-कफकी सूजन पसीने निकालनेसे नष्ट हो जाती है। पर, यद्यपि कीडोके विष में गरम सेककी मनाही नहीं है, तथापि ऐसे भी कई कीडे होते हैं, जिनमे गरम सेक हानि करता है।

दो एक बात और भी ध्यानमें जमा लीजिये। पहली बात यह कि, विषमें समस्त गुण प्रायः तीक्ष्ण होते हैं; इसलिये वह समस्त दोषों—वात, पित्त, कफ और रक्त—को प्रकुपित कर देता है। विषसे सताये हुए वात आदि दोष अपने-अपने स्वाभाविक कामोको छोड बैठते हैं—अपने-अपने नियत कर्मोंको नही करते—अपने कर्त्तव्योका पालन नहीं करते। और विष स्वयं पचता भी नहीं—इसलिये वह प्राणोंको रोक देता है। यही वजह है कि, कफसे राह रुक जानेके कारण, विष वाले प्राणीका श्वास रुक जाता है। कफके आडे आ जानेसे, वायु या हवाके आने-जानेको राह नही मिलती, इससे मनुष्यका साँस आना-जाना बन्द हो जाता है। चूँकि राह न पानेसे साँसका आवागमन बन्द हो जाता है, इसलिये वह आदमी या और कोई जीव—न मरनेपर भी—भीतर जीवात्माके मौजूद रहनेपर भी—बेहोश होकर मुर्देकी तरह पड़ा रहता है। उसके जिन्दा होनेपर भी—

उसकी ऊपरी हालत बेहोशी आदि देखकर—लोग उसे मुर्दा समझ लेते हैं और अनेक नासमझ उसे शीघ्र ही मरघट या श्मशानपर ले जाकर जला देते या कब्र में दफना देते हैं । इस तरह, अज्ञानतासे, अनेक बार, बच सकने वाले आदमी भी, बिना मौत मरते हैं । चतुर आदमी ऐसे मौकोपर काकपद करके या उसकी आँखकी पुतलियोंमें अपनी या दीपककी लौकी परछाँही आदि देखकर, उसके मरने या जिन्दा होनेका फैसला करते हैं । मूर्च्छा रोग, मृगी रोग और विषकी दशामें अक्सर ऐसा धोखा होता है । हमने ऐसे अवसरकी परीक्षा-विधि इसी भागमें आगे लिखी है । पाठक उससे अवश्य काम लें; क्योंकि मनुष्य-देह बड़ी दुर्लभ है ।

विषके मुख्य दो भेद ।

सुश्रुतमें लिखा है:—

स्थावर जगम चैव द्विविधं विषमुच्यते ।
दशाधिष्ठानं आद्य तु द्वितीय षोडशाश्रय्म् ॥

विष दो तरहके होते हैं:—(१) स्थावर, और (२) जंगम । स्थावर विषके रहनेके दश स्थान हैं और जंगमके सोलह । अथवा यों समझिये कि स्थान-भेद से, स्थावर विष दश तरहका होता है और जंगम सोलह तरहका ।

नोट—स्थिरतासे एक ही जगह रहने वाले—फिरने, डोलने या चलनेकी शक्ति न रखने वाले—वृक्ष, लता-पता और पत्थर आदि जड पदार्थोंमें रहने वाले विषको "स्थावर" विष कहते हैं । चलने फिरने वाले—चैतन्य जीवों—साँप, बिच्छू, चूहा, मकडी आदिमें रहने वाले विषको "जंगम" विष कहते हैं । ईश्वरकी सृष्टि भी दो ही तरहकी हैं:—(१) स्थावर, और (२) जंगम । उसी तरह विष भी दो तरहके होते हैं—(१) स्थावर, और (२) जंगम । मतलब यह कि, जगदीशने दो तरहकी सृष्टि-रचना की और अपनी दोनों तरहकी सृष्टिमें ही विषकी स्थापना भी की ।

जंगम विषके रहनेके स्थान ।

जंगम विषके सोलह अधिष्ठान या रहनेके स्थान ये हैं:—

(१) दृष्टि, (२) श्वास, (३) दाढ़, (४) नख, (५) मूत्र,

(६) विष्ठा, (७) वीर्य, (८) आर्तव, (९) राल, (१०) मुँहकी पकड़, (११) अपानवायु, (१२) गुदा, (१३) हड्डी, (१४) पित्ता, (१५) शूक, और (१६) लाश ।

नोट—शूकका अर्थ है—डंक, काँटा, या रोम । जैसे; बिच्छू, मक्खी और ततैये आदिके डंकोंमें विष रहता है और कनखजूरेके काँटोंमें ।

चरकमें लिखा है, साँप, कीड़ा, चूहा, मकड़ी, बिच्छू, छिपकिली, गिरगट, जौंक, मछली, मैंडक, भौंरा, बर्र, मक्खी, किरकेंटा, कुत्ता, सिंह, स्यार, चीता, तेंदुआ, जरख और नौला वगैरःकी दाढ़ोंमें विष रहता है । इनकी दाढ़ोंसे पैदा हुए विषको "जंगम विष" कहते हैं । पर भगवान् धन्वन्तरि दाढ़ोंमें ही नहीं, अनेक जीवोंके मल, मूत्र, श्वास आदिमें भी विषका होना बतलाते हैं और यह बात है भी ठीक । वे कहते हैं:—

(१) दिव्य सर्पोंकी दृष्टि और श्वासमें विष होता है ।

(२) पार्थिव या दुनियाके साँपोंकी दाढ़ोंमें विष होता है ।

(३) सिंह और बिलाव प्रभृतिके पञ्जों और दाँतोंमें विष होता है ।

(४) चिपिट आदि कीड़ोंके मल और मूत्रमें विष रहता है ।

(५) ज़हरीले चूहोंके वीर्यमें भी विष रहता है ।

(६) मकड़ीकी लार और चेपादिमें विष रहता है ।

(७) बिच्छूके पिछले डंकमें विष रहता है ।

(८) चित्रशिर आदिकी मुँहकी पकड़में विष होता है ।

(९) विषसे मरे हुए जीवोंकी हड्डियोंमें विष रहता है ।

(१०) कनखजूरेके काँटोंमें विष होता है ।

(११) भौंरे, ततैये और मक्खीके डंकमें विष रहता है ।

(१२) विषैली जौंककी मुँहकी पकड़में विष होता है ।

(१३) सर्प या जहरीले कीड़ोंकी लाशोंमें भी विष होता है ।

नोट—(१) कितने ही लोग सभी मरे हुए जीवोंके शरीरमें विषका होना मानते हैं ।

(२) मकड़ियाँ बहुत तरहकी होती हैं। सुनते हैं, कि कितनी ही प्रकारकी मकड़ियोंके नाखून तक होते हैं । नाखून वाली मकड़ी कितनी बड़ी होती होगी ! इस देशमें, घरोंमें तो ऐसी मकड़ियाँ नहीं देखी जाती; शायद, अन्य देशों और वनोंमें ऐसी भयानक मकड़ियाँ होती हो। सारमें तो सभी प्रकारकी मकड़ियोंके विष होता है । कितनी ही मकड़ियोंके मल, मूत्र, नाखून, वीर्य, आर्त्तव और मुँहकी पकड़मे भी विष होता है । ज़हरीले चूहोके दाँत और वीर्य—दोनोंमें विष होता है । चार पैर वाले जानवरोंकी दाढ़ो और नाखूनो दोनोंमें विष होता है। मक्खी और कणभ आदिकी मुँहकी पकड़में भी विष होता है । विषसे मरे हुए साँप कंटक और वरही मछलीकी हड्डियोमें विष होता है । चींटी, कनखजूरा, कातरा और भौंरी या भौंरेके डंक और मुँह दोनोमे विष होता है ।

जंगम विषके सामान्य कार्य ।

भावप्रकाशमें लिखा है:—

निद्रा तन्द्रा क्लम दाह, सम्पाकं लोमहर्षणम् ।
शोथ चैवातिसार च कुरुते जगमं विषम् ॥

जंगम विष निद्रा, तन्द्रा, ग्लानि, दाह, पाक, रोमाञ्च, सूजन और अतिसार करता है ।

स्थावर विषके रहनेके स्थान ।

सुश्रुतमें लिखा है:—

मूलं पत्रं फलं पुष्प त्वक्क्षीरं सार एव च ।
निर्यासोधातवश्चैव कन्दश्च दशमः स्मृतः ॥

स्थावर विष जड़, पत्ते, छाल, फल, फूल, दूध, सार, गोंद, धातु और कन्द—इन दसोंमें रहता है ।

नोट—किसीकी जड़में विष रहता है, किसीके पत्तोंमें, किसीके फलमें, किसी के फूलमें, किसीकी छालमे, किसीके दूधमें, किसीके गोदमें और किसीके कन्दमें विष रहता है । वृक्षोंके सिवाय, विष खानोंसे निकलने वाली धातुओंमें भी रहता है । हरताल और संखिया अथवा फेनास्म भस्म—ये दो विष धातु-विष माने जाते हैं । कनेर और चिरमिटी आदिकी जड़में विष होता है । थूहर आदिके दूधमें विष होता है । सुश्रुतने जड़, पत्ते, फल, फूल, दूध, गोंद और सार आदिमें

कुल मिलाकर पचपन प्रकारके स्थावर विष लिखे हैं, पर बहुतसे नाम आजकलकी भाषामें नहीं मिलते, किसी कोषमें भी उनका पता नहीं लगता; इस लिये हम उन्हें छोड़ देते हैं। जब कोई समझेगा ही नहीं, तब लिखनेसे क्या लाभ ! हाँ, कन्दविषोंका संक्षिप्त वर्णन किये देते हैं।

कन्द-विष।

सुश्रुतने नीचे लिखे तेरह कन्द-विष लिखे हैं:—

(१) कालकूट, (२) वत्सनाभ, (३) सर्षप, (४) पालक, (५) कर्दमक, (६) वैराटक, (७) मुस्तक, (८) शृंगीविष (९) प्रपौंडरीक, (१०) मूलक, (११) हालाहल, (१२) महाविष, और (१३) कर्कटक।

इनमें भी वत्सनाभ विष चार तरहका, मुस्तक दो तरहका, सर्षप छै तरहका और बाक़ी सब एक एक तरहके लिखे हैं।

भावप्रकाशमें विष नौ तरहके लिखे हैं। जैसे,—

(१) वत्सनाभ, (२) हारिद्र, (३) सक्तुक, (४) प्रदीपन, (५) सौराष्ट्रिक, (६) शृंगिक, (७) कालकूट, (८) हालाहल, और (९) ब्रह्मपुत्र।

कन्द-विषोंकी पहचान।

(१) वत्सनाभ विष—जिसके पत्ते सम्हालूके समान हों, जिसकी आकृति बछड़ेकी नाभिके जैसी हो और जिसके पास दूसरे वृक्ष न लग सकें, उसे "वत्सनाभ विष" कहते हैं।

(२) हारिद्र विष—जिसकी जड़ हल्दीके वृक्षके सदृश हो, वह "हारिद्र विष" है।

(३) सक्तुक विष—जिसकी गाँठमें सत्तूके जैसा चूरा भरा हो, वह "सक्तुक विष" है।

(४) प्रदीपन विष—जिसका रङ्ग लाल हो, जिसकी कान्ति अग्निके समान हो, जो दीप्त और अत्यन्त दाहकारक हो, वह "प्रदीपन विष" है।

(५) सौराष्ट्रिक विष—जो विष सौराष्ट्र देशमें पैदा होता है, उसे "सौराष्ट्रिक विष" कहते हैं।

(६) शृंगिक विष—जिस विषको गायके सींगके बाँधनेसे दूध लाल हो जाय, उसे "शृंगिक" या "सींगिया विष" कहते हैं।

(७) कालकूट विष—पीपलके जैसे वृक्षका गोंद होता है। यह शृङ्गवेर, कोंकन और मलयाचलमें पैदा होता है।

(८) हालाहल विष—इसके फल दाखोंके गुच्छोंके जैसे और पत्ते ताड़के जैसे होते हैं। इसके तेजसे आस-पासके वृक्ष मुर्झा जाते हैं। यह विष हिमालय, किष्किन्धा, कोंकन देश और दक्षिण महासागरके तटपर होता है।

(९) ब्रह्मपुत्र विष—इसका रङ्ग पीला होता है और यह मलयाचल पर्वतपर पैदा होता है।

कन्द-विषोंके उपद्रव।

सुश्रुतमें लिखा है:—

(१) कालकूट विषसे स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता, कम्प और शरीर-स्तम्भ होता है।

(२) वत्सनाभ विषसे ग्रीवा-स्तम्भ होता है तथा मल-मूत्र और नेत्र पीले हो जाते हैं।

(३) सर्षपसे तालूमें विगुणता, अफारा और गाँठ होती है।

(४) पालकसे गर्दन पतली पड़ जाती और बोली बन्द हो जाती है।

(५) कर्दमकसे मल फट जाता और नेत्र पीले हो जाते हैं।

(६) वैराटकसे अङ्गमें दुःख और शिरमें दर्द होता है।

(७) मुस्तकसे शरीर अकड़ जाता और कम्प होता है।

(८) शृङ्गी विषसे शरीर ढीला हो जाता, दाह होता और पेट फूल जाता है।

(९) प्रपौंडरीक विषसे नेत्र लाल होते और पेट फूल जाता है।

(१०) मूलकेसे शरीरका रङ्ग बिगड़ जाता, कय होतीं, हिचकियाँ चलतीं तथा सूजन और मूढ़ता होती है ।

(११) हालाहलसे श्वास रुक-रुक कर आता और आदमी काला हो जाता है ।

(१२) महाविषसे हृदयमें गाँठ होती और भयानक शूल होता है।

(१३) कर्कटकसे आदमी ऊपरको उछलता और हँस-हँस कर दाँत चबाने लगता है ।

भावप्रकाशमें लिखा है:—

कन्दजान्युग्र वीर्याणि यान्युक्तानि त्रयोदशः ।

सुश्रुतादि ग्रन्थोंमें लिखे हुए तेरह विष बड़ी उग्र शक्तिवाले होते हैं, यानी तत्काल प्राण नाश करते हैं ।

आजकल काममें आनेवाले कन्दविष ।

आजकल सुश्रुतके तेरह और भावप्रकाशके नौ विष बहुत कम मिलते हैं। इस समय, इनमेंसे "वत्सनाभ विष" और "सींगिया विष" ही अधिक काममें आते हैं। अगर ये युक्तिके साथ काममें लाये जाते हैं, तो रसायन, प्राणदायक, योगवाही, त्रिदोषनाशक, पुष्टिकारक और वीर्यवर्द्धक सिद्ध होते हैं। अगर ये बेक़ायदे सेवन किये जाते हैं, तो प्राण-नाश करते हैं ।

अशुद्ध विष हानिकारक ।

अशुद्ध विषके दुर्गुण उसके शोधन करनेसे दूर हो जाते हैं; इसलिये दवाओंके काममें विषोंको शोध कर लेना चाहिये । कहा है—

ये दुर्गुणा विषेऽशुद्धे ते स्युहींना विशोधनात् ।
तस्माद विषं प्रयोगेपु शोधयित्वा प्रयोजयेत ॥

विषमात्रके दश गुण ।

कुशल वैद्योंको विषोंकी परीक्षा नीचे लिखे हुए दश गुणोंसे करनी चाहिये। अगर स्थावर, जंगम और कृत्रिम विषोंमें ये दशों गुण होते

हैं, तो वे मनुष्यको तत्काल मार डालते हैं । सुश्रुतादिक ग्रन्थोंमें लिखा है:—

रुक्षमुष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्ममाशु व्यवायि च ।
विकाशि विषदञ्चैव लघ्वपाकि च ततमतम् ॥

(१) रुक्ष, (२) उष्ण, (३) सूक्ष्म, (४) आशु, (५) व्यवायी, (६) विकाशी, (७) विषद, (८) लघु, (९) तीक्ष्ण, और (१०) अपाकी,—ये दश गुण विषोंमें होते हैं ।

दश गुणोंके कार्य ।

ऊपरके रुक्ष, उष्ण आदि दश गुणोंके कार्य इस भाँति होते हैं:—

(१) विष बहुत ही रूखा होता है, इसलिये वह वायुको कुपित करता है ।

(२) विष उष्ण यानी गरम होता है, इसलिये पित्त और खूनको कुपित करता है ।

(३) विष तीक्ष्ण—तेज़ होता है, इसलिये बुद्धिको मोहित करता, बेहोशी लाता और शरीरके मर्म या बन्धनोंको तोड़ डालता है ।

(४) विष सूक्ष्म होता है, इसलिये शरीरके बारीक छेदों और अवयवोंमें घुसकर उन्हें बिगाड़ देता है ।

(५) विष आशु होता है, यानी बहुत जल्दी-जल्दी चलता है, इसलिये इसका प्रभाव शरीरमें बहुत जल्दी होता है और इससे यह तत्काल फैलकर प्राणनाश कर देता है ।

(६) विष व्यवायी होता है । पहले सारे शरीरमें फ़ैलता और पीछे पकता है, अतः सब शरीरकी प्रकृतिको बदल देता या अपनी-सी कर देता है ।

(७) विष विकाशी होता है, इसलिये दोषों, धातुओं और मलको नष्ट कर देता है ।

(८) विष विशद होता है, इसलिये शरीरको शक्तिहीन कर देता या दस्त लगा देता है ।

(९) विष लघु होता है, इसलिये इसकी चिकित्सामें कठिनाई होती है। यह शीघ्र ही असाध्य हो जाता है।

(१०) विष अपाकी होता है, इसलिये बड़ी कठिनतासे पचता या नहीं पचता है; अतः बहुत समय तक दुःख देता है।

नोट—चरकमें लिखा है, त्रिदोषमें जिस दोषकी अधिकता होती है, विष उसी दोषके स्थान और प्रकृतिको प्राप्त होकर, उसी दोषको उदीरण करता है; यानी वातिक व्यक्तिके वात-स्थानमें जाकर बादीकी प्यास, बेहोशी, अरुचि, मोह, गलग्रह, वमि और झाग वगैरः उत्पन्न करता है। उस समय कफ-पित्तके लक्षण बहुत ही थोड़े दीखते हैं। इसी तरह विष पित्तस्थानमें जाकर प्यास, खाँसी, ज्वर, वमन, क्लम, तम, दाह और अतिसार आदि पैदा करता है। उस समय कफ-वातके लक्षण कम होते हैं। इसी तरह विष जब कफ-स्थलमें जाता है, तब श्वास, गलग्रह, खुजली, लार और वमन आदि करता है। उस समय पित्त-वातके लक्षण कम होते हैं। दूषी विष खूनको बिगाड़ कर, कोढ़ प्रभृति खूनके रोग करता है। इस प्रकार विष एक-एक दोषको दूषित करके जीवन नाश करता है। विषके तेज से खून गिरता है। सब छेदोंको रोक कर, विष प्राणियोंको मार डालता है। पिया हुआ विष मरनेवालेके हृदयमें जम जाता है। साँप, बिच्छू आदिका और ज़हरके बुझे हुए तीर आदिका विष डसे हुए या लगे हुए स्थानमें रहता है।

दूषी विषके लक्षण।

जो विष अत्यन्त पुराना हो गया हो, विषनाशक दवाओंसे हीन-वीर्य या कमज़ोर हो गया हो अथवा दावाग्नि, वायु या धूपसे सूख गया हो अथवा स्वाभाविक दश गुणोंमेंसे एक, दो, तीन या चार गुणोंसे रहित हो गया हो, उसको "दूषी विष" कहते हैं।

खुलासा यह है, कि चाहे स्थावर विष हो, चाहे जंगम और चाहे कृत्रिम—जो किसी तरह कमज़ोर हो जाता है, उसे "दूषी विष" कहते हैं। मान लो, किसीने विष खाया, वैद्यकी चिकित्सासे वह विष निकल गया, पर कुछ रह गया, पुराना पड़ गया या पच गया—वह विष "दूषी विष" कहलावेगा; क्योंकि उसमें अब उतना बलवीर्य नहीं—पहलेसे वह हीनवीर्य या कमज़ोर है। इसी तरह जो विष धूप, आग

या वायुसे सूख गया हो और इस तरह कमज़ोर हो गया हो, वह भी "दूपी विप" कहलावेगा। इसी तरह जो विष स्वभावसे ही—अपने-आप ही—कमज़ोर हो, उसमें विषके पूरे गुण न हों, उसे भी "दूषी विष" ही कहेंगे। मतलब यह कि, स्थावर और जंगम विष पुरानेपन प्रभृति कारणोंसे "दूषी विप" कहलाते हैं। भावप्रकाशमें लिखा है.—

स्थावरं जगमं च विषमेव जीर्णत्व-
मादिभिः कारणैर्दूषीविषसंज्ञा लभते ।

स्थावर और जंगम विष—जीर्णता आदि कारणोंसे "दूषी विष" कहे जाते है।

दूषी विष क्या मृत्युकारक नहीं होता?

दूषी विष कमज़ोर होता है, इसलिये मृत्यु नही कर सकता, पर कफसे ढककर बरसों शरीरमें रहा आता है। सुश्रुतमें लिखा हैः—

वीर्यल्प भावान्न निपातयेत्तत कफावृतं वर्षगणानुवन्धि ।

दूषी विष वीर्य या बल कम होनेकी वजहसे प्राणीको मारता नहीं, पर कफसे ढका रहकर, बरसों शरीरमें रहा आता है।

दूषी विषकी निरुक्ति।

सुश्रुतमें लिखा है:—

दूषित देशकालान्न दिवास्वप्नैरभीक्ष्णशः ।
यस्माद्दूषयते धातून्तस्माद्दूषी विषस्मृतम् ॥

यह हीनवीर्य विप अगर शरीरमें रह जाता है, तो देश-काल और खाने-पीनेकी गड़बड़ी तथा दिनके अधिक सोने वगैरः कारणोंसे दूषित होकर धातुओंको दूषित करता है, इसीसे इसे "दूषी विष" कहते हैं।

दूषी विष क्या करता है?

दूषी विष हीन-वीर्य कमज़ोर होनेकी वजहसे प्राणीको मारता तो नही है, लेकिन बरसों तक शरीरमें रहा आता है। क्यों रहा आता

है ? इस विषमें उष्णता आदि गुण कम होनेसे, कफ इसे ढके रहता है और कफकी वजहसे अग्नि मन्दी रहती है; इससे यह पचता भी नहीं—बस, इसीसे यह शरीरमें बरसों तक रहा आता है।

जिसके शरीरमे दूषी विष होता है, उसको पतले दस्त लगते हैं, शरीरका रंग बदल जाता है, चेष्टायें विरुद्ध होने लगती हैं, चैन नहीं मिलता तथा मूर्च्छा, भ्रम, वाणीका गद्गदपना और वमन ये रोग घेरे रहते हैं।

स्थान विशेषके कारण दूषी विषके लक्षण।

अगर दूषी विष आमाशयमें होता है, तो वात और कफ-सम्बन्धी रोग पैदा करता है।

अगर विष पक्वाशयमें होता है, तो वात और पित्त-सम्बन्धी रोग पैदा करता है।

अगर दूषी विष वालों और रोमोंमें होता है, तो मनुष्यको पंख-हीन पक्षी-जैसा कर देता है।

अगर दूषी विष रसादि धातुओंमें होता है, तो रसदोष, रक्तदोष, मांसदोष, मेददोष, अस्थिदोष, मज्जादोष और शुक्र-दोषसे होनेवाले रोग पैदा करता है:—

दूषी विष रसमें होनेसे अरुचि, अजीर्ण, अङ्गमर्द, ज्वर, उबकी भारीपन, हृद्रोग, चमड़ेमें गुलझट, वाल सफेद होना, मुँहका स्वाद बिगड़ना और थकान आदि करता है।

रक्तमें होनेसे कोढ़, विसर्प, फोड़े-फुन्सी, मस्से, नीलिका, तिल, चकत्ते, झांई, गंज, तिल्ली, विद्रधि, गोला, वातरक्त, बवासीर, रसौली, शरीर टूटना, ज़रा खुजलानेसे खून निकलना या चमड़ा लाल हो जाना और रक्तपित्त आदि करता है।

मांसमें होनेसे अधिमांस, अर्वुद, अर्श, अधिजिह्व, उपजिह्व, दन्त-रोग, तालूरोग, होठ पकना, गलगण्ड और गण्डमाला आदि करता है।

मेदमें होनेसे गांठ, अण्डवृद्धि, गलगंड, अर्बुद, मधुमेह, शरीर का बहुत मोटा हो जाना और बहुत पसीना आना आदि करता है।

हड्डीमें होनेसे कही हाड़का बढ़ जाना, दांतकी जड़में और दांत निकलना तथा नाखून ख़राब होना वगैरः करता है।

मज्जामें होनेसे अँधेरी आना, मूर्च्छा, भ्रम, जोड़ मोटे होना, जाँघ या उसकी जड़का मोटा होना प्रभृति करता है।

शुक्रमें होनेसे नपुंसकता, स्त्री-प्रसंग अच्छा न लगना, वीर्यकी पथरी, शुक्रमेह एवं अन्य वीर्य-विकार आदि करता है।

दूषी विषके प्रकोपका समय।

दूषी विष नीचे लिखे हुए समयोंमें तत्काल प्रकुपित होता हैः—

(१) अत्यन्त सर्दी पड़नेके समय।

(२) अत्यन्त हवा चलनेके समय।

(३) बादल होनेके समय।

प्रकुपित दूषी विषके पूर्व्व रूप।

दूषी विषका कोप होनेसे पहले ये लक्षण देखनेमें आते हैं:—अधिक नींद आना, शरीरका भारी होना, अधिक जंभाई आना. अङ्गोका ढीला होना या टूटना और रोमांच होना।

प्रकुपित दूषी विषके रूप।

जब दूषी विषका कोप होता है, तब वह खाना खानेपर सुपारीका-सा मद करता है, भोजनको पचने नही देता, भोजनसे अरुचि करता है, शरीरमें गाँठ और चकत्ते करता है तथा मांसक्षय, हाथ-पैरोंमें सूजन, कभी-कभी बेहोशी, वमन, अतिसार, श्वास, प्यास, विषमज्वर, और जलोदर उत्पन्न करता है; यानी प्यास बहुत बढ़ जाती है और साथ ही पेट भी बढ़ने लगता है तथा शरीरका रंग बिगड़ जाता है।

दूषी विषके भेदोंसे विकार-भेद।

कोई दूषी विष उन्माद करता है, कोई पेटको फुला देता है, कोई

वीर्यको नष्ट कर देता है, कोई वाणीको गद्गद करता है, कोई कोढ़ करता है और कोई अनेक प्रकारके विसर्प और विस्फोटकादि रोग करता है।

नोट—दूषी विष अनेक प्रकारके होते हैं, इसलिए उनके काम भी भिन्न-भिन्न होते हैं। दूषी विष मात्र एक ही तरहके काम नहीं करते। कोई दूषी विष कोढ़ करता है, तो कोई वीर्य क्षीण करता है इत्यादि।

दूषी विष क्यों कुपित होता है ?

दिनमें बहुत ज़ियादा सोने, कुलथी, तिल और मसूर प्रभृति अन्न खाने, जल वाले देशोंमें रहने, अधिक हवा चलने, बादल और वर्षा होने वगैरः वगैरः कारणोंसे दूषी विष कुपित होता है।

दूषी विषकी साध्यासाध्यता।

पथ्य सेवन करनेवाले जितेन्द्रिय पुरुषका दूषी विष शीघ्रही साध्य होता है। एक वर्षके बाद वह याप्य हो जाता है; यानी बड़ी मुश्किल से आराम होता है या दवा सेवन करते तक दबा रहता है और दवा बन्द होते ही फिर उपद्रव करता है। अगर क्षीण और अपथ्य-सेवी पुरुषको यह दूषी विषका रोग होता है, तो वह आराम नहीं होता। ऐसा अजितेन्द्रिय गल-गलकर मर जाता है।

कृत्रिम विष भी दूषी विष।

जिस तरह स्थावर और जंगम विष दूषी विष हो जाते हैं, उसी तरह कृत्रिम या मनुष्यका बनाया हुआ विष भी दूषी विष हो जाता है; बशर्ते कि, उसका विषसे सम्बन्ध हो। अगर कृत्रिम विषका सम्बन्ध विषसे नहीं होता, पर वह विषके-से काम करता है, तो उसे "गर-विष" कहते हैं।

खुलासा यह है कि कई विषों और अन्य द्रव्योंके संयोगसे, मनुष्य द्वारा बनाया हुआ विष "कृत्रिम विष" कहलाता है। वह कृत्रिम विष दो तरहका होता है:—

(१) दूषी विष, और (२) गर ।

जिस कृत्रिम विषका सम्बन्ध विषसे होता है, उसे दूषी विष कह सकते हैं, जब कि वह हीनवीर्य हो गया हो; पर जिसका सम्बन्ध विषसे नहीं होता, पर वह विषके-से काम करता है, उसे "गरविष" कहते हैं। जैसे, स्त्रियाँ अपने पतियोंको वशमें करनेके लिये, उन्हें अपना आर्त्तव—मासिक धर्मका खून, मैल या पसीना प्रभृति खिला देती हैं। वह सब विषका काम करते हैं—धातुक्षीणता, मन्दाग्नि और ज्वर आदि करते हैं। पर वे वास्तवमें न तो विष हैं और न विष वगैरः कई चीज़ोंके मैलसे बने हैं, इसलिये उनको किसी हालतमें भी "दूषी विष" नहीं कह सकते।

गर विषके लक्षण ।

"चरक"में लिखा है, संयोजक विषको "गरविष" कहते हैं। वह भी रोग करता है।

"भावप्रकाश"में लिखा है, मूर्खा स्त्रियाँ अपने पतियोंको वशमें करनेके लिये, उन्हें रज, पसीना तथा अनेकानेक मलोंको भोजन में मिलाकर खिला देती हैं। दुश्मन भी इसी तरहके पदार्थोंको भोजनमें खिला देते हैं। ये पसीने और रज प्रभृति मैले पदार्थ "गर" कहलाते हैं।

गर विषके काम ।

पसीना और रज आदि गर पदार्थोंसे शरीर पीला पड़ जाता है, दुबलापन हो जाता है, भूख बन्द हो जाती है, ज्वर चढ़ आता है, मर्मस्थानोंमें पीड़ा होती है तथा अफारा, धातुक्षय और सूजन—ये रोग हो जाते हैं।

नोट—यहाँ तक हमने मुख्य चार तरहके विष लिखे हैं:—(१) स्थावर विष, (२) जंगम विष, (३) दूषी विष, और (४) गर विष। आप इन्हें अच्छी तरह

समझ-समझ कर याद करले। इनकी उत्पत्ति, इनके लक्षण और इनके गुण-कर्म आदि याद होनेसे ही आपको "विष-चिकित्सा" में सफलता मिलेगी। अगर कोई शख़्स हमारी लिखी "विष-चिकित्सा" को ही अच्छी तरह याद करले और इसका अभ्यास करे, तो मनमाना यश और धन उपार्जन कर सके। इसके लिये और ग्रन्थ देखनेकी दरकार न होगी।

स्थावर विषके कार्य।

उधर हम जंगम विषके काम लिख आये हैं, अब स्थावर विषके काम लिखते हैं। ज्वर, हिचकी, दन्त-हर्ष, गलग्रह, झाग आना, अरुचि, श्वास और मूर्च्छा स्थावर विषके कार्य या नतीजे हैं; यानी जो आदमी स्थावर विष खाता-पीता है, उसे ऊपर लिखे ज्वर आदि रोग होते हैं।

स्थावर विषके सात वेग।

स्थावर और जङ्गम दोनों तरहके विषोंमें सात वेग या दौरे होते हैं। प्रत्येक वेगमें विष भिन्न-भिन्न प्रकारके काम करते हैं, इससे प्रत्येक वेगकी चिकित्सा भी अलग-अलग होती है। जङ्गम-विष या सर्प-विष प्रभृतिके वेग और उनकी चिकित्सा आगे लिखी है। यहाँ हम "सुश्रुत" से स्थावर विषके सात वेग और अगले अध्याय में प्रत्येक वेगकी चिकित्सा लिखते हैं:—

(१) पहले वेगमें,—जीभ काली और कड़ी हो जाती है तथा मूर्च्छा—बेहोशी होती और श्वास चलता है।

(२) दूसरे वेगमें,—शरीर काँपता है, पसीने आते हैं, दाह या जलन होती और खुजली चलती है।

(३) तीसरे वेगमें,—तालूमें खुश्की होती है, आमाशयमें दारुण शूल या दर्द होता है तथा दोनों आँखोंका रङ्ग और-का-और हो जाता है। वे हरी-हरी और सूजी-सी हो जाती हैं।

नोट—याद रक्खो, इन तीनो वेगोंके समय खाया-पीया हुआ विष "आमाशय" में रहता है। इस तीसरे वेगके बाद, विष 'पक्वाशय' में पहुँच जाता है।

जब विष पक्वाशयमें पहुँच जाता है, तब पक्वाशयमें पीड़ा होती है, आँतें बोलती हैं, हिचकियाँ चलती हैं और खाँसी आती है। मतलब यह है, कि पहले तीन वेगोंके समय विष 'आमाशय' में और पिछले चारो—चौथेसे सातवे तक—वेगोंमें 'पक्वाशय' मे रहता है।

(४) चौथे वेगमें,—सिर बहुत भारी होकर झुक जाता है।

(५) पाँचवे वेगमें,—मुँहसे कफ गिरने लगता है, शरीरका रङ्ग विगड़ जाता है और सन्धियो या जोड़ोंमें फूटनी-सी होती है। इस वेगमें वात, पित्त, कफ और रक्त—चारों दोष कुपित हो जाते हैं और पक्वाशयमें दर्द होता है।

(६) छठे वेगमें,—बुद्धिका नाश हो जाता है, किसी तरहका होश या ज्ञान नहीं रहता और दस्तपर दस्त होते हैं।

(७) सातवें वेगमें,—पीठ, कमर और कन्धे टूट जाते हैं तथा साँस रुक जाता है।

——:*:——

दूसरा अध्याय।

सर्व विष-चिकित्सामें चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें।

(१) नीचे लिखे हुए उपायोंसे विष-चिकित्सा की जाती है:—

(१) मंत्र, (२) बन्ध बाँधना, (३) डसी हुई जगहको काट डालना, (४) दबाना, (५) खून मिला ज़हर चूसना, (६) अग्निकर्म करना या दागना, (७) परिषेक करना, (८) अवगाहन, (९) रक्त-मोक्षण करना यानी फस्द आदिसे खून निकालना, (१०) वमन या कय कराना, (११) विरेचन या जुलाब देना, (१२) उपधान, (१३) हृदायवरण; यानी विषसे हृदयकी रक्षा करनेको घी, मांस या ईख-रस आदि पहले ही पिला देना, (१४) अंजन, (१५) नस्य, (१६) धूम, (१७) लेह, (१८) औषध, (१९) प्रशमन, (२०) प्रतिसारण, (२१) प्रतिविष सेवन कराना; यानी स्थावर विषमें जंगम विषका प्रयोग करना और जंगममें स्थावरका, (२२) संज्ञास्थापन, (२३) लेप, और (२४) मृतसञ्जीवन देना।

(२) विष, जिस समय, जिस दोषके स्थानमें हो, उस समय, उसी दोषकी चिकित्सा करनी चाहिये।

जब विष वातस्थानमें—पक्वाशय—में होता है, तब वह बादीकी प्यास, बेहोशी, अरुचि, मोह, गलग्रह, वमि और झाग आदि उत्पन्न करता है। इस अवस्थामें, (१) स्वेद प्रयोग करना चाहिये, और (२) दहीके साथ कूट और तगरका कल्क सेवन करना चाहिये।

जब विष पित्त-स्थान—हृदय और ग्रहणीमें होता है, तब वह प्यास, खाँसी, ज्वर, वमन, क्लम, तम, दाह और अतिसार आदि उत्पन्न करता

है। इस अवस्थामें, (१) घी पीना, (२) शहद चाटना, (३) दूध पीना, (४) जल पीना और (५) अवगाहन करना हितकारी है।

जब विष कफ-स्थान—छातीमें—होता है, तब वह श्वास, गलग्रह, खुजली, लार गिरना और वमन होना आदि उपद्रव करता है। इस अवस्थामें, (१) क्षारागद सेवन कराना, (२) स्वेद दिलाना और (३) फस्द खोलना हितकारी है। दूपी विष अगर रक्तगत या खूनमें हो, तो "पंचविध शिरावेधन" करना चाहिये।

इस तरह वैद्यको सारी अवस्थायें समझ कर औपधिकी कल्पना करनी चाहिये। पहले तो विपके स्थानको जीतना चाहिये; फिर जिस स्थानके जीतनेसे विष नाश हुआ है, उसपर कोई काम विप-चिकित्साके विरुद्ध न करना चाहिये।

(३) विपसे मार्ग दूपित हो जाते और छेद रुक जाते हैं, इसलिये वायु रुक जाती है, उसे रास्ता नहीं मिलता। वायुके रुकनेकी वजहसे मनुष्य मरने वालेकी तरह साँस लेने लगता है। अगर ऐसी हालत हो, पर असाध्य अवस्थाके लक्षण न हों, तो उसके मस्तकपर, तेज़ चाकू या छुरीसे, चमड़ा छील कर कव्वेका-सा पञ्जा बना कर उसपर "चर्मकपा" यानी सिकेकाईका लेप करना चाहिये। साथ ही कटभी—हापरमाली, कुटकी और कायफल—इन तीनोंको पीस-छान कर, इनकी प्रधमन नस्य देनी चाहिये।

अगर आदमी, विपसे, सहसा वेहोश हो जाय या मतवाला हो जाय, तो मस्तकपर ऊपरकी लिखी विधिसे काक पद बनाकर, उसपर बकरी, गाय, भैंस, मैंढ़ा, मुर्ग़ा या जल-जीवोंका मांस पीसकर रखना चाहिये।

अगर नाक, नेत्र, कान, जीभ और कंठ रुक रहे हों, जंगली बैंगन, बिजौरा और अपराजिता या माल काँगनी—इन तीनोंके रसकी नस्य देनी चाहिये।

अगर नेत्र बन्द हो गये हों, तो दारुहल्दी, त्रिकुटा, हल्दी, कनेर, कंजा, नीम और तुलसीको बकरीके मूत्रमें पीसकर, नेत्रोंमें आँजना चाहिये।

काली सेम, तुलसीके पत्ते, इन्द्रायणकी जड़, पुनर्नवा, काकमाची और सिरसके फल,—इन सबको पीसकर, इनका लेप करने, नस्य देने, अंजन करने और पीनेसे उस प्राणीको लाभ होता है, जो उद्बंधन विष और जलके द्वारा मुर्देके जैसा हो रहा हो।

(४) सब विष एक ही स्वभावके नहीं होते; कोई वातिक, कोई पैत्तिक और कोई श्लेष्मिक होता है। भिन्न-भिन्न प्रकारके विषोंकी चिकित्सा भी अलग-अलग होती है, क्योंकि उनके काम भी तो अलग-अलग ही होते हैं।

वातिक विष होनेसे हृदयमें पीड़ा, उर्ध्ववात, स्तंभ, शिरायाम-मस्तक-खींचना, हड्डियोंमें वेदना आदि उपद्रव होते हैं और शरीर काला हो जाता है। इस दशामें, (१) खांडका व्रण लेप, (२) तेलकी मालिश, (३) नाड़ी स्वेद, (४) पुलक आदि योगसे स्वेद और वृंहण विधि हितकारी है।

पैत्तिक विष होनेसे संज्ञानाश—होश न रहना, गरम श्वास निकलना, हृदयमें जलन, मुँहमें कड़वापन, काटी या डसी हुई जगहका फटना, और सूजना तथा लाल या पीला रङ्ग हो जाना—ये उपद्रव होते हैं। इस अवस्थामें, शीतल लेप और शीतल सेचन आदि उपचारोंसे काम लेना हित है।

श्लेष्मिक विष होनेसे वमन, अरुचि, जी मिचलाना, मुँहसे पानी बहना, उत्क्लेश, भारीपन और सरदी लगना तथा मुँहका ज़ायका मीठा होना—ये लक्षण होते हैं। इस अवस्थामें, लेखन, छेदन, स्वेदन और वमन—ये चार उपाय हितकारी हैं।

नोट—(१) दर्वीकर या काले फनदार साँपोके काटने से वातका प्रकोप होता है; मण्डली सर्पके काटने से पित्तका और राजिलके काटनेसे कफका प्रकोप होता

है। दर्वीकर सर्पका विष वातिक, मंडलीका पैत्तिक, और राजिलका श्लेष्मिक होता है। इनके काटनेसे अलग-अलग दोष कुपित होते हैं और ऊपर लिखे अनुसार उनके अलग-अलग उपद्रव होते हैं। जैसेः—

दर्वीकर सर्पोंका विष वात प्रधान होता है। उनके काटनेसे वैसे ही लक्षण होते हैं, जैसे ऊपर वातिक विषके लिखे हैं। दर्वीकरके काटनेकी जगह सूक्ष्म, काले रङ्गकी होती है; उसमेंसे खून नहीं निकलता। इसके सिवा वातव्याधिके ऊर्ध्ववात, शिरायाम और अस्थिशूल आदि समस्त लक्षण होते हैं।

मंडली सर्पका विष पित्तप्रधान होता है। उसके काटनेसे वही लक्षण होते हैं, जो ऊपर पैत्तिक विषके लिखे हैं। मंडली सर्पके काटनेकी जगह स्थूल—मोटी होती है। उसपर सूजन होती है और उसका रङ्ग लाल-पीला होता है तथा रक्तपित्तके सारे लक्षण प्रकाशित होते हैं। इसलिये उसके काटनेकी जगहसे खून निकलता है।

राजिल सर्पका विष कफप्रधान होता है। उसके काटनेसे वही लक्षण होते हैं, जो कि ऊपर श्लेष्मिक विषके लिखे हैं। राजिलकी काटी हुई जगह लिबलिबी या चिकनी-सी, स्थिर और सूजनदार होती है। उसका रङ्ग पाण्डु या सफेदसा होता है। काटे हुए स्थानका खून जम जाता है। इसके सिवा, कफके सब लक्षण अधिकतासे नजर आते हैं।

बिच्छू और उच्चिटिंगके विषके सिवा और सब तरहके विषोंमें चाहे वे किसी स्थानमें क्यों न हों, प्रायः शीतल चिकित्सा हितकारी है। चरक।

सुश्रुतमें लिखा है, चूँकि विष अत्यन्त गरम और तीक्ष्ण होता है, इसलिये प्रायः सभी विषोंमें शीतल परिषेक करना या शीतल छिड़के देना हितकारी है। पर कीड़ोंका विष बहुत तेज नहीं होता, प्रायः मन्दा होता है, और उसमें वायु-कफके अंश अधिक होते हैं, इसलिये कीड़ोंके विषमें सेकने या पसीना निकालने की मनाही नहीं है। परन्तु ऐसे भी मौके होते हैं, जहाँ कीड़ोंके विषमें गरम सेक नहीं किया जाता।

चरक मुनि कहते हैं, बिच्छूके काटनेपर, घी और नमकसे स्वेदन करना और अभ्यङ्ग हितकारी हैं। इसमें गरम स्वेद, घीके साथ अन्न खाना और घी पीना भी हित है। घी पीनेसे मतलब यह है कि, घीकी मात्रा ज़ियादा हो।

सुश्रुतके कल्पस्थानमें लिखा है, उग्र या तेज ज़हर वाले बिच्छुओंके काटेका इलाज साँपोंके इलाजकी तरह करो। मन्दे विषवाले बिच्छूके काटे स्थानपर चक्र तेल यानी कच्ची घानीके तेलका तरडा दो अथवा विदार्यादिसे पकाये

हुए तेलको निवाया करके सेक करो । अथवा विष-नाशक दवाओंकी लूपरीसे उपानेह स्वेद करो । अथवा निवाया-निवाया गोबर काटे स्थानपर बाँधो और उसीसे उस जगहको स्वेदित करो ।

(५) इस बातको भी ध्यानमें रक्खो, कि, विषके साथ काल और प्रकृतिकी तुल्यता होनेसे विषका वेग या ज़ोर बढ़ जाता है । जैसे,—दर्वीकर साँपका विष वात प्रधान होता है । अगर वह वात-प्रकृति वाले प्राणीको काटता है, तो "प्रकृति-तुल्यता" होती है; यानी विषकी और काटे जाने वालेकी प्रकृतियाँ मिल जाती हैं—आदमी का मिज़ाज बादीका होता है और विष भी बादीका ही होता है; तब विषका ज़ोर बढ़ जाता है । अगर उस वात प्रकृति वाले मनुष्यको दर्वीकर सर्प वर्षा-कालमें काटता है, तो विषका ज़ोर और भी ज़ियादा होता है, क्योंकि वर्षाकालमें वायुका कोप होता है । विष वात-कोपकारक, वर्षाकाल वात कोपकारक और काटे जाने वालेकी प्रकृति वातकी—जहाँ ये तीनों मिल जाते हैं, वहाँ जीवनकी आशा कहाँ ? अगर काटनेवाला दर्वीकर या काला साँप जवान पट्ठा हो, तो और भी ग़ज़ब समझिये; क्योंकि जवान काला साँप (दर्वीकर), बूढ़ा मण्डली साँप और प्रौढ़ अवस्थाका राजिल साँप आशीविष-सदृश होते हैं । इधर ये काटते हैं और उधर आदमी ख़तम होता है ।

(६) अगर काटने वाला सर्पको न देख सका हो या घबराहटमें पहचान न सका हो, तो वैद्यको विषके लक्षण देखकर, कैसे साँपने काटा है, इसका निर्णय करना चाहिये । जैसे, दर्वीकर साँप काटेगा तो काटा हुआ स्थान सूक्ष्म और काला होगा और वहाँसे खून न निकलेगा और वह जगह कछुएके जैसी होगी तथा वायुके विकार अधिक होंगे । अगर मण्डलीने काटा होगा, तो काटा हुआ स्थान स्थूल होगा, सूजन होगी, रङ्ग लाल-पीला होगा और काटी हुई जगहसे खून निकला होगा तथा रक्तपित्तके और लक्षण होंगे ।

स्त्री-सर्प—नागनके काटनेसे आदमीके अङ्ग नर्म रहते हैं, दृष्टि

नीची रहती है यानी आदमी नीचेकी तरफ देखता है, बोला नहीं जाता और शरीर काँपता है; पर अगर इसके विपरीत चिह्न हों, जैसे शरीरके अङ्ग कड़े हों, नज़र ऊपर हो, स्वर क्षीण न हो और शरीर काँपता न हो, तो समझना होगा, कि पुरुष सर्पने काटा है।

नोट—इस तरहकी पहचान वही कर सकता है, जिसे समस्त लक्षण कण्ठाग्र हो। वैद्यको ये सब बातें हर समय कंठमें रखनी चाहिये। समयपर पुस्तक काम नहीं देती। हमने सब तरहके साँपोंके काटेके लक्षण आदि, आगे, जंगम-विष-चिकित्सामें खूब समझा-समझा कर लिखे हैं।

(७) आगे लिखा है, कि साँपके चार बड़े दाँत होते हैं। दो दाँत दाहिनी ओर और दो बाँई ओर होते हैं। दाहिनी तरफके नीचेके दाँतका रङ्ग लाल और ऊपरके दाँतका काला-सा होता है। जिस रङ्ग के दाँतसे साँप काटता है, काटी हुई जगहका रङ्ग वैसा ही होता है। दाहिनी तरफके दाँतोंमें बाईं तरफके दाँतोंसे विष ज़ियादा होता है। बाईं तरफके दाँतोंका रङ्ग चरकने लिखा नहीं है। बाईं तरफके नीचेके दाँतमें जितना विष होता है, उससे बाईं तरफके ऊपरके दाँतमें दूना विष होता है, दाहिनी तरफके नीचेके दाँतमें तिगुना और उसी ओरके ऊपरके दाँतमें चौगुना विष होता है। दाहिनी ओरके नीचे ऊपरके दाँतोंमें, बाईं तरफके दाँतोंसे विष अधिक होता है। दाहिनी ओरके दोनों दाँतोंमें भी, ऊपरके दाँतमें बहुत ही ज़ियादा विष होता है और उस दाँतका रङ्ग भी श्याम या काला-सा होता है। अगर हम काटे हुए स्थानपर, साँपके ऊपरके दाहिने दाँतका चिह्न और रङ्ग देखें, तो समझ जायँगे, कि विष बहुत तेज़ है। अगर दाहिनी ओरके लाल दाँतका रङ्ग और चिह्न देखेंगे, तो विषको उससे कुछ कम समझेंगे। अगर चारों दाँत पूरे बैठे हुए देखेंगे तो भयानक दंश समझेंगे।

अगर काटा हुआ निशान ऊपरसे खूब साफ न हो, पर भीतरसे गहरा हो, गोल हो या लम्बा हो अथवा काटनेसे बैठ गया हो अथवा

एक जगहसे फूटकर दूसरी जगह भी जा फूटा हो, तो समझना होगा, यह दंश—काटना सांघातिक या प्राणनाशक है।

इस तरह काटे हुए स्थानकी रंगत और आकार-प्रकार आदिसे वैद्य विषकी तेज़ी-मन्दी और साध्यासाध्यता तथा काटने वाले सर्प की क़िस्म या जात जान सकता है। जो वैद्य ऐसी-ऐसी बातोंमें निपुण होता है वही विष-चिकित्सासे यश और धन कमा सकता है।

(८) विषकी हालतमें, अगर हृदयमें पीड़ा और जलन हो और मुँहसे पानी गिरता हो, तो अवस्थानुसार तीव्र वमन या विरेचन—क़य या दस्त करानेवाली तेज़ दवा देनी चाहिये। वमन विरेचनसे शरीरको साफ़ करके, पेया आदि पथ्य पदार्थ पिलाने चाहियें।

अगर विष सिरमें पहुँच गया हो तो बन्धुजीव—गेजुनियाके फूल, भारंगी और काली तुलसीकी जड़की नस्य देनी चाहिये।

अगर विषका प्रभाव नेत्रोंमें हो, तो पीपल, मिर्च, जवाखार, बच, सेंधा नमक और सहँजनेके बीजोंको रोहू मछलीके पित्तेमें पीसकर आँखोंमें अञ्जन लगाना चाहिये।

अगर विष कंठगत हो, तो कच्चे कैथका गूदा चीनी और शहदके साथ चटाना चाहिये।

अगर विष आमाशयगत हो, तो तगरका चार तोले चूर्ण—मिश्री और शहदके साथ पीना चाहिये।

अगर विष पक्वाशयमें हो, तो पीपर, हल्दी, दारुहल्दी और मँजीठ को बराबर-बराबर लेकर, गायके पित्तेमें पीसकर, पीना चाहिये।

अगर विष रसगत हो, तो गोहका खून और मांस सुखाकर और पीसकर कच्चे कैथके रसके साथ पीना चाहिये।

अगर विष रक्तगत हो यानी खूनमें हो तो लिहसौड़ेकी जड़की छाल, बेर, गूलर और अपराजिताकी शाखोंके अगले भाग—इनको पानीके साथ पीसकर पीना चाहिये।

अगर विष मांसगत हो—मांसमें हो, तो शहद और खदिरारिष्ट मिलाकर पीने चाहियें।

अगर विष सर्वधातुगत हो—सब धातुओंमें हो, तो खिरेंटी, नागवला, महुआके फूल, मुलहटी और तगर,—इन सबको जलमें पीस कर पीना चाहिये।

अगर विषके कारणसे सारे शरीरमें सूजन हो, तो जटामासी, केशर, तेजपात, दालचीनी, हल्दी, तगर, लालचन्दन, मैनसिल, व्याघ्र-नख और तुलसी—इनको पानीके साथ पीसकर पीने, इन्हींका लेप और अञ्जन करने तथा इन्हींकी नस्य देनेसे सूजन और विष नष्ट हो जाते हैं।

(९) घोर अँधेरेमें चींटी आदिके काटनेसे भी, मनुष्योको साँप के काटनेका वहम हो जाता है। इस वहम या आशंकासे ज्वर, वमन, मूर्च्छा, ग्लानि, जलन, मोह और अतिसार तक हो जाते हैं। ऐसे मौक़े पर, रोगीको धीरज देकर उसका झूठा भय दूर करना चाहिये। खाँड, हिंगोट, दाख, क्षीरकाकोली, मुलहटी और शहदका पना बना कर पिलाना चाहिये। इसके साथ ही मंत्र-तंत्र, दिलासा और दिल-खुश करने वाली बातोंसे भी काम लेना चाहिये।

(१०) सब तरहके विषोंमें, खानेके लिये शालि चाँवल, मुल-हटी, कोदों, प्रियंगू, सेंधानोन, चौलाई, जीवन्ती, बैंगन, चौपतिया, परवल, अमलताशके पत्ते, मटर और मूँगका यूष, अनार, आमले, हिरन, लवा, तीतरका मांस और दाह न करनेवाले पदार्थ देने चाहियें।

विष पीड़ित और विषमुक्त प्राणीको विरुद्ध भोजन, भोजन-पर-भोजन, क्रोध, भूखका वेग मारना, भय, मिहनत, मैथुन और दिनमें सोना—इनसे बचाना चाहिये।

———*———

तीसरा अध्याय।

स्थावर विषोंकी सामान्य चिकित्सा।

वेगानुसार चिकित्सा।

(१) पहले वेगमें—शीतल जल पिलाकर वमन या क़य करानी चाहिये तथा शहद और घीके साथ अगद—विष नाशक दवा—पिलानी चाहिये, क्योंकि पिया हुआ विष वमन करानेसे तत्काल निकल जाता है।

(२) दूसरे वेगमें—पहले वेगकी तरह वमन या क़य कराकर, विरेचन या जुलाब भी दे सकते हैं।

नोट—चरककी रायमें, पहले वेगमें वमन करानी और दूसरे वेगमें जुलाब देना चाहिये। सुश्रुत कहते हैं, पहले और दूसरे—दोनों वेगोंमें वमन कराकर, विषको निकाल देना चाहिये, क्योंकि वह इस समय तक आमाशयमें ही रहता है। पर, अगर ज़रूरत समझी जाय, तो चिकित्सक इस वेगमें जुलाब भी दे सकता है। चरकका अभिप्राय यह है, कि विष सामान्यतया शरीरमें फैला हो या न फैला हो, दूसरे वेगमें जुलाब देकर उसे निकाल देना चाहिये। चरक मुनि इस मौकेपर एक बहुत ही ज़रूरी बातकी ओर ध्यान दिलाते हैं। वह कहते हैं:—

पीतं वमनै सद्योहरेद्विरेकैर्द्वितीयेतु।
आदौ हृदयं रक्ष्यं तस्यावरणं पिवेद्यथालाभम्॥

पिया हुआ विष वमनसे तत्काल निकल जाता है, अतः शुरूमें किसी वमन-कारी दवासे क़य करा देनी चाहिये। विषके दूसरे वेग या दौरेमें, जुलाब देकर,

विषको निकाल देना चाहिये । लेकिन विष पीनेवाले प्राणीके हृदयकी रक्षा सबसे पहले करनी चाहिये । उसके हृदयको विषसे बचाना चाहिये, क्योंकि प्राण हृदयमें ही रहते हैं । अगर तुम और उपायोंमें लगे रहोगे, हृदय-रक्षाकी बात भूल जाओगे, हृदयको विषसे न छिपाओगे, तो तुम्हारा सब किया-कराया वृथा हो जायगा; अतः सबसे पहले हृदयको विषसे छिपाओ, हृदयको विषसे छिपानेके लिये शहद, घी. मज्जा. गेरू. गोबर, ईखका रस बकरी आदिकका खून, भस्म और मिट्टी—इनमेंसे जो उस समय मिल जाय, उसीको जहर पीनेवालेको फौरन खिला-पिला दो । इसका यह मतलब है, कि विष इन चीज़ोंमें लिपट जायगा और उसकी कारगुज़ारी इन्हींपर होती रहेगी, हृदयको नुकसान न पहुँचेगा । इनमेंसे तो आप वमन कराकर विषको निकाल ही देंगे । अगर आप पहले ही इनमेंसे कोई चीज़ न पिलाओगे, तो हृदयपर ही विषका सीधा हमला होगा । यही वजह है, कि अनुभवी वैद्य संखिया या अफीम आदि खाने वालेको सबसे पहले 'घी' पिला देते और फिर वमन कराते हैं । घी पी लेनेसे हृदयकी रक्षा हो जाती है । संखिया आदि विष, घीमें मिलकर या लिपट कर, वमन द्वारा बाहर आ पड़ते हैं ।

(३) तीसरे वेगमें—अगद या विष-नाशक दवा पिलानी चाहिये. नाकमें नस्य देनी चाहिये और आँखोंमें विष-नाशक अंजन आँजना चाहिये ।

(४) चौथे वेगमें—घी मिलाकर अगद—विष-नाशक दवा पिलानी चाहिये ।

नोट—चरकमें लिखा है, चौथेमें: कैथका रस, शहद और घीके साथ गोबर का रस पिलाना चाहिये ।

(५) पाँचवें वेगमें—शहद और मुलहठीके काढ़ेमें अगद—विष-नाशक दवा—मिलाकर पिलानी चाहिये ।

(६) छठे वेगमें—दस्त बहुत होते हैं, इसलिये अगर विष बाकी हो, तो वैद्यको उसे निकाल देना चाहिये । अगर न हो, तो अतिसार का इलाज करके दस्तोंको बन्द कर देना चाहिये । इसके सिवा, अव-पीड़-नस्यको काममें लाना चाहिये; क्योंकि नस्य देनेसे होश-हवास ठीक हो सकते हैं ।

(७) सातवें वेगमें—कन्धे टूट जाते हैं; पीठ और कमरमें बल नहीं रहता और श्वास रुक जाता है, यह अवस्था निराशाजनक है। अतः इस अवस्थामें वैद्यको कोई उपाय न करना चाहिये, पर बहुत बार ऐसे भी बच जाते हैं। 'जब तक साँसा तब तक आसा' इस कहावतके अनुसार अगर उपाय करना हो, तो रोगीके घरवालोंसे यह कहकर कि, अब आशा तो नहीं है, मामला असाध्य है, पर हम राम भरोसे उपाय करते हैं—वैद्यको अवपीड़ नस्यका प्रयोग करना चाहिये और सिरमें कव्वेके पञ्जेका-सा चिह्न बनाकर उसपर खून समेत ताजा माँस रखना चाहिये। इसीको "काक पद करना" कहते हैं। यह आख़िरी उपाय है। इस उपायसे रोगी जीता है या मर गया है, यह भी मालूम हो जाता है और अगर ज़िन्दगी होती है, तो साँस की रुकावट भी खुल जाती है। अगर इस उपायसे साँस आने लगे, तो फिर और उपाय करके रोगीको बचाना चाहिये। अगर "काक पद" से भी कुछ न हो, तो बस मामला ख़तम समझना चाहिये या ऐसी निराश अवस्थामें, अगर रोगी जीवित हो, तो जहरीले साँपसे कटाना चाहिये क्योंकि "विपस्य विषमौषधम्" कहावतके अनुसार, विषसे विषके रोगी आराम हो जाते हैं। अगर साँपसे कटा न सको तो साँप का जहर रोगीके शरीरकी शिरा या नसमें पेवस्त करो, यानी शरीरमें, किसी स्थानपर चीरकर, खून बहाने वाली नसपर साँपके ज़हरको लगा दो। वह विष खूनमें मिलकर, सारे शरीरमें फैल जायगा और खाये-पिये हुए स्थावर विषके प्रभावको नष्ट करके, रोगीको बचा देगा। इसीको "प्रतिविष चिकित्सा" कहते हैं। स्थावर विष जंगम विषके विपरीत गुणों वाला होता है और जंगम विष स्थावरके विपरीत होता है। स्थावर या मूलज विष ऊपरकी ओर दौड़ता है और जंगम नीचेकी तरफ़ दौड़ता है।

स्थावर विष नाशक नुसखे ।

अमृताख्य घृत ।

ओंगेके बीज, सिरसके बीज, दोनों श्वेता और मकोय—इन पाँचों को गोमूत्रमें पीसकर, लुगदी बना लो। लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना दूध लेकर, घीकी विधिसे घी पका लो। इस घीके पीने से स्थावर और जंगम दोनों तरहके विष शान्त होते हैं। सुश्रुतमें लिखा है, इस घीके पीनेसे विषसे मरे हुए भी जी जाते हैं। सुश्रुतमें स्थावर विष-चिकित्सामें भी इसके सेवन करनेकी राय दी है और जंगम विषकी चिकित्साके अध्यायमें तो यह लिखा ही है। इससे स्पष्ट मालूम होता है, कि यह घी स्थावर विषके सिवा, सर्प प्रभृति अनेक विषैले जानवरोंके विषपर भी दिया जाता है।

नोट—दोनो श्वेताओंका अर्थ किसी टीकाकारने मेदा, महामेदा और किसी ने कटभी, महाकटभी लिखा है और श्वेता स्वयं भी एक दवा है।

महासुगन्धि अगद ।

सफेद चन्दन, लालचन्दन, अगर, कूट, तगर, तिलपर्णी, प्रपौंडरीक, नरसल, सरल, देवदारु, सफेद चन्दन, दूधी, भारंगी, नीली, सुगन्धिका—नाकुली, पीला चन्दन, पद्माख, मुलेठी, सोंठ, जटा—रुद्र जटा, पुन्नाग, इलायची, एलवालुक, गेरू, ध्यामकतृण, खिरेंटी, नेत्रवाला, राल, जटामांसी, मल्लिका, हरेणुका, तालीसपत्र, छोटी इलायची, प्रियंगु, स्योनाक, पत्थरका फूल, शिलारस, पत्रज, कालानुसारिवा—तगर का भेद, सोंठ, मिर्च, पीपर, कपूर, खँभारी, कुटकी, बाकुची, अतीस, कालाज़ीरा, इन्द्रायण, खस, वरण, मोथा, नख, धनिया, दोनों श्वेता, हल्दी, दारुहल्दी, थुनेरा, लाख, सेंधानोन, संचर नोन, बिड़ नोन, समन्दरनोन और कचिया नोन, कमोदिनी, कमलपद्म, आकके फूल, चम्पाके फूल, अशोकके फूल, तिल-वृत्तका पञ्चाङ्ग, पाटल, सम्भल,

लिहसौड़ा, सिरस, तुलसी, केतकी और सिंभालू—इन सातोंके फूल, धवके फूल, महासर्जके फूल, तिनिशके फूल, गूगल, केशर, कँदूरी, सर्पाची और गन्धनाकुली—इन ८५ दवाओंको महीन कूट-पीस कर छान लो। फिर गोरोचन, शहद और घी मिलाकर, सींगमें भरकर, सींगसे ही बन्द करके रख दो।

जिस मनुष्यके कन्धे टूट गये हों, नेत्र फट गये हों, मृत्यु-मुखमें पतित हो गया हो उसको भी वैद्य इस श्रेष्ठ अगदसे जिला सकता है। यह अगद सब अगदोंका राजा है और राजाओंके हाथोमें रहने योग्य है। इसके शरीरमें लेपन करनेसे राजा सब मनुष्यों का प्यारा हो सकता है और इन्द्रादि देवताओंके बीचमें भी कान्ति-वान मालूम हो सकता है। और क्या, अग्निके समान दुर्निवार्य, क्रोधयुक्त, अप्रमित तेजस्वी नागपति वासुकीके विषको भी यह अगद नष्ट कर सकता है।

रोग नाश—इस अगदसे स्थावर और जंगम सब तरहके विष नाश होते है।

सेवन विधि—घी, शहद या दूध वग़ैरःमें मिला कर इसे रोगीको पिलाना चाहिये। इसको लेप, अंजन और नस्यके काममें भी लाते हैं।

अपथ्य—राब, सोहंजना, काँजी, अजीर्ण, नया धान, भोजन-पर-भोजन, दिनमें सोना, मैथुन, परिश्रम, कुल्थी, क्रोध, धूम, मदिरा और तिल—इन सबको त्यागना चाहिये।

पथ्य—चिकित्सा होते समय, पृष्ठ ३२ में लिखी "विषघ्न यवागू" देनी चाहिये। आराम होनेपर हितकारी अन्न-पान विचारकर देने चाहियें।

मृत सञ्जीवनी।

स्पृका—असवरग, केवटी मोथा गठोना, फिटकरी, भूरिछरीला, पत्थर-फूल, गोरोचन, तगर, रोहिष तृण—रोहिसघास, केशर, जटा-मासी, तुलसीकी मञ्जरी, बड़ी इलायची, हरताल, पँवारके बीज, बड़ी

कटेरी, सिरसके फूल, सरलका गोंद—गन्दाबिरोजा, स्थल-कमल, इन्द्रायण, देवदारु, कमल-केशर, सादा लोध, मैनसिल, रेणुका, चमेलीके फूलोंका रस, आकके फूलोंका रस, हल्दी, दारुहल्दी, हींग, पीपर, लाख, नेत्रवाला, मूँगपर्णी, लाल चन्दन, मैनफल, मुलहटी, निर्गुण्डी—सम्हालू, अमलताश, लाल लोध, चिरचिरा, प्रियंगू, नाकुली—रास्ना और बायविडङ्ग—इन ४३ दवाओंको, पुष्य नक्षत्र में लाकर, बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर पानीके साथ खरल करके गोलियाँ बना लो।

रोग नाश—इस 'मृतसञ्जीवनी'के पीने, लेप करने, तमाखूकी तरह चिलममें रखकर पीनेसे सब तरहके विष नष्ट होते हैं। यह विषसे मरे हुएके लिये भी जिलाने वाली है। इसके घरमें रहनेसे ही विषैले जीव और भूत-प्रेत, जादू-टोना आदिका भय नहीं रहता और लक्ष्मी आती है। ब्रह्माने अमृत-रचनाके पहले इसे बनाया था।

नोट—यह मृतसंजीवनी चरकमें लिखी है और चक्रदत्तमें भी लिखी है। पर चक्रदत्त और चरकमें दो-चार चीजोंका भेद है। इसकी सभीने बड़ी प्रशंसा की है। इसमें ऐसी कोई दवा नहीं है, जो न मिल सके; अतः वैद्योंको इसे घरमें रखना चाहिये। यह मृतसञ्जीवनी विषकी सामान्य चिकित्सामें काम आती है; यानी स्थावर और जंगम दोनों तरहके विष इससे नष्ट होते हैं। गृहस्थ लोग भी इसे काममें ला सकते हैं।

विषघ्न यवागू।

जंगली कड़वी तोरई, अजमोद, पाठा, सूर्यवल्ली, गिलोय, हरड़, सरस, कटभी, लिहसौड़े, श्वेतकन्द, हल्दी, दारुहल्दी, सफेद और लाल पुनर्नवा, हरेणु, सोंठ, मिर्च, पीपर, काला और सफेद सारिवा तथा खिरेंटी—इन २१ दवाओंको लाकर काढ़ा बना लो। फिर इस काढ़ेके साथ यवागू पका लो। इस यवागूके पीनेसे स्थावर और जंगम दोनों तरहके विष नाश होते हैं।

पीछे लिखे हुए स्थावर विषके वेगोंके बीचमें, वेगोंका इलाज

करके, घी और शहदके साथ, यह यवागू शीतल करके पिलानी चाहिये । इसी तरह सर्प-विषके वेगोंकी चिकित्साके बीचमें भी, यही यवागू पिलायी जा सकती है । इस यवागूमें शोधन, शमन और विषनाशक चीजें हैं ।

अजेय घृत ।

मुलेठी, तगर, कूट, भद्र दारु, पुन्नाग, एलवालुक, नागकेशर, कमल, मिश्री, बायविडङ्ग, चन्दन, तेजपात, प्रियंगू, श्यामक, हल्दी, दारुहल्दी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, काला सारिवा, सफेद सारिवा, शालपर्णी और पृश्नपर्णी—इन सबको सिलपर पीसकर लुगदी या कल्क बना लो । जितना कल्क हो, उससे चौगुना घी लो और घीसे चौगुना गायका दूध लो । पीछे लुगदी, घी और दूधको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ, जब घी मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर रख दो ।

इस अजेय घृतसे सब तरहके विष नष्ट होते हैं । स्थावर विष खाने वालोंको इसे अवश्य सेवन करना चाहिये ।

महागन्ध हस्ती अगद ।

तेजपात, अगर, मोथा, बड़ी इलायची, राल गूगल, अफीम, शिलारस, लोवान, चन्दन, स्पृक्का, दालचीनी, जटामासी, नरसल, नीलाकमल, सुगन्धबाला, रेणुका, खस, व्याघ्र-नख, देवदारु, नागकेशर, केशर, गन्धतृण, कूट, फूल-प्रियंगू, तगर, सिरसका पञ्चाङ्ग, सोंठ, पीपर, मिर्च, हरताल, मैनशिल, काला ज़ीरा, सफेद कोयल, कटभी, करंज, सरसों, सम्हालू, हल्दी, तुलसी, रसौत, गेरु, मँजीठ, नीमके पत्ते, नीमका गोंद, बाँसकी छाल, असगन्ध, हींग, कैथ, अम्लवेत, अमलताश, मुलहटी, महुआके फूल, बावची, बच, मूर्वा, गोरोचन और तगर—इन सब दवाओंको महीन पीस, गायके पित्तेमें मिला, पुष्य नक्षत्रमें, गोलियाँ बनानी चाहियें ।

रोगनाश—इस दवाको पीने, आँजने और लेपकी तरह लगानेसे सब तरहके साँपोंके विष, चूहोंके विष, मकड़ियोंके विष और मूलज

कन्दज आदि स्थावर विष आराम होते हैं। इस दवाको सारे शरीर में लगा कर, मनुष्य साँपको पकड़ ले सकता है। जिसका काल आ गया है, वह विष खानेवाला मनुष्य भी इसके प्रभावसे बच सकता है। अगर विष-रोगी बेहोश हो, तो इस दवाको भेरी मृदङ्ग आदि बाजोंपर लेप करके, उसके कानोंके पास उन बाजोंको बजाओ। अगर रोगी देखता हो, तो छत्र और ध्वजा पताकाओं पर इसको लगा कर रोगीको दिखाओ। इस तरह करनेसे हर तरहका भयानक-से-भयानक विष वाला रोगी आराम हो सकता है। यह दवा अनाह—पेट फूलनेके रोगमें मलद्वार—गुदामें, मूढ गर्भवाली स्त्रीकी योनिमें और मूर्च्छावालेके ललाटपर लेप करनी चाहिये। इन रोगोंके सिवा, इस दवासे विषमज्वर, अजीर्ण, हैज़ा, सफेद कोढ़, विशूचिका, दाद, खाज, रतौंधी, तिमिर, काँच, अर्बुद और पटल आदि अनेकों रोग नष्ट होते हैं। जहाँ यह दवा रहती है, वहाँ लक्ष्मी अचला होकर निवास करती है, पर पथ्य पालन ज़रूरी है। —चरक।

क्षारागद।

गेरू, हल्दी, दारुहल्दी, मुलेठी, सफेद तुलसीकी मञ्जरी, लाख, सेंधानोन, जटामासी, रेणुका, हींग, अनन्तमूल, सारिवा, कूट, सोंठ, मिर्च, पीपर और हींग—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस लो। फिर इनके वज़नसे चौगुना तरुण पलाशके वृक्षके खारका पानी लो। सबको मिला कर, मन्दाग्निसे पकाओ, जब तक सब चीज़ें आपसमें लिपट न जायें; पकाते रहो। जब गोली बनाने योग्य पाक हो जाय, एक-एक तोलेकी गोलियाँ बना लो और छायामें सुखा लो।

रोग नाश—इन गोलियोंके सेवन करनेसे सब तरहके—स्थावर और जंगम—विष, सूजन, गोला, चमड़ेके दोष, बवासीर, भगन्दर, तिल्ली, शोष, मृगी, कृमि, भूत, स्वरभंग, खुजली, पाण्डु रोग, मन्दाग्नि, खाँसी और उन्माद—ये नष्ट होते हैं।

नोट—(१) यह क्षारागद "चरक" की है। चरकने विषके तीसरे वेगमें

इसको देनेकी राय दी है और इसे सामान्य विष-चिकित्सामें लिखा है, अतः यह स्थावर और जंगम दोनों तरहके विषोंपर दी जा सकती है।

(२) तरुण पलाश या नवीन ढाकके खारको चौगुने या छै गुने जलमें घोलो और २१ बार छानो। फिर इसमेंसे, दवाओंसे चौगुना, जल ले लो और दवाओंमें मिलाकर पकाओ। खार बनानेकी विधि हमने इसी भागमें आगे लिखी है। फिर भी संक्षेपसे यहाँ लिख देते हैं:—जिसका क्षार बनाना हो, उसे जड़से उखाड़कर छायामें सुखा लो। फिर उसको जलाकर भस्म कर लो। भस्म को एक बासनमें दूना पानी डालकर ६ घण्टे तक भीगने दो। फिर उसमेंके पानी को धीरे-धीरे दूसरे बासनमें नितार और छान लो, राखको फेंक दो। एक घण्टे बाद, इस साफ़ पानीको कढ़ाहीमें नितारकर, चूल्हेपर चढ़ा दो और मन्दी आग लगने दो। जब सब पानी जल जाय, बूँद भी न रहे, कढ़ाहीको उतार लो। कढ़ाहीमें लगा हुआ पदार्थ ही खार या क्षार है, इसे खुरच कर रख लो।

संक्षिप्त स्थावर-विष-चिकित्सा।

(१) स्थावर विषसे रोगी हुए आदमीको, "बलपूर्वक" वमन करानी चाहिये; क्योंकि उसके लिये वमनके समान कोई और दवाई नहीं है। वमन कराना ही उसका सबसे अच्छा इलाज है।

नोट—चूँकि विष अत्यन्त गरम और तीक्ष्ण है; इसलिये सब तरहके विषों में शीतल सेचन करना चाहिये। विष अपनी उष्णता और तीक्ष्णता—गरमी और तेज़ी—के कारण, विशेष कर, पित्तको कुपित करता है; अतः वमन करानेके बाद शीतल जलसे सेचन करना चाहिये।

(२) विष-नाशक दवाओं अथवा अगदोंको घी और शहदके साथ, तत्काल, पिलाना चाहिये।

(३) विष वालेको खट्टे रस खानेको देने चाहियें। शरीरमें गोल मिर्च पीसकर मलनी चाहियें। भोजन-योग्य होनेपर, लाल शालि चाँवल, साँठी चाँवल, कोदों और काँगनी—पकाकर देनी चाहियें।

(४) जिन-जिन दोषोंके चिह्न या लक्षण अधिक नज़र आवें, उन-

उन दोषोंके गुणोंसे विपरीत गुणवाली दवायें देकर, स्थावर विषका इलाज करना चाहिये ।

(५) सिरसकी छाल, जड़, पत्ते, मूल और बीज, इन पाँचोंको गोमूत्रमें पीसकर, शरीरपर लेप करनेसे विष नष्ट हो जाता है ।

(६) खस, वालछड़, लोध, इलायची, सज्जी, कालीमिर्च, सुगन्धवाला, छोटी इलायची और पीला गेरू—इन नौ दवाओंके काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे दूपी विष नष्ट हो जाता है ।

नोट—दूपी विष वाले रोगीको स्निग्ध करके और वमन-विरेचनसे शोधन करके, ऊपरका काढ़ा पिलाना चाहिये ।

सर्व विष-नाशक नुसखे ।

(१) गरम जलसे वमन कराने और वारम्वार घी और दूध पिलानेसे ज़हर उतर जाता है ।

(२) हरी चौलाईकी जड़ १ तोले लेकर और पानीमें पीसकर, गायके घीके साथ खानेसे गरम ज़हर उतर जाता है ।

नोट—अगर चौलाईकी जड सूखी हो, तो ६ माशे लेनी चाहिये ।

(३) गायका घी चालीस माशे और लाहौरी नमक ८ माशे—इनको मिलाकर पिलानेसे सव तरहके ज़हर उतर जाते हैं । यहाँ तक, कि साँपका विप भी शान्त हो जाता है ।

(४) छोटी कटाई पीसकर खानेसे ज़हर उतर जाता है ।

(५) एक माशे दरियाई नारियल पीसकर खिलानेसे सव तरहके ज़हर उतर जाते हैं ।

(६) बिनौलोंकी गिरीको कूट-पीसकर और गायके दूधमें औटाकर पिलानेसे अनेक प्रकारके ज़हर उतर जाते है ।

(७) कसेरू खानेसे ज़हर उतर जाते हैं ।

(८) अजवायन खानेसे अनेक प्रकारके ज़हर उतर जाते हैं ।

(९) बकरीकी मैंगनी जलाकर खाने और लेप करनेसे अनेक प्रकारके विष नष्ट हो जाते हैं।

(१०) मुर्गेकी बीट पानीमें मिलाकर पिलाते ही, कय होकर, विष निकल जाता है।

(११) काली मिर्च, नीमके पत्ते और सेंधानोन तथा शहद और घी—इन सबको मिलाकर पीनेसे स्थावर और जंगम दोनों तरहके विष शान्त हो जाते हैं।

(१२) शुद्ध बच्छनाभ विष, सुहागा, काली मिर्च और शुद्ध नीला-थोथा—इन चारोंको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर खरलमें डाल, ऊपरसे "बन्दाल" का रस दे-देकर घोटो। जब घुट जाय, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मनुष्यके मूत्र या गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे कन्दादिके विषकी पीड़ा तथा और ज़हरोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है। इतना ही नहीं, घोर ज़हरी काले साँपका जहर भी इन गोलियोंके सेवन करनेसे उतर जाता है। यह नुसख़ा साँपके जहरपर परीक्षित है।

नोट—विष खाये हुए रोगीको शीतल स्थानमें रखने, शीतल सेक और शीतल उपचार करनेसे विष-वेग निश्चय ही शान्त हो जाते हैं। कहा है:—

शीतोपचारा वा सेकाः शीताः शीतस्थलस्थितिः ।
विषार्त्तु विषवेगानां शान्त्यै स्युरमृत यथा ॥

(१३) कड़वे परवल घिसकर पिलानेसे कय होती हैं और विष निकल जाता है।

(१४) कड़वी तूम्बीके पत्ते या जड़ पानीमें पीसकर पिलानेसे वमन होकर विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(१५) कड़वी घिया तोरईकी बेलकी जड़ अथवा पत्तोंका काढ़ा "शहद" मिलाकर पिलानेसे समस्त विष नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१६) कड़वी तोरईके काढ़ेमें घी डालकर पीनेसे वमन होती और विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(१७) करौंदेके पत्ते पानीमें पीसकर पिलानेसे ज़हर खानेवाले को क़य होती हैं, पर जिसने ज़हर नहीं खाया होता है, केवल शक होता है, उसे कय नहीं होतीं।

(१८) सत्यानाशीकी जड़की छाल खानेसे साधारण विष उतर जाता है।

(१९) नीमकी निबौलियोंको गरम जलके साथ पीसकर पीने से संखिया आदि स्थावर विष शान्त हो जाते हैं।

चौथा अध्याय।

विष और उपविषोंकी विशेष चिकित्सा।

जिस तरह अनेक प्रकारके विष होते हैं, उसी तरह मुख्यतया सात प्रकारके उपविष माने गये हैं।

कहा है—

> अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरंलांगली करवीरकः।
> गुञ्जाहिफेनी धत्तूरः सप्तोपविष जातयः॥

आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी, कनेर, चिरमिटी, अफीम और धतूरा ये सात उपविष हैं।

ये सातों उपविष बड़े कामकी चीज़ हैं और अनेक रोगोंको नाश करते हैं; पर अगर ये बेक़ायदे सेवन किये जाते हैं, तो मनुष्यको मार देते हैं।

नीचे, हम वत्सनाभ विष प्रभृति विष और उपरोक्त उपविषों तथा अन्य विष माने जाने योग्य पदार्थोंका वर्णन, उनकी शान्तिके उपायों-सहित, अलग-अलग लिखते हैं। हम इन विष-उपविषोंके चन्द प्रयोग या नुसख़े भी साथ-साथ लिखते हैं, जिससे पाठकोंको डबल लाभ हो। आशा है, पाठक इनसे अवश्य काम लेंगे और विष-पीड़ित प्राणियोंकी प्राणरक्षा करके यश, कीर्त्ति और पुण्यके भागी होंगे।

वत्सनाभ-विषका वर्णन और उसकी शान्तिके उपाय ।

आजकल सुश्रुतके १३ या भावप्रकाशके ९ कन्द-विषोंमेंसे वत्सनाभ विष और शृंगी विषका उपयोग जियादा होता है। ये दोनो विष अलग-अलग होते हैं, पर आजकलके पसारी दोनोंको एक ही समझते हैं। सींगके आकारकी जड़, जो रंग में काली और तोड़नेमें कुछ चमकदार होती है, उसे ही दोनो नामो से दे देते हैं। इनको मीठा विष या तेलिया भी कहते हैं।

"भावप्रकाश"में लिखा है, वच्छनाभ विष सम्हालूके-से पत्तों वाला और बछड़ेकी नाभिके समान आकार वाला होता है। इसके वृक्षके पास और वृक्ष नहीं रह सकते।

"सुश्रुत"में लिखा है, वत्सनाभ विषसे ग्रीवा-स्तम्भ होता है तथा मल-मूत्र और नेत्र पीले हो जाते हैं। सींगिया विषसे शरीर शिथिल हो जाता, जलन होती और पेट फूल जाता है।

वच्छनाभ विष अगर बेक़ायदे या ज़ियादा खाया जाता है, तो सिर घूमने लगता है, चक्कर आते हैं, शरीर सूना हो जाता और सूखने लगता है। अगर विष बहुत ही ज़ियादा खाया जाता है, तो हलक़में सूनापन, झंझनाहट और रुकावट होती तथा क़य और दस्त भी होते हैं। इसका जल्दी ही ठीक इलाज न होनेसे खानेवाला मर भी जाता है।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है, बीश—वत्सनाभ विष एक विषैली जड़ है। यह बड़ी तेज़ और मृत्युकारक है। इसके अधिक या अयोग्य रीतिसे खानेसे होठ और जीभमें सूजन, श्वास, मूर्च्छा, घुमरी और मिर्गी रोग तथा बलहानि होती है। इससे मरनेवाले मनुष्यके फेफड़ोंमें घाव और विषमज्वर होते हैं।

"वैद्यकल्पतरु"में एक सज्जन लिखते हैं, बच्छनाभको अँगरेज़ीमें "एकोनाइट" कहते हैं। इसके खानेसे—होठ, जीभ और मुँहमें झनझनाहट और जलन, मुँहसे पानी छूटना और कय होना, शरीर काँपना, नेत्रोंके सामने अँधेरा आना, कानोंमें ज़ोरसे सनसनाहटकी आवाज़ होना, छूनेसे मालूम न पड़ना, बेहोश होना, साँसका धीरा पड़ना, नाड़ीका कमज़ोर और छोटी होना, साँस द्वारा निकली हवा का शीतल होना, हाथ-पैर ठण्डे हो जाना और अन्तमें खिंचावके साथ मृत्यु हो जाना,—ये लक्षण होते हैं।

शान्तिके उपायः—

(१) कय करानेका उपाय करो।

(२) आध-आध घण्टेमे तेज़ काफी पिलाओ।

(३) गुदाकी राहसे, पिचकारी द्वारा, साबुन-मिला पानी भरकर आँतें साफ करो।

(४) घी पिलाओ।

यद्यपि विष प्राणनाशक होते हैं; पर वे ही अगर युक्तिपूर्वक सेवन किये जाते हैं, तो मनुष्यका बल-पुरुषार्थ बढ़ाते, त्रिदोष नाश करते और साँप वगैरः उग्र विषवाले जीवोंके काटनेसे मरते हुओंकी प्राणरक्षा करते हैं; पर विषोंको शोध कर दवाके काममें लेना चाहिये, क्योंकि अशुद्ध विषमें जो दुर्गुण होते हैं, वे शोधनेसे हीन हो जाते हैं।

विष-शोधन-विधि।

विषके छोटे-छोटे टुकड़े करके, तीन दिन तक, गोमूत्रमें भिगो रखो। फिर उन्हें साफ पानीसे धो लो। इसके बाद, लाल सरसोंके तेलमें भिगोये हुए कपड़ेमें उन्हें बाँध कर रख दो। यह विधि "भाव-प्रकाश"में लिखी है।

अथवा

विषके टुकड़े करके उन्हें तीन दिन तक गोमूत्रमें भिगो रखो

फिर उन्हें साफ पानीसे धोकर, एक महीन कपड़ेमें बाँध लो। फिर एक हाँडीमें बकरीका मूत्र या गायका दूध भरदो। हाँडीपर एक आड़ी लकड़ी रख कर, उसीमें उस पोटलीको लटका दो। पोटली दूध या मूत्रमे डूबी रहे। फिर हाँडीको चूल्हेपर चढ़ा दो और मन्दाग्निसे तीन घण्टे तक पकाओ। पीछे विषको निकाल कर धो लो और सुखाकर रख दो। आजकल इसी विधिसे विष शोधा जाता है।

नोट—अगर विषको गायके दूधमे पकाओ तो जब दूध गाढ़ा हो जाय या फट जाय, विषको निकाल लो और उसे शुद्ध समझो।

मात्रा

चार जौ-भर विषकी मात्रा हीन मात्रा है, छै जौ-भरकी मध्यम और आठ जौ-भरकी उत्कृष्ट मात्रा है। महाघोर व्याधिमें उत्कृष्ट मात्रा, मध्यममें मध्यम और हीनमें हीन मात्रा दो। उग्र कीट-विष निवारणको दो जौ-भर और मन्द विष या बिच्छूके काटने पर एक तिल-भर विष काममें लाओ।

विषपर विष क्यों ?

जब तंत्र मंत्र और दवा किसीसे भी विष न शान्त हो, तब पाँचवें वेगके पीछे और सातवें वेगके पहले, ईश्वरसे निवेदन करके, और किसीसे भी न कह कर, घोर विपद्के समय, विषकी उचित मात्रा रोगीको सेवन कराओ।

स्थावर विष प्रायः कफके तुल्य गुणवाले होते हैं और ऊपरकी ओर जाते है, यानी आमाशय वग़ैरःसे खून वग़ैरःकी तरफ जाते हैं और जंगम विष प्रायः पित्तके गुणवाले होते हैं और खूनमें मिल कर भीतरकी तरफ जाते हैं। इस तरह एक विष दूसरेके विपरीत गुण वाला होता है और एक दूसरेको नाश करता है; इसीसे साँप आदि के काटनेपर जब भयङ्कर अवस्था हो जाती है; कोई उपाय काम नहीं देता, तब बच्छनाभ या सींगिया विष खिलाते, पिलाते और लगाते हैं।

इसी तरह जब कोई स्थावर विष—बच्छनाभ, अफीम आदि—खा लेता है और किसी उपायसे भी आराम नहीं होता, रोगी अब-तबकी हालतमें हो जाता है, तब साँपसे उसे कटवाते हैं; क्योंकि विषकी अत्यन्त असाध्य अवस्थामें एक विषको दूसरा प्रतिविष ही नष्ट कर सकता है। कहते भी हैं,—"विषस्य विषमौषधम्" अर्थात् विषकी दवा विष है।

अनुपान।

तेज़ विष खिला-पिलाकर रोगीको निरन्तर "घी" पिलाना चाहिये। भारङ्गी, दहीके मंडसे निकाला हुआ मक्खन, सारिवा और चौलाई,—ये सब भी खिलाने चाहियें।

नित्य विष-सेवन-विधि।

घीसे स्निग्ध शरीर वाले आदमीको, वमन-विरेचन आदिसे शुद्ध करके, रसायनके गुणोंकी इच्छासे, नित्य, बहुत ही थोड़ी मात्रामें, शुद्ध विष सेवन करा सकते हैं। विष-सेवन करनेवाले सात्विक मनुष्यको, शीतकाल और वसन्त ऋतुमें, सूर्योदयके समय, विष उचित मात्रामें, सेवन कराना चाहिये। अगर बीमारी बहुत भारी हो, तो गरमीके मौसममें भी विष सेवन करा सकते हैं, पर वर्षाकाल या बदली वाले दिनोंमें तो, किसी हालतमें भी, विष सेवन नहीं करा सकते।

विष सेवनके अयोग्य मनुष्य।

नीचे लिखे हुए मनुष्योंको विष न सेवन कराना चाहियेः—

(१) क्रोधी, (२) पित्त दोषका रोगी, (३) जन्मका नामर्द, (४) राजा, (५) ब्राह्मण, (६) भूखा, (७) प्यासा, (८) परिश्रम या राह चलनेसे थका हुआ, (९) गरमीसे पीड़ित, (१०) संकर रोगी, (११) गर्भवती, (१२) बालक, (१३) बूढ़ा, (१४) रूखी देह वाला, और (१५) मर्मस्थानका रोगी।

नोट—मर्मस्थानके रोगमें विष न सेवन कराना चाहिये और मर्मस्थानोंके ऊपर इसका लेपन आदि भी न करना चाहिये।

विष सेवनपर अपथ्य ।

यदि विप खानेका अभ्यास भी हो जाय, तो भी लालमिर्च आदि चरपरे पदार्थ, खट्टे पदार्थ, तेल, नमक, दिनमें सोना, धूपमें फिरना और आग तापना या आगके सामने बैठना—इनसे विष सेवन करने वाले को अलग रहना चाहिये। इनके सिवा, रूखा भोजन और अजीर्ण भी हानिकारक है, अतः इनसे भी बचना उचित है; क्योंकि जो मनुष्य विप सेवन करता है, पर रूखा भोजन करता है, उसकी दृष्टिमें भ्रम, कानमें दर्द और वायुके दूसरे आक्षेपक आदि रोग हो जाते हैं। इसी तरह विष सेवनपर अजीर्ण होनेसे मृत्यु हो जाती है।

कुछ रोगोंपर विषका उपयोग ।

नीचे हम "वृद्धवाग्भट्ट" आदि ग्रन्थोंसे ऐसे नुसख़े लिखते हैं, जिनमें विप मिलाया जाता है और विपकी वजहसे उनकी शक्ति बहुत जियादा बढ़ जाती है:—

(१) दन्ती, निसोथ, त्रिफला, घी, शहद और शुद्ध वत्सनाभ-विप—इनके संयोगसे बनाई हुई गोलियाँ जीर्ण-ज्वर, प्रमेह और चर्मरोगोको नाश करती हैं।

(२) शुद्ध विप, मुलेठी, रास्ना, ख़स और कमलका कन्द—इनको मिलाकर, चाँवलोंके साथ, पीनेसे रक्तपित्त नाश होता है।

(३) शुद्ध सींगिया विप, रसौत, भारंगी, वृश्चिकाली और शालिपर्णी—इन्हें पीसकर, उस दुष्ट व्रण या सड़े हुए घावपर लगाओ, जिसमें बड़ा भारी दर्द हो और जो पकता हो।

(४) मिश्री, शुद्ध सींगिया विप तथा बड़, पीपर, गूलर, पाखर और पारसपीपर—इन दूधवाले वृक्षोंकी कोंपल, इन सबको पीस कर और शहदमें मिलाकर चाटनेसे श्वास और हिचकी रोग नष्ट होजाते हैं।

(५) शहद, ख़स, मुलेठी, जवाखार, हल्दी और कुड़ेकी छाल—इनमें शुद्ध सींगिया विप मिलाकर चाटनेसे वमन रोग शान्त हो जाता है।

(६) शुद्ध शिलाजीतमें शुद्ध सींगिया विष मिलाकर, गोमूत्रके साथ, सेवन करनेसे पथरी और उदावर्त्त रोग नाश हो जाते हैं।

(७) बिजौरे नीबूका रस, बच, ब्राह्मीका रस, घी और शुद्ध सींगिया विष—इन सबको मिलाकर, अगर बाँझ स्त्री पीवे तो उसके बहुतसे पुत्र हों। कहा है—

स्वरसं बीजपूरस्य बचा ब्राह्मी रस घृत।
वन्ध्या पिबंती सविष सुपुत्रैः परिवार्यते॥

(८) दाख, कौंचके बीजोंकी गिरी, बच और शुद्ध सींगिया विष—इन सबको मिलाकर सेवन करनेसे जिसका वीर्य नष्ट हो जाता है, उसके बहुत-सा वीर्य पैदा हो जाता है।

(९) काकोदुम्बर या कठूमरकी जड़के काढ़ेके साथ शुद्ध सींगिया विष सेवन करने से कोढ़ जाता रहता है।

(१०) पोहकरमूल, पीपर और शुद्ध सींगिया विष—इन तीनों को गोमूत्रके साथ पीनेसे शूल रोग नष्ट हो जाता है।

(११) त्रिफला, सज्जीखार और शुद्ध वत्सनाभ विष—इनको मिला कर यथोचित अनुपानके साथ सेवन करनेसे गुल्म या गोलेका रोग नाश हो जाता है।

(१२) शुद्ध सींगिया विषको आमलोंके स्वरसकी सात भावनायें दो और सुखा लो। फिर उसे शंखके साथ घिस कर आँखोंमें आँजो। इससे नेत्रोंका तिमिर रोग नाश हो जाता है।

(१३) शुद्ध सींगिया विष, हरड़, चीतेकी जड़की छाल, दन्ती, दाख और हल्दी—इनको मिलाकर सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाता है।

(१४) कड़वे तेलमें शुद्ध वत्सनाभ विष पीस कर नस्य लेनेसे पलित रोग और अरुंषिका रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—असमयमें बाल सफेद होनेको पलित रोग कहते हैं। कफ, रक्त और कृमि—इनके कोपमें सिरमें जो बहुतसे मुँहवाले और क्लेदयुक्त व्रण हो जाते हैं, उनको अरुंषिका कहते हैं। नं० १४ नुसखेसे असमयमे बालोंका सफेद होना और सिरके अरुंषिका नामक व्रण—ये दोनों रोग नष्ट हो जाते हैं।

(१५) सज्जीखार, सेंधानोन और शुद्ध सींगिया विष—इन्हें सिरके में मिलाकर, कानोंमें डालनेसे कानकी घोर पीड़ा शान्त हो जाती है।

(१६) देवदारु, शुद्ध सींगिया या वत्सनाभ विष, गोमूत्र, घी और कटेहली—इनके पीनेसे बोलनेमें रुकना या हकलाना—आराम हो जाता है।

सूचना—पूरे अनुभवी वैद्योंके सिवा, मामूली आदमी ऊपर लिखे नुसख़े न स्वयं सेवन करें और न किसी और को दें अथवा बतलावें। अनुभवी वैद्य भी ख़ूब सोच-विचारकर, बहुत ही हल्की मात्रा में, देने योग्य रोगीको उस अवस्थामें इन्हें दें, जब कि रोग एकदमसे असाध्य हो गया हो और आराम होने की उम्मीद ज़रा भी न हो। विष-सेवन करानेमें इस बातका बहुत ही ध्यान रहना चाहिये, कि रोग और रोगीके बलाबलसे अधिक मात्रा न दी जाय। ज़रा-सी भी असावधानीसे मौतका सामान हो जा सकता है। विष सेवन करना या कराना आगसे खेलना है। अच्छे वैद्य, ऐसे विष-युक्त योगोंको बिल्कुल नाउम्मेदीकी हालतमें देते हैं। साथही देश, काल, रोगीकी प्रकृति, पथ्यापथ्य आदिका पूरा विचार करके तब देते हैं। वर्षाकाल या बदलीके दिनोंमें भूलकर भी विष न देना चाहिये। मतलब यह है, विषोंके देनेमें बड़ी भारी बुद्धिमानी, तर्क-वितर्क, युक्ति और चतुराई की ज़रूरत है। अगर ख़ूब सोच-समझ कर, घोर असाध्य अवस्थामें विष दिये जाते हैं, तो अनेक बार मरते हुए रोगी भी बच जाते हैं। अतः इनको काममें लाना चाहिये; खाली डरकर ही न रह जाना चाहिये।

(१७) वच्छनाभ विषको पानीके साथ घिसकर बर्र, ततैये, बिच्छू या मक्खी आदिके काटे स्थानपर लगानेसे अवश्य लाभ होता है। यह दवा कभी फेल नहीं होती।

(१८) वच्छनाभ विषको पानीके साथ पीसकर पसलीके दर्द, हाथ-पैर आदि अंगोंके दर्द या वायुकी अन्य पीड़ाओं और सूजनपर लगानेसे अवश्य आराम होता है।

(१९) शुद्ध वच्छनाभ-विष, सुहागा, कालीमिर्च और शुद्ध नीला-

थोथा—इन चारोंको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर खरलमें डाल, ऊपरसे "बन्दाल" का रस दे-दे कर खूब घोटो। जब घुट जाय, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मनुष्यके मूत्र या गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे कन्दादिक विषकी पीड़ा एवं और ज़हरोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है। इतना ही नहीं, घोर ज़हरी काले साँपका ज़हर भी इन गोलियोंके सेवन करनेसे उतर जाता है। यह नुसख़ा साँपके ज़हरपर परीक्षित है।

बच्छनाभ विषकी शान्तिके उपाय।

आरम्भिक उपाय—

(क) विष खाते ही मालूम हो जाय, तो तत्काल वमन कराओ।

(ख) अगर ज़ियादा देर हो जाय, विष पक्वाशयमें चला जाय, तो तेज़ जुलाब दो या साबुन और पानीकी पिचकारीसे गुदाका मल निकालो। अगर ज़हर खूनमें हो, तो फस्त खोलकर खून निकाल दो। मतलब यह है, वेगोंके अनुसार चिकित्सा करो। अगर वैद्य न हो, तो नीचे लिखे हुए उपायोंमेंसे कोई-सा करो:—

(१) सोंठको चाहे जिस तरह खानेसे बच्छनाभ विषके विकार नष्ट हो जाते हैं।

(२) घरका धूआँसा, मँजीठ और मुलेठीके चूर्णको शहद और घीके साथ चाटनेसे विषके उपद्रव शान्त हो जाते है।

(३) अर्जुनवृक्षकी छालका चूर्ण घी और शहदके साथ चाटनेसे विषके उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

(४) अगर बच्छनाभ विष खाये देर हो जाय, तो दूधके साथ दो माशे निर्विषी पिलाओ। साथ ही घी-दूध आदि तर और चिकने पदार्थ भी पिलाओ।

नोट—अगर ज़हरका ज़ोर कम हो, तो निर्विषी कम देनी चाहिये। अगर बहुत ज़ोर हो, तो दो-दो माशे निर्विषी दूधके साथ घण्टे-घण्टे या दो-दो घण्टेपर,

जैसा मौका हो, विचारकर देनी चाहिये। निर्विषीमें विष नाश करनेकी बड़ी शक्ति है। अगर असल निर्विषी मिल जाय, तो हाथमें लेनेसे ही समस्त विष नष्ट हो जायँ, पर याद रक्खो, स्थावर विषकी दवा वमनसे बढ़कर और नहीं है। वमन करानेसे ज़हर निकल जाता है और रोगी साफ बच जाता है; पर वमन उसी समय लाभदायक हो सकती है, जबकि विष आमाशयमें हो।

(५) असली जहरमुहरा, पत्थरपर, गुलाबजलमें घिस-घिस कर, एक-एक गेहूँ भर चटाओ। इसके चटानेसे क़य होती हैं। क़य होते ही फिर चटाओ। इस तरह जब तक क़य होती रहें, इसे हर एक क़यके बाद गेहूँ-गेहूँ भर चटाते रहो। जब पेटमें जहर न रहेगा, तब इसके चटानेसे क़य न होगी। बस फिर मत चटाना। इसकी मात्रा दो रत्तीकी है। पर एक बारमें एक गेहूँ-भरसे ज़ियादा मत चटाना। इसके असली-नक़ली होनेकी पहचान और इसके इस्तेमाल "बिच्छू-विषकी चिकित्सा"में देखें। स्थावर और जंगम सब तरहके विषोंपर "ज़हरमुहरा" चटाना और लगाना रामवाण दवा है।

(६) घीके साथ सुहागा पीस कर पिलानेसे सब तरहके विष नष्ट हो जाते हैं। संखिया खानेपर तो यह नुसख़ा बड़ा ही काम देता है। असलमें, सुहागा सब तरहके विषोंको नाश कर देता है।

संखिया-विषका वर्णन और उसकी शान्तिके उपाय।

संखियाका ज़िक्र वैद्यक-ग्रन्थोंमें प्रायः नहींके बराबर है। फिर भी, यह एक सुप्रसिद्ध विष है। बच्चा-बच्चा इसका नाम जानता है। यद्यपि संखिया सफेद, लाल, पीला और काला चार रंगका होता है; पर सफेद ही ज़ियादा मिलता है।

सफेद संखिया सुहागेसे बिल्कुल मिल जाता है। नवीन संखियामें चमक होती है, पर पुरानेमें चमक नहीं रहती। इसमें किसी तरह का ज़ायका नहीं होता, इसीसे यूनानी हिकमतके ग्रन्थोंमें इसका स्वाद—बेस्वाद लिखा है। असलमें, इसका ज़ायका फीका होता है; इसीसे अगर यह दही, रायते प्रभृति खाने-पीनेके पदार्थोंमें मिला दिया जाता है, तो खानेवालेको मालूम नहीं होता, वह बेखटके खा लेता है।

संखिया खानोंमें पाया जाता है। इसे संस्कृतमें विष, फ़ारसीमें मर्गमूरा, अरबीमें सम्बुलफार और करूनुस्सम्बुल कहते हैं। इसकी तासीर गरम और रूखी है। यह बहुत तेज़ ज़हर है। ज़रा भी ज़ियादा खानेसे मनुष्यको मार डालता है। इसकी मात्रा एक रत्ती का सौवाँ भाग है। बहुतसे मूर्ख ताक़त बढ़ानेके लिये इसे खाते हैं। कितने ही ज़रा-सी भी ज़ियादा मात्रा खा लेने से परमधामको सिधार जाते हैं। बेक़ायदे थोड़ा-थोड़ा खाने से भी लोग श्वास, कमज़ोरी और क्षीणता आदि रोगोंके शिकार होते हैं। इसके अनेक खानेवाले हमने ज़िन्दगी-भर दुःख भोगते देखे हैं। अगर धन होता है, तो मन-माना घी दूध खाते और किसी तरह बचे रहते हैं। जिनके पास घी-दूधको धन नहीं होता, वे कुत्तेकी मौत मरते हैं। अतः यह ज़हर किसीको भी न खाना चाहिये।

हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है, संखिया दोषोंको लय करता और सरदीके घावोंको भरता है। इसको तेलमें मिलाकर मलनेसे गीली और सूखी खुजली तथा सरदीकी सूजन आराम हो जाती है।

डाक्टर लोग इसे बहुत ही थोड़ी मात्रामें बड़ी युक्तिसे देते हैं। कहते हैं, इसके सेवनसे भूख बढ़ती और सरदीके रोग आराम हो जाते हैं।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, संखिया खानेसे कुलंज, श्वास-रोध—श्वास रुकना और खुश्की ये रोग पैदा होते हैं।

संखिया ज़ियादा खा लेनेसे पेटमें बड़े ज़ोरसे दर्द उठता, जलन होती, जी मिचलाता और क़य होती हैं; गलेमें खुश्की होती और दस्त लग जाते हैं तथा प्यास बढ़ जाती है। शेषमें, श्वास रुक जाता, शरीर शीतल हो जाता और रोगी मौतके मुँहमें चला जाता है।

वैद्यकल्पतरुमें एक सज्जन लिखते हैं—संखिया या सोमलको अँगरेज़ीमें आरसेनिक कहते हैं। संखिया वज़नमें थोड़ा होनेपर भी बड़ा ज़हर चढ़ाता है। उसमें कोई स्वाद नहीं होता, इससे बिना मालूम हुए खा लिया जाता है। अगर कोई इसे खा लेता है, तो यह पेटमें जानेके बाद, घण्टे-भरके अन्दर, पेटकी नलीमें पीड़ा करता है। फिर उछाल और उल्टी या वमन होती है। शरीर ठण्डा हो जाता, पसीने आते और अवयव काँपते हैं। नाकका बाँसा और हाथ-पाँव शीतल हो जाते हैं। आँखोंके आस-पास नीले रंगकी चकई-सी फिरती मालूम होती है। पेटमें रह-रहकर पीड़ा होती और उसके साथ खूब दस्त होते हैं। पेशाब थोड़ा और जलनके साथ होता है। पेशाब कभी-कभी बन्द भी हो जाता है और कभी-कभी उसमें खून भी जाता है। आँखें लाल हो जाती हैं, जलन होती, सिर दुखता, छाती में धड़कन होती, साँस जल्दी-जल्दी और घुटता-सा चलता है। भारी जलन होनेसे रोगी उछलता है। हाथ-पैर अकड़ जाते हैं। चेहरा सूख जाता है। नाड़ी बैठ जाती और रोगी मर जाता है। रोगीको मरने तक चेत रहता है, अचेत नहीं होता। कम-से-कम २॥ ग्रेन संखिया मनुष्यको मार सकता है।

हैज़ेके मौसममें, जिनकी जिनसे दुश्मनी होती है, अक्सर वे लोग अपने दुश्मनोंको किसी चीज़में संखिया दे देते हैं; क्योंकि हैज़े के रोगी और संखिया खानेवाले रोगीके लक्षण प्रायः मिल जाते हैं। हैज़ेमें दस्त और क़य होते हैं, संखिया खानेपर भी कय और दस्त होते हैं। हैज़े वालेका मल चाँवलके धोवन-जैसा होता है और संखिये-

वालेका मल भी, अन्तिम अवस्थामें, वैसा ही होता है। अतः हम दोनों तरहके रोगियोंका फ़र्क़ लिखते हैं:—

हैज़ेवाले और संखिया खानेवालेकी पहचान।

हैज़ेमें प्रायः पहले दस्त और पीछे क़य होती हैं; संखिया खाने-वालेको पहले क़य और पीछे दस्त होते हैं। संखिया खानेवालेके मल के साथ खून गिरता है, पर हैज़ेवालेके मलके साथ खून नहीं गिरता। हैज़ेवालेका मल चाँवलोंके धोवन-जैसा होता है; पर संखियावालेका मल, अन्तिम अवस्थामें ऐसा हो सकता है। हैज़ेमे वमनसे पहले गलेमें दर्द नहीं होता, पर संखिया वालेके गलेमें दर्द ज़रूर होता है। इन चार भेदोंसे—हैज़ा हुआ है या संखिया खाया है, यह बात जानी जा सकती है।

संखियावालेको अपथ्य।

संखिया खानेवाले रोगीको नीचे लिखी बातोंसे बचाना चाहियेः—

(क) शीतल जल। पैत्तिक विषोंपर शीतल जल हितकारक होता है; पर वातिक विषोंमें अहितकर होता है। संखिया खानेवाले को शीतल जल भूलकर भी न देना चाहिये।

(ख) सिरपर शीतल जल डालना।

(ग) शीतल जलसे स्नान करना।

(घ) चाँवल और तरबूज़ अथवा अन्य शीतल पदार्थ। चाँवल और तरबूज संखियापर बहुत ही हानिकारक हैं।

(ङ) सोने देना। सोने देना प्राय. सभी विषोंमें बुरा है।

संखियाका ज़हर नाश करनेके उपाय।

आरम्भिक उपायः—

(क) संखिया खाते ही अगर मालूम हो जाय, तो वमन करदो। क्योंकि विष खाते ही विष आमाशयमें रहता है और वमनसे निकल जाता है। सुश्रुतमें लिखा हैः—

पिप्पली मधुक क्षौद्रशर्करेक्षुरसांबुभिः ।
छर्दयेद्गुप्तहृदयो भक्षितं यदिवा विषम् ॥

अगर किसीने छिपा कर स्वयं ज़हर खाया हो, तो वह पीपल, मुलेठी, शहद, चीनी और ईखका रस—इनको पीकर वमन कर दे। अथवा वैद्य उपरोक्त चीजें पिला कर वमन द्वारा विष निकाल दे। आरम्भमें, ज़हर खाते ही "वमन"से बढ़कर विष नाश करनेकी और दवा नहीं।

(ख) अगर देर होगई हो—विष पक्वाशयमें पहुँच गया हो, तो दस्तावर दवा देकर दस्त करा देने चाहियें।

नोट—बहुधा वमन करा देनेसे ही रोगी बच जाता है। वमन कराकर आगे लिखी दवाओंमेंसे कोई एक दवा देनी चाहिये।

(१) दो या तीन तोले पपड़िया कत्था पानीमें घोलकर पीनेसे संखियाका ज़हर उतर जाता है। यह पेटमें पहुँचते ही संखियाकी कारस्तानी बन्द करता और क़य लाता है।

(२) एक माशे कपूर तीन-चार तोले गुलाबजलमें हल करके पीनेसे संखियाका विष नष्ट हो जाता है।

(३) कड़वे नीमके पत्तोंका रस पिलानेसे संखियाका विष और कीड़े नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) संखिया खाये हुए आदमीको अगर तत्काल, बिना देर किये, कच्चे बेलका गूदा पेटभर खिला दिया जाय, तो इलाजमें बड़ा सुभीता हो। संखियाका विष बेलके गूदेमें मिल जाता है, अतः शरीर के अवयवोंपर उसका जल्दी असर नहीं होता; बेलका गूदा खिला कर दूसरी उचित चिकित्सा करनी चाहिये।

(५) करेले कूट कर उनका रस निकाल लो और संखिया खाने-वालेको पिलाओ। इस उपायसे वमन होकर, संखिया निकल जायगा। संखियाका ज़हर नाश करनेको यह उत्तम उपाय है।

नोट—अगर करेले न मिलें, तो सफेद पपड़िया कत्था महीन पीसकर और

पानीमें घोल कर पिला दो। संखिया खाते ही इसके पी लेनेसे बहुत रोगी बच गये हैं। कत्थेसे भी क़य होकर जहर निकल जाता है।

(६) संखियाके विषपर शहद और अञ्जीरका पानी मिलाकर पिलाओ। इससे क़य होगी—अगर न हों, तो उँगली डालकर क़य कराओ। दस्त करानेको सात रत्ती "सकमूनिया" शहदमें मिला कर देना चाहिये।

नोट—सकमूनियाको मेहमूदह भी कहते हैं। यह सफ़ेद और भूरा होता है तथा स्वादमें कड़वा होता है। यह एक दवाका जमा हुआ दूध है। तीसरे दर्जे का गरम और दूसरे दर्जेका रूखा है। हृदय, आमाशय और यकृतको हानिकारक तथा मूर्च्छाकारक है। कतीरा, सेब और बादाम-रोगन इसके दर्पको नाश करते हैं। यह पित्तज मलको दस्तोंके द्वारा निकाल देता है। जिस दस्तावर दवामें यह मिला दिया जाता है, उसे खूब ताक़तवर बना देता है। वातज रोगोमे यह लाभदायक है, पर अमरूद या बिहीमें भुलभुलाये बिना इसे न खाना चाहिये।

(७) तिब्बे अकबरीमें, सफेदे और संखिये पर मक्खन खाना और शराब पीना लाभदायक लिखा है। पुरानी शराब, शहदका पानी, ल्हसदार चीजें, तर ख़तमीका रस और भुसीका सीरा—ये चीजें भी संखिये वालेको मुफीद हैं।

(८) बिनौलोंकी गरी निवाये दूधके साथ पिलानेसे संखियाका विष उतर जाता है।

नोट—बिनौलोंकी गरी पानीमें पीस कर पिलानेसे धतूरेका विष भी उतर जाता है। बिनौले और फिटकरीका चूर्ण खानेसे अफीमका ज़हर नाश हो जाता है। बिनौलोंकी गरी खिला कर दूध पिलानेसे भी धतूरेका विष शान्त हो जाता है।

सूचना—धतूरेके विषमें जिस तरह सिरपर शीतल जल डालते है, उस तरह संखिया खाने वालेके सिरपर शीतल जल डालना, शीतल जल पिलाना, शीतल जलसे स्नान कराना या और शीतल पदार्थ खिलाना-पिलाना, चाँवल और तरबूज़ वग़ैरः खिलाना और सोने देना हानिकारक है। अगर पानी देना ही हो, तो गरम देना चाहिये।

(९) जिस तरह बहुत-सा गायका घी खानेसे धतूरेका ज़हर उतर जाता है, उसी तरह दूधमें घी मिलाकर पिलानेसे संखियेका ज़हर उतर जाता है ।

(१०) घीके साथ सुहागा पीसकर पिलानेसे संखियाका ज़हर साफ नष्ट हो जाता है। सुहागा सभी तरहके विषोंको नाश करता है । अगर संखियाके साथ सुहागा पीसा जाय, तो संखियाका विष नष्ट हो जाय ।

(११) वैद्यकल्पतरुमें संखियाके विषपर निम्न-लिखित उपाय लिखे हैं:—

(क) वमन कराना सबसे अच्छा उपाय है । अगर अपने-आप वमन होती हों, तो वमनकारक दवा देकर वमन मत कराओ ।

(ख) घी संखियामें सबसे उत्तम दवा है । घी पिलाकर वमन करानेसे सारा विष घीमें लिपटकर बाहर आ जाता है और घीसे संखियाकी जलन भी मिट जाती है । अतः घी और दही खूब मिला कर पिलाओ । इससे कय होकर रोगी चंगा हो जायगा । अगर कय होनेमें विलम्ब हो तो पत्नीका पंख गलेमें फेरो ।

थोड़े-से पानीमें २० ग्रेन सलफेट आफ ज़िंक (Sulphate of zinc) मिलाकर पिलाओ । इससे भी कय हो जाती हैं ।

राईका पिसा हुआ चूर्ण एक या दो चम्मच पानीमें मिलाकर पिलाओ । इससे भी कय होती हैं ।

इपिकोकुआनाका चूर्ण या पौडर १५ ग्रेन लेकर थोड़ेसे जलमें मिलाकर पिलाओ । इससे भी कय होती हैं ।

नोट—इन चारोंमेंसे कोई एक उपाय करके क़य कराओ । अगर जोरसे क़य न होती हों, तो गरम जल या नमक मिला जल ऊपरसे पिलाओ । किसी भी क़य की दवापर, इस जलके पिलानेसे क़यकी दवाका बल बढ़ जाता है और खूब क़य होती हैं । अफ़ीम या संखिया आदि विषोंपर जोरसे क़य कराना ही हितकारी है ।

(ग) थोड़ी-थोड़ी देरमें दूध पिलाओ । अगर मिले तो दूधमें बरफ़ भी मिला दो ।

(घ) दूध और चूनेका नितरा हुआ पानी बराबर-बराबर मिला कर पिलाओ।

(ङ) जलन मिटानेको बर्फ और नीबूका शर्बत पिलाओ अथवा चीनी मिला कर पेठेका रस पिलाओ इत्यादि।

सूचना—अफीमके विषपर भी क़य करानेको यही उपाय उत्तम हैं। हरताल और मैनसिल ये दोनों संखियाके क्षार हैं। इसलिये इनका ज़हर उतारने मे संखियाके ज़हरके उपाय ही करने चाहियें। चूनेका छना हुआ पानी और तेल पिलाओ और वमनकी दवा दो तथा राईका चूर्ण दूध और पानीमें मिला कर पिलाओ। शेष, वही उपाय करो, जो संखियामें लिखे हैं।

(१२) गर्म घी पीनेसे संखियाका ज़हर उतर जाता है।

(१३) दूध और मिश्री मिलाकर पीनेसे संखियाका विष शान्त हो जाता है।

नोट—बहुत-सा संखिया खा लेनेपर वमन और विरेचन कराना चाहिये।

—o—

आकका वर्णन और उसके विषकी शान्तिके उपाय।

आकके वृक्ष जंगलमें बहुत होते हैं। आक दो तरहके होते हैं:—(१) सफेद, और (२) लाल। दोनों तरहके आक दस्तावर, वात, कोढ़, खुजली, विष, व्रण, तिल्ली, गोला, बवासीर, कफ, उदररोग और मल या पाख़ानेके कीड़ों को नाश करने वाले हैं।

सफेद आक अत्यन्त गर्म, तिक्त और मलशोधक होता है तथा मूत्रकृच्छ्र, व्रण और दारुण कृमिरोगको नाश करता है। राजार्क कफ, मेद, विष, वातज कोढ़, व्रण, सूजन, खुजली और विसर्पको नाश करता है।

सफेद आकके फूल वीर्यवर्द्धक, हलके, दीपन और पाचन होते हैं तथा कफ, ववासीर, खाँसी और श्वासको नष्ट करते हैं। आकके फूलोंसे कृमिरोग, शूल और पेटके रोग भी नाश होते हैं।

लाल आकके फूल मधुर, कड़वे और ग्राही होते हैं तथा कृमि, कफ, ववासीर, रक्तपित्त रोग और सूजन नाश करते हैं। दीपन-पाचन चूर्ण और गोलियोंमें आकके फूल मिलानेसे उनका वल वहुत वढ़ जाता है। अकेले आकके फूल नमकके साथ खानेसे पेटका दर्द और वदहज़मी,—ये रोग आराम हो जाते हैं।

आककी जड़की छाल पसीने लाती है, श्वास नाश करती है, उपदंशको हरती है और तासीरमें गरम है। कहते हैं, इससे कफ छूट जाता है और कय भी होती हैं। खाँसी, जुकाम, अतिसार, मरोड़ीके दस्त, रक्तपित्त, शीतपित्त—पित्ती निकलना, रक्तप्रदर, ग्रहणी, कीड़ोंका विप और कफ नाश करनेमें आककी जड़ अच्छी है।

आकके पत्ते सेक कर वाँधनेसे वादीकी सूजन नाश हो जाती है। कफ और वायुकी सूजन तथा दर्दपर आकके पत्ते रामवाण हैं। शरीर की अकड़न और सूनेपन पर आकके पत्ते घी या तेलसे चुपड़ और सेककर वाँधनेसे लाभ होता है। इनके सिवा और भी वहुतसे रोग इनसे नाश होते हैं। हरे पत्तोंमें भी थोड़ा विप होता है, अतः खानेमें सावधानीकी दरकार है। क्योंकि कच्चे पत्ते खानेसे सिर घूमता है, नशा चढ़ता है तथा कय और दस्त होने लगते हैं।

आकका दूध कड़वा, गरम, चिकना, खारी और हलका होता है। कोढ़, गुल्म और उदर रोगपर अत्युत्तम है। दस्त करानेके काममें भी आता है, पर इसका दूध वहुत ही तेज़ होता है। उससे दस्त वहुत होते हैं। वाज़-वाज़ वक्त ज़ियादा और वेक़ायदे खानेसे आँत कट जाती हैं और आदमी वेहोश होकर मर भी जाता है।

आकका दूध घावोंपर भी लगाया जाता है। अगर वेक़ायदे लगाया जाता है, तो घावको फैला और सड़ा देता है। उस समय उस

में दर्द भी बहुत होता है। इसका दूध घावोंपर दोपहर पीछे लगाना चाहिये। सवेरे ही, चढ़ते दिनमें, लगानेसे चढ़ता और हानि करता है; पर ढलते दिनमें लगानेसे लाभ करता है।

आकके विषकी शान्तिके उपाय।

आककी शान्ति ढाकसे होती है। ढाक या पलाशके वृक्ष जंगल में बहुत होते हैं।

(१) अगर आकका दूध लगानेसे घाव बिगड़ गया हो, तो ढाक का काढ़ा बनाकर, उससे घावको धोओ। साथ ही ढाककी सूखी छाल पीसकर, घावोंपर बुरको।

(२) अगर आकका दूध, पत्ते या जड़ आदि बेक़ायदे खाये गये हों और उनसे तकलीफ हो, तो ढाकका काढ़ा पिलाना चाहिये।

आकके उपयोगी नुसख़े।

(१) आककी जड़की छाल बकरीके दूधमें घिसकर, मृगी वाले की नाकमें दो-चार बूँद टपकानेसे मृगी जाती रहती है।

(२) पीले आकके पत्तोंपर सेंधानोन लगाकर, पुटपाककी रीति से भस्म कर लो। इसमेंसे १ माशे दवा, दहीके पानीके साथ, खाने से प्लीहोदर रोग नाश होता है।

(३) मदारकी लकड़ीकी राख दो तोले और मिश्री दो तोले— दोनोंको पीसकर रख लो। इसमेंसे छै-छै माशे दवा, सवेरे-शाम, खानेसे गरमी रोग आठ दिनमें आराम होता है।

(४) आककी जड़ १७ माशे और कालीमिर्च चार तोले—इन दोनोंको पीसकर और गुड़में खरल करके, मटर-समान गोली बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे उपदंश या गरमी आराम हो जाती है।

नोट—सफेद कनेरकी जड़, जलमें घिसकर, इन्द्रियके घावोंपर लगाओ; असाध्य गर्मी भी नाश हो जायगी ।

(५) मदारके पत्तेपर रेंडीका तेल लगाकर, उसे गरम करो और वदपर बाँध दो । फिर धतूरेके पत्ते आगपर तपा-तपाकर सेक कर दो, वद फौरन ही नष्ट हो जायगी ।

(६) मदारके पत्तोंका रस और सेंहुड़के पत्तोंका रस—दोनों को मिलाकर गरम करो और सुहाता-सुहाता गरम कानमें डालो । इससे कानकी सब तरहकी पीड़ा शान्त हो जायगी ।

(७) मदारके १०० पत्ते, अडूसेके १०० पत्ते, शुद्ध कुचला १। तोले, साँभरनोन २॥ तोले, पीपर २॥ तोले, पीपरामूल २॥ तोले, सोंठ २। तोले, अजवायन २ तोले और काली ज़ीरी २। तोले—इन सब दवाओंको एक हाँडीमें भरकर, ऊपरसे सराई रखकर, मुँह बन्द कर दो और सारी हाँडीपर कपड़-मिट्टी कर दो । फिर गज़भर गहरे-चौड़े-लम्बे गढ़ेमें रखकर, आरने कण्डे भर दो और आग दे दो । आग शीतल होनेपर, हाँडीको निकालकर दवा निकाल लो और रख लो । इसमेंसे चार-चार रत्ती दवा पानके साथ खानेसे श्वास और खाँसी या दमा—ये रोग नाश हो जाते हैं ।

(८) मदारके मुँह-बन्द फूल चार तोले, काली मिर्च चार तोले और काला नोन चार तोले—इन सबको पानीके साथ खरल करके बेर-समान गोलियाँ बना लो । सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे पेट का शूल या दर्द और वायुगोला वगैरः अनेक रोग नाश हो जाते हैं ।

(९) आकका दूध, हल्दी, सेंधानोन, चीतेकी छाल, शरपुंखी, मंजीठ और कुड़ाकी छाल,—इन सबको पानीसे पीसकर लुगदी बना लो । फिर लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी मिलाकर, तेल पका लो । इस तेलको भगन्दरपर लगानेसे फौरन आराम होता है ।

(१०) सफेद मदारकी राख, सफेद मिर्च और शुद्ध नीलाथोथा—ये तीनों बराबर-बराबर लेकर, जलमें घोटकर, एक-एक माशेकी

गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली पानीके साथ खानेसे साँप प्रभृति जीवोंका विष नष्ट हो जाता है।

(११) आककी जड़ और कच्चा नीलाथोथा, दोनोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे छै-छै माशे चूर्ण, साँपके काटे आदमीके दोनों नाकके नथनोंमें भर दो और फिर एक फूँकनी लगा कर फूँक मारो। ईश्वर चाहेगा, तो फौरन ज़ोरकी क़य होगी और रोगी आध घण्टेमें भला-चंगा हो जायगा।

नोट—ऊपरके नुसख़ेके साथ नीचे लिखे काम भी करो तो क्या कहना?

(१) शुद्ध जमालगोटा एक मटर-बराबर खिला दो।

(२) कसौंजीके बीज घिस कर नेत्रोंमे आँजो।

(३) साँपकी काटी जगहपर, एक मोटे-ताज़े चूहेका पेट फाड़ कर, पेटकी तरफसे रख दो।

(४) बीच-बीचमें प्याज़ खिलाते रहो।

(५) सोने मत दो और चक्कीकी आवाज़ सुनने मत दो।

(१२) आककी जड़को बराबरके अदरखके रसमें घोटकर, चने-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली, पानीके साथ, थोड़ी-थोड़ी देरमें देनेसे हैज़ा नाश हो जाता है।

(१३) मदारके पीले पत्तोंको कोयलोंकी आगपर जला लो। इसमेंसे ४ रत्ती राख, शहदमें मिलाकर, नित्य सवेरे, चाटनेसे बलग़मी तप, ज़ुकाम, बदहज़मी, दर्द और तमाम बलग़मी रोग नाश होते हैं।

(१४) मदारके फूल और पँवाड़के बीज, दोनोंको पीसकर और खट्टे दहीमें मिलाकर दादोंपर लगानेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(१५) मदारके हरे पत्ते २० तोले और हल्दी २१ माशे—दोनोंको पीसकर उड़द-समान गोलियाँ बना लो। इनमेंसे चार गोली, पहले दिन ताज़ा जलसे खाने और दूसरे दिनसे एक-एक गोली सात रोज़ तक, बढ़ा-बढ़ाकर खानेसे जलन्धर रोग नाश हो जाता है।

नोट—पहले दिन चार, दूसरे दिन पाँच, तीसरे दिन छै—बस इसी तरह सातवें दिन दश गोली खानी चाहियें।

(१६) मदारका १ पत्ता और काली मिर्च नग २५—दोनोंको पीस-कर गोल मिर्च-समान गोलियाँ वना लो। इनमेंसे सात गोली रोज़ खानेसे दमा या श्वास रोग आराम हो जाता है।

(१७) आकके पत्ते, वनकपासके पत्ते और कलिहारी तीनोको सिलपर पीसकर रस निचोड़ लो और ज़रा गरम कर लो। इस रस के कानमें डालनेसे कानका दर्द और कानके कीड़े नाश हो जाते हैं।

(१८) आकके सिरेपरकी नर्म कोंपल एक नग पहले तीन दिन पानमें रखकर खाओ। फिर चौथे दिनसे चालीस दिन तक आधी कोंपल या पत्ता नित्य वढ़ाते जाओ। इस उपायसे कैसा ही श्वास रोग हो, नष्ट हो जायगा।

(१९) आकके पीले-पीले पत्ते जो पेड़ोसे आप ही गिर गये हो, चुन लाओ। फिर चूना १ तोले और सेंधानोन १ तोले—दोनोको मिलाकर जलके साथ पीस लो। फिर इस पिसी दवाको उन पत्तों पर दोनो ओर ल्हेस दो और पत्तोको छायामें सूखने दो। जब पत्ते सूख जायँ, उन्हे एक हाँडीमे भर दो और उसका मुख बन्द कर दो। इसके वाद जंगली कण्डोंके वीचमे हाँडीको रखकर आग लगा दो और तीन घण्टे तक बराबर आग लगने दो। इसके वाद हाँडीसे दवा को निकाल लो। इसमेंसे १ रत्ती राख, पानमे धरकर, खानेसे दुस्साध्य दमा या श्वास भी आराम हो जाता है।

(२०) दो रत्ती आकका खार पानमे रख कर या एक माशे शहद मे मिलाकर खानेसे दमा—श्वास आराम हो जाता है। इस दवासे गले और छातीमें भरा हुआ कफ भी दूर हो जाता है।

नोट—अगर आकका क्षार या खार बनाना हो, तो जंगलसे दश-बीस आक के पेड़ जड़ समेत उखाड़ लाओ और सुखा लो। सूखनेपर उनमें आग लगाकर राख कर लो। फिर पहले लिखी तरकीबसे क्षार बना लो; यानी उस राखको एक वासनमें डालकर, ऊपरसे राखसे दूना जल भर कर घोल दो। ६ घण्टे बाद उसमें से पानी नितार लो और राखको फेंक दो। इस पानीको आगपर चढ़ाकर उस वक्त

तक पकाओ, जबतक कि पानीका नाम भी न रहे। कड़ाहीमें जो सूखा हुआ पदार्थ लगा मिलेगा, उसे खुरच लो, वही खार या क्षार है।

(२१) मदारकी जड़ ३ तोले, अजवायन २ तोले और गुड़ ५ तोले—इन्हें पीसकर बेर-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही, हर रोज़, दो गोली खाने से दमा आराम हो जाता है।

(२२) आकके दूध और थूहरके दूधमें, महीन की हुई दारुहल्दी को फिर घोटो; जब चिकनी हो जाय, उसकी बत्ती बनालो और नासूर के घावमें भर दो। इस उपायसे नासूर बड़ी जल्दी आराम होता है।

नोट—जब फोड़ा आराम हो जाता है, पर वहीं एक सूराखसे मवाद बहा करता है, तब उसे "नासूर" या "नाड़ी व्रण" कहते हैं।

(२३) अगर जंगलमें साँप काट खाय, तो काटी जगह का खून फौरन थोड़ा-सा निकाल दो और फिर उस घावपर आकका दूध खूब डालो। साथ ही आकके २०।२५ फूल भी खा लो। ईश्वर-कृपा से विष नहीं चढ़ेगा। परीक्षित है।

(२४) अगर शरीरमें कहीं वायुके कोपसे सूजन और दर्द हो, तो आकके पत्ते गरम करके बाँधो।

(२५) अगर कहींसे शरीर सूना हो गया हो, तो आकके पत्ते घी या तेलसे चुपड़कर सेको और उस स्थानपर बाँध दो।

(२६) आकके फूलके भीतरकी फुल्ली या जीरा बहुत थोड़ा-सा लेकर और नमकमें मिलाकर खानेसे पेटका दर्द, अजीर्ण और खाँसी आराम हो जाते हैं। एक बारमें ३।४ फुल्लीसे ज़ियादा न खानी चाहियें।

(२७) आकके पत्ते तेलमें चुपड़कर और गरम करके बाँधनेसे नारू या वाला आराम हो जाता है।

(२८) आकका दूध कुत्तेके काटे और बिच्छूके काटे स्थानपर लगानेसे अवश्य आराम होता है।

(२९) सन्निपात रोगमें आककी जड़को पीस कर, घीके साथ खानेसे सन्निपात नाश होता है। कहा है—

सन्निपातेऽर्कमूल स्यात्साज्यं वा लशुनौषणे ।
द्वाविंशल्लघन कार्यं चतुर्थांश तथोदकम् ॥

सन्निपातमे आककी जड़ पीसकर घीके साथ खावे या लहसन और सोंठ मिलाकर खावे, तथा बाईस लंघन करे और सेरका पाव भर रहा पानी पीवे।

(३०) मदारकी जड़, काली मिर्च और अकरकरा—सबको समान-समान लेकर खरलमे डाल, धतूरेकी जड़के रसके साथ घोटो और चने-समान गोलियाँ बनाकर छायामे सुखा लो। हैजेवाले को दिनमे चार-पाँच गोली तक देनेसे अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

—o—

थूहर या सेंहुडका वर्णन और उसके विषकी शान्तिके उपाय।

थूहर और सेहुड़ दोनो एक ही जातिके वृक्ष हैं। सेहुड़ की डंडी मोटी और कॉटेदार होती है और पत्ते नर्म-नर्म पथरचटेके जैसे होते हैं। दूध इसकी शाखा-शाखा और पत्ते-पत्तेमें होता है। थूहरकी डंडी पतली होती है और पत्ते भी छोटे-छोटे, हरी मिर्चके जैसे होते है। इसके सभी अङ्गोंमेंसे दूध निकलता है। इसकी बहुत जाति है—तिधारा, चौधारा, पचधारा. पटधारा, सप्तधारा, नागफनी. विलायती, आँगु-लिया, खुरासानी और काँटेवाली—ये सब थूहर पहाड़ोमें होते है।

थूहरका दूध उष्णवीर्य. चिकना, चरपरा और हलका होता है। इससे वायु-गोला. उदररोग, अफारा और विष नाश होते है। कोढ़ और उदर रोग आदि दीर्घ रोगोमें इसके दूधसे दस्त कराते है और लाभ भी होता है; पर थूहरका दूध बहुत ही तेज़ दस्तावर होता है। ज़रा भी-ज़ियादा

पीने या बेक़ायदे पीनेसे दस्तोंका नम्बर लग जाता है और वे बन्द नहीं होते। यहाँ तक कि खूनके दस्त हो-होकर मनुष्य मर जाता है। "चरक"के सूत्रस्थानमें लिखा है, सुख-पूर्वक दस्त कराने वालोंमें निशोथकी जड़, मृदु विरेचकोंमें अरण्ड और तीक्ष्ण दस्त करानेवालोंमें थूहर सर्वश्रेष्ठ है। वास्तवमें, थूहरका दूध बहुत ही तीक्ष्ण विरेचन या तेज़ दस्तावर है। आजकल इसके दूधसे दस्त नही कराये जाते।

गुल्म, कोढ़, उदर रोग एवं पुराने रोगोंमें इसको देकर दस्त कराना हित है, पर आजकलके कमज़ोर रोगी इसको सह नहीं सकते। अतः इसको किसी अड़ियल और पुराने रोगके सिवा और रोगोंमें न देना ही अच्छा है।

थूहरसे तिल्ली, प्रमेह, शूल, आम, कफ, सूजन, गोला, अष्ठीला, आध्मान, पाण्डुरोग, उदरव्रण, ज्वर, उन्माद, वायु, बिच्छूका विष, दूषी-विष, बवासीर और पथरी आराम हो जानेकी बात भी निघण्टों में लिखी है।

हिलते हुए दाँतमें अगर बड़ी पीड़ा हो, तो थूहरका दूध ज़रा ज़ियादा-सा लगा देनेसे वह गिर पड़ता है। इसके दूधका फाहा दूखती हुई दाढ़ या दाँतमें होशियारीसे लगानेसे दर्द मिट जाता है। दूखती जगहके सिवा, जड़में लग जानेसे यह दाँतको हिला या गिरा देता है।

हिकमत वाले थूहरके दूधको जलोदर, पाण्डुरोग और कोढ़ पर अच्छा लिखते हैं। वे कहते हैं, यह मसाने—वस्तिकी पथरीको तोड़ कर निकाल देता है। जिस अंगपर लगाया जाता है, उसीको आगकी तरह फूँक देता है। इसके डंठल और पत्तोंकी राख करके, उसमेंसे ज़रा-ज़रा-सी नमकके साथ खानेसे अजीर्ण, तिल्ली और पेटके रोग शान्त हो जाते हैं; पर लगातार कुछ दिन खानी चाहिये।

थूहरके विकारोंकी शान्तिके उपाय।

अगर थूहरका दूध ज़ियादा या वेक़ायदे पीनेसे खूनके दस्त

होते हों, तो मक्खन और मिश्री खिलाओ या कच्चा भैंसका दूध मिश्री मिलाकर पिलाओ। हिकमतमें "दूध" ही इसका दर्पनाशक लिखा है। शीतल जलमें मिश्री मिलाकर पीनेसे भी थूहरका विष शान्त हो जाता है।

कलिहारीका वर्णन और उसकी विष-शान्तिके उपाय।

कलिहारीका वृक्ष पहले मोटी घासकी तरह होता है और फिर वेलकी तरह बढ़ता है। इसके पत्ते अदरख के जैसे होते हैं। इसका पेड़ वाढ़ या झाड़ीके सहारे लगता है। पुराना वृक्ष केलेके पेड़ जितना मोटा होता है। गर्मीमें यह सूख जाता है। फूलोंकी पंखड़ियाँ लम्बी होती हैं। फूल गुड़हरके फूल-जैसे होते हैं। फूलोंका रंग लाल, पीला, गेरुआ और सफेद होता है। फूल लगनेसे वृक्ष बड़ा सुन्दर दीखता है। इसकी जड़ या गाँठ बहुत तेज और जहरीली होती है। संस्कृतमें इसको गर्भघातिनी, गर्भनुत, कलिकारी आदि, हिन्दीमें कलिहारी, गुजराती में कलगारी; मरहटीमें खड्यानाग, बँगलामें ईशलांगला और लैटिनमें ग्लोरिओसा सुपरबा या एकोनाइटम नेपिलस कहते हैं।

निघण्टुमें लिखा है, कलिहारीके क्षुप नागवेलके समान और बड़ के आकारके होते हैं। इसके पत्ते अन्धाहूलीके-से होते हैं। इसके फूल लाल, पीले और सफेद मिले हुए रंगके बड़े सुन्दर होते हैं। इसके फल तीन रेखादार लाल मिर्चके समान होते हैं। इसकी लाल छाल के भीतर इलायचीके-से बीज होते हैं। इसके नीचे एक गाँठ होती है। उसे वत्सनाभ और तेलिया मीठा कहते हैं। इसकी जड़ दवाके काम

में आती है। मात्रा ६ रत्तीकी है। कलिहारी सारक, तीक्ष्ण तथा गर्भशल्य और व्रणको दूर करनेवाली है। इसके लेपमात्रसे ही शुष्क-गर्भ और गर्भ गिर जाता है। इससे कृमि, वस्ति शूल, विष, कोढ़, बवासीर, खुजली, व्रण, सूजन, शोष और शूल नष्ट हो जाते हैं। इस की जड़का लेप करने से बवासीरके मस्से सूख जाते हैं, सूजन उतर जाती है, व्रण और पीड़ा आराम हो जाती है।

कलिहारीसे हानि।

अगर कलिहारी बेक़ायदे या जियादा खा ली जाती है, तो दस्त लग जाते हैं और पेटमें बड़े ज़ोरकी ऐंठनी और मरोड़ी होती है। जल्दी उपाय,न होनेसे मनुष्य बेहोश होकर और मल टूटकर मर जाता है; यानी इतने दस्त होते हैं, कि मनुष्यको होश नही रहता और अन्तमें मर जाता है।

विष-शान्तिके उपाय।

(१) अगर कलिहारीसे दस्त वगैरः लगते हों; तो बिना घी निकाले गायके माठेमें मिश्री मिला कर पिलाओ।

(२) कपड़ेमें दही रख कर और निचोड़ कर, दहीका पानी-पानी निकाल दो। फिर जो गाढ़ा-गाढ़ा दही रहे, उसमें शहद और मिश्री मिला कर खिलाओ। इन दोनोंमेंसे किसी एक उपायसे कलिहारीके विकार नाश हो जायँगे।

औषधि-प्रयोग।

(१) करिहारी या कलिहारीकी जड़को पानीमें पीस कर नारू या बाले पर लगानेसे नारू या बाला आराम हो जाता है।

(२) कलिहारीकी जड़ पानीमें पीसकर बवासीरके मस्सोंपर लेप करनेसे मस्से सूख जाते हैं।

(३) कलिहारीकी जड़के लेपसे व्रण, घाव, कंठमाला, अदीठ-फोड़ा और बद या बाघी,—ये रोग नाश हो जाते हैं।

(४) कलिहारीकी जड़ पानीमें पीसकर सूजन और गाँठ प्रभृतिपर लगानेसे फौरन आराम होता है ।

(५) कलिहारीकी जड़को पानीमें पीसकर अपने हाथपर लेप करलो । जिस स्त्रीको बच्चा होनेमें तकलीफ होती हो, उसके हाथ को अपने हाथसे छुलाओ—फौरन बच्चा होजायगा । अथवा कलहारीकी जड़को डोरेमें बाँधकर बच्चा जननेवालीके हाथ या पैरमें बाँधदो । बच्चा होते ही फौरन उसे खोल लो । इससे बच्चा जननेमें बड़ी आसानी होती है । इसका नाम ही गर्भघातिनी है । गृहस्थोंके घरोंमें ऐसे मौक़े पर इसका होना बड़ा लाभदायक है ।

(६) कलिहारीके पत्तोंको पीस-छानकर छाछके साथ खिलाने से पीलिया आराम होजाता है ।

(७) अगर मासिक धर्म रुक रहा हो, तो कलिहारीकी जड़ या औंगेकी जड़ अथवा कड़वे वृन्दावनकी जड़ योनिमें रखो ।

(८) अगर योनिमें शूल हो, तो कलिहारी या औंगेकी जड़को योनिमें रखो ।

(९) अगर कानमें कीड़े हों तो कलिहारीकी गाँठका रस कानमें डालो ।

(१०) अगर साँपने काटा हो, तो कलिहारीकी जड़को पानीमें पीसकर नास लो ।

(११) अगर गाय बैल आदिको बन्धा हो—दस्त न होता हो, तो उन्हें कलिहारीके पत्ते कूटकर और आटेमें मिलाकर या दाने-सानी में मिलाकर खिला दो; पेट छूट जायगा ।

(१२) अगर गायका अंग बाहर निकल आया हो, तो कलिहारी की जड़का रस दोनों हाथोंमें लगाकर, दोनों हाथ उसके अंगके सामने ले जाओ । अगर इस तरह अंग भीतर न जाय, तो दोनों हाथ उस अंगपर लगादो और फिर उन हाथोंको गायके मुँहके सामने करके दिखादो । फिर वह अंग भीतर ही रहेगा—बाहर न निकलेगा ।

कनेरका वर्णन और उसकी विष-शान्तिके उपाय।

कनेरका पेड़ भारतमें मशहूर है। प्रायः सभी बग़ीचों और पहाड़ों पर कनेरके वृक्ष होते हैं। इसकी चार क़िस्म हैं—

(१) सफेद, (२) लाल,
(३) गुलाबी, (४) पीली।

दवाओंके काममें सफेद कनेर ज़ियादा आती है। इसकी जड़ में विष होता है। इस वृक्षके पत्ते लम्बे-लम्बे होते हैं। फूलोंमें गन्ध नहीं होती। जिस पेड़में सफेद फूल लगते हैं, वह सफेद और जिसमें लाल फूल लगते हैं, वह लाल कनेर कहाती है। इसी तरह गुलाबी और पीलीको समझ लो।

सफेद कनेरसे प्रमेह, कृमि, कोढ़, व्रण, बवासीर, सूजन और रक्त-विकार आदि रोग नाश होते हैं। यह खानेमें विष है और आँखों के रोगोंके लिये हितकर है। इससे उपदंशके घाव, विष, विस्फोट, खुजली, कफ और ज्वर भी नाश हो जाते हैं। सफेद कनेर तीखी, कड़वी, कसैली, तेजस्वी, ग्राहक और उष्णवीर्य होती है। कहते हैं, यह घोड़ेके प्राणोंको नाश कर देती है।

लाल कनेर शोधक, तीखी और खानेमें कड़वी है इसके लेपसे कोढ़ नाश हो जाता है।

पीलापन लिये सुर्ख़ कनेर सिरका दर्द, कफ और वायुको नाश करती है।

कनेरके विषसे हानि।

कनेरके खानेसे गले और आमाशयमें जलन होती है, मुँह लाल हो जाता है, पेशाब बन्द हो जाता है, जीभ सूज जाती है, पेटमें गुड़-

गुड़ाहट होती है, अफारा आ जाता है, साँस रुक-रुककर आता और बेहोशी हो जाती है ।

कनेरकी शोधन-विधि ।

कनेरकी जड़के टुकड़े करके, गायके दूधमें, दोलायन्त्रकी विधि से पकानेसे शुद्ध हो जाती है ।

कनेरके विषकी शान्तिके उपाय ।

(१) लिख आये हैं, कि कनेर—ख़ासकर सफेद कनेर विष है । इसके पास साँप नहीं आता । अगर कोई इसे खा ले और विष चढ़ जाय, तो भैंसके दहीमें मिश्री पीसकर मिला दो और उसे खिलाओ, ज़हर उतर जायगा ।

(२) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है:—

१—वमन कराओ । इसके बाद ताज़ा दूधसे कुल्ले कराओ और कच्चा दूध पिलाओ ।

२—जौके दलियामें गुल रोगन मिलाकर पिलाओ ।

३—जुन्देबेदस्तर सिरके और शहदमें मिलाकर दो, पर प्रकृति का ख़याल करके ।

४—दूध और मक्खन खिलाओ । यह हर हालतमें मुफीद है ।

५—शीतल जल सिर पर डालो ।

६—शीतल जलके टब या हौज़में रोगीको बिठाओ ।

नोट—इसकी जड़ खानेका हाल मालूम होते ही क़य करा देना सबसे अच्छा उपाय है । इसके बाद कच्चा दूध पिलाना, शीतल जल सिरपर डालना और शीतल जलमें बिठाना—ये उपाय करने चाहियें । क्योंकि सफेद कनेर बहुत गरमी करती है । खाते ही शरीरमें बेतहाशा गरमी बढ़ती और गला सूखने लगता है । अगर जल्दी ही उपाय नहीं किया जाता, तो आदमी बेहोश होकर मर जाता है । यह बड़ा तेज़ ज़हर है ।

औषधि-प्रयोग।

(१) सफेद कनेरकी जड़, जायफल, अफीम, इलायची और सेमरका छिलका,—इन सबको छै-छै माशे लेकर, पीस-कूटकर छान लो। फिर एक तोले तिलीके तेलमें गरम करके, सुपारी छोड़, बाक़ी इन्द्रियपर तीन दिन तक लेप करो। इस दवासे लिङ्गमें बड़ी ताक़त आ जाती है।

(२) सफेद कनेरकी जड़को पानीके साथ घिस कर साँप-बिच्छू आदिके काटे हुए स्थानपर लगानेसे अवश्य आराम होता है। परीक्षित है।

(३) आतशक या उपदंशके घावोंपर सफेद कनेरकी जड़ घिस कर लगानेसे असाध्य पीड़ा भी शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(४) रविवारके दिन सफेद कनेरकी जड़ कानपर बाँधनेसे सब तरहके शीत ज्वर भाग जाते हैं। शास्त्रमें तो सब ज्वरोंका चला जाना लिखा है, पर हमने जूड़ी ज्वरों पर परीक्षा की है।

(५) सफेद कनेरकी जड़को घिस कर मस्सों पर लगानेसे बवासीर जाती रहती है।

(६) लाल कनेरके फूल और चाँवल बराबर-बराबर लेकर, रातको, शीतल जलमें भिगो दो। बर्तनका मुँह खुला रहने दो। सवेरे फूल और चाँवल निकाल कर पीस लो और विसर्प पर लगा दो; अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(७) दरदरे पत्थर पर, सफेद कनेरकी जड़ सूखी ही पीस कर, जहाँ सिरमें दर्द हो लगाओ; अवश्य लाभ होगा।

(८) सफेद कनेरके सूखे हुए फूल ६ माशे, कड़वी तम्बाकू ६ माशे और इलायची १ माशे—तीनोंको पीस कर छान लो। इसको सूघनेसे साँपका ज़हर नाश हो जाता है।

(९) सफेद कनेरकी जड़का छिलका, सफेद चिरमिटीकी दाल और काले धतूरेके पत्ते,—इन सबको समान-समान अट्ठाईस-

अट्ठाईस माशे लेकर, पीस-कूट कर टिकिया बना लो। इस टिकिया को पाव भर जलमें डाल कर खूब घोटो। इसके बाद आग पर रख कर पकाओ। जब मसाला जल जाय, तेलको उतार लो और छान कर रख लो। इस तेलके लगानेसे अर्द्धाङ्ग वायु और पक्षाघात रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

(१०) सफेद कनेरकी जड़को पीस कर, लेप करनेसे दर्द—ख़ास कर पीठका दर्द और रींगन वायु तत्काल शान्त हो जाते हैं।

(११) कनेरके पत्ते लेकर सुखाओ और पीस-छान लो। अगर सिरमें कफ रुका हो या कफका शिरो रोग हो, तो इसे नस्यकी तरह नाकमें चढ़ाओ, फौरन आराम होगा।

धतूरेका वर्णन और उसके विषकी शान्तिके उपाय।

धतूरेके वृक्ष वनोंमें, बाग़ोंमें और जंगलोंमें बहुत होते हैं। धतूरेके फूलोंके भेदसे धतूरा कई प्रकारका माना गया है। काला, नीला, लाल और पीला, इस तरह धतूरा चार तरह का होता है। काले और सुनहरी फूलोंका धतूरा पुष्प-वाटिकाओंमें होता है। इसके पत्ते पानके या बड़के पत्तेके आकारके ज़रा किंगरेदार होते हैं। फूलोंका आकार मारवाड़ियोंकी सुलफी चिलम-जैसा अथवा घण्टेके आकारका होता है। फूलोंके बीचमें और ऊपर सफेद रंग होता है तथा बीचमें नीला, काला और पीला रंग भी होता है। फल छोटे नीबूके समान और काँटेदार होते हैं। इन गोल-गोल फलोंके भीतर बीज बहुत होते हैं। जिस धतूरेका रंग अत्यन्त काला होता है और जिसकी डण्डी, पत्ते, फूल, फल और सर्व्वांग काला होता है, उस धतूरेमें विष अधिक होता है। फल सूख कर फूटकी तरह खिल जाते हैं। उनके

बीजोंको वैद्य दवाके काममें लाते हैं। दवाके काममें धतूरेके पत्ते, फल और बीज आते हैं। इसकी मात्रा १ रत्तीकी है। जिस धतूरेके वृक्षमें कलाई लिये फूल होता है, उसे काला धतूरा कहते हैं और जिसके फूलमेंसे दो-तीन फूल निकलते हैं, उसे "राज धतूरा" या बड़ा धतूरा कहते हैं।

इसके सभी अङ्गों—फूल, पत्ते, जड़ और बीज वगैरः—में कुछ-न-कुछ विष होता ही है। विशेष करके जड़ और बीजोंमें ज़ियादा ज़हर होता है। धतूरा मादक या नशा लानेवाला होता है। इसके सेवनसे कोढ़, दुष्टव्रण, कामला, बवासीर, विष, कफ ज्वर, जूँआ, लीख, पामा-खुजली, चमड़ेके रोग, कृमि और ज्वर नाश हो जाते हैं। यह शरीरके रङ्गको उत्तम या लाल करने वाला, वातकारक, गरम, भारी कसैला, मधुर और कड़वा तथा मूर्च्छाकारक है।

धतूरेके बीज अत्यन्त मदकारक—नशीले होते हैं। चार-पाँच बीजोंसे ही मूर्च्छा हो जाती है। ज़ियादा खाने या बेक़ायदे खानेसे ये खुश्की लाते हैं, सिर घूमता है, चक्कर आते हैं, कय होती हैं, गलेमें जलन होती और प्यास बढ़ जाती है। बहुत ज़ियादा बीज खानेसे उपरोक्त विकारोंके सिवा नेत्रोंकी पुतलियाँ चौड़ी होकर बेहोशी होती और आदमी मर जाता है। ठग लोग रेलके मूर्ख मुसाफिरोंको इन्हें खिलाकर बेहोश कर देते और उनका माल-मता ले चम्पत होते हैं।

नोट—इसकी शान्तिके उपाय हम आगे लिखेंगे। धतूरा खाया है, यह मालूम होते ही सिरपर शीतल जल गिरवाओ, कय कराओ और बिनौलोंकी गरी दूधके साथ खिलाओ। अगर बेहोशी हो तो नस्य देकर होशमें लाओ। कपासकी जड़, पत्ते, बीज (बिनौले) आदि इसकी सर्व्वोत्तम दवा हैं।

हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है:—धतूरेका झाड़ बैंगनके झाड़-जैसा होता है। यह अत्यन्त मादक, चिन्ताजनक और उन्माद-कर्त्ता है। शहद, काली मिर्च और सौंफ—इसके दर्पनाशक हैं। इसके खाने से अवयवों और मस्तिष्कमें अत्यन्त शिथिलता होती है। यह अत्यन्त

निद्राप्रद, शिरः पीड़ाको शान्त करनेवाला, सूजनके भीतरी मलको पकानेवाला, चिकनाईको सोखनेवाला और स्तम्भन करने वाला है । इसके पत्तोंका लेप अवयवोंको गुणकारी है ।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है, धतूरा खानेसे घुमरी, आँखोंके सामने अँधेरा और नेत्रोंमें सुर्ख़ी होती है । जब यह ज़ियादा खाया जाता है, तब मनुष्य बुद्धिहीन हो जाता है । साढ़े चार माशे धतूरा खानेसे मृत्यु हो जाती है ।

"वैद्यकल्पतरु"में एक सज्जन लिखते हैं-धतूरेको अँगरेज़ीमें स्ट्रेमोनियम कहते है । इसके बीज अधिक जहरीले होते हैं । कभी-कभी इस के ज़हरसे मृत्यु भी हो जाती है। दो-चार बीजोंसे ज़हर नहीं चढ़ता। हाँ, अधिक बीज खानेसे जहर चढ़ता है । मुख्य लक्षण ये हैं:—सिर घूमना, गलेमें सूजन, आँखोंकी पुतलियोंका फैल जाना, आँखोंसे कुछ न दीखना, आँखों और चेहरेका लाल हो जाना, रोगीका बड़बड़ाना, हाथोंको इस तरह चलाना जैसे हवामें से कोई चीज पकड़ता हो । अन्तमें, बेहोश हो जाना और नाड़ीका जल्दी-जल्दी चलना । जब बहुत ही ज़हर चढ़ जाता है, तब शरीर शीतल होकर मृत्यु हो जाती है । हाथोंका चलाना धतूरेके विपका मुख्य लक्षण है ।

उपाय—वमन और रेचन देकर कय और दस्त कराओ । आध-आध घण्टेमें रोगीको काफी पिलाओ और उसे सोने मत दो । तेल मिलाकर गरम पानी पिलाओ ।

धतूरा शोधन-विधि ।

धतूरेको गायके मूत्रमें, दो घण्टे तक, भिगो रखो; धतूरा शुद्ध हो जायगा ।

औषधि-प्रयोग ।

चूँकि धतूरा बड़े कामकी चीज़ है; अतः हम इसके चन्द प्रयोग लिखते हैं:—

(१) धतूरेके बीजोका तेल निकालकर, उसमेंसे एक सींकभर तेल पानमें लगाकर खानेसे स्त्री-प्रसंगमें रुकावट होती है।

(२) धतूरेकी जड़, गायके माठेमें पीसकर, लगानेसे विद्रधि नाश होजाती है।

(३) धतूरेके पत्तेपर तेल चुपड़कर बाँधनेसे स्नायु-रोग नष्ट होता है।

(४) धतूरेके शोधे हुए बीज १ मिट्टीके कुल्हड़ेमें भरकर, मुँह बन्द करके, ऊपरसे कपड़मिट्टी करके सुखालो। फिर आगमें रख कर फूँक दो। पीछे शीतल होने पर राखको निकाललो। इस राख के खानेसे जूड़ी ज्वर और कफ नाश होजाता है।

(५) धतूरेकी जड़ जो उत्तर दिशाको गई हो, ले आओ। फिर उसे सुखाकर कूट-पीस और छानलो। इस चूर्णको ४ माशे गुड़ और छै तोले घी मिलाकर खानेसे उन्माद रोग नाश होजाता है। बलाबल अनुसार, मात्रा लेनेसे निश्चय ही सब तरहका उन्माद रोग आराम होजाता है।

(६) धतूरेके शोधे हुए बीज एकसे शुरू करके, रोज़ एक-एक बढ़ाओ और इक्कीसवें दिन इक्कीस बीज खाओ। पीछे, पहले दिन बीस फिर उन्नीस, अठारह, सत्रह, इस तरह घटा-घटाकर एकपर आजाओ। इस तरह इनके सेवन करनेसे कुत्तेका विष शान्त होजाता है।

(७) धतूरेके शुद्ध किये हुए बीज पहले दिन दो खाओ, दूसरें दिन तीन, तीसरे दिन चार, चौथे दिन पाँच, पाँचवें दिन छैः, छठें दिन सात, सातवें दिन आठ, आठवे दिन नौ, नवें दिन दस और दसवें दिन ग्यारह खाओ। इस तरह करनेसे एक सालका पुराना फीलपाँव या श्लीपद रोग आराम हो जाता है।

(८) धतूरेके पाँच पत्तोंपर एक तोले कड़वा तेल लगा दो और पत्तोंको गरम करके फोड़ेपर बाँध दो। ऐसा करनेसे फोड़ेका दर्द मिट जायगा।

(९) काले धतूरेके पत्ते चार तोले, सफेद चिरमिटी चार तोले और सफेद कनेरकी जड़की छाल चार तोले—इन तीनों को महीन पीसकर, सरसोंके पाव भर तेलमें मिलाकर, तेलको मन्दी-मन्दी आग पर औटाओ। जब ये दवाएँ जल जायँ, इन्हें उसी तेलमें घोट कर मिला दो। इस तेलके रोज़ जोड़ोंपर मलनेसे, पक्षाघात रोग नाश होकर, कामदेव खूब चैतन्य होता है।

(१०) शुद्ध काले धतूरेके बीज २ रत्ती और शुद्ध कुचला २ रत्ती—इनको पानमें रखकर खानेसे अपतंत्रक रोग नाश होजाता है।

(११) काले धतूरेके फल, फूल, पत्ते और जड़—सबको कुचल कर, चिलममें रखकर, तमाखूकी तरह पीनेसे हिचकी और श्वास आराम होजाते हैं।

(१२) काले धतूरेका फल और कुड़ेकी छाल बराबर-बराबर लेकर, काँजी या सिरकेमें पीसकर, नाभिके चारों ओर लगानेसे घोर शूल आराम हो जाता है।

(१३) काला धतूरा, अरण्डकी जड़, सम्हालू, पुनर्नवा, सहँजनेकी छाल और राई—इनको बराबर-बराबर लेकर, पानीमें पीसकर गरम करो और हाथी-पाँव या श्लीपदपर लेप करो, अवश्य आराम होगा।

(१४) धतूरेके पत्ते, भाँगरा, हल्दी और सेंधा नोन—बराबर-बराबर लेकर पानीमें पीसलो और गरम करके फोड़ेपर लगा दो; फोड़ा फौरन फूट जायगा।

(१५) धतूरेके पत्ते ६ माशे, खानेके पान ६ माशे और गुड़ १ तोले,—इन तीनोंको महीन पीसकर पाव भर जलमें छानलो और पीजाओ। इस शर्वतसे तिजारी और चौथेया ज्वर नष्ट होजाते हैं।

(१६) शनिवारकी शामको, जंगलमें जाकर काले धतूरेको न्योत आओ। न्योतनेसे पहले घी, गुड़, पानी और आगसे उसकी पूजा करो और कहो—"हे महाराज! कल आकर हम आपको

लेजायँगे। आप दुश्मनसे हमारा पीछा छुड़ाइयेगा।" यह कहकर पीछेकी ओर मत देखो और चले आओ। रविवारके सवेरे ही जाकर, उसी धतूरेकी एक छोटी-सी डाली तोड़ लाओ और उसे अपनी बाँह पर बाँध लो। परमात्माकी कृपासे फिर चौथेया न आवेगा।

धतूरेकी विष शान्तिके उपाय।

आरम्भिक उपाय—

(क) धतूरा खाते ही, बिना देर किये, वमन कराकर आमाशय से विषको निकाल दो।

(ख) अगर विष पक्वाशयमें पहुंच गया हो, तो जुलाब दो।

(ग) शिरपर शीतल पानीकी धारा छोड़ो।

(घ) बिनौलोंकी गिरी खिलाकर दूध पिलाओ।

(ङ) अगर दिमागी फितूर हो—बेहोशी आदि लक्षण हों, तो नस्य भी दो।

(१) तुषोदकमें चाँवलोंकी जड़ पीसकर और मिश्री मिलाकर पिलाने से धतूरेका विष नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) शंखाहूलीकी जड़ पानीमें पीसकर पिलाने से धतूरेका ज़हर शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(३) बिनौले और कपासके फूलोंका काढ़ा पीने से धतूरेका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(४) बैंगनके टुकड़े करके पानीमें खूब मल लो और पीओ। इस से धतूरेका विष नष्ट हो जायगा।

अगर बैंगन न मिले तो बैंगनके पत्तों और जड़से भी काम चल सकता है। वे भी इसी तरह पीस-छानकर पीये जाते हैं।

(५) चालीस माशे बिनौलोंकी गिरी पानीमें पीसकर पीनेसे धतूरेका जहर उतर जाता है।

नोट—किसी-किसीने छै माशे बिनौलोंकी गिरी खिलाना लिखा है।

(६) नमक पानीमें घोलकर पीने से धतूरेका ज़हर उतर जाता है।

(७) कपासके रसको पीने से धतूरेका मद दूर हो जाता है।

नोट—धतूरेके बीजोंका विष—कपासके बीज पीसकर पीने से; धतूरेकी डालीका विष—कपासकी डाली पीसकर पीने से; और धतूरेके पत्तोंका विष कपासके पत्ते पीसकर पीने से निश्चय ही उतर जाता है।

(८) पेठेके रसमें गुड़ मिलाकर खाने से पिंडालूका मद नाश हो जाता है।

(९) बहुतसा गायका घी पिलाने से धतूरे और रसकपूरका विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(१०) बैंगनके बीजोंका रस पीने से धतूरेके विषकी शान्ति होती है।

(११) दूध-मिश्री मिलाकर पीनेसे धतूरेका ज़हर उतर जाता है।
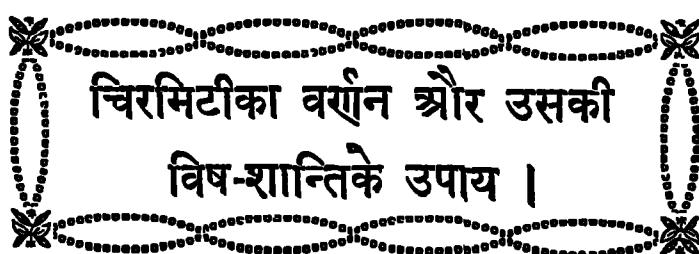
चिरमिटीका वर्णन और उसकी विष-शान्तिके उपाय।

चिरमिटी दो तरहकी होती है—(१) लाल, और (२) सफेद। निघण्टुमें लिखा है, दोनों तरहकी चिरमिटी केशों को हितकारी, वीर्यवर्द्धक, बलदायक तथा वात, पित्त, ज्वर, मुँह सूखना, भ्रम, श्वास, प्यास, मद, नेत्ररोग, खुजली, व्रण, कृमि, गंजरोग और कोढ़ नाशक होती हैं।

और एक ग्रन्थमें लिखा है, दोनों तरहकी चिरमिटी स्वादिष्ट, कड़वी, बलकारी, गरम कसैली, चमड़ेको उत्तम करने वाली, बालों

को हितकारी तथा विष, राक्षस ग्रह-पीड़ा, खाज, खुजली, कोढ़, मुँह के रोग, वात, भ्रम और श्वास आदि नाशक हैं। बीज वान्तिकारक और शूलनाशक होते हैं। सफेद चिरमिटी विशेष कर वशीकरण है।

सफेद चिरमिटीका अर्क़ बालोंको पैदा करने वाला तथा वात, पित्त और कफनाशक है। लाल चिरमिटीका अर्क़ मुख-शोष, श्वास, श्रम और ज्वर नाश करता है।

हिन्दीमें घुंघुची, चिरमिटी, चोंटली और रत्ती कहते हैं। बँगला में कुंच और सादा कुञ्च, संस्कृतमें गुञ्जा और गुजरातीमें चणोटी कहते हैं। इसके पत्ते, बीज और जड़ दवाके काम आते हैं। मात्रा १ से ३ रत्ती तक।

चिरमिटीके ज़हरकी शान्तिका उपाय।

चौलाईके रसमें मिश्री मिलाकर पीने और ऊपरसे दूध पीनेसे चिरमिटीका विष नाश हो जाता है।

चिरमिटी-शोधन विधि।

चिरमिटीको काँजीमें डालकर तीन घण्टे तक पकाओ, वह शुद्ध हो जायगी।

औषधि-प्रयोग।

(१) दो रत्ती कच्ची लाल चिरमिटी गायके आध पाव दूधके साथ पीनेसे उन्माद रोग चला जाता है।

(२) सफेद चिरमिटीकी जड़ या फलोंको पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो, जितनी लुगदी हो उससे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना पानी लो। इनको मिलाकर मन्दाग्निसे पका लो। जब तेल मात्र रह जाय, उतार लो। इसका नाम "गुञ्ज तेल" है। इसकी मालिशसे गण्डमाला आराम हो जाती है।

(३) सफेद चिरमिटी, उटंगनके बीज, कौंचके बीज और गोखरू—इन्हें बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और फिर बराबर

की मिश्री पीसकर मिला दो। इस-चूर्णको रोज़ खाकर ऊपरसे दूध पीनेसे बूढ़ा आदमी भी जवान स्त्रियोंके घमण्डको नाश कर सकता है। अगर जवान खाय, तो कहना ही क्या?

सफेद चिरमिटी, लौंग और खिरनीके बीज, इनका पाताल-यन्त्र की विधिसे तेल निकालकर, एक सींक भर पानमें लगाकर खाने और ऊपरसे छटाँक-भर गायका घी खानेसे कुछ दिनोंमें खूब काम-शक्ति बढ़ती और स्तम्भन होता है।

भिलावेका वर्णन और उसके विकारों की शान्तिके उपाय।

भिलावेका वृक्ष बहुत बड़ा होता है। इसके पत्ते बड़के जैसे और फूल लाल रंगके बड़े-बड़े होते है। इसके फल लम्बाई लिये गोल-गोल करौंदे या दाखके जैसे होते हैं। दाख नर्म होता है, पर भिलावेका फल कड़ा और टोपीदार होता है। फल पहले काले नहीं होते, पर सूखकर काले हो जाते हैं; परन्तु उनका रस नहीं सूखता—फलोंके ऊपरसे सूख जानेपर भी, भीतर रस बना ही रहता है। छिलकोंके नीचे तेल जैसा पतला पदार्थ होता है, वही मुख्य गुणकारी चीज़ है। उसीका युक्ति-पूर्वक साधन करना, रसायन सेवन करना है। भिलावेके भीतर गुठली होती है। गुठलीके भीतर जो गिरी होती है, वह अत्यन्त बलकारक, वाजीकरण, वात-पित्त नाशक और कफवर्द्धक होती है।

भिलावेका फल या तेल आगपर डालनेसे या भिलावे पकानेसे जो धूआँ होता है, वह अगर शरीरमें लग जाता है, तो सूजन और घाव कर देता है।

भिलावेके भीतरका तरल पदार्थ अगर शरीरकी चमड़ी और

मुँहमें लग जाता है, तो तत्काल फफोले और ज़ख्म हो जाते हैं तथा उपाड़ होता और सूजन आ जाती है।

निघण्टुमें लिखा है, तिल और नारियलकी गिरी इसके दर्पको नाश करते हैं। हिकमतके निघण्टुमें ताजा नारियल, सफेद तिल और जौ इसके दर्प-नाशक लिखे हैं। वैद्यक ग्रन्थोंमें इसके फलकी मात्रा चार रत्तीसे साढ़े तीन माशे तक लिखी है; पर हिक़मतमें सवा माशे लिखी है। "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, नौ माशे भिलावा खाने से मृत्यु होती है और बच जाने पर भी चिन्ता बनी ही रहती है।

वैद्यकमें भिलावा विष नहीं माना गया है, पर हिकमतमें तो साफ़ विष माना गया है। अगर यह बेक़ायदे सेवन किया जाता है, तो निस्सन्देह विषके-से काम करता है। इसके तेलको सन्धिवात और नस हट जाने पर लगाते हैं। अगर इसमें दूसरी दवा मिलाकर इसकी ताक़त कम न की जाय, तो इससे चमड़ीके ऊपर छाले पड़ कर फफोले हो जायँ।

संस्कृतमें भल्लातक; फ़ारसीमें बलादुर, अरबीमें हब्बुलकम, बंगलामें भेला, मरहटीमे भिलावा और बिबवा तथा गुजरातीमें भिलामाँ कहते हैं। भिलावेका पका फल पाक और रसमें मधुर; हलका, कसैला, पाचक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम, मलको छेदने और फोड़नेवाला, मेधाको हितकारी, अग्निकारक तथा कफ, वात, व्रण, पेटके रोग, कोढ़, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, अफारा, ज्वर और कृमियोंको नष्ट करता है।

भिलावेकी मींगी मधुर, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक तथा वात और पित्तको नष्ट करने वाली है।

हिकमतमें लिखा है, भिलावा गरमी पैदा करता, वायुको नाश करता, दोषोंको स्वच्छ करता, चमड़ेमें घाव करता, शीतके रोग—पक्षवध, अर्दित—मुँह टेढ़ा हो जाना और कम्प तथा मूत्रकृच्छ्रमें लाभदायक है। इसके सेवनसे मस्से नाश हो जाते हैं।

८ भिलावे शोधनेकी तरकीबें ।

भिलावेको भी शोधकर सेवन करना चाहिये । भिलावोंको जल में डाल दो । जो भिलावे डूब जायँ, उन्हें निकाल कर उतने ही पानी में भिगो दो । फिर उनको ईंटके चूर्ण या कूकुआसे खूब घिसो और उनके नीचेकी ढिपुनी काट-काट कर फैंक दो । इसके बाद उन्हें फिर जलमें धो डालो और सुखा कर काममें लाओ । यही शुद्ध भिलावे हैं ।

भिलावोंको एक दिन-भर पानीमें पकाओ । फिर उन्हें निकाल कर उनके टुकड़े कर डालो और दूधमें डाल कर पकाओ । इसके बाद उन्हें खरलमें डाल कर ऊपरसे तोले-तोले भर सोंठ और अज-वायन मिला दो और खूब कूटो । ये भिलावे भी शुद्ध होंगे । इनको भी दवाके काममें ले सकते हैं ।

जिसे भिलावे पकाने हों, उसे अपने सारे शरीरको काली तिलीके तेलसे तर कर लेना चाहिये और भिलावोंसे पैदा हुए धूएँसे बचना चाहिये ।

भिलावे सेवनमें सावधानी ।

भिलावा खानेवाले अपने हाथों और मुखको घीसे चुपड़ कर भिलावा खाते हैं । कितने ही पहले तिल या नारियलकी गिरी चबा कर पीछे इन्हें खाते हैं ।

भिलावा अनेक रोग नाश करता है, बशर्ते कि विधिसे सेवन किया जाय । इसके युक्ति-पूर्वक खानेसे कोढ़ निश्चय ही नष्ट हो जाता है और हिलते हुए दाँत पत्थरकी तरह जम जाते हैं । पर अगर यही बेक़ायदे या मात्रासे ज़ियादा खाया जाता है, तो अत्यन्त गरमी करता है; मुँह, तालू और दाँतोंकी जड़में सूजन पैदा कर देता और दाँतोंको हिला कर गिरा देता तथा खूनमें ख़राबी कर देता है । इस-लिये इस अमृत-समान फलको शास्त्र-विधिसे सेवन करना चाहिये

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है, भिलावे खानेसे मुख और गलेमें फफोले हो जाते हैं, तेज़ रोग, चिन्ता, भड़कन और अङ्गोंमें तकलीफ होती है। भिलावा किसीको हानि नहीं करता और किसीको हानि करता है। उसके शहद (वही तेल जैसा सरल पदार्थ) या धूएँके लगनेसे शरीर सूज जाता है, अत्यन्त खाज चलती है और घाव हो जाते हैं। उन घावोंसे कितने ही आदमी मर भी जाते हैं।

औषधि-प्रयोग।

शास्त्रमें भिलावेके सैकड़ों प्रयोग लिखे हैं, बतौर नमूनेके दो-चार हम भी नीचे लिखते हैं,—

(१) भिलावोंसे एक पाक बनता है, उसे "अमृतभल्लातक पाक" कहते हैं। उसके सेवन करने से बहुधा रोग चला जाता और हिलते हुए दाँत जमकर बल-वृद्धि होती है। यह पाक कोढ़पर रामबाण है। बनानेकी विधि "चिकित्साचन्द्रोदय" चौथे भागके पृष्ठ ३१२ में देखिये।

(२) छोटे-छोटे शुद्ध भिलावोंको गुड़में लपेटकर निगल जाने से कफ और वायु नष्ट हो जाते हैं।

(३) शुद्ध भिलावोंको गुड़के साथ कूटकर गोलियाँ बनालो। पीछे हाथ और मुँहको घीसे चुपड़ कर खाओ। इस तरह खानेसे शरीर की पीड़ा, अकड़न या शरीर रह जाना, सरदी, बवासीर, कोढ़ और नारू या बाला—ये सब रोग जाते रहते हैं।

नोट—अपने बलाबल अनुसार एकसे सात भिलावे तक खाये जा सकते हैं।

(४) तीन माशे भिलावेकी गरी, छै माशे शक्करके साथ, खानेसे पन्द्रह दिनमें पक्षाघात—अर्द्धाङ्ग और मृगी रोग नाश हो जाते हैं।

(५) शुद्ध भिलावे, असगन्ध, चीता, बायबिडंग, जमालगोटेकी जड़, अमलताशका गूदा और निबौली—इन्हें काँजीमें पीसकर लेप करने से कोढ़ जाता रहता है।

भिलावेका विष नाश करनेवाले उपाय ।

(१) कसौंदीके पत्ते पीसकर लगानेसे भिलावोंका विकार शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(२) इमलीकी पत्तियोंका रस पीनेसे भिलावोंसे हुई खुजली और सूजन नाश हो जाती है।

(३) इमलीके बीज पीसकर खानेसे भिलावेके विकार—खुजली और सूजन आदि नाश हो जाते हैं।

(४) चिरौंजी और तिल—भैंसके दूधमें पीसकर खानेसे भिलावे की खुजली और सूजन नाश हो जाती है।

(५) अगर भिलावा खानेसे विकार हुआ हो, तो अख़रोट खाने चाहियें।

(६) अगर भिलावोंकी धूआँ लगनेसे सूजन चढ़ आई हो, तो आमाहल्दी, साँठी चाँवल और दूबको बासी पानीमें पीसकर सूजन पर ज़ोरसे मलो।

(७) काले तिल पीसकर सिरके और मक्खनमें मिला लो। इन के लगानेसे भिलावोंके धूएँसे हुई सूजन नाश हो जायगी।

(८) घीकी मालिश करनेसे भिलावोंकी धूआँ या गन्ध आदि से हुई सूजन या विष नष्ट हो जाते हैं।

(९) अगर ज़ियादा भिलावे खानेसे गरमीका बहुत ज़ोर हो जाय, तो दहीमें मिश्री मिलाकर खाओ, फौरन गरमी शान्त होगी।

(१०) अगर भिलावेका तेल शरीरपर लग जाने या पकाते समय धूआँ लग जानेसे शरीरपर सूजन, फोड़े-फुन्सी, घाव या फफोले हो जायँ, तो काले तिलोंको दूध या दहीमें पीसकर शरीरपर लेप करो अथवा जहाँ सूजन आदि हों, वहाँ लेप करो।

(११) दही, दूध, तिल, खोपरा और चिरौंजी—भिलावेके विकारों की उत्तम दवा हैं। इनके सेवन करनेसे भिलावेके दोष शान्त हो जाते हैं।

(१२) अखरोटकी मींगी, नारियलकी गिरी, चिरौंजी और काले तिल, इन सबको महीन पीसकर, भिलावेके विकार—सूजन या घाव वगैरः—पर लेप करो। फिर ४।५ घण्टों बाद लेपको हटाकर, उस जगहको माठेसे धो डालो और कुछ देर तक वहाँ कोई लेप वगैरः न करो। घण्टे आध घण्टे बाद, फिर ताज़ा लेप बनाकर लगा दो। इस तरह करनेसे भिलावेके समस्त विकार नाश हो जायँगे।

(१३) इमलीके साफ पानीमें नारियलकी गिरी घिसकर लगानेसे भिलावेसे हुई जलन और गरमी फौरन शान्त हो जाती है।

(१४) सफेद चन्दन और लालचन्दन पत्थरपर घिसकर लेप करनेसे भी भिलावेकी जलन वगैरः शान्त हो जाती है।

(१५) अगर शरीर मवादसे भरा हो और वह मवाद बदबूदार हो तथा सूजन किसी उपायसे नष्ट न होती हो, तो फस्द खोलो और जुलाब दो। फस्द खोलना हर हालतमें मुफीद है। इससे सूजन जल्दी ही बैठ जाती है।

नोट—"तिब्बे अकबरी" में लिखा है—शीतल पदार्थ, बादामका तेल, लम्बी घियाका तेल और चिकना शोरबा आदि भिलावेके विकार वालेको खिलाना लाभदायक है। अखरोटकी मींगी भी—प्रकृति अनुसार—इसके विष को नाश करती है।

(१६) तिल और काली मिट्टी पीसकर लेप करनेसे भिलावोंकी सूजन नाश हो जाती है।

(१७) चौलाईका रस मक्खनमें मिलाकर भिलावोंकी सूजनपर लगानेसे शान्ति हो जाती है।

भाँगका वर्णन और उसके मद नाशक उपाय ।

संस्कृतमें भंगके गुणावगुण-अनुसार बहुतसे, नाम हैं। नामोंसे ही भंगके गुण मालूम हो जाते हैं। जैसे—मादिनी, विजया, जया, त्रैलोक्य-विजया, आनन्दा, हर्षिणी, मोहिनी, मनोहरा, हरा, हरप्रिया, शिवप्रिया, ज्ञानवल्लिका, कामाग्नि, तन्द्रारुचिवर्द्धिनी प्रभृति। संस्कृतमें भाँगको भङ्गा भी कहते हैं। उसीका अपभ्रंश "भंग" है। वँगलामें इसे सिद्धि, भंग और गाँजा कहते हैं। मरहटीमें भाँग और गाँजा, गुजरातीमें भाँग और अँगरेज़ी में इण्डियन हैम्प कहते हैं।

भाँग कफनाशक, कड़वी, ग्राही—क़ाविज़, पाचक, हलकी, तीक्ष्ण, गरम, पित्तकारक तथा मोह, मद, वचन और अग्निको बढ़ाने वाली एवं कोढ़ और कफनाशिनी, बलवर्द्धिनी, बुढ़ापेको नाश करने-वाली, मेधाजनक और अग्निकारिणी है। भंगसे अग्नि दीपन होती, रुचि होती, मल रुकता, नींद आती और स्त्री प्रसंगकी इच्छा होती है। किसी-किसीने इसे कफ और वात जीतनेवाली भी लिखा है।

हिकमतके एक निघण्टुमें लिखा है:—भाँग दूसरे दर्जेकी गरम, रूखी और हानि करनेवाली है। इससे सिरमें दर्द होता और स्त्री-प्रसंगमें स्तम्भन या रुकावट होती है। भाँग पागल करनेवाली, नशा लानेवाली, वीर्यको सोखनेवाली, मस्तिष्क-सम्बन्धी प्राणों को गदला करनेवाली, आमाशयकी चिकनाईको खींचनेवाली और सूजनको लय करनेवाली है।

भाँगके वीजोंको संस्कृतमें भङ्गावीज, फारसीमें तुख़्म वंग और अरबीमें वज़रुल-क़नव कहते हैं। इनकी प्रकृति गरम और

रूखी होती है। ये आमाशयके लिये हानिकारक, पेशाब लानेवाले, स्तम्भन करनेवाले, वीर्यको सोखनेवाले, आँखोंकी रोशनीको मन्दी करनेवाले और पेटमें विष्टंभताप्रद हैं। बीज निर्विषैल होते हैं। भाँगमें भी विष नहीं है; पर कितने ही इसे विष मानते हैं। मानना भी चाहिये; क्योंकि यह अगर बेक़ायदे और बहुत ही ज़ियादा खा ली जाती है, तो आदमीको सदाको पागल बना देती और कितनी ही बार मार भी डालती है। हमने आँखोंसे देखा है, कि जैपुरमें, एक मनुष्यने एक अमीर जौहरी भंगड़के बढ़ावे देनेसे, एक दिन, अनापशनाप भाँग पी ली। बस, उसी दिनसे वह पागल हो गया। अनेक इलाज होनेपर भी उसे आराम न हुआ।

गाँझा भी भाँगका ही एक भेद है। भाँग दो तरहकी होती है:— (१) पुरुषके नामसे, और (२) स्त्रीके नामसे। पुरुष जातिके क्षुपसे भाँगके पत्ते लिये जाते हैं। उन्हें लोग घोटकर पीते और भाँग कहते हैं। स्त्री-जातिके पत्तोंसे गाँझा होता है। इस गाँझेसे ही चरस बनता है। रातमें, ओस पड़नेसे जब गाँझेके पत्ते ओससे भीग जाते हैं, सवेरे ही आदमी उनके भीतर होकर घूमते हैं। ओस और पत्तोंका मैल शरीरमें लग जाता है। उसे वे मल-मलकर उतार लेते हैं। बस, इसी मैलको "चरस" कहते हैं। चरस काबुल और बलख़-बुख़ारेसे बहुत आता है। दोनों तरहके वृक्ष एक ही जगह पैदा होते हैं। इसलिये इनकी जटाएँ नहीं बाँधी जा सकतीं। वैद्य लोग भंग और भंगके बीजोंके सिवा इसके और किसी अंशको काममें नहीं लेते, पर गाँझा किसी-किसी नुसख़ेमें पड़ता है। भाँगकी मात्रा ४ रत्तीकी और गाँझेकी आधी रत्तीकी है।

हिकमतमें लिखा है:—गाँझेको संस्कृतमें गंजा, फारसीमें बंगदस्ती और अरबीमें कतबबरीं कहते हैं। इसे चिलममें रखकर

पीते हैं। यह तीसरे दर्जेका गरम और रूखा होता है। यह बेहोशी लाता और दिमाग़को नुक़सान करता है। इसके दर्पनाशक घी और खटाई हैं। गाँझा यों तो सर्वाङ्गको, पर विशेषकर मस्तिष्क-सम्बन्धी अवयवोंको ढीले और सुस्त करता है। यह अत्यन्त रूखा है। शिथिलता करने और सुन्न करनेमें तो यह अफीमका भी बाबा है।

चरसको फारसीमें शबनम बंग कहते हैं। शबनम ओसको और बंग भाँगको कहते हैं। भाँगकी पत्तियोंपर ओसके जमनेसे यह बनता है; इसीसे इसे "शबनम बंग" कहते हैं। यह गरम और रूखा है। दिल और दिमाग़को ख़राब कर देता है। इसका दर्प-नाशक "गायका दूध" है; यानी गायका दूध पीनेसे इसके विकार नाश हो जाते हैं। यह भी नशा लानेवाला, रुकावट करनेवाला, सूजनको हटानेवाला, शरीरमें रूखापन करनेवाला और आँखोंकी रोशनीको नाश करनेवाला है।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, भाँगके बहुत ही ज़ियादा खाने-पीनेसे जीभमें ढीलापन, श्वासमें तंगी, बुद्धिहीनता, बकवाद और खुजली होती है।

नोट—भंगके बहुत खानेसे उपरोक्त विकार हो, तो फौरन क़य कराओ तथा दूध और अन्जीरका काढ़ा पिलाओ अथवा बादामका तेल और मक्खन खिलाओ। शराब पिलाना भी अच्छा कहा है। बहुत ही तकलीफ हो, तो शीतल तिरियांक यानी शीतल अगद सेवन कराओ।

यहाँ तक हमने भाँग, गाँजे और चरसके सम्बन्धमें जो लिखा है, वह अनेक पुस्तकोंका मसाला है। अब हम कुछ अपने अनुभव से भी लिखते हैं:—

पहलेकी बात तो हम नहीं जानते; पर आजकल भारतमें भाँग, गाँजे और चरसका इस्तेमाल बहुत बढ़ा हुआ है। भाँगको ऊँचे-नीचे सभी दर्जेके लोग पीते हैं। जो कभी नहीं पीते, वे भी होलीके त्यौहारपर स्वयं घोट या घुटवाकर पीते हैं। जो इसका

उतना शौक़ नहीं रखते; वे भी मित्रोंके यहाँ जाकर पीते हैं। ऐसे भी लोग हैं, जो इसे नहीं पीते; पर हिन्दुओंको इसके पीनेमें कोई बड़ा ऐतराज़ नहीं। भंग महादेवजीकी प्यारी बूटी है, यह बात मशहूर है। जो लोग इसे सदा पीते हैं, वे इसे सहजमें छोड़ नहीं सकते; पर अफीमकी तरह इसके छोड़नेमें बड़ी-बड़ी मुसीबतोंका सामना नहीं करना पड़ता। छोड़ते समय, दश-पाँच दिन सुस्ती रहती है। समय पर इसकी याद आ जाती है। जिनको इसके पीने बाद पाख़ाने जाने की आदत हो जाती है, उन्हें कुछ दिनतक बिना इसके पिये दस्त साफ नहीं होता।

बहुतसे लोग भाँगका घी निकालकर और घीको चाशनीमें डाल कर बरफी-सी बना लेते हैं। भाँगको घीमें मिलाकर औटानेसे भाँग का असर घीमें आ जाता है। उस घीको छान लेनेसे हरे रंगका साफ़ घी रह जाता है। यह घी पाकोंमें भी डाला जाता है और उससे माजून भी बनती है। बहुतसे लोग भाँगमें, चीनी और तिल मिलाकर खाते हैं। इस तरह खाई हुई भाँग बहुत गरमी करती है। पर जिनका मिज़ाज बादीका है, जिनको घुटी हुई भाँग नुक़सान करती है, पेट फुलाती या जोड़ोंमें दर्द करती है, वे अगर इस तरह खाते हैं, तो हानि नहीं करती। जाड़ेके मौसममें इस तरह खाना उतना बुरा नहीं, पर गरमीमें इस तरह भाँग खाना बेशक बुरा है।

बहुतसे लोग भाँगको भिगोकर और कपड़ेमें रखकर खूब धोते हैं। बारम्बार धोनेसे भाँगकी गरमी और विषैला अंश निश्चय ही कम हो जाता है। इसी लिये कितने ही शौक़ीन इसको पोटलीमें बाँधकर, कूएँके पानीके भीतर लटका देते हैं और फिर खींचकर धोते और सुखा लेते हैं। जो ज़हरी भाँग पीने वाले हैं, वे ताम्बेके बासनमें भाँग और पुरानी चालके मोटे ताम्बेके पैसे डालकर आग पर उबालते हैं। इस तरह औटाई हुई भाँग बहुत ही तेज़ हो जाती

है । यह भाँग अत्यन्त गरम होती है । जो नशेबाज़ इसकी हानियोंको नहीं समझते, वे ही ऐसा करते और नाना प्रकारके रोगोंको निमन्त्रण देकर बुलाते हैं ।

भाँग अगर ठीक मसाला डालकर, कम मात्रामें, घोटी-छानी और पीयी जाय, तो उतनी हानि नहीं करती, वरन अनेक लाभ करती है । गरमीके मौसममें, सन्ध्या-समय, मसालोंके साथ घोट-छानकर पीयी हुई भाँग, मनुष्यको हैज़ेके प्रकोपसे बचाती, खूब भूख लगाती और रुचि बढ़ाती है । इसके नशेमें सूखा-सर्रा जैसा भी भोजन मिल जाता है, बड़ा स्वाद लगता और जल्दी ही हज़म हो जाता है । इसके शामको पीने और भोजनमें रबड़ी या अधौटा दूध मिश्री मिला हुआ पीनेसे स्त्री-प्रसंगकी इच्छा खूब होती है और बेफिक्री या निश्चिन्तता होनेसे आनन्द भी अधिक आता और स्तम्भन भी मामूलसे ज़ियादा होता है; पर अत्यधिक भाँग पीनेवालोंको इनमेंसे कोई भी आनन्द नहीं आता । वे इसके नशेमें बहुत ही ज़ियादा नाक तक ठूँस-ठूँसकर खा लेनेसे बीमार हो जाते हैं । अगर बीमार नहीं होते, तो खाटपर जाकर इस तरह पड़ जाते हैं, कि लोग उन्हें मुर्दा समझने लगते हैं । वही कहावत चरितार्थ होती है, "घरके जाने मर गये और आप नशेके बीच ।" जो इस तरह अँधाधुन्ध भाँग पीते हैं, वे महामूर्ख होते हैं ।

भाँग गरम-बादी या उष्णवात पैदा करती है और सौंफ गरम-बादीको नाश करती है; अतः भाँग पीनेवालोंको भाँगके साथ "सौंफ" अवश्य लेनी चाहिये । सौंफके सिवा, बादाम, छोटी इलायची, गुलाबके फूल, खीरे ककड़ीके बीजोंकी मींगी, मुलेठी, ख़सख़सके दाने, धनिया और सफेद चन्दन आदि भी लेने चाहियें । इनके साथ पीसकर और मिश्री या चीनीके साथ छानकर भाँग पीनेसे, गरमीके मौसममें, बेइन्तहा फायदे होते हैं । पर एक आदमी

के हिस्सेमें एक या दो-तीन रत्तीसे ज़ियादा भाँग न आनी चाहिये। भाँगको खूब धुलवाकर, बीज निकाल देने चाहियें। छानते समय, थोड़ा-सा अर्क़ गुलाब या अर्क़ केवड़ा भी मिला दिया जाय, तो क्या कहना! सफेद चन्दन कड़वा होता है; अतः वह बहुत थोड़ा लेना चाहिये। हमने स्वयं इस तरह भाँग पीकर अनेक लाभ उठाये और बरसों भाँग पीकर भी, रत्ती दो रत्तीसे ज़ियादा नहीं बढ़ायी। एक बार, बलूचिस्तानमें, जहाँ बर्फ़ पड़ती है, सर्दीके मारे आदमीका करमकल्याण हो जाता है, हमने "विजया पाक" बनाकर खाया था। वहाँ कोई भी जाड़ेमें भंग पी नहीं सकता। पानीके बदले लोग चाय पीते हैं। हाँ, उस "विजयापाक" ने हमारा बल-पुरुषार्थ खूब बढ़ाया। सच पूछो तो ज़िन्दगीका मज़ा दिखाया। विजयापाक या भाँगके साथ तैयार होने वाले अनेकों अमृत-समान नुसख़े हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" चौथे भाग में लिखे हैं।

विधिपूर्व्वक और युक्तिके साथ, उचित मात्रामें खाया हुआ विष जिस तरह अमृतका काम करता है, भाँगको भी वैसी ही समझिये। जो लोग बेक़ायदे, गाय-भैंसकी तरह इसे चरते या खाते हैं, वे निश्चय ही नाना प्रकारके रोगोंके पञ्जोंमें फँसते और अनेक तरहके दिल-दिमाग़-सम्बन्धी उन्मादादि रोगोंके शिकार होकर बुरी मौत मरते हैं। इसके बहुत ही ज़ियादा खाने-पीनेसे सिरमें चक्कर आते हैं, जी मिचलाता है, कलेजा धड़कता है, ज़मीन आसमान चलते दीखते हैं, कंठ सूखता है, अति निद्रा आती है, होश-हवाश नहीं रहते, मनुष्य बेढंगी बकवाद करता और बेहोश हो जाता है। अगर जल्दी ही उचित चिकित्सा नहीं होती, तो उन्माद रोग हो जाता है। अतः समझदार इसे न लगावें और जो लगावें ही तो अल्प मात्रामें सेवन करके ज़िन्दगीका मज़ा उठावें। चूँकि भाँग गरम और रूखी है, अतः इसके सेवन करने वालोंको घी, दूध, मलाई,

मलाईका हलवा, बादामका हरीरा या शीतल शर्बत आदि ज़रूर इस्तेमाल करने चाहियें। जिन्हें ये चीजें नसीब न हों, वे भाँगको मुँह न लगावें। इनके बिना भाँग पीनेसे हानिके सिवा कोई लाभ नहीं।

भाँगके चन्द नुसख़े।

(१) भाँग १ तोले और अफीम १ माशे—दोनोंको पानीमें पीस, कपड़ेपर लेपकर, ज़रा गरम करके गुदा-द्वारपर बाँध देनेसे बवासीरकी पीड़ा तत्काल शान्त होती है। परीक्षित है।

(२) भाँगकी पत्तियाँ, इमलीकी पत्तियाँ, नीमके पत्ते, बकायनके पत्ते, सम्हालूके पत्ते और नीलकी पत्तियाँ—इनको पाँच-पाँच तोले लेकर, सवा सेर पानीमें डाल, हाँडीमें काढ़ा करो। जब तीन पाव जल रह जाय, चूल्हेसे उतार लो। इस काढ़ेका बफारा बवासीर-वालेकी गुदाको देनेसे मस्से नाश हो जाते हैं।

(३) भाँगको भूँजकर पीस लो। फिर उसे शहदमें मिलाकर, रातको, सोते समय, चाट लो। इस उपायसे घोर अतिसार, पतले दस्त, नींद न आना, संग्रहणी और मन्दाग्नि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) भाँगको बकरीके दूधमें पीसकर, पाँवोंपर लेप करनेसे निद्रानाश रोग आराम होकर नींद आती है।

(५) छै माशे भाँग और छै माशे कालीमिर्च,—दोनोंको सूखी ही-पीसकर खाने और इसी दवाको सरसोंके तेलमें मिलाकर मलनेसे पक्षाघात रोग नाश हो जाता है।

(६) भाँगको जलमें पीस, लुगदी बना, घीमें सानकर गरम करो। फिर टिकिया बनाकर गुदापर बाँध दो और लँगोट कस लो। इस उपायसे बवासीरका दर्द, खुजली और सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(७) भाँग और अफीम मिलाकर खानेसे ज्वरातिसार नाश हो जाता है। कहा है:—

ज्वरस्यैवातिसारे च योगो भंगाहिफेनयोः॥

(८) वात व्याधिमें बच और भाँगको एकत्र मिलाकर सेवन करना हितकारक है। पर साथ ही तेलकी मालिश और पसीने लेनेकी भी दरकार है।

भाँगका नशा या मद नाश करनेके उपाय।

आरम्भिक उपायः—

"वैद्यकल्पतरु"में एक सज्जन लिखते हैं—भाँग या गाँजेका नशा अथवा विष चढ़नेसे आँखें और चेहरा लाल हो जाता है, रोगी हँसता, हल्ला करता और गाली देता या मारने दौड़ता है, तथा रह-रहकर उन्मादके-से लक्षण होते हैं।

उपायः—

(१) कय और दस्त कराओ।

(२) सिरपर शीतल जलकी धारा छोड़ो।

(३) एमोनिया सुँघाओ।

(४) रोगीको सोने मत दो।

(५) दही या मीठेके साथ भात खिलाओ।

नोट—हमारे यहाँ भाँगमें सोने देनेकी मनाही नहीं—उल्टा सुलाते हैं और अक्सर गहरा नशा उतर भी जाता है। शायद "कल्पतरु"के लेखक महोदयने न सोने देनेकी बात किसी ऐसे ग्रन्थके आधारपर लिखी हो, जिसे हमने न देखा हो अथवा भाँगसे रोगीकी मृत्यु होनेकी संभावना हो, उस समय सोने देना बुरा हो।

(१) भंगका नशा बहुत ही तेज़ हो, रोगी सोना चाहे तो सो जाने दो। सोनेसे अक्सर नशा उतर जाता है। अगर भाँग खानेवाले के गलेमें खुश्की बहुत हो, गला सूखा जाता हो, तो उसके गले

पर घी चुपड़ो । अरहरकी दाल पानीमें धोकर, वही धोवन या पानी पिला दो । परीक्षित है ।

(२) पेड़ा पानीमें घोलकर पिलानेसे भाँगका नशा उतर जाता है ।

(३) बिनौलोंकी गिरी दूधके साथ पिलानेसे भाँगका नशा उतर जाता है ।

(४) अगर गाँझा पीनेसे बहुत नशा हो गया हो, तो दूध पिलाओ अथवा घी और मिश्री मिलाकर चटाओ । खटाई खिलानेसे भी भाँग और गाँझेका नशा उतर जाता है ।

(५) इमलीका सत्त खिलानेसे भाँगका नशा उतर जाता है । कई बार परीक्षा की है ।

(६) कहते हैं, बहुतसा दही खा लेनेसे भाँगका नशा उतर जाता है । पुराने अचारके नीबू खानेसे कई बार नशा उतरते देखा है ।

(७) अगर भाँगकी वजहसे गला सूखा जाता हो, तो घी, दूध और मिश्री मिलाकर निवाया-निवाया पिलाओ और गलेपर घी चुपड़ो । कई बार फायदा देखा है ।

(८) भाँगके नशेकी ग़फ़लतमें ऐमोनिया सुँघाना भी लाभदायक है । अगर ऐमोनिया न हो, तो चूना और नौसादर लेकर, जरासे जलके साथ हथेलियोंमें मलकर सुँघाओ । यह घरू एमोनिया है ।

(९) सोंठका चूर्ण गायके दहीके साथ खानेसे भाँगका विष शान्त हो जाता है ।

———

जमालगोटेका वर्णन और उसकी शान्तिके उपाय।

जमालगोटा विष नहीं है; पर कभी-कभी यह विषका-सा काम करता है। यह दो तरहका होता है। एकको छोटी दन्ती और दूसरेको बड़ी दन्ती कहते हैं। इसकी जड़को दन्ती, फलोंको दन्ती-बीज या जमालगोटा कहते हैं। ये फल अरण्डीके छोटे बीजों-जैसे होते हैं। ये बहुत ही तेज़ दस्तावर होते हैं। बिना शोधे खानेसे भयानक हानि करते और इस दशामें वमन और विरेचन दोनों होते हैं। अतः इन्हें बिना शोधे हरगिज़ न लेना चाहिये।

फलोंके बीचमें एक दो परती जीभी-सी होती है, उसीसे क़य होती है। मींगियोंमें तेल-सा तरल पदार्थ होता है, इसीसे वैद्य लोग शोधकर, उस चिकनाईको दूर कर देते हैं। जब जीभी निकल जाती है और चिकनाई दूर हो जाती है, तब जमालगोटा खानेके कामका होता है।

जमालगोटा भारी, चिकना, दस्तावर तथा पित्त और कफ नाशक है। किसीने इसे कृमिनाशक, दीपक और उदरामय-शोधक भी लिखा है। किसीने लिखा है, जमालगोटा गरम, तीक्ष्ण, कफनाशक, क्लेद-कारक और दस्तावर होता है।

जमालगोटेका तेल, जिसे अङ्गरेजीमें, "क्रोटन आयल" कहते हैं, अत्यन्त रेचक या बहुत ही तेज़ दस्तावर होता है। इससे अफ़ारा, उदररोग, संन्यास, शिररोग, धनुःस्तम्भ, ज्वर, उन्माद, एकांग रोग, आमवात और सूजन नष्ट होते हैं। इससे खाँसी भी जाती है। डाकृर लोग इसका व्यवहार बहुत करते हैं।

वैद्य लोग जमालगोटेको शोधकर, उचित औषधियोंके साथ, एक रत्ती अनुमानसे देते हैं। इसके द्वारा दस्त करानेसे उदर रोग और जीर्णज्वर आदि रोग नाश हो जाते हैं।

शोधन-विधि ।

जमालगोटा शोधनेकी बहुत-सी तरकीबें लिखी हैं:—

(१) जमालगोटेके बीचमें जो दोपरती जीभी-सी होती है, उसे निकाल डालो। फिर, उसे दूधमें, दोलायन्त्रकी विधिसे, पका लो। जमालगोटा शुद्ध हो जायगा।

(२) जमालगोटेको भैंसके गोबरमें डालकर ६ घण्टे तक पकाओ। इसके बाद, जमालगोटेके छिलके उतारकर, भीतरकी जीभी निकाल फेंको। शेषमें, उसे नीबूके रसमें दो दिन तक घोटो। बस, अब जमालगोटा कामका हो जायगा।

जमालगोटेसे हानि ।

इसके ज़ियादा खा लेनेसे बहुत ही दस्त लगते हैं, मल टूट जाता है, कय होती हैं, ऐंठनी चलती है, आँतोंमें घाव हो जाते हैं और पट्ठे खिंचने लगते हैं।

शान्तिके उपाय ।

(१) धनिया, मिश्री और दही—तीनो मिलाकर खानेसे जमालगोटेके उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

(२) अगर कुछ भी न हो, तो पहले थोड़ा-सा गरम पानी पिला दो; फौरन दस्त बन्द हो जायँगे। अगर इससे लाभ न हो—दस्त बन्द न हों, तो दो या चार चाँवल भर अफीम खिलाकर, ऊपरसे घी-मिला दूध पिला दो। अगर गरमीका मौसम हो, तो दूध शीतल करके पिलाओ और यदि जाड़ा हो तो ज़रा गरम पिलाओ।

(३) कहते हैं, बिना घी निकाली छाछ पिला देनेसे भी जमालगोटेके उपद्रव शान्त हो जाते है।

औषधि प्रयोग ।

(१) केवल जमालगोटेको घीमें पीसकर खाने और ऊपरसे शीतल जल पीनेसे सर्प-विष तत्काल शान्त होता है। कहा है—

किमत्र बहुनोक्तेन जैपालेनैव तत्क्षणम् ।
घृतं शीताम्बुना श्रेष्ठं भंजनं सर्पदंशके ॥

(२) जमालगोटेकी जड़, चीतेकी जड़, थूहरका दूध, आकका दूध, गुड़, भिलावे, हीरा कसीस और सेंधानोन—इन सबका लेप करनेसे फोड़ा फूट जाता और पीड़ा मिट जाती है।

(३) करंजुएके बीज, भिलावा, जमालगोटेकी जड़, चीता, कनेरकी जड़, कबूतरकी बीट, कंककी बीट और गीधकी बीट इन सबका लेप फोड़ेको तत्काल फोड़ देता है।

—o—

अफीमका वर्णन और उसकी विष-शान्तिके उपाय।

खसखसके दानोंको, कातिकके महीनेमें, खेतोंमें बो देते हैं, १०।१२ दिनमें पेड़ उग आते हैं। फूल निकलने तक खेतोंकी सिंचाई करते हैं। पोस्तेके पेड़ कमर या छाती-भर अथवा दोसे चार हाथ तक ऊँचे होते हैं। पत्ते तीन अंगुल चौड़े और लम्बे होते हैं। अगहनके महीनेमें सीधी डण्डीवाला फूल निकलता है। फूल दो तरहके होते हैं:—(१) लाल, और (२) सफेद। भारत में सफेद फूलका पेड़ बहुत कम बोया जाता है। फूलसे असंख्य बीजोंवाला फल होता है। उसे बोंडी या डोंडी कहते हैं। फल पकनेसे पहले माघ-फागुनमें, सवेरे ही, डोंडीके ऊपर तीन नोक के औजारसे चोंच-जैसा छेद कर देते हैं। उन छेदोंसे धीरे-धीरे रस बहता है। रस डोंडीके बाहर आते ही, हवा लगने से, सफेद

-हो जाता है। फिर इसका गुलावी या किसी क़दर काला रंग हो जाता है। किसान इसको खुरच-खुरच कर इकट्ठा करते और इसीसे अफीम वनाकर भारत-सरकारके हवाले कर देते हैं। पोस्ताकी खेतीका पूरा हाल लिखनेसे अनेक सफे भरेंगे। हमें उतना लिखने की यहाँ ज़रूरत नहीं। ये दो-चार वातें इसलिये लिख दी हैं, कि अनजान लोग जान जायें, कि अफ़ीम खेती द्वारा पैदा होती है और यह पोस्तेकी डोंडियोंका रस मात्र है। इसीसे अफीमको संस्कृतमें ख़सख़स-फल-क्षीर, पोस्त-रस या ख़सख़स-रस भी कहते हैं।

संस्कृतमें अफीमके और भी वहुतसे नाम हैं। जैसे,—आफूक, अहिफेन, अफेनु, निफेन, नागफेन, भुजङ्गफेन या अहिफेन। अहि साँपको कहते हैं और फेन भागोंको कहते हैं। भुजङ्गका अर्थ सर्प है और फेनका भाग। इन शब्दोंसे ऐसा मालूम होता है, कि अफीम साँपके भागोंसे तैयार होती है, पर यह वात विल-कुल वेजड़ है। ऊपरका पैरा पढ़नेसे मालूम हो गया होगा, कि अफीम खेतमें पैदा होनेवाले एक वृक्षके फलका रस है। अव यह सवाल पैदा होता है कि, भारतके लोगोंने इसका नाम अहिफेन, भुजङ्गफेन या नागफेन क्यों रक्खा? मालूम होता है, अफीमके गुण देखकर, गुणोंके अनुसार इसका नाम अहिफेन= साँपका फेन रखा गया, क्योंकि साँपके फेन या विषसे मृत्यु हो जाती है और इसके अधिक खानेसे भी मृत्यु हो जाती है। वास्तव में, यह शब्दार्थ सच्चा नहीं।

असलमें, अफीम इस देशकी पैदाइश नहीं। आलू और तमाखू जिस तरह दूसरे देशोंसे भारतमें आये, उसी तरह अफीम भी दूसरे देशों से भारतमें लाई गयी; यानी दूसरे देशोंसे पोस्ताके वीज लाकर, भारतमें वोये गये और फिर कामकी चीज़ समझ-कर, इसकी खेती होने लगी। "वैद्यकल्पतरु"में एक सज्जनने लिखा है कि, ग्रीक भाषामें "ओपियान" शब्द है। उसका अर्थ "नींद

-लाने वाला" है। उसी ओपियानसे ओपियम, अफियून, अफून, आफू या अफीम शब्द बन गये जान पड़ते हैं। यह मादक या नशीला पदार्थ है। इससे नींद भी गहरी आती है। इसकी गणना उपविषोंमें है, क्योंकि इसके अधिक परिमाणमें खानेसे मृत्यु हो जाती है।

अफीम यद्यपि विष या उपविष है; प्राणनाशक या घातक है; फिर भी भारतवर्षके करोड़ों आदमी इसे नित्य-नियमित रूपसे खाते हैं। राजपूताने या मारवाड़ देशमें इसका प्रचार सबसे अधिक है। जिस तरह युक्तप्रान्तमे किसी मित्र या मेहमानके आने पर पान, तम्बाकू या शर्बतकी ख़ातिर की जाती है, वहाँ इसी तरह अफीमकी मनुहार की जाती है। जो जाता है, उसे ही घुली हुई अफीम हथेलियोंमें डाल कर दी जाती है। महफिलों और विवाह-शादी तथा लड़का होने के समय जो घुली हुई लेता है, उसे घोलकर और जो डली पसन्द करता है, उसे डली देते हैं। खानेवाला पहले तो अपने घरपर अफीम खाता है और फिर दिन-भरमें जितनी जगह मिलने जाता है, वहाँ खाता है। मारवाड़के राजपूत या ओसवाल एवं अन्य लोग इसे खूब पसन्द करते हैं। कोई-कोई ठाकुर या राजपूत दिन-भरमें छटाँक-छटाँक भर तक खा जाते हैं और हर समय नशेमें झूमते रहते हैं। जैपुरमें एक नव्वाब साहब सवेरे-शाम पाव-पावभर अफीम खाते थे और इस पर भी जब उन्हें नशा कम मालूम होता था, तब साँप मँगवाकर खाते थे। ऐसे-ऐसे भारी अफीमची मारवाड़ या राजपूतानेमें बहुत देखे जाते हैं। जहाँ देशी राजाओंका राज है, वहाँ अफीमका ठेका नहीं दिया जाता; हर-शख़्स अपने घरमें मनमानी अफीम रख सकता है। वहाँ अफीम खूब सस्ती होती है और यहाँकी अपेक्षा साफ-सुथरी और बेमेल मिलती है। भारतीय ठेकेदार या सरकार—भगवान् जाने कौन—भारतीय अफीममें कत्था, कोयला, मिट्टी प्रभृति मिला देते हैं। अफीम शोधने-

पर दो हिस्से मैला और एक हिस्सा शुद्ध अफीम मिलती है। जो बिना शोधी अफीम खाते हैं, उन्हें अनेक रोग हो जाते हैं।

मुसल्मानी राजत्व कालमें, दरवारके समय, अफीमकी मनुहार की चाल वहुत हो गई। वहींसे यह चाल देशी रजवाड़ोंमें भी फैल गई। जहाँ अफीमकी मनुहार नहीं की जाती, वहाँकी लोग निन्दा करते हैं। इसलिये ग़रीब-से-ग़रीब भी घर-आयेको अफीम घोलकर पिलाता है। ये बातें हमने मारवाड़में आँखोंसे देखी हैं। पर इतनी ही ख़ैर है कि, यह चाल राजपूतों, चारणों या राजके कारवारियोंमें ही अधिक है। मामूली लोग या ब्राह्मण-वनिये इससे वचे हुए हैं। अगर खाते भी हैं, तो अल्पमात्रामें और नियत समय पर।

अफीमका प्रचार यों तो किसी-न-किसी रूपमें सारी दुनिया-में फैल गया है, पर भारत और ख़ासकर चीन देशमें अफीमका प्रचार वहुत है। भारतमें इसे घोलकर या योंही खाते हैं। एक विशेष प्रकारकी नलीमें रखकर, ऊपरसे आग रखकर, तमाखूकी तरह भी पीते हैं। इसको चण्डू पीना कहते हैं। अफीम पिलानेके चण्डूखाने भारतमें जहाँ-तहाँ देखे जाते हैं। चीनमें तो इनकी अत्यन्त भरमार है। भारत और चीनमें, इसे छोटे-छोटे नवजात शिशुओंको भी उनकी मातायें वालघूँटीमें या योंही देती हैं। इसके खिला-पिला देनेसे वालक नशेमे पड़ा रहता है, रोता-झींकता नहीं; माँ अपना घरका काम किया करती है। पर इसका नतीजा ख़राव होता है। अफीम खानेवाले बच्चे और बच्चोंकी तरह हृष्ट-पुष्ट और वलवान नहीं होते।

योरपमें अफीमका सत्व निकाला जाता है। इसे मारफिया कहते हैं। इसमें एक विचित्र गुण है। शरीरके किसी भागमें असह्य वेदना या दर्द होता हो, उस जगह चमड़ेमें वहुत ही वारीक छेद करके, एक सूईके द्वारा उसमें मारफियाकी एक बूँद डाल

देने से, वहाँका घोर दर्द तत्काल छूमंतरकी तरह उड़ जाता है। परन्तु साथ ही एक प्रकारका नशा चढ़ता है और उससे अपूर्व्व आनन्द बोध होता है। इस तरह दो-चार बार मारफिया शरीरके भीतर छोड़नेसे इसका व्यसन हो जाता है। रह-रहकर उसी आनन्दकी इच्छा होती है। तब वहाँके मर्द और औरत, ख़ासकर मेमें, इसे अपने शरीरमें छुड़वानेके लिये, डाक्टरोंके पास जाती हैं। फिर जब इसके छोड़नेका तरीक़ा जान जाती हैं, अपने पास हर समय मारफियासे भरी हुई पिचकारी रखती हैं। उस पिचकारीकी सूईके मुँहको अपने शरीरके किसी भागमें गड़ाती हैं और मारफियाकी एक बूँद उसमें डाल देती हैं। इसके शरीरमें पहुँचते ही थोड़ी देरके लिये आनन्दकी लहरें उठने लगती हैं। जब उसका असर जाता रहता है, तब फिर उसी तरह शरीरमें छेद करके, फिर एक बूँद मारफिया उसमें डाल देती हैं। इस तरह रोज़ करनेसे उनके शरीर मारे छेदों या घावोंके चलनी हो जाते हैं। फिर भी उनकी यह खोटी लत नहीं छूटती।

हिन्दुस्तानमें जिस तरह गुड़ और तमाखू कूटकर गुड़ाखू बनाई जाती है और छोटी सुलफी चिलमोंमें रखकर पीयी जाती है, उस तरह दक्खन महासागरके सुमात्रा, बोर्न्यू आदि टापुओंके रहनेवाले अफीममें चीनी और केले मिलाकर गुडाखू बनाते और पीते हैं। तुरकिस्तानके रहने वाले अफीममें गाँजा प्रभृति नशीले पदार्थ मिलाकर या और मसाले मिलाकर माजून बनाकर खाते हैं। कोई-कोई चीनी और अफीम घोलकर शर्बत बनाते और पीते हैं। आसाम, बरमा और चीन देशमें तो अफीमसे अनेक प्रकारके खानेके पदार्थ बनाकर खाते हैं। मतलब यह है, कि दुनियाके सभी देशोंमें, तमाखूकी तरह, इसका प्रचार किसी-न-किसी रूपमें होता ही है।

अफीममें स्तम्भन-शक्ति होती है। भारतमें, आजकल, सौमें नब्बे आदमियोंको प्रमेह, धातुक्षीणता या धातुदोषका रोग होता है। ऐसे लोग स्त्री-प्रसंगमें दो-चार मिनट भी नहीं ठहरते; क्योंकि वीर्यके पतले या दोषी होने से स्तम्भन नहीं होता। इसलिये अनेक मूर्ख अफीम, गाँजा या चरस आदि नशीले पदार्थ खाकर प्रसंग करते हैं। कुछ दिनों तक इनके खानेसे उन्हें आनन्द आता और कुछ-न-कुछ अधिक स्तम्भन भी होता है। फिर तो उन्हें इसका व्यसन हो जाता है—आदत पड़ जाती है, रोज़ खाये-पिये विना नहीं सरता। कुछ दिन इनके लगातार सेवन करते रहने से फिर स्तम्भन भी नहीं होता, नसें ढीली पड़ जातीं और पुरुषत्व जाता रहता है। महीनों स्त्री की इच्छा नहीं होती। इसके सिवा, और भी बहुत-सी हानियाँ होती हैं, जिन्हें हम आगे लिखेंगे।

भारतमें, अफ़ीम दवाओंमें मिलाने या और तरह सेवन कराने की चाल पहले नहींके समान थी। हिकमतकी दवाओंमें अफीम का ज़ियादा इस्तेमाल देखा जाता है। हकीमोंकी देखा-देखी वैद्य भी इसे, मुसलमानी ज़माने से, दवाओंके काममें लाने लगे हैं। योरपमें अफीमका सत्त—मारफिया बहुत वरता जाता है। अफीम हानिकर उपविष होनेपर भी, अनेक रोगोंमें अपूर्व्व चमत्कार दिखाती है। वेमेल और स्वच्छ अफीम दवाकी तरह काममें लाई जाय, तो बड़ी गुणकारी सावित होती है। अनेक असाध्य रोग जो और दवाओंसे नहीं जाते, इससे चले जाते हैं। चढ़ी उम्रमें जब नजलेकी खाँसी होती है, तब शायद ही किसी दवासे पीछा छोड़ती हो। हमने अनेक नजलेकी खाँसी वालोंको तरह-तरहकी दवायें दीं, मगर उनकी खाँसी न गई; अन्तमें अफीम खानेकी सलाह दी। अल्प मात्रामें शुद्ध अफीम खाने और उसपर दूध अधिक पीने से वह आरोग्य हो गये; खाँसीका नाम भी न रहा। इतना ही नहीं,

वह पहलेसे मोटेताजे भी होगये। सच पूछो तो चढ़ी उम्रमें नजले की खाँसीकी अफीमके सिवा और दवा ही नहीं। बादशाह अकबरको भी बुढ़ापेमें नजलेकी खाँसी हो गई थी। बड़े-बड़े नामी दरबारी हकीमोंने लाखों-करोड़ोंकी दवाएँ बनाकर शाहन्शाहको खिलाईं, पर खाँसी न गई; तब लाचार होकर अफीमका आश्रय लेना पड़ा। अन्तकाल तक बादशाहकी ज़िन्दगीकी नाव अफीमने ही खेयी। कहिये, दिल्लीश्वरके यहाँ क्या अभाव था! आकाश के तारे भी तोड़कर लाये जा सकते थे। दुर्लभ-से-दुर्लभ दवाएँ आ सकती थीं। हकीम-वैद्य भी अकबरके दरबारसे बढ़कर कहाँ होंगे!

शराब या मदिरा भी यदि थोड़ी और क़ायदेसे पीयी जाय, तो मनुष्यको बड़ा लाभ पहुँचाती है, परन्तु उससे शरीरकी सन्धियाँ पुष्ट न होकर उल्टी ढीली हो जाती हैं; पर अफ़ीमसे शरीरके जोड़ पुष्ट होते हैं। सरकारी कमीशनके सामने गवाही देते समय भी भारतके देशी और यूरोपीय चिकित्सकोंने कहा था—"व्यसनके रूप में भी शराबकी अपेक्षा अफीम ज़ियादा गुणकारी है।" सरकारने अफीमका प्रचार रोकनेके लिये कमीशन बिठाया था, पर अन्तमें अफीमके सम्बन्धमें ऐसी-ऐसी बातें सुनकर, उसे अपना विचार बदल देना पड़ा।

डाक्टरी पुस्तकोंमें अफीमके सम्बन्धमें लिखा है:—"अफीम मस्तिष्कमें उत्तेजना करने वाली, नींद लाने वाली, दर्द या पीड़ा नाश करने वाली, पसीना लाने वाली, थकान नाश करने वाली और नशीली है। अफीमकी हल्की मात्रा लेनेसे, पहले उसकी गरमी सारे शरीरमें फैलती है, पीछे सिरमें नशा होता है। पूरी मात्रा खानेसे १५।२० मिनटमें ही नशा आने लगता है। पहले सिरमें कुछ भारीपन मालूम होता है। इसके बाद शरीर चैतन्य हो जाता है और बदनमें किसी तरहकी वेदना होती है, तो वह भी हवा हो जाती है। इससे बुद्धि खिलती है, क्योंकि बुद्धि धारण करनेवाली

नसें इससे पुष्ट होती हैं। बातें बनानेकी अधिक सामर्थ्य हो जाती है एवं हिम्मत-साहस, पराक्रम और चातुरी बढ़ जाती है। शरीरमें बल और फुर्त्ती आ जाती है और एक प्रकारका अकथनीय आनन्द आता है। इस अवस्थाके थोड़ी देर बाद—घड़ी दो घड़ी या ज़ियादा देर बाद सुखकी नींद आती है। अफीमका प्रभाव प्रकृति-भेदसे भिन्न-भिन्न प्रकारका होता है। किसीको इससे दस्त साफ़ होता है और किसीको दस्तक़ब्ज़ होता है। किसीको इससे नशा बहुत होकर ग़फ़लत होती है और किसीके शरीरमें उत्तेजना फैलनेसे चैतन्यता होती है। दर्दकी हालतमें देनेसे कम नशा आता है। भरे पेटपर अफीम जल्दी नहीं चढ़ती, पर ख़ाली पेट खानेसे जल्दी नशा लाती है। मृत्युकाल नज़दीक होनेपर, ज़रा-सी भी अफीमकी मात्रा शीघ्र ही मृत्यु कर देती है।"

आयुर्वेदीय ग्रन्थोंमें लिखा है, अफीम शोषक, ग्राही, कफनाशक, वायुकारक, पित्तकारक, वीर्यवर्द्धक, आनन्दकारक, मादक, वीर्य-स्तम्भक तथा सन्निपात, कृमि, पाण्डु, क्षय, प्रमेह, श्वास, खाँसी, प्लीहा और धातुक्षय रोग नाशक होती है। अफीमके जारण, मारण, धारण और सारण चार भेद होते हैं। सफेद अफीम अन्नको जीर्ण करती है, इसलिये उसे "जारण" कहते हैं। काली मृत्यु करती है, इसलिये उसे "मारण" कहते हैं। पीली जरा-नाशक है, इसलिये उसे "धारण" कहते हैं। चित्रवर्णकी मलको सारण करती है, इसलिये उसे सारण कहते हैं। अफीमके दर्पको नाश करने वाले घी और तवासीर हैं और प्रतिनिधि या बदल आसवच है। मात्रा पाव रत्ती या दो चाँवल-भरकी है।

यद्यपि अफीम प्राणनाशक विष या उपविष है, तथापि अनेक भयङ्कर रोगोंमें अमृत है। इसलिये हम इसके उत्तमोत्तम प्रयोग या नुसख़े पाठकोंके उपकारार्थ लिखते हैं। इनमेंसे जो नुसख़े

हमारे आज़मूदा हैं, उनके सामने "परीक्षित" शब्द लिखेंगे। पर जिन के सामने "परीक्षित" शब्द न हो, उन्हें भी आप कामके समझें— व्यर्थ न समझें। हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय"के पहलेके भागोंमें जो नुसख़े लिखे हैं, उनमेंसे अधिक परीक्षित हैं, पर जिनकी अनेक बार परीक्षा नहीं की—एकाध बार परीक्षा की है—उनके सामने "परीक्षित" शब्द नहीं लिखे। पाठक परीक्षित और अपरीक्षित दोनों तरहके नुसख़ोंसे काम लें। बेकाम नुसखे हम क्यों लिखने लगे? सम्भव है, इतने बड़े संग्रहमें, कुछ बेकाम नुसखे भी निकल आवें, पर बहुत कम, क्योंकि हम इस कामको अपनी सामर्थ्य-भर विचार-पूर्वक कर रहे हैं।

औषधि-प्रयोग।

(१) बलाबल अनुसार पाव रत्तीसे दो रत्ती तक, अफीम पान में धरकर खानेसे धनुस्तंभ रोग नाश हो जाता है।

(२) शुद्ध अफीम, शुद्ध कुचला और काली मिर्च—तीनोंको बराबर-बराबर लेकर बँगला पानोंके रसके साथ घोटकर, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बनाकर, छायामें सुखा लो। एक गोली, सवेरे ही, खाकर, ऊपरसे पानका बीड़ा या खिल्ली खानेसे दण्डापतानक रोग, हैज़ा, सूजन और मृगी रोग नाश हो जाते हैं। इन गोलियोंका नाम "समीरगज केसरी बटी" है; क्योंकि ये गोलियाँ समीर यानी वायुके रोगोंको नाश करती हैं। वायु-रोगोंपर ये गोलियाँ बराबर काम देती हैं। जिसमें भी दण्डापतानक रोगपर, जिसमें शरीर दण्डेकी तरह अचल हो जाता है, खूब काम देती हैं। इसके सिवा हैज़े वग़ैरः उपरोक्त रोगोंपर भी फेल नहीं होतीं। परीक्षित हैं।

नोट—अभी एक गरीब ब्राह्मण, एक नीम हकीमके कहनेसे, बुखारमें बोतलों शर्बत गुलबनफशा पी गया। बेचारेका शरीर लकड़ी हो गया। सारे जोड़ोंमें दर्द और सूजन आ गई। हमारे एक स्नेही मित्र और ज्योतिष-विद्याके धुरन्धर विद्वान् पण्डित मन्नीलालजी व्यास बीकानेरवाले, दयावश, उसे बठवा कर हमारे

पास ले आये। हमने उसे यही "समीरगजकेशरी वटी" खानेकी और "नारायण तेल" सारे शरीरमें मलनेकी सलाह दी। जगदीशकी दयासे, पहले दिन ही फायदा नजर आया और १।६ दिनमें रोगी अपने बलसे चलने फिरने लगा। आज वह आनन्दसे बाजार गया है। ये गोलियाँ गठिया रोगपर भी रामबाण साबित हुई हैं।

(३) अफीम और कुचलेको तेलमें पीसकर, नसोंके दर्दपर मलने और ऊपरसे गरम करके धतूरेके पत्ते बाँधनेसे लँगड़ापन आराम हो जाता है। आदमी अगर आरंभमें ही इस तेलको लगाना आरम्भ करदे, तो लँगड़ा न हो। परीक्षित है।

(४) अगर अजीर्ण ज़ोरसे हो और दस्त होते हों, तो आप रेंडी के तेल या किसी और दस्तावर दवामें मिलाकर अफीम दीजिये, फौरन लाभ होगा। परीक्षित है।

(५) केशर और अफीम बराबर-बराबर लेकर घोट लो। फिर इस दवामेंसे चार चाँवल-भर दवा "शहद"में मिलाकर चाटो। इस तरह कई दफा चाटनेसे अतिसार रोग मिट जाता है। परीक्षित है।

(६) एक रत्ती अफीम बकरीके दूधमें घोटकर पिलानेसे पतले दस्त और मरोड़ीके दस्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) अगर पित्तज पथरीके नीचे उतर जानेसे, यकृतके नीचे, पेटमे, बड़े जोरोंका दर्द हो, रोगी एकदम घबरा रहा हो, कल न पड़ती हो, तो उसे अफीमका कसूँबा या घोलिया—जलमें घोली हुई अफीम दीजिये; बहुत जल्दी आराम होगा। दर्दसे रोता हुआ रोगी हँसने लगेगा।

(८) नीबूके रसमें अफीम घिस-घिसकर चटानेसे अतिसार आराम हो जाता है।

(९) बहुत-से रोग नींद आनेसे दब जाते हैं। उनमें नींद लाने को, बलाबल देखकर, अफीमकी उचित मात्रा देनी चाहिये।

नोट—जब किसी रोगके कारण नींद नहीं आती, तब अफीमकी हलकी या

वाजिब मात्रा देते हैं। नींद आनेसे रोगका बल घटता है। ज्वरके सिवा और सभी रोगोंमें अफीमसे नींद आ जाती है। उन्माद रोगमें नींद बहुधा नाश हो जाती है और नींद आनेसे उन्माद रोग आराम होता है। उन्माद रोगके साथ होने वाले निद्रानाश रोगको अफीम फौरन नाश कर देती है। उन्मादमें हर बार एक-एक रत्ती अफीम देनेसे भी कोई हानि नहीं होती। उन्माद-रोगी अफीमकी अधिक मात्राको सह सकता है; पर सभी तरहके उन्माद रोगोंमें अफीम देना ठीक नहीं। जब उन्माद रोगीका चेहरा फीका हो, नाड़ी मन्दी चलती हो और नींद न आनेसे शरीर कमजोर होता हो, तब अफीम देना उचित है। किन्तु जब उन्माद रोगीका चेहरा सुर्ख हो अथवा मुँह या सिरकी नसोंमें खून भर गया हो, तब अफीम न देनी चाहिये। इस हालतके सिवा और सब हालतोंमें—उन्माद रोगमें अफीम देना हितकर है। उन्मादके शुरूमें अफीम सेवन करानेसे उन्माद रोग रुकते भी देखा गया है।

(१०) उन्माद रोगके शुरू होते ही, अगर अफीमकी उचित मात्रा दी जाय, तो उन्माद रुक सकता है। जब उन्माद रोगमें ज़रा-ज़रा देरमें रोगीको जोश आता और उतरता है, उस समय रत्ती-रत्ती भरकी मात्रा देनेसे बड़ा उपकार होता है। रत्ती-रत्ती की मात्रा बारम्बार देनेसे भी हानि नहीं होती—अफीमका ज़हर नहीं चढ़ता। उन्मादमें जो नींद न आनेका दोष होता है, वह भी जाता रहता है, नींद आने लगती है और रोग घटने लगता है। पर जब उन्माद रोगीका चेहरा सुर्ख़ हो या सिरकी नसोंमें खून भर गया हो, अफीम देना हानिकर है। परीक्षित है।

(११) अगर नासूर हो गया हो, तो आदमीके नाखून जलाकर राख करलो। फिर उस राखमें तीन रत्ती अफीम मिलाकर, उसे नासूरमें भरदो। इस क्रियाके लगातार करनेसे नासूर आराम हो जाता है।

नोट—यह नुसख़ा हमारा परीक्षित नहीं है। "वैद्यकल्पतरु" में जिन सज्जन ने लिखा है, उनका आज़माया हुआ जान पड़ता है, इसीसे हमने लिखा है।

(१२) छोटे बालकको ज़ुकाम या सरदी हो गई हो, तो

कपाल और नाकपर, अफीम पानीमें पीसकर लेप करो। अगर पेटमें कोई रोग हो, तो वहाँ भी अफीमका लेप करो।

(१३) अगर शरीरके किसी भागमें दर्द हो, तो आप अफीमका लेप कीजिये अथवा अफीमका तेल लगाइये अथवा अफीम और सोंठको तेलमें पकाकर, उस तेलको दर्दकी जगहपर मलिये, अवश्य लाभ होगा।

नोट—शरीरके चमड़ेपर अफीम लगाते समय, इस बातका ध्यान रखो कि, वहाँ कोई घाव, छाला या फटी हुई जगह न हो। अगर फटी, छिली या घावकी जगह अफीम लगाओगे, तो वह खूनमें मिल कर नशा या ज़हर चढ़ा देगी।

(१४) अगर पसलीमें जोरका दर्द हो, तो आप वहाँ अफीमका लेप कीजिये अथवा सोंठ और अफीमका लेप कीजिये—अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(१५) अफीम और कनेरके फूल एकत्र पीसकर, नारू या बालेपर लगानेसे नारू आराम हो जाता है।

(१६) अगर रातके समय खाँसी ठहर-ठहरकर बड़े ज़ोरसे आती हो, रोगीको सोने न देती हो, तो ज़रा-सी अफीम देशी तेलके दीपककी लौपर सेककर खिला दो; अवश्य खाँसी दब जायगी।

नोट—एक बार एक आदमीको सरदीसे ज़ुकाम और खाँसी हुई। मारवाड़के एक दिहातीने जरासी अफीम एक छप्परके तिनकेपर लगा कर आगपर सेकी और रोगीको खिला दी। ऊपरसे बकरीका दूध गरम करके और चीनी मिला कर पिलाया। इस तरह कई दिन करनेसे उसकी खाँसी नष्ट हो गई। सवेरे ही उसे दस्त भी साफ होने लगा। उसने हमारे सामने कितनी ही डाक्टरी दवायें खाईं, पर खाँसी न मिटी, अन्तमें अफीमसे इस तरह मिट गई।

(१७) अनेक बार, गर्भवती स्त्रीके आस-पासके अवयवों पर गर्भाशयका दबाव पड़नेसे ज़ोरकी खाँसी उठने लगती है और बारम्बार कय होती हैं। गर्भिणी रात-भर नींद नहीं ले सकती। इस तरहकी खाँसी भी, ऊपरके नोटकी विधिसे अफीम सेककर खिलानेसे, फौरन बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—गर्भवती स्त्रीको अफीम जब देनी हो बहुत ही अल्पमात्रामें देनी चाहिये; क्योंकि बहुत लोग गर्भवतीको अफीमकी दवा देना बुरा समझते हैं; पर हमने ज्वार या आधी ज्वार भर देनेसे हानि नहीं, लाभ ही देखा।

(१८) बहुतसे आदमी जब श्वास और खाँसीसे तंग आ जाते हैं—ख़ासकर बुढ़ापेमें—अफीम खाने लगते हैं। इस तरह उनकी पीड़ा कम हो जाती है। जब तक अफीमका नशा रहता है, श्वास और खाँसी दबे रहते हैं; नशा उतरते ही फिर कष्ट देने लगते हैं। अतः रोगी सवेरे-शाम या दिन-रातमें तीन-तीन बार अफीम खाते हैं। इस तरह उनकी ज़िन्दगी सुखसे कट जाती है।

नोट—ऊपरकी बात ठीक और परीक्षित है। हमारी बूढ़ी दादीको श्वास और खाँसी बहुत तंग करते थे। उसने अफीम शुरू कर दी, तबसे उसकी पीड़ा शान्त होगई; हाँ, जब अफीम उतर जाती थी, तब वह फिर कष्ट पाती थी, लेकिन समयपर फिर अफीम खा लेती थी।

अगर खाँसी रोगमें अफीम देनी हो, तो पहले छातीपर जमा हुआ बलग़म किसी दवासे निकाल देना चाहिये। जब छातीपर कफ न रहे, तब अफीम सेवन करनी चाहिये। इस तरह अच्छा लाभ होता है; क्योंकि छातीपर कफ न जमा होगा, तो खाँसी होगी ही क्यों? महर्षि हारीतने कहा है:—

> *न वातेन विना श्वासः कासानिश्लेष्मणाविना।*
> *नरक्तेन विना पित्तं न पित्त-राहितः क्षयः॥*

बिना वायु-कोपके श्वास रोग नहीं होता, छातीपर बलगम—कफ—जमे बिना खाँसी नहीं होती, रक्तके बिना पित्त नहीं बढ़ता और बिना पित्त-कोपके क्षय रोग नहीं होता।

खाँसीमें, अगर बिना कफ निकाले अफीम या कोई गरम दवा खिलाई जाती है, तो कफ सूख कर छातीपर जम जाता है; पीछे रोगीको खाँसनेमें बड़ी पीड़ा होती है। छातीपर कफका "घर-घर" शब्द होता है। सूखा हुआ कफ बड़ी कठिनाईसे निकलता है और उसके निकलते समय बड़ा दर्द होता है; अतः खाँसीमें पहला इलाज कफ निकाल देना है। जिसमें भी, कफकी खाँसीमें अफीम देनेसे कफ छातीपर जम कर बड़ी हानि करता है। कफकी खाँसी हो या छातीपर बलग़म जम रहा हो, तो पानीमें नमक मिलाकर रोगीको पिला दो और मुखमें

पक्षीका पंख फेर कर क़य करा दो; इस तरह सब कफ निकल जायगा। अगर कफ छातीपर सूख गया हो, तो एक तोले अलसी और एक तोले मिश्री दोनोंको आध सेर पानीमें औटाओ। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो। इसमेंसे एक-एक चमची-भर काढ़ा दिनमे कई वार पिलाओ। इससे कफ छूट जायगा। पर जब तक छाती साफ न हो, इस नुसखेको पिलाते रहो। इस तरह कफको छुडाने वाली बहुत दवाएँ हैं। उन्हें हम खाँसीकी चिकित्सामें लिखेंगे।

नोट—कफकी खाँसी और खाँसीके साथ ज्वर चढ़ा हो, तब अफीम मत दो।

(१९) श्वास रोगमें अफीम और कस्तूरी मिलाकर देनेसे वड़ा उपकार होता है। रोगीके वलावल अनुसार मात्रा तजवीज करनी चाहिये। साधारण वलवाले रोगीको—अगर अफीमका अभ्यासी न हो—तो पाव रत्ती अफीम और चाँवल-भर कस्तूरी देनी चाहिये। मात्रा ज़ियादा भी दी जा सकती है; पर देश, काल—मौसम और रोगीकी प्रकृति आदिका विचार करके।

(२०) अफीमको गुल रोग़न या सिरकेमें घिसकर, सिरपर लगानेसे सिर दर्द आराम होता है।

(२१) अफीम और केसर गुलाव-जलमें घिसकर आँखोंमें आँजनेसे आँखोंकी सुर्ख़ी नाश हो जाती है।

(२२) अफीम और केशर जलमें घिसकर लेप करनेसे आँखोंके घाव दूर हो जाते हैं।

(२३) अफीम, जायफल, लौंग, केशर, कपूर और शुद्ध हिंगलू—इनको वरावर-वरावर लेकर जलके साथ घोटकर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ वना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली गरम जलके साथ लेनेसे आमराक्षसी, आमातिसार और हैज़ा रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२४) ज़रा-सी अफीमको पान खानेके चूनेमें लपेटकर आमातिसार, पेचिश या मरोड़ीके रोगीको देनेसे ये रोग आराम हो जाते हैं और मज़ा यह कि, दूषित मल भी निकल जाता है। परीक्षित है।

नोट—अफीम और चूना दोनों बराबर हों। गोलीको पानीके साथ निगलना चाहिये।

(२५) अफीम, शुद्ध कुचला और सफेद मिर्च,—तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, अदरखके रसमें घोटकर, मिर्च-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सोंठके चूर्ण और गुड़के साथ लेनेसे आममरोड़ी के दस्त, पुरानेसे पुराना अतिसार या पेचिश फौरन आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२६) नीबूके रसमें अफीम मिलाकर और उसे दूधमें डालकर पीने से रक्तातिसार और आमातिसार आराम हो जाते हैं।

(२७) जल संत्रास रोग, हड़कबाय या पागल कुत्तेके काटनेपर रोगीको अफीम देनेसे लाभ होता है।

(२८) वातरक्त रोगमें होनेवाला दाह अफीमसे शान्त हो जाता है। वातरक्त रोगको अफीम समूल नाश नहीं कर देती, पर फायदा अवश्य दिखाती है।

(२९) अगर सिरमें फुन्सियाँ होकर पकती हों और उनसे मवाद गिरता हो तथा इससे बाल झड़कर गंज या इन्द्रलुप्त रोग होता हो, तो आप नीबूके रसमें अफीम मिलाकर लेप कीजिये; गंज रोग आराम हो जायगा।

(३०) अगर स्त्रीके मासिक धर्मके समय पेड़ूमें दर्द होता हो, पीठका बाँसा फटा जाता हो अथवा मासिक खून बहुत जियादा निकलता हो, तो आप इस तरह अफीम सेवन कराइयेः—

अफीम दो माशे, कस्तूरी दो रत्ती और कपूर दो रत्ती—इन तीनोंको पीस-छान कर, पानीके साथ घोटकर, एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे स्त्रियोंके आर्त्तव या मासिक खूनका जियादा गिरना, बच्चा जननेके पहले, पीछे या उस समय अधिक आर्त्तव—खूनका गिरना, गर्भस्रावमें अधिक रक्त गिरना तथा सूतिका-सन्निपात—ये सब रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

(३१) अगर किसी स्त्रीको गर्भ-स्रावकी आदत हो, तीसरे-चौथे महीने गर्भ रहनेपर आर्त्तव या मासिक खून दिखाई दे, तो आप उसे थोड़ी अफीम दीजिये।

नोट—नं० ३० में लिखी गोलियाँ बनाकर दीजिये।

(३२) अगर प्रसूतिके समय, प्रसूतिके पहले या प्रसूतिके पीछे अत्यन्त खून गिरे, तो अफीम दीजिये, खून बन्द हो जायगा।

नोट—नं० ३० में लिखी गोलियाँ दीजिये।

(३३) अगर आँखें दुखनी आई हों, तो अफीम और अजवायन को पोटलीमें बाँधकर आँखोंको सेकिये। अथवा अफीम और तवे पर फुलाई फिटकरी—दोनोंको मिलाकर और पानीमें पीसकर, एक-एक बूँद दोनों नेत्रोंमें डालिये।

(३४) अगर कानमें दर्द हो, तो अफीमको पानीमें पतली करके, दो-तीन बूँद कानमें डालो।

(३५) अगर दाँतोमें दर्द हो, तो ज़रा-सी अफीम को तुलसीके पत्तेमें लपेट कर दाँतके नीचे रखो। अगर दाढ़में गड्ढा पड़ गया हो, तो ऊपरकी विधिसे उसे गढ़ेमें रख दो; दर्द भी मिट जायेगा और गढ़ा भी भर जायगा।

(३६) अगर मुँह आनेसे या और किसी वजहसे बहुत ही लार बहती हो या थूक आता हो, तो अफीम दीजिये। अगर किसीने आतशक रोगमें मुँह आनेको दवा दे दी हो, मुँह फूल गया हो, लार बहती हो, तो अफीम खिलानेसे वह रोग मिट कर मुँह पहले-जैसा साफ हो जायगा।

(३७) अगर प्रमेह या सोज़ाकमें लिंगेन्द्रिय टेढ़ी हो गई हो, बीचमें खाँच पड़ गई हो, इन्द्रिय खड़ी होते समय दर्द होता हो, तो आप अफीम और कपूर मिलाकर दीजिये। इससे सब पीड़ा शान्त होकर, इन्द्रिय भी सीधी हो जायगी।

(३८) अगर पुरानी गठिया हो, तो आप अफीम खिलावें और अफीमके तेलकी मालिश करावें।

नोट—पुराने गठिया रोगमें नं० २ में लिखी समीरगजकेसरी बटी अत्यन्त लाभप्रद है।

(३९) अगर सूतिका सन्निपात हो, तो आप अफीम दीजिये; आराम होगा।

नोट—नं० ३० में लिखी गोलियाँ दीजिये।

(४०) अगर कम-उम्र स्त्रीको बच्चा होनेसे उन्माद हो गया हो, तो अफीम दीजिये।

(४१) अगर प्रमेह रोग पुराना हो और मधुमेह रोगी बूढ़ा या ज़ियादा बूढ़ा हो, तो आप अफीम सेवन करावें। आधी रत्ती अफीम और एक रत्ती-भर माजूफल—पहले माजूफलको पीस लो और अफीममें मिलाकर १ गोली बना लो। यह एक मात्रा है। ऐसी-ऐसी एक-एक गोली सवेरे-शाम देनेसे मधुमेहमें बे-इन्तहा फ़ायदा होता है। पेशाबके द्वारा शक्कर जाना कम हो जाता है, कमज़ोरी भी कम होती है, तथा मधुमेहीको जो बड़े जोरकी प्यास लगती है, वह भी इस गोलीसे शान्त हो जाती है।

नोट—याद रखो, प्रमेह जितना पुराना होगा और मधुमेह रोगी जितना बूढ़ा होगा, अफीम उतना ही जियादा फायदा करेगी। मधुमेहीकी प्यास जो किसी तरह न दबती हो, अफीमसे दब जाती है। हमने इसकी अनेक रोगियोंपर परीक्षा की है। गरीब लोग जो वसन्त कुसुमाकर रस, मेह कुलान्तक रस, मेहमिहिर तेल, स्वर्णबंग आदि बहुमूल्य दवाएँ न सेवन कर सकते हों, उपरोक्त गोलियोंसे काम लें। अफीमसे गदले-गदले पेशाब होना और मूत्रमें वीर्य जाना आदि रोग निस्सन्देह कम हो जाते हैं। पर यह समझना कि अफीम प्रमेह और मधुमेहको जड़ से आराम कर देगी; भूल है। अफीम उनकी तकलीफोंको कम जरूर कर देगी।

(४२) अगर किसीको स्वप्नदोष होता हो, तो आप अफीम आधी रत्ती, कपूर दो रत्ती और शीतल मिर्चोंका चूर्ण डेढ़ माशे—तीनोंको मिलाकर, रोगीको, रातको सोते समय, शहदके साथ,

कुछ दिन लगातार सेवन करावें, अवश्य और जल्दी लाभ होगा। परीक्षित है।

नोट—अगर किसीको सोज़ाक हो, तो आप रातके समय सोते वक्त इस नुसख़ेको रोगीको रोज दें। इससे पेशाब साफ होता है, घाव मिटता है, स्वप्न-दोष नहीं होता और लिंगमें तेजी भी नहीं आती। सोजाक रोगमें रातको अकसर स्वप्नदोष होता है या लिंगेन्द्रिय खड़ी हो जाती है, उससे दिन-भरमें आराम हुआ घाव फिर फट जाता है। इस नुसख़ेसे ये उपद्रव भी नहीं होते और सोज़ाक भी आराम होता है; पर दिनमें और दवा देनी ज़रूरी है; यह तो रातकी दवा है। अगर दिनके लिये कोई दवा न हो तो आप शीतल मिर्च १॥ माशे, कलमी शोरा ६ रत्ती और सनायका चूर्ण ६ रत्ती—तीनोंको मिलाकर फँकाओ और ऊपरसे औटाया हुआ जल शीतल करके पिलाओ। अगर इससे फायदा तो हो, पर पूरा आराम होता न दीखे, तो चिकित्साचन्द्रोदय तीसरे भागमेंसे और कोई आज़मूदा नुसख़ा दिनमें सेवन कराओ।

(४३) शुद्ध अफीम ८ तोले, अकरकरा २ तोले, सोंठ २ तोले, नागकेशर २ तोले, शीतल मिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, लौंग २ तोले, जायफल २ तोले और लाल चन्दन २ तोले,—अफीमके सिवा और सब दवाओंको कूट-पीसकर छान लो, अफीमको भी मिलाकर एक-दिल कर लो। इसके बाद २४ तोले यानी सब दवाओं के वज़नके बराबर साफ़ चीनी भी मिला दो और रख दो। इस चूर्णमेंसे ३ से ६ रत्ती तक चूर्ण खाकर, ऊपरसे गरम दूध मिश्री-मिला हुआ पीओ। इस चूर्णके कुछ दिन लगातार खानेसे गई शक्ति फिर लौट आती है। नामर्दी नाश करके पुरुषत्व लानेमें यह चूर्ण परमोपयोगी है। परीक्षित है।

नोट—अगर अफीम चूर्णमें न मिले, तो अफीमको पानीमें घोलकर चीनी में मिला दो और आगपर रखकर जमने लायक गाढ़ी चाशनी कर लो और थालीमें जमा दो। जम जानेपर चाशनीको थालीसे निकालकर महीन पीस लो और दवाओंके चूर्णमें मिला दो। चाशनी पतली मत रखना, नहीं तो बूरा-सा न होगा। खूब कड़ी चाशनी करनेसे अफ़ीम जमकर पिस जायगी।

(४४) काफी, चाय, सोंठ, मिर्च, पीपर, कोको, खानेका पीला रंग,

शुद्ध पारा, गंधक और अफीम—इन दसोंको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर, कपड़-छन कर रख लो। मात्रा १ से २ रत्ती तक। अनुपान रोगानुसार। इस चूर्णसे कफ, खाँसी, दमा, शीतज्वर, अतिसार, संग्रहणी और हृद्रोग ये निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

(४५) सोंठ, गोलमिर्च, पीपर, लोंग, आककी जड़की छाल और अफीम,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान कर, शीशीमें रख दो। मात्रा १ से २ रत्ती तक। यथोचित अनुपानके साथ इस चूर्णके सेवन करने से कफ, खाँसी, दमा, अतिसार, संग्रहणी और कफ-पित्तके रोग अवश्य नाश होते हैं।

(४६) सोंठ, मिर्च, पीपर, नीमका गोंद, शुद्ध भाँग, ब्रह्मदण्डी यानी ऊँटकटारेके पत्ते, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक और शुद्ध अफीम—इन सबको एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर छान लो। फिर इसमें अठारह रत्ती कस्तूरी भी मिला दो और शीशीमें रख दो। मात्रा १ से २ रत्ती तक। इस चूर्णसे सब तरहकी सरदी और दस्तोंके रोग नाश हो जाते हैं।

(४७) अफीम ४ रत्ती, नीबूका रस १ तोले और मिश्री ३ तोले—इन तीनोंको पावभर जलमें घोलकर पीनेसे हैजेके दस्त, कय, जलन, और प्यास एवं छातीकी धड़कन—ये शान्त हो जाते हैं।

(४८) अफीम ३ माशे, लहसनका रस ३ तोले और हींग १ तोले—इन सबको आधपाव सरसोंके तेलमें पकाओ; जब दवाएँ जल जायँ, तेलको छान लो। इस तेलकी मालिशसे शीताङ्ग वायु आदि सरदी और बादीके सभी रोग नाश हो जाते हैं, परन्तु शीतल जलसे बचा रहना बहुत जरूरी है।

(४९) अफीम १ माशे, काली मिर्च २ माशे और कीकरके कोयले ६ माशे—सबको महीन पीसकर रखलो। मात्रा १ माशे। बलाबल और प्रकृति-अनुसार कमोबेश भी दे सकते हो।

इस दवासे तप सफरावी आराम होता है। यह तप खफीफ़ रहता

है और एक दिन बीचमें देकर ज़ोर करता है। तप चढ़नेसे पहले शरीर काँपने लगता है। बुखार चढ़नेसे चार घण्टे पहले यह दवा खिलानी चाहिये। रोगीको खानेको कुछ भी न देना चाहिये। दवा खानेके ६ घण्टे बाद भोजन देना चाहिये। परमात्मा चाहेगा, तो १ मात्रामें ही ज्वर जाता रहेगा।

(५०) दो रत्ती अफीम खानेसे मुँहसे थूकके साथ खून आना वन्द होता है। ऐसा अक्सर रक्तपित्तमें होता है। उस समय अफीमसे काम निकल जाता है।

नोट—अडूसेका स्वरस ६ माशे, मिश्री ६ माशे और शहद ६ माशे—इन तीनोंको मिलाकर नित्य पीनेसे भयानक रक्तपित्त, यक्ष्मा और खाँसी रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५१) अफीम एक चने-भर, फिटकरी दो चने-भर, और जलाया हुआ भिलावा एक,—इन तीनोंको छै नीबुओंके रसमें घोटकर गोलियाँ बनालो और छायामें सुखालो। इन गोलियोंको नीबूके ज़रासे रसमें घिस-घिसकर आँजनेसे फूली, फेफरा और नेत्रोंसे पानी आना, ये आँखके रोग अवश्य नाश हो जाते हैं।

नोट—भिलावा जलाते समय उसके धूएँसे बचना; वरना हानि होगी। अधिक बातें भिलावेके वर्णनमें देखिये।

(५२) अफीम ३॥ माशे, अकरकरा ७ माशे, झाऊके फूल १४ माशे, सामक १४ माशे और हुब्बुल्लास १४ माशे—इन सबको महीन पीसकर, बबूलके गोंदके रसमें घोटो और दो-दो माशेकी गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंमें से १ गोली खानेसे १ घण्टेमें दस्त बन्द हो जाते हैं।

(५३) अफीम, हींग, ज़हरमुहरा-खताई और काली मिर्च—इन सबको समान-समान लेकर, पानीके साथ पीसकर, चने-समान गोलियाँ बनालो। नीबूके रसके साथ एक-एक गोली खानेसे संग्रहणी, बादी और सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

साफ़ अफ़ीमकी पहचान।

अफीमका वज़न बढ़ानेके लिये नीच लोग उसमें ख़सख़सके पेड़के पत्ते, कत्था, काला गुड़, सूखे हुए पुराने कण्डोका चूरा, बालू रेत या एलुआ प्रभृति मिला देते है। वैद्यों और खानेवालोंको अफीमकी परीक्षा करके अफीम ख़रीदनी चाहिये, क्योंकि ऐसी अफीम दवामें पूरा गुण नहीं दिखाती और ऐसे ही खानेवालोंको नाना प्रकारके रोग करती है। शुद्ध अफीमकी पहचान ये हैं:—

(१) साफ अफीमकी गंध बहुत तेज़ होती है।

(२) स्वाद कड़वा होता है।

(३) चीरनेसे भीतरका भाग चमकदार और नर्म होता है।

(४) पानीमें डालनेसे जल्दी गल जाती है।

(५) साफ अफीम १०।५ मिनट सूँघनेसे नींद आती है।

(६) उसका टुकड़ा धूपमें रखनेसे जलदी गलने लगता है।

(७) जलानेसे जलते समय उसकी ज्वाला साफ होती है, और उसमे धूआँ ज़ियादा नहीं होता। अगर जलती हुई अफीम बुझाई जाय, तो उसमेंसे अत्यन्त तेज़ मादक गंध निकलती है।

जिस अफीममें इसके विपरीत गुण हों, उसे ख़राब समझना चाहिये।

अफीम शोधनेकी विधि।

अफीमको खरलमें डालकर, ऊपरसे अदरखका रस इतना डालो, जितनेमें वह डूब जाय; फिर उसे घोटो। जब रस सूख जाय, फिर रस डालो और घोटो। इस तरह २१ बार अदरखका रस डाल-डाल कर घोटनेसे अफीम दवाके काम-योग्य शुद्ध हो जाती है।

नोट—हरबार घुटाईसे रस सूखनेपर उतना ही रस डालो, जितनेमे अफीम डूब जाय। इस तरह अफीम साफ होती है।

हमेशा अफ़ीम खानेवालोंकी हालत ।

हमेशा अफ़ीम खानेवालोंका शरीर दिन-ब-दिन कमज़ोर होता जाता है । उनकी सूरत-शकलपर रौनक़ नहीं रहती, चेहरा फीका पड़ जाता है और आँखें घुस जाती हैं । उनके शरीरके अवयव निकम्मे और बलहीन हो जाते हैं । सदा क़ब्ज़ बना रहता है, पाख़ाना बड़ी मुश्किलसे होता है, बहुत काँखनेसे ऊँटके-से मैंगने या बकरीकी-सी मैंगनी निकलती हैं । पाख़ाना साफ़ न होनेसे पेट भारी रहता है, भूख कम लगती है, कभी-कभी चौथाई ख़ूराक खाकर ही रह जाना पड़ता है । जो कुछ खाते हैं, हज़म नहीं होता । हाथ-पैर गिरे-पड़े-से रहते हैं । शरीरके स्नायु या नसें शिथिल हो जाती हैं । स्त्री-प्रसंग को मन नहीं करता । रातको अगर ज़रा भी नशा कम हो जाता है, तो हाथ-पैर भड़कते हैं । मानसिक शक्तिका ह्रास होता रहता है । शारीरिक या मानसिक परिश्रमकी सामर्थ्य नहीं रहती । हर समय आराम करने और पड़े-पड़े हुक्का गुड़गुड़ानेको मन चाहता है । क्योंकि अफीम खानेवालेको तमाखू अच्छी लगती है । बहुत क्या— अफीमके खानेवाले जल्दी ही बूढ़े होकर मृत्यु-मुखमें पतित होते हैं ।

जो लोग डली निगलते हैं, उन्हें घण्टे भरमें पूरा नशा आ जाता है: पर २० मिनट बाद उसका प्रभाव होने लगता है । जो घोलकर पीते हैं, उनको आध घण्टेमें नशा चढ़ जाता है और जो चिलममें धरकर तमाखूकी तरह पीते हैं, उन्हें तत्काल नशा आता है । इसे मदक पीना कहते हैं । यह सबसे बुरा है । इसके पीनेवाला बिल्कुल बे-काम हो जाता है । जो लोग स्तंभनके लालचसे मदक पीते हैं, उन्हें कुछ दिन बेशक आनन्द आता है, पर थोड़े दिन बाद ही वे स्त्रीके कामके नहीं रहते; धातु सूखकर महाबलहीन हो जाते है—बलका नामोनिशान नहीं रहता । चेहरा और ही तरहका हो जाता है, गाल पिचक जाते हैं और हड्डियाँ निकल आती हैं । जब

नशा उतर जाता है, तब तो वे मरी-मिट्टी हो जाते हैं। उबासियों-पर-उबासियाँ आती हैं, आँखोंमें पानी भर-भर आता है, नाकसे मवाद या जल गिरता और हाथ-पैर भड़कने लगते हैं। हाँ, जब वे अफीम खा लेते हैं, तब घड़ी दो घड़ी बाद कुछ देरको मर्द हो जाते हैं। उनमें कुछ उत्साह और फुर्त्ती आ जाती है। हर दिन अफीम बढ़ाने की इच्छा रहती है। अगर किसी दिन बाजरे-बराबर भी अफीम कम दी जाती है, तो नशा नहीं आता, इसलिये फिर अफीम खाते हैं। अगले दिन फिर उतनी ही लेनी पड़ती है, इस तरह यह बढ़ती ही चली जाती है। अगर अफीम न बढ़े और बहुत ही थोड़ी मात्रा में खायी जाय तथा इसपर मन-माना दूध पिया जाय, तो हानि नहीं करती; बल्कि कितने ही रोगोंको दबाये रखती है। पर यह ऐसा पाजी नशा है, कि बढ़े बिना रहता ही नहीं। अगर यह किसी समय न मिले, तो आदमी मिट्टी हो जाता है, राह चलता हो तो राहमें ही बैठ जाता है, चाहे फिर सर्वस्व ही क्यो न नष्ट हो जाय। मारवाड़में रहते समय, हमने एक अफीमची ठाकुर साहबकी सच्ची कहानी सुनी थी। पाठकोंके शिक्षालाभार्थ उसे नीचे लिखते हैं:—

एक दिन, रेगिस्तानके जङ्गलोंमें, एक ठाकुर साहब अपनी नवपरिणीता बहूको ऊँटपर चढ़ाये अपने घर ले जा रहे थे। दैवसंयोगसे, राहमें उनकी अफीम चुक गई। बस, आप ऊँटको बिठाकर, वहीं पड़ गये और लगे ठकुरानीसे कहने—"अब जब तक अफीम न मिलेगी, मैं एक क़दम भी आगे न चल सकूँगा। कहीं-से भी अफीम ला।" स्त्रीने बहुत कुछ समझाया-बुझाया कि, यहाँ अफीम कहाँ? घोर जङ्गल है, बस्तीका नाम-निशान नहीं। पर उन्होंने एक न सुनी, तब वह बेचारी उन्हें वहीं छोड़कर स्वयं अकेली ऊँट पर चढ़, अफीमकी खोजमें आगे गई। कोस-भर पर एक झोपड़ी मिली। इसने उस झोपड़ीमें रहने वालेसे कहा—"पिताजी! मेरे

पतिदेव अफीम खाते हैं, पर आज अफीम निपट गई। इसलिये वह यहाँसे कोस भरपर पड़े हैं और अफीम बिना आगे नहीं चलते। वहाँ न तो छाया है, न जल है और डाकुओंका भय जुदा है। अगर आप कृपाकर थोड़ी-सी अफीम मुझे दें, तो मैं जन्म-भर आपका ऐहसान न भूलूँ।" उस मर्दने उस बेचारी अबलासे कहा—"अगर तू एक घण्टे तक मेरे पास मेरी स्त्रीकी तरह रहे, तो मैं तुझे अफीम दे सकता हूँ।" स्त्रीने कहा—"पिताजी! मैं पतिव्रता हूँ। आप मुझसे ऐसी बातें न कहें।" पर उसने बारम्बार वही बात कही: तब स्त्री उससे यह कहकर, कि मैं अपने स्वामीसे इस बातकी आज्ञा ले आऊँ, तब आपकी इच्छा पूरी कर सकती हूँ। वहाँसे वह ठाकुर साहबके पास आई और उनसे सारा हाल कहा। ठाकुरने जवाब दिया—"बेशक, यह बात बहुत बुरी है, पर अफीम बिना तो मेरी जान ही न बचेगी, अतः तू जा और जिस तरह भी वह अफीम दे ले आ।" स्त्री फिर उसी झोंपड़ीमें गई और उस झोंपड़ी वालेसे कहा—"अच्छी बात है, मेरे पतिने आज्ञा दे दी है। आप अपनी इच्छा पूरी करके मुझे अफीम दीजिये। मैं अपने नेत्रोंके सामने अपने प्राणाधारको दुःखसे मरता नहीं देख सकती। आपसे अफीम ले जाकर उन्हें खिलाऊँगी और फिर आत्मघात करके इस अपवित्र देहको त्याग दूँगी।" यह बात सुनते ही उस आदमीने कहा—"माँ! मैं ऐसा पापी नहीं। मैंने तेरे पतिको शिक्षा देनेके लिये ही वह बात कही थी। तू चाहे जितनी अफीम ले जा। पर अपने पतिकी अफीम छुड़ाकर ही दम लीजो।" कहते हैं, वह स्त्री उसी दिनसे जब वह अपने पतिको अफीम देती, अफीमकी डलीसे दीवारपर लकीर कर देती। पहले दिन एक, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन—इस तरह वह लकीरें रोज़ एक-एक करके बढ़ाती गई। अन्तमें एक लकीर-भर

अफ़ीम रह गई और ठाकुर साहबका पीछा अफीम-राक्षसीसे छूट गया। मतलब यह है, अफीम अनेक गुण वाली होनेपर भी बड़ी बुरी है। यह दवाकी तरह ही सेवन करने योग्य है। इसकी आदत डालना बहुत ही बुरा है। जिन्हें इसकी आदत हो, वे इसे छोड़ दें। ऊपर की विधिसे रोज़ ज़रा-ज़रा घटाने और घी-दूध खूब खाते रहने से यह छूट जाती है। हाँ, मनको कड़ा रखनेकी ज़रूरत है। नीचे हम यह दिखलाते हैं कि, अफीम छोड़ने वालेकी क्या हालत होती है। उसके बाद हम अफीम छोड़नेके चन्द उपाय भी लिखेंगे।

अफीम छोड़ते समयकी दशा।

ज़रा-ज़रा घटानेका नतीजा।

जब आदमी रोज़ ज़रा-ज़रासी अफीम घटाकर खाता है, तब उसे पीड़ा होती है, हाथ-पैर और शरीरमें दर्द होता है, जी घबराता है, मन काम-धन्धेमें नहीं लगता, पर उतनी ज़ियादा वेदना नहीं होती, जो सही ही न जा सके। अगर अफीम बाजरेके दाने-भर रोज़ घटा-घटाकर खानेवालेको दी जाय, पर उसे यह न मालूम हो कि, मेरी अफीम घटाई जाती है, तो उतनी भी पीड़ा उसे न हो। यों तो बाजरेके दानेका दसवाँ भाग कम होनेसे भी खाने वालेको नशा कम आता है, पर ज़रा-ज़रासी नित्य घटाने और खानेवालेको मालूम न होने देनेसे बहुतोंकी अफीम छूट गई है। इस दशामें अफीम तोलकर लेनी होती है। रोज़ एक अन्दाज़से कम करनी पड़ती है; पर इस तरह बड़ी देर लगती है। इसलिये इसका एक दम छोड़ देना ही सबसे अच्छा है। एक हफ्ते घोर कष्ट उठाकर, शीघ्र ही राक्षसीसे पीछा छूट जाता है।

एक दमसे छोड़ देनेका नतीजा।

अगर कोई मनुष्य अपनी अफीमको एक दमसे छोड़ देता है, तो उसके शरीर, हाथ-पैर और पीठके बाँसेमें बेहद पीड़ा होती है।

पीठका बाँसा फटा पड़ता है, क्षण-भर भी कल नहीं पड़ती। उसे न सोते चैन न बैठे कल। पैरोंमें ज़रा भी बल नहीं रहता। खड़े होनेसे गिर पड़ता है। चल फिर तो सकता ही नहीं। उसे हर दम एक तरहका डर-सा लगा रहता है। वह हर किसीसे अफीम माँगता और कहता है कि, बिना अफीमके मेरी जान न बचेगी। पसीने इतने आते हैं, कि कपड़े तर हो जाते हैं, चाहे माघ-पूसके दिन ही क्यों न हों। इन दिनों क़ब्ज़ तो न जाने कहाँ चला जाता है, उल्टे दस्त पर दस्त लगते हैं। चौबीस घण्टेमें तीस-तीस और चालीस-चालीस दस्त तक हो जाते हैं। रात-दिन नींद नहीं आती, कभी लेटता है और कभी भड़भड़ा कर उठ बैठता है। प्यासका ज़ोर बढ़ जाता है। उत्साहका नाम नहीं रहता। बारम्बार पेशाबकी हाजत होती है। बीमारको अपना मरजाना निश्चित-सा जान पड़ता है; पर अफीम छोड़नेसे मृत्यु हो नहीं सकती। यह अफीम छोड़नेवालेके दिलकी कमज़ोरी है। लिख चुके हैं कि, १०।५ दिन का कष्ट है।

अफीमका ज़हरीला असर।

अफीम स्वादमें कड़वी ज़हर होती है, इसलिये दूसरा आदमी किसीको मार डालनेकी ग़रज़से इसे नहीं खिलाता; क्योंकि ऐसी कड़वी चीज़को कौन खायगा? हत्या करने वाले संखिया देते हैं, क्योंकि उसमें कोई स्वाद नहीं होता। वह जिसमें मिलाया जाता है, मिल जाता है। अफीम जिस चीज़में मिलायी जाती है, वह कड़वी होनेके सिवा रङ्गमें भी काली हो जाती है। पर संखिया किसी भी पदार्थके रूपको नहीं बदलता, अतः अफीमको स्वयं अपनी हत्या करने वाले ही खाते हैं। बहुत लोग इसे तेलमें मिलाकर खा जाते हैं, क्योंकि तेलमें मिली अफीम खानेसे, कोई उपाय करनेसे भी खाने वाला बच नहीं सकता। कम-से-कम दो

रत्ती अफीम मनुष्यको मार डालती है। अफीम लेनेके समयसे एक घण्टेके अन्दर, यह अपना ज़हरीला असर दिखाने लगती है। इसको खाने वाला प्रायः चौबीस घण्टोंके अन्दर यमपुरको सिधार जाता है।

ज़ियादा अफीम खानेसे पहले तो नींद-सी आती जान पड़ती है, फिर चक्कर आते और जी घबराता है। इसके बाद मनुष्य बेहोश हो जाता है और बहुत ज़ोरसे चीख़ने-पुकारनेपर बोलता है। इस के बाद बोलना भी बन्द हो जाता है। नाड़ी भारी होनेपर भी धीमी, मन्दी और अनियमित चलती है। ख़ाली होनेसे नाड़ी तेज़ चलती है। साँस बड़े ज़ोरसे चलता है। दम घुटने लगता है। शरीर किसी क़दर गरम हो जाता है। पसीने खूब आते हैं। नेत्र बन्द रहते हैं; आँखोंकी पुतलियाँ बहुत ही छोटी यानी सूई की नोक-जितनी दीखती हैं। होठ, जीभ, नाखून और हाथ काले पड़ जाते हैं। चेहरा फीका-सा हो जाता है। दस्त रुक जानेसे पेट फूल जाता है।

मरनेसे कुछ पहले शरीर शीतल बर्फ़-सा हो जाता है। आँखों की पुतलियाँ जो पहले सुकड़कर सूईकी नोक-जितनी हो गई थीं, इस समय फल जाती हैं। हाथ-पैरोंके स्नायु ढीले हो जाते हैं। टटोलने से नब्ज़ या नाड़ी हाथ नहीं आती। थोड़ी देरमें दम घुट कर मनुष्य मर जाता है।

कभी-कभी अफीमके ज़हरसे शरीर खिंचता है, रोगी आनतान बकता है, क़य होती और दस्त लगते हैं। इनके सिवा धनुस्तंभ वग़ैरः विकार भी हो जाते हैं। अगर अफीम बहुत ही अधिक मात्रामें खायी जाती है, तो वान्ति भी होती है।

अगर रोगी बचने वाला होता है, तो उसे होश आने लगता हैं, क़य होतीं और सिरमें दर्द होता है।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है—अफीमसे गहरी नींद आती है,

जीभ रुकती है, आँखें गड़ जाती हैं, शीतल पसीने आते हैं; हिच-कियाँ चलती हैं, श्वास रुक-रुक कर आता और नेत्रोंके सामने अँधेरी आती है। सात माशे अफीमसे मृत्यु हो जाती है। अगर अफीम तिलीके तेलमें मिलाकर खाई जाती है, तो फिर संसारकी कोई दवा रोगीको बचा नहीं सकती।

अफीम खाकर मरनेवालेके शरीरपर किसी तरहका ऐसा फेरफार नहीं होता, जिससे समझा जा सके कि, इसने अफीम खाई है। अफीम खानेवालेकी क़यमें अफीमकी गन्ध आती है। पोष्ट मार्टम या चीराफारी करनेपर, उसके पेटमें अफीम पायी जाती है और सिरकी खून बहानेवाली नसें खूनसे भरी मिलती हैं।

ख़ाली पेट अफीम खानेसे जल्दी ज़हर चढ़ता है। अफीम खाकर सो जानेसे ज़हरका जोर बढ़ जाता है। ज़ियादा अफीम खानेसे तीस मिनट बाद ज़हर चढ़ जाता है। सो जानेसे ज़हरका जोर बढ़ता है, इसीसे ऐसे रोगीको सोने नहीं देते।

अफीम छुड़ानेकी तरकीबें।

पहली तरकीब

(१) पहली तरकीब तो यही है कि, नित्य ज़रा-ज़रा-सी अफीम कम करें और घी-दूध आदि तर पदार्थ खूब खायँ। ज़रा-ज़रा-से कष्टों से घबरायें नहीं। कुछ दिनोंको अपने तईं बीमार समझ लें। पीछे अफीम छूटनेपर जो अनिर्वचनीय आनन्द आवेगा, उसे लिखकर बता नहीं सकते। सारी अफीम एक ही दिन छोड़ने से ८।१० दिन तक घोर कष्ट होते हैं। पर ज़रा-ज़रा घटानेसे उसके शतांश भी नहीं। इस दशामें अफीमको तोलकर लो और रोज़ एक नियम से घटाते रहो।

दूसरी तरकीब

(२) अफीममें आप दालचीनी, केशर, इलायची आदि पदार्थ पीसकर मिला लें। पीछे-पीछे इन्हें बढ़ाते जायँ और अफीम कम करते जायँ। साथ ही घी-दूध आदि तर पदार्थ खूब खाते रहें। अगर आप मोहन-भोग, हलवा, मलाई, मक्खन आदि जियादा खाते रहेंगे, तो आपको अफीम छोड़नेसे कुछ विशेष कष्ट नहीं होगा। अगर बदनमें दर्द बहुत हो, तो आप नारायण तेल या कोई और वातनाशक तेल मलवाते रहें। अगर नींद न आवे, तो ज़रा-ज़रा-सी भाँग तवेपर भूँजकर और शहदमें मिलाकर चाटो। पैरोंमें भी भाँगको बकरीके दूधमें पीसकर लेप करो। इस तरह छोड़नेसे ज़ियादा दस्त तो होंगे नहीं। अगर किसीको हों, तो उसे दस्त बन्द करने वाली दवा भूल कर भी न लेनी चाहिये। ५।७ दिनमें आप ही दस्त बन्द हो जायँगे। अगर शरीरमें बहुत ही दर्द हो, तो ज़रा-सा शुद्ध बच्छनाभ विष घीमें घिस कर चाटो। पर यह घातक विष है, अतः भूल कर भी एक तिलसे जियादा न लेना। इस तरह हमने कितनों ही की अफीम छुड़ा दी। इस तरह छुड़ानेमें इतने उपद्रव नहीं होते, पर तो भी प्रकृति-भेदसे किसीको ज़ियादा तकलीफ हो, तो उसे उपरोक्त नारायण तेल, भाँगका चूर्ण, बच्छनाभ विष वगैरः से काम लेना चाहिये। इन उपायोंसे एक माशे अफीम १५ दिनमें छूट जाती है। और भी देरसे छोड़नेमें तो उपरोक्त कष्ट नाम मात्र को ही होते हैं।

तीसरी तरकीब

(३) अफीमको अगर एक-दम छोड़ना चाहो तो क्या कहना! कोई हानि आपको न होगी। हाँ, ८।१० दिन सख्त बीमारकी तरह कष्ट उठाना होगा, फिर कुछ नहीं, सदा आनन्द है। इस दशामें नीम, परवल, गिलोय और पाढ़—इन चारोंका काढ़ा दिनमें चार

बार पीओ । इस काढ़ेसे अफीमके कष्ट कम होंगे । दिनमें, ८।१० दफा, आध-आध पाव दूध पीओ । हलवा, मोहन-भोग और मलाई खाओ । दिलमें धीरज रखो । दस्तोंके रोकनेको कोई भी दवा मत लो । हाँ, नींद और दर्द वगैरः के लिये ऊपर नं० २ में लिखे उपाय करो । काढ़ा ११ दिन पीना चाहिये । अगर सिगरेट तमाखूका शौक़ हो, तो इन्हें पी सकते हो । सूखी तली हुई भाँग भी गुड़में मिला कर खा सकते हो । हमने कई बार केवल गहरी, पर रोगी के बलानुसार, भाँग खिला-खिला कर और गरमीमें पिला-पिलाकर अफीम छुड़ा दी । इसमें शक नहीं, अफीम छोड़ते समय धीरज, दिलकी कड़ाई और दूध-घीकी भरती रखनेकी बड़ी ज़रूरत है ।

नोट—ये सभी उपाय हमारे अनेक बारके परीक्षित हैं । २५, ३० साल पहले ये सब उत्तम-उत्तम तरीके आयुर्वेदके धुरन्धर विद्वान् स्वर्ग-वासी पण्डित-वर शंकर दाजी शास्त्री पदेके मासिक-पत्रसे हमें मालूम हुए थे । हमने उनकी सैंकड़ों अनमोल युक्तियाँ रट-रट कर कंठाग्र कर लीं और उनसे बारम्बार लाभ उठाया । दुःख है, महामान्य शास्त्रीजी इस दुनियामें और कुछ दिन न रहे । यों तो भारतमें अब भी एकसे एक बढ़कर विद्वान् हैं; पर उन जैसे तो वही थे । हमें इस विद्याका शौक ही उनके पत्रसे लगा । भगवान् उन्हे सदा स्वर्गमें रखे ।

अफीम-विष नाशक उपाय ।

(१) पुराने काग़ज़ोंको जला कर, उनकी राख पानीमें घोल कर पिलानेसे, वमन होकर, अफीमका ज़हर उतर जाता है ।

(२) कड़वे नीमके पत्तोंका यंत्रसे निकाला अर्क़ पिलानेसे अफीमका विष उतर जाता है ।

(३) मकोयके पत्तोंका रस पिलानेसे अफीमका विष नष्ट हो जाता है । परीक्षित है ।

(४) बिनौले और फिटकरीका चूर्ण खानेसे अफीमका विष उतर जाता है ।

(५) बाग़की कपासके पत्तोंका रस पिलानेसे अफीमका विष उतर जाता है।

नोट—नं० २-५ तकके नुसखे परीक्षित हैं।

(६) अफीम खानेसे अगर पेट फूल जाय, अफीम न पचे, तो फौरन ही नाड़ीके पत्तोंके सागका रस निकाल-निकालकर, दो-तीन बार, आध-आध पाव पिलाओ। इससे क़य होकर, अफीमका विष शीघ्र ही उतर जायगा।

(७) बहुत देर होनेकी वजहसे, अगर अफीम पेटमें जाकर पच गई हो, तो आध पाव आमलेके पत्ते आध सेर जलमें घोट-छान कर तीन-चार बारमें पिला दो। इस नुसखेसे अफीमके सारे उपद्रव नाश होकर, रोगी अच्छा हो जायगा।

नोट—नं० ६ और नं० ७ नुसखे एक सज्जनके परीक्षित हैं।

(८) अरण्डीकी जड़ या कोंपल पानीमें पीसकर पीनेसे अफीम का विष उतर जाता है।

(९) दो माशे हीरा हींग दो-तीन बारमें खानेसे अफीमका विष उतर जाता है।

(१०) गायका घी और ताज़ा दूध पीनेसे अफीमका विष उतर जाता है।

(११) अख़रोटकी गरी खानेसे अफीम उतर जाती है।

(१२) तेजबल पानीमें पीसकर, १ प्याला पीनेसे अफीमका विष उतर जाता है।

(१३) कमलगट्टेकी गरी १ माशे और शुद्ध तूतिया २ रत्ती— इन दोनोंको पीसकर, गरम जलमें मिलाकर पीनेसे कय होतीं और अफीम तथा संखिया वगैरः हर तरहका विष निकल जाता है।

(१४) दूध पीनेसे अफीम और भाँगका मद नाश हो जाता है।

(१५) अरीठेका पानी थोड़ा-सा पीनेसे अफीमका मद नाश हो जाता है।

नोट—पाव भर अफीमपर पाँच-सात बूंदे अरीठेके पानीकी डाली जायँ, तो उतनी अफीम मिट्टीके समान हो जाय।

(१६) नर्म कपासके पत्तोका स्वरस, इमलीके पत्तोंका स्वरस और सीताफलके बीजोंकी गरी—इनको पानीमें पीसकर पिलानेसे अफीमका विष निस्सन्देह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) इमलीका भिगोया पानी, घी और राईके चूर्णका पानी—इनके पिलानेसे अफीम उतर जाती है।

(१८) फिटकरी और बिनौलोका चूर्ण मिलाकर खिलानेसे अफीमका विष नाश हो जाता है।

(१९) सुहागा घीमें मिलाकर खिलानेसे वमन होती और अफीम निकल जाती है।

(२०) वैद्य कल्पतरुमें एक सज्जनने अफीमका ज़हर उतारने के नीचे लिखे उपाय लिखे हैं,—अगर जल्दी ही मालूम हो जाय, तो शीघ्र ही पेटमें गई हुई अफीमको बाहर निकालनेकी चेष्टा करो। डाक्टर आ जावे, तो स्टमक पम्प* नामक यन्त्र द्वारा पेट ख़ाली करना चाहिये। डाक्टर न हो तो वमन कराओ। वमन कराने के बहुत उपाय हैं:—(क) गरम पानी पिलाकर गलेमें पखीका

---

* स्टमक पम्प (Stomach Pump) घरमे मौजूद हो तो हर कोई उस से काम ले सकता है, अतः उसकी विधि नीचे लिखते हैं:—

स्टमक पम्पका लकडी वाला भाग दाँतोंमें रखो। पेटमें डालनेकी नलीको तेलसे चुपड़कर, उसका अगला भाग मोडकर या टेढ़ा करके, गलेमें छोड़ो। वहाँ से धीरे धीरे पेटमें दाख़िल करो। पम्पके बाहरके सिरेसे पिचकारी जोड दो। फिर उसमे पानी भरकर, ज़रा देर बाद उसे बाहर खींचो। इस तरह बाहर निकलने वालें पानीमें जब तक अफीमकी गन्ध आवे तब तक, इस तरह पेटको बराबर धोते रहो। जब भीतरसे आनेवाले पानीमें अफीमकी गन्ध न आवे, तब इस कामको बन्द कर दो।

पंख फेरकर वमन कराओ। (ख) २० ग्रेन सलफेट आफ ज़िंक थोड़ेसे जलमें घोलकर पिलाओ। (ग) राईका चूर्ण एक या दो चम्मच पानीमें मिलाकर पिलाओ। (घ) इपिकाकुआनाका पौडर १५ ग्रेन थोड़ेसे पानीमें मिलाकर पिलाओ। ये सब वमन करानेकी दवाएँ हैं। इनमेंसे किसी एक को काममें लाओ। अगर वमन जल्दी और ज़ोरसे न हो, तो गरम जल खूब पिलाओ या नमक मिलाकर जल पिलाओ। वमनकी दवापर नमकका पानी या गरम पानी पिलानेसे बड़ी मदद मिलती है; वमनकारक दवाका बल बढ़ जाता है। यह कय करनेकी बात हुई।

घी पिलाओ। घी विष-नाश करनेका सर्वश्रेष्ठ उपाय है। घी में यह गुण है कि, वह कयमें ज़हरको साथ लिपटाकर बाहर ले आता है।

जब अफीमका विष शरीरमें फैल जाय, तब वमन करानेसे उतना लाभ नहीं। उस समय अफीमका विष नाश करने वाली, और अफीमके गुणके विपरीत गुण वाली दवाएँ दो। जैसेः—

(क) रोगीको सोनेमत दो—उसे जागतारखो। सिरपर शीतल जलकी धारा छोड़ो। रोगीको धमकाओ, चिल्लाकर जगाओ और चूँटीसे काटो। मतलब यह है, उसे तन्द्रा या ऊँघ मत आने दो; क्योंकि सोने देना बहुत ही बुरा है।

(ख) वमन होनेके बाद, पन्द्रह-पन्द्रह मिनटमें कड़ी काफी पिलाओ। उसके अभावमें चाय पिलाओ। इससे नींद नहीं आती।

(ग) अगर नाड़ी बैठ जाय, तो लाइकर एमोनिया १० बूँद अथवा स्पिरिट एरोमेटिक ३० से ४० बूँद थोड़े-से जलमें मिलाकर पिलाओ।

(घ) चल सके तो थोड़ी-थोड़ी ब्राण्डी पानीमें मिलाकर पिलाओ और दोनों पैरोंपर गरम बोतल फेरो।

"सद्वैद्य कौस्तुभ" में भी यही सब उपाय लिखे हैं, जो ऊपर हमने "वैद्यकल्पतरु" से लिखे हैं। चन्द बातें छूट गई हैं, अतः हम उन्हें लिखते हैं:—

अफीम या और किसी विषैली चीज़का ज़हर उतारनेके मुख्य दो मार्ग हैं:—

(१) विष खानेके बाद तत्काल ख़बर हो जाय, तो वमन कराकर, पेटमें गया हुआ विष निकाल डालो।

(२) अगर विष खानेके बहुत देर बाद ख़बर मिले और उस समय विषका थोड़ा या बहुत असर खूनमें हो गया हो, तो उस विषको मारने वाली विरुद्ध गुणकी दवाएँ दो, जिससे विषका असर नष्ट हो जाय।

डाक्टर लोग वमन करानेके लिये "सलफेट आफ ज़िङ्क" ३० ग्रेन या "इपिकाकुआना पौडर" १५ ग्रेन तक गरम पानीमें मिलाकर पिलाते हैं। इन दवाओंके बदलेमें आककी छालका चूर्ण १५ ग्रेन देनेसे भी वमन हो जाती हैं।·····किसी भी वमनकी दवापर, बहुत-सा गरम पानी या नमकका पानी पीनेसे वमनको उत्तेजना मिलती है। अगर वमनसे सारा विष निकल जाय, तो फिर किसी दवा या उपचारकी ज़रूरत नहीं। अगर वमन होनेके बाद भी पूर्वोक्त विष-चिह्न नज़र आवें, तो समझ लो कि शरीरमें विष फैल गया है। इस दशामें रोगीको जागता रखो—सोने मत दो।

जागता रखनेको मुँहपर या शरीरपर गीला कपड़ा रखो। ख़ासकर मुँहपर गीला कपड़ा मारो। नेत्रोंमें तेज़ अंजन लगाओ। नाकके पास एमोनिया या कलीका चूना और पिसी हुई नौसादर रखो। रोगीको पकड़कर इधर-उधर घुमाओ और उससे बातें करो। बादमें काफी या चाय घण्टेमें चार बार पिलाओ। इससे भी नींद न आवेगी। पिंडलियोंपर राई पीसकर लगाओ। जावित्री, लौंग, दालचीनी, केशर, इलायची आदि गरम और अफीम

के विकार-नाशक पदार्थ खिलाओ। अगर आदमी बेहोश हो, तो स्टमक पम्पसे ज़हर निकालो। अगर एकदम बेहोश हो, तो बिजली लगाओ। अगर इससे भी लाभ न हो, तो कृत्रिम श्वास चलाओ।

(२२) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है:—

(क) सोया और मूलीके काढ़ेमें शहद और नमक मिलाकर पिलाओ और कय कराओ।

(ख) तेज़ दस्तावर दवा दो।

(ग) तिरियाक मसरुदीतूस सेवन कराओ।

(घ) हींग और शहद घोले जलमें दालचीनी और कूट मिलाकर पिलाओ।

(ङ) कालीमिर्च, हींग और देवदारू महीन कूटकर एक-एक गोलीके समान खिलाओ।

(च) तिरियाक अरबा, अकरकरा और जुन्देबेदस्तर लाभदायक हैं।

(छ) जुन्देबेदस्तर सुँघाओ। कूटका तेल सिरपर लगाओ। हो सके तो शरीरपर भी ज़रूर मालिश करो।

(ज) शराबमें अकरकरा, दालचीनी और जुन्देबेदस्तर—घिसकर पिलाओ। सिरपर गरम सिकताव करो। गरम माजून और कस्तूरी दो। यह हकीम ख़जन्दी साहबकी राय है।

(झ) खाने-पीनेकी चीजोंमें केशर और कस्तूरी मिलाकर दो। जुलाबमें तिरियाक और निर्विषी मिलाकर खिलाओ। सरूके फल, राई और अञीर खिलाना भी हितकारी है। यह हकीम बहाउद्दीन साहबकी राय है।

(ञ) अगर अफीम खानेवाला बेहोश हो, तो छींक लानेवाली दवा सुँघाओ, शरीरको मलो और पसीने लाने वाली दवा दो।

(२३) बड़ी कटेरीके रसमें दूध मिलाकर पीनेसे अफीमका विष उतर जाता है।

———o———

कुचलेका वर्णन और उसकी शान्तिके उपाय ।

कुचलेके गुणावगुण प्रभृति ।

कुचलेको संस्कृतमें कारस्कर, किम्पाक, विषतिन्दु, विषद्रुम, गरद्रुम, रम्यफल, और कालकूटक आदि कहते है। इसे हिन्दीमें कुचला, वँगलामें कुँचिले, मरहटीमें कुचला, गुजरातीमें झेरकोचला, अँगरेज़ीमें पॉइज़ननट और लेटिनमें स्ट्रिकनॉस नक्सवोमिका कहते हैं।

कुचला शीतल, कड़वा वातकारक, नशा लानेवाला, हलका, पाँवकी पीड़ा दूर करने वाला, कफपित्त और रुधिर-विकार नाश करने वाला, कण्डू, कफ, बवासीर और व्रणको दूर करने वाला, पाण्डु और कामलाको हरने वाला तथा कोढ़, वातरोग, मलरोध और ज्वर-नाशक है।

कुचलेके वृक्ष मध्यम आकारके प्रायः वनोमें होते हैं। इसके पत्ते पानके समान और फल नारङ्गीकी तरह सुन्दर होते हैं। इन फलोके वीजोको ही "कुचला" कहते हैं। यह वड़ा तेज़ विष है। ज़रा भी ज़ियादा खानेसे आदमी मर जाता है। कुचलेकी मात्रा दो-तीन चाँवल तक होती है। आजकल विलायतमें कुचलेका सत्त निकाला जाता है। उसकी मात्रा एक रत्तीका तीसवाँ भाग या चौथाई चाँवल भर होती है। सत्त सेवन करते समय वहुत ही सावधानीकी ज़रूरत है, क्योंकि यह वहुत तेज़ होता है।

अधिक कुचला खानेका नतीजा ।

इसकी ज़ियादा मात्रा खाने या वेक़ायदे खानेसे पेटमें मरोड़ी, ऐंठनी, गलेमें खुश्की, ख़राश और रुकावट होती है तथा शरीर ऐंठता

और नसें खिचती हैं। शेषमें कम्प होता और फिर मृत्यु हो जाती है।

कुचलेके जियादा खा जानेसे सामान्यतः पाँच मिनटसे लेकर आधे घण्टेके भीतर विषका प्रभाव दिखाई देता है, यानी इतनी देर में—तीस मिनटमें—कुचलेका ज़हर चढ़ जाता है। कभी-कभी दस-बीस मिनटमें ही आदमी मर जाता है। जियादा-से-ज़ियादा ६ घण्टे तक कुचलेके ज़ियादा खानेवाला जी सकता है। कुचलेके बीजोंका चूर्ण डेढ़ माशे, कुचलेका सत्त आधे गेहूँ भर और एक्सट्रैक्ट तीन-चार रत्ती खानेसे आदमी मर जाता है।

कुचलेकी ज़ियादा मात्रा खानेसे अधिक-से-अधिक एक या दो घण्टेमें उसका ज़हरी प्रभाव नजर आता है। पहले सिर और हाथ-पैरोंके स्नायु खिंचने लगते हैं। थोड़ी देरमें सारा बदन तनने लगता है तथा हाथ-पैर काँपते और अकड़ जाते हैं। दाँती भिंच जाती है, मुँह नहीं खुलता, मुँह सूखता है, प्यास लगती है, मुँहमें झाग आते हैं तथा मुँहपर ख़ून जमा होता है, अतः चेहरा लाल हो आता है। इतनी हालत बिगड़ जानेपर भी, कुचला ज़ियादा खानेवालेकी मानसिक शक्ति उतनी कमज़ोर नहीं होती।

"वैद्य कल्पतरु"में एक सज्जन लिखते हैं—कुचलेको अँगरेज़ीमें "नक्स-वोमिका" कहते हैं। वैद्य लोग कुचलेको और डाक्टर लोग स्ट्रिकेनिया और नक्सवोमिका—इन दोनोंको बनावटी दवाकी तरह काममें लाते हैं। अगर कुचला ज़ियादा खा लिया जाता है, तो ज़हर चढ़ जाता है। ज़हरके चिह्न—सारे चिह्न—धनुर्वातके जैसे होते हैं। खानेके बाद थोड़ी देरमें या एकाधिक घण्टेमें ज़हरका असर मालूम होता है। नसोंका खिंचना, कुचलेके ज़हरका मुख्य चिह्न है।

उपाय:—

(१) नसें ढीली करनेवाली दवाएँ देनी चाहियें। जैसे,—अफीम, कपूर, क्लोरोफार्म या क्लोरल हाइड्रेट आदि।

(२) घी पिलाना मुख्य उपाय है। तुरन्त ही घी पिलाकर कय करा देनेसे ज़हरका असर नहीं होता।

कुचलेके विकार और धनुस्तंभके लक्षणोंका मुक़ाबला।

ज़ियादा कुचला खा जानेसे, जब उसके विषका प्रभाव शरीरपर होता है, तब प्रायः धनुस्तंभ रोगके-से लक्षण होते हैं। पर चन्द बातों में फर्क होता है, अतः हम धनुस्तंभ रोग और कुचलेके विषके लक्षणोंका मुक़ाबला करके दोनोंका अन्तर बताते हैं:—

(१) कुचलेके ज़हरीले लक्षण आरम्भसे ही साफ दिखाई देते हैं और जल्दी-जल्दी बढ़ते जाते हैं;

पर

धनुस्तंभके लक्षण आरम्भमें अस्पष्ट होते हैं; यानी साफ दिखाई नही देते, किन्तु पीछे धीरे-धीरे बढ़ते रहते हैं।

(२) कुचलेके ज़हरीले असरसे पहले, सारे शरीरके स्नायु खिंचने लगते हैं और पीछे मुँह और दाँतोंकी कतार भिंचती है;

पर

धनुस्तंभ रोग होनेसे, पहले मुँह और दाँतोंकी कतार भिंचती है और पीछे शरीरके भिन्न-भिन्न अङ्गोंके स्नायु खिंचने या तनने लगते हैं।

(३) कुचलेसे आरम्भ यानी शुरूमें ही शरीर धनुष या कमान की तरह नव जाता है;

पर

धनुस्तंभ रोग होनेसे शरीर पीछे धीरे-धीरे धनुष या कमानकी तरह नवने लगता है।

नोट—कुचलेसे पहले ही स्नायु या नसे खिंचने लगती हैं, इससे पहले ही—शुरूमें ही शरीर धनुषकी तरह नव जाता है, क्योंकि नसोंके खिंचाव या तनावसे ही तो शरीर कमानकी तरह झुकता है और नसों या स्नायुओंको संकुचित करने वाला वायु है। इसके विपरीत, धनुस्तंभ रोगमें स्नायु पीछे खिंचने लगते हैं, इसीसे शरीर भी धनुषकी तरह पीछे ही नवता है।

(४) कुचला ज़ियादा खा जानेसे जो ज़हरीला असर होता है, उससे हर दो-दो या तीन-तीन मिनटमें वेग आते और जाते हैं। जब वेग आता है, तब शरीर खिंचने लगता है और जब वेग चला जाता है और दूसरा वेग जब तक नहीं आता, इस बीचमें रोगीको चैन हो जाता है—शरीर तननेकी पीड़ा नही होती। जब दूसरा वेग फिर दो या तीन मिनटमें आता है, तब फिर शरीर खिंचने लगता है;

पर

धनुस्तम्भ रोग होनेसे, वेग एक दम चला नहीं जाता। हाँ, उसका ज़ोर कुछ देरके लिये हल्का हो जाता है। वेगका ज़ोर हलका होनेसे शरीरका खिंचाव भी हलका होना चाहिये, पर हल्का होता नहीं, शरीर ज्योंका त्यों बना रहता है।

खुलासा

कुचलेसे दो-दो या तीन-तीन मिनटमें रह-रह कर शरीर तनता या खिंचता है। जब वेग चला जाता है और जितनी देर तक फिर नहीं आता, रोगी आरामसे रहता है, पर धनुस्तम्भमें खींचातानीका वेग केवल ज़रा हल्का होता है—साफ नही जाता और वेग हल्का होनेपर भी शरीर जैसेका तैसा बना रहता है।

और भी खुलासा

कुचलेके विषैले प्रभाव और धनुस्तम्भ रोग—दोनोंमें ही वेग होते हैं। कुचलेवाले रोगीको दो-दो या तीन-तीन मिनटको चैन मिलता है, पर धनुस्तम्भ वालेको इतनी-इतनी देरको भी आराम नहीं मिलता।

(५) कुचलेका बीमार दो-चार घण्टोंमें मर जाता है, अथवा आराम हो जाता है;

पर

धनुस्तम्भका बीमार दो-चार घण्टोंमें ही मर नहीं जाता—वह एक, दो, चार या पाँच दिन तक जीता रहता है और फिर मरता है या आराम हो जाता है।

खुलासा—कुचलेका रोगी एक, दो, चार या पाँच दिन तक बीमार रह कर नहीं मरता। वह अगर मरता है, तो दो-चार घण्टोंमें ही मर जाता है। पर धनुस्तंभ रोगका रोगी घण्टोंमें नहीं मरता, कम-से-कम एक रोज़ जीता है। धनुस्तंभ रोगी भी १० रात नहीं जीता; यानी १० दिनके पहले ही मरनेवाला होता है तो मर जाता है। कहा है—"धनुस्तंभे दशरात्र न जीवति।" यह भी याद रखो कि, कुचले और धनुस्तंभके रोगी सदा मर ही नहीं जाते; आरोग्य लाभ भी करते हैं। भेद इतना ही है, कि कुचलेवाला या तो दो-चार घण्टोंमें आराम हो जाता है या मर जाता है; पर धनुस्तंभवाला एक, चार या पाँच दिनों तक जीता है। फिर या तो मर जाता है या आरोग्य लाभ करता है।

नोट—धनुस्तंभ रोगके लक्षण लिख देना भी नामुनासिब न होगा। धनुस्तंभके लक्षण—दूषित वायु नसोंको सुकेड कर, शरीरको धनुपकी तरह नवा देता है; इसीसे इस रोगको "धनुस्तंभ" कहते हैं। इस रोगमें रङ्ग बदल जाता है, दाँत जकड जाते हैं, अंग शिथिल या ढीले हो जाते हैं, मूर्च्छा होती और पसीने आते हैं। धनुस्तंभ रोगी दस दिन तक नहीं बचता।

कुचलेका विष उतारनेके उपाय।

आरम्भिक उपाय—

(क) अगर कुचला या संखिया वग़ैरः ज़हर खाते ही मालूम हो जाय, तो फौरन वमन कराकर ज़हरको आमाशयसे निकाल दो; क्योंकि खाते ही विप आमाशयमें रहता है। आमाशयसे विषके निकल जाते ही रोगी आराम हो जायगा।

(ख) अगर देरसे मालूम हो या इलाजमें देर हो जाय और विष पकाशयमें पहुँच जाय, तो दस्तोंकी दवा देकर, गुदाकी राहसे, विपको निकाल दो।

नोट—ज़हर खानेपर वमन और विरेचन कराना सबसे अच्छे उपाय हैं। इसके बाद और उपाय करो। कहा है:—"विषभुक्तवतेदद्यादूर्ध्वं वा अधश्च शोधनं।" यानी ज़हर खानेवालेको वमन और विरेचन दवा देनी चाहिये। वमन या कय कराना, इसलिये पहले लिखा है, कि सभी ज़हर पहले आमाशयमें रहते हैं। जहाँ तक हो, उन्हें पहले ही वमन द्वारा निकाल देना चाहिये।

(१) वमन-विरेचन कराकर, कुचलेके रोगीको कपूरका पानी पिलाना चाहिये, क्योंकि कपूरके पानीसे कुचलेका ज़हर नष्ट हो जाता है।

नोट—डाक्टर लोग कुचलेवालेको क्लोरोफार्म सुंघाकर या क्लोरल हायड्रेट पिला कर नशेमें रखते हैं। क्लोरल हायड्रेट कुचलेके विषको नाश करता है। किसी-किसी ने अफीम और कपूरकी भी राय दी है। उनकी राय है, कि नसें ढीली करनेवाली दवाएँ दी जानी चाहियें।

(२) दूधमें घी और मिश्री मिला कर पिलानेसे कुचलेका ज़हर नष्ट हो जाता है।

(३) कपूर १ माशे और घी १ तोले,—दोनोंको मिला कर पिलानेसे धतूरे वगैरःका ज़हर उतर जाता है।

(४) दरियायी नारियल पानीमें पीसकर पिलानेसे सब तरहके विष नष्ट हो जाते हैं।

(५) कुचलेके ज़हर वालेको फौरन ही घी पिलाने और क़य करानेसे कुछ भी हानि नहीं होती। घी इस ज़हरमें सर्व्वोत्तम उपाय है।

औषधि-प्रयोग।

यद्यपि कुचला प्राणघातक विष है, तथापि यह अगर मात्रा और उत्तम विधिसे सेवन किया जाय, तो अनेकों रोग नाश करता है, अतः हम नीचे कुचलेके चन्द प्रयोग लिखते हैं:—

(१) कुचलेको तेलमें पकाकर, उस तेलको छान लो। इस तेलकी मालिश करनेसे पीठका दर्द, वायुकी वजहसे और स्थानोंके दर्द तथा रींगन वायु वगैरः रोग आराम होते हैं।

(२) हरड़, पीपर, कालीमिर्च, सोंठ, हींग, सेंधानोन, शुद्ध गंधक और शुद्ध कुचला,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट कर छानलो और खरलमें डाल कर अदरख या नीबूका रस ऊपरसे दे-दे कर खूब घोटो। घुट जानेपर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम या ज़रूरतके समय एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे गरम

जल पीनेसे शूल या दर्द आराम होता है । इसके सिवा मन्दाग्निकी यह उत्तम दवा है । इससे खूब भूख लगती और भोजन पचता है । परीक्षित है ।

कुचला शोधनेकी तरकीब—कुचलेके बीजोको घीमें भून लो, बस वे शुद्ध हो जायँगे । अथवा कुचलेको काँजीके पानीमें ६ घण्टे तक, दोलायंत्रकी विधिसे, पकाओ । इसके बाद उसे घीमें भून लो । यह शुद्धि और भी अच्छी है ।

कुचला शोधनेकी सबसे अच्छी विधि यह है—आध सेर मुलतानी मिट्टीको दो सेर पानीमें घोलकर एक हाँडीमें भरदो, फिर उसीमे एक पाव कुचला भी डाल दो । इस हाँडीको चूल्हेपर रखदो और नीचेसे मन्दी-मन्दी आग लगने दो । जब तीन घण्टे तक आग लग चुके, कुचलेको निकालकर, गरम जल से खूब धो लो । फिर छुरी या चाकूसे कुचलेके ऊपरके छिलके उतार लो और दोनो परतोंके बीचकी पान-जैसी जीभी निकाल-निकालकर फेकदो । इसके बाद उसके महीन-महीन चाँवल-जैसे टुकडे कतरकर, छायामें सुखाकर, बोतलमें भरदो । यह परमोत्तम कुचला है । इसमें कडवापन भी नही रहता । इसके सेवनसे ८० प्रकारके वातरोग निश्चय ही आराम हो जाते है । अनुपान-योग से यह जलन्धर, लकवा, पक्षाघात, बदनका रह जाना, गठिया और कोढ़ आदि को नाश कर देता है । नसोंमें ताकत लाने, कामदेवका बल बढ़ाने और कफके रोग नाश करनेमें अव्यर्थ महौषधि है । बावले कुत्तेका विष इसके सेवन करने से जडसे नाश हो जाता है ।

(२) शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध बच्छनाभ विष, अजवायन, त्रिफला, सज्जी खार, जवाखार, सैंधानोन, चीतेकी जड़की छाल, सफेद ज़ीरा, कालानोन, बायबिडंग और त्रिकुटा—इन सबको एक-एक तोले लो और इन सबके वज़नके बराबर तेरह तोले शोधे हुए कुचले का चूर्ण भी लो । फिर इन चौदहों चीज़ोंको महीन पीस लो । शेष में, इस पिसे चूर्णको खरलमें डालकर नीबूका रस डाल-डाल कर घोटो । जब मसाला घुट जाय, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बनालो । इन गोलियों को यथोचित अनुपानके साथ सेवन करनेसे मन्दाग्नि, अजीर्ण, आम-विकार, जीर्णज्वर और अनेक वातके रोग नाश होते हैं । परीक्षित है ।

नोट—पारा और बच्छनाभ विष शोधनेकी विधि चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे

भागके पृष्ठ ९७६–७७ में देखिये। पारा, गंधक, कुचला और बच्छनाभ विष भूलकर भी बिना शोधे दवामें मत डालना।

(४) बलाबल अनुसार, एकसे ६ रत्ती तक कुचला पानीमें डाल कर औटाओ और छान लो। इस जलके पीनेसे भोजन अच्छी तरह पचता है। अगर अजीर्णसे बीच-बीचमें कय होती हों, तो यही पानी दो। अगर वात प्रकृति वालोंको वात-विकारोंसे तकलीफ रहती हो, तो उन्हें यही कुचलेका पानी पिलाओ। कुचलेसे वात-विकार फौरन दब जाते हैं। वात-प्रकृति वालोंको कुचला अमृत है। जिन अफीम खाने वालोंके पैरोंमें थकान या भड़कन रहती हो, वे इस पानीको पिया करें, तो सब तकलीफें रफा होकर आनन्द आवे। इन सब शिकायतोंके अलावः कुचलेके पानीसे मन्दाग्नि, अरुचि, पेटकी मरोड़ी और पेचिश भी आराम होती है।

नोट—शौक़में आकर कुचला ज़ियादा न लेना चाहिये। अगर कुचला खाकर गरम पानी पीना हो, तो दो-तीन चाँवल भर शुद्ध कुचला खाना चाहिये और ऊपरसे गरम पानी पीना चाहिये। अगर औटाकर पीना हो, तो बलाबल अनुसार एकसे ६ रत्ती तक पानीमें डालकर औटाना और छानकर पानी मात्र पीना चाहिये।

(५) कुचलेको पानीके साथ पीसकर मुँहपर लगानेसे मुँहकी श्यामता-कलाई और व्यंग आराम होती है। गीली खुजली और दादोंपर इसका लेप करनेसे वे भी आराम हो जाते हैं।

(६) कुचलेकी उचित मात्रा खाने और ऊपरसे गरम जल पीने से पक्षवध, स्तंभ, आमवात, कमरका दर्द, अर्कुलनिसाँ—चूतड़से पैरकी अँगुली तककी पीड़ा—और वायु-गोला—ये सब रोग आराम होते हैं। स्नायुके समस्त रोगोंपर तो यह रामवाण है। यह पथरी को फोड़ता, पेशाब लाता और बन्द रजोधर्मको जारी करता है।

नोट—हिकमतकी पुस्तकोंमें नं० ६ के गुण लिखे हैं। मात्रा २ रत्तीकी लिखी है। यह भी लिखा है कि, घी और मिश्री पिलाने और क़य करानेसे इसका दर्प नाश हो जाता है। यह तीसरे दर्जेका गरम, रूखा, नशा लाने वाला और घातक विष है। स्वादमें कड़वा है। कुचलेका तेल लगाकर और कुचला खिलाकर,

हमने अनेक कष्टसाध्य वायुरोग आराम किये हैं। पर इस बातको याद रखना चाहिये कि, नये रोगोंमें कुचला लाभके बजाय हानि करता है। जब रोग पुराने हो जायँ, कम-से-कम चार-छै महीने के हो जायँ, उन रोगोंसे सम्बन्ध रखनेवाले, वात दोषके सिवा और दोषोंकी शान्ति हो जाय, तभी इसे देनेसे लाभ होता है। मतलब यह है, पुराने वायु रोगमें कुचला देना चाहिये, उठते ही नये रोगमें नहीं।

(७) शुद्ध कुचलेका चूर्ण गरम जलके साथ लेनेसे खूब भूख लगती है; साथ ही मन्दाग्नि, अजीर्ण, पेटका दर्द, मरोड़ी, पैरोंकी पिंडलियोंका दर्द या भड़कन, ये सब रोग नाश हो जाते हैं।

(८) किसी रोगसे कमज़ोर हुए आदमीको कुचला सेवन करानेसे बदनमें ताक़त आती है और रोग बढ़ने नहीं पाता। जिन रोगोंमें कमज़ोरी होती है, उन सबमें कुचला लाभदायक है।

(९) जो बालक शारीरिक या मानसिक कमज़ोरीसे रातको बिछौनोंमें पेशाब कर देते हैं, उन्हें उचित मात्रामें कुचला खिलानेसे उनकी यह ख़राब आदत छूट जाती है।

(१०) पुराने बादीके रोगोंमें कुचलेकी हलकी मात्रा लगातार सेवन करनेसे जो लाभ होता है उसकी तारीफ नहीं कर सकते। कमरका दर्द, कमरकी जकड़न, गठिया, जोड़ोंका दर्द, पक्षाघात—एक तरफका शरीर मारा जाना, अर्दित रोग—मुँह टेढ़ा हो जाना, चूतड़से पैरकी अँगुली तकका दर्द और झनझनाहट—अगर ये सब रोग पुराने हों चार-छै महीनेके या ऊपरके हो—इनके साथके मूर्च्छा कम्प आदि भयंकर उपद्रव शान्त हो गये हों, तब आप कुचला सेवन कराइये। आप फल देखकर चकित हो जायँगे। भूरि-भूरि प्रशंसा करेंगे। मात्रा हल्की रखिये। नियमसे बिला नागा खिलाइये और महीने दो महीने तक उकताइये मत।

(११) जिस मनुष्यका हाथ लिखते समय काँपता हो और क़लम चलाते समय उँगलियाँ ठिठर जाती हों, उसे आप दो-चार महीने कुचला खिलाइये और आश्चर्य फल देखिये।

(१२) अगर अधिक स्त्री-प्रसंगसे या हस्तमैथुनसे या और कारणसे वीर्य क्षय होकर शरीरमें कमज़ोरी बहुत जियादा हो गई हो, शरीर और नसें ढीली पड़ गई हों अथवा वीर्यस्राव होता हो, लिंगेन्द्रिय निकम्मी या कमजोर हो गई हो—नामर्दीका रोग हो गया हो, तब आप कुचला सेवन कराइये; आपको यश मिलेगा। कुचला खिलानेसे वीर्य पुष्ट होकर शरीर मजबूत होगा। वीर्यवाहिनी नसोंका चैतन्य-स्थान पीठके बाँसेके ज्ञान-तन्तुओंमें है। वह भी कुचलेसे पुष्ट होता है, अतः वीर्यवाहक नसें जल्दी ही वीर्यको छोड़ नहीं सकतीं; इसलिये वीर्यस्राव रोग भी आराम हो जायगा। लिंगेन्द्रियकी कमजोरी या नामर्दीके लिये तो कुचला बेजोड़ दवा है।

(१३) अगर किसीकी मानसिक शक्ति वीर्य क्षय होने या ज़ियादा पढ़ने-लिखने आदि कारणोंसे बहुत ही घट गई हो, चित्त ठिकाने न रहता हो, ज़रासे दिमाग़ी कामसे जी घबराता हो, बातें याद न रहती हों, तो आप उसे कुचला सेवन कराइये। कुचलेके सेवन करनेसे उसकी मानसिक शक्ति खूब बढ़ जायगी और रोगी आपको आशीर्वाद देगा।

(१४) स्त्रियोंको होने वाले वातोन्माद या हिस्टीरिया रोगमें भी कुचला बहुत गुण करता है।

(१५) शुद्ध कुचला १ तोले और काली मिर्च १ तोले—दोनोंको पानीके साथ महीन पीसकर, उड़दके बराबर गोलियाँ बना लो और छायामें सुखाकर शीशीमें रख लो। एक गोली बँगला पानमें रखकर, रोज़ सवेरे खानेसे पक्षवध, पक्षाघात, एकाङ्गवात, अर्द्धाङ्ग या फालिज,—ये रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—जब वायु कुपथ्यसे कुपित होकर, शरीरके एक तरफके हिस्सेको या कमरसे नीचेके भागको निकम्मा कर देता है, तब कहते हैं "पक्षाघात" हुआ है। इस रोगमें शरीरके बन्धन ढीले हो जाते हैं और चमड़ेमें स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता। वैद्य इसकी पैदायश वातसे और हकीम कफसे मानते हैं। हिकमतके

ग्रन्थोंमें लिखा है, इस रोगमें गरम पानी पीनेको न देना चाहिये। चनेकी रोटी कबूतरके मांस या तीतरके मांसके साथ खानी चाहिये।

(१६) शुद्ध कुचलेको आगपर रख दो। जब धूआँ निकल जाय, उसे निकालकर तोलो। जितना कुचला हो, उतनी ही कालीमिर्च ले लो। दोनोंको पानीके साथ पीसकर उड़द-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको बँगला पानमें रखकर, रोज़ सवेरे खानेसे अर्द्धाङ्ग रोग, पक्षवध या पक्षाघात-फालिज आराम होता है। इसके सिवा लकवा—आर्दित रोग, कमरका दर्द, दिमाग़की कमज़ोरी—ये शिकायतें भी नष्ट हो जाती हैं। अव्वल दर्जेकी दवा है।

(१७) शुद्ध कुचला दो रत्ती और शुद्ध काले धतूरेके बीज दो रत्ती—इन दोनोंको पानमें रखकर खानेसे अपतन्त्रक रोग नाश हो जाता है।

नोट—वायुके कोपसे हृदयमें पीडा आरम्भ होकर ऊपरको चढ़ती है और सिरमें पहुँचकर दोनो कनपटियोंमें दर्द पैदा कर देती है तथा रोगीको धनुषकी तरह झुकाकर आक्षेप और मोह पैदा कर देती है। इस रोग वाला बडी तकलीफ से ऊँचे-ऊँचे साँस लेता है। उसके नेत्र ऊपरको चढ़ जाते हैं, नेत्रोंको रोगी बन्द रखता है और कबूतरकी तरह बोलता है। रोगीको शरीरका ज्ञान नही रहता। इस रोगको "अपतंत्रक" रोग कहते हैं।

(१८) शुद्ध कुचला, शुद्ध अफीम और काली मिर्च—तीनों बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस लो। फिर खरलमें डालकर बँगला पानके रसके साथ घोटो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। इन गोलियोंका नाम "समीरगज केशरी वटी" है। एक गोली खाकर, ऊपरसे पानका बीड़ा खानेसे दण्डापतानक रोग नाश होता है। इतना ही नहीं; इन गोलियोंसे समस्त वायु रोग, हैज़ा और मृगी रोग भी नाश हो जाते हैं।

नोट—जब वायुके साथ कफ भी मिल जाता है, तब सारा शरीर डण्डेकी तरह जकड़ जाता और डण्डेकी तरह पड़ा रहता है—हिल-चल नहीं सकता, उस समय कहते हैं "दण्डापतानक" रोग हुआ है।

(१९) शुद्ध कुचला दो रत्ती पानमें नित्य खानेसे आक्षेप या दण्डाक्षेप नामक वायु रोग नाश होता है।

नोट—जब नसोंमें वायु घुसकर आक्षेप करता है, तब मनुष्य हाथीपर बैठे आदमीकी तरह हिलता है, इसे ही आक्षेप या दण्डाक्षेप कहते हैं।

(२०) शुद्ध कुचला और अफीम दोनोंको बराबर-बराबर लेकर तेलमें मिला लो और लँगड़ेपनकी तकलीफकी जगह मालिश करके, ऊपरसे थूहरके या धतूरेके पत्ते गरम करके बाँध दो।

नोट—जब मोटी नसोंमें वायु घुस जाता है, तब नसोंमे दर्द और सूजन पैदा करके मनुष्यको लङ्गड़ा, लूला या पाँगला कर देता है। इस रोगमें दर्दस्थान पर जोंकें लगवाकर, ख़राब खून निकलवा देना चाहिये। पीछे गरम रूईसे सेक करना और ऊपरका तेल मलकर गरम धतूरेके पत्ते बाँध देने चाहियें।

(२१) शुद्ध कुचला २ रत्तीसे आरम्भ करके, हर रोज़ थोड़ा-थोड़ा बढ़ाकर दो माशे तक ले जाओ। इस तरह कुचला पानमें रख कर खानेसे अकड़-वात रोग नाश हो जाता है। साथ ही दो तोले कुचलेको पाँच तोले सरसोंके तेलमें जलाकर और घोटकर, उसकी मालिश करो।

नोट—जब बहुत ही छोटी और पतली नसोंमें वायु घुस जाता है, तब हाथ-पैरोंमें फूटनी या दर्द होता है और हाथ-पैर काँपते तथा अकड़ जाते हैं। इसी रोग को अकड़वात रोग कहते हैं। ऐसी हालतमें कुचला सबसे उत्तम दवा है, क्योंकि नसोंके भीतरकी वायुको बाहर निकालनेकी सामर्थ्य कुचलेसे बढ़कर और दवामें नही है।

(२२) थोड़ा-सा शुद्ध कुचला और काली मिर्च—पीसकर पिलानेसे साँपका ज़हर उतर जाता है।

(२३) अगर साँपका काटा आदमी मरा न हो, पर बेहोश हो, तो कुचला पानीमें पीसकर उसके गलेमें उतारो और कुचलेको ही पीसकर उसके शरीरपर मलो—अवश्य होशमें आ जायगा।

(२४) कुचला सिरकेमें पीसकर लगानेसे दाद नाश हो जाते हैं।

(२५) कुचला २ तोले, अफ़ीम ६ माशे, धतूरेका रस ४ तोले, लहसनका रस ४ तोले, चिरायतेका रस ४ तोले, नीबूका रस ४ तोले, डेकारीका रस ४ तोले, तमाखूके पत्तोंका रस ४ तोले, दाल-चीनी ४ तोले, अजवायन ४ तोले, मेथी ४ तोले, कड़वा तेल १ सेर, मीठा तेल १ सेर और रेंडीका तेल आध सेर—इन सबको मिलाकर, आगपर रखो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब सब दवाएँ जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर बोतलमें भर लो। इस तेलकी मालिशसे सब तरहकी वात-व्याधि और दर्द आराम होता है। यह तेल कभी फेल नहीं होता। परीक्षित है।

(२६) कुचला ३ तोले, दालचीनी ३ तोले, खानेकी सुरती ३ तोले, लहसन ४ तोले, भिलावा १ तोले और मीठा तेल २० तोले—सबको मिलाकर पकाओ, जब दवाएँ जल जायँ, तेलको उतारकर छान लो। इस तेलके लगानेसे गठिया और सब तरहका दर्द आराम होता है।

(२७) शुद्ध कुचला, शुद्ध तेलिया विष और शुद्ध चौकिया सुहागा—इन तीनोंको समान-समान लेकर खरल करके रख लो। इसमेंसे रत्ती-रत्ती भर दवा रोज़ सवेरे-शाम खिलानेसे २१ दिनमें बावले कुत्तेका विष निश्चय ही नाश हो जाता है।

नोट—कुत्तेके काटते ही घावका खून निकाल डालो और लहसन सिरकेमें पीसकर घावपर लगाओ अथवा कुचलेको ही आदमीके मूत्रमें पीसकर लगाओ।

(२८) कुचलेका तेल लगानेसे नासूर, सिरकी गंज और उकवत रोग आराम हो जाते हैं।

जल-विष नाशक उपाय।

(१) सोंठ, राई और हरड़—इन तीनोंको पीस-छानकर रख लो। भोजनसे पहले, इस चूर्णके खानेसे अनेक देशोंके जल-दोषसे हुआ रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) सोंठ और जवाखार—इन दोनोंको पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णको गरम पानीके साथ फाँकनेसे जल-दोष नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) अनेक देशोंका जल पीना विष-कारक होता है, इसलिये जलको सोने, मोती और मूँगे आदिकी भाफसे शुद्ध करके पीना चाहिये।

(४) बकायन और जवाखार—इनको पीस-छानकर, इसमेंसे थोड़ा-सा चूर्ण गरम पानीके साथ पीनेसे अनेक देशोंके जलसे हुए विकार नाश हो जाते हैं।

शराबका नशा उतारनेके उपाय।

(१) ककड़ी खानेसे शराबका नशा उतर जाता है।

(२) वैद्यकल्पतरुमें लिखा है:—

(क) सिरपर शीतल जल डालो।

(ख) धनिया पीसकर और शक्कर मिलाकर खिलाओ।

(ग) इमलीके पानीमें खजूर या गुड़ घोलकर पिलाओ।

(घ) भूरे कुम्हड़ेके रसमें दही और शक्कर मिलाकर पिलाओ।

(ङ) घी और चीनी चटाओ।

(च) ककड़ी खिलाओ।

(३) बिना कुछ खाये, निहार मुँह, शराब पीनेसे सिरमें दर्द होता

है, गलेमें सूजन आती है, चिन्ता होती है और बुद्धि हीन हो जाती है। इस दशामें नीचे लिखे उपाय करोः—

(क) फस्द खोलो ।

(ख) कय और दस्त कराओ ।

(ग) खट्टी छाछ पिलाओ ।

(घ) मेवाओंके रससे मिज़ाज ठण्डा करो ।

सिन्दूर, पारा, शिंगरफ, हरताल और नीलाथोथाके विकार नाश करनेके उपाय ।

(१) जवासेको पानीके साथ पीसकर और रस निकालकर पीओ। इससे पारे और शिंगरफके दोष नष्ट हो जायँगे ।

(२) रेंडीका तेल ५ माशे आधपाव गायके दूधमें मिलाकर पीनेसे पारे और शिंगरफके विकार शान्त हो जाते हैं ।

(३) सात दिनों तक, अदरख और नोन खाने और हर समय मुखमें रखनेसे सिन्दूरका विष नाश हो जाता है ।

(४) नोन १५० रत्ती, तितलीकी पत्ती १५० रत्ती, चाँवल ३०० रत्ती और अख़रोटकी गिरी ६०० रत्ती—सबको अञ्जीरोंके साथ कूट-पीसकर खानेसे सिन्दूरका ज़हर नाश हो जाता है ।

(५) पारेके दोषमें शुद्ध गंधक सेवन करना, सबसे अच्छा इलाज है ।

(६) अगर कच्ची हरताल खाई हो, तो तत्काल वमन करा दो । अगर देरसे मालूम हो तो हरड़ की छाल, दूध और घीमें मिलाकर पिलाओ ।

(७) अगर नीलाथोथा ज़ियादा खा लिया हो, तो घी-दूध मिलाकर पिलाओ और बीच-बीचमें निवाया पानी भी पिलाओ ।

———०———

पाँचवाँ अध्याय।

शत्रुओं द्वारा भोजन-पान-तेल और सवारी आदिमें प्रयोग किये हुए विषोंकी चिकित्सा।

अमीरोंकी जान ख़तरेमें।

राजाओंकी जान सदा ख़तरेमें रहती है। उनके पुत्र और भाई-भतीजे तथा और लोग उनका राज हथियानेके लिये, उनकी मरण-कामना किया करते हैं। अगर उनकी इच्छा पूरी नहीं होती, राजा जल्दी मर नहीं जाता, तो वे लोग राजाके रसोइये और भोजन परोसने वालोंसे मिलकर, उनको बड़े-बड़े इनामोंका लालच देकर, राजाके खाने-पीनेके पदार्थोंमें विष मिलवा देते हैं। राजाओंकी तरह धनी लोगोंके नज़दीकी रिश्तेदार बेटे-पोते प्रभृति और दूरके रिश्तेमें लगने वाले भाई-बन्धु, उनके माल-मतेके वारिस होनेकी ग़रज़से, उन्हें खाने-पीनेकी चीज़ोंमें ज़हर दिलवा देते हैं। इतिहासके पन्ने उलटनेसे मालूम होता है, कि प्राचीन कालसे अब तक, अनेकों राजा-महाराजा ज़हर देकर मार डाले गये। पाण्डुपुत्र भीमसेनको कौरवोंने खानेमें ज़हर खिला दिया था, मगर वे भाग्यबलसे बच गये। एक मुसलमान शाहज़ादेको भाइयोंने भोजनमें ज़हर दिया। ज्यों ही वह खाने बैठा, उसकी बहनने इशारा किया और उसने थालीसे हाथ अलग कर लिया। बस, इस तरह मरता-मरता बच गया। अपने समयके अद्वितीय विद्वान् महर्षि दयानन्द सरस्वतीने भारतके प्रायः सभी धर्मावलम्बियोंको शास्त्रार्थमें परास्त

कर दिया; इसलिये शत्रुओंने उन्हें भोजनमें विष दे दिया । इस तरह एक महापुरुषका देहान्त हो गया । ऐसी घटनाएँ बहुत होती रहती हैं । बाज़-बाज़ बदचलन औरतें अपने ससुर, देवर, जेठ और पतियोंको, अपनी राहके काँटे समझकर, विष खिला दिया करती हैं । अतः सभी लोगोंको, विशेष कर राजाओं और धनियोंको बेखटके भोजन नहीं करना चाहिये; सदा शंका रखकर, देख-भालकर और परीक्षा करके भोजन करना चाहिये । राजा-महाराजाओं और बादशाहोंके यहाँ, भोजन-परीक्षा करनेके लिये, वैद्य-हकीम नौकर रहते हैं । उनके परीक्षा करके पास कर देने पर ही राजा-महाराजा खाना खाते है ।

विष देनेकी तरकीबें ।

ज़हर देनेवाले, भोजनके पदार्थोंमें ही ज़हर नहीं देते । खानेकी चीज़ोंके अलाव., वे पीनेके पानी, नहानेके जल, शरीरपर लगानेके लेप, अञ्जन और तमाखू प्रभृति अनेक चीज़ोंमें ज़हर देते हैं । अँगरेज़ी राज्य होनेके पहले, भारतमें ठगोंका बड़ा ज़ोर था । वे लोग पथिकों को ज़हरीली तम्बाकू पिलाकर, विष-लगी खाटोंपर सुलाकर या और तरह विष प्रयोग करके मार डाला करते थे । आजकल भी, अनेक रेल द्वारा सफर करने वाले मुसाफिर विषसे बेहोश करके लूटे जाते हैं ।

भगवान् धन्वन्तरि कहते हैं, कि नीचे लिखे पदार्थोंमें बहुधा विष दिया जाता है:— (१) भोजन, (२) पीनेका पानी, (३) नहानेका जल, (४) दाँतुन, (५) उबटन, (६) माला, (७) कपड़े, (८) पलँग, (९) ज़िरह-बख़्तर, (१०) गहने, (११) खड़ाऊँ, (१२) आसन, (१३) लगाने या छिड़कनेके चन्दन आदि, (१४) अतर, (१५) हुक्का, चिलम या तमाखू, (१६) सुरमा या अञ्जन, (१७) घोड़े, हाथीकी पीठ, (१८) हवा और सड़क प्रभृति ।

इस तरह अगर ज़हर देनेका मौक़ा नहीं मिलता था, तो बहुतसे लोग अय्याश-तबियत अमीरोंके यहाँ विष-कन्यायें भेजते थे । वे

कन्यायें लाजवाब सुन्दरी होती थीं; पर उनके साथ मैथुन करनेसे अमीरोंका ख़ातमा हो जाता था। आजकल यह चाल है कि नहीं, इसका पता नहीं। अब आगे हम हर तरहके पदार्थोंकी विष-परीक्षा और साथ ही उनके विषनाशक उपाय लिखते हैं।

विष-मिले भोजनकी परीक्षा।

(१) खानेके पदार्थोंमें से थोड़े-थोड़े पदार्थ कव्वे, बिल्ली और कुत्ते प्रभृतिके सामने डालो। अगर उनमें विष होगा, तो वे खाते ही मर जायँगे।

(२) विष-मिले पदार्थोंकी परीक्षा चकोर, जीवजीवक, कोकिला, क्रौंच, मोर, तोता, मैना, हंस और बन्दर प्रभृति पशु-पक्षियों द्वारा, बड़ी आसानीसे होती है; इसीलिये बड़े-बड़े अमीरों और राजा-महाराजाओंके यहाँ उपरोक्त पक्षी पाले जाते हैं। इनका पालना या रखना फिजूल नहीं है। अमीरोंको चाहियें, अपने खानेकी चीज़ोंमें से नित्य थोड़ी-थोड़ी इन्हें खिलाकर, तब खाना खावें।

विष-मिले पदार्थ खाने या देख लेने हीसे चकोरकी आँखें बदल जाती हैं। जीवजीवक पक्षी विष खाते ही मर जाते हैं। कोकिलाकी कण्ठध्वनि या गलेकी सुरीली आवाज़ बिगड़ जाती है। क्रौंच पक्षी मदोन्मत्त हो जाता है। मोर उदास-सा होकर नाचने लगता है। तोता-मैना पुकारने लगते हैं। हंस बड़े ज़ोरसे बोलने लगता है। भौंरे गूँजने लगते हैं। साम्हर आँसू डालने लगता है और बन्दर बारम्बार पाख़ाना फिरने लगता है।

(३) परोसे हुए भोजनमें से पहले थोड़ा-सा आगपर डालना चाहिये। अगर भोजनके पदार्थोंमें विष होगा, तो अग्नि चटचट करने लगेगी अथवा उसमें से मोरकी गर्दन-जैसी नीली और कठिन से सहने योग्य ज्योति निकलेगी, धूआँ बड़ा तेज़ होगा और जल्दी शान्त न होगा तथा आगकी ज्योति छिन्न-भिन्न होगी।

हमारे यहाँ भोजनकी थालीपर बैठकर पहले ही जो बैसन्दर जिमानेकी चाल रक्खी गई है, वह इसी ग़रज़से कि, हर आदमीको भोजनके निर्विष और विषयुक्त होनेका हाल मालूम हो जाय और वह अपनी जीवन-रक्षा कर सके। पर, अब इस ज़मानेमें यह चाल उठती जाती है। लोग इसे व्यर्थका ढोंग समझते हैं। ऐसी-ही-ऐसी बहुत-सी बेवक़ूफ़ियाँ हमारी समाजमें बढ़ रही हैं।

गन्ध या भाफसे विष-परीक्षा।

थाल और थालियोंमें अगर ज़हर-मिला भोजन परोसा जाता है, तो उससे जो भाफ उठती है, उसके शरीरमें लगनेसे हृदयमें पीड़ा होती है, सिरमें दर्द होता है और आँखें चक्कर खाने लगती हैं।

"चरक"में लिखा है, भोजनकी गन्धसे मस्तक-शूल, हृदयमें पीड़ा और बेहोशी होती है।

विष-मिले पदार्थोंके हाथोंसे छूनेसे हाथ सूज जाते या सो जाते हैं, उँगलियोंमें जलन और चोंटनी-सी तथा नखभेद होता है; यानी नाखून फटे-से हो जाते हैं। अगर ऐसा हो, तो भूलकर भी कौर मुँहमें न देना चाहिये।

चिकित्सा।

भाफके लगनेसे हुई पीड़ाकी शान्तिके लिये नीचे लिखे उपाय करो:—

(१) कूट, हींग, ख़स और शहदको मिलाकर, नाकमें नस्य दो और इसीको नेत्रोंमें आँजो।

(२) सिरस, हल्दी और चन्दनको—पानीमें पीसकर, सिरपर लेप करो।

(३) सफेद चन्दनको, पत्थरपर पानीके साथ पीसकर, हृदय पर लगाओ।

(४) प्रियंगूफूल, बीरबहुट्टी, गिलोय और कमलको पीसकर, हाथोंपर लेप करनेसे उँगलियोंकी जलन, चोंटनी और नाखूनोंके फटनेमें शान्ति होती है।

ग्रासमें विष-परीक्षा।

अगर ग़फ़लतसे ऊपर लिखे लक्षणों वाला विष-मिला भोजन कर लिया जाय या ग्रास मुँहमें दिया जाय, तो जीभ, अष्ठीला रोगकी तरह, कड़ी हो जाती है और उसे रसोंका ज्ञान नहीं होता। मतलब यह कि, जीभपर विष-मिले भोजनके पहुँचनेसे जीभको खानेकी चीज़ोंका ठीक-ठीक स्वाद मालूम नहीं होता और वह किसी क़दर कड़ी या सख़्त भी हो जाती है। जीभमें दर्द और जलन होने लगती है। मुँहसे लार बहने लगती है। अगर ऐसा हो, तो भोजनको फ़ौरन ही छोड़कर अलग हो जाना चाहिये और पीड़ाकी शान्तिके लिये, नीचे लिखे उपाय करने चाहियेंः—

चिकित्सा।

(१) कूट, हींग, ख़स और शहदको पीस और मिलाकर, गोला-सा बना लो और उसे मुँहमें रखकर कवलकी तरह फिराओ, खा मत जाओ।

(२) जीभको ज़रा खुरचकर उसपर धायके फूल, हरड़ और जामुनकी गुठलीकी गरीको महीन पीसकर और शहदमें मिलाकर रगड़ो। अथवा

(३) अङ्कोठकी जड़, सातलाकी छाल और सिरसके बीज शहदमें पीस या मिलाकर जीभपर रगड़ो।

दाँतुन प्रभृतिमें विष-परीक्षा।

अगर दाँतुनमें विष होता है, तो उसकी कूँची फटी हुई, छीदी या

बिखरी-सी होती है । उस दाँतुनके करनेसे जीभ, दाँत और होंठोंका माँस सूज जाता है । अगर जीभ साफ करनेकी जीभीमें विष होता है, तो भी ऊपर लिखे दाँतुनके-से लक्षण होते हैं ।

चिकित्सा ।

(१) पृष्ठ १४६ के ग्रास-परीक्षामें लिखे हुए नं० २ के और नं० ३ के उपाय करो ।

पीनेके पदार्थोंमें विष-परीक्षा ।

अगर दूध, शराब, जल, पीने और शर्बत प्रभृति पीनेके पदार्थोंमें विष मिला होता है, तो उनमें तरह-तरहकी रेखा या लकीरें हो जाती हैं और झाग या बुलबुले उठते हैं । इन पतली चीजोंमें अपनी या किसी चीज़की छाया नहीं दीखती । अगर दीखती है, तो दो छाया दीखती हैं । छायामें छेद-से होते हैं तथा छाया पतली-सी और बिगड़ी हुई-सी होती है । अगर ऐसा हो, तो समझना चाहिये कि, विष मिलाया गया है और ऐसी चीज़ोंको भूलकर भी जीभ तक न ले जाना चाहिये ।

साग-तरकारीमें विष-परीक्षा ।

अगर साग-भाजी, दाल, तरकारी, भात और मांसमें विष मिला होता है, तो उनका स्वाद बिगड़ जाता है । वे पककर तैयार होते ही, चन्द मिनटोंमें ही—बासीसे या बुसे हुए-से हो जाते और उनमें बदबू आती है । अच्छे-से-अच्छे पदार्थोंमें सुगन्ध, रस और रूप नहीं रहता । पके हुए फलोंमें अगर विष होता है, तो वे फूट जाते या नर्म हो जाते हैं और कच्चे फल पके-से हो जाते हैं ।

आमाशयगत विषके लक्षण।

अगर विष आमाशय या मेदेमें पहुँच जाता है, तो बेहोशी, कय, पतले दस्त, पेट फूलना या पेटपर अफारा आना, जलन होना, शरीर काँपना और इन्द्रियोंमें विकार—ये लक्षण होते हैं।

"चरक" में लिखा है, अगर विष मिले खानेके पदार्थ या पीनेके दूध, जल, शर्बत आदि आमाशयमें पहुँच जाते हैं, तो शरीरका रंग और-का-और हो जाता है, पसीने आते हैं तथा अवसाद और उत्क्लेश होता है, दृष्टि और हृदय बन्द हो जाते हैं तथा शरीरपर बूँदोंके समान फोड़े हो जाते हैं। अगर ऐसे लक्षण नज़र आवें और विष आमाशयमें हो, तो सबसे पहले "वमन" करा कर, विषको फौरन निकाल देना चाहिये। क्योंकि विषके आमाशयमें होनेपर "वमन" से बढ़ कर और दवा नहीं है।

चिकित्सा।

(१) मैनफल, कड़वी तूम्बी, कड़वी तोरई और बिम्बी या कन्दूरी—इनका काढ़ा बनाकर पिलाओ।

(२) एक मात्र कड़वी तूम्बीके पत्ते या जड़ पानीमें पीस कर पिलाओ। इससे वमन होकर विष निकल जाता है। यह नुसख़ा हर तरहके विषोंपर दिया जा सकता है। परीक्षित है।

(३) कड़वी तोरईं लाकर, पानीमें काढ़ा बनाओ। फिर उसे छानकर, उसमें घी मिला दो और विष खानेवालेको पिला दो। इस उपायसे वमन होकर ज़हर उतर जायगा।

नोट—कड़वी तोरई भी हर तरहके विषपर लाभदायक होती है। अगर पागल कुत्ता काट खावे, तो कड़वी तोरईका गूदा मय रेशेके निकालकर, पावभर पानी मे आध घण्टे तक भिगो रखो। फिर उसे मसल-छानकर, रोगीकी शक्ति अनु-

सार पाँच दिन सवेरे ही पिलाओ । इसके पिलाने से कय और दस्त होकर सारा ज़हर निकल जाता है और रोगी चंगा हो जाता है । पर आनेवाली बरसात तक पथ्य पालन करना परमावश्यक है । परीक्षित है ।

अगर गलेमें सूजन हो और गला रुका हो, तो कड़वी तोरईको चिलममें रख कर, तमाखूकी तरह, पीनेसे लार टपकती है और गला खुल जाता है ।

(४) कड़वे परवल घिसकर पिलानेसे, कय होकर, विष निकल जाता है ।

(५) छोटी पीपर २ माशे, मैनफल ६ माशे और सेंधानोन ६ माशे—इन तीनोंको सेर-भर पानीमें जोश दो; जब तीन पाव पानी रह जाय, मल-छानकर गरम-गरम पिला दो और रोगीको घुटने मोड़ कर बिठा दो, कय हो जायँगी । अगर कय होनेमें देर हो या कय खुलकर न होती हों, तो पखेरुका पंख जीभ या तालूपर फेरो अथवा अरण्डके पत्तेकी डंडी गलेमें घुसाओ अथवा गलेमें अँगुली डालो । इन उपायोंसे कय जल्दी और खूब होती हैं । परीक्षित है ।

(६) दही, पानी मिले दही और चाँवलोंके पानीसे भी वमन करा कर ज़हर निकालते हैं ।

(७) ज़हरमोहरा गुलाब-जलमें घिस-घिस कर, हर कयपर, एक-एक गेहूँ-भर देनेसे कय होकर विष निकल जाता है । परीक्षित है ।

पक्वाशयगत विषके लक्षण ।

जब ज़हर खाये या ज़हरके भोजन-पान खाये देर हो जाती है, विषके आमाशयमें रहते-रहते वमन या कय नहीं कराई जाती, तब विष पक्वाशयमें चला जाता है । जब विष पक्वाशयमें पहुँच जाता है, तब जलन, वेहोशी, पतले दस्त, इन्द्रियोंमें विकार, रंगका पीला पड़ जाना और शरीरका दुबला हो जाना—ये लक्षण होते हैं । कितनों ही के शरीरका रंग काला होते भी देखा जाता है ।

"चरक"में लिखा है, विषके पक्वाशयमें होनेसे मूर्च्छा, दाह, मतवालापन और बल नाश होता है और विषके उदरस्थ होनेसे तन्द्रा, कृशता और पीलिया—ये विकार होते हैं।

नोट—विष मिली खानेकी चीज़ खानेसे पहले कोठेमें दाह या जलन होती है। अगर विष-मिली छूनेकी चीज छुई जाती है, तो पहले चमड़ेमें जलन होती है।

चिकित्सा।

(१) कालादाना पीसकर और घीमें मिलाकर पिलानेसे दस्त होते और ज़हर निकल जाता है।

(२) दही या शहदके साथ दूपी-विषारि—चौलाई आदि देनेसे भी दस्त हो जाते हैं।

(३) कालादाना ३ तोले, सनाय ३ तोले, सोंठ ६ माशे और कालानोन डेढ़ तोले—इन सबको पीस-छानकर, फँकाने और ऊपरसे गरम जल पिलानेसे दस्त हो जाते हैं। विप खानेवालेको पहले थोड़ा घी पिलाकर, तब यह दवा फँकानी चाहिये। मात्रा ६ से ६ माशे तक। परीक्षित है।

(४) नौ माशे काले दानेको घीमें भून लो और पीस लो। फिर उसमें ६ रत्ती सोंठ भी पीसकर मिला दो। यह एक मात्रा है। इसको फाँककर, ऊपरसे गरम जल पीनेसे ५।७ दस्त अवश्य हो जाते हैं। अगर दस्त कम कराने हो, तो सोंठ मत मिलाओ। कमज़ोर और नरम कोठेवालोंको कालादाना ६ माशेसे अधिक न देना चाहिये।

(५) छोटी पीपर १ माशे, सोंठ २ माशे, सेंधानोन ३ माशे, बिधाराकी जड़की छाल ६ माशे और निशोथ ६ माशे—इन सबको पीस-छानकर और १ तोले शहदमें मिलाकर चटाने और ऊपरसे, थोड़ा गरम जल पिलाने से दस्त हो जाते हैं। यह जवानकी १ मात्रा है। बलाबल देखकर, इसे घटा और बढ़ा सकते हो। परीक्षित है।

नोट—वमन विरेचन करानेवाले वैद्यको "चिकित्साचन्द्रोदय" पहले भाग के अन्तमें लिखे हुए चन्द पृष्ठ और दूसरे भागके १३१–१४२ तकके सफे ध्यानसे पढ़ने चाहियें। क्योंकि वमन-विरेचन कराना लड़कोंका खेल नहीं है।

मालिश करानेके तेलमें विष-परीक्षा।

अगर शरीरमें मलने या मालिश करानेके तेलमें विष मिला होता है, तो वह तेल गाढ़ा, गदला और बुरे रंगका हो जाता है। अगर वैसे तेलकी मालिश कराई जाती है, तो शरीरमें फोड़े या फफोले हो जाते हैं, चमड़ा पक जाता है, दर्द होता है, पसीने आते हैं, ज्वर चढ़ आता है और मांस फट जाता है। अगर ऐसा हो, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहियें:—

चिकित्सा।

(१) शीतल जलसे शरीर धोकर या नहाकर, चन्दन, तगर, कूट, ख़स, वंशपत्री, सोमवल्ली, गिलोय, श्वेता, कमल, पीला चन्दन और तज—इन दवाओंको पानीमें पीसकर, शरीरपर लेप करना चाहिये। साथ ही इनको पीसकर, कैथके रस और गोमूत्रके साथ पीना भी चाहिये।

नोट—सोमवल्लीको सोमलता भी कहते हैं। सोमलता थूहरकी कई जातियाँ होती हैं। उनमें से सोमलता भी एक तरहकी बेल है। इस लताका चन्द्रमा से बड़ा प्रेम है। शुक्लपक्षकी पड़वासे हर रोज़ एक-एक पत्ता निकलता है और पूर्णमासीके दिन पूरे १५ पत्ते हो जाते हैं। फिर कृष्ण पक्षकी पड़वासे हर दिन एक-एक पत्ता गिरने लगता है। अमावसके दिन एक भी पत्ता नहीं रहता। इसकी मात्रा २ माशेकी है। सुश्रुतमें इसके सम्बन्धमे बड़ी अद्भुत-अद्भुत बातें लिखी हैं। इस विषयपर फिर कभी लिखेंगे। सुश्रुतमें लिखा है, सिन्ध नदीमें यह तूम्बीकी तरह बहती पाई जाती है। हिमालय, विन्ध्याचल, सह्याद्रि प्रभृति पहाड़ोंपर इसका पैदा होना लिखा है। इसके सेवन करनेसे क़ाया पलट होती है। मनुष्य-शरीर देवताओंके जैसा रूपवान और बलवान हो जाता

है। हज़ारों वर्षकी उम्र हो जाती है। अष्ट सिद्धि और नव निद्धि इसके सेवन करनेवालेके सामने हाथ बाँधे खडी रहती हैं। पर खेद है कि यह आजकल दुष्प्राप्य है।

सूचना—अगर उबटन, छिड़कनेके पदार्थ, काढ़े, लेप, बिछौने, पलँग, कपड़े और जिरह-बख्तर या कवचमें विष हो, तो ऊपर लिखे विष-मिले मालिशके तेल के जैसे लक्षण होंगे और चिकित्सा भी उसी तरह की जायगी।

अनुलेपनमें विषके लक्षण।

केशर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी आदि पदार्थोंको पीसकर, अमीर लोग बदनमें लगवाया करते हैं; इसीको अनुलेप कहते हैं। अगर विष-मिला अनुलेप शरीरमें लगाया जाता है, तो लगायी हुई जगहके बाल या रोएँ गिर जाते हैं, सिरमें दर्द होता है, रोमोंके छेदों से खून निकलने लगता है और चेहरेपर गाँठें हो जाती हैं।

चिकित्सा।

(१) काली मिट्टीको—नीलगाय या रोझके पित्ते, घी, प्रियंगू, श्यामा निशोथ और चौलाईमें कई बार भावना देकर पीसो और लेप करो। अथवा

(२) गोबरके रसका लेप करो। अथवा मालतीके रसका लेप करो। अथवा मूषिकपर्णी या मूसाकानीके रसका लेप करो अथवा घरके धूएँका लेप करो।

नोट—मूषकपर्णीको मूसाकानी भी कहते हैं। इसके क्षुप जमीनपर फैले रहते हैं। दवाके काममे इसका सर्वाङ्ग लेते हैं। इससे विषैले-चूहेका विष नष्ट होता है। मात्रा १ माशेकी है। रसोईके स्थानोमे जो धूआँ सा जम जाता है, उसे ही घरका धूआँसा कहते हैं। विष-चिकित्सामे यह बहुत काम आता है।

सूचना—अगर सिरमें लगानेके तेल, इत्र, फुलेल, टोपी, पगडी, स्नानके जल और मालामे विष होता है तो अनुलेपन-विषके से लक्षण होते हैं और इसी ऊपर लिखी चिकित्सासे लाभ होता है।

मुखलेपगत विषके लक्षण ।

अगर मुँहपर मलनेके पदार्थोंमें विष होता है, तो उनके मुँह पर लगानेसे मुँह स्याह हो जाता है और मुहासे-जैसे छोटे-छोटे दाने पैदा हो जाते हैं, चमड़ी पक जाती है, माँस कट जाता है, पसीने आते हैं, ज्वर होता और फफोले-से हो जाते हैं ।

चिकित्सा ।

(१) घी और शहद—नाबराबर—पिलाओ ।

(२) चन्दन और घीका लेप करो ।

(३) अर्कपुष्पी या अन्धाहूली, मुलेठी, भारंगी, दुपहरिया और सोंठी—इन सबको पीसकर लेप करो ।

नोट—अर्क-पुष्पी संस्कृत नाम है । हिन्दीमें, अन्धाहूली, अर्कहूली, अर्क-पुष्पी, क्षीरवृक्ष और दुधियार कहते हैं । इसमें दूध निकलता है । फूल सूरजमुखी के समान गोल होता है । पत्ते गिलोयके समान छोटे होते हैं । इसकी बेल नागर बेलके समान होती है । बँगलामें इसे "बड़चीरुई" और मरहटीमें 'पहार-डुइम्बी' कहते हैं । दुपहरियाको संस्कृतमें बन्धूक या बन्धुजीव और बँगलामें "बान्धुलि फूलेर गाछ" कहते हैं । यह दुपहरीके समय खिलता है, इसीसे इसे दुपहरिया कहते हैं । माली लोग इसे बागोंमें लगाते हैं ।

सवारियोंपर विषके लक्षण ।

अगर हाथी, घोड़े, ऊँट आदिकी पीठोंपर विष लगा हुआ होता है, तो हाथी-घोड़े आदिकी तबियत ख़राब हो जाती है, उनके मुँह से लार गिरती है और उनकी आँखें लाल हो जाती हैं । जो कोई ऐसी विष-लगी सवारियोंपर चढ़ता है, उसकी साथलों—जाँघों, लिङ्ग, गुदा और फोतोंमें फोड़े या फफोले हो जाते हैं ।

चिकित्सा।

(१) वही इलाज करो जो पृष्ठ १५४ में, विष-मिले मालिश कराने के तेलमें लिखा गया है। जानवरोंका भी वही इलाज करना चाहिये।

नोट—"चरक"मे लिखा है, राजाके फिरनेकी जगह, खड़ाऊँ, जूते, घोड़ा, हाथी, पलङ्ग, सिंहासन या मेज़ कुरसी आदिमें विष लगा होता है, तो उनके काममे लानेसे सुइयाँ चुभानेकी-सी पीड़ा, दाह, क्लम और अविपाक होता है।

नस्य, हुक्का, तम्बाकू और फूलोंमें विष।
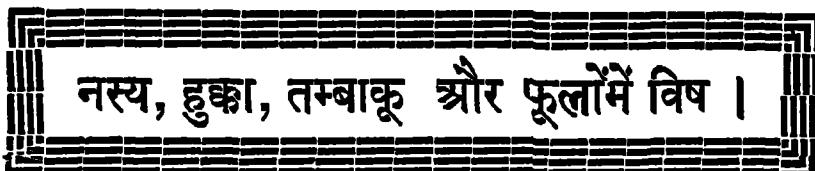
अगर नस्य या तम्बाकू प्रभृतिमें विष होता है, तो उनको काम में लानेसे मुँह, नाक, कान आदि छेदोंसे खून गिरता है, सिरमें पीड़ा होती है, कफ गिरता है और आँख, कान आदि इन्द्रियाँ ख़राब हो जाती हैं।

चिकित्सा।

(१) पानीके साथ अतीसको पीसकर लुगदी बना लो। लुगदी से चौगुना घी लो और घीसे चौगुना गायका दूध लो। सबको मिला कर, आगपर पकाओ और घी मात्र रहनेपर उतार लो। इस घीके पिलानेसे ऊपर लिखे रोग नाश हो जाते हैं।

(२) घीमें बच और मल्लिका—मोतिया मिलाकर नस्य दो।

अगर फूलों या फूलमालाओंमें विष होता है, तो उनकी सुगन्ध मारी जाती है, रंग बिगड़ जाता है और वे कुम्हलाये-से हो जाते हैं। उनके सूँघनेसे सिरमें दर्द होता और नेत्रोंसे आँसू गिरते हैं।

चिकित्सा।

(१) मुखलेप-गत विषमें—पृष्ठ १५६ में—जो चिकित्सा लिखी है, वही करो अथवा पृष्ठ १४८ में गन्ध या भाफके विषका जो इलाज लिखा है, वह करो।

कानके तेलमें विषके लक्षण।

अगर कानोंमें डालनेके तेलमें विष होता है और वह कानोंमें डाला जाता है, तो कान बेकाम हो जाते हैं, सूजन चढ़ आती और कान बहने लगते हैं। अगर ऐसा हो, तो शीघ्र ही कर्णपूरण और नीचेका इलाज करना चाहियेः—

चिकित्सा।

(१) शतावरका स्वरस, घी और शहद मिलाकर, कानों में डालो।

(२) कत्थेके शीतल काढ़ेसे कानोंको धोओ।

अञ्जनमें विषके लक्षण।

अगर सुरमे या अञ्जनमें विष होता है, तो उनके लगाते ही नेत्रों से आँसू आते हैं जलन और पीड़ा होती है, नेत्र घूमते हैं और बहुधा जाते भी रहते हैं: यानी आदमी अन्धा हो जाता है।

चिकित्सा।

(१) ताज़ा घी पीपल मिलाकर पीओ।

(२) मेढ़ासिंगी और वरणेके वृक्षके गोंदको मिलाकर और पीसकर आँजो।

(३) कैथ और मेढ़ासिंगीके फूल मिलाकर आँजो।

(४) भिलावेके फूल आँजो।

(५) दुपहरियाके फूल आँजो।

(६) अंकोटके फूल आँजो।

(७) मोखा और महासर्जके निर्यास, समन्दरफेन और गोरो-चन—इन सबको पीसकर नेत्रोंमें आँजो।

खड़ाऊँ, जूते, आसन और गहनोंमें विष।

अगर विष-लगी खड़ाऊँ पहनी जाती हैं, तो पाँवमे सूजन आ जाती है, पाँव सो जाते हैं—स्पर्शज्ञान नहीं होता, फफोले या फोड़े हो जाते हैं और पीप निकलता है। जूते और आसन अथवा गहोंमें विष होनेसे भी यही लक्षण होते हैं। गहनोंमें विष होनेसे उनकी चमक मारी जाती है। वे जहाँ-जहाँ पहने जाते हैं, वहाँ-वहाँ जलन होती और चमड़ी पक और फट जाती है।

चिकित्सा।

(१) पीछे मालिश करनेके तेलमें जो इलाज लिखा है, वही करना चाहिये अथवा बुद्धिसे विचार करके, पीछे लिखी लगानेकी दवाओं में से कोई दवा लगानी चाहिये।

विष दूषित-जल।

अगर एक राजा दूसरे राजापर चढ़ कर जाता था, तो दूसरा राजा या राजाके शत्रु राहके जलाशयों—कूएँ, तालाब और बावड़ियों में विष घुलवा कर विष-दूषित करा दिया करते थे। "थे" शब्द हमने इसलिये लिखा है, कि आजकल भारतमें अँगरेज़ी राज्य होनेसे किसी राजाको दूसरे राजापर चढ़ाई करनेका काम ही नहीं पड़ता। स्वतंत्र देशोंके राजे चढ़ाइयाँ किया करते है। सुश्रुतमें लिखा है, शत्रु-राजा लोग घास, पानी, राह, अन्न, धूआँ और वायुको विषमय कर देते थे। हमने ये बातें सन् १६१४ के विश्वव्यापी महासमरमें सुनी थीं। सुनते हैं, जर्मनीने विषैली गैस छोड़ी थी। जर्मनीकी विषैली गैसकी बात सुनकर भारतवासी आश्चर्य करते थे और उसके कितने ही महीनों तक पृथ्वीके प्रायः समस्त नरपालोंकी नाकमें दम कर देने

और उन्हे अपनी उँगलियोंपर नचानेके कारण उसे राक्षस कहते थे। यद्यपि ये सब बातें भारतीयोंके लिये नयी नहीं हैं। उनके देशमें ही ये सब काम होते थे; पर अब कालके फेरसे वे सब विद्याओंको भूल गये और अपनी विद्याओंका दूसरों द्वारा उपयोग होनेसे चकित और विस्मित होते हैं! धन्य! काल तेरी महिमा!

अच्छा, अब फिर मतलबकी बातपर आते हैं। अगर जल विषसे दूषित होता है, तो वह कुछ गाढ़ा हो जाता है, उसमें तेज़ बू होती है, झाग आते और लकीरें-सी दीखती हैं। जलाशयोंमे रहनेवाले मैंडक और मछली उनमें मरे हुए देखे जाते हैं और उनके किनारेके पशु-पक्षी पागलसे होकर इधर-उधर घूमते हैं। ये विष-दूषित जलके लक्षण हैं। अगर ऐसे जलको मनुष्य और घोड़े, हाथी, ख़च्चर, गधे तथा बैल वग़ैरः जो पीते हैं या ऐसे जलमें नहाते हैं, उनको वमन, मूर्च्छा, ज्वर, दाह और शोथ—सूजन—ये उपद्रव होते हैं। वैद्यको विष-दूषित जलसे पीड़ित हुए प्राणियोंको निर्विष और पानीको भी शुद्ध और निर्दोष करना चाहिये।

जल-शुद्धि-विधि।

(१) धव, अश्वकर्ण—शालवृक्ष, विजयसार, फरहद, पाटला, सिन्दुवार, मोखा, किरमाला और सफेद खैर—इन ६ चीज़ोंको जलाकर, राख कर लेनी चाहिये। इनकी शीतल भस्म नदी, तालाब, कूएँ, बावड़ी आदिमें डाल देनेसे जल निर्विष हो जाता है। अगर थोड़ेसे पानीकी दरकार हो, तो एक पस्से-भर यही राख एक घड़े-भर पानीमें घोल देनी चाहिये। जब राख नीचे बैठ जाय और पानी साफ हो जाय, तब उसे शुद्ध समझ कर पीना चाहिये।

नोट—(१) धाय या धवके वृक्ष बनोंमें बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इनकी लकड़ीसे हल-मूसल बनते हैं। (२) शालके पेड़ भी बनमें बहुत बड़े-बड़े होते हैं। (३) विजयसारके वृक्ष भी बनमें बहुत बड़े-बड़े होते हैं। (४) फरहद या पारिभद्रके वृक्ष भी बनमें होते हैं। (५) पाटला या पाढरके वृक्ष भी बनमें बड़े-बड़े

होते हैं। (६) सिन्दुवारके वृक्ष-वनमें बहुत होते हैं। (७) मोखाके वृक्ष भी वनमें होते हैं। (८) किरमाला यानी अमलताशके पेड़ भी वनमें बड़े-बड़े होते है। (९) सफेद खैरके वृक्ष भी वनमें बड़े-बड़े होते हैं। मतलब यह कि, ये नौऊ वृक्ष वनमे होते हैं और बहुतायतसे होते हैं। इनके उपयोगी अंग छाल आदि लेकर राख कर लेनी चाहिये।

विष-दूषित पृथ्वी।

विष दूषित ज़मीनसे मनुष्य या हाथी घोड़े आदिका जो अङ्ग छू जाता है, वही सूज जाता या जलने लगता है अथवा वहाँके बाल झड़ जाते या नाखून फट जाते हैं।

पृथ्वीकी शुद्धिका उपाय।

(१) जवासा और सर्वगन्धकी सब दवाओंको शराबमें पीस और घोलकर, सड़कों या राहोंपर छिड़काव कर देनेसे पृथ्वी निर्विष हो जाती है।

नोट—तज, तेजपात, बड़ी इलायची, नागकेशर, कपूर, शीतलचीनी, अगर, केशर और लौंग—इन सबको मिलाकर "सर्वगन्ध" कहते हैं। याद रखो, औषधि की गन्ध या विषसे हुए ज्वरमें, पित्त और विषके नाश करनेको, इसी सर्वगन्ध का काढ़ा पिलाते हैं।

विष-मिली धूआँ और हवा।

विषैली धूआँ और विषैली हवासे आकाशके पक्षी व्याकुल होकर ज़मीनपर गिर पड़ते हैं और मनुष्योंको खाँसी, ज़ुकाम, सिर-दर्द, और दारुण नेत्र-रोग होते हैं।

शुद्धिका उपाय।

(१) लाख, हल्दी, अतीस, हरड़, नागरमोथा, हरेणु, इलायची,

तेजपात, दालचीनी, कूट और प्रियंगू—इनको आगमें जलाकर, धूआँ करनेसे धूएँ और हवाकी शुद्धि होती है ।

(२) चाँदीका बुरादा, पारा और वीरबहुट्टी,—इन तीनोंको समान-समान लो। फिर इन तीनोंके बराबर मोथा या हिंगलू मिलाओ। इन सबको कपिलाके पित्तमें पीसकर बाजोंपर लेप कर दो। इस लेपको लगाकर नगाड़े और ढोल आदि बजानेसे घोर विषके परिमाणु नष्ट हो जाते है ।

विष-नाशक संक्षिप्त उपाय ।

(१) "महासुगन्धि" नामकी अगद्के पिलाने, लेप करने, नस्य देने और आँजनेसे सब तरहके विष नष्ट हो जाते है । "सुश्रुत"में लिखा है, महासुगन्धि अगद्से वह मनुष्य भी आराम हो जाते हैं, जिनके कन्धे विषसे टूट गये हैं, नेत्र फट गये है और जो मृत्यु-मुखमें गिर गये है। इसके सेवनसे नागोंके राजा वासुकिका डसा हुआ भी आराम हो जाता है। मतलब यह है, इस अगद्से स्थावर विष और सर्प-विष निश्चय ही शान्त होते है। इसके बनानेकी विधि इसी भाग के पृष्ठ ३०-३१ में लिखी है।

(२) अगर विप आमाशयमें हो, तो खूब क़य कराकर विषको निकाल दो। अगर विष पक्वाशयमें हो, तो तेज़ जुलाबकी दवा देकर विपको निकाल दो । अगर विप खूनमें हो तो फस्द खोलकर, सींगी लगाकर या जैसे जँचे खूनको निकाल दो। चक्रदत्तजी कहते हैं:—अगर विप खालमें हो, तो लेप और सेक आदि शीतल कर्म करो।

नोट—(१) अगर विष आमाशयमें हो, तो चार तोले तगरको शहद और मिश्रीमें मिलाकर चाटो। (२) अगर विष पक्वाशयमे हो, तो पीपर, हल्दी, मंजीठ और दारुहल्दी—बराबर-बराबर लेकर और गायके पित्तमें पीसकर मनुष्यको पीने चाहियें।

(३) मूषिका या अजरुहा—असली निर्विषीको हाथमें बाँध देनेसे खाये-पिये विष-मिले पदार्थ निर्विष हो जाते हैं।

(४) मित्रोंमें बैठकर दिल खुश करते रहना चाहिये। "अजेय घृत" और "अमृत घृत" नित्य पीना चाहिये। घी, दूध, दही, शहद और शीतल जल—इनको पीना चाहिये। शहद और घी मिला सेमका यूष भी हितकारी है।

नोट—पैत्तिक या पित्त प्रकृति वाले विषपर शीतल जल पीना हित है, पर वातिक या बादीके स्वभाव वाले विषपर शीतल जल पीना ठीक नहीं है। जैसे, संखिया खाने वालेको शीतल जल हानिकारक और गरम हितकारी है। हर एक काम विचार कर करना चाहिये।

(५) जिसने चुपचाप विष खा लिया हो, उसे पीपर, मुलेठी, शहद, खाँड़ और ईखका रस—इनको मिलाकर पीना और वमन कर देना चाहिये।

गर-विष-चिकित्सा।

बूढ़ा स्त्रियाँ अपने पतियोंको वशमें करनेके लिये, पसीना, मासिक धर्मका खून—रज और अपने या पराये शरीरके मैलोंको अपने पतियोंको भोजन इत्यादिमें मिलाकर खिला देती हैं। इसी तरह शत्रु भी ऐसे ही पदार्थ भोजनमें मिलाकर खिला देते हैं। इन पसीना आदि मैले पदार्थोंको "गर" कहते हैं।

पसीने और रज प्रभृति गर खानेसे शरीरमें पाण्डुता होती, बदन कमज़ोर हो जाता, ज्वर आता, मर्मस्थलोंमें पीड़ा होती तथा धातुक्षय और सूजन होती है।

सुश्रुतमें लिखा है:—

योगैर्नानाविधैरेषां चूर्णानि गरमादिशेत्।
दूषी विष प्रकाराणां तथैवाप्यनुलेपनात्॥

विषैले जन्तुओंको पीसकर स्थावर विष आदि नाना प्रकारके

योगोंमें मिलाते हैं। इस तरह जो विष तैयार होता है, उसे ही "गर-विष" कहते हैं। दूषी-विषके प्रकारका अथवा लेपनका विष-पदार्थ भी गरसंज्ञक हो जाता है।

कोई लिखते हैं, बहुतसे तेज़ विषोंके मिलानेसे जो विष बनता है, उसे गर विष (कृत्रिम विष) कहते हैं। ऐसा विष मनुष्यको शीघ्र ही नहीं, वरन् कालान्तरमें मारता है। इससे शरीरमें ग्लानि, आलस्य, अरुचि, श्वास, मन्दाग्नि, कमज़ोरी और बदहज़मी—ये विकार होते हैं।

गर-विष नाशक नुसखे।

(१) अडूसा, नीम और परवल—इन तीनोंके पत्तोंके काढ़ेमें, हरड़को पानीमें पीसकर मिला दो और इनके साथ घी पका लो। इसको "वृषादि घृत" कहते हैं। इस घीके खानेसे गर-विष निश्चय ही शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—हरड़को पानीके साथ सिलपर पीसकर कल्क या लुगदी बना लो। वज़नमें जितनी लुगदी हो, उससे चौगुना घी लो और घीसे चौगुना अडूसादिका काढ़ा तैयार कर लो। फिर सबको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब काढ़ा जल जाय और घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और साफ़ बर्तनमें रख दो।

(२) अंकोलकी जड़का काढ़ा बनाकर, उसमें राब और घी डालकर, तेलसे स्वेदित किये गर विष वालेको पिलानेसे गर नष्ट हो जाते हैं।

(३) मिश्री, शहद, सोनामक्खीकी भस्म और सोना भस्म—इन सबको मिलाकर चटानेसे, अत्यन्त उग्र अनेक प्रकारके विष मिलाने से बना हुआ गर-विष नष्ट हो जाता है।

(४) वच, कालीमिर्च, मैनशिल, देवदारु, करंज, हल्दी, दारु-हल्दी, सिरस और पीपर—इनको एकत्र पीसकर नेत्रोंमें आँजनेसे गरविष शान्त हो जाता है।

(५) सिरसकी जड़की छाल, सिरसके फूल और सिरसके ही बीज—इनको गोमूत्रमें पीसकर व्यवहार करनेसे विष-बाधा दूर हो जाती है।

दूसरा खण्ड ।

जंगम विष-चिकित्सा ।

चलने-फिरने वाले साँप, बिच्छू, कनखजूरे, मैंडक, मकड़ी, छिपकली प्रभृतिके विषको "जंगम विष" कहते हैं।

पहला अध्याय ।

सर्प-विष चिकित्सा ।

सापोंके दो भेद ।

ऐसे तो साँपोंके बहुतसे भेद हैं, पर मुख्यतया साँप दो तरह के होते हैं:—(१) दिव्य, (२) पार्थिव ।

दिव्य सर्पोंके लक्षण ।

वासुकि और तक्षक आदि दिव्य सर्प कहलाते हैं। ये असंख्य प्रकारके होते हैं। ये बड़े तेजस्वी, पृथ्वीको धारण करने वाले और नागोंके राजा है। ये निरन्तर गरजने, विष बरसाने और जगत्को सन्तापित करने वाले हैं। इन्होंने यह पृथ्वी, मय समुद्र और द्वीपोंके, धारण कर रखी है। ये अपनी दृष्टि और साँससे ही जगत्को भस्म कर सकते हैं।

पार्थिव सर्पोंके लक्षण।

पृथ्वीपर रहने वाले साँपोंको पार्थिव साँप कहते हैं। मनुष्यों को यही काटते हैं। इनकी दाढ़ोंमें विष रहता है। ये पाँच प्रकार के होते हैं:—

(१) भोगी, (२) मण्डली, (३) राजिल, (४) निर्विष, और (५) दोगले।

ये पाँचों ८० तरहके होते हैं:—

(१) दर्वीकर या भोगी	२६
(२) मण्डली	२२
(३) राजिल	१०
(४) निर्विष	१२
(५) वैकरंज और इनसे पैदा हुए	१०
कुल	८०

साँपोंकी पैदायश।

साँपोंकी पैदायशके सम्बन्धमें पुराणों और वैद्यक-ग्रन्थोंमें बहुत-कुछ लिखा है। उसमेंसे अनेक बातोंपर आजकलके विद्याभिमानी बाबू लोग विश्वास नहीं करेंगे अतः हम समयानुकूल बातें ही लिखते हैं।

वर्षाऋतुके आषाढ़ मासमें साँपोंको मद आता है। इसी महीनेमें वे कामोन्मत्त होकर, निहायत ही पोशीदा जगहमें, मैथुन करते हैं। यदि इनको कोई देख लेता है, तो ये बहुत ही नाराज़ होते हैं और उसे काटे बिना नहीं छोड़ते। कितने ही तेज़ घुड़-सवारोंको भी इन्होंने बिना काटे नहीं छोड़ा।

हाँ, असल मतलबकी बात यह है कि, आषाढ़में सर्प मैथुन करते हैं, तब सर्पिणी गर्भवती हो जाती है। वर्षाभर वह गर्भवती रहती है और कातिकके महीनेमें, दो सौ चालीस या कम-ज़ियादा अण्डे देती है। उनमेंसे कितने ही पकते हुए अण्डोंको वह स्वयं खा जाती है।

मशहूर है कि, भूखी नागिन अपने अण्डे खा जाती है। भूखा कौन-सा पाप नहीं करता? शेषमें, उसे अपने अण्डोंपर दया आ जाती है, इसलिए कुछको छोड़ देती और उन्हें छै महीने तक सेया करती है।

साँपोंके दाढ़-दाँत।

अण्डोंसे निकलनेके सातवें दिन, बच्चोंका रङ्ग अपने माँ-बापके रङ्गसे मिल जाता है। सात दिनके बाद ही दाँत निकलते हैं और इक्कीस दिनके अन्दर तालूमें विष पैदा हो जाता है। पच्चीस दिनका बच्चा जहरीला हो जाता है और छै महीनेके बाद वह काँचली छोड़ने लगता है। जिस समय साँप काटता है, उसका ज़हर निकल जाता हैं; किन्तु फिर आकर जमा हो जाता है। साँपके दाँतोंके ऊपर विष की थैली होती है। जब साँप काटता है, विष थैलीमेंसे निकलकर काटे हुए घावमें आ पड़ता है।

कहते है, साँपोंके एक मुँह, दो जीभ, बत्तीस दाँत और ज़हर से भरी हुई चार दाढ़ें होती हैं। इन दाढ़ोंमें हर समय ज़हर नहीं रहता। जब साँप क्रोध करता है, तब जहर नसोंकी राहसे दाढ़ोंमें आ जाता है। उन दाढ़ोंके नाम मकरी, कराली, काल रात्रि और यमदूती हैं। पिछली दाढ़ यमदूती छोटी और गहरी होती है। जिसे साँप इस दाढ़से काटता है, वह फिर किसी भी दवा-दारू और यंत्र-मंत्रसे नहीं बचता।

कई ग्रन्थोंमें लिखा है, साँपके चार दाँत और दो दाढ़ होती है। विषवाली दाढ़ ऊपरके पेढ़ेमें रहती है। वह दाढ़ सूईके समान पतली और बीचमेंसे विकसित होती है। उस दाढ़के बीचमें छेद होते हैं और उसी दाढ़के साथ जहरकी थैलीका सम्बन्ध होता है। यों तो वह दाढ़ मुँहमें आड़ी रहती है, पर काटते समय खड़ी हो जाती है। अगर साँप शरीरके मुँह लगावे और उसी समय फेंक दिया जाय, तो मामूली घाव होता है। अगर सामान्य घाव हो और विष

भीतर न घुसा हो, तो भयंकर परिणाम नहीं होता। अच्छी तरह दाढ़ बैठनेसे मृत्यु होती है। बिच्छूके एक डंक होता है, पर साँपके दो डंक होते हैं। बिच्छूके डंकसे तेज़ दर्द होता है, पर साँपके डङ्क से उतना तेज़ दर्द नहीं होता, लेकिन जगह काली पड़ जाती है।

"चरक"में लिखा है, साँपके चार दाँत बड़े होते हैं। दाहिनी ओर के, नीचेके दाँत लाल रङ्गके और ऊपरके श्याम रंगके होते हैं। गाय की भीगी हुई पूँछके अगले भागमें जितनी बड़ी जलकी बूँद होती है, सर्पके बाईं तरफके नीचेके दाँतोंमें भी उतना ही विष रहता है। बाईं तरफके ऊपरके दाँतोंमें उससे दूना, दाहिनी तरफके नीचेके दाँतोंमें उससे तिगुना और दाहिनी तरफके ऊपरके दाँतोंमें उससे चौगुना विष रहता है। सर्प जिस दाँतसे काटता है, उसके डसे हुए स्थानका रङ्ग उसी दाँतके रंगके जैसा होता है। चार तरहके दाँतों में—पहलेकी अपेक्षा दूसरेका, दूसरेकी अपेक्षा तीसरेका और तीसरेकी अपेक्षा चौथेका दंशन अधिक भयानक होता है।

साँपोंकी उम्र और उनके पैर।

पुराणोंमें सर्पकी आयु हज़ार वर्ष तककी लिखी है, पर अनेक ग्रन्थोंमें सौ या सवा सौ वर्षकी ही लिखी है। कोई कहते हैं, साँपके पैर नहीं होते, वह पेटके बल इतना तेज़ दौड़ता है, कि तेज-से-तेज़ घुड़सवार उससे बचकर नहीं जा सकता। कोई कहते हैं, साँपके बालके समान सूक्ष्म २२० पैर होते हैं, पर वह दिखते नहीं। जब साँप चलने लगता है, पैर बाहर निकल आते हैं।

साँपिन तीन तरहके बच्चे जनती है।

साँपिनके अण्डोंसे तीन तरहके बच्चे निकलते हैं:—

(१) पुरुष, (२) स्त्री, और (३) नपुंसक। जिसका सिर भारी होता है, जीभ मोटी होती है; आँखें बड़ी-बड़ी होती हैं, वह सर्प होता

है । जिसके ये सब छोटे होते हैं, वह साँपिन होती है । जिसमें साँप और साँपिन दोनोंके चिह्न पाये जाते हैं और जिसमें क्रोध नहीं होता, वह नपुंसक या हीजड़ा होता है । नपुंसकोंके विषमें उतनी तेजी नहीं होती; यानी उनका विष नर-मादीन साँपोंकी अपेक्षा मन्दा होता है ।

साँपोंकी क़िस्में ।

"सुश्रुत" में साँपोंकी बहुत-सी क़िस्में लिखी हैं । यद्यपि सभी क़िस्मोंका जानना ज़रूरी है, पर उतनी क़िस्मोंके साँपोंकी पहचान और नाम वगैरः सर्पोंसे दिलचस्पी रखनेवालों उनको पकड़ने-पालने वालों और तन्त्र-मन्त्रका काम करनेवालोंके सिवा और सब लोगोंको याद नहीं रह सकते, इससे हम सर्पोंके मुख्य-मुख्य भेद ही लिखते हैं ।

साँपोंके पाँच भेद ।

यों तो साँप अस्सी प्रकारके होते हैं, पर मुख्यतया तीन या पाँच प्रकारके होते हैं । वाग्भट्टने भी तीन प्रकारके सर्पोंका ही ज़िक्र किया है । शेषके लिये अनुपयोगी समझकर छोड़ दिया है । उन्होंने दर्वीकर, मण्डली और राजिल—तीन तरहके साँप लिखे हैं । भोगी, मण्डली और राजिल—ये तीन लिखे हैं । इनके सिवाय, एक जातिका साँप और दूसरी जातिकी साँपिनसे पैदा होने वाले "दोगले" और लिखे हैं । असलमें, सर्पोंके मुख्य पाँच भेद हैं:—

(१) भोगी (२) मण्डली
(३) राजिल (४) निर्विष
(५) दोगले ।

नोट—भोगी सर्पोंको कितने ही वैद्योंने "दर्वीकर" लिखा है । ये फनवाले भी कहलाते हैं । बोल-चालकी भाषामें इनके पाँच विभाग इस तरह भी कर सकते हैं—

(१) फनवाले (२) चित्तीदार
(३) धारीदार (४) बिना ज़हर वाले
(५) दोगले ।

बङ्गसेनने चार और वाग्भट्टने तीन विभाग किये हैं। ये विभाग, चिकित्सा के सुभीतेके लिये, वातादिक दोषोंके हिसाबसे किये हैं। जिस तरह दोष तीन होते हैं, उसी तरह साँपोंकी प्रकृति भी तीन होती हैं। वात प्रकृति वाले, पित्त प्रकृति वाले, कफ प्रकृति वाले और मिली हुई प्रकृति वाले—इस तरह चार प्रकृतियों वाले साँप होते हैं। जिसकी जैसी प्रकृति होती है, उसके विषका प्रभाव भी काटने वालेपर वैसा ही होता है। जैसे, अगर वात प्रकृति वाला साँप काटता है, तो काटे जाने वाले आदमीमें वायुका प्रकोप होता है; यानी विष चढ़नेमें वायु-कोपके लक्षण नज़र आते हैं। अगर पित्त प्रकृति वाला काटता है, तो पित्तकोपके; कफ प्रकृति वाला काटता है, तो कफ-कोपके और मिली हुई प्रकृति वाला काटता है, तो दो दोषोंके कोपके लक्षण दृष्टिगत होते है। चारों तरहके साँपोंकी चार प्रकृतियाँ इस तरह होती हैं:—

(१) भोगी ... ... वात प्रकृति।
(२) मण्डली ... . पित्त प्रकृति।
(३) राजिल ... ... कफ प्रकृति।
(४) दोगले ... ... द्वन्द्वज प्रकृति।

सूचना—गारुडी ग्रन्थोंमें साँपोंकी ६ जाति लिखी हैं—फणीधर, मणीधर, पर्डोत्तरा, भोंकोडीआ, जलसाँप, गड़ीवा, चित्रा, कालानाग और कन्ता।

साँपोंकी पहचान।

भोगी।

(१) भोगी या फनवाले—इन साँपोंको "दर्वीकर" भी कहते हैं। इनके तरह-तरहके आकारोंके फन होते हैं, इसीलिये इन्हें फनवाले साँप कहते हैं। ये बड़ी तेज़ीसे खूब जल्दी-जल्दी चलते हैं। इनकी प्रकृति वायुप्रधान होती है, इसलिये इनके विषमें भी वायुकी प्रधानता होती है। ये जिस मनुष्यको काटते हैं, उसमें वायुके प्रकोपके विशेष लक्षण देखनेमें आते हैं। इनका विष रूखा होता है। रूखापन वायुका गुण है। काले साँप, घोर काले साँप और काले पेटवाले साँप इन्हींमें होते हैं। इनकी मुख्य पहचान दो हैं:—(१) फन, और (२) जल्दी चलना।

"सुश्रुत" में दर्वीकरोंके ये भेद लिखे हैं:—कृष्ण सर्प-काला साँप, महा कृष्ण—घोर काला साँप, कृष्णोदर—काले पेटवाला, श्वेतकपोत-सफेद कपोती, महाकपोत, बलाहक, महासर्प, शंखपाल, लोहिताक्ष, गवेधुक, परिसर्प, खंडफण, कुकुद, पद्म, महापद्म, दर्भपुष्प, दधिमुख, पुंडरीक, भृकुटीमुख, विष्किर, पुष्पाभिकीर्ण, गिरिसर्प, ऋजुसर्प, श्वेतोदर, महाशिरा, अलगर्द और आशीविष। इनके सिरपर पहिये, हल, छत्र, साथिया और अंकुशके निशान होते हैं और ये जल्दी-जल्दी चलते हैं। दर्वी संस्कृतमें कलछीको कहते हैं। जिनके फन कलछीके जैसे होते हैं, उन्हें दर्वीकर कहते हैं। इनके काटनेसे वायुका प्रकोप होता है; इसलिये नेत्र, नख, दाँत, मल-मूत्र आदि काले हो जाते हैं, शरीर काँपता है, जँभाई आती हैं तथा राल-बहना, शूल या ऐंठन होना वगैरः-वगैरः वायु-विकार होते हैं। इनके विषके लक्षण हम आगे लिखेंगे।

मण्डली।

(२) मण्डली या चित्तीदार—इनके बदनपर चित्तियाँ होती हैं। इसीसे इन्हें चित्तीदार सर्प कहते हैं। ये धीरे-धीरे मन्दी चालसे चलते हैं। इनमें से कितनों ही पर लाल, कितनों ही पर काली और कितनों ही पर सफेद चिचियाँ होती हैं। कितनों ही पर फूलों-जैसी, कितनों ही पर बाँसके पत्तों-जैसी और कितनों ही पर हिरनके खुर-जैसी चित्ती या चकत्ते होते हैं। ये पेटके पाससे मोटे और दूसरी जगहसे पतले या प्रचण्ड अग्निके समान तीक्ष्ण होते हैं। जिनपर चमकदार चित्तियाँ होती हैं, वे बड़े तेज़ ज़हरवाले होते हैं। इनकी प्रकृति पित्त प्रधान होती है, इसलिये इनके विषमें भी पित्तकी प्रधानता होती है। ये जिसे काटते हैं, उसमें पित्तके प्रकोपके लक्षण नज़र आते हैं। इनका विष गरम होता है और गरमी पित्तका लक्षण है। इनकी मुख्य पहचान ये हैं:—(१) चित्ती, चकत्ते या विन्दु, (२) पेटके पाससे मोटापन, और (३) मन्दी चाल।

"सुश्रुत"में मण्डली सर्पोंके ये भेद लिखे हैं:—आदर्शमण्डल, श्वेतमण्डल, रक्तमण्डल, चित्रमण्डल, पृषत, रोध्र, पुष्प, मिलिंदक, गोनस, वृद्ध गोनस, पनस, महापनस, वेणुपत्रक, शिशुक, मदन, पालिहिर, पिंगल, तन्तुक, पुष्प, पाण्डु षडंग, अग्निक, बभ्रु, कषाय, कलुश, पारावत, हस्ताभरण, चित्रक और ऐणीपद। इनके २२ भेद होते हैं, पर ये ज़ियादा है, अतः आदर्शमण्डलादि चारोंको १, गोनस-वृद्धगोनस को १ और पनस। महापनसको १ समझिये। चूंकि ये पित्तप्रकृति होते हैं, अतः इनके काटनेसे चमड़ा और नेत्रादि पीले हो जाते हैं, सब चीजें पीली दीखती हैं, काटी हुई जगह सड़ने लगती है तथा सर्दी की इच्छा, सन्ताप, दाह, प्यास, ज्वर, मद और मूर्च्छा आदि लक्षण होते और गुदा आदिसे खून गिरता है। इनके विषके लक्षण हम आगे लिखेंगे।

राजिल।

(३) राजिल या धारीदार—इन्हें राजिमन्त भी कहते हैं। किसी के शरीरपर आड़ी, किसीके शरीरपर सीधी और किसीके शरीरपर विन्दियोंके साथ रेखा या लकीरें-सी होती हैं। इन्हींकी वजहसे ये धारीदार और गण्डेदार कहलाते हैं। इनका शरीर खूब साफ, चिकना और देखनेमें सुन्दर होता है। इनकीप्रकृति कफ-प्रधान होती है, इसलिये इनके विषमें भी कफकी प्रधानता होती है। ये जिसे काटते हैं, उसमें कफ-प्रकोपके लक्षण नज़र आते हैं। इनका विष शीतल होता है और शीतलता कफका लक्षण है।

"सुश्रुत"में लिखा है, राजिल या राजिमन्तोंके ये भेद होते हैं:—पुण्डरीक, राजिचित्रे, अंगुलराजि, विन्दुराजि, कर्दमक, तृणशोषक, सर्षपक, श्वेतहनु, दर्भपुष्पक, चक्रक, गोधूमक और किक्किसाद। इनके दश भेद होते हैं, पर ये अधिक हैं, अतः राजिचित्रे, अंगुलराजि और विन्दुराजि, इन तीनोंको एक समझिये। चूँकि इनकी प्रकृति कफ

की होती है, अतः इनके विषसे चमड़ा और नेत्र प्रभृति सफेद हो जाते हैं। शीतज्वर, रोमाञ्च, शरीर अकड़ना, काटे स्थानपर सूजन, मुँहसे गाढ़ा कफ गिरना, कय होना, बारम्बार नेत्रोंमें खुजली और श्वास रुकना प्रभृति कफ-विकार देखनेमें आते हैं। इनके विषके लक्षण भी आगे लिखेंगे। इनकी मुख्य पहचान इनके गण्डे, रेखायें या धारियाँ एवं शरीर-सौन्दर्य्य या खूबसूरती है।

निर्विष।

(४) निर्विष या विषरहित—जिनमें विषकी मात्रा थोड़ी होती है या होती ही नहीं, उनको निर्विष कहते हैं। अजगर, दुमुही या दुम्बी तथा पनिया-साँप इन्हींमें हैं। अजगर मनुष्य या पशुओंको निगल जाता है, काटता नहीं। दुम्बी खेतोंमें आदमियोंके शरीरसे या पैरोंसे लिपट जाती है, पर कोई हानि नहीं करती। पनिया साँप के काटनेसे या तो विष चढ़ता ही नहीं या बहुत कम चढ़ता है। पानीके साँप नदी-तालाब आदिके पानीमें रहते हैं। अजगर बड़े-लम्बे-चौड़े मुँहवाले और बोझमें कई मनके होते हैं। यह साँप चपटा होता है और उसके एक मुँह होता है; पर दुमुही—दुम्बीका शरीर गोल होता है और उसके दोनों ओर दो मुँह होते हैं।

दोगले।

(५) दोगले—इन्हें वैकरंज भी कहते हैं। जब नाग और नागिन दो जातिके मिलते हैं, तब इनकी पैदायश होती है। जैसे, राजिल जाति का साँप और भोगी जातिकी साँपिन संगम करेंगे, तब दोगला पैदा होगा। उसमें माँ और बाप दोनोंके लक्षण पाये जायँगे। वाग्भट्टने लिखा है—राजिल, मण्डली अथवा भोगी प्रभृतिके मेलसे "व्यन्तर" नामके साँप होते हैं। उनमें इनके मिले हुए लक्षण पाये जाते हैं और वे तीनों दोषोंको कुपित करते हैं। परन्तु कई आचार्य्योंने लिखा है कि, दोगले दो दोषोंको कुपित करते हैं, क्योंकि उनकी प्रकृति ही द्वन्द्वज होती है।

साँपोंके विषकी पहचान ।

(१) दर्वीकर—भोगी या फनवाले साँपका काटा हुआ स्थान "काला" पड़ जाता है और वायुके सब विकार देखनेमें आते हैं। वङ्ग-सेनमें लिखा है—"दर्वीकराणां विषमाशु घातिः" यानी दर्वीकर या फनवाले साँपोंका ज़हर शीघ्र ही प्राण नाश कर देता है। काले साँप दर्वी-करोंके ही अन्दर हैं। मशहूर है, कि कालेका काटा फौरन मर जाता है।

(२) मण्डली या चित्तीदार साँपका काटा हुआ स्थान "पीला" पड़ जाता है। काटी हुई जगह नर्म होती और उसपर सूजन होती है तथा पित्तके सब विकार देखनेमें आते हैं।

(३) राजिल या धारीदार साँपके काटे हुए स्थानका रङ्ग "पाण्डु-वर्ण या भूरा-मटमैला सा" होता है। काटी हुई जगह सख्त, चिकनी, लिबलिबी और सूजनयुक्त होती है तथा वहाँसे अत्यन्त गाढ़ा-गाढ़ा खून निकलता है। इन लक्षणोंके सिवा, कफ विकारके सारे लक्षण नज़र आते हैं।

नोट—भोगीका डसा हुआ स्थान काला, मण्डलीका डसा हुआ स्थान पीला और राजिलका डसा हुआ पाण्डु रंग या भूरा—मटमैला होता है। मण्डलीकी सूजन नर्म और राजिलकी सख्त होती है। राजिलके किये घावसे निहायत गाढ़ा खून निकलता है। ये लक्षण हमने वंगसेनसे लिखे हैं। और कई ग्रन्थों में लिखा है, कि साँपमात्रकी काटी हुई जगह 'काली' हो जाती है।

देशकालके भेदसे साँपोंके विषकी असाध्यता ।

पीपलके पेड़के नीचे, देवमन्दिरमें, श्मशानमें, बाँबीमें और चौराहेपर अगर साँप काटता है, तो काटा हुआ मनुष्य नहीं जीता।

भरणी, मघा, आर्द्रा अश्लेषा, मूल और कृत्तिका नक्षत्रमें अगर सर्प काटता है, तो काटा हुआ आदमी नहीं बचता। इनके सिवा, पञ्चमी तिथिमें काटा हुआ मनुष्य भी मर जाता है—यह ज्योतिषके ग्रन्थोंका मत हैं।

मघा, आर्द्रा, कृत्तिका, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाभाद्रपदा—इन नक्षत्रोंमें सर्पका काटा हुआ कदाचित् ही कोई बचता है।

नवमी, पञ्चमी, छठ, कृष्णपक्षकी चौदस और चौथ—इन तिथियों में काटा हुआ और सवेरे-शाम,—दोनों सन्धियों या दोनों काल मिलने के समय काटा हुआ तथा मर्मस्थानोंमें काटा हुआ मनुष्य नहीं बचता है।

एक और ज्योतिष ग्रन्थमें लिखा है:—आर्द्रा, पूर्वाषाढ़ा, कृत्तिका, मूल, अश्लेषा, भरणी और विशाखा—इन सात नक्षत्रोंमें सर्पका काटा हुआ मनुष्य नहीं बचता। ये मृत्यु-योग हैं।

अजीर्ण-रोगी, बढ़े हुए पित्तवाले, थके हुए, आग या घामसे तपे हुए, बालक, बूढ़े, भूखे, क्षीण, क्षतरोगी, प्रमेह-रोगी, कोढ़ी, रूखे शरीर वाले, कमज़ोर, डरपोक और गर्भवती,—ऐसे मनुष्योंको अगर सर्प काटे तो वैद्य इलाज़ न करे, क्योंकि इनमें सर्प-विष असाध्य हो जाता है।

नोट—ऐसे मनुष्योमें, मालूम होता है, सर्प-विष अधिक जोर करता है। इसी से चिकित्साकी मनाही लिखी है; पर हमारी रायमें ऐसे रोगियोंको देखते ही त्याग देना ठीक नहीं। अच्छा इलाज होनेसे, ऐसे मनुष्य भी बचते हुए देखे गये हैं। इसमें शक नहीं, ऐसे लोगोकी सर्प-दंश-चिकित्सामे वैद्यको बडा कष्ट उठाना पडता है और सभी रोगी बच भी नही जाते; हाँ अनेक बच जाते हैं।

मर्मस्थानों या शिरागत मर्मस्थानोंमें अगर साँप काटता है, तो केस कष्टसाध्य या असाध्य हो जाता है। शास्त्रकार तो असाध्य होना ही लिखते हैं।

अगर मौसम गरमीमें, गरम मिजाज वाले या पित्त-प्रकृति वाले को साँप काटता है, तो सभी साँपोंका ज़हर डबल ज़ोर करता है; अतः ऐसा काटा हुआ आदमी असाध्य होता है। वैद्यको ऐसे आदमी का भी इलाज न करना चाहिये।

उस्तरा, छुरी या नश्तर प्रभृतिसे चीरनेपर जिसके शरीरसे खून न निकले; चाबुक, कोड़े या कमची आदिसे मारनेपर भी जिसके शरीरमें निशान न हों और निहायत ठण्डा बर्फ-समान पानी डालनेपर

भी जिसे कँप-कँपी न आवे—रोएँ खड़े न हों, उसे असाध्य समझकर वैद्यको त्याग देना चाहिये। यानी उसका इलाज न करना चाहिये।

जिस साँपके काटे हुए आदमीका मुँह टेढ़ा हो जाय, बाल छूने ही टूट-टूटकर गिरें, नाक टेढ़ी हो जाय, गर्दन झुक जाय, स्वर भंग हो जाय, साँपके डसनेकी जगहपर लाल या काली सूजन और सख्ती हो, तो वैद्य ऐसे साँपके काटेको असाध्य समझकर त्याग दे।

जिस मनुष्यके मुँहसे लारकी गाढ़ी-गाढ़ी बत्तियाँ-सी गिरें या कफकी गाँठें-सी निकलें; मुख, नाक, कान, नेत्र, गुदा, लिंग और योनि प्रभृतिसे खून गिरे; सब दाँत पीले पड़ जायँ और जिसके बराबर चार दाँत लगे हों, उसको वैद्य असाध्य समझकर त्याग दे—इलाज न करे।

"हारीत संहिता" में लिखा है, जिस मनुष्यका चलना-फिरना अजीब हो, जिसके सिरमें घोर वेदना हो, जिसके हृदयमें पीड़ा हो, नाकसे खून गिरे, नेत्रोंमें जल भरा हो, जीभ जड़ हो गई हो, जिसके रोएँ बिखर गये हों, जिसका शरीर पीला हो गया हो और जिसका मस्तक स्थिर न हो यानी जो सिरको हिलाता और घुमाता हो—उत्तम वैद्य ऐसे साँपके काटे हुए मनुष्योंकी चिकित्सा न करे। हाँ, जिन सर्पके काटे हुओंमें ये लक्षण न हों, उनका इलाज करे।

जो मनुष्य विषके प्रभावसे मतवाला या पागल-सा हो जाय, जिसकी आवाज़ बैठ जाय, जिसे ज्वर और अतिसार प्रभृति रोग हों, जिसके शरीरका रंग बदल गया हो, जिसमें मौतके-से लक्षण मौजूद हों, जिसके मलमूत्र या टट्टी-पेशाब बन्द हो गये हों और जिसके शरीरमें वेग या लहरें न उठती हों—ऐसे साँपके काटे हुए मनुष्यको वैद्य त्याग दे—इलाज न करे।

सर्पके काटनेके कारण।

सर्प बिना किसी वजह या मतलबके नहीं काटते। कोई पाँवसे दबकर काटता है, तो कोई पूर्व जन्मके वैरका बदला लेनेको काटता है; कोई डरकर काटता है; कोई मदसे काटता है, कोई भूखसे

काटता है, कोई विषका वेग होनेसे काटता है और कोई अपने बच्चोंकी जीवनरक्षा करनेके लिये काटता है। वाग्भट्टमें लिखा है:—

आहारार्थं भयात्पादस्पर्शादतिविषात्क्रुधः।
पापवृत्तितया वैराद्देवर्षियमचोदनात्॥
पश्यन्ति सर्पास्तेषूक्तं विषाधिक्यं यथोत्तरम्।

भोजनके लिये, डरके मारे, पैर लग जानेसे, विषके बाहुल्यसे, क्रोधसे, पापवृत्तिसे, वैरसे तथा देवर्षि और यमकी प्रेरणासे साँप मनुष्योंको काटते हैं। इनमें पीछे-पीछेके कारणोंसे काटनेमें, क्रमशः विषकी अधिकता होती है। जैसे—डरके मारे काटता है, उसकी अपेक्षा पैर लगनेसे काटता है तब ज़हरका ज़ोर ज़ियादा होता है। विषकी अधिकतासे काटता है, उसकी अपेक्षा क्रोधसे काटनेपर ज़हर की तेज़ी और भी ज़ियादा होती है। जब सर्प देवर्षि या यमराजकी प्रेरणासे काटता है तब और सब कारणोंसे काटनेकी अपेक्षा विषका ज़ोर अधिक होता है और इस दशामें काटनेसे मनुष्य मर ही जाता है।

नोट—किस कारणसे काटा है—यह जानकर यथोचित चिकित्सा करनी चाहिये। लेकिन साँपने किस कारणसे काटा है, इस बातको मनुष्य देख कर नहीं जान सकता, इसलिये किस कारणसे काटा है, इसकी पहचानके लिये प्राचीन आचार्य्योंने तरकीबें बतलाई हैं। उन्हें हम नीचे लिखते है—

सर्पके काटनेके कारण जाननेके तरीके।

(१) अगर सर्प काटते ही पेटकी ओर उलट जाय, तो समझो कि उसने दबने या पैर लगनेसे काटा है।

(२) अगर साँपका काटा हुआ स्थान या घाव अच्छी तरह न दीखे, तो समझो कि भयसे काटा है।

(३) अगर काटे हुए स्थानपर डाढ़से रेखा-सी खिंच जाय, तो समझो कि मदसे काटा है।

(४) अगर काटे हुए स्थानपर दो डाढ़ोंके दाग़ हों, तो समझो कि घबरा कर काटा है।

(५) अगर काटे हुए स्थानमें दो दाढ़ लगी हों और घाव खून से भर गया हो, तो समझो कि विष-वेगसे काटा है ।

सर्पदंशके भेद ।

"सुश्रुत"-कल्पस्थानके चतुर्थ अध्यायमें लिखा है.—पैरसे दबने से, क्रोधसे रुष्ट होकर अथवा खाने या काटनेकी इच्छासे सर्प महा-क्रोध करके प्राणियोंको काटते हैं । उनका वह काटना तीन तरहका होता है:—

(१) सर्पित, (२) रदित, और (३) निर्विष । विष-विद्याके जानने वाले चौथा भेद "सर्पांगाभिहत" और मानते हैं ।

सर्पितका अर्थ पूरे तौरसे डसा जाना है । साँपकी काटी हुई जगहपर एक, दो या अधिक दाँतोंके चिह्न गड़े हुए-से दीखते हैं । दाँतोंके निकलनेपर थोड़ा-सा खून निकलता और थोड़ी सूजन होती है । दाँतोंकी पंक्ति पूरे तौरसे गड़ जानेके कारण, साँपका विष शरीर के खूनमें पूर्ण रूपसे घुस जाता और इन्द्रियोंमें शीघ्र ही विकार हो आता है, तब कहते हैं कि यह "सर्पित" या पूरा डसा हुआ है । ऐसा दंश या काटना बहुत ही तेज़ और प्राणनाशक समझा जाता है ।

(२) रदितका अर्थ खरोंच आना है । जब साँपकी काटी जगह पर नीली, पीली, सफेद या लाली लिये हुए लकीर या लकीरें दीखती हैं अथवा खरोंच-सी मालूम होती है और उस खरोंचमेंसे कुछ खून-सा निकला जान पड़ता है. तब उस दंश या काटनेको "रदित" या खरोंच कहते हैं । इसमें ज़हर तो होता है, पर थोड़ा होता है, अतः प्राणनाशका भय नहीं होता; बशर्ते कि उत्तम चिकित्सा की जाय ।

(३) निर्विषका अर्थ विष रहित या विषहीन है । चाहे काटे स्थानपर दाँतोंके गड़नेके कुछ चिह्न हों, चाहे वहाँसे खून भी निकला हो, पर वहाँ सूजन न हो तथा इन्द्रियों और शरीरकी प्रकृतिमें विकार न हों, तो उस दंशको "निर्विष" कहते हैं ।

(४) सर्पाङ्गाभिहत। जब डरपोक आदमीके शरीरसे सर्प या सर्पका मुँह ख़ाली लग जाता है—सर्प काटता नहीं—खरौंच भी नहीं आती, तो भी मनुष्य भ्रमसे अपने तईं सर्प द्वारा डसा हुआ या काटा हुआ समझ लेता है। ऐसा समझनेसे वह भयभीत होता है। भयके कारण, वायु कुपित होकर कदाचित सूजन-सी उत्पन्न कर देता है। इस दशामें भयसे मनुष्य बेहोश हो जाता है और प्रकृति भी बिगड़ जाती है। वास्तवमें काटा नहीं होता, केवल भयसे मूर्च्छा आदि लक्षण नज़र आते हैं, इससे परिणाममें कोई हानि नहीं होती। इसीको "सर्पाङ्गाभिहित" कहते हैं। इस दशामें रोगीको तसल्ली देना, उसको न काटे जानेका विश्वास दिलाकर भय-रहित करना और मन समझानेको यथोचित चिकित्सा करना आवश्यक है।

बिचरनेके समयसे साँपोंकी पहचान।

रातके पिछले पहरमें प्रायः राजिल, रातके पहले तीन पहरोंमें मण्डली और दिनके समय प्रायः दर्वीकर घूमा करते हैं। खुलासा यों समझिये, कि दिनके समय दर्वीकर, सन्ध्या कालसे रातके तीन बजे तक मण्डली और रातके तीन बजेसे सवेरे तक राजिल सर्प प्रायः फिरा करते हैं।

नोट—काटे जानेका समय मालूम होनेसे भी, वैद्य काटने वाले सर्पकी जाति का कयास कर सकता है। ये सर्प सदा इन्हीं समयोंमें घूमने नही निकलते, पर बहुधा इन्हीं समयोंमें निकलते है।

अवस्था-भेदसे साँपोंके ज़हरकी तेज़ी और मन्दी।

नौलेसे डरे हुए, दबे हुए या घबराये हुए, बालक, बूढ़े, बहुत समय तक जलमें रहनेवाले, कमज़ोर, काँचली छोड़ते हुए, पीले यानी पुरानी काँचली ओढ़े हुए, काटनेसे एकाध क्षण पहले दूसरे प्राणी-को काटकर अपनी थैलीका विष कम कर देने वाले साँप अगर काटते हैं, तो उनके विषमें अत्यल्प प्रभाव रहता है; यानी इन हालतोंमें काटनेसे

उनका ज़हर विशेष कष्टदायक नहीं होता। वाग्भट्टने—रतिसे क्षीण, जल में डूबे हुए, शीत, वायु, घाम, भूख, प्यास और परिश्रमसे पीड़ित, शीघ्र ही अन्य देशमें प्राप्त हुए, देवताके स्थानके पास बैठे हुए या चलते हुए, ये और लिखे हैं, जिनका विष अल्प होता है और उसमें तेजी नहीं होती।

दर्वीकर या फनवाले चढ़ती उम्र या भर जवानीमें, मण्डली ढलती अवस्था या बुढ़ापेमें और राजिल बीचकी या अधेड़ अवस्थामें अगर किसीको काटते हैं, तो उसकी मृत्यु हो जाती है।

साँपोंके विषके लक्षण।

दर्वीकर।

यह हम पहले लिख आये हैं, कि दर्वीकर साँपोंकी प्रकृति वायु-की होती है, इसलिये दर्वीकर—कलछी जैसे फनवाले काले साँप या घोर काले साँपोंके डसने या काटनेसे चमड़ा, नेत्र, नाखून, दाँत, मल-मूत्र काले हो जाते और शरीरमें रूखापन होता है; इसलिये जोड़ोंमें वेदना और खिचाव होता है, सिर भारी हो जाता है; कमर, पीठ और गर्दनमें निहायत कमज़ोरी होती है; जँभाइयाँ आती हैं, शरीर काँपता है; आवाज़ बैठ जाती है, कण्ठमें घर-घर आवाज़ होती है, सूखी-सूखी डकारें आती हैं, खाँसी, श्वाँस, हिचकी, वायुका ऊँचा चढ़ना, शूल, हडफूटन, ऐंठनी, जोरकी प्यास, मुँहसे लार गिरना, झाग आना और स्रोतोंका रुक जाना प्रभृति वातव्याधियोंके लक्षण होते हैं।

नोट—जोड़ोंमें दर्द, जँभाई, चमड़ा और नेत्र आदिका काला हो जाना प्रभृति वायु-विकार हैं। चूँकि दर्वीकरोंकी प्रकृति वातज होती है, अतः उनके विषमें भी वायु ही रहती है। इससे जिसे ये काटते हैं, उसके शरीरमे वायुके अनेक विकार होते हैं।

मण्डली।

मण्डली सर्प पित्त-प्रकृति होते हैं, अतः उनके विषसे चमड़ा, नेत्र, नख, दाँत, मल और मूत्र ये सब पीले या सुर्ख़ी-माइल पीले हो जाते

हैं। शरीरमें दाह—जलन और प्यासका ज़ोर रहता है, शीतल पदार्थ खाने-पीने और लगानेकी इच्छा होती है। मद, मूर्च्छा—बेहोशी और बुख़ार भी होते हैं। मुँह, नाक, कान, आँख, गुदा, लिंग और योनि द्वारा खून भी आने लगता है। मांस ढीला होकर लटकने लगता है। सूजन आ जाती है। डसी हुई या साँपकी काटी हुई जगह गलने और सड़ने लगती है। उसे सर्वत्र सभी चीजें पीली-ही-पीली दीखने लगती हैं। विष जल्दी-जल्दी चढ़ता है। इनके सिवा और भी पित्त-विकार होते हैं।

राजिल।

राजिल या राजिमन्त सर्पोंकी प्रकृति कफ-प्रधान होती है। इसलिये ये जिसे काटते हैं उसका चमड़ा, नेत्र, नख, मल और मूत्र—ये सब सफेद से हो जाते हैं। जाड़ा देकर बुख़ार चढ़ता है, रोएँ खड़े हो जाते हैं, शरीर अकड़ने लगता है, काटी हुई जगहके आस-पास एवं शरीरके और भागों में सूजन आ जाती है, मुँहसे गाढ़ा-गाढ़ा कफ गिरता है, कय होती हैं; आँखोंमें बारम्बार खुजली चलती है, कण्ठ सूज जाता है और गलेमें घर-घर घर-घर आवाज़ होती है तथा साँस रुकता और नेत्रोंके सामने अँधेरा-सा आता है। इनके सिवा, कफके और विकार भी होते हैं।

नोट—८० तरहके सर्पोंके काटे हुएके लक्षण इन्हीं तीन तरहके साँपोंके लक्षणोंके अन्दर आ जाते हैं; अतः अलग-अलग लिखनेकी ज़रूरत नहीं।

विषके लक्षण जाननेसे लाभ।

ऊपर सर्पोंके डसने या विषके लक्षण दंशकी शीघ्र मारकता जाननेके लिये बताये हैं, क्योंकि विष तीक्ष्ण तलवारकी चोट, वज्र और अग्निके समान शीघ्र ही प्राणीका नाश कर देता है। अगर दो घड़ी भी ग़फ़लतकी जाती है, तत्काल इलाज नहीं किया जाता, तो विष मनुष्यको मार डालता है और उसे बातें करनेका भी समय नहीं देता।

साँप-साँपिन प्रभृति साँपोंके डसनेके लक्षण।

(१) नर-सर्पका काटा हुआ आदमी ऊपरकी ओर देखता है।

(२) मादीन सर्प या नागनका डसा हुआ आदमी नीचेकी तरफ देखता है और उसके सिरकी नसें ऊपर उठी हुई-सी हो-जाती हैं ।

(३) नपुंसक साँपका काटा हुआ आदमी पीला पड़ जाता और उसका पेट फूल जाता है ।

(४) व्याई हुई साँपनके काटे हुए आदमीके शूल चलते हैं, पेशाब में खून आता है और उपजिह्विक रोग भी हो जाता है ।

(५) भूखे साँपका काटा हुआ आदमी खानेको माँगता है ।

(६) बूढ़े सर्पके काटनेसे वेग मन्दे होते हैं ।

(७) बच्चा सर्पके काटनेसे वेग जल्दी-जल्दी, पर हल्के होते है ।

(८) निर्विष सर्पके काटनेसे विषके चिह्न नहीं होते ।

(९) अन्धे साँपके काटनेसे मनुष्य अन्धा हो जाता है ।

(१०) अजगर मनुष्यको निगल जाता है, इसलिये शरीर और प्राण नष्ट हो जाते हैं । यह निगलनेसे ही प्राण नाश करता है, विषसे नहीं ।

(११) इनमें से सद्यः प्राणहर सर्पका काटा हुआ आदमी ज़मीन पर शस्त्र या बिजलीसे मारे हुएकी तरह गिर पड़ता है । उसका शरीर शिथिल हो जाता और वह नींदमें ग़र्क़ हो जाता है ।

विषके सात वेग ।

"सुश्रुत"में लिखा है, सभी तरहके साँपोंके विपके सात-सात वेग होते हैं । वोलचालकी भाषामें वेगोंको दौर या मैड़ कहते हैं ।

साँपका विप एक कलासे दूसरीमें और दूसरीसे तीसरीमें—इस तरह सातो कलाओंमें घुसता है । जब वह एकको पार करके दूसरी कलामें जाता है, तब वेगान्तर या एक वेगसे दूसरा वेग कहते हैं । इन कलाओंके हिसाबसे ही सात वेग माने गये हैं । इस तरह समझियेः—

(१) ज्योंही सर्प काटता है, उसका विष ख़ूनमें मिलकर ऊपर को चढ़ता है—यही पहला वेग है ।

(२)-इसके बाद विष खूनको बिगाड़ कर माँसमें पहुँचता है—यह दूसरा वेग हुआ।

(३) माँसको पार करके विष मेदमें जाता है—यह तीसरा वेग हुआ।

(४) मेदसे विष कोठेमें जाता है—यह चौथा वेग हुआ।

(५) कोठेसे विष हड्डियोंमें जाता है, यह पाँचवाँ वेग हुआ।

(६) हड्डियोंसे विष मज्जामें पहुँचता है, यह छठा वेग हुआ।

(७) मज्जासे विष वीर्यमें पहुँचता है, यह सातवाँ वेग हुआ।

नोट—सर्पके विषका कौनसा वेग है, इसके जाननेकी चिकित्सकको ज़रूरत होती है, इसलिये वेगोंकी पहचान जानना और याद रखना ज़रूरी है। नीचे हम यही दिखलाते है कि, किस वेगमें क्या चिह्न या लक्षण देखनेमें आते है।

सात वेगोंके लक्षण।

पहला वेग—साँपके काटते ही, विष खूनमें मिलकर ऊपरकी तरफ चढ़ता है। उस समय शरीरमें चींटी-सी चलती हैं। फिर विष खूनको ख़राब करता हुआ चढ़ता है, इससे खून काला, पीला या सफेद हो जाता है और वही रंगत ऊपर झलकती है।

नोट—दर्वीकर साँपोंके विषके प्रभावसे खूनमें कालापन; मण्डलीके विषसे पीलापन और राजिलके विषसे सफेदी आ जाती है।

दूसरा वेग—इस वेगमें विष माँसमें मिल जाता है, इससे माँस ख़राब हो जाता है और उसमें गाँठें-सी पड़ी दीखती है। शरीर, नेत्र, मुख, नख और दाँत प्रभृतिमें कालापन, पीलापन या सफेदी ज़ियादा हो जाती है।

नोट—दर्वीकर साँपके विषसे कालापन; मण्डलीके विषसे पीलापन और राजिलके विषसे सफेदी होती है।

तीसरा वेग—इस वेगमें विष मेद तक जा पहुँचता है, जिससे

मेद ख़राव हो जाती है। उसकी ख़रावीसे पसीने आने लगते हैं, काटी जगहपर क्लेद-सा होता है और नेत्र मिचे जाते हैं—तन्द्रा घेर लेती है।

चौथा वेग—इस वेगमें विष पेट और फैफड़े प्रभृतिमें पहुँच जाता है। इससे कोठेका कफ ख़राव हो जाता है, मुँहसे लार या कफ गिरता है और सन्धियाँ टूटती हैं; यानी जोड़ोंमें पीड़ा होती है और घुमेर या चक्कर आते हैं।

नोट—चौथे वेगमें मण्डली सर्पके काटनेसे ज्वर चढ आता है और राजिल के काटनेसे गर्दन अकड जाती है।

पाँचवाँ वेग—इस वेगमें विष हड्डियोंमें जा पहुँचता है, इससे शरीर कमज़ोर होकर गिरा जाता है, खड़े होने और चलने-फिरनेकी सामर्थ्य नहीं रहती और अग्नि भी नष्ट हो जाती है।

नोट—अग्नि नष्ट होनेसे—अगर दर्वीकर काटता है, तो शरीर ठण्डा हो जाता है, अगर मण्डली काटता है तो शरीर निहायत गर्म हो जाता है और अगर राजिल काटता है तो जाडेका बुखार चढता और जीभ बँध जाती है।

छठा वेग—इस वेगमे विष मज्जामें जा पहुँचता है, इससे छठी पित्त-धरा कला, जो अग्निको धारण करती है, निहायत बिगड़ जाती है। ग्रहणीके बिगड़नेसे दस्त वहुत आते हैं। शरीर एक दम भारी-सा हो जाता है, मनुष्य सिर और हाथ-पाँव आदि अंगोंको उठा नहीं सकता। उसके हृदयमें पीड़ा होती और वह वेहोश हो जाता है।

सातवाँ वेग—इस वेगमें विषका प्रभाव सातवी शुक्रधरा या रेतो-धरा कला अथवा वीर्यमें जा पहुँचता है, इससे सारे शरीरमें रहने वाली व्यान वायु कुपित हो जाती है। उसकी वजहसे मनुष्य कुछ भी करने योग्य नही रहता। मुँह और छोटे-छोटे छेदोंसे पानी-सा गिरने लगता है। मुख और गलेमे कफकी गिलौरियाँ-सी बँधने लगती हैं। कमर और पीठकी हड्डीमें ज़रा भी ताक़त नहीं रहती। मुँहसे लार वहती है। सारे शरीरमें, विशेष कर शरीरके ऊपरी हिस्सोंमें, वहुतही पसीना आता और साँस रुक जाता है, इससे आदमी विलकुल मुर्दा-सा हो जाता है।

नोट—एक और ग्रन्थकार आठ वेग मानते हैं और प्रत्येक वेगके लक्षण बहुत ही संक्षेपमें लिखते हैं। पाठकोंको, उनके जाननेसे भी लाभ ही होगा, इसलिये उन्हें भी लिख देते हैं:—

(१) पहले वेगमें सन्ताप, (२) दूसरेमें शरीर काँपना, (३) तीसरेमें दाह या जलन, (४) चौथेमें बेहोश होकर गिर पड़ना, (५) पाँचवेंमें मुँहसे झाग गिरना, (६) छठेमें कन्धे टूटना, (७) सातवेंमें जड़ीभूत होना ये लक्षण होते हैं, और (८) आठवेंमें मृत्यु हो जाती है।

दर्वीकर या फनदार साँपोंके विषके सात वेग।

दर्वीकर साँपोंका विष पहले वेगमें खूनको दूषित करता है, इस से खून बिगड़कर "काला" हो जाता है। खूनके काले होनेसे शरीर काला पड़ जाता है और शरीरमें चींटी-सी चलती जान पड़ती हैं।

दूसरे वेग में—वही विष माँसको बिगाड़ता है, इससे शरीर और भी ज़ियादा काला हो जाता और सूज जाता है तथा गाँठें हो जाती हैं।

तीसरे वेगमें—वही विष मेदको ख़राब करता है, जिससे डसी हुई जगहपर क्लेद, सिरमें भारीपन और पसीना होता है तथा आँखें मिचने लगती हैं।

चौथे वेगमें—वही विष कोठे या पेटमें पहुँचकर कफ-प्रधान दोषों—क्लेदन कफ, रस, ओज आदि—को ख़राब करता है, जिससे तन्द्रा आती, मुँहसे पानी गिरता और जोड़ोंमें दर्द होता है।

पाँचवें वेगमें—वही विष हड्डियोंमें घुसता और बल तथा शरीर की अग्निको दूषित करता है, जिससे जोड़ोंमें दर्द, हिचकी और दाह ये उपद्रव होते हैं।

छठे वेगमें—वही विष मज्जामें घुसता और ग्रहणीको दूषित करता है, जिससे शरीर भारी होता, पतले दस्त लगते, हृदयमें पीड़ा और मूर्च्छा होती है।

सातवें वेगमें—वही विष वीर्यमें जा पहुँचता और सारे शरीर में रहने वाली 'व्यान वायु'को कुपित कर देता एवं सूक्ष्म छेदोंसे कफ को झिराने लगता है, जिससे कफकी वत्तियाँ-सी बँध जाती हैं, कमर और पीठ टूटने लगती हैं, हिलने-चलनेकी शक्ति नहीं रहती, मुँह से पानी और शरीरसे पसीना बहुत आता और अन्तमें साँसका आना-जाना बन्द हो होता है।

मण्डली या चकत्तेदार साँपोंके विषके सात वेग।

मण्डली साँपोंका विष पहले वेगमें खूनको बिगाड़ता है, तब वह खून "पीला" हो जाता है, जिससे शरीर पीला दीखता और दाह होता है।

दूसरे वेगमें—वही विष माँसको बिगाड़ता है, जिससे शरीरका पीलापन और दाह बढ़ जाते है तथा काटी हुई जगहमें सूजन आ जाती है।

तीसरे वेगमें—वही विष मेदको बिगाड़ता है, जिससे नेत्र मिचने लगते हैं, प्यास बढ़ जाती है, पसीने आते है और काटे हुए स्थानपर क्लेद होता है।

चौथे वेगमें—वही विष कोठेमें पहुँच कर ज्वर करता है।

पाँचवें वेगमें—वही विष हड्डियोंमें पहुँच कर, सारे शरीरमें खूब तेज जलन करता है।

छठे और सातवें वेगोंमे दर्वीकरोंके विषके समान लक्षण होते हैं।

राजिल या गण्डेदार साँपोंके विषके सात वेग।

राजिल साँपोका विष पहले वेगमें खूनको बिगाड़ता है। इससे बिगड़ा हुआ खून "पाण्डु" वर्ण या सफेद-सा हो जाता है, जिससे आदमी सफेद-सा दीखने लगता है और रोएँ खड़े हो जाते हैं।

दूसरे वेग में—यही विष माँसको बिगाड़ता है, जिससे पाण्डुता

या सफेदी और भी बढ़ जाती, जड़ता होती और सिरमें सूजन चढ़ आती है।

तीसरे वेगमें—वही विष मेदको ख़राब करता है, जिससे आँखें बन्द-सी होतीं, दाँत अमलाते, पसीने आते, नाक और आँखोंसे पानी आता है।

चौथे वेगमें—विष कोठेमें जाकर, मन्यास्तम्भ और सिरका भारीपन करता है।

पाँचवें वेगमें—बोल बन्द हो जाता और जाड़ेका ज्वर चढ़ आता है।

छठे और सातवें वेगोंमें—दर्वीकरोंके विषके-से लक्षण होते हैं।

पशुओंमें विषवेगके लक्षण।

पशुओंको सर्प काटता है, तो चार वेग होते हैं। पहले वेगमें पशुका शरीर सूज जाता है। वह दुखित होकर ध्या-ध्या करता अथवा ध्यान-निमग्न हो जाता है। दूसरे वेगमें, मुँहसे पानी बहता, शरीर काला पड़ जाता और हृदयमें पीड़ा होती है। तीसरे वेगमें सिरमें दुःख होता है तथा कंठ और गर्दन टूटने लगती हैं। चौथे वेगमें, पशु मूढ़ होकर काँपने लगता और दाँतोंको चबाता हुआ प्राण त्याग देता है।

नोट—कोई-कोई पशुओंके तीन ही वेग बताते हैं।

पक्षियोंमें विषवेगके लक्षण।

प्रथम वेगमें पक्षी ध्यान-मग्न हो जाता है और फिर मोह या मूर्च्छा को प्राप्त होता है। दूसरे वेगमें वह बेसुध हो जाता और तीसरे वेगमें मर जाता है।

नोट—बिल्ली, नौला और मोर प्रभृतिके शरीरोंमें साँपोंके विषका प्रभाव नहीं होता।

मरे हुए और बेहोश हुएकी पहचान।

अनेक वार ऐसा होता है, कि मनुष्य एक-दमसे वेहोश हो जाता है, नाड़ी नहीं चलती और ज़हरकी तेज़ीसे साँसका चलना भी वन्द हो जाता है, परन्तु शरीरसे आत्मा नहीं निकलता—जीव भीतर रहा आता है। नादान लोग, ऐसी दशामें उसे मरा हुआ समझकर गाड़ने या जलानेकी तैयारी करने लगते हैं, इससे अनेक वार न मरते हुए भी मर जाते हैं। ऐसी हालतमें, अगर कोई जानकार भाग्यवलसे आ जाता है, तो उसे उचित चिकित्सा करके जिला लेता है। अतः हम सबके जाननेके लिये, मरे हुए और जीते हुएकी परीक्षा-विधि लिखते हैं:—

(१) उजियालेदार मकानमें, वेहोश रोगीकी आँख खोलकर देखो। अगर उसकी आँखकी पुतलीमे, देखने वालेकी सूरतकी परछाईं दीखे या रोगीकी आँखकी पुतलीमें देखने वालेकी सूरतका प्रतिविम्ब या अक्स पड़े, तो समझ लो कि रोगी जीता है। इसी तरह अँधेरे मकानमें या रातके समय, चिराग़ जलाकर, उसकी आँखोंके सामने रखो। अगर दीपककी लौकी परछाँही उसकी आँखोंमें दीखे, तो समझो कि रोगी जीता है।

(२) अगर वेहोश आदमीकी आँखोंकी पुतलियोंमें चमक हो, तो समझो कि वह जीता है।

(३) एक वहुत ही हलके वर्तनमें पानी भरकर रोगीकी छाती पर रख दो और उसे ध्यानसे देखो। अगर साँस वाक़ी होगा या चलता होगा, तो पानी हिलता हुआ मालूम होगा।

(४) धुनी हुई ऊन, जो अत्यन्त नर्म हो, अथवा कवूतरका वहुत ही छोटा और हल्का पंख, रोगीकी नाकके छेदके सामने रक्खो। अगर इन दोनोंमेंसे कोई भी हिलने लगे, तो समझो कि रोगी जीता है।

नोट—यह काम इस तरह करना चाहिये जिससे लोगोंके साँसकी हवा या बाहरी हवासे ऊन या पंखके हिलनेका वहम न हो।

(५) पेडू, चडूढे, लिंगेन्द्रिय, योनिके छेद और गुदाके भीतर, पीछे को झुकी हुई, दिलकी एक रग आई है। जब तक रोगी जीता रहता है, वह हिलती रहती है। पूरा नाड़ी-परीक्षक इस रगपर अँगुलियाँ रखकर मालूम कर सकता है, कि यह रग हिलती है या नहीं।

नोट—तजुर्बेकार या जानकार आदमी किसी प्रकारके विषसे मरे हुए और पानी में डूबे हुओंकी, मुर्दा मालूम होनेपर भी, तीन दिनतक राह देखते है और सिद्ध यत्न प्राप्त हो जानेपर जीवनकी उम्मीद करते हैं। सकतेकी बीमारी वाला मुर्दे के समान हो जाता है, लेकिन बहुतसे जीते रहते हैं और मुर्दे जान पड़ते हैं। उत्तम चिकित्सा होनेसे वे बच जाते हैं। इसीसे हकीम जालीनूस कहता है, कि सकते वालेको ७२ घण्टे या तीन दिन तक न जलाना और न दफनाना चाहिये।

—o—

सर्प-विष-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर साँपके काटते ही, आप रोगीके पास पहुँच जाओ, तो साँपके काटे हुए स्थानसे चार अँगुल ऊपर, रेशमी कपड़े, सूत, डोरी या सनकी डोरी आदिसे बन्ध बाँध दो। एक बन्धपर भरोसा मत करो। एक बन्धसे चार अँगुलकी दूरी पर दूसरा और इसी तरह तीसरा बन्ध बाँधो। बन्ध बाँध देनेसे खून ऊपरको नहीं चढ़ता और आगेकी चिकित्साको समय मिलता है। कहा है—

अम्बुवत्सेतु बन्धेन बन्धेन स्तभ्यते विषम्।
न वहन्ति शिराश्चास्य विष बन्धाभिपीड़िताः॥

वन्ध बाँधनेसे विष इस तरह ठहर जाता है, जिस तरह पुल बाँधनेसे पानी । वन्धसे बँधी हुई नसोंमें विष नहीं जाता ।

बहुधा साँप हाथ-पैरकी अँगुलियोंमें ही काटता है । अगर ऐसा हो, तब तो आपका काम वन्ध बाँधनेसे चल जायगा । हाथ-पैरों में भी आप वन्ध बाँध सकते हैं, पर अगर साँप पेट या पीठ आदि ऐसे स्थानोंमें काटे जहाँ बन्ध न बँध सके, तब आप क्या करेंगे? इस का जवाब हम आगे नं० २ में लिखेंगे ।

हाँ, बन्ध ऐसा ढीला मत बाँधना कि, उससे खूनकी चाल न रुके । अगर आपका बन्ध अच्छा होगा, तो बन्धके ऊपरका खून, काटकर देखनेसे, लाल और बन्धके नीचेका काला होगा । यही अच्छे बन्धकी पहचान है ।

बन्धके सम्बन्धमें दो-चार बातें और भी समझ लो । बन्ध बाँधने से पहले यह भी देखलो, कि खूनमें मिलकर विष कहाँ तक पहुँचा है । ऐसा न हो कि, ज़हर ऊपर चढ़ गया हो और आप बन्ध नीचे बाँधें । इस भूलसे रोगीके प्राण जा सकते हैं । अतः हम 'ज़हर कहाँ तक पहुँचा है' इस बातके जाननेकी चन्द तरकीबें बतलाये देते हैं—

पहले, काटे हुए स्थानसे चार अँगुल या ६।७ अँगुल ऊपर आप सूत, रेशम, सन, चमड़ा या डोरीसे बन्ध बाँध दो । फिर देखो, बन्धके आस-पास कहीके बाल सो तो नही गये हैं । जहाँके बाल आपको सोते दीखें, वहीं आप ज़हर समझें । क्योंकि ज़हर जब बालोंकी जड़ोंमें पहुँचता है, तब वे सो जाते है और विषके आगे बढ़ते ही पीछेके बाल, जो पहले सो गये थे, खड़े हो जाते हैं और आगेके बाल, जहाँ विष होता है, सो जाते हैं । दूसरी पहचान यह है कि, जहाँ विष नहीं होता, वहाँ चीरनेसे लाल खून निकलता है; पर जहाँ ज़हर होता है, काला खून निकलता है । ज्यों-ज्यों ज़हर चढ़ता है, नसोंका रंग नीला होता जाता है । नसोंका रंग

नीला करता हुआ विष-मिला खून चढ़ा या नहीं या कहाँ तक चढ़ा,—यह बात बालोंसे साफ जानी जा सकती है। अगर इन परीक्षाओंसे भी आपको सन्देह रहे, तो आप निकलते हुए थोड़ेसे खूनको आग पर डाल देखें। अगर खूनमें ज़हर होगा और खून बदबूदार होगा, तो आगपर डालते ही वह चटचट करेगा। कहा है:—

दुर्गन्धं सविषं रक्तमग्नौ चटचटायते।

अगर आपका बाँधा हुआ बन्ध ठीक हो, तब तो कोई बात ही नहीं—नहीं तो फौरन दूसरा बन्ध उससे ऊपर, जहाँ विष न हो, बाँध दो। बन्ध बाँधनेका यही मतलब है कि, ज़हर खूनमें मिल कर ऊपर न चढ़ सके, अतः बन्धको ढीला हरगिज़ मत रखना। बन्ध बाँधकर, बन्धके नीचे चीरा देना भी न भूलना। बन्ध बाँधते ही ज़हर पीछेकी तरफ बड़े ज़ोरसे लौटता है। अगर आप पहले ही चीर देंगे, तो ज़ोरसे लौटा हुआ ज़हर खूनके साथ बाहर निकल जायगा।

(२) अगर साँपकी काटी जगह बन्ध बाँधने लायक़ न हो, तो नसमें ज़हर घुसनेसे पहले, फौरन ही, काटी हुई जगहपर जलते हुए अङ्गारे रखकर ज़हरको जला दो। अथवा काटी हुई जगहको छुरीसे छीलकर, लोहेकी गरम शलाकासे दाग दो—जला दो। अगर यह काम, बिना क्षणभरकी भी देरके, उचित समयपर किया जाय, तब तो कहना ही क्या? क्योंकि ऐसी क्या चीज़ है, जो आग से भस्म न हो जाय? वाग्भट्टने कहा है:—

दंशं मण्डलिनां मुक्त्वा पित्तलत्वादथा परम्।
प्रतप्तैर्हेमलोहाद्यैर्दहेदाशूल्मुकेन वा।
करोति भस्मसात्सद्योवाह्निः किं नाम न क्षणात्॥

अगर मण्डली साँपने काटा हो, तो भूलकर भी मत दागना; क्योंकि मण्डली साँपके विषकी प्रकृति पित्तकी होती है; अतः

दागनेसे विष उल्टा बढ़ेगा । हाँ, मण्डलीके सिवा और साँपोंने काटा हो, तो आप दाग दें; यानी लोहे या सोनेकी किसी चीज़को आगमें तपाकर, आग-जैसी लाल करके, उसीसे काटे हुए स्थानको जला दें। आग क्षणमात्रमे सभीको भस्म कर देती है। घावको भस्म करना कौनसा बड़ा काम है ।

नोट—दागनेसे पहले, आपको काटनेवाले साँपकी किस्मका पता लगा लेना ज़रूरी है । काटे हुए स्थान यानी घाव और सूजन प्रभृति तथा अन्य लक्षणोंसे, किस प्रकारके सर्पने काटा है, यह बात आसानीसे जानी जा सकती है ।

अगर उस समय कोई तेज़ाब पास हो, तो उसीसे काटी हुई जगहको जला दो। कारबॉलिक एसिड या नाइट्रिक एसिडकी २।३ बूँद उस जगह मलनेसे भी काम ठीक होगा । अगर तेज़ाब भी न हो और आग भी न हो, तो दो चार दियासलाईकी डिब्बियाँ तोड़ कर काटे हुए स्थानपर रख दो और उनमें आग लगा दो। मौक़ेपर चूकना ठीक नहीं; क्योंकि दंश-स्थानके जल्दी ही जला देनेसे विषैला रक्त जल जाता है ।

(३) बन्ध बाँधना और जलाना जिस तरह हितकर है; उसी तरह ज़हर-मिले खूनको मुँहसे या एअर-पम्पसे चूस लेना या खींच लेना भी हितकर है । ज़हर चूसनेका काम स्वयं रोगी भी कर सकता है और कोई दूसरा आदमी भी कर सकता है ।

दंश-स्थान या काटी हुई जगहको ज़रा चीरकर, खुरचकर या पछने लगाकर, दाँतों और होठोंकी सहायतासे, खून-मिला ज़हर चूसा जाता है; और खून मुँहमें आते ही थूक दिया जाता है । इस-लिये जो आदमी खूनको चूसे, उसके दन्तमूल—मसूढ़े पोले न होने चाहियें। उसके मुखमें घाव या चकत्ते भी न होने चाहियें। अगर मसूढ़े पोले होंगे या मुँहमें घाव वगैरः होंगे, तो चूसने वाले को भी हानि पहुँचेगी। घावोंकी राहसे ज़हर उसके खूनमें

मिलेगा और उसकी जान भी ख़तरेमें हो जायगी। अतः जिसके मुख में उपरोक्त घाव आदि न हों, वही दंश-स्थानको चूसे। इसके सिवा, चूसा हुआ खून और ज़हर गलेमें न चला जाय, इसका भी पूरा ख़याल रखना होगा। इसके लिये, अगर मुँहमें कपड़ा, राख, औषध, गोबर या मिट्टी भर ली जाय तो अच्छा हो। ज़हर चूस-चूसकर थूक देना चाहिये। जब काम हो चुके, साफ़ जलसे कुल्लेकर डालने चाहिएँ।

इस तरह, कभी-कभी ख़तरा भी होजाता है, अतः बारीक झिल्ली की पिचकारी या एअर-पम्प (Air-Pump) से खून-मिला ज़हर चूसा जाय, तो उत्तम हो। कोई-कोई सींगीपर मकड़ीका जाला लगा कर भी ज़हर चूसते हैं, यह भी उत्तम देशी उपाय है।

(४) अगर साँपने उँगली प्रभृति किसी छोटे अवयवमें दाँत मारा हो, तो उसे साफ काटकर फेंक दो। यह उपाय, डसनेके साथ ही, एक दो सैकण्डमें ही किया जाय, तब तो पूरा लाभदायक हो सकता है, क्योंकि इतनी देरमें ज़हर ऊपर नहीं चढ़ सकता*। जब ज़हर उस अवयवसे ऊपर चढ़ जायगा, तब कोई लाभ नहीं होगा।

अगर विष ऊपर न चढ़ा हो, अवयव छोटा हो, तो वहाँकी जितनी ज़रूरत हो उतनी चमड़ी फौरन काट फेंको। अगर खूनमें मिलकर ज़हर आगे बढ़ रहा हो, तो साँपके डसे हुए स्थानको तेज़ नश्तर या चाकू-छुरीसे चीर दो; ताकि वहाँका खून गिरने लगे और उसके साथ विष भी गिरने लगे।

अथवा

साँपके डसे हुए स्थानको, दो अँगुलियोंसे, चिमटीकी तरह पकड़कर, कोई चौथाई इञ्च काट डालो; यानी उतनी खाल उतार कर फेंक दो। काटते ही उस स्थानको गरम जलसे धोओ या गरम जलके तरड़े दो, ताकि खून बहना बन्द न हो और खूनके साथ

* वाग्भट्टने कहा है, कि सर्प-विष डसे हुए स्थानमें १०० मात्रा काल तक ठहरकर, पीछे खूनमें मिलकर शरीरमें फैलता है।

ज़हर निकल जाय। साँपके काटते ही डसी हुई जगहका खून बहाना और ज़हरको बन्धसे आगे न बढ़ने देना—ये दोनों उपाय परमोत्तम और जान बचानेवाले हैं।

(५) साँपकी डसी हुई जगहसे तीन-चार इञ्च या चार अंगुल ऊपर रस्सी आदिसे बन्ध बाँधकर, डसी हुई जगहको चीर दो और उसपर पिसा हुआ नमक बुरकते या मलते रहो। इस तरह करने से खून बहता रहेगा और ज़हर निकल जायगा। बीच-बीचमें भी कई बार डसी हुई जगहको चीरो और उसपर गरम पानी डालो। इसके बाद नमक फिर बुरको। ऐसा करने से खूनका बहना बन्द न होगा। जबतक नीले रङ्गका खून निकले, तबतक ज़हर समझो। जब काला, पीला या सफेद पानीसा खून निकलना बन्द हो जाय और विशुद्ध लाल खून आने लगे, तब समझो कि अब ज़हर नहीं रहा। जब तक विशुद्ध लाल खून न देख लो, तब तक भूलकर भी बन्ध मत खोलना। अगर ऐसी भूल करोगे, तो सब किया कराया मिट्टी हो जायगा। याद रखो, साँपका विष अत्यन्त कड़वा होता है। वह आदमीके खूनको प्रायः काला कर देता है। अगर मण्डली साँपका विष होता है, तो खून पीला हो जाता है; इसी से हमने लिखा है, कि जब तक काला, नीला, पीला या सफेद पानी सा खून गिरता रहे, विष समझो और खूनको बराबर निकालते रहो। सविष और निर्विष खूनकी परीक्षा इसी तरह होती है।

(६) अगर नसोंमें ज़हर चढ़ रहा हो, तो उन नसोंमें जिनमें ज़हर न चढ़ा हो अथवा ज़हरसे ऊपरकी नसोंमें जहाँ कि ज़हर चढ़कर जायगा, दो आड़े चीरे लगादो। फिर नसके ऊपरी भाग को—चीरेसे ऊपर—अँगूठेसे कसकर दवा लो। जब ज़हर चढ़ कर वहाँ तक आवेगा, तब, उन चीरोंकी राहसे, खूनके साथ, बाहर निकल जायगा। यह बहुत ही अच्छा उपाय है।

(७) साँपकी डसी हुई जगहको रेतकी पोटली या गरम जल

की भरी बोतलसे लगातार सेकनेसे ज़हरकी चाल धीमी हो जाती है। ज़रूरतके समय इस उपायसे भी काम लेना चाहिये।

(८) अगर साँपका विष बन्धोंको न माने, उन्हें लाँघ कर ऊपर चढ़ता ही जाय; जलाने, खून निकालने आदिसे कोई लाभ न हो, तब जीवन-रक्षाका एक ही उपाय है। वह यह कि, जिस बन्ध तक ज़हर चढ़ा हो, उसके ऊपर, मोटे छुरेके पिछले भागसे, चीर कर और आगसे जलाकर उस डसे हुए अवयवकी चारों ओर, पाव इञ्च गहरा और गोल चीरा बना दो। इस तरह जला कर, नसोंका सम्बन्ध या कनैक्शन तोड़ देनेसे, ज़हर चीरेके खड्डेको लाँघकर ऊपर नहीं जा सकेगा। पर इतना ख़याल रखना कि, ज्ञानतन्तु न जल जायँ, अन्यथा वे झूठे हो जायँगे—काम न देंगे। जब काम हो जाय, घावपर गिरीका तेल लगाओ। इसे "बैरीकी क्रिया" कहते हैं। इस उपायसे अवश्य जान बच सकती है।

(९) मरण-कालके उपाय—जब किसी उपायसे लाभ न हो, तब रोगीको खाटपर महीन रजाई या गद्दा बिछाकर, बड़े तकियेके सहारे बिठा दो और ये उपाय करोः—

(क) रोगीको सोने मत दो। उससे बातें करो।

(ख) चारपाईके नीचे धूनी दो और खाटके नीचेकी धूनीवाली आगसे सेक भी करो। रोगीको खूब गर्म कपड़े उढ़ाकर, ऊपरसे सेक करो। इन उपायोंसे पसीना आवेगा। पसीनोंसे विष नष्ट होता है, अतः हर तरह पसीने निकालने चाहियें। रोगीको शीतल जल भूल कर भी न देना चाहिये।

(१०) रोगीको—साँपके काटे हुएको—घरके परनालेके नीचे बिठा दो। फिर उस परनालेसे सहन हो सके जैसा गरम जल खूब बहाओ। वह जल आकर ठीक रोगीके सिरपर पड़े, ऐसा प्रबन्ध करो। अगर १५। २० मिनटमें, रोगी काँपने लगे, उसे कुछ होश हो, तो यह काम करते रहो। जब होश हो जाय, उसे

उठाकर और पोंछकर अन्यत्र विठा दो और खूब सेक करो । ईश्वर की इच्छा होगी तो रोगी बच जायगा । "वैद्यकल्पतरु" ।

(११) जब देखो कि, मंत्र-तंत्र, दवा-दारु और अगद एवं अन्य उपाय सब निष्फल हो गये; रोगी क्षण-क्षण असाध्य होता जाता है—मृत्युके निकट पहुँचता जाता है; तब, पाँचवें वेगके बाद और सातवेंसे पहले, उसे "प्रतिविष" सेवन कराओ; यानी जब विषका प्रभाव हड्डियोंमें पहुँच जाय, शरीरका बल नष्ट हो जाय, उठा-बैठा और चला-फिरा न जाय, शरीर एकदम ठण्डा हो जाय अथवा एकदमसे गरम हो जाय अथवा जाड़ा लगकर शीतज्वर चढ़ आवे, जीभ बँध जाय, शरीर बहुत ही भारी हो जाय और बेहोशी आ जाय—तब "प्रतिविष" सेवन कराओ ।

प्रतिविषका अर्थ है, विपरीत गुणवाला विष । स्थावर विषका प्रतिविष जंगम विष है और जंगम विषका प्रतिविष स्थावर विष है । क्योंकि एककी प्रकृति कफकी है, तो दूसरेकी पित्तकी । एक विष सर्द है, तो दूसरा गरम । एक बाहरसे भीतर जाता है, तो दूसरा भीतरसे बाहर आता है । एक नीचे जाता है, तो दूसरा ऊपर । स्थावर विष कफप्रायः और जंगम पित्तप्रायः होते हैं । स्थावर विष आमाशयसे खूनकी ओर जाते हैं और जंगम विष, रुधिर में मिलकर, आमाशय और फेफड़ोंकी ओर जाते हैं । इसीसे स्थावर विष जंगमका दुश्मन है और जंगम स्थावरका दुश्मन है । स्थावर विषके रोगीको जंगम विष सेवन करानेसे और जंगम विष वालेको स्थावर विष सेवन करानेसे आराम हो जाता है । साँप—बिच्छू प्रभृतिके जंगम विषोंपर "वत्सनाभ" आदि स्थावर विष और संखिया, वत्सनाभ आदि स्थावर विषोंपर साँप बिच्छू आदिके जंगम विष अमृतका काम कर जाते हैं । अन्तमें "विषस्य विषमौषधम्" ज़हरकी दवा ज़हर है, यह कहावत सच्ची हो जाती है । मतलब यह, साँपके काटे हुएकी असाध्य अवस्थामें किसी तरहका

बच्छनाभ या सींगिया आदि विष देना ही अच्छा है, क्योंकि इस समय विष देनेके सिवा और दवा ही नहीं।

पर "प्रतिविष" देना बालकोंका खेल नही है। इसके देनेमें बड़े विचार और समझ-बूझकी दरकार है। रोगीकी प्रकृति, देश, काल आदिका विचार करके प्रतिविषकी मात्रा दो। ऊपरसे निरन्तर घी पिलाओ। अगर सर्पविष हीन अवस्थामें हो या रोगी निहायत कमज़ोर हो तो विषकी हीन मात्रा दो; यानी चार जौ भर वत्सनाभ विष सेवन कराओ। अगर विष मध्यावस्थामें हो या रोगी मध्य बली हो, तो छैः जौ भर विष दो और यदि रोग या जहर उग्र यानी तेज़ हो और रोगी भी बलवान हो, तो आठ जौ भर विष—वत्सनाभ विष या शुद्ध सींगिया दो। साथ ही "घी" पिलाना भी मत भूलो; क्योंकि घी विषका अनुपान है। विष अपनी तीक्ष्णतासे हृदयको खींचता है, अतः उसी हृदयकी रक्षाके लिये, रोगीको घी, घी और शहद मिली अगद अथवा घी-मिली दवा देनी चाहिये। जब संखिया खानेवालेका हृदय विषसे खिंचता है, उसमें भयानक जलन होती है, तब घी पिलानेसे ही रोगीको चैन आता है। इसीसे विष चिकित्सा में "घी" पिलाना जरूरी समझा गया है। कहा है:—

विषं कर्षति तीक्ष्णत्वाद्धृतदये तस्य गुप्तये।
पिबेद्घृतं घृतक्षाद्रमगदं वा घृतप्लुतम्॥

नोट—विष सम्बन्धी बातोके लिये पीछे वत्सनाभ विषका वर्णन देखिये।

(१२) अगर विप सारे शरीरमें फैल गया हो, तो हाथ-पाँवके अगले भाग या ललाटकी शिरा वेधनी चाहिये—इन स्थानोंकी फस्द खोल देनी चाहिये। क्योंकि शिरा वेधन करने या फस्द खोल देनेसे खून निकलता है और खूनके साथ ही, उसमें मिला हुआ जहर भी निकल जाता है। इससे साँपके काटेकी परम क्रिया खून निकाल देना है। सुश्रुतमें लिखा है:—

"जिसके शरीरका रंग और-का-और हो गया हो, जिसके अङ्गों में दर्द या वेदना हो और खूब ही कड़ी सूजन हो, उस साँपके काटे का खून शीघ्र ही निकाल देना सबसे अच्छा इलाज है।" ठीक यही बात, दूसरे शब्दोंमें, वाग्भट्टने भी कही है—

"विषके फैल जानेपर शिरा बींधना या फस्द खोलना ही परमोत्तम क्रिया है, क्योंकि निकलते हुए खूनके साथ विष भी निकल जाता है।

शिरा या नस न दीखेगी, तो फस्द किस तरह खोली जायगी, इसीसे ऐसे मौक़ेपर सींगी लगाकर या जोंक लगाकर खून निकाल देने की आज्ञा दी गई है, क्योंकि खूनको किसी तरह भी निकालना परमावश्यक है।

गर्भवती, बालक और बूढ़ेको अगर सर्प काटे, तो उनकी शिरा न वेधनी चाहिये—उनकी फस्द न खोलनी चाहिये। उनके लिये मृदु चिकित्सा की आज्ञा है।

(१३) अगर पहले कहे हुए शिरावेधन या दाह आदि कर्मोंसे जहर जहाँका तहाँ ही न रुके, खूनके साथ मिलकर, आमाशयमें पहुँच जाय—नाभि और स्तनोंके बीचकी थैलीमें पहुँच जाय, तो आप फ़ौरन ही वमन कराकर विषको निकाल देनेकी चेष्टा करें। क्योंकि जब विष आमाशयमे पहुँचेगा, तो रोगीको अत्यन्त गौरव, उत्क्लेश या हुल्लास होगा; यानी जी मचलावे और घबरावेगा—कय करनेकी इच्छा होगी। यही विषके आमाशयमें पहुँचनेकी पहचान है। इस समय अगर कय करानेमें देर की जायगी, तो और भी मुश्किल होगी, क्योंकि विष यहाँसे दूसरे आशय—पकाशयमे पहुँच जायगा। वमन करा देनेसे विष निकल जायगा और रोगी चङ्गा हो जायगा—विषको आगे बढ़नेका मौक़ा ही न मिलेगा। कहा है:—

वमनैर्विषहृद्भिश्च नैव व्याप्नोति तद्वपुः।

वमन करा देनेसे विष निकल जाता है और सारे शरीरमें नहीं फैलता।

स्थावर—संखिया और अफीम प्रभृतिके विषमें तथा जंगम—साँप-बिच्छू प्रभृति चलनेवालोंके विषमें, वमन सबसे अच्छा जान बचानेवाला उपाय है। वमन करा देनेसे दोनों तरहके विष नष्ट हो जाते हैं। स्थावर विष खाये जानेपर तो वमन ही मुख्य और सबसे पहला उपाय है। जंगम विषमें यानी साँप आदिके काटने पर, ज़रा ठहरकर वमन करानी पड़ती है और कभी-कभी तत्काल भी करानी पड़ती है, क्योंकि बाज़े साँपके काटते ही जहर बिजलीकी तरह दौड़ता है। अनेक साँपोंके काटने से, आदमी काटनेके साथ ही गिर पड़ता और ख़तम हो जाता है। ये सब बातें चिकित्सककी बुद्धिपर निर्भर हैं। बुद्धिमान मनुष्य जरा सा इशारा पाकर ही ठीक काम कर लेता है और मूढ़ आदमी खोल-खोलकर समझाने से भी कुछ नहीं कर सकता। बहुतसे अनाड़ी कहा करते हैं, कि संखिया या अफीम आदि विष खा लेनेपर तो वमन कराना उचित है, पर सर्प-बिच्छू प्रभृतिके काटनेपर वमनकी ज़रूरत नहीं। ऐसे अज्ञानियोंको समझना चाहिये, कि वमन करानेकी दोनो प्रकार के विषोंमें ही ज़रूरत है।

(१४) अगर किसी वजहसे वमन करानेमें देर हो जाय और विष पक्काशयमें पहुंच जाय, तो फौरन ही तेज़ जुलाब देकर, ज़हरको, पाख़ानेकी राहसे, पक्काशयसे निकाल देना चाहिये। जब ज़हर आमाशयमें रहता है, तब जी मिचलाने लगता है; किन्तु ज़हर जब पक्काशयमें पहुँचता है, तब रोगीके कोठेमें दाह या जलन होती है, पेटपर अफारा आ जाता है, पेट फूल जाता और मल-मूत्र बन्द हो जाते हैं। विषके पक्काशयमें पहुँचे विना, ये लक्षण नहीं होते, अतः ये लक्षण देखते ही, जुलाब दे देना चाहिये।

(१५) जिस साँपके काटे हुए आदमीके सिरमें दर्द हो, आलस्य हो, मन्यास्तंभ हो—गर्दन रह गई हो और गला रुक गया हो, उसे शिरोविरेचन या सिरका जुलाब देकर, सिरकी मलामत निकाल

देनी चाहिये। सिरमें विषका प्रभाव होनेसे ही उपरोक्त उपद्रव होते हैं। जब दिमाग़में विषका ख़लल होता है, तभी मनुष्य बेहोश होता है। इसीसे विषके छठे वेगमें अत्यन्त तेज़ अञ्जन और अवपीड़ नस्यकी शास्त्राज्ञा है। कहा है—

षष्ठेऽञ्जन तीक्ष्णमवपीड च योजयेत् ॥

मतलब यह है, इस हालतमें नेत्रोंमें तेज़ अञ्जन लगाना और नस्य देनी चाहिये, जिससे रोगीकी उपरोक्त शिकायतें रफ़ा हो जायँ।

(१६) बहुत बार ऐसा होता है, कि मनुष्यको सर्प नहीं काटता और कोई जीव काट लेता है; पर उसे साँपके काटनेका ख़याल हो जाता है। इस कारणसे वह डरता है। डरनेसे वायु कुपित होकर सूजन वगैरः उत्पन्न कर देता है। अनेक बार ऐसा होता है, कि साँप आदमीके काटनेको आता है, उसका मुँह शरीरसे लगता है, पर वह आदमी उसे झटका देकर फेंक देता है। इस अवस्थामें, सर्पका दाँत अगर शरीरके लग भी जाता है, तो भी जल्दी ही हटा देनेसे दाँत-लगे स्थानमें ज़हर डालनेका साँपको मौक़ा नहीं मिलता, पर वह आदमी अपने तईं काटा हुआ समझता और डरता है—अगर ऐसा मौक़ा हो, तो आप रोगीको तसल्ली दीजिये। उसके मनमें साँपके न काटने या विष न छोड़नेका विश्वास दिलाइये, जिससे उसका थोथा भय दूर हो जाय। साथ ही मिश्री, त्रैगन्धिक—इँगुदी, दाख, दूधी, मुलहटी और शहद मिला कर पिलाइये और मतरा हुआ जल दीजिये। यद्यपि इस दशामें साँपका दाँत लग जानेपर भी, जहर नहीं चढ़ता, क्योंकि घावमें विष छोड़े विना विषका प्रभाव कैसे हो सकता है? ऐसे दंशको "निर्विष दंश" कहते हैं।

(१७) कर्केतन, मरकतमणि, हीरा, वैडूर्यमणि, गर्दभमणि, पन्ना, विष-मूषिका, हिमालयकी चाँद वेल—सोमराजी, सर्पमणि, द्रोण-

मणि और वीर्यवान विष—इनमेंसे किसी एकको या दो चारको शरीरपर धारण करनेसे विषकी शान्ति होती है; अतः जो अमीर हों, जिनके पास इनमेंसे कोई-सी चीज़ हो, उन्हें इनके पास रखने की सलाह दीजिये। इनको व्यर्थका अमीरी ढकोसला मत समझिये। इनमें विषको हरण करने की शक्ति है। 'सुश्रुत' के कल्प-स्थानमें लिखा है, विष-मूषिका और अजरुहामेंसे किसी एकको हाथमें रखने से साँप आदि तेज़ जहरवाले प्राणियोंका ज़हर उतर जाता है। अजरुहा शायद निर्विषीको कहते हैं। निर्विषीमें ऐसी सामर्थ्य है, पर वैसी सच्ची निर्विषी आज-कल मिलनी कठिन है। द्रव्योंमें अचिन्त्य गुण और प्रभाव हैं; पर अफसोस है कि, मनुष्य उनको जानता नहीं। न जानने से ही उसे ऐसी-ऐसी बातोंपर आश्चर्य या अविश्वास होता है और वह उन्हें झूठी समझता है। एक चिरचिरेको ही लीजिये। इसे रविवारके दिन कानपर बाँधनेसे शीतज्वर भाग जाता है। जिन्होंने परीक्षा न की हो, कर देखें; पर विधि-पूर्वक काम करें। बिच्छूके काटे आदमीको आप चिरचिरा दिखाइये और छिपा लीजिये। ३।४ बार ऐसा करनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है।

(१८) ऊपरके १८ पैरोंमें, हमने साँपके काटेकी "सामान्य चिकित्सा" लिखी है, क्योंकि "विशेष चिकित्सा" उत्तम और शीघ्र फल देने वाली होनेपर भी, सब किसीसे बन नहीं आती—ज़रा-सी ग़लतीसे उल्टे लेनेके देने पड़ जाते हैं। आगे हम विशेष चिकित्सा के सम्बन्धकी चन्द प्रयोजनीय—कामकी बातें लिखते हैं। साँपके काटे हुएका इलाज शुरू करने से पहले, वैद्यको बहुत-सी बातोंका विचार करके, खूब समझ-बूझकर, पीछे इलाज शुरू करना चाहिये। जो वैद्य बिना समझे-बूझे इलाज शुरू कर देते हैं, उन्हें कदाचित कभी सिद्धि लाभ हो भी जाय, तो भी अधिकांश रोगी उनके हाथोंमें आकर वृथा मरते और उनकी सदा बदनामी होती है। पर जो वैद्य हरेक बातको समझ-बूझकर, पीछे इलाज करते हैं, उन्हें

बहुधा सफलता होती रहती है—विरले ही केसोंमें असफलता होती है । वाग्भट्टमें लिखा है:—

भुजंग दोष प्रकृति स्थान वेग विशेषतः ।
सुसूक्ष्मं सम्यगालोच्य विशिष्ठा वाऽऽचरेत् क्रियाम् ॥

साँप, दोष, प्रकृति, स्थान और विशेषकर वेगको सूक्ष्म बुद्धि या बारीकीसे समझ और विचारकर, "विशेष चिकित्सा" करनी चाहिये ।

इन पाँचों बातोंका विचार कर लेनेसे ही काम नहीं चल सकता । इनके अलावा, नीचे लिखी चार बातोंका भी विचार करना ज़रूरी है:—

(१) देश ।

(२) सात्म्य ।

(३) ऋतु ।

(४) रोगीका बलाबल ।

और भी विचारने योग्य बातें ।

काटनेवाले सर्पोंके सम्बन्धमें भी वैद्यको नीचे लिखी बातें मालूम करनी चाहियें:—

(क) किस जातिके सर्पने काटा है ? जैसे,—दर्वीकर और मण्डली इत्यादि ।

(ख) किस अवस्थामें काटा है ? जैसे,—घबराहटमें या काँचली छोड़ते हुए इत्यादि ।

(ग) किस अवस्थाके सर्पने काटा है ? जैसे,—बालक या बूढ़ेने ।

(घ) साँप नर था या मादीन अथवा नपुंसक इत्यादि ?

(ङ) सर्पने क्यों काटा ? दबकर, क्रोधसे, पूर्व जन्मके वैरसे अथवा ईश्वरके हुक्मसे इत्यादि । वाग्भट्टने कहा है:—

आदिष्टात् कारण ज्ञात्वा प्रतिकुर्याद्यथायथम् ।

किस कारणसे काटा है, यह जानकर यथोचित चिकित्सा करनी चाहिये ।

(च) सर्पने दिन-रातके किस भागमें काटा ? जैसे,—सवेरे, शामको, पहली रातको या पिछली रातको।

(छ) सर्पदंश कैसा है ? जैसे,—सर्पित, रदित इत्यादि।

इन बातोंके जाननेसे लाभ।

इन बातोंके जान जानेसे ही हम अच्छी तरह चिकित्सा कर सकेंगे। अगर हमें मालूम हो कि, दर्वीकरने काटा है, तो हम समझ जायँगे, कि, इस साँपका विष वातप्रधान होता है। इसके सिवाय, इसका काटा आदमी तत्काल ही मर जाता है। चूँकि दर्वीकरने काटा है, अतः हमें वातनाशक चिकित्सा करनी होगी।

इतना ही नहीं, फिर हमें विचारना होगा कि, हमारे रोगीके साथ सर्प-विषकी प्रकृति-तुल्यता तो नहीं है; यानी सर्प-विष वातप्रधान है और रोगी भी वातप्रधान प्रकृतिका तो नहीं है। अगर विष और रोगी दोनोंकी प्रकृति एक मिल जायँगी तब तो हमको कठिनाई मालूम होगी। अगर विष और रोगीकी प्रकृति जुदी-जुदी होगी, तो हमको उतनी कठिनाई न मालूम होगी।

फिर हमको यह देखना होगा कि, आजकल ऋतु कौनसी है। किस दोषके कोपका समय है। अगर हमारे रोगीको दर्वीकर साँपने वर्षा-कालमें काटा होगा, तो ऋतु तुल्यता हो जायगी। क्योंकि दर्वीकर साँपका विष वातप्रधान होता ही है और वर्षा ऋतु भी वातकोपकारक होती है। इस दशामें हम कठिनाईको समझ सकेंगे। वर्षाकालमें या बादल होनेपर विष स्वभावसे ही कुपित होते हैं, इससे कठिनाई और भी बढ़ी दीखेगी।

फिर हमको देखना होगा, यह कौन देश है, इसकी प्रकृति क्या है। अगर हमारे रोगीको वात-प्रधान दर्वीकर सर्पने बङ्गालमें काटा होगा, तो देशतुल्यता हो जायगी, क्योंकि बङ्गाल देश अनूप

देश है। इसमें स्वभावसे ही वात कफका कोप रहता है, यह भी एक कठिनाई हमको मालूम हो जायगी। आप ही गौर कीजिये, इतनी बातोंको समझे विना वैद्य कैसे उत्तम इलाज कर सकेगा?

उदाहरण।

अगर हमसे कोई आकर पूछे कि, कलकत्तेमें, इस सावनके महीनेमें, एक वातप्रकृतिके आदमीको जवान दर्वीकर या काले साँपने काटा है, वह बचेगा कि नहीं; तो हम यह समझ कर कि, सर्पकी प्रकृति वातप्रधान है, रोगी भी वातप्रकृति है, ऋतु भी वातकोप की है और देश भी वैसा ही है, कह देंगे कि, भाई भगवान ही रक्षक है, बचना असम्भव है। पर हमें थोड़ा सन्देह रहेगा, क्योंकि यह नहीं मालूम हुआ कि, सर्प-दंश कैसा है? सर्पित है, रदित है या निर्विष अथवा क्यों काटा है? दबकर, क्रोधमें भर कर अथवा और किसी वजह से? अगर इन सवालोंके जवाब भी ये मिले, कि सर्प-दंश सर्पित है—पूरी दाढ़ें बैठी हैं और पैर पड़ जानेसे क्रोधमें भर कर काटा है, तब तो हमें रोगीके मरनेमें जो ज़रा-सा सन्देह था, वह भी न रहेगा।

प्रश्नोत्तरके रूपमें दूसरा उदाहरण।

अगर कोई शख़्स आकर हमसे कहे, कि वैद्य जी! जल्दी चलिये, एक आदमीको साँपने काटा है। हम उससे चन्द सवाल करेंगे और वह उनके जवाब देगा। पीछे हम नतीजा बतायेंगे।

वैद्य—कैसे सर्पने काटा है?

दूत—मण्डली साँपने।

वैद्य—साँप जवान था कि बूढ़ा?

दूत—साँप अधेड़ या बूढ़ा-सा था।

वैद्य—रोगीकी प्रकृति कैसी है ?

दूत—पित्त प्रकृति।

वैद्य—आजकल कौनसा महीना है ?

दूत—महाराज ! वैशाख है।

वैद्य—सर्पदंश कैसा है ?

दूत—सर्पित।

वैद्य—किस समय काटा ?

दूत—रातको १० बजे।

वैद्य—क्यों काटा ?

दूत—पैरसे दब कर।

वैद्य—किस जगह साँप मिला ?

दूत—अमुक गाँवके बाहर, पीपलके नीचे।

वैद्य—रोगीका क्या हाल है ?

दूत—बड़ी प्यास है, जला-जला पुकारता है और शीतल पदार्थ माँगता है।

वैद्य—उसके मल-मूत्र, नेत्र और चमड़ेका रंग अब कैसा है ?

दूत—सब पीले हो गये हैं। ज्वर भी चढ़ आया है। अब तो होश नहीं है। पसीनोंसे तर हो रहा है।

वैद्य—भाई ! हमें फुरसत नही है और किसीको ले जाओ।

दूत—क्यो महाराज ! क्या रोगी नहीं बचेगा ? अगर नही बचेगा तो क्यों ?

वैद्य—अरे भाई ! इन बातोंमे क्या लोगे ? जाओ, देर मत करो। किसी और को ले जाओ।

दूत—नही महाराज ! मैं वैद्य तो नही हूँ; तोभी चिकित्सा-ग्रन्थ देखा करता हूँ। कृपया मुझे बताइये कि, वह क्यों न बचेगा ?

वैद्य—भाई ! उसके न बचनेके बहुत कारण हैं, (१) उसे बूढ़े मण्डली साँपने काटा है, और बूढ़े मण्डली साँपका काटा

आदमी नहीं जीता। (२) रोगीकी प्रकृति पित्तकी है और साँपके विषकी प्रकृति भी पित्तप्रधान है। फिर मौसम भी गरमीका है। गरमीकी ऋतुमें गरम मिज़ाजके आदमीको कोई भी साँप काटता है, तो वह नहीं बचता, जिसमें साँपकी प्रकृति भी गरम है, अतः रोगी डबल-असाध्य है। (३) चारों दाढ़ बराबर बैठी हैं, दंश सर्पित है और दबकर क्रोधसे काटा है। ये सब मरनेके लक्षण हैं। (४) काटा भी पीपलके नीचे है। पीपल या श्मशान आदि स्थानोंपर काटा हुआ आदमी नहीं बचता। (५) इस समय विषका छठा-सातवाँ वेग है। वाग्भट्टने पाँचवें वेगके बाद चिकित्सा करनेकी मनाही की है। उन्होंने कहा हैः—

कुर्यात्पञ्चसु वेगेषु चिकित्सा न ततः परम्।

पाँच वेगों तक चिकित्सा करो; उसके बाद चिकित्सा न करो।

हमने उदाहरण देकर जितना समझा दिया है, उतनेसे महामूढ़ भी सर्प-विष चिकित्साका तरीक़ा समझ सकेगा। अब हम स्थानाभाव से ऐसे उदाहरण और न दे सकेंगे।

(१९) बहुतसे सर्पके काटे हुए आदमी मुर्दा-जैसे हो जाते हैं, पर वे मरते नहीं। उनका जीवात्मा भीतर रहता है, अतः इसी भाग में पहले लिखी विधियोंसे परीक्षा अवश्य करो। उस परीक्षाका जो फल निकले, उसे ही ठीक समझो। वैद्यक-शास्त्रमें भी लिखा हैः—

नस्यैश्चेतनां तीक्ष्णैर्न क्षतात्क्षतजगामः।
दण्डाहतस्य नो राजीप्रयातस्य यमान्तिकम्॥

अगर आप किसीको तेज़-से-तेज़ नस्य सुँघावें, पर उससे भी उसे होश न हो; अगर आप उसके शरीरमें कहीं घाव करें, पर वहाँ खून न निकले और अगर आप उसके शरीरपर बेंत या डण्डा मारें, पर उसके शरीरपर निशान न हों—तो आप समझ लें, कि यह धर्मराजके पास जायगा।

सातवें वेगमें, साँपके काटे हुएके सिरपर "काकपद" करते हैं। उसके सिरका चमड़ा छीलकर कव्वेका-सा पञ्जा बनाते हैं। अगर उस जगह खून नहीं निकलता, तो समझते हैं, कि रोगी मर गया। अगर खून निकलता है, तो समझते हैं, कि रोगी जीता है—मरा नहीं।

(२०) अगर साँप किसीको सामनेसे आकर काटता है, तब तो रोगी कहता है, कि मुझे साँपने काटा है। परन्तु कितनी ही दफ़ा साँप नींदमें सोते हुएको या अँधेरेमें काटकर चल देता है, तब पता नहीं लगता, कि किस जानवरने काटा है। ऐसा मौक़ा पड़नेपर, आप दंश-स्थानको देखें, उसीसे आपको पता लगेगा। याद रखो, अगर ज़हरीला सर्प काटता है, तो उसकी दो दाढ़ें लगती हैं। अगर काटी हुई जगहपर इकट्ठे दो छेद दीखें, तो समझो कि साँपने दाँत लगाये, पर दाँत ठीक बैठे नहीं और वह ज़ख्ममें ज़हर छोड़ नहीं सका। इस अवस्थामें, यथोचित मामूली उपाय करने चाहिएँ।

अगर ज़हरीला साँप काटता है और घावमें विष छोड़ जाता है, तो रोगीके शरीरमें झनझनाहट होती और वह बढ़ती चली जाती है, चक्कर आते हैं, शरीर काँपता है, बेचैनी होती है और पैर कमज़ोर हो जाते हैं। पर जब विष और आगे बढ़ता है, तब साँस लेनेमें कष्ट होता है, गहरा साँस नहीं लिया जाता, नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है, पर ठहर-ठहरकर। बोली बन्द होने लगती है, जीभ बाहर निकल आती है, मुँहमें झाग आते हैं, हाथ-पैर तन जाते हैं, शरीर शीतल हो जाता है और पसीने बहुत आते हैं। अन्तमें रोगी बेहोश होकर मर जाता है। मतलब यह है, कि अगर अनजानमें, सोते हुए या अँधेरेमें साँप काटे तो आप दंशस्थान और लक्षणोंसे जान सकते हैं, कि साँपने काटा या और किसी जीवने।

(२१) अगर आप साँपके काटेकी चिकित्सा करो, तो दवा सेवन कराने, बन्ध बाँधने, फस्द खोलने, लेप लगाने प्रभृति क्रियाओंपर विश्वास और भरोसा रखो, पर मन्त्रोंपर विश्वास न करो। अगर

मन्त्र जाननेवाले आवें, बन्ध खोलें और दवा देना बन्द करें, तो भूल कर भी उनकी बातोंमें मत आओ। कई दफा, बन्ध बाँधनेसे साँपके काटे हुए आदमी आराम होते-होते, दुष्टोंके बन्ध खुला देनेसे, मर गये और मंत्रज्ञ महात्मा अपना-सा मुँह लेकर चलते बने।

आजकल मन्त्र-सिद्धि करनेवाले कहाँ मिल सकते हैं, जब कि सुश्रुतके ज़मानेमें ही उनका अभाव-सा था। सुश्रुतमें लिखा हैः—

मन्त्रास्तु विधिना प्रोक्ता हीना वा स्वरवर्णतः ।
यस्मान्न सिद्धिमायाति तस्माद्योज्योऽगदक्रमः ॥

मन्त्र अगर विधिके बिना उच्चारण किये जाते हैं तथा स्वर और वर्णसे हीन होते हैं, तो सिद्ध नहीं होते; अतः साँपके काटेकी दवा ही करनी चाहिये।

जब भगवान् धन्वन्तरि ही सुश्रुतसे ऐसा कहते हैं, तब क्या कहा जाय? उस प्राचीन कालमें ही जब सच्चे मन्त्रज्ञ नहीं मिलते थे, तब अब तो मिल ही कहाँ सकते हैं? मन्त्र सिद्ध करनेवालेको स्त्री-संग, मांस और मद्य आदि त्यागने होते हैं, जिताहारी और पवित्र होकर कुशासनपर सोना पड़ता है एवं गन्ध, माला और बलिदानसे मन्त्र सिद्ध करके देव-पूजन करना होता है। कहिये, इस समय कौन इतने कर्म करेगा?

नवनीत या निचोड़ ।

(२२) सर्प-विष-चिकित्सामें नीचेकी बातोंको कभी मत भूलोः—

(१) मण्डली सर्पके डसे हुए स्थानको आगसे मत जलाओ। ऐसा करनेसे विषका प्रभाव और बढ़ेगा।

(२) खून निकालनेके बाद, जो उत्तम खून बच रहे, उसे शीतल सेकोंस रोको।

(३) सर्पके काटेके आराम हो जानेपर भी, डसे हुए स्थान को खुरचकर, विष नाशक लेप करो; क्योंकि अगर ज़रासा भी विष शेष रह जायगा, तो फिर वेग होंगे।

(४) गरमीके मौसममें, गरम मिज़ाज वालेको साँप काटे, तो आप असाध्य समझो। अगर मण्डली सर्प काटे, तो और भी असाध्य समझो।

(५) साँपके काटे आदमीको घी, घी और शहद, अथवा घी मिली दवा दो, क्योंकि विषमें "घी पिलाना" रोगीको जिलाना है।

(६) तेल, कुल्थी, शराब, काँजी आदि खट्टे पदार्थ साँपके काटे को मत दो। हाँ, कचनार, सिरस, आक और कटभी प्रभृति देना अच्छा है।

(७) अगर आपको साँपकी क़िस्मका पता न लगे, तो दंश-स्थानकी रंगत, सूजन और वातादि दोषोंके लक्षणोंसे पता लगा लो।

(८) इलाज करनेसे पहले पता लगाओ, कि साँपके काटे हुए को प्रमेह, रूखापन, कमज़ोरी आदि रोग तो नहीं हैं, क्योंकि ऐसे लोग असाध्य माने गये है।

(९) किस तिथि और किस नक्षत्रमें काटा है, यह जान कर साध्यासाध्यका निर्णय कर लो।

(१०) इलाज करनेसे पहले इस बातको अवश्य मालूम कर लो कि, सर्पने क्यों काटा? इससे भी आपको साध्यासाध्यका ज्ञान होगा।

(११) सर्प-दंशकी जाँच करके देखो, वह सर्पित है या रदित वगैरः। इससे आपको साध्यासाध्यका ज्ञान होगा।

(१२) दिन-रातमें किस समय काटा, इसका भी पता लगा लो। इससे आपको साँपकी क़िस्मका अन्दाज़ा मालूम हो जायगा।

(१३) पता लगाओ, साँपने किस हालतमें काटा। जैसे—घबराहटमें, दूसरेको तत्काल काटकर अथवा कमज़ोरीमें। इससे आपको विषकी तेज़ी-मन्दीका ज्ञान होगा।

(१४) रोगीको देख कर पता लगाओ कि, किस दोषके विकार हो रहे हैं। इस उपायसे भी आप सर्पकी क़िस्म जान सकेंगे।

(१५) इसकी भी खोज करो, कि नरने काटा है या मादीनने अथवा नपुंसक या गर्भवती, प्रसूता आदि नागिनोंने। इससे विष की मारकता आदि जान सकोगे ।

(१६) अच्छी तरह देख लो, विषका कौनसा वेग है। हालत देखनेसे वेगको जान सकोगे ।

(१७) याद रखो, अगर दर्वीकर सर्प काटता है, तो चौथे वेग में वमन कराते हैं। अगर मण्डली और राजिल काटते हैं, तो दूसरे वेगमें ही वमन कराते हैं ।

(१८) गर्भवती, बालक, बूढ़े और गर्म मिज़ाज वालेको साँप काटे तो फस्द न खोलो; किन्तु शीतल उपचार करो ।

(१९) अगर जाड़ेका मौसम हो, रोगीको जाड़ा लगता हो, राजिल सर्पने काटा हो, बेहोशी और नशा-सा हो, तो तेज़ दवा देकर क़य कराओ ।

(२०) अगर प्यास, दाह, गरमी और बेहोशी आदि हों, तो शीतल उपचार करो—गरम नहीं ।

(२१) अगर रोगी भूखा-भूखा चिल्लाता हो और दर्वीकर या काले साँपने काटा हो तथा वायुके उपद्रव हों, तो घी और शहद, दही या माठा दो ।

(२२) जिसके शरीरमें दर्द हो और शरीरका रंग बिगड़ गया हो, उसकी फस्द खोल दो ।

(२३) जिसके पेटमें जलन, पीड़ा और अफारा हो, मलमूत्र रुके हों और पित्तके उपद्रव हों, उसे जुलाब दो ।

(२४) जिसका सिर भारी हो, ठोड़ी और जावड़े जकड़ गये हों तथा कण्ठ रुका हो, उसे नस्य दो। अगर रोगी बेहोश हो, आँखें फटी-सी हो गई हों और गर्दन टूट गई हो, तो प्रधमन नस्य दो ।

(२५) आराम हो जानेपर "उत्तर क्रिया अवश्य करो।"

सर्प-विषसे बचाने वाले उपाय।

(१) एक साल तक, विधि-सहित "चन्द्रोदय" रस सेवन करनेसे मनुष्यपर स्थावर और जङ्गम—दोनों प्रकारके विषोंका असर नहीं होता। आयुर्वेदमें लिखा हैः—

स्थावरं जंगम विषं विषमं विषवारिवा।
न विकाराय भवति साधकेन्द्रस्यवत्सरात्॥

स्थावर और जङ्गम विष तथा जलका विष एक वर्ष तक "चन्द्रोदय रस"* सेवन करनेसे नहीं व्यापते।

सोनेके वर्क ४ तोले
शुद्ध पारा ३२ तोले
शुद्धगंधक ६४ तोले

*(१) इन तीनोंको खरलमें डालकर खूब घोटो, जब निश्चन्द्र कज्जली हो जाय, (२) नरम कपासके फूलोंका रस डाल-डालकर घोटो। जब यह घुटाई भी हो जाय, तब (३) घीग्वारका रस डाल-डालकर घोटो। जब यह घुटाई भी हो जाय, मसालेको (४) सुखाओ। जब सूख जाय, उसे एक बड़ी आतिशी शीशीमें भरकर, शीशीपर सात कपड-मिट्टी कर दो और शीशीको सुखा लो। (५) सूखी हुई शीशीको बालुकायंत्रमें रखकर, बालुकायन्त्रको चूल्हेपर चढ़ा दो और नीचेसे मन्दी-मन्दी आग लगने दो। पीछे, उस आगको और तेज़ कर दो। शेषमें, आगको खूब तेज़ कर दो। क्रम से मन्द, मध्यम और तेज़ आग लगातार २४ पहर या ७२ घण्टों तक लगनी चाहिये। (६) जब शीशीके मुँहसे धुआँ निकल जाय, तब शीशीके मुँहपर एक ईंटका टुकड़ा रखकर, मुँह बन्द कर दो; पर नीचे आग लगती रहे।

जब चन्द्रोदय सिद्ध हो जायगा, तब शीशीकी नली काली स्याह हो जायगी। यही सिद्ध-असिद्ध "चन्द्रोदय" की पहचान है।

सिद्ध चन्द्रोदयका रंग नये परोकी ललाईके समान लाल होता है। ऐसा चन्द्रोदय सर्व रोग नाशक होता है।

सेवन विधि—चन्द्रोदय ४ तोले, भीमसेनी कपूर १६ तोले, और जायफल, काली मिर्च, लौंग तीनों मिलाकर १६ तोले तथा कस्तूरी ४ माशे—इन सबको

(२) "वैद्य सर्वस्व" में लिखा है, मेषकी संक्रान्तिमें, मसूरकी दाल और नीमके पत्ते मिलाकर खानेसे एक वर्षतक विषका भय नहीं होता।

नोट—दूसरे ग्रन्थोंमें लिखा है, मेषकी संक्रान्तिके आरम्भमें, एक मसूरका दाना और दो नीमके पत्ते खानेसे एक वर्ष तक विषका भय नहीं होता ।

(३) हरदिन, सवेरे ही, सदा-सर्वदा कड़वे नीमके पत्ते चबाने वालेको साँपके विषका भय नहीं रहता ।

(४) "वैद्यरत्न" में लिखा है, जिस समय वृष राशिके सूर्य हों, उस समय सिरसका एक बीज खानेसे मनुष्य गरुड़के समान हो जाता है, अतः सर्प उसके पास भी नही आते—काटना तो दूरकी बात है ।

(५) वंगसेनमें लिखा है, आषाढ़के महीनेके शुभ दिन और शुभ नक्षत्रमें, सफेद पुनर्नवा या विषखपरेकी जड़, चाँवलोंके पानीमें पीसकर, पीनेसे साँपोंका भय नहीं रहता ।

नोट—चक्रदत्तने पुष्य नक्षत्रमें इसके पीनेकी राय दी है ।

(६) "इलाजुलगुर्बा" में लिखा है—बारहसिंगेका सींग, बकरीका खुर और अकरकरा,—इन तीनोंको मिला कर, धूनी देनेसे साँप भाग जाते हैं ।

(७) राई और नौसादर मिलाकर घरमें डाल देनेसे साँप घरको छोड़कर भाग जाता है और फिर कभी नहीं आता ।

(८) बारहसिंगेका सींग लटका रखनेसे सर्प प्रभृति ज़हरीले जानवर नहीं काटते ।

(९) गोरखरके सींग, बकरीके खुर, सौसनकी जड़, अकरकरा की जड़ और धनिया—इन चीज़ोंसे साँप डरता है ।

खरलमें डाल, खरल करलो और शीशीमें भरकर रख दो । इसमेंसे १ माशे रस निकालकर, पानोंके रसके साथ नित्य खाओ । इस तरह एक वर्ष तक इसके सेवन करनेसे स्थावर और जंगम विषका भय नहीं रहेगा । इसके सिवा, इस रस का खानेवाला अनेकों मदमाती नारियोंका मद भञ्जन कर सकेगा ।

(१०) साँपकी राहमें अगर राई डाल दी जाय, तो साँप उस राहसे नहीं निकलता। राई और नौसादर साँपके बिल या बाँबीमें डाल देनेसे साँप उन्हें छोड़ भागता है।

नोट—निराहार रहने वाले मनुष्यका थूक अगर साँपके मुँहमें डाल दिया जाय, तो साँप मर जायगा। अगर उस आदमीके मुँहमें नौसादर हो तो, उसके थूकसे साँप और भी जल्दी मर जायगा। राई भी सर्पको मार डालती है।

(११) वृन्द वैद्यने लिखा है:—आषाढ़के महीनेके शुभ दिन और शुभ मुहूर्त्तमें, सिरसकी जड़ को चाँवलोंके पानीके साथ पीने वालेको सर्पका भय कहाँ? अर्थात् साँपका डर नहीं रहता। यदि ऐसे आदमीको कोई साँप दर्प या मोहसे काट भी खाता है, तो उसी समय उसका विष, शिवजीकी आज्ञानुसार, सिरसें मूलं स्थानपर जा पहुँचता है; अतः जिसे वह काटता है, उसकी कोई हानि नही होती। चक्रदत्त लिखते हैं, कि वह सर्प उसी स्थानपर मर जाता है। लिखा है:—

मूलं तण्डुलवारिणा पिबाति यः प्रत्यंगिरासभवम्॥
उद्धृत्याऽऽकलितं सुयोगादिवसे तस्याऽहि भीतिः कुतः?

नोट—सिरसकी जडको आषाढ़ मासके शुभ दिन और शुभ मुहूर्त्तमें ही उखाड कर लाना चाहिये; पहलेसे लाकर रखी हुई जड कामकी नहीं। हाँ चक्रदत्तने लिखा है कि, इस जड़को बिना पीसे चाँवलोंके पानीके साथ पीना चाहिये।

(१२) मसूर और नीमके पत्तोंके साथ "सिरसकी जड़" को पीस कर, वैशाखके महीनेमें पीने वालेको, एक वर्ष तक विष और विषमज्वरका भय नही रहता।

चक्रदत्तने लिखा है:—

मसूर निम्बपत्राभ्यां खादेन्मेषगते रवौ।
अब्दमेकं न भीतिः स्याद्विषार्त्तस्य न संशयः॥

मसूरको नीमके पत्तोंके साथ जो आदमी मेषके सूर्यमें खाता है, उसे एक साल तक साँपोंसे भय नहीं होता, इसमें संशय नहीं।

(१३) जो मनुष्य दिनमें या मध्याह्न कालमें सदा छाता लगाकर चलता है, उसे गरुड़ समझ कर सर्प भाग जाते हैं । उनका विष-वेग शान्त हो जाता है और वे किसी हालतमें भी उसके सामने नहीं आते हैं ।

नोट—वर्षा और धूपमें तो सभी छाता लगाते हैं; पर इनके न होनेपर भी छाता लगाना मुफीद है । छातेसे ईंट पत्थर गिरनेसे मनुष्य बचता है । साँप छातेवालेको गरुड़ समझ कर भाग जाता है । एक बार एक जंगलमें एक मेम-साहिबा अकेली जा रही थीं । सामनेसे एक चीता आया और उनपर हमला करना चाहा । उनके पास उस समय छातेके सिवा और कोई हथियार न था । उन्होंने झटसे छाता खोल दिया । चीता न-जाने क्या समझकर नौ दो ग्यारह हो गया और मेम साहिबाके प्राण बच गये । इसीसे किसी कविने बहुत सोच-विचार कर ठीक ही कहा है:—

छुरी छड़ी छतुरी छला, छबडा पांच छकार ।
इन्हें नित्य ढिग राखिये, अपने अहो कुमार ॥

नोट—इन पाँचों छकारोंको यानी छुरी, छड़ी, छत्री, छल्ला और लोटाको सदा अपने पास रखना चाहिये । इनसे काम पडने पर बडा काम निकलता है । अनेक बार जीवन-रक्षा होती है ।

(१४) घरको खूब साफ रखो; विशेष कर वर्षामें तो इसका बहुत ही ख़याल रखो । इस ऋतुमें साँप जियादा निकलते हैं । इसके सिवा बादल और वर्षाके दिनोंमें सर्प-विषका प्रभाव भी बहुत होता है । अतः घरके बिले, सुराख या दराज़ बन्द कर दो । अगर साँपका शक हो तो घरमें नीचे लिखी धूनी दोः—

(क) घरमें गन्धककी धूनी दो ।

(ख) साँपकी काँचलीकी धूनी दो । इससे साँप भाग जाता है; बल्कि जहाँ यह होती है, वहाँ नहीं आता ।

(ग) कारबोलिक एसिडकी बूसे भी सर्प नहीं रहता; अतः इसे जहाँ-तहाँ छिड़क दो ।

———

सर्प-विष चिकित्सा।

वेगानुरूप चिकित्सा।

(१) किसी तरहका साँप काटे, पहले वेगमें खून निकालना ही सबसे उत्तम उपाय है, क्योंकि खूनके साथ ज़हर निकल जाता है।

(२) दूसरे वेगमें—शहद और घीके साथ अगद पिलानी चाहिये अथवा घी-दूधमें कुछ शहद और विषनाशक दवाएँ मिलाकर पिलानी चाहियें।

(३) तीसरे वेगमें—अगर दर्वीकर या फनवाले सर्पने काटा हो, तो विष नाशक नस्य और अञ्जन सुँघाने और नेत्रोंमें लगाने चाहियें।

(४) चौथे वेगमें—वमन कराकर, पीछे लिखी विषघ्न यवागू पिलानी चाहिये।

(५—६) पाँचवें और छठे वेगमें शीतल उपचार करके, तीक्ष्ण विरेचन या कड़ा जुलाब देना चाहिये। अगर ऐसा ही मौक़ा हो, तो पिचकारी द्वारा भी दस्त करा सकते हो। जुलाबके बाद, अगर उचित जँचे तो वही यवागू देनी चाहिये।

(७) सातवें वेगमें—तेज़ अवपीड़न नस्य देकर सिर साफ करना चाहिये। साथ ही तेज़ विषनाशक अंजन आँखोंमें लगाना चाहिये और तेज़ नश्तरसे मूर्द्धा या मस्तकमें कव्वेके पंजे * के आकारका

---

* काकपद करना—सातवें वेगमें मूर्द्धा या मस्तकके ऊपर, तेज नश्तरसे खुरच-खुरच कर, कव्वेका पञ्जा-सा बनाते है। उसमें मांसको इस तरह छीलते हैं, कि, खून नहीं निकलता और मांस छिल जाता है। फिर उस काकपद या कव्वे के पंजेके निशानपर, खूनसे तर चमड़ा या किसी जानवर का ताजा मांस रखते हैं। यह मांस सिरमेंसे विषको खींच लेता है।

निशान करके, उस निशानपर खून-मिला चमड़ा या ताज़ा मांस रखना चाहिये।

नोट—इन तीनों तरहके साँपोंकी वेगानुरूप चिकित्सामें कुछ फर्क है। दर्वीकरकी चिकित्सामें, चौथे वेगमें वमन कराते हैं; पर मण्डली और राजिलकी चिकित्सामें, दूसरे वेगमें ही वमन कराते हैं। क्योंकि मण्डली साँपका विष पित्तप्रधान और राजिलका कफप्रधान होता है। राजिलकी चिकित्सामें, दूसरे वेग में वमन करानेके सिवा और सब चिकित्सा २१७ पृष्ठमें लिखी वेगानुरूप चिकित्साके समान ही करनी चाहिये। मण्डलीकी चिकित्सा करते समय—दूसरे वेगमें वमन करानी, तीसरे वेगमें तेज जुलाब देना और छठे वेगमें काकोल्यादि गणसे पकाया दूध देना और सातवें वेगमें विषनाशक अवपीड़ नस्य देना उचित है। अगर गर्भवती, बालक और बूढ़ेको साँप काटे, तो उनका शिरावेधन न करना चाहिये। यानी फस्द न खोलनी चाहिये। अगर जरूरत ही हो—काम न चले, तो कम खून निकालना चाहिये। इनकी फस्द न खोल कर, मृदु उपायोंसे विष नाश करना अच्छा है। इसके सिवाय, जिनका मिज़ाज गर्म हो, उनका भी खून न निकालना चाहिये; बल्कि शीतल उपचार करने चाहियें।

दर्वीकरोंकी वेगानुरूप चिकित्सा।

(१) पहले वेगमें—खून निकालो।

(२) दूसरे वेगमें—शहद और घीके साथ अगद दो।

(३) तीसरे वेगमें—विषनाशक नस्य और अंजन दो।

(४) चौथे वेगमें—वमन कराकर, विषनाशक यवागू दो।

(५—६) पाँचवे और छठे वेगमें—तेज़ जुलाव देकर, यवागू दो।

(७) सातवें वेगमें—खूब तेज़ अवपीड़ नस्य देकर सिर साफ करो और मस्तकपर, काकपद करके, ताज़ा मांस या खून-आलूदा चमड़ा रखो।

नोट—गर्भवती, बालक, बूढे और गरम मिज़ाज वालेका खून न निकालो; निकाले बिना न सरे तो कम निकालो और मृदु उपायोंसे विष नाश करो। गरम मिज़ाज वालेको शीतल उपचार करो।

मण्डली सर्पोंकी वेगानुरूप चिकित्सा।

(१) पहले वेगमें—खून निकालो।

(२) दूसरे वेगमें—शहद् और घीके साथ अगद् पिलाओ और वमन कराकर विषनाशक यवागू दो।

(३) तीसरे वेगमें—तेज़ जुलाब देकर, यवागू दो।

(४—५) चौथे और पाँचवें वेगमें—दर्वीकरके समान काम करो।

(६) छठे वेगमें—काकोल्यादिके साथ पकाया हुआ दूध पिलाओ या महाऽगद् आदि तेज़ अगद् पिलाओ।

(७) सातवें वेगमें—असाध्य समझकर अवपीड़ नस्य नाक में चढ़ाओ, विषनाशक दवा खिलाओ और सिरपर, काकपद करके, ताज़ा माँस या खून-मिला चमड़ा रखो।

नोट—गर्भवती, बालक और बूढ़ेकी फस्द खोलकर खून मत निकालो। अगर निकालो ही तो कम निकालो। मण्डलीके ज़हरमें पित्त प्रधान होता है। अगर ऐसा साँप पित्त प्रकृतिवाले—गरम मिज़ाज वालेको काटता है, तो ज़हर डबल जोर करता है, अतः खून न निकालकर खूब शीतल उपचार करो।

राजिल सर्पोंकी वेगानुरूप चिकित्सा।

(१) पहले वेगमें—खून निकालो और शहद्-घीके साथ अगद् या विषनाशक दवा पिलाओ।

(२) दूसरे वेगमें—वमन कराकर, विष नाशक अगद्—शहद् और घीके साथ पिलाओ।

(३-४-५) तीसरे, चौथे और पाँचवें वेगमें—सब काम दर्वीकरों के समान करो।

(६) छठे वेगमें—तेज़ अंजन आँखोंमें आँजो।

(७) सातवें वेगमें—तेज़ अवपीड़ नस्य नाकमें चढ़ाओ।

विषकी उत्तर क्रिया ।

जब विषके वेगोंकी शान्ति हो जाय, पूरी तरहसे आराम हो जाय, तब बन्द खोल कर, शीघ्र ही डाढ़ लगी या काटी हुई जगहपर पछने लगा—खुरचकर—विषनाशक लेप कर दो, क्योंकि अगर ज़रा भी विष रुका रहेगा, तो फिर वेग होने लगेंगे।

अगर किसी तरह दोषोंके कुछ उपद्रव बाक़ी रह जायँ, तो उनका यथोचित उपचार करो, क्योंकि शेष रहा हुआ विषका अंश फिर उपद्रव और वेग कर उठता है। विषके जो उपद्रव ठहर जाते हैं, सहजमें नहीं जाते।

अगर वातादि दोष कुपित हों, तो बढ़े हुए वायुका स्नेहादिसे उपचार करो। वे उपाय—तेल, मछली और कुलथीसे रहित—वायु-नाशक होने चाहियें।

अगर पित्तप्रधान दोष कुपित हों, तो पित्तज्वर-नाशक काढ़े, स्नेह और वस्तियोंसे उसे शान्त करो।

अगर कफ बढ़ा हो, तो आरग्वधादि गणके द्रव्योंमें शहद मिला कर उपयोग करो। कफनाशक दवा या अगद और तिक्त-रूखे भोजनोंसे शान्त करो।

विषके घाव और विष-लिपे शस्त्रके घावोंके लक्षण ।

कड़ा बन्ध बाँधने, पछने लगाने—खुरचने या ऐसे ही तेज़ लेपों आदिसे विषसे सूजा हुआ स्थान गल जाता है और विषसे सड़ा हुआ मांस कठिनतासे अच्छा होता है।

नश्तर आदिसे चीरते ही काला खून निकलता है, स्थान पक जाता है, काला हो जाता है, बहुत ही दाह होता है, घावमें सड़ा मांस पड़ जाता है, भयंकर दुर्गन्ध आती है, घावसे बारम्बार क्लिन्न

मांस निकलता है, प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, दाह और ज्वर—ये लक्षण जिस क्षत या घावमें होते हैं, उसे दिग्धविद्ध (विष-लिपे शस्त्रके बिंधनेसे हुआ घाव) घाव कहते हैं।

जिन घावोंमें ऊपरके लक्षण हों, विषयुक्त डंक रह गया हो, मकड़ी लड़के-से घाव हों, दिग्धविद्ध घाव हों, विषयुक्त घाव हों और जिन घावोंका मांस सड़ गया हो, पहले उनका सड़ा-गला मांस दूर कर दो; यानी नश्तरसे छीलकर फेंकदो। फिर जौंक लगाकर ख़ून निकाल दो; और वमन-विरेचनसे दोष दूर कर दो।

फिर दूधवाले वृक्ष—गूलर, पीपर, पाखर आदिके काढ़ेसे घावपर तरड़े दो और सौ बारके धुले हुए घीमें विष नाशक शीतल द्रव्य मिला-कर, उसे कपड़ेपर लगाकर, मल्हमकी तरह, घावपर रख दो। अगर किसी दुष्ट जन्तुके नख या कंटक आदिसे कोई घाव हुआ हो, तो ऊपर लिखे हुए उपाय करो अथवा पित्तज-विषमें लिखे उपाय करो।

विषनाशक अगद।

तार्क्ष्यो अगद।

पुण्डेरिया, देवदारु, नागरमोथा, भूरिछरीला, कुटकी, थुनेर, सुगन्ध रोहिष तृण, गूगल, नागकेशरका वृक्ष, तालीसपत्र, सज्जी, केवटी मोथा, इलायची, सफेद सम्हालू, शैलज गन्धद्रव्य, कूट, तगर, फूलप्रियंगू, लोध, रसौत, पीला गेरू, चन्दन और सेंधानोन—इन सब दवाओंको महीन कूट-पीस और छानकर "शहद" में मिला कर, गायके सींगमें भर कर, ऊपरसे गायके सींगका ढकन देकर,

१५ दिन तक रख दो । इसको "तार्क्ष्यागद" कहते हैं । और तो क्या, इसके सेवनसे तक्षक साँपका काटा हुआ भी बच जाता है ।

नोट—"अगद" ऐसी दवाओंको कहते हैं, जो कितनी ही यथोचित औषधियोके मेलसे बनाई जाती हैं और जिनमें विष नाश करने की सामर्थ्य होती है । हकीम लोग ऐसी दवाओंको "तिरयाक" कहते हैं ।

महा अगद ।

निशोथ, इन्द्रायण, मुलेठी, हल्दी, दारूहल्दी, मञ्जिष्ठवगकी सब दवाएँ, सेंधानोन, विरिया संचर नोन, विड़नोन, समुद्र नोन, काला नोन, सोंठ, मिर्च और पीपर—इन सब दवाओंको एकत्र पीसकर और "शहद" में मिलाकर, गायके सींगमें भर दो और ऊपरसे गायके सींगका ही ढकन लगाकर बन्द कर दो । १५ दिन तक इसे न छेड़ो । इसके वाद काममें लाओ । इसे "महाऽगद" कहते हैं । इस दवाको घी, दूध या शहद प्रभृतिमें मिलाकर पिलाने, आँजने, काटे हुए स्थानपर लगाने और नस्य देनेसे अत्यन्त उग्रवीर्य सर्पोंका विष, दुर्निवार विष और सब तरहके विष नष्ट हो जाते हैं । यही बड़ी उत्तम दवा है । गृहस्थ और वैद्य सभीको इसे बनाकर रखना चाहिये; क्योंकि समयपर यह प्राणरक्षा करती है ।

नोट—वंगसेन, चक्रदत्त और वृन्द प्रभृति कितने ही आचार्योंने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है । प्राचीन कालके वैद्य ऐसी-ऐसी दवाएँ तैयार रखते थे और उन्हींके बलसे धन और यश उपार्जन करते थे ।

दशाङ्ग धूप ।

बेलके फूल, बेलकी छाल, बालछड़, फूलप्रियंगू, नागकेशर, सिरस, तगर, कूट, हरताल और मैनसिल—इन सब दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, सिलपर रख, पानीके साथ खूब महीन पीसो और साँपके काटे हुए आदमीके शरीरपर मलो । इसके लगाने या

मालिश करनेसे अत्यन्त तेज़ विष और गर विष नष्ट हो जाता है। इस धूपको शरीरमें लगाकर कन्याके स्वयम्वर, देवासुर-युद्ध-समान युद्ध और राजदर्बारमें जानेसे विजय-लक्ष्मी प्राप्त होती है; अर्थात् फतह होती है। जिस घरमें यह धूप रहती है, उस घरमें न कभी आग लगती है, न राक्षस-बाधा होती है और न उस घरके बच्चे ही मरते हैं।

अजित अगद।

बायबिडंग, पाठा, अजमोद, हींग, तगर, सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, सेंधानोन, विरिया नोन, बिड़नोन, समन्दर नोन, काला नोन और चीतेकी जड़की छाल—इन सबको महीन पीस-छान कर, "शहद" में मिलाकर, गायके सींगमें भर कर, ऊपर से सींगका ही ढकना लगा दो और १५ दिन तक रक्खी रहने दो। जब काम पड़े, इसे काममें लाओ। इसके सेवन करनेसे स्थावर और जङ्गम सब तरहके विष नष्ट होते हैं।

नोट—जब इसे पिलाना, लगाना या आँजना हो, तब इसे घी, दूध या शहदमें मिला लो।

चन्द्रोदय अगद।

चन्दन, मैनशिल, कूट, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागरमोथा, सरसों, बालछड़, इन्द्रजौ, केशर, गोरोचन, असवण, हींग, सुगन्धबाला, लामज्जकतृण, सोया और फूलप्रियंगू—इन सबको एकत्र पीस कर रख दो। इस दवासे सब तरहके विष नाश हो जाते हैं।

ऋषभागद।

जटामासी, हरेणु, त्रिफला, सहँजना, मँजीठ, मुलेठी, पद्माख, बायबिडंग, तालीसके पत्ते, नाकुली, इलायची, तज, तेजपात, चन्दन,

भारङ्गी, पटोल, किणही, पाठा, इन्द्रायणका फल, गूगल, निशोथ, अशोक, सुपारी, तुलसीकी मञ्जरी और भिलावेके फूल—इन सब दवाओंको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर इसमें सूअर, गोह, मोर, शेर, बिलाव, साबर और न्यौला—इनके "पित्ते" मिला दो। शेषमें "शहद" मिलाकर, गायके सींगमें भरकर, सींगसे ही बन्द करके १५ दिन रक्खी रहने दो। इसके बाद काममें लाओ।

जिस घरमें यह अगद होती है, वहाँ कैसे भी भयङ्कर नाग नहीं रह सकते। फिर बिच्छू वगैरःकी तो ताक़त ही क्या जो घरमें रहें। अगर इस दवाको नगाड़ेपर लेप करके, साँपके काटे आदमीके सामने उसको बजावें, तो विष नष्ट हो जायगा। अगर इसे ध्वजा-पताकाओंपर लेप कर दें, तो साँपके काटे आदमी उनकी हवामात्र शरीरमें लगने या उनके देखने से ही आराम हो जायँगे।

अमृत घृत।

चिरचिरेके बीज, सिरसके बीज, मेदा, महामेदा और मकोय—इनको गोमूत्रके साथ महीन पीसकर कल्क या लुगदी बना लो। इस घी से सब तरहके विष नष्ट होते और मरता हुआ भी जी जाता है।

नोट—कल्कके वजनसे चौगुना गायका घी और घी से चौगुना गोमूत्र लेना। फिर सबको चूल्हेपर चढ़ाकर मन्दाग्निसे घी पका लेना।

नागदन्त्याद्य घृत।

नागदन्ती, निशोथ, दन्ती और थूहरका दूध—प्रत्येक चार-चार तोले, गोमूत्र २५६ तोले और उत्तम गोघृत ६४ तोले,—सबको मिला कर चूल्हेपर चढ़ा दो और मन्दाग्नि से घी पकालो। जब गोमूत्र आदि जलकर घी मात्र रह जाय उतार लो। इस घीसे साँप, बिच्छू और कीड़ोंके विष नाश होते हैं।

तण्डुलीय घृत।

चौलाईकी जड़ और घरका धूआँ, दोनों समान-समान लेकर पीस लो। फिर इनके वज़नसे चौगुना घी और घीसे चौगुना दूध मिलाकर, घी पकानेकी विधिसे घी पका लो। इस घीसे समस्त विष नाश हो जाते हैं।

मृत्युपाशापह घृत।

लोध, हरड़, कूट, हुलहुल, कमलकी डण्डी, बेंतकी जड़, सींगिया विष (शुद्ध), तुलसीके पत्ते, पुनर्नवा, मँजीठ, जवासा, शतावर, सिंघाड़े, लजवन्ती और कमल-केशर—इनको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस लो। फिर सिलपर रख, पानीके साथ पीस, कल्क या लुगदी बना लो।

फिर कल्कके वज़नसे चौगुना उत्तम गोघृत और घीसे चौगुना गायका दूध लेकर, कल्क, घी और दूधको मिलाकर कड़ाहीमें रक्खो और चूल्हेपर चढ़ा दो। नीचेसे मन्दी-मन्दी आग लगने दो। जब दूध जलकर घी मात्र रह जाय, उतार लो। घीको छानकर रख दो। जब वह आप ही शीतल हो जाय, घीके बराबर "शहद" मिला दो और बर्तनमें भरकर रख दो।

इस घीकी मालिश करने, अंजन लगाने, पिचकारी देने, नस्य देने, भोजनमें खिलाने और बिना भोजन पिलानेसे सब तरहके अत्यन्त दुस्तर स्थावर और जंगम विष नष्ट हो जाते हैं। सब तरहके कृत्रिम गरविष भी इससे दूर होते हैं। बहुत कहनेसे क्या, इस घीके छूने मात्रसे विष नष्ट हो जाते हैं। साँपका विष, कीट, चूहा, मकड़ी और अन्य ज़हरीले जानवरोंका विष इससे निश्चय ही नष्ट हो जाता है। यह घी यथानाम तथा गुण है। सचमुच ही मृत्यु-पाशसे मनुष्यको छुड़ा लेता है।

सर्प-विषकी सामान्य चिकित्सा ।

उधर हमने तीनों क़िस्मके साँपोंकी वेगानुरूप, दोषानुरूप और उपद्रवानुसार अलग-अलग चिकित्साएँ लिखी हैं । उन चिकित्साओं के लिये सर्पोंकी क़िस्म जानने, उनके वेग पहचानने और दोषोंके विकार समझनेकी ज़रूरत होती है। ऐसी चिकित्सा वे ही कर सकते हैं, जिन्हें इन सब बातोंका पूरा ज्ञान हो; अतः नीचे हम ऐसे नुसख़े लिखते हैं, जिनसे गँवार आदमी भी सब तरहके साँपोंके काटे आदमियोंकी जान बचा सकता है । जिनसे उतना परिश्रम न हो, जो उतना ज्ञान सम्पादन न कर सकें, वे कम-से-कम नीचे लिखे नुसख़ोंसे काम लें। जगदीश अवश्य प्राण रक्षा करेंगे ।

सर्प-विष नाशक नुसख़े ।

(१) घी, शहद, मक्खन, पीपर, अदरख, कालीमिर्च और सेंधानोन—इन सातों चीज़ोंमें जो पीसने लायक़ हों, उन्हें पीस-छान लो। फिर सबको मिलाकर, साँपके काटे हुएको पिलाओ। इस नुसख़ेके सेवन करनेसे क्रोधमें भरे तक्षक-साँपका काटा हुआ भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) चौलाईकी जड़, चाँवलोंके पानीके साथ, पीसकर पीने से मनुष्य तत्काल निर्विष होता है; यानी उसपर जहरका असर नहीं रहता।

(३) काकादिनी अर्थात् कुलिकाकी जड़की नास लेने से काल का काटा हुआ भी आराम हो जाता है।

(४) जमालगोटेकी मींगियोंको नीमकी पत्तियोंके रसकी २१ भावना दो। इन भावना दी हुई मींगियोंको, आदमीकी लारमें घिस कर, आँखोंमें आँजो। इनके आँजने से साँपका विष नष्ट हो जाता और मरता हुआ मनुष्य भी जी जाता है।

(५) नीबूके रसमें जमालगोटेको घिसकर आँखोंमें आँजने से साँपका काटा आदमी आराम हो जाता है।

नोट—इलाजुल गुर्बामें लिखा है—कालीमिर्च सात माशे और जमालगोटे की गिरी सात माशे—इन दोनोको तीन काग़ज़ी नीबुओंके रसमें घोट कर, कालीमिर्च-समान गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक या दो गोली पत्थरपर रख, पानीके साथ पीस लो और साँपके काटे हुए आदमीकी आँखोंमें आँजो और इन्हींमेंसे २।३ गोलियाँ खिला भी दो। अवश्य आराम होगा।

(६) अकेले जमालगोटेको 'घी'में पीसकर, शीतल जलके साथ, पीने से साँपका काटा हुआ आराम हो जाता है।

"वैद्यसर्वस्व" में लिखा है:—

किमत्र बहुनोक्तेन जैपालनेनैव तत्क्षणम्।
घृत शीताम्बुना श्रेष्ठं भंजनं सर्पदंशके॥

बहुत बकवादसे क्या लाभ? केवल जमालगोटेको घीमें पीस कर, शीतल जलके साथ, पीनेसे साँपका काटा हुआ तत्काल आराम हो जाता है।

नोट—जमालगोटेको पानीमें पीस कर, बिच्छूके काटे स्थानपर लेप करनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है।

"मुजर्रबात अकबरी" में लिखा है—अगर साँपका काटा आदमी बेहोश हो, तो उसके पेटपर—नाभिके ऊपर—इस तरह उस्तरा लगाओ कि चमड़ा छिल जाय, पर ख़ून न निकले। फिर उस जगहपर, जमालगोटा पानीमें पीस कर

लगा दो। इसके लगानेसे कय या वमन शुरू होंगी और साँपका काटा आदमी होशमें आ जायगा। होशमें आते ही और उपाय करो।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है:—साँपके काटे हुएको दो या तीन जमालगोटे छील कर खिलाओ। साथ ही छिला हुआ जमालगोटा, एक मूँगके बराबर पीस कर, रोगीकी आँखोंमें आँजो। जमालगोटा खिला कर, जहाँ साँपने काटा हो उस जगह, सींगीकी तरह खूब चूसो, ताकि शरीरमें ज़हरका असर न हो। हकीम साहब इसे अपना आज़मूदा उपाय लिखते हैं।

जमालगोटेका सेवन अनेक हकीम वैद्योंने इस मौकेपर अच्छा बताया है। यद्यपि हमने परीक्षा नहीं की है, तथापि हमें इसके अक्सीर होनेमें सन्देह नहीं।

(७) दो या तीन जमालगोटेकी मींगियोंकी गिरी और एक तोले जङ्गली तोरई—इन दोनोंको पानीके साथ पीसकर और पानीमें ही घोलकर पिला देने से साँपका ज़हर उतर जाता है।

नोट—दन्तीके बीजोंको जमालगोटा कहते हैं। ये अरण्डीके बीज-जैसे होते हैं। इनके बीचमें जीभी सी होती है, उसीसे क़य होती हैं। मींगियोंमें तेल होता है। वैद्यलोग जमालगोटेकी चिकनाई दूर कर देते हैं, तब वह शुद्ध और खाने योग्य हो जाता है। दवाके काममें बीज ही लिये जाते हैं। जमालगोटा कोठेको हानिकारक है, इसीसे हकीम लोग इसके देनेकी मनाही करते हैं। घी, दूध, माठा या केवल घी पीनेसे इसका दर्प नाश होता है। इसकी मात्रा १ चाँवलकी है। जमालगोटा कफ नाशक, तीक्ष्ण, गरम और दस्तावर है। जमालगोटेके शोधनेकी विधि हमने इसी भागमें लिखी है।

(८) बड़के अंकुर, मँजीठ, जीवक, ऋषभक, मिश्री और कुम्भेर—इनको पानीमें पीसकर, पीने से मण्डली सर्पका विष शान्त हो जाता है।

(९) रेणुका, कूट, तगर, त्रिकुटा, मुलेठी, अतीस, घरका धूआँ और शहद—इन सबको मिला और पीसकर पीने से साँपका विष नाश हो जाता है।

(१०) बालछड़, चन्दन, सेंधानोन, पीपर, मुलेठी, कालीमिर्च, कमल और गायका पित्ता—इन सबको एकत्र पीसकर, आँखोंमें आँजने से विष-प्रभावसे मूर्च्छित या बेहोश हुआ मनुष्य भी होशमें आ जाता है।

(११) करंजके बीज, त्रिकुटा, बेलवृक्षकी जड़, हल्दी, दारुहल्दी, तुलसीके पत्ते और बकरीका मूत्र—इन सबको एकत्र पीसकर, नेत्रों में आँजने से, विषसे बेहोश हुआ मनुष्य होशमें आ जाता है।

(१२) सेंधानोन, चिरचिरेके बीज और सिरसके बीज—इन सब को मिलाकर और पानीके साथ सिलपर पीसकर कल्क या लुगदी बना लो। इस लुगदीकी नस्य देने या सुँघाने से विषके कारणसे मूर्च्छित हुआ मनुष्य होशमें आ जाता है।

(१३) इन्द्रजौ और पाढ़के बीजोंको पीसकर नस्य देने या सुंघाने या नाकमें चढ़ाने से बेहोश हुआ मनुष्य चैतन्य हो जाता है।

नोट—नस्यके सम्बन्धमें हमने चिकित्सा चन्द्रोदय, दूसरे भागके पृष्ठ २६७-२७२ में विस्तारसे लिखा है। उसे अवश्य पढ़ लेना चाहिये।

(१४) सिरसकी छाल, नीमकी छाल, करंजकी छाल और तोरई—इनको एकत्र, गायके मूत्रमें, पीसकर प्रयोग करनेसे स्थावर और जंगम—दोनों तरहके विष शान्त हो जाते हैं।

नोट—मुख्यतया विष दो प्रकारके होते हैं—(१) स्थावर, और (२) जंगम। जो विष जमीनकी खानों और वनस्पतियोंसे पैदा होते हैं, उन्हें स्थावर विष कहते हैं। जैसे, संखिया और हरताल वगैरः तथा कुचला, सींगीमोहरा, कनेर और धतूरा प्रभृति। जो विष साँप, बिच्छू, मकड़ी, कनखजूरे प्रभृति चलने फिरने वाले जन्तुओंमें होते हैं, उन्हें जंगम विष कहते हैं।

(१५) दाख, असगन्ध, गेरू, सफेद कोयल, तुलसीके पत्ते, कैथके पत्ते, बेलके पत्ते और अनारके पत्ते—इन सबको एकत्र पीसकर और "शहद" में मिलाकर सेवन करने से "मण्डली" सर्पोंका विष नष्ट हो जाता है।

नोट—यह खानेकी दवा है। सर्प-विषपर, खासकर मण्डली सर्पके विषपर, अत्युत्तम है। इसमें जो "सफेद कोयल" लिखी है, वह स्वयं सर्प-विष-नाशक है। कोयल दो तरहकी होती हैं—(१) नीली, और (२) सफेद। हिन्दीमें सफेद कोयल और नीली कोयल कहते हैं। संस्कृतमें अपराजिता, नील अपराजिता और विष्णुक्रान्ता आदि कहते हैं। बँगलामें हापरमाली, अपराजिता या

नील अपराजिता कहते हैं। मरहटीमें गोकर्ण और गुजरातीमे धोली गरणी कहते है। इसके सम्बन्धमें निघण्टुमें लिखा है:—

आमं पित्तरुजं चैव शोथं जन्तून्व्रणं कफम् ।
ग्रहपीडा शीर्षरोगं विषं सर्पस्य नाशयेत ॥

सफेद कोयल—आम, पित्तरोग, सूजन, कृमि, घाव, कफ, ग्रहपीडा, मस्तक-रोग और साँपके विषको नाश करती है।

(१६) सिरसके पत्तोंके रसमें सफेद मिर्चोंको पीसकर मिला दो और मसलकर सुखा लो। इस तरह सात दिनमें सात बार करो। जब यह काम कर चुको, तब उसे रख दो। साँपके काटे हुए आदमी को इस दवाके पिलाने, इसकी नस्य देने और इसीको आँखोंमें आँजने से निश्चय ही बड़ा उपकार होता है। परीक्षित है।

नोट—केवल सिरसके पत्तोको पीस कर, साँपके काटे स्थानपर लेप करनेसे साँपका ज़हर उतर जाता है। इसको हिन्दीमें सिरस, बँगलामे शिरीष गाछ, मरहटीमें शिरसी और गुजरातीमे सरसडियो और फारसीमे दरख़्ते जकरिया कहते हैं। निघण्टुमे लिखा है:—

शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघु ।
दोषशोथ विसर्पघ्नः कासव्रण विषापहः ॥

सिरस मधुर, गरम नहीं, कड़वा, कसैला और हलका है। यह दोष, सूजन, विसर्प, खाँसी, घाव और ज़हरको नाश करता है।

(१७) बाँझ-ककोड़ेकी जड़को बकरीके मूत्रकी भावना दो। फिर इसे काँजीमें पीसकर, साँपके काटे हुएको इसकी नस्य दो। इस नस्यसे साँपका विष दूर हो जाता है।

नोट—बाँझ ककोडेकी गाँठ पानीमे घिसकर पिलाने और काटे हुए स्थानपर लगानेसे साँप, बिच्छू, चूहा और बिल्लीका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(१८) घरका धूआँ, हल्दी, दारुहल्दी और चौलाईकी जड़—इन चारोंको एकत्र पीस कर, दही और घीमें मिला कर, पीनेसे वासुकि साँपका काटा हुआ भी आराम हो जाता है।

(१९) लिहसौड़ा, कायफल, बिजौरा नीबू, सफेद कोयल, सफेद पुनर्नवा और चौलाईकी जड़—इन सबको एकत्र पीस लो। इस दवाके सेवन करनेसे दर्वीकर और राजिल जातिके साँपोंका विष नष्ट हो जाता है। यह बड़ी उत्तम दवा है।

(२०) सम्हालूकी जड़के स्वरसमें निर्गुण्डीकी भावना देकर पीनेसे सर्प विष उतर जाता है।

(२१) सेंधानोन, कालीमिर्च और नीमके बीज—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीस कर, फिर शहद और घीमें मिला कर, सेवन करनेसे स्थावर और जंगम दोनों तरहके विष नष्ट हो जाते हैं।

(२२) चार तोले कालीमिर्च और एक तोले चाँगेरीका रस—इन दोनोंको एकत्र करके और घीमें मिलाकर पीने और लेप करनेसे साँपका उग्र विष भी शान्त हो जाता है।

नोट—चाँगेरीको हिन्दीमें चूका, बँगलामें चूकापालङ, मरहटीमें आंवटचुका और फारसीमें तुरशक कहते हैं। यह बड़ा खट्टा स्वादिष्ट शाक है। इसके प्रतिनिधि जरश्क और अनार हैं।

(२३) बंगसेनमें लिखा है, मनुष्यका मूत्र पीनेसे घोर सर्प-विष नष्ट हो जाता है।

(२४) परवलकी जड़की नस्य देनेसे कालरूपी सर्पका डसा हुआ भी बच जाता है।

नोट—इस नुसखेको वृन्द और बङ्गसेन दोनोंने लिखा है।

(२५) पिण्डी तगरको, पुष्य नक्षत्रमें, उखाड़ कर, नेत्रोंमें लगानेसे साँपका काटा हुआ आदमी मर-कर भी बच जाता है। इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है।

नोट—तगर दो तरहकी होती है—(१) तगर, और (२) पिण्डी तगर। पिण्डी तगरको नन्दी तगर भी कहते हैं। दोनों तगर गुणमें समान हैं। पिण्डी

तगरके वृक्ष हिमालय प्रभृति उत्तरीय पर्वतोंपर बहुत होते हैं। वृक्ष बड़ा होता है, पत्ते कनेर-से लम्बे-लम्बे और फूल छोटे-छोटे, पीले रङ्गके, पाँच पंखड़ीवाले होते हैं। यद्यपि दोनों ही तगर विष नाशक होती हैं, पर सर्प विषके लिये पिण्डी तगर विशेष गुणकारी है। बँगलामें तगर पादुका, गुजराती और मरहटी मे पिण्डीतगर और लैटिनमें गारडिनियाफ्लोरिबण्डा कहते हैं।

(२६) बाग़की कपासके पत्तोंका चार या पाँच तोले स्वरस साँपके काटे आदमीको पिलाने और उसीको काटे स्थानपर लगाने से ज़हर नष्ट हो जाता है। अगर यही स्वरस पिचकारी द्वारा शरीरके भीतर भी पहुँचाया जाय, तो और भी अच्छा। एक विश्वासी मित्र इसे अपना परीक्षित नुसख़ा बताते हैं। हमें उनकी बातमें ज़रा भी शक नहीं।

नोट—कपासके पत्ते और राई—दोनोंको एकत्र पीस कर, बिच्छूके काटे स्थानपर लेप करनेसे बिच्छूका विष नष्ट हो जाता है। रविवारके दिन खोद कर लाई हुई कपासकी जड़ चबानेसे भी बिच्छूका ज़हर उतर जाता है।

(२७) सफेद कनेरके सूखे हुए फूल ६ माशे, कड़वी तम्बाकू ६ माशे और इलायचीके बीज २ माशे,—इन तीनोंको महीन पीस कर कपड़ेमें छान लो। इस नस्यको शीशीमें रख दो। इस नस्यको सुँघनी तमाखूकी तरह सूँघनेसे साँपका विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(२८) साँपके काटे आदमीको नीमके, ख़ासकर कड़वे नीमके, पत्ते और नमक अथवा कड़वे नीमके पत्ते और काली मिर्च खूब चबवाओ। जब तक ज़हर न उतरे, इनको बराबर चबवाते रहो। जब तक ज़हर न उतरेगा, तब तक इनका स्वाद साँपके काटे हुएको मालूम न होगा, पर ज्योंही ज़हर नष्ट हो जायगा, इनका स्वाद उसे मालूम देने लगेगा। साँपने काटा है या नहीं काटा है, इसकी परीक्षा करनेका यही सर्वोत्तम उपाय है। दिहातवालोंको जब सन्देह होता है, तब वह नीमके पत्ते चबवाते हैं। अगर ये कड़वे लगते हैं, तब तो समझा जाता है कि

साँपने नहीं काटा, ख़ाली वहम है। अगर कड़वे नहीं लगते, तब निश्चय हो जाता है कि, साँपने काटा है। इन पत्तोंसे कोरी परीक्षा ही नहीं होती, पर रोगीका विष भी नष्ट होता है। साँपके काटेपर कड़वे नीमके पत्ते रामवाण दवा है। यद्यपि नीमके पत्तोंसे सभी साँपोंके काटे हुए मनुष्य आराम नहीं हो जाते, पर इसमें शक नहीं कि, अनेक आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—नीमके पत्तोंका या छालका रस बारम्बार पिलानेसे भी साँपका ज़हर उतर जाता है। अगर आप यह चाहते हैं, कि साँपका जहर हमपर असर न करे, तो आप नित्य—सवेरे ही—कड़वे नीमके पत्ते सदा चबाया करें।

(२६) सेंधानोन १ भाग, काली मिर्च १ भाग और कड़वे नीमके फल २ भाग,—इन तीनोंको पीसकर, शहद या घीके साथ खिलानेसे स्थावर और जंगम दोनों तरहके विष उतर जाते हैं।

(३०) साँपके काटे आदमीको बहुत-सा लहसन, प्याज़ और राई खिलाओ। अगर कुछ भी न हो, तो यह घरेलू दवा बड़ी अच्छी है।

नोट—राईसे साँप बहुत डरता है। अगर आप साँपकी राहमें राईके दाने फैला दें, तो वह उस राहसे न निकलेगा। अगर आप राईको नौसादर और पानीमें घोलकर साँपके बिल या बाँबीमें डाल दें तो वह बिल छोड़कर भाग जायगा।

(३१) हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है:—अगर साँपका काटा हुआ बेहोश हो, पर मरा न हो, तो "कुचला" पानीमें पीसकर उसके गले में डालो और थोड़ा-सा कुचला पीसकर उसकी गर्दन और शरीरपर मलो; इन उपायोंसे वह अवश्य होशमें आ जायगा।

(३२) एक हकीमी पुस्तकमें लिखा है, मदारकी तीन कोंपलें गुड़में लपेटकर खिलानेसे साँपका काटा आराम हो जाता है; पर मदारकी कोंपलें खिलाकर, ऊपरसे घी पिलाना परमावश्यक है।

(३३) मदारकी चार कली, सात काली मिर्च और एक माशे इन्द्रायण—इन तीनोंको पीसकर खिलानेसे साँपका काटा आराम हो जाता है।

(३४) साँपके काटेको मदारकी जड़ पीस-पीसकर पिलानेसे साँपका ज़हर उतर जाता है ।

नोट—कोई-कोई मदारकी जड़ और मदारकी रूई—दोनों ही पीसकर पिलाते हैं । हाँ, अगर यह दवा पिलाई जाय, तो साथ-साथ ही साँपके काटे हुए स्थान पर मदारका दूध टपकाते भी रहो । जब तक टपकाया हुआ दूध न सूखे, दूध टपकाना बन्द मत करो । जब ज़हरका असर न रहेगा या ज़हर उतर जायगा; टपकाया हुआ मदारका दूध सूखने लगेगा ।

(३५) गायका घी ४० माशे और लाहौरी नमक ८ माशे—दोनों को मिलाकर खानेसे साँपका ज़हर एवं अन्य विष उतर जाते हैं ।

(३६) थोड़ा-सा कुचला और काली मिर्च पीसकर खानेसे साँप का ज़हर उतर जाता है ।

(३७) काली मिर्च और जमालगोटेकी गरी सात-सात माशे लेकर, तीन काग़ज़ी नीबुओंके रसमें खरल करके, मिर्च-समान गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंको पानीमें पीसकर आँजने और दो-तीन गोली खिलानेसे साँपका काटा आदमी निश्चय ही आराम हो जाता है ।

(३८) कसौंदीके बीज महीन पीसकर आँखोंमें आँजनेसे साँप का ज़हर उतर जाता है ।

(३९) "इलाज़ुल ग़ुर्बा" में लिखा है, एक खटमल निगल जाने से साँपका ज़हर उतर जाता है ।

(४०) तेलिया सुहागा २० माशे भूनकर और तेलमें मिलाकर पिला देनेसे साँपका काटा आदमी आराम हो जाता है ।

नोट—संखियाके साथ सुहागा पीस लेनेसे संखियाका विष मारा जाता है, इसीलिये विष खाये हुए आदमीको घीके साथ सुहागा पिलाते हैं । कहते हैं, सुहागा सब तरहके ज़हरोंको नष्ट कर देता है ।

(४१) चूहेका पेट फाड़कर साँपके काटे स्थानपर बाँध देनेसे ज़हर नष्ट हो जाता है । कहते हैं, यह ज़हरको सोख लेता है ।

(४२) सिरसके पेड़की छाल, सिरसकी जड़की छाल, सिरसके बीज और सिरसके फूल चारों,—पाँच-पाँच माशे लेकर महीन पीस लो। इसे एक-एक चम्मच गोमूत्रके साथ दिनमें तीन बार पिलाने से साँपका ज़हर उतर जाता है।

नोट—सिरसकी छाल, जो पेड़में ही काली हो जाती है, बड़ी गुणकारी होती है। सिरसकी ८ माशे छाल, हर रोज़ तीन दिन तक साँठी चावलोंके धोवन के साथ पीनेसे एक साल तक जहरीले जानवरोंका विष असर नहीं करता। ऐसे मनुष्यको जो जानवर काटता है, वह खुद ही मर जाता है।

(४३) जामुनकी अढ़ाई पत्ती पानीमें पीसकर पिला देनेसे सर्प-विष उतर जाता है।

(४४) दो माशे ताज़ा केंचुआ पानीमें पीसकर पिला देनेसे सर्प-विष नष्ट हो जाता है।

(४५) साँप या बावले कुत्ते अथवा अन्य जहरीले जानवरोंके काटे हुए स्थानोंपर फौरन पेशाब कर देना बड़ा अच्छा उपाय है। वैद्य और हकीम सभी इस बातको लिखते हैं।

(४६) समन्दर फल महीन पीसकर, दोनों नेत्रोंमें आँजनेसे साँपका जहर जाता है।

(४७) महुआ और कुचला पानीमें पीसकर, काटे हुए स्थान पर इसका लेप करनेसे साँपका जहर उतर जाता है।

(४८) गगन-धूल पीसकर नाकमें टपकानेसे साँपका ज़हर उतर जाता है।

(४९) कसौंदीकी जड़ ४ माशे और काली मिर्च २ माशे—पीस कर खानेसे साँपका ज़हर उतर जाता है।

(५०) कमलको कूट पीस और पानीमें छानकर पिलानेसे क़य होतीं और सर्प-विष उतर जाता है।

(५१) सँभालूका फल और हींगके पेड़की ज़ड़—इन दोनोंके सेवन करनेसे साँपका ज़हर नष्ट हो जाता है।

(५२) "तिब्बे अकबरी"में लिखा है, तुरन्तकी तोड़ी हुई ताज़ा ककड़ी साँपके काटेपर अद्भुत फल दिखाती है।

(५३) बकरीकी मैंगनी सभी ज़हरीले जानवरोंके काटनेपर लाभदायक है।

(५४) "तिब्बे अकबरी"में लिखा है, लाग़ियाका दूध काले साँप के काटनेपर खूब गुण करता है।

नोट—लाग़िया एक दुधारी औषधिका दूध है। इसके पत्ते गोल और पीले तथा फूल भी पीला होता है। यह दूसरे दर्जेका गर्म और रूखा है तथा बलवान रेचक और अत्यन्त वमनप्रद है; यानी इसके खानेसे कय और दस्त बहुत होते हैं। कतीरा इसके दर्पको नाश करता है।

(५५) नीबूके नौ माशे बीज खानेसे समस्त जानवरोंका विष उतर जाता है।

(५६) करिहारीकी गाँठको पानीमें पीसकर नस्य लेनेसे साँप का ज़हर उतर जाता है।

(५७) घरका धूआँ, हल्दी, दारुहल्दी और जड़ समेत चौलाई— इन सबको दहीमें पीसकर और घी मिलाकर पिलानेसे साँपका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(५८) बड़के अंकुर, मँजीठ, जीवक, ऋषभक, बला—खिरेंटी, गम्भारी और मुलहटी,—इन सबको महीन पीसकर पीनेसे साँपका विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—इस नुसखे और नं० ८ नुसखेमें यही भेद है, कि उसमे बला और मुलहटीके स्थानमे "मिश्री" है।

(५९) पण्डित मुरलीधर शर्मा राजवैद्य अपनी पुस्तकमें लिखते हैं; अगर बन्ध बाँधने और चीरा देकर खून निकालनेसे कुछ लाभ दीखे तो खैर, नहीं तो "नागनबेल"की जड़ एक तोले लेकर, आधपाव पानी में पीसकर; साँपके काटे हुएको पिला दो। इसके पिलानेसे क़य होती हैं और विष नष्ट हो जाता है। अगर इतनेपर भी कुछ ज़हर रह जाय

तो ६ माशे यही जड़ पानीके साथ पीस कर और आधापाव पानीमें घोल कर फिर पिला दो। इससे फिर वमन होगी और जो कुछ विष बचा होगा, निकल जायगा। अगर एक दफा पिलाने से आराम न हो, तो कमोबेश मात्रा घण्टे-घण्टेमें पिलानी चाहिये। इस जड़ीसे साँप का काटा हुआ निस्सन्देह आराम हो जाता है। राजवैद्यजी लिखते हैं; हमने इस जड़ीको अनेक बार आज़माया और ठीक फल पाया। वह इसे कुत्तेके काटे और अफीमके विषपर भी आज़मा चुके हैं।

सूचना—दर्वीकर या फनवाले साँपके लिये इसकी मात्रा १ तोलेकी है। कम जहर वाले साँपोंके लिये मात्रा घटा कर लेनी चाहिये। १ तोले जड़को दस तोले पानी काफी होगा। जड़ीको पानीके साथ सिलपर पीस कर, पानीमें घोल लेना चाहिये। अगर उम्र पूरी न हुई होगी, तो इस जड़ीके प्रभावसे हर तरहके साँपका काटा हुआ मनुष्य बच जायगा।

नोट—नागन बेल एक तरहकी बेल होती है। इसकी जड़ बिल्कुल साँपके आकारकी होती है। यह स्वादमें बहुत ही कड़वी होती है। मालवेमें इसे "नागनबेल" कहते हैं और वहींके पहाड़ोंमें यह पाई भी जाती है।

एक निघण्टुमें "नागदस" नामकी दवा लिखी है। लिखा है—यह बिल्कुल साँपके समान लकड़ी है, जिसे हिन्दुस्तानके फकीर अपने पास रखते हैं। इसका स्वरूप काला और स्वाद कुछ कड़वा लिखा है। लिखा है—यह साँपके ज़हरको नष्ट करती है। हम नहीं कह सकते, नागन बेल और नागदस—दोनों एक ही चीज़के नाम हैं या अलग-अलग। पहचान दोनोंकी एक ही मिलती है।

नागदमनी, जिसे नागदौन, या नागदमन कहते हैं, इनसे अलग होती है। यद्यपि वह भी सर्प-विष, मकड़ीका विष एवं अन्य विष नाशक लिखी है। पर उसके वृक्ष तो अनन्नासके जैसे होते है। दवाके काममें नागनबेलकी जड़ ली जाती है, पर नागदौनके पत्ते लिये जाते हैं।

नागनबेलके अभावमें सफेद पुनर्नवासे काम लेना बुरा नहीं है। इससे भी अनेक सर्पके काटे आदमी बच गये है, पर यह नागनबेलकी तरह १०० में १०० को आराम नहीं कर सकता।

(६०) सफेद पुनर्नवा या विषखपरेकी जड़ ६ माशे से १ तोले तक पानीमें पीस और घोलकर पिलाने से और यही जड़ी हर समय मुँह

में रखकर चूसते रहने तथा इसी जड़को पीसकर साँपके काटे स्थानपर लेप करने से अनेक रोगी बच जाते हैं।

नोट—हिन्दीमें सफेद पुनर्नवा, विपखपरा और साँठ कहते हैं। बंगालमें श्वेतपुणया कहते हैं। इसके सेवनसे सूजन, पाण्डु, नेत्ररोग और विष-रोग प्रभृति अनेक रोग नाश होते हैं।

(६१) आकके फूलोंके सेवन करने से हलके ज़हर वाले साँपों का ज़हर नष्ट हो जाता है।

(६२) अगर जल्दीमें कुछ भी न मिले, तो एक तोले फिटकिरी पीसकर साँपके काटेको फँकाओ और ऊपर से दूध पिलाओ। इस-से बड़ा उपकार होता है, क्योंकि खून फट जाता है और जल्दी ही सारे शरीरमें नहीं फैलता।

(६३) ज़हरमुहरेको गुलाब-जलके साथ पत्थरपर घिसो और एक दफामें कोई एक रत्ती बराबर साँपके काटे हुएको चटाओ। फिर इसी को काटे स्थानपर भी लगा दो। इसके चटाने से क़य होगी, जब क़य हो जाय, फिर चटाओ। इस तरह बार-बार क़य होते ही इसे चटाओ। जब इसके चटाने से क़य न हो, तब समझो कि अब ज़हर नहीं रहा।

नोट—स्थावर और जंगम दोनो तरहके ज़हरोंके नाश करनेकी सामर्थ्य जैसी जहरमुहरेमे है वैसी और कम चीजोमें है। इसकी मात्रा २ रत्तीकी है, पर एक बारमें एक गेहूँसे जियादा न चटाना चाहिये। हां, कय होनेपर, इसे बारम्बार चटाना चाहिये। जहर नाश करनेके लिये कय और दस्तोंका होना परमावश्यक है। इसके चाटनेसे खूब कय होती हैं और पेटका सारा विष निकल जाता है। जब पेटमे जहर नहीं रहता, तब इसके चाटनेसे कय नहीं होतीं।

जहरमुहरा दो तरहके होते हैं—(१) हैवानी, और (२) मादनी। हैवानी जहरमुहरा मैंडक वगैरःसे निकाला जाता है और मादनी जहरमुहरा खानोंमें पाया जाता है। यह एक तरहका पत्थर है। इसका रंग ज़र्दी माइल सफेद होता है। नीमकी पत्तियों और जहरमुहरेको एक साथ मिलाकर पीसो और फिर चक्खो। अगर नीमका कड़वापन जाता रहे, तो समझो कि जहरमुहरा असली है। यह पसारियों और अत्तारोंके यहाँ मिलता है। खरीद कर परीक्षा अवश्य कर लो, जिससे समयपर धोखा न हो।

सूचना—विष खानेवाले और हैजे वालेको जहरमुहरा बड़ी जल्दी आराम करता है। हैजा तो १।२ मात्रामें ही आराम हो जाता है। देनेकी तरकीब वही, जो ऊपर लिखी है।

(६४) साँपके काटे आदमीको, बिना देर किये, तीन-चार माशे नौसादर महीन पीसकर और थोड़ेसे शीतल जलमें घोलकर पिला दो। इसके साथ ही उसे तीन-चार आदमी कसकर पकड़ लो और एक आदमी ऐमोनिया सुँघाओ। ईश्वर चाहेगा, तो रोगी फौरन ही आराम हो जायगा। कई मित्र इसे आज़मूदा कहते हैं।

नोट—ऐमोनिया अँग्रेज़ी दवाखानोंमें तैयार मिलता है। लाकर घरमें रख लेना चाहिये। इससे समयपर बडे काम निकलते हैं। अभी इसी सालकी घटना है। हमारी ज्येष्ठा कन्या चपलादेवीका विवाह था। हमारे एक मित्र मय अपनी सहधर्मिणीके लखनौसे आये थे। फेरोंके दिन, औरोंके साथ, उनकी पत्नीने भी निराहार व्रत किया। रातके बारहसे ऊपर बज गये। सुना गया कि, वह बेहोश हो गई हैं। हमारे वह मित्र और उनके चचा घबरा रहे थे। रोगिणीका साँस बन्द हो गया, शरीर शीतल और लकड़ी हो गया। सब कहने लगे, यह तो खतम हो गई। हमने कहा, घबराओ मत, हमारे बक्समेंसे अमुक शीशी निकाल लाओ। शीशी लाई गई, हमने काग खोलकर उनकी नाकके सामने रखी। कोई २' मिनट बाद ही रोगिणी हिली और उठकर बैठ गई। कहाँ तो शरीरकी सुध ही नहीं थी; लाज शर्मका ख़याल नहीं था; कहाँ दवाका असर पहुँचते ही उठ कर कपड़े ठीक कर लिये। सब कोई आश्चर्यमें डूब गये। हमने कहा—आश्चर्य की कोई बात नहीं है। "ऐमोनिया" ऐसी ही प्रभावशाली चीज़ है।

कई बार हमने इससे भूतनी लगी हुई ऐसी औरतें आराम की हैं, जिन्हें अनेक स्याने-भोपे और ओझे आराम न कर सके थे। दाँत-डाढ़के दर्द और सिर की भयानक पीड़ामें भी इसके सुँघानेसे फौरन शान्ति मिलती है।

अगर समयपर ऐमोनिया न हो, तो आप ६ माशे नौसादर और ६ माशे पानमें खानेका चूना—दोनोंको मिलाकर एक अच्छी शीशी या कपड़ेकी पोटली में रखले और सुँघावें, फौरन चमत्कार दीखेगा। यह भी ऐमोनिया ही है, क्योंकि ऐमोनिया बनता इन्हीं दो चीज़ोंसे है। फ़र्क़ इतना ही है कि घरका ऐमोनिया समयपर काम तो उतना ही देता है, पर विलायत वालेकी तरह टिकता नहीं। बहुतसे आदमी हथेलीमें पिसा हुआ चूना और नौसादर बराबर-बराबर लेकर,

ज़रासे पानीके साथ हथेलियोंमें ही रगड़ कर सुँघाते हैं। इसकी तैयारीमें पाँच मिनटसे अधिक नहीं लगते।

(६५) सूखी तमाखू थोड़ी-सी पानीमें भिगो दो, कुछ देर बाद उसे मलकर साँपके काटे हुएको पिलाओ। इस तरह कई बार पिलानेसे साँपका काटा हुआ बच जाता है।

नोट—कहते हैं, ऊपरकी विधिसे तमाखू भिगोकर और ३ घण्टे बाद उसका रस निचोड़कर, उस रसको हाथोंमें खूब लपेट कर, मनुष्य साँपको पकड़ सकता है। अगर यही रस साँपके मुँहमें लगा दिया जाय, तो उसकी काटनेकी शक्ति ही नष्ट हो जाय।

(६६) नीलाथोथा महीन पीसकर और पानीमें घोलकर पिलाने से साँपका काटा बच जाता है।

(६७) आमकी गुठलीके भीतरकी बिजलीको पीसकर, साँपके काटे हुएको फँका दो और ऊपरसे गरम पानी पिला दो। इस दवा से क़य होगी। क़य होनेसे ही विष नष्ट हो जायगा। जब क़य होना बन्द हो जाय, दवा पिलाना बन्द कर दो। जब तक क़य होती रहें, इस दवाको बारम्बार फँकाओ। एक बार फँकानेसे ही आराम नहीं हो जायगा। एक मित्रका परीक्षित योग है।

(६८) बानरी घासका रस निकालकर साँपके काटे हुए आदमी को पिलाओ। इसी रसको उसके नाक और कानोंमें डालो तथा इसीको साँपके काटे हुए स्थानपर लगाओ। इस तरह करनेसे साँप का ज़हर फौरन उतर जाता है।

नोट—यह नुसख़ा हमें "वैद्यकल्पतरु" में मिला है। लेखक महोदय इसे अपना परीक्षित कहते हैं। बानरी घासको बँदरिया या कुत्ता घास कहते है। इसका पौधा काँगनीके जैसा होता है, और काँगनीके समान ही बाल लगती हैं। यह कपड़ा छूते ही चिपट जाती है और वर्षाकालमें ही पैदा होती है, अतः इस घासका रस निकाल कर शीशीमें रख लेना चाहिये।

(६९) "वृन्दवैद्यक" में लिखा है,—लोग कहते हैं, जिसे साँप काटे वह अगर उसी समय साँपको पकड़कर काट खाय अथवा तत्काल

मिट्टीके ढेलेको काट खाय तो साँपका जहर नहीं चढ़ता। किसी-किसी ने उसी समय दाँतोंसे लोहेको काट लेना यानी दबा लेना भी अच्छा लिखा है।

नोट—सर्पके काटते ही, सर्पको पकड़ कर काट खाना सहज काम नहीं। इसके लिये बड़े साहस और हिम्मतकी दरकार है। यह काम सब किसीसे हो नहीं सकता। हाँ, जिसे कोई महा भयंकर साँप काट ले, वह यदि यह समझकर कि मैं बचूँगा तो नहीं, फिर इस साँपको पकड़ कर काट लेनेसे और क्या हानि होगी—हिम्मत करे तो साँपको दाँतोंसे काट सकता है।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है, कि साँपको काटनेसे मनुष्य किस तरह बच सकता है? सुनिये, हमारे ऋषि-मुनियोंने जो कुछ लिखा है; वह उनका परीक्षा किया हुआ है—गंजेड़ियोंकी सी थोथी बातें नहीं। बात इतनी ही है, कि उन्होंने अपनी लिखी बातें अनेक स्थलोंमें खूब खुलासा नही लिखीं; जो कुछ लिखा है, संक्षेपमें लिख दिया है। मालूम होता है, साँपके खूनमें विष विनाशक शक्ति है। जो मनुष्य दाँतोंसे साँपको काटेगा, उसके मुखमे कुछ-न-कुछ खून अवश्य जायगा। खून भीतर पहुँचते ही विषके प्रभावको नष्ट कर देगा। आजकलके डाक्टर परीक्षा करके लिखते हैं, कि साँपके काटे स्थानपर साँपके खूनके पछने लगानेसे साँपका विष उतर जाता है। बस, यही बात वह भी है। इस तरह भी साँपका खून विषको नष्ट करता है और उस तरह भी। उसी साँपको काटनेकी बात ऋषियोंने इसलिये लिखी है कि, जैसा ज़हरी साँप काटेगा, उस साँपके खूनमें वैसे जहरको नाश करनेकी शक्ति भी होगी। दूसरे साँपके खूनमें विष नाशक शक्ति तो होगी, पर कदाचित् वैसी न हो। पर साँपको काट खाना—है बड़ा भारी कलेजेका काम। अनेक बार देखा है, जब साँप और नौलेकी लड़ाई होती है, तब साँप भी नौलेपर अपना बार करता है और उसे काट खाता है; पर चूँकि नौला साँपसे नहीं डरता, इसलिये वह भी उसपर दाँत मारता है, इस तरह साँपका खून नौलेके शरीरमें जाकर, साँपके विषको नष्ट कर देता होगा। मतलब यह, कि ऋषियोंकी साँपको काट खानेकी बात फिजूल नही।

हाँ, साँपके काटते ही, मिट्टीके ढेलेको काट खाना या लोहेको दाँतोंसे दबा लेना कुछ मुश्किल नहीं। इसे हर कोई कर सकता है। अगर, परमात्मा न करे, ऐसा मौका आ जाय, साँप काट खाय, तो मिट्टीके ढेले या लोहेको काटनेसे न चूकना चाहिये।

(७०) कालीमिर्चोंके साथ गरम-गरम घी पीने से साँपका ज़हर उतर जाता है ।

नोट—अगर समयपर और कुछ उपाय जल्दीमें न हो सके, तो इस उपाय में तो न चूकना चाहिये । यह उपाय मामूली नहीं, बड़ा अच्छा है और ये दोनों चीज़ें हर समय गृहस्थके घरमें मौजूद रहती हैं ।

(७१) शून्यताका ध्यान करनेसे भी साँपका ज़हर शून्यभावको प्राप्त होता है; यानी ज़रा भी नहीं चढ़ता । यद्यपि इस बातकी सचाई में ज़रा भी शक नहीं, पर ऐसा ध्यान—ध्यानके अभ्यासीके सिवा—हर किसीसे हो नहीं सकता ।

(७२) बाँयें हाथकी अनामिका अँगुली द्वारा कानके मैलका लेप करनेसे भयङ्कर विष नष्ट हो जाता है । चक्रदत्तने लिखा है:—

श्लेष्मणः कर्णगूथस्य वामानामिकया कृतः ।
लेपो हन्याद्विषं घोरं नृमूत्रासेचनंतथा ॥

बाँये हाथकी अनामिका अँगुली द्वारा कानके मैलका लेप करने और आदमीका पेशाब सींचनेसे साँपका घोर विष भी नष्ट हो जाता है ।

नोट—कानके मैलका लेप करनेकी बात तो नहीं जानते, पर यह बात प्रसिद्ध है कि, साँप वग़ैरः के काटते ही अगर मनुष्य काटी हुई जगहपर तत्काल पेशाब कर दे, तो घोर विषसे भी बच जाय । हाँ, एक बात और है—

वंगसेनमें लिखा है:—

श्लेष्मणः कर्णरूढस्य वामानासिक या कृतः ।
नृमूत्रं सेवितं घोरं लेपं हन्याद्विषं तथा ॥

कानके मैलको नाककी बायीं ओर (?) लेप करने से और मनुष्य का पेशाब सेवन करने से घोर विष नष्ट हो जाता है ।

(७३) सिरसके पत्तोंके स्वरसमें, सहँजनेके बीजोंको, सात दिन तक भावना देनेसे साँपके काटेकी उत्तम दवा तैयार हो जाती है । यह दवा नस्य, पान और अञ्जन तीनों कामोंमें आती है । वृन्दकी लिखी हुई इस दवाके उत्तम होनेमें ज़रा भी शक नहीं ।

नोट—सिरसके पत्ते लाकर सिलपर पीस लो और कपड़ेमें निचोड़ कर स्व-रस निकाल लो। फिर इस रसमें सहँजनेके बीजोंको भिगो दो और सुखा लो। इस तरह सात दिन तक नित्य ताजा सिरसके पत्तोंका रस निकाल-निकालकर बीजोंको भिगोओ और सुखाओ। आठवें दिन उठाकर शीशीमें रख लो। इस दवाको पीसकर नाकमें सुँघाने या फुंकनीसे चढ़ाने, आँखोंमें आँजने और इसीको पानीमें घोलकर पिलानेसे साँपका जहर निश्चय ही नष्ट हो जाता है। वैद्यों और गृहस्थोंको यह दवा घरमें तैयार रखनी चाहिये, क्योंकि समयपर यह बन नहीं सकती।

(७४) करंजुवेके फल, सोंठ, मिर्च, पीपर, बेलकी जड़, हल्दी, दारुहल्दी और सुरसाके फूल,—इन सबको बकरीके मूत्रमें पीस-कर आँखोंमें आँजने से, सर्प-विपसे बेहोश हुआ मनुष्य होशमें आ जाता है। वृन्द।

(७५) आकके पत्तेमें जो सफेदी-सी होती है, उसे नाखूनों से खुर्च-खुर्च कर एक जगह जमा कर लो। फिर उसमें आकके पत्तोंका दूध मिलाकर घोट लो और चने-समान गोलियाँ बना लो। साँपके काटे हुएको, बीस-बीस या तीस-तीस मिनटपर, एक-एक गोली खिलाओ। छै गोली खाने तक रोगीका मुँह मीठा मालूम होगा, पर सातवीं गोली कड़वी मालूम होगी। जब गोली कड़वी लगे, आप समझलें कि जहर नष्ट हो गया, तब और गोली न दें। परीक्षित है।

(७६) फिटकरी पीसकर और पानीमें घोलकर पिलाने से भी साँपके काटेको बड़ा लाभ होता है।

विशेष चिकित्सा ।

दर्वीकर और राजिलकी अगद ।

ल्हिसौड़े, कायफल, बिजौरा नीबू, श्वेतस्पदा (श्वेतगिरिह्वा), किणही (किणिही) मिश्री और चौलाई—इनको मधुयुक्त गायके सींगमें भर कर, ऊपरसे सींगसे बन्दकर, १५ दिन रक्खो और काममें लाओ। इससे दर्वीकर और राजिलका विष शान्त हो जाता है।

मण्डली सर्पके विषकी अगद ।

मुनक्का, सुगन्धा (नाकुली), शल्लकी (नगवृत्ति)—इन तीनोंको पीसकर, इन तीनोंके समान मँजीठ मिला दो। फिर दो भाग तुलसी के पत्ते और कैथ, बेल, अनारके पत्तोंके भी दो-दो भाग मिला दो। फिर सफेद सँभालू, अंकोटकी जड़ और गेरू—ये आधे-आधे भाग मिला दो। अन्तमें सबमें शहद मिलाकर, सींगमें भर दो और सींग से ही बन्द करके १५ दिन रख दो। इस अगदको घी, शहद और दूध वगैरः में मिलाकर पिलाने, सुँघाने, घावपर लगाने और अंजन करने से मण्डली सर्पका विष विशेषकर नष्ट हो जाता है।

नोट—सुश्रुतमें अञ्जनको १ माशे, नस्यको २ माशे, पिलानेको ४ माशे और वमनको ७ माशे दवाकी मात्रा लिखी है।

सूचना—पीछे लिखे सर्प-विषनाशक नुसख़ोंमेंसे नं० ८ और नं० १९ मण्डली सर्पके विषपर अच्छे हैं।

गुहेरेके विषकी चिकित्सा।

वर्णन ।

गुहेरे पाँच तरहके होते हैं। कहते हैं, इसका विष सर्पकी अपेक्षा भी मारक होता है। "सुश्रुत" में लिखा है, प्रति-सूर्य, पिङ्गभास, बहुवर्ण, महाशिरा और निरूपम—इस तरह पाँच प्रकारके गुहेरे होते हैं। गुहेरेके काटनेसे साँपके समान वेग होते तथा नाना प्रकारके रोग और गाँठें या गिलटियाँ हो जाती हैं।

इसको बहुत कम लोग जानते हैं, क्योंकि यह जीव बहुत कम पैदा होता है। यह घोर बनोंमें होता है। सुश्रुतके टीकाकार डल्लन मिश्र लिखते हैं:—

कृष्णसर्पेण गोधायां भवेद्यस्तु चतुष्पदः।
सर्पो गोधेरको नाम तेन दष्टो न जीवति॥

काले साँप और गोहके संयोगसे गुहेरा पैदा होता है। इसके चार पैर होते हैं। इसका काटा हुआ नहीं जीता।

वाग्भट्टमें लिखा है:—

गोधासुतस्तु गौधेरो विषे दर्वीकरैः समः।

गोहका पुत्र गुहेरा होता है और विषमें वह दर्वीकर साँपोंके समान होता है।

गुहेरा गोहके जैसा होता है। गोहपर काली-काली लकीरें नहीं होतीं; पर इसपर काली-काली धारियाँ होती हैं। इसकी जीभ सर्पके जैसी बीचमेंसे फटी हुई होती है और यह जीभ भी सर्पकी तरह ही निकालता है।

दिहातके लोग कहा करते हैं, यह आदमीको काटते ही पेशाब करता है। पत्थर पर मुँह मारकर आदमी पर झपटता है। कोई-कोई कहते हैं, जब इसे पेशाब की हाजत होती है, तभी यह आदमी को काटता है।

चिकित्सा ।

यद्यपि इसका काटा हुआ आदमी नहीं बचता, तथापि काले साँप वगैरः घोर ज़हरवाले साँपोंकी तरह ही इसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

कनखजूरेकी चिकित्सा ।

सुश्रुतमें कनखजूरेको शतपदी कहते हैं। इसके सौ पाँव होते हैं, इसीसे "शतपदी" कहते हैं। "सुश्रुत" में इसकी आठ क़िस्में लिखी हैं:—

(१) परुष, (२) कृष्ण, (३) चितकवरा, (४) कपिल रंगका, (५) पीला, (६) लाल, (७) सफेद, और (८) अग्निवर्णका।

इन आठोंमेंसे सफेद और अग्निवर्ण या नारङ्गी रंगके कनखजूरे बड़े ज़हरीले होते हैं। इनके दंशसे सूजन, पीड़ा, दाह, हृदयमें जलन और भारी मूर्च्छा,—ये विकार होते हैं। इन दोके सिवा,—बाक़ीके छहोंके डंक मारने या डसनेसे सूजन, दर्द और जलन होती है, पर हृदयमें दाह और मूर्च्छा नहीं होती। हाँ, सफेद और नारङ्गीके दंशसे बदन पर सफेद-सफेद फुन्सियाँ भी हो जाती हैं।

कदाचित ये काटते भी हों, पर लोकमें तो इनका चिपट जाना मशहूर है। कनखजूरा जब शरीरमें चिपट जाता है, तब चिमटी वगैरहः

से खींचनेसे भी नहीं उतरता। ज्यों-ज्यों खींचते हैं, उल्टे पञ्जे जमाता है। गर्मागर्म लोहेसे भी नहीं छुटता। जल जाता है, टूट जाता है, पर पञ्जे निकालनेकी इच्छा नहीं करता। अगर उतरता है, तो सामने ताज़ा मांसका टुकड़ा देखकर मांसपर जा चिपटता है। इसलिये लोग, इस दशामें, इसके सामने ताज़ा मांसका टुकड़ा रख देते हैं। यह मांसको देखते ही, आदमीको छोड़कर, उससे जा चिपटता है। गुड़में कपड़ा भिगोकर उसके मुँहके सामने रखनेसे भी, वह आदमीको छोड़कर, उसके जा चिपटता है।

"बङ्गसेन"में लिखा है, कनखजूरेके काटनेसे काटनेकी जगह पसीने आते तथा पीड़ा और जलन होती है।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है, कनखजूरेके चँवालीस पाँव होते हैं। बाईस पाँव आगेकी ओर और २२ पीछेकी ओर होते हैं। इसीसे वह आगे-पीछे दोनों ओर चलता है। वह चारसे बारह अंगुल तक लम्बा होता है। उसके काटनेसे विशेष दर्द, भय, श्वासमें तंगी और मिठाईपर रुचि होती है।

कनखजूरेकी पीड़ा नाश करनेवाले नुसखे।

(१) दीपकके तेलका लेप करनेसे कनखजूरेका विष नष्ट हो जाता है।

नोट—मीठा तेल चिरागमें जलाओ। फिर जितना तेल जलनेसे बचे, उसे कनखजूरेके काटे स्थानपर लगाओ।

(२) हल्दी, दारुहल्दी, गेरू और मैनसिलका लेप करनेसे कनखजूरेका विष नाश हो जाता है।

(३) हल्दी और दारुहल्दीका लेप कनखजूरेके विषपर अच्छा है।

(४) केशर, तगर, सहँजना, पद्माख, हल्दी और दारुहल्दी—इनको पानीमें पीस कर लेप करनेसे कनखजूरेका विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(५) हल्दी, दारुहल्दी, सेंधानोन और घी,—इन सबको एकत्र पीस कर, लेप करनेसे कनखजूरेका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर कनखजूरा चिपट गया हो, तो उसपर चीनी डाल दो, छुट जायगा अथवा उसके सामने ताजा मांसका टुकड़ा रख दो।

(६) "तिब्बे अकबरी"में लिखा है, कनखजूरेको ही कूटकर उस की काटी हुई जगहपर रखनेसे फौरन आराम होता है।

(७) "तिब्बे अकबरी"में लिखा है:—जरावन्द, तबील, पाषाणभेद, किब्रकी जड़की छाल और मटरका आटा—समान भाग लेकर, शराब या शहद पानीमें मिलाकर कनखजूरेके काटे आदमीको खिलाओ।

(८) तिरयाक, अरबा, दवाउल मिस्क, संजीरनिया, नमक और सिरका,—इनको मिलाकर दंशस्थानपर लेप करो। ये सब चीजें अत्तारोंके यहाँ मिल सकती हैं।

नोट—दवाउल मिस्क किसी एक दवाका नाम नहीं हैं। यह कई दवाएँ मिलानेसे बनती है।

बिच्छू-विष-चिकित्सा।

बिच्छू-सम्बन्धी जानने योग्य बातें।

"श्रुत"में साँप, बिच्छू प्रभृति ज़हरीले जानवरोंके सम्बन्ध में जितना कुछ लिखा है उतना और किसी भी आचार्य ने नहीं लिखा। हमारे आयुर्वेदमें तीस प्रकारके बिच्छू लिखे हैं। महर्षि वाग्भट्टने भी उनकी तीन क़िस्में मानी हैं:—

(१) मन्द विषवाले।

(२) मध्यम विषवाले।

(३) महा विषवाले।

जो बिच्छू गाय प्रभृतिके गोबर, लीद, पेशाब और कूड़े-कर्कटमें पैदा होते हैं, उनको मन्द विषवाले कहते हैं। मन्द विषवाले बीछू बारह प्रकारके होते हैं।

जो ईंट, पत्थर, चूना, लकड़ी और साँप वग़ैरःके मलमूत्रसे पैदा होते हैं, वे मध्यम विषवाले होते हैं। वे तीन तरहके होते हैं।

जो साँपके कोथ या साँपके गले-सड़े फन वगैरःसे पैदा होते हैं, उन्हें महा विषवाले कहते हैं। वे १५ प्रकारके होते हैं।

मन्द विषवाले बीछू छोटे-छोटे और मामूली गोबरके-से रङ्गके होते हैं। वाग्भट्टने लिखा है,—पीले, सफेद, रूखे, चित्रवर्ण वाले, रोमवाले, बहुतसे पर्ववाले, लोहित रङ्गवाले और पाण्डु रंगके पेट-वाले बीछू मन्द विषवाले होते हैं।

मध्यम विषवाले बीछू लाल, पीले या नारंगी रंगके होते हैं। वाग्-भट्ट कहते हैं,—धूएँके समान पेटवाले, तीन पर्ववाले, पिङ्गल वर्ण, चित्ररूप और सुर्ख कान्तिवाले बिच्छू मध्यम विषवाले होते हैं।

महा विषवाले बीछू सफेद, काले, काजलके रंगके तथा कुछ लाल और कुछ नीले शरीरवाले होते हैं। वाग्भट्ट कहते हैं, अग्निके समान कान्तिवाले, दो या एक पर्व वाले, कुछ लाल और कुछ काले पेटवाले बिच्छू महा विषवाले होते हैं।

अगर मन्द विषवाला बिच्छू काटता है, तो शरीरमें वेदना होती है, शरीर काँपता है, शरीर अकड़ जाता है, काला खून निकलता है, जलन होती है, सूजन आती है और पसीने निकलते हैं। हाथ-पाँवमें काटनेसे दर्द ऊपरको चढ़ता है।

नोट—यह क़ायदा है, कि स्थावर विष नीचेको फैलता है, पर जंगम विष—साँप, बिच्छू आदि जानवरोंका विष—ऊपरको चढ़ता है। कहा है:—

अधोगतिः स्थावरस्य जंगमस्योर्ध्वसगतिः।

अगर मध्यम विषवाला बिच्छू काटता है, तो शरीरमें दर्द, कम्प, अकड़न, काला खून निकलना, जलन होना, सूजन चढ़ना और पसीने आना प्रभृति लक्षण तो होते ही हैं; इनके सिवा जीभ सूज जाती है, खाया-पीया पदार्थ गलेसे नीचे नहीं जाता और काटा हुआ आदमी बेहोश हो जाता है।

अगर महाविष वाला बिच्छू काटता है, तो जीभ सूज जाती है, अङ्ग स्तब्ध हो जाते हैं, ज्वर चढ़ आता है और मुँह, नाक, कान आदि छिद्रोंसे काला-काला खून निकलता है, इन्द्रियाँ बेकाम हो जाती हैं, पसीने आते हैं, होश नहीं रहता, मुँह रूखा हो जाता है, दर्द का ज़ोर खूब रहता है और मांस फटा हुआ-सा हो जाता है। ऐसा आदमी मर जाता है।

वङ्गसेनने लिखा है, बिच्छूका विष आगके समान दाह करता या जलता है। फिर जल्दीसे ऊपरकी ओर चढ़कर, अङ्गोंमें भेदने या तोड़नेकी व्यथा—पीड़ा करता है और फिर काटनेके स्थानमें आकर स्थिर हो जाता है।

वङ्गसेनने ही लिखा है, बिच्छू जिस मनुष्यके हृदय, नाक और जीभमें डंक मारता है, उसका मांस गल-गल कर गिरने लगता और घोर वेदना या पीड़ा होती है। ऐसा रोगी असाध्य होता है, यानी नहीं बचता।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है, बीछूके काटनेकी जगहपर सूजन, लाली, कठोरता और घोर पीड़ा होती है। अगर डङ्क रगपर लगता है, तो बेहोशी होती है और यदि पट्ठेपर लगता है तो गरमी मालूम होती और सिरमें दर्द होता है।

एक हकीमी ग्रन्थमें लिखा है, कि उग्र विषवाले या महा विषवाले बिच्छूके काटनेसे सर्पके-से वेग होते हैं, शरीरपर फफोले पड़ जाते हैं, दाह, भ्रम और ज्वर होते हैं तथा मुँह और नाक आदि

-से काला खून निकलने लगता है, जिससे शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। यही लक्षण "सुश्रुत" में लिखे हैं।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, एक तरहका बिच्छू और होता है, उसे "जरारा" कहते हैं। जिस समय वह चलता है, उसकी पूँछ धरतीपर घिसटती चलती है। उसका ज़हर गरम होता है; लेकिन दूसरे या तीसरे दिन दर्द बढ़ जाता है, जीभ सूज जाती है, पेशाब की जगह खून आता है, बड़ी पीड़ा होती है, आदमी बेहोश या पागल हो जाता है तथा पीलिया और अजीर्णके चिह्न देखनेमें आते हैं। उसके काटने से बहुधा मनुष्य मर भी जाते हैं।

"तिब्बे अकबरी"में "जरारा" बिच्छूका इलाज अन्य बिच्छुओंके इलाजसे अलग लिखा है उसमें की कई बातें ध्यानमें रखने योग्य हैं। हम उसके सम्बन्ध में आगे लिखेंगे।

"वैद्यकल्पतरु"में लिखा है, अगर बिच्छू काटता है, तो सुई चुभाने का-सा दर्द होता है, लेकिन थोड़ी देर बाद दर्द बढ़ जाता है। फिर ऐसा जान पड़ता है; मानो बहुत-सी सुइयाँ चुभ रही हों। बीछूके डंकका दर्द सर्पके डंकसे भी असह्य होता है और पाँच या दस मिनटमें ही चढ़ जाता है। बीछूके काटने से मरनेका भय कम रहता है; परन्तु पीड़ा बहुत होती है। अगर बीछू बहुत ही जहरीला होता है, तो काटे जाने वालेका शरीर शीतल हो जाता है और पसीने खूब आते हैं। ऐसे समयमें शरीरमें गरमी लानेवाली गरम दवाएँ अथवा चाय या काफी पिलाना हित है।

नोट—बिच्छूके काटनेपर भी, साँपके काटनेपर जिस तरह बन्द बाँधे जाते हैं, दंश-स्थान जलाया या काटा जाता है, जहर चूसा जाता है; उसी तरह वही सब उपाय करने चाहिएँ। कास्टिक या कारबोलिक ऐसिडसे अगर बिच्छूका काटा स्थान जला दिया जाय, तो जहर नहीं चढ़ता। काटे हुए स्थानपर प्याज काटकर बाँधना भी अच्छा है। ऐमोनिया लगाना और सुँघाना बहुत ही उत्तम है। प्याज और ऐमोनियाके इस्तेमालसे बिच्छूके काटे तो आराम होते ही हैं, इसमें शक नहीं; अनेक साँपोंके काटे हुए भी साफ बच गये हैं।

बिच्छूकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) मूलीका छिलका बिच्छूपर रखने या मूलीके पत्तोंका स्वरस बिच्छूपर डालने से बिच्छू मर जाता है। खीरेके पत्तों और उसके स्वरसमें भी यही गुण हैं। मूलीके छिलके बिच्छूके बिलपर रख देने से बिच्छू बाहर नहीं आता। जो मनुष्य सदा मूली और खीरे खाता है, उसे बिच्छूका विष हानि नहीं करता। जहाँ बिच्छुओं का जियादा ज़ोर हो, वहाँ मनुष्योंको मूली और खीरे सदा खाने चाहियें। अगर घरमें एक बिच्छू पकड़ कर जला दिया जाता है, तो घरके सारे बिच्छू भाग जाते हैं। वैद्योंको ये सब बातें अपने से सम्बन्ध रखने वालोंको बता देनी चाहिएँ।

(२) अगर मध्यम और महा विषवाले बिच्छू काटें, तो फौरन ही बन्द बाँधो; यानी अगर बिच्छू बन्द बाँधने योग्य स्थानो हाथ, पाँव, अँगुली प्रभृति—में डंक मारे, तो आप सब काम और सन्देह छोड़कर, डंक मारी हुई जगहसे चार अँगुल ऊपरकी तरफ, सूत, नर्म चमड़ा या सुतली प्रभृतिसे कसकर बन्द बाँध दो। इतना कस कर भी न बाँधो, कि चमड़ा कट जाय और इतना ढीला भी न बाँधो कि, खून नीचेका नीचे न रुके। एक ही बन्द बाँधकर सन्तोष न करलो। ज़रूरत हो तो पहलेके बन्दसे कुछ ऊपर दूसरा और तीसरा बन्द भी बाँध दो। साँपके काटनेपर भी ऐसे ही बन्द लगाये जाते हैं। चूँकि तेज़ ज़हरवाले बिच्छुओं और साँपोंमें कोई भेद नहीं। इनका काटा हुआ भी मर जाता है, अतः सर्पके काटनेपर जिस तरहके बन्द आदि बाँधे जाते हैं या जो-जो क्रियाएँ की जाती हैं, वही सब बिच्छू—ख़ासकर उग्र विषवाले बिच्छूके काटनेपर भी करनी चाहियें। वाग्भट्टमें लिखा है:—

साधयेत्सर्पवद्दष्टान्विषोग्रैः कीटवृश्चिकैः।

उग्र विष वाले कीड़े और बिच्छूके डंक मारनेपर साँपकी तरह चिकित्सा करनी चाहिये।

बन्द बाँधनेसे क्या लाभ ? बन्द बाँधनेसे बीछू या साँपका विष खूनमें मिलकर आगे नहीं फैलता। सभी जानते हैं कि, प्राणियोंके शरीरमें खून हर समय चक्कर लगाया करता है। नीचेका खून ऊपर जाता है और ऊपरका नीचे आता है। खूनमें अगर विष मिल जाता है, तो वह विष उस खूनके साथ सारे शरीरमें फैल जाता है। बन्दकी वजहसे नीचेका खून नीचे ही रहा आता है; अत· खूनके साथ मिला हुआ विष भी नीचे ही रहा आता है। जब तक विष हृदय आदि ऊपरके स्थानोंमें नहीं जाता, मनुष्यकी मृत्यु हो नहीं सकती। बस, इसी ग़रज़से साँप-बिच्छू आदिके काटनेपर बन्द बाँधनेकी चाल भारत और योरप आदि सभी देशोंमें है। पहले बन्द ही बाँधा जाता है, उसके बाद और उपाय किये जाते हैं।

अगर साँप या बीछू वगैरःका काटा हुआ स्थान ऐसा हो; जहाँ बन्द न बाँधा जा सके, तो काटी हुई जगहको तत्काल चीरकर और वहाँका थोड़ा-सा मांस निकालकर, उस स्थानको तेज़ आगसे दाग देना चाहिये अथवा सींगी या तूम्बी या मुँहसे वहाँका खून और ज़हर चूस-चूसकर फैंक देना चाहिये।

चूसना ख़तरेसे ख़ाली नही। इसमें ज़रा-सी भूल होनेसे चूसने वालेके प्राण जा सकते हैं, अतः चूसनेकी जगह तेज़ छुरी, चाकू या नश्तर वगैरःसे पहले चीरनी चाहिये। इसके बाद, मुँहमें कपड़ा भरकर चूसना चाहिये। अगर सींगीसे चूसना हो, तो सींगीपर भी मकड़ीका जाला या ऐसी ही और कोई चीज़ लगाकर यानी ऐसी चीज़ोंसे सींगीको ढककर तब चूसना चाहिये। क्योंकि मुँह में कपड़ा न भरने अथवा सींगीपर मकड़ीका जाला न रखने

से ज़हर-मिला हुआ खून चूसने वालेके मुँहमें चला जायगा। इसके सिवा, चूसने वालेके मुँहमें कहीं ज़ख्म न होने चाहियें। उसके दाढ़-दाँतोंसे खून न जाता हो और दाँतोंकी जड़ या मसूड़े पोले न हों। अगर मुँहमें घाव होंगे, दाँतोंसे खून जानेका रोग होगा या मसूड़े पोले होंगे, तो चूसा हुआ ज़हर घाव वगैरःके द्वारा चूसने-वालेके खूनमें मिल कर उसे भी मार डालेगा। खून चूसनेका काम, इस मौक़ेपर, बड़ा ही अच्छा इलाज है। मगर चूसनेवालेको, अपनी प्राणरक्षाके लिये, ऊपर लिखी बातोंका विचार करके खून चूसनेको तैयार होना चाहिये। हाँ, बन्द बाँधकर, खून चूसनेकी ज़रूरत हो, तो खून चूसनेमें ज़रा भी देर न करनी चाहिये।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है, जो शख्स खून चूसनेका इरादा करे, वह अपने मुँहको "गुले रोग़न" और "बनफशाके तेल" से चिकना कर ले। जो चूसे वह बिल्कुल भूखा न हो, शराबसे कुल्ले करे और थोड़ी-सी पी भी ले। जब खून चूस कर मुँह उठावे, मुँहका लुआब और पानी निकाले दे, जिससे वह और उसके दाँत विपद्से बचें।

और भी लिखा है, अगर काटी हुई जगह ऐसी हो, जो न तो काटी जा सके और न वहाँ बन्द ही बाँधा जा सके, तब काटे हुए स्थानके पासका मांस छुरेसे इस तरह काट डालो, कि साफ हड्डी निकल आवे। फिर उस स्थानको गरम किये हुए लोहेसे दाग दो या वहाँ कोई विष नाशक लेप लगा दो। राल और जैतूनका तेल औटा कर लगाना भी अच्छा है। अगर डसी हुई जगहपर दवा लगानेसे अपने-आप घाव हो जाय, तो अच्छा चिह्न समझो। घावको जल्दी मत भरने दो, जिससे ज़हर अच्छी तरह निकलता रहे; क्योंकि ज़हर का क़तई निकल जाना ही अच्छा है।

खुलासा यह है:—

(१) बीछूने जहाँ डंक मारा हो उस जगहसे कुछ ऊपर बन्द बाँध दो।

(२) विषको मुँह अथवा सींगी प्रभृतिसे चूसो।

(३) अगर दागनेका मौक़ा हो, तो डसे हुए स्थानको चीरकर या वहाँका माँस निकालकर दाग दो अथवा कोई उत्तम विषनाशक लेप लगा दो।

(४) गरम पानी या किसी काढ़ेसे डसी हुई जगहको धोओ।

(५) ज़रूरत हो तो फस्द खोलकर खून निकाल दो, क्योंकि खूनके साथ विष निकल जाता है।

(६) वाग्भट्टमें लिखा है, अगर बिच्छूका काटा हुआ मनुष्य वेहोश हो, संज्ञाहीन हो, जल्दी-जल्दी श्वास लेता हो, बकवाद करता हो और घोर पीड़ा हो रही हो, तो नीचे लिखे उपाय करोः—

(क) काटे हुए स्थानपर कोई अच्छा लेप करो। जैसे, हाड़, हल्दी, पीपर, मँजीठ, अतीस, काली मिर्च और तूम्बीका वृन्त—इन सबको वार्ताकू या वैगनके स्वरसमें पीसकर लेप करो।

(ख) उग्र विप वाले विच्छूके काटे हुएको दही और घी पिलाओ।

(ग) शिरा वींधो यानी फस्द खोलो।

(घ) वमन कराओ; क्योंकि विष-चिकित्सामें वमन कराना सबसे उत्तम उपाय है।

(ङ) नेत्रोंमें विष-नाशक अञ्जन आँजो।

(च) नाकमें विप-नाशक नस्य सुँघाओ।

(छ) गरम, चिकना, खट्टा और मीठा वात-नाशक भोजन रोगी को दो; क्योंकि ऐसा भोजन हितकारी है।

(ज) अगर बिच्छूका विष बहुत ही भयंकर हो, चढ़ता ही चला जावे, अच्छे-अच्छे उपायोंसे भी न रुके, तो शेषमें डंक मारी हुई जगहपर विषका लेप करो।

खुलासा यह है, कि अगर विषका ज़ोर बढ़ता ही जावे—रोगीकी हालत ख़राब होती जावे, तो विषका लेप करना चाहिये; क्योंकि

ऐसी हालतमें विष ही विषको नष्ट कर सकता है। दुनियांमें मशहूर भी है "विषस्य विषमौषधम्" यानी विपकी दवा विष है। इसीसे महर्षि वाग्भट्टने लिखा भी है:—

"अन्तमें, अगर बिच्छूका विष बहुत ही बढ़ा हुआ हो, तो उस के डंक मारे स्थानपर विषका लेप करना चाहिये और उच्चिटिङ्गके विषमें भी यही क्रिया करनेका क़ायदा है।"

जिस तरह सभी तरहके साँपोंके सात वेग होते हैं, उसी तरह महाविष वाले या मध्यम विषवाले बिच्छुओंके विषके भी सात वेग होते हैं। जिस तरह साँपोंके विषके पाँचवें वेगके बाद और सातवें वेगके पहले प्रतिविष सेवन करानेका नियम है; उसी तरह बिच्छूके विषमें भी प्रतिविष सेवन करानेका क़ायदा है। अगर मंत्रतंत्र और उत्तमोत्तम विषनाशक औषधियोंसे लाभ न हो, हालत बिगड़ती ही जावे, तो प्रतिविष लगाना और खिलाना चाहिये। जिस तरह ज्वर रोगकी अन्तिम अवस्थामें, जब बहुत ही कम आशा रह जाती है, रोगीको साँपोंसे कटाते हैं अथवा चन्द्रोदय आदि उग्र रस देते हैं; उसी तरह साँप और बिच्छू प्रभृति उग्र विष-वाले जन्तुओंके काटने पर, अन्तिम अवस्थामें, विष खिलाते और विष ही लगाते हैं।

नोट—जब एक विष दूसरे विषके प्रतिकूल या विरुद्ध गुणवाला होता है, तब उसे उसका "प्रतिविष" कहते हैं। जैसे, स्थावर विषका प्रतिविष जंगम विष और जंगम विषका प्रतिविष स्थावर विष है।

(७) ऊपरकी तरकीबोंसे वही इलाज कर सकता है, जिसे इन सब बातोंका ज्ञान हो, सब तरहके विषोंके गुणावगुण, पहचान और उनके दर्पनाशक उपाय या उतार आदि मालूम हों; पर जिन्हें इतनी बातें मालूम न हों, उन्हें पहले सीधी-सादी चिकित्सा करनी चाहिये; यानी सबसे पहले, अगर बन्द बाँधने योग्य स्थान हो तो, बन्द बाँध देना चाहिये। इसके बाद डङ्क मारी हुई जगह

को चीरकर वहाँका खून निकाल देना चाहिये। इसके भी बाद, किसी विष नाशक काढ़े वगैरःका उस जगह तरड़ा देना और फिर लेप आदि कर देना चाहिये। साथ ही खानेके लिये भी कोई उत्तम परीक्षित दवा देनी चाहिये। अगर भूख लगी हो या खुश्की हो, तो कच्चे दूधमें गुड़ मिलाकर पिलाना चाहिये अथवा तज, तेजपात, इलायची और नागकेशरका २।३ माशे चूर्ण डालकर गुड़का शर्बत बना देना चाहिये।

(८) यूनानी ग्रन्थोंमें लिखा है,—बिच्छूके काटे हुएको पसीने निकालनेवाली दवा देनी चाहिये या कोई ऊपरी उपाय ऐसा करना चाहिये, जिससे पसीने आवें। जिस अंगमें डंक मारा हो, अगर उस अंगसे पसीने निकाले जायँ तो और भी अच्छा। बिच्छूके काटने पर पसीने निकालना, हम्माममें जाना और वहाँ शराब पीना हितकारी है।

अगर जरारा बिच्छूने, जिसकी दुम धरती पर घिसटती चलती है, काटा हो तो नीचे लिखे हुए उपाय करोः—

(क) पहले पछनोंसे जहरको चूसो। पछनोंके भीतर धुली हुई रूई भर लो, नहीं तो चूसनेवाले पर भी विपद् आ सकती है।

(ख) काटे हुए स्थानको चीरकर, हड्डी तकका मांस निकालकर फेंक दो और फिर गरम तपाये हुए लोहे से उस जगह को दाग दो।

(ग) इसके बाद फस्द खोलो।

(घ) अगर दाग न सको, तो परफयून और जुन्देबेदस्तर उस जगहपर रखो और उसके इर्द-गिर्द गिले अरमनी और सिरकेका लेप करो।

(ङ) ताज़ा दूध पिलाओ।

(च) अगर जीभमें सूजन हो, तो नीचेकी रग खोल दो।

(छ) कासनीका पानी और सिकंजबीन मिलाकर कुल्ले कराओ।

(ज) अगर रोगीका पेट फूल गया हो, तो हुकना करो।

नोट—सेबका रुब्ब, बिहीका रुब्ब, काहूका शीरा, कासनीका शीरा, ककड़ी-खीरेका शीरा, लम्बी घीया, जौका पानी और कपूरकी टिकिया—ये भी इस मौकेपर लाभदायक हैं ।

(६) बिच्छूके काटे हुए आदमीको ना-बराबर घी और शहद मिला हुआ दूध अथवा बहुतसी खाँड मिलाया हुआ दूध पिलाना हितकारी है । वाग्भट्टने कहा है—

लेपः सुखोष्णश्च हितः पिण्याको गोमयोऽपि वा ।

पाने सर्पिर्मधुयुत क्षीरं वा भूरि शर्करम् ॥

बिच्छूकी काटी हुई जगहपर खली या गोबरका सुहाता-सुहाता लेप हितकारी है । इसी तरह घी और शहद मिला हुआ दूध या ज़ियादा चीनी मिला दूध पथ्य है । उन्हीं वाग्भट्ट महोदयने बहुत ही भयङ्कर बिच्छूके काटनेपर दही और घी मिलाकर पिलाने की राय दी है । आप कहते हैं, बिच्छूके काटे हुए आदमीको गरम, चिकना, खट्टा, मीठा बादीको नाश करनेवाला भोजन देना चाहिये ।

नोट—यूनानी हकीम भी दूध पीनेकी राय देते हैं ।

बिच्छू-विष-नाशक नुसखे ।

(१) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है—साढ़े चार माशे हींगको ३३॥ माशे शराबमें मिलाकर, बिच्छूके काटे हुएको पिलाओ । अवश्य वेदना कम हो जायगी ।

(२) परीक्षा करके देखा है, थोड़ा-थोड़ा साँभर नोन खिलाने से बिच्छूके काटे हुएको शान्ति मिलती है ।

(३) लहसन, हींग और अकरकरा इन तीनोंको शराबमें मिलाकर खिलाने से बिच्छूका काटा आराम हो जाता है ।

(४) अरीठे चबाने से भी बिच्छूका ज़हर उतर जाता है ।

साथ ही, अरीठे महीन पीस कर बिच्छूके काटे हुए स्थानपर लगाने भी चाहियें। अगर अरीठे चिलममें रखकर तमाखूकी तरह पिये भी जायें, तब तो कहना ही क्या? परीक्षित है।

(५) लहसनका रस तीन तोले और और शहद तीन तोले—दोनोंको मिलाकर, बिच्छूके काटेको, तत्काल, पिलानेसे अवश्य आराम होता है।

(६) ज़रासा जमालगोटा पानीमें पीसकर बिच्छूके काटे आदमी के नेत्रोंमें आँजो। साथ ही, काटी हुई जगहपर भी जमालगोटा पीसकर मलो।

नोट—एक या दो जमालगोटे पानीमें पीस कर, काटे स्थानपर लगा देनेसे भयंकर बिच्छूका विष भी तत्काल शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(७) तितलीके पत्तोंका स्वरस, थोड़ा-थोड़ा, कई बारमें, पिलाने से बिच्छू और साँप दोनोंका विष उतर जाता है।

नोट—तितलीके पत्तोका रस काटे हुए स्थानपर लगाना भी ज़रूरी है।

(८) कसौंदीका फल भूनकर खिलानेसे भी बिच्छूका विष उतर जाता है।

नोट—कसौंदीके बीज, पानीके साथ पीस कर, काटे हुए स्थानपर लगाने चाहियें। परीक्षित है।

(९) एक चिलममें मोर-पंख रखकर, ऊपरसे जलते हुए कोयले या बिना धुएँका अङ्गारा रखकर, बिच्छूके काटे आदमी को तमाखूकी तरह पिलाओ। अवश्य ज़हर उतर जायगा। परीक्षित है।

नोट—साथ ही मोरपंखको घीमें मिलाकर काटे हुए स्थानपर उसकी धूनी भी दो। बड़ी जल्दी आराम होगा।

(१०) "ख़ैरुल तिजारब" नामक पुस्तकमें लिखा है, अगर बिच्छू का काटा हुआ आदमी बीस अङ्क उल्टे गिने, तो बिच्छूका ज़हर उतर जाय।

नोट—ऊपरकी बातका यह मतलब है, कि रोगी २०, १६, १८, १७, १६, १५, १४, १३, १२, ११, १०, ६, ८, ७, ६, ५, ४, ३, २, और १ इस तरह गिने; यानी बीससे एक तक उल्टी गिन्ती गिने ।

(११) भाँगके बीज कूट-पीसकर और मोममें मिलाकर खिलानेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है ।

(१२) "मोजिज़" नामक ग्रन्थमें लिखा है—एक मनुष्यको बिच्छूने चालीस जगह काटा । उसने चटपट "इन्द्रायणका हरा फल" लाकर, उसमेंसे आठ माशे गूदा खा लिया । खाते देर हुई, पर आराम होते देर न हुई ।

(१३) बिच्छूके काटे स्थानपर प्याजका जीरा मलने और थोड़ा-सा गुड़ खा लेनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है । परीक्षित है ।

(१४) घीमें कुछ सेंधानोन मिलाकर पीनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है । परीक्षित है ।

बिच्छूके काटे स्थानपर लगाने, सूँघने, आँजने और धूनी देनेकी दवाएँ ।

(१५) किसी क़दर गरम काँजी बिच्छूके काटे स्थानपर सींचने या तरड़ा देनेसे ज़हर उतर जाता है ।

(१६) शालिपर्णीका मन्दोष्ण या सुहाता-सुहाता गरम काढ़ा बिच्छूके काटे स्थानपर सींचनेसे ज़हर उतर जाता है ।

नोट—शालिपर्णीको हिन्दीमें "सरिवन", बंगलामें शालपानि, मरहटीमें सालवण और गुजरातीमें समेरवो कहते हैं । इसमें विष नाश करनेकी शक्ति है ।

(१७) गरमागर्म घीमें सेंधानोन पीसकर मिला दो और फिर उसे बिच्छूके काटे हुए स्थानपर सींचो । इसके साथ ही घीमें सेंधानोन मिलाकर, दो-तीन बार पीओ । यह उपाय परीक्षित है ।

(१८) दूधमें सेंधानोन पीसकर मिला दो और फिर उसे आग

पर गरम करलो। जब गरम हो जाय, काटी हुई जगहपर इस नमक-मिले दूधको सींचो। ज़हर उतर जायगा।

(१९) अशनान और अजवायन—दोनों दो-दो तोले लेकर, पानीमें औटा लो। जब औट जायँ, बिच्छूकी काटी हुई जगहपर इस काढ़ेका तरड़ा दो, फ़ौरन ज़हर उतर जायगा।

सूचना—तरड़ा देना और सींचना एक ही बात है। वैद्य सींचना और हकीम तरड़ा देना कहते हैं।

नोट—अश्नान अरबी शब्द है। यह एक तरहकी घास है। इसका स्वरूप हरा और स्वाद कड़वा होता है। यह गरम और रूखी है। साबुन इसका बदल या प्रतिनिधि है। यह घावके मांसको छेदन करके साफ करती है। अरब वाले इससे कपड़े धोते हैं। रंगीन रेशमी कपड़े इससे साफ हो सकते हैं। यह घास रुके हुए मासिक खूनको फौरन जारी करती है। मात्रा १॥ माशेकी है। पर रजो-धर्म जारी करनेको ३॥ माशे और गर्भ गिरानेको ११ माशेकी मात्रा है।

(२०) मूली और नमक पीसकर, बिच्छूके काटे हुए स्थानपर रखनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है।

नोट—बिच्छूपर मूली रखनेसे बिच्छू मर जाता है। मूलीके पत्तोंका स्वरस बिच्छूपर डालनेसे भी बिच्छू मर जाता है। अगर मूलीके छिलके बिच्छूके बिल पर रख दिये जायँ, तो बिच्छू बिलसे न निकले। कहते हैं, मूली और खीरा सदा खानेवालेको बिच्छूका ज़हर हानि नहीं करता।

(२१) हरताल, हींग और साँठी चाँवल—इन तीनोंको पानीके साथ पीस कर, बिच्छूकी काटी हुई जगहपर लेप करनेसे ज़हर उतर जाता है।

(२२) घासकी पत्तियाँ घीके साथ पीस कर, बिच्छूके काटे स्थानपर मलनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है।

(२३) नीबूका रस बिच्छूके काटे स्थानपर मलनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(२४) नागरमोथा पीस कर और पानीमें घोल कर पीने और

काटी हुई जगहपर इसीका गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे बिच्छूका विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(२५) हींग, हरताल और तुरंज—इनको बराबर-बराबर लेकर, पानीके साथ महीन पीस कर, गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंको पानीमें पीस कर, काटे हुए स्थानपर लेप करनेसे बिच्छूका विष नष्ट हो जाता है।

(२६) बिच्छूके काटे स्थानपर मोमकी धूनी देनेसे ज़हर उतर जाता है।

(२७) विषखपरेके पत्ते और डाली तथा चिरचिरा—इनको मिलाकर पीस लो और बिच्छूके काटे स्थानपर मलो; ज़हर उतर जायगा। यह बड़ा उत्तम नुसख़ा है।

नोट—चिरचिरेको अपामार्ग, ओंगा या लटजीरा आदि कहते हैं। विषखपरे को पुनर्नवा या साँठी कहते हैं। चिरचिरेकी जड़को पानीके साथ सिलपर पीस कर डंक मारे स्थानपर लगाने और थोड़ीसी चिरचिरेकी जड़ मुँहमें रख कर चबाने और चूसनेसे कैसा ही भयंकर बिच्छू क्यों न हो, फौरन विष नष्ट हो जायगा। यह दवा कभी फेल नहीं होती, अनेक बार आजमायश की है। बहुत क्या, चिरचिरेकी जड़ बिच्छूके काटे आदमीको दो-चार बार दिखाने और फिर छिपा लेने तथा इसके लगा देने या छुला देने मात्रसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। अगर चिरचिरेकी जड़ बिच्छूके डंकसे दो-तीन बार छुला दी जाती है, तो बिच्छू और मामूली कीड़ों की तरह निर्विष हो जाता है—उसमें ज़हर नहीं रहता। आप लोग चिरचिरेके सर्वाङ्गको अपने घरमें अवश्य रखें। इस जंगलकी जड़ी से बड़े काम निकलते हैं।

(२८) कौंचके बीज छीलकर बिच्छूके काटे स्थानपर मलनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है।

(२९) गुबरीला कीड़ा बिच्छूके काटे स्थानपर मलनेसे बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है।

(३०) बिच्छूके काटे स्थानपर तितलीके पत्ते मलनेसे ज़हर उतर जाता है।

(३१) बिच्छूके काटे स्थानपर मदार या आकको दूध मलने से फौरन ज़हर उतर जाता है।

(३२) बिच्छूके काटे स्थानपर मक्खीको मलने से फौरन आराम होता है।

(३३) सूखा अमचूर और सूखा लहसन—इन दोनोंको पानीके साथ पीसकर, काटे स्थानपर लेप करने से फौरन ज़हर उतर जाता है।

(३४) बिच्छूके काटे स्थानपर, समन्दरफल, पानीके साथ पीसकर, लेप करने से बिच्छूका विष नष्ट हो जाता है।

(३५) मुश्की घोड़ेके नाखून, पानीमें पीसकर, लगाने से बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—घोड़ेके अगले पैरके टखनेके पास जो नाखून-सा होता है, उसको पानीमें पीस कर बिच्छूके काटे स्थानपर लगानेसे भी बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है। मुश्की घोड़ेका नाखून न मिले, तो साधारण घोड़ोंके नाखूनों से भी काम चल सकता है।

(३६) नौसादर, सुहागा और कलीका चूना—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर, हथेलीमें रखकर मलो और बिच्छूके काटे हुएको सुँघाओ। कई बार सुँघाने से अवश्य आराम होगा। कई बारका परीक्षित है।

(३७) कसौंदीके बीज, पानीके साथ पीसकर, काटे स्थानपर लगा देने से बिच्छूका ज़हर उतर जाता है।

(३८) चूहेकी मैंगनी, पानीके साथ पीसकर, काटे स्थानपर लगाने से बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

नोट—चूहेकी मैंगनियोंमें विष नाश करनेकी बड़ी शक्ति है।

(३९) बिच्छूके काटे स्थानपर, सज्जीको महीन पीसकर और शहदमें मिलाकर लेप करो; फौरन लाभ होगा।

(४०) पलाशपापड़ा, पानीमें पीसकर, बिच्छूके काटे स्थानपर लगाने से ज़हर उतर जाता है।

(४१) विच्छूके काटते ही, तत्काल, विच्छूके काटे स्थानपर, तिलीके तेलके तरड़े दो अथवा सेंधानोन-मिले हुए घीके तरड़े दो। इन दोनोंमें से किसी एक उपायके करने से विच्छूका ज़हर अवश्य उतर जाता है। परीक्षित है।

नोट—इन उपायोंके साथ अगर कोई खाने और आँजनेकी दवा भी सेवन की जाय, तो और भी जल्दी आराम हो।

(४२) काँजीमें जवाखार और नमक पीसकर मिला दो और फिर उसे गरम करो। वारम्वार इस दवाको सींचने या इसका तरड़ा देने से विच्छूका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(४३) ज़ीरेको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर उस लुगदीमें घी और पिसा हुआ सेंधानोन मिला दो। इसके वाद उसे आगपर गरम करो और थोड़ासा शहद मिला दो। इस दवाका लेप काटी हुई जगहपर करने से विच्छूका विष अवश्य नष्ट हो जाता है। कई वार परीक्षा की है। कभी यह लेप फेल नहीं हुआ। इस लेपको सुहाता-सुहाता गरम लगाना चाहिये। परीक्षित है।

(४४) मैनसिल, सेंधानोन, हींग, चमेली के पत्ते और सोंठ—इन सवको एकत्र महीन पीसकर छान लो। फिर इस चूर्णको खरल में डाल, ऊपर से गायके गोवरका रस दे-देकर घोटो और गोलियाँ वनालो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर लगाने से विच्छूका ज़हर फौरन उतर जाता है।

(४५) पीपर और सिरसके वीज वरावर-वरावर लेकर, पानी के साथ पीसकर, काटी हुई जगहपर लेप करो। कई वार लेप करने से विच्छूका विष अवश्य नष्ट हो जाता है।

नोट—अगर सिरसके वीज और पीपलके चूर्णमें "आकके दूध"की तीन भावनाएँ भी दे दी जायँ, तो यह दवा और भी वलवान हो जाय। वाग्भट्टमें लिखा है—

अर्कस्य दुग्धेन शिरीषवीजं त्रिर्भावितं पिप्पलिचूर्ण मिश्रम्।
एषोगदो हन्ति विषाणि कीटभुजंगलूतेन्दुरवृश्चिकानाम्॥

सिरसके बीज और पीपलके चूर्णको मिला कर, आकके दूधकी तीन भावनाएँ दो। इस दवाके लगानेसे कीड़े, साँप, मकड़ी, चूहे और बिच्छुओंका विष नष्ट हो जाता है।

सूचना—सिरसके बीज और पीपलोंको पीस कर चूर्ण कर लो। फिर इस चूर्णको आकके दूधमें डाल कर हाथोंसे मसलो और दो-तीन घण्टे उसीमें पड़ा रखो। इसके बाद चूर्णको सुखा दो। यह एक भावना हुई। दूसरे दिन फिर आकके ताजा दूधमें कलके सुखाये हुए चूर्णको डाल कर मसलो और सुखा दो। यह दो भावना हुईं। तीसरे दिन फिर ताजा आकके दूधमें सुखाये हुए चूर्णको डाल कर मसलो और सुखा दो। बस, ये तीन भावना हो गईं। इस दवाको शीशीमें भर कर रख दो। जब किसीको साँप या बिच्छू आदि काटे, इस दवाको अन्दाजसे लेकर, पानीके साथ मिलाकर पीस लो और डंक मारी हुई जगहपर लगा दो। ईश्वर-कृपासे अवश्य आराम होगा। कई बार इसकी परीक्षा की; हर बार इसे ठीक पाया। बड़ी अच्छी दवा है।

(४६) ढाकके बीजोंको आकके दूधमें पीसकर लेप करनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(४७) कसौंदीके पत्ते, कुश और काँसकी जड़—इन तीनों जड़ियोंको मुखमें रखकर चबाओ और फिर जिसे बिच्छूने काटा हो उसके कानोंमें फूँको। इस उपायसे बिच्छूका विष नष्ट हो जाता है। कई बार परीक्षा की है।

नोट—हमने इस उपायके साथ जब खाने और लगानेकी दवा भी सेवन कराई, तब तो अपूर्व चमत्कार देखा। अकेले इस उपायसे भी चैन पड जाता है।

(४८) हुलहुलके पत्तोंका चूर्ण बिच्छूके काटे आदमीको सुँघानेसे तत्काल आराम होता है, यानी क्षणमात्रमें विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—हिन्दीमें हुलहुलको हुरहुर और सोचली भी कहते हैं। संस्कृतमें इसे आदित्यभक्ता कहते हैं, क्योंकि इसके फूल सूरज निकलनेपर खिल जाते और अस्त होनेपर सुकड़ जाते हैं। यह सूरजमुखीके नामसे बहुत मशहूर है। इसके पत्ते दवाके काममें आते हैं।

(४६) मोरके पंखका घीमें मिलाकर, आगपर डालो और

उसका धूआँ बिच्छूके काटे स्थानपर लगने दो। इस उपायसे ज़हर उतर जाता है ।

(५०) ताड़के पत्ते, कड़वे नीमके पत्ते, पुराने बाल, सैंधानोन और घी—इन सबको मिलाकर, बिच्छूके काटे स्थानपर इनकी धूनी देनेसे ज़हर तत्काल उतर जाता है ।

(५१) "तिब्बे अकबरी"में लिखा है, गूगल, अलसीके बीज, सैंधानोन, अलेकुमवतम और जुन्देबेदस्तर—इन सबको मिलाकर, पानीमें पीसकर, लेप करनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है ।

(५२) पोदीना और जौका आटा—इनको तुलसीके पानीमें पीसकर लगानेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है ।

(५३) बावूना, भूसी, खंगाली लकड़ी और तुतली—इन सब का काढ़ा बनाकर, उसीसे काटे हुए स्थानको धोने और पीछे कोई लेप लगानेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है ।

(५४) लहसनको, जैतूनके तेलमें पीसकर, काटे हुए स्थानपर लगानेसे बिच्छूका ज़हर नष्ट हो जाता है ।

(५५) परफयूनका तेल और जम्बकका तेल बिच्छूके काटे स्थान पर मलनेसे आराम होता है ।

(५६) बबूलके पत्तोंको चिलममें रखकर, ऊपरसे आग धरकर, तम्बाकूकी तरह पीनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है । कोई लाला परमानन्दजी वैश्य इसे अपना आज़माया हुआ नुसख़ा बताते हैं ।

(५७) निर्मलीके बीज, पानीके साथ पत्थरपर घिसकर, बिच्छू के काटे स्थानपर लगानेसे बिच्छूका ज़हर फौरन उतर जाता है । परीक्षित है ।

नोट—निर्मलीके फल गोल होते हैं । इनपर कुचलेकी-सी छाल होती है । विशेष करके इनकी सारी आकृति कुचलेसे मिलती है । निर्मलीमें विषनाशक शक्ति है । इससे पानी खूब साफ हो जाता है । संस्कृतमें "कतक", बँगलामें

"निर्मल फल" और गुजरातीमें "निर्मली" कहते हैं। निर्विषी दूसरी चीज़ है। वह एक प्रकारकी घास है। उसमें साँप और बिच्छूका ज़हर नाश करनेकी भारी सामर्थ्य है।

(५८) बिच्छूके काटते ही, काटे स्थानपर, तत्काल, पानीकी बर्फ धर देनेसे दर्द फौरन कम हो जाता है। इससे क़तई आराम नहीं हो जाता, पर शान्ति अवश्य मिलती है। बर्फ रखकर, दूसरी दवाकी फिक्र करनी चाहिये और तैयार होते ही लगा देनी चाहिये। परीक्षित है।

(५९) बकरीकी मैंगनी, पानीमें पीसकर, बिच्छूके काटे स्थान पर लगा देनेसे तत्काल ज़हर उतर कर शान्ति होती है।

नोट—बकरीकी मैंगनी जलाकर खाने और उसी राखका लेप करनेसे भी फौरन आराम होता है। दोनों उपाय आज़मूदा हैं।

(६०) इमलीके चीयों या बीजोंको पानीमें पीसकर, बिच्छूके काटे स्थानपर लगानेसे तत्काल जहर उतर जाता है। परीक्षित है।

[illegible] सत्यानाशीकी छाल, पानमें रखकर, खानेसे बिच्छूका विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(६२) बाँझ-ककोड़ेकी गाँठ पानीमें घिस कर पीने और काटे स्थानपर लेप करनेसे बिच्छू, साँप, चूहे और बिल्ली सबका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(६३) बाँझ-ककोड़ेकी गाँठ और धतूरेकी जड़,—इन दोनोंको चाँवलोंके धोवनमें घिस कर पिलाने और डंक-मारे स्थानपर लगाने से बिच्छू प्रभृति ज़हरीले जानवरोंका विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(६४) प्याज़के दो टुकड़े करके बिच्छूके डंक-मारे स्थानपर लगानेसे फौरन आराम होता है। परीक्षित है।

(६५) कपासके पत्ते और राई—दोनोंको मिलाकर और

पानीके साथ पीसकर बिच्छूके काटे हुए स्थानपर लेप करनेसे फौरन आराम होता है। परीक्षित है।

(६६) रविवारके दिन खोद कर लाई हुई कपासकी जड़ चबाने से बिच्छूका विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(६७) कड़वे नीमके पत्ते या उसके फूलोंको चिलममें रखकर, तम्बाकूकी तरह, पीनेसे बिच्छूका विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कड़वे नीमके पत्ते चबाओ और मुखसे भाफ न निकलने दो। जिस तरफके अङ्गमें बिच्छूने काटा हो, उसके दूसरी तरफके कानमें फूँक मारो। इन उपायोंसे बड़ी जल्दी आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—कसौंदी या नीमके पत्तोंको मुँहमें चबाकर बिच्छूके काटे हुएके कान में फूँक मारनेसे भी बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। वैद्यकमे लिखा है—

यः काशमर्दपत्रं वदने प्रक्षिप्य कर्णफूत्कारकम्।
मनुजो ददाति शीघ्रं जयाति विषं वृश्चिकानां सः॥

सूचना—कसौंदी या नीमके पत्तोंको वह न चबावे, जिसे बिच्छूने काटा हो, पर दूसरा आदमी चबावे और मुँहकी भाफ बाहर न जाने दे। जिसे काटा होगा, वह खुद चबाकर अपने ही कानोंमें फूँक किस तरह मार सकेगा?

(६८) एक या दो तीन जमालगोटे पानीमें पीस कर बिच्छूके काटे स्थानपर लगा दो और साथ ही इसमेंसे ज़रा-सा लेकर नेत्रोंमें आँज दो। भयंकर बिच्छूका ज़हर फौरन उतर कर रोगी हँसने लगेगा। परीक्षित है।

(६९) चिरचिरे या अपामार्गकी जड़, पानीके साथ, सिलपर पीस कर बिच्छूके काटे स्थानपर लगाने और इसी जड़को मुँहमें रख कर चबाने और रस चूसनेसे बिच्छूका ज़हर तत्काल उतर जाता है। देखनेवाले कहते हैं, जादू है। हमने दस बीस बार परीक्षा की, इस जड़ीको कभी फेल होते नहीं देखा। डबल परीक्षित है।

(७०) गोमूत्र और नीबूके रसमें तुलसीके पत्ते पीस कर

लेप करो और ऊपरसे गोबर गरम करके सुहाता-सुहाता बाँध दो। बिच्छूका विष नष्ट हो जायगा।

(७१) कसौंदीके पत्ते मुँहमें रखकर और चबाकर, बिच्छूके काटे हुए आदमीके कानमें फूंक मारनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। वृन्दवैद्यक।

(७२) नीले फूलवाले धमिराके पत्ते मसलकर सूंघनेसे बिच्छू का जहर तत्काल उतर जाता है।

(७३) जहरमोहरेको गुलाबजलमें घिस-घिसकर चटाने और इसीको घिसकर डंककी जगह लगानेसे बिच्छू और साँप प्रभृतिका जहर तथा स्थावर विष निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं।

नोट—ज़हरमोहराकी पहचान हमने इसी भागकी सर्प-विष-चिकित्सामें लिखी है।

(७४) मोरके पंख, मुर्गेके पंख, सैंधा नोन, तेल और घी—इन सबको मिलाकर, इनकी धूनी देनेसे बिच्छूका जहर उतर जाता है।

(७५) सिन्दूर, मीठा तेलिया, पारा, सुहागा, चूक, निशोत, सज्जी [illegible] सोंठ, मिर्च, पीपर, पाँचों नोन, हल्दी, दारुहल्दी, कमलके पत्ते, बच, फिटकरी, अरण्डीकी गिरी, कपूर, मँजीठ, चीता और नौसादर—इन सब चीजोंको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर इस चूर्णको गोमूत्र, गुड़, आकके दूध और थूहरके दूधमें मिलाकर साँप, बिच्छू या अन्य विषैले जीवोंके काटे स्थान पर लगाओ। यह विष नाश करनेमें प्रधान औषधि है। हमने इसे "योगचिन्तामणि"से लिखा है। उक्त ग्रन्थके प्रायः सभी योग उत्तम होते हैं। इससे उम्मीद है, कि यह नुसख़ा जैसी प्रशंसा लिखी है वैसा ही होगा। इसमें सभी चीजें विषनाशक हैं। कहते हैं, इस योग के कहनेवाले सारङ्गराज हैं।

(७६) हींग, हरताल और बिजौरे नीबूका रस—इन तीनोंको खरल करके गोलियाँ बना लो। जब किसीको बिच्छू काटे, इन

गोलियोंको पानीके साथ पीसकर, काटे हुए स्थानपर इनका लेप करदो और इन्हींमेंसे कुछ लेकर नेत्रोंमें आँज दो । अच्छी चीज़ है । वैद्योंको पहलेसे तैयार करके पास रखनी चाहियें ।

(७७) कबूतरकी बीट, हरड़, तगर और सोंठ—इनको बिजौरे नीबूके रसमें मिला कर रोगीको देनेसे बिच्छूका ज़हर उतर जाता है । वाग्भट्ट महाराज लिखते हैं, यह "परमोवृश्चिकागदः" है; यानी बिच्छूके काटेकी श्रेष्ठ दवा है ।

(७८) करंजुवा, कोहका पेड़, लिहसौड़ेका पेड़, गोकर्णी और कुड़ा—इन सब पेड़ोंके फूलोंको दहीके मस्तुमें पीसकर बिच्छूके डंक-मारे स्थानपर लगाना चाहिये ।

(७९) सोंठ, कबूतरकी बीट, बिजौरेका रस, हरताल और सैंधानमक,—इनको महीन पीसकर, बिच्छूके काटे स्थानपर लेप करनेसे बिच्छूका ज़हर फौरन ही उतर जाता है ।

(८०) अगर बिच्छूके काटनेपर, ज़हरका ज़ोर किसी लेप या अंजन और खानेकी दवासे न टूटे, तो एक तिल भरसे लेकर दो, चार, छै और आठ जौ भर तक "शुद्ध सींगिया विष" या "शुद्ध बच्छनाभ विष" अथवा और कोई उत्तम विष रोगीको खिलाओ और इन्हींका डंक मारी हुई जगहपर लेप भी करो । याद रखो, यह अन्तकी दवा है । विष खिला कर गायका घी बराबर पिलाते रहो । घी ही विष का अनुपान है ।

(८१) बच, हींग, बायबिडंग, सैंधानोन, गजपीपल, पाठा, कोला अतीस, सोंठ, काली मिर्च और पीपर—इन दसों दवाओंको "दशांग औषध" कहते हैं । यह दशांग औषध काश्यपकी रची हुई है । इस दवाके पीनेसे मनुष्य समस्त ज़हरीले जानवरोंके विषको जीतता है ।

नोट—इन दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीसकर चूर्ण बना लेना चाहिये । समयपर फाँक कर, ऊपरसे पानी पीना चाहिये । अगर यह पानीके साथ पीस कर और पानीमें ही घोलकर पीयी जावे, तो बहुत ही जल्दी लाभ हो । पर साथ ही

सेंधानोन मिले हुए घीसे डंक मारे स्थानको बारम्बार सींचना चाहिये। बिजौरे के रस और गोमूत्रमें पिसे हुए सँभालूके फूलोंका लेप करना चाहिये अथवा ताज़ा गोवर या खलीको गरम करके, उनका सुहाता-सुहाता लेप करना चाहिये अथवा इन्हें सुहाता-सुहाता गरम बाँध देना चाहिये। पीनेके लिये घी और शहद मिला हुआ दूध या ज़ियादा चीनी डाला हुआ दूध देना चाहिये।

(८२) हल्दी, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपर और सिरसके फल या फूल—इन सबका चूर्ण बना लो। विच्छूकी डंक मारी हुई जगह को स्वेदित करके, इसी चूर्णसे उसे घिसना चाहिये।

नोट—बिच्छूकी डंक मारी हुई जगहमें पसीना निकालनेको महर्षि वाग्भट्ट ने जिस तरह अच्छा कहा है, उसी तरह "तिब्बे अकबरी"के लेखकने भी इसे अच्छा बताया है।

(८३) विच्छूके काटे स्थानपर पहले ज़रा-सा चूना लगाओ, फिर ऊपरसे गंधकका तेजाब लगा दो। फ़ौरन आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(८४) बबूलके पत्तोंको चिलममें रखकर, तमाखूकी तरह पीने और साथ ही डंक-स्थानपर मदारका दूध लगानेसे विच्छूका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(८५) कार्बोलिक या कारबोलिक ऐसिडसे विच्छूके काटे स्थान को जला दो। आराम हो जायगा; विष ऊपर नहीं चढ़ेगा।

(८६) विच्छूकी काटी हुई जगहपर ऐमोनिया लगाओ और उसे ही नाकमें भी सुँघाओ।

नोट—अगर बिच्छू बहुत ज़हरीला हो, शरीरमें पसीने बहुत आते हों, तो शरीरको गरम रखने वाली कोई दवा दो और चाय या काफ़ी पिलाते रहो।

(८७) बेरकी पत्तियोंको पानीके साथ पीसकर, विच्छूके काटे स्थानपर लेप करनेसे ज़हर उतर जाता है।

(८८) लाल और गोल लटज़ीरेके पत्ते खानेसे तत्काल विच्छू का ज़हर उतर जाता है और मनुष्य सुखी हो जाता है।

(८६) काली तुलसीका रस और नमक मिलाकर, दो-तीन वार लगानेसे विच्छू और साँपका विप उतर जाता है । ज़हरीले जानवरों के विपपर तुलसी रामवाण है ।

नोट—तुलसीका रस लगानेसे काले भौंरे और वर्र वगैरःका काटा हुआ आराम हो जाता है । कानमें एक या दो बूँद तुलसीका रस डालने और तुलसी का ही रस शहद और नमक मिलाकर पीनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है । सेंधा नोन और काली तुलसीका रस, ताम्बेके वरतनमें गरम करके, नाकमें चार-छै वार डालनेसे नाकसे वदवू वगैरः आना वन्द हो जाता है । तुलसीका रस ३० बूँद, कच्चे कपासके फूलोंका रस २० बूँद, लहसनका रस ३० बूँद और मधु १॥ ड्राम,—इनको मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द अवश्य नाश हो जाता है ।

मूषक-विष-चिकित्सा ।

लापरवाहीका नतीजा—प्राणनाश ।

आजकलके पाश्चात्य डाक्टर साँप और वावले कुत्ते प्रभृति ज़हरीले जानवरोंके काटे हुए मनुष्योंकी प्राणरक्षाकी जितनी फिक्र या खोज करते या कर रहे हैं, उसकी शतांश फिक्र भी इस छोटेसे जीव—चूहेके विपसे प्राणियोंको वचानेकी नहीं करते, यह वड़े ही खेदकी वात है । सर्व साधारण इसको मामूली जानवर समझकर, इसके विपकी भयंकरता और दुर्निवारता न जाननेके कारण, इसके काटनेकी उतनी परवा नहीं करते, यह भारी नादानी है । सर्प-विच्छू प्रभृतिके काटनेपर, उनका विप फौरन ही भयंकर वेदना करता और चढ़ता है, अतः लोग सुचिकित्सा होनेसे वहुधा वच भी जाते हैं; पर ज़हरीले चूहोंका विप प्रथम तो उतनी तकलीफ नहीं देता; दूसरे, अनेक वार मालूम भी नहीं होता कि, हमारे शरीरमें चूहेका विप प्रवेश कर गया है; तीसरे, चूहेके विपके खूनमें मिलनेसे

जो लक्षण देखनेमें आते हैं, वे वातरक्त या उपदंश आदिके लक्षणोंसे मिल जाते हैं, अतः हर तरह धोखा होता है और मनुष्य धीरे-धीरे अनेक रोगोंका शिकार होकर मौतके मुँहमें चला जाता है।

धोखा होनेके कारण।

चूहोंका विष और ज़हरीले जानवरोंकी तरह केवल दाढ़-दाँतों या नख वगैरः किसी एक ही अंगमें नहीं होता। चूहोंका विष पाँच जगह रहता है:—

(१) वीर्यमें। (२) पेशाबमें।
(३) पाखानेमें। (४) नाखूनोंमें।
(५) दाढ़ोंमें।

यद्यपि मूषक-विषके रहनेके पाँच स्थान हैं, पर प्रधान विष चूहों के पेशाब और वीर्यमें ही होता है। हर घरमें कमोबेश चूहे रहते हैं। वे घरके कपड़े-लत्तों, खाने-पीनेके पदार्थों, बर्तनों तथा अन्यान्य चीज़ों में बेखटके घूमते, बैठते, रहते और मौज करते हैं। जब उन्हें पाखाने-पेशाबकी हाजत होती है, उन्हीं सबमें पेशाब कर देते हैं; वहीं पाखाना फिर देते और वही अपना वीर्य भी त्याग देते हैं। इसके सिवा, ज़मीनपर मल-मूत्र और वीर्य डालनेमें तो उन्हें कभी रुकावट होती ही नहीं। इनके मल-मूत्र प्रभृतिसे ख़राब हुए कपड़ोंको प्रायः सभी लोग पहनते, ओढ़ते और बिछाते हैं, अथवा इनके मल-मूत्र आदि से ख़राब हुई ज़मीनपर अपने कपड़े रखते, बिछाते और सोते हैं। चूहोंका मल-मूत्र या वीर्य कपड़ों प्रभृतिसे मनुष्य-शरीरमें घुस जाता है; यानी उनका और शरीरका स्पर्श होते ही विषका असर शरीरमें हो जाता है। मज़ा यह कि, उनका ज़हर इस तरह शरीर में घुस जाता और अपना काम करने लगता है, पर मनुष्यको कुछ भी मालूम नहीं होता। लेकिन जब वह—काल और कारण मिल जानेसे—कुपित होता है, तब उसके विकार मालूम होते हैं। पर

मनुष्य उस समय भी नहीं समझता, कि यह सब मूषक महाराजकी कृपाका नतीजा है। अब आप ही समझिये कि, यह धोखा होना नहीं तो क्या है ?

इतना ही नहीं, जब चूहेके विषके विकार प्रकट होते हैं, तब भी नहीं मालूम होता, कि यह गणेशवाहनके विषका फल है। क्योंकि चूहेके विषके प्रभावसे मनुष्यके शरीरमें ज्वर, अरुचि, रोमाञ्च आदि उपद्रव होते और चमड़ेपर चकत्ते-से हो जाते हैं। चकत्ते वगैरः वात-रक्त, रक्तविकार और उपदंश रोगमें भी होते हैं। इससे अच्छे-अच्छे अनुभवी वैद्य-डाक्टर भी धोखा खा जाते हैं। कोई उपदंशकी दवा देता है, तो कोई वातरक्त-नाशक औषधि देता है, पर असल तह तक कोई नहीं पहुँचता। यद्यपि अनेक बार अटकल-पच्चू दवा लग जाती है, पर रोगका निदान ठीक हुए बिना बहुधा रोग आराम नहीं होता। कुत्ता काटता है, तो उसका विष तत्काल ही कोप नहीं करता, काटते ही हड़कवाय नहीं होती, समय और कारण मिलनेपर हड़कवाय होती है। इसी तरह चूहेके काटने या और तरहसे शरीरमें उसका विष घुस जानेसे तत्काल ही विकार नज़र नहीं आते, समय और काल पाकर विकार मालूम होते हैं। पर कुत्तेके काटनेपर ज्योंही हड़कवाय होती है, लोग समझ लेते हैं, कि अमुक दिन कुत्तेने काटा था; पर चूहे के विषसे तो कोई ऐसी बात नज़र नहीं आती। कौन जाने कब किस वस्त्र प्रभृतिके शरीरसे छू जानेसे चूहेका विष शरीरमें घुस गया ? इस तरह चूहेके विषके मनुष्य-शरीरमें प्रवेश कर जानेपर धोखा ही होता है। इसीसे उचित चिकित्सा नहीं होती और चूहेका विष धीरे-धीरे जीवनी-शक्तिका ह्रास करके, अन्तमें मनुष्यके प्राण हर लेता है।

साँप वाले घरमें न रहने, साँपको घरसे किसी तरह निकाल बाहर करने या मार डालनेकी सभी विद्वानोंने राय दी है। नीति-कारोंने भी लिखा है:—

दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्योश्च उत्तरदायकः ।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः ॥

दुष्टा पत्नी, दग़ाबाज़ मित्र, जवाबदिही करनेवाला नौकर और साँप-वाला घर—ये सब मौतकी निशानी हैं; अतः इन्हें त्याग देना चाहिये। नीतिज्ञोंने इन सबको त्याग देनेकी सलाह दी है, पर चूहे भगाने या चूहोंसे अलग रहनेके लिये इतना ज़ोर किसीने भी नहीं दिया है !!

हमने देखा है, अनेकों गृहस्थोंके घरोंमें चूहोंकी पल्टन-की-पल्टन रहती है। आदमीको देखते ही ये बिलोंमें घुस जाते हैं, पर ज्योंही आदमी हटा कि ये कपड़ोंमें घुसते, खाने-पीनेके पदार्थों पर ताक लगाते और कोई चीज़ खुली नहीं मिलती तो उसे खोलते और ढकन हटाते हैं; और यदि खाने-पीनेके पदार्थ खुले हुए मिल जाते हैं, तो आनन्दसे उन्हें खाते, उन्हीं पर मल-मूत्र त्यागते और फिर बिलोंमें घुस जाते हैं। गृहस्थोंकी कैसी भयङ्कर भूल है ! बेचारे अनजान गृहस्थ क्या जानें कि, इन चूहोंकी वजहसे हमें किन-किन प्राणनाशक रोगोंका शिकार होना पड़ता है ? इसीसे वे इन्हें घरसे निकालनेकी विशेष चेष्टा नहीं करते। सर्प-बिच्छू आदिको देखते ही मनुष्य उन्हें मार डालता है; पागल कुत्तेको देखकर भंगी या अन्य लोग उसे गोली या लाठीसे मार डालते हैं; पर चूहोंकी उतनी पर्वा नहीं करते ! गृहस्थोंको इन घोर प्राणघातक जीवोंसे बचनेकी चेष्टा अवश्य करनी चाहिये; क्योंकि निर्विष चूहोंमें ही विषैले चूहे भी मिले रहते हैं। मालूम नहीं होता, कौनसा चूहा विषैला है। अतः सभी चूहोंको घरसे निकाल देना परमावश्यक है। बहुतसे अन्धविश्वासी चूहोंको गणेशजीका वाहन या सवारी समझ कर नहीं छेड़ते। वे समझते हैं, कि गणेशजी नाराज़ हो जायँगे। अब इस युगमें ऐसा अन्धविश्वास ठीक नहीं। अतः हम चूहोंको भगा देनेके चन्द उपाय लिखते हैं:—

चूहे भगानेके उपाय ।

(१) फिटकरीको पीस कर चूहोंके बिलोंमें डाल दो और जहाँ चूहोंकी ज़ियादा आमदरफ्त हो वहाँ फैला दो। चूहे फिटकरीकी गन्धसे भागते हैं।

(२) एक चूहेको पकड़ कर और उसकी खाल उतार कर घर में छोड़ दो अथवा उसके फोते निकाल कर छोड़ दो। इस उपायसे सब चूहे भाग जायँगे।

(३) एक चूहेको नीलके रंगमें डुबोकर छोड़ दो। उसे देखते ही सब चूहे बिल छोड़ कर और जगह भाग जायँगे। जहाँ-जहाँ वह नीला चूहा जायगा, वहाँ-वहाँ भागड़ मच जायगी।

(४) भाँगके बीज और केशरको आटेमें मिलाकर गोलियाँ बनालो और बिलोंमें डाल दो। सब चूहे खा-खाकर मर जायँगे।

(५) संखिया लाकर आटेमें मिला लो और पानीके साथ गूँद कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको बिलोंमें डाल दो। चूहे इन गोलियोंको खा-खाकर मर जायँगे, बशर्त्ते कि उन्हें कहीं जल पीनेको न मिले। अगर जल मिल जायगा, तो बच जायँगे।

(६) गायकी चरबी घरमें जलानेसे चूहे भाग जाते हैं।

चूहोंके विषसे बचनेके उपाय ।

जिस तरह मनुष्यको साँप, बिच्छू और कनखजूरे प्रभृतिके बचनेकी ज़रूरत है, उसी तरह चूहोंसे भी बचनेकी ज़रूरत है, अतः हम चूहोंके विषसे बचनेके चन्द उपाय लिखते हैं:—

(१) आपके घरमें चूहोंके बिल हों, तो हज़ार काम छोड़ कर उन्हें बन्द कर या करवा दो। इनके बिलोंमें ही साँप या कनखजूरे अथवा और प्राणघाती जीव आकर रह जाते हैं।

(२) आपके मकानमें जितनी मोरियाँ हों, उन सबमें लोहे या पत्थरकी ऐसी जालियाँ लगवा दो, जिनमें होकर पानी तो निकल जाय, पर चूहे या अन्य जानवर न आ जा सकें। चूहे मोरियोंमें बहुत रहते हैं।

(३) घरके कोनों या और स्थानोंमें फालतू चीज़ोंका ढेर मत लगा रखो। ज़रूरतकी चीज़ोंके सिवा कोई चीज़ घरमें मत रखो। बहुतसे मूर्ख टूटे-फूटे कनस्तर, हाँडी-कूड़े, मैले चीथड़े या ऐसी ही और फालतू चीज़ें रखकर रोग मोल लेते हैं।

(४) ज़रूरी सामानको, जो रोज़ काममें न आता हो, ट्रङ्कों या सन्दूक़ोंमें रखो। सन्दूक़ोंको बेञ्चों या तिपाइयोंपर ऊँचे रखो, जिससे उनके नीचे रोज़ भाड़ू लग सके और चूहे, साँप, कनखजूरे या और जीव वहाँ अपना अड्डा न जमा सकें। हर समय पहननेके कपड़ोंको ऐसी अलगनियों या खूँटियोंपर टाँगो, जिनपर चूहे न पहुँच सकें; क्योंकि चूहे ज़रा-सा सहारा मिलनेसे दीवारोंपर भी चढ़ जाते और उनपर मल-मूत्र त्याग आते हैं।

(५) खाने-पीनेके पदार्थ सदा ढके रखो; भूलकर भी खुले मत रखो। ज़रासी ग़फ़लतसे प्राण जानेकी आशङ्का है। क्योकि खाने-पीने की चीज़ोंपर अगर चूहे, मकड़ी, छिपकली और मक्खी आदि पहुँच गये और उनपर विष छोड़ गये, तो आप कैसे जानेंगे? उन्हें जो भी खायगा, प्राणोंसे हाथ धोयेगा। मक्खियाँ विषैले कीड़े ला-लाकर उन चीज़ोंपर छोड़ देती हैं और चूहे मल-मूत्र त्यागकर उन्हें विष-समान बना देते हैं। अतः हम फिर ज़ोर देकर कहते हैं, कि आप खाने-पीनेके पदार्थ ढक कर बन्द आलमारियोंमें रखो। इस काममें ज़रा भी भूल मत करो।

(६) चूहोंके पेशाब और मल-मूत्रसे ख़राब हुए नीले-नीले बर्तनों को बिना खूब साफ किये काममें मत लाओ। जिन घरोंमें बहुत-सा लोहा-लक्कड़ पड़ा हो, उन घरोंमें मत जाओ, क्योंकि वहाँ चूहे प्रभृति

अनेक ज़हरीले जानवर रहते और विष त्यागते हैं। वह विष आपके कपड़ों या शरीरमें लगकर आपको अनेक रोगोंमें फँसा देगा। अगर वह कपड़ों या आपके शरीरसे न लगेगा, तो साँस द्वारा आपके शरीरमें घुसेगा। फिर धीरे-धीरे आपकी जीवनी शक्तिका नाश करके आपको मार डालेगा।

(७) हमेशा धोबीके धुले साफ कपड़े पहनो। अगर उनपर ज़रा सा भी दाग़ या नीले-पीले रोगसे वहते दीखे, तो आप उन्हें स्वयं साबुनसे धोकर पहनो। सबसे अच्छा तो यही है कि, आप रोज़ धुले हुए कपड़े पहनें। अँगरेज़ लोग ऐसा ही करते हैं। आजका कपड़ा कल धुलवाकर पहनते हैं। अँगरेज़ अफसर तो धोबियोंको नौकर रखते हैं।

(८) अपने घरमें रोज़ गंधक, लोवान या कपूरकी धूनी दिया करो, जिससे विषैली हवा निकल जाय और अनेक विषैले कीड़े भी भाग जायँ। जैसेः—

(क) छरीला और फिटकरीकी धूआँसे मच्छर भाग जाते हैं।

(ख) गंधक या कनेरके पत्तोंकी गन्धसे पिस्सू भाग जाते हैं।

(ग) हरताल और नकछिकनीकी धूआँसे मक्खियाँ भाग जाती हैं।

(घ) गंधककी धूआँ और लहसनसे वर्र या ततैये भाग जाते हैं।

(ङ) अफीम, कालादाना, कन्द, पहाड़ी बकरीका सींग और गंधक—इन सबको मिला कर धूनी देनेसे समस्त कीड़े-मकोड़े भाग जाते हैं।

(९) ताज़ा या गरम जलसे रोज स्नान किया करो। अगर पानीमें थोड़ा-सा कपूर मिला लिया करो, तो और भी अच्छा; क्योंकि कपूरसे प्रायः सभी कीड़े नष्ट हो जाते हैं। विष नाश करनेकी शक्ति भी कपूरमें खूब है। पहलेके अमीर कपूरके चिराग़ इसी ग़रजसे जलवाते थे। कपूरकी आरतीका भी यही मतलब है। इनसे विषैली हवा निकल जाती और अनेक प्रकारके कीड़े घर छोड़ कर भाग जाते हैं। चन्दन, कपूर और सुगन्धवालाका शरीरपर लेप करना भी बड़ा

गुणकारी है। नहाकर ऐसा कोई लेप, मौसमके अनुसार, अवश्य करना चाहिये।

(१०) जहाँ तक हो, मकानको खूब साफ रखो। ज़रा-सा भी कूड़ा-करकट मत रहने दो। इसके सिवा, हो सके तो नित्य, नहीं तो, चौथे-पाँचवें दिन साफ पानी या पानीमें कोई विषनाशक दवा मिलाकर उसीसे घर धुलवा देना बहुत ही अच्छा है। इस तरह ज़मीन वगैरःमें लगा हुआ चूहे प्रभृतिका विष धुलकर बह जायगा।

(११) दूसरे आदमीके मैले या साफ कैसे भी कपड़े हरगिज़ मत पहनो। पराये तौलिये या अँगोछेसे शरीर मत पोंछो। कौन जाने किसके कपड़ोंमें कौनसा विष हो? हमारे यहाँ आजकल एक वात-रक्त या पारेके दोषका रोगी कभी-कभी आता है। सारे शहरके चिकित्सक उसका इलाज कर चुके, पर वह आराम नहीं होता। वह हमसे गज़ भर दूर बैठता है, पर उसके शरीरको छूकर जो हवा आती और हमारे शरीरमें लगती है, फौरन खुजली-सी चला देती है। उसके जाते ही खुजली बन्द हो जाती है। अगर कोई शख्स ऐसे आदमीके कपड़े पहने या उसके वस्त्रसे शरीर रगड़े, तो उसे वही रोग हुए बिना न रहे। इसीसे कहते हैं, किसीके साफ या मैले कैसे भी कपड़े न पहनो और न छूओ।

आजकलके विद्वानोंकी अनुभूत बातें।

अहमदाबादके "कल्पतरु" में चूहेके विषपर एक उपयोगी लेख किसी सज्जनने परोपकारार्थ छपवाया था। उसमें लिखा है:—"चूहा मनुष्यको जिस युक्तिसे काटता है, वह भी सचमुच ही आश्चर्य्यकारी बात है। जिस समय मनुष्य नींदमें ग़र्क़ होता है, चूहा अपने बिल या छप्परमें से नीचे उतरता है। बहुधा सोते हुए आदमीकी किसी उँगली को ही वह पसन्द करता है। पहले वह अपनी पसन्दकी जगहपर फूँक मारता है। फूँक मारनेसे शायद वह स्थान बहरा या सूना हो जाता

हो। प्रायः ज़हरीले चूहेकी लारमें चमड़ेके स्पर्श-ज्ञानको नाश करने की शक्ति रहती है। चूहेकी फूँकमें ऐसी ही कोई विचित्र शक्ति होती है, तभी तो वह जब तक काटता और खून निकालता है, मनुष्यको कुछ ख़बर नहीं होती, वह सोता रहता है। फूँक मारनेके बाद, चूहा जीभसे उस भागको चाटता और फिर सूँघता है। सोते आदमीकी उँगली अथवा अन्य किसी भागपर (१) फूँकनेकी, (२) लार लगाने की, और (३) चाटनेकी—इन तीन क्रियाओंके करनेसे उसे यह मालूम हो जाता है, कि मेरी शिकार सोती है—जागती नहीं। अपनी क्रिया सफल हुई समझकर, वह फिर काटता है।

"उसका दंश कुछ गहरा नहीं होता; तोभी इतना तो होता है, जितनेमें उसके दंशका विष चमड़ेके नीचे खूनमें मिल जावे। कुछ गहराई होती है, तभी तो खून भी निकल आता है। चूहेके काटकर भाग जानेके बाद मनुष्य जागता है। जागते ही उसे किसी प्राणीके काट जानेका भय होता है, पर वह इस बातका निश्चय नहीं कर सकता, कि किसने काटा है—साँपने, चूहेने या और किसी प्राणीने। साँपके काटने पर तो तुरन्त मालूम हो जाता है, क्योंकि दंशस्थानमें जोरसे झन-झनाहट या पीड़ा होती है और वहाँ दाढ़ोंके चिह्न दीखते हैं, पर चूहेका विष तो उसके दंशके समान युक्तियुक्त व गुप्त होता है। चूहे के दंशकी पीड़ा अधिक न होनेके कारण, मनुष्य उसकी उपेक्षा करता है। मिर्च और खटाई खाता रहता है। थोड़े ही दिनों बाद, समय और कारण मिलनेसे, चूहेका विष प्रत्यक्ष होने लगता है। दो सप्ताह तक विषका पता नहीं लगता। किसी-किसी चूहेका विष जल्दी ही प्रकट होने लगता है। दंशका भाग या काटी हुई जगह सूज जाती है। चूहे के विषका भाग बहुधा लाल होता है, सूजनमें पीड़ा भी बहुत होती है, शरीरमें दाह या जलन और दिलमें घबराहट होती है। चूहेके विषके ये तीक्ष्ण लक्षण महीने दो महीनेमें शान्त हो जाते हैं; पर

सूजन नहीं उतरती। वह सख़्त हो जाती है। इस विषमें यह विलक्षणता है, कि थोड़े दिनों तक रोगीको आराम मालूम होता है। फिर कुछ दिनोंके बाद, वही रोग पल्टा खाकर पुनः उभड़ आता है। उस समय रोगीको ज्वर होता है। यह क्रम कई साल तक चलता है।"

एक सज्जन लिखते हैं:—"चूहा काटता है, तो ज़ियादा दर्द नहीं होता। सवेरे उठनेपर काटा हुआ मालूम होता है। चूहा अगर ज़हरीला नहीं होता, तब तो कुछ हानि नहीं होती, परन्तु अगर ज़हरीला होता है, तो कुछ दिनोंमें विष रक्तमें मिलकर चेपक-सा उठाता है। अगर रोयेंवाली जगहपर काटा होता है, तो रतवा रोगकी तरह उस जगह सूजन आ जाती है। इसलिये ज्योंही चूहा काटे, उसे ज़हरीला समझकर यथोचित उपाय करो। आठ दिनों तक 'काली पाढ़'का काढ़ा पिलाओ। काली पाढ़के बदले अगर 'सोनामक्खीके पत्ते' उबालकर कुछ दिन पिलाये जायँ, तो चूहेका विष पाख़ानेकी राहसे निकल जाय। काटी हुई जगहपर या उसके ज़हरसे जो स्थान फूल उठे वहाँ, 'दशाङ्गलेप'से काम लो; यानी उसे शीतल पानी या गुलाबजलमें घोट कर चूहेके काटे हुए स्थानपर लगाओ। यह लेप फेल नहीं होता।"

चूहेके विषपर आयुर्वेदकी बातें।

सुश्रुत-कल्पस्थानमें चूहे अठारह तरहके लिखे हैं। वहाँ उनके अलग-अलग नाम, उनके विषके लक्षण और चिकित्सा भी अलग-अलग लिखी है। पर जिस तरह बंगसेन और भावमिश्र प्रभृति विद्वानोंने सब तरहके चूहोंके विषके अलग-अलग लक्षण और चिकित्सा नहीं लिखी, उसी तरह हम भी अलग-अलग न लिख कर, उनका ही अनुकरण करते हैं, क्योंकि पाठकोंको वह सब झंझट मालूम होगा।

चूहेके विषकी प्रवृत्ति और लक्षण।

जहाँ ज़हरीले चूहोंका शुक्र या वीर्य गिरता है अथवा उनके वीर्यसे

ल्हिसे या सने हुए कपड़ोंसे मनुष्यका शरीर छू जाता है; यानी ऐसे कपड़े या अन्य पदार्थ मनुष्य-शरीरसे छू जाते हैं अथवा चूहोंके नाखून, दाँत, मल और मूत्रका मनुष्य-शरीरसे स्पर्श हो जाता है, तो शरीरका खून, दूषित होने लगता है। यद्यपि इसके चिह्न, जल्दी ही नज़र नहीं आते, पर कुछ दिनों बाद शरीरमें गाँठें हो जाती हैं, सूजन आती है, कर्णिका—किनारेदार चिह्न, मण्डल-चकत्ते, दारुण, फुन्सियाँ, विसर्प और किटिभ हो जाते हैं। जोड़ोंमें तीव्र वेदना और फूटनी होती तथा ज्वर चढ़ आता है। इनके अलावः दारुण मूर्च्छा—वेहोशी, अत्यन्त निर्बलता, अरुचि, श्वास, कम्प और रोमहर्ष—ये लक्षण होते हैं। ये लक्षण "सुश्रुत" में लिखे हैं। किन्तु वाग्भट्टने ज्वरकी जगह शीतज्वर और प्यास तथा कफमें लिपटे हुए बहुत ही छोटे-छोटे चूहों के आकारके कीड़ोंका वमन या क़यमें निकलना अधिक लिखा है।

वंगसेन और भावप्रकाशमें लिखा है:—चूहेके काटनेसे खून पीला पड़ जाता है; शरीरमें चकत्ते उठ आते हैं; ज्वर, अरुचि और रोमाञ्च होते हैं, एवं शरीरमें दाह या जलन होती है। अगर ये लक्षण हों, तो समझना चाहिये कि, दूषी विष वाले चूहेने काटा है।

असाध्य विष वाले चूहेके काटनेसे मूर्च्छा-वेहोशी, शरीरमें सूजन, शरीरका रंग और-का-और हो जाना, शब्द या आवाज़को ठीक तरह से न सुनना, ज्वर, सिरमें भारीपन, लार गिरना और खूनकी क़य होना—ये लक्षण होते हैं। अगर ऐसे लक्षण हो, तो समझना चाहिये, कि ज़हरी चूहेने काटा है।

वाग्भट्टने लिखा है, उपरोक्त असाध्य लक्षणों वाले तथा जिनकी वस्ति सूजी हो, होठ विवर्ण हो गये हों और चूहेके आकारकी गाँठें हो रही हों, ऐसे चूहेके विषवाले रोगियोंको वैद्य त्याग दे, यानी ये असाध्य हैं।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है:—चूहेके काटनेसे अंग सूजकर घायल

हो जाता है, दर्द होता है और काटा हुआ स्थान नीला या काला हो जाता है। इसके सिवा, काटा हुआ स्थान निकम्मा होकर, भीतरकी ओर फैलकर, दूसरे अंगोंको उसी तरह ख़राब कर देता है, जिस तरह नासूर कर देता है।

नोट—यूनानी ग्रन्थोंमें लिखा है, चूहेके काटनेपर नीचे लिखे उपाय करोः—

(१) विषको चूस-चूसकर खींचो।

(२) काटी हुई जगहपर पछने लगाकर खून निकालो।

(३) अगर देर होनेसे काटा स्थान बिगड़ने लगे, तो फस्द खोलो, दस्त कराओ, वमन कराओ, पेशाब लानेवाली और विष नाश करनेवाली दवाएँ दो।

(४) विष खानेपर जो उपाय किये जाते हैं, उन्हे करो।

मूषक-विष-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) पहले इस बातका निर्णय करो कि, ठीक चूहेने ही काटा है या और किसी जीवने। विना निश्चय और निदान किये चिकित्सा आरम्भ मत कर दो।

(२) चिकित्सा करते समय रोगी, रोगका बलाबल, अवस्था, प्रकृति, देश और काल आदिका विचार कर लो, तब इलाज करो।

(३) जब चूहेके विषका निश्चय हो जाय, पहले शिरावेध कर खून निकाल दो और कोई विषनाशक रक्तशोधक दवा रोगीको पिलाओ या खिलाओ। चूहेके दंशको तपाये हुए पत्थर या शीशे से दाग दो। अगर उसे न जलाओगे, तो बक़ौल महर्षि वाग्भट्टके तीव्र वेदना वाली कर्णिका पैदा हो जायगी। दंशको दग्ध करके या जलाकर ऊपर से— सिरस, हल्दी, कूट, केशर और गिलोयको पीसकर लेप कर दो। अगर दागनेकी इच्छा न हो, तो नश्तरसे दंश-स्थानको चीरकर या

पछने लगाकर, वहाँका ख़राब खून एकदम निकाल दो। इस कामके बाद भी वही सिरस आदिका लेप कर दो या घरका धूआँ, मँजीठ, हल्दी और सैंधे नोनको पीस कर लेप कर दो। खुलासा यह है:—

(क) काटी हुई जगहको दाग दो और ऊपरसे दवाओंका लेप कर दो। अथवा नश्तर प्रभृतिसे वहाँका ख़राब खून निकाल कर दवाओंका लेप करो।

(ख) शिरा वेध कर या फस्द खोलकर ख़राब खून और विषको निकाल दो।

(ग) खाने-पीनेको खून साफ करने और ज़हर नाश करने वाली दवा दो। ये आरम्भिक या शुरूके उपाय हैं। पहले यही करने चाहियें।

(४) अगर विष आमाशयमें पहुँच जाय—जब विष आमाशयमें पहुँचेगा लार बहने लगेगी—तो नीचे लिखे काढ़े पिलाकर वमन करानी चाहियें:—

(क) अरलूकी जड़, जंगली तोरईकी जड़, मैनफल और देव-दालीका काढ़ा पिलाकर वमन कराओ; पर पहले दही पिला दो, क्योंकि ख़ाली पेट वमन कराना ठीक नहीं है।

(ख) बच, मैनफल, जीमूत और कूटको गोमूत्रमें पीसकर, दहीके साथ पिलाओ। इसके पीनेसे क़य होंगी और सब तरहके चूहोंका विष नष्ट हो जायगा।

(ग) दही पिलाकर, जंगली कड़वी तोरई, अरलू और अंकोट का काढ़ा पिलाओ। इससे भी वमन होकर विष नष्ट हो जायगा।

(घ) कड़वी तोरई, सिरसका फल, जीमूत और मैनफल—इनके चूर्णको दहीके साथ पिलाओ। इससे भी वमनके द्वारा विष निकल जायगा।

(५) अगर जरूरत समझो, तो जुलाब भी दे सकते हो; वाग्भट्टजी जुलाबकी राय देते हैं। निशोथ, कालादाना और त्रिफला,—इन तीनों

का कल्क सेवन कराओ। इस जुलाबसे दस्त भी होंगे और ज़हर भी निकल जायगा।

(६) इस रोगमें भ्रम और दारुण मूर्च्छा भी होती है, और यें उपद्रव दिल और दिमाग़पर विषका विशेष प्रभाव हुए बिना हो नहीं सकते, अतः इस रोगमें नस्य और अञ्जन भी काममें लाने चाहियें—

(क) गोबरके रसमें सोंठ, मिर्च और पीपरके चूर्णको पीस कर नेत्रोंमें आँजो।

(ख) सँभालूकी जड़, बिल्लीकी हड्डी और तगर—इनको पानी में पीस कर नस्य दो। इससे चूहेका विष नष्ट हो जाता है।

(७) केवल लगाने, सुँघाने या आँजनेकी दवाओंसे ही काम नहीं चल सकता, अतः कोई उत्तम विषनाशक अगद या और दवा भी होनी चाहिये। सभी तरहके उपाय करनेसे यह महा भयंकर और दुर्निवार विष शान्त होता है। नीचेकी दवाएँ उत्तम हैं:—

(क) सिरसके बीज लाकर आकके दूधमें भिगो दो। इसके बाद उन्हें सुखा लो। दूसरे दिन, फिर उनको ताज़ा आकके दूधमें भिगो कर सुखा लो। तीसरे दिन फिर, आकके ताज़ा दूधमें उन्हें भिगोकर सुखा लो। ये तीन भावना हुईं। इन भावना दिये बीजोंके बराबर "पीपर" लेकर पीस लो और पानीके साथ घोट कर गोलियाँ बना लो। वाग्भट्टने इन गोलियोंकी बड़ी तारीफ की है। यह अगद साँपके विष, मकड़ीके विष, चूहेके विष, बिच्छूके विष और समस्त कीड़ोंके विषको नाश करने वाली है।

(ख) कैथके रस और गोबरके रसमें शहद मिलाकर चटाओ।

(ग) सफेद पुनर्नवेकी जड़ और त्रिफलेको पीस-छान कर चूर्ण कर लो। इस चूर्णको शहदमें मिलाकर चटाओ।

(८) दवा खिलाने, पिलाने, लगाने वगैरःसे ही काम नहीं चल सकता। रोगीको अपथ्य सेवनसे भी बचाना चाहिये। इस रोगवाले

को शीतल हवा, पुरवाई हवा, शीतल भोजन, शीतल जलके स्नान, दिन में सोने, मेहमें फिरने और अजीर्ण करनेवाले पदार्थोंसे अवश्य दूर रखना ज़रूरी है। इस रोगमें यह बड़ी बात है, कि मेह बरसने या बादल होनेसे यह अवश्य ही कुपित होता है। वाग्भट्टमें लिखा है:—

सशेषं मूषकविषं प्रकुप्यत्यभ्रदर्शने ।
यथायथं वा कालेषु दोषाणां वृद्धि हेतुषु ॥

बाक़ी रहा हुआ चूहेका विष बादलोंके देखनेसे प्रकुपित होता है अथवा वातादि दोषोंके वृद्धिकालमें कुपित होता है।

मूषक-विष नाशक नुसखे ।

१—वमनकारक दवाएँ—

(क) कड़वी तोरई और सिरसके बीजोंसे वमन कराओ।

(ख) अरलू, जंगली तोरई, देवदाली और मैनफलके काढ़ेसे वमन कराओ।

(ग) कड़वी तोरई, सिरसका फल, जीमूत और मैनफलका चूर्ण दहीमें मिला कर खिलाओ और वमन कराओ।

(घ) सिरस और अंकोलके काढ़ेसे वमन कराओ।

२—विरेचक या जुलाबकी दवाएँ—

(क) निशोथ, दन्ती और त्रिफलेके कल्क द्वारा दस्त कराओ।

(ख) निशोथ, कालादाना और त्रिफला—इनके कल्कसे दस्त कराओ।

३—लेपकी दवाएँ—

(क) अंकोलकी जड़ बकरीके मूत्रमें पीसकर लेप करो।

(ख) करंजकी छाल और उसके बीजोंको पीसकर लेप करो।

(ग) कैथके बीजोंका तेल लगाओ।

(घ) सिरसकी जड़को बकरीके मूत्रमें पीस कर लेप करो।

(ङ) सिरसके बीज, नीमके पत्ते और करंजुवेके बीजोंकी गिरी इन सबको बराबरके गायके मूत्रमें पीसकर गोली बना लो । ज़रूरत के समय, गोलीको पानीमें घिसकर लेप करो ।

(च) सिरस, हल्दी, कूट, केशर और गिलोय,—इनको पानीमें पीसकर लेप करो ।

नोट—ख से च तकके नुसखे परीक्षित हैं ।

(छ) काली निशोथ, सफेद गोकर्णी, वेल-वृक्षकी जड़ और गिलोयको पीसकर लेप करो ।

(ज) घरका धूआँ, मँजीठ, हल्दी और सैंधानोनको पीसकर लेप करो ।

(झ) बच, हींग, बायबिडङ्ग, सेंधानोन, गजपीपर, पाढ़ा, अतीस, सोंठ, मिर्च और पीपर—यह "दशांग लेप" है । इसको पानीमें पीस कर लगाने और इसका कल्क पीनेसे समस्त ज़हरीले जीवोंका विष नष्ट हो जाता है । मूषक-विषपर यह लेप परीक्षित है ।

खाने-पीनेकी औषधियाँ ।

(४) सिरसकी जड़को शहदके साथ या चाँवलोंके जलके साथ या बकरीके मूत्रके साथ पीनेसे चूहेका विष नाश हो जाता है। परीक्षित है ।

(५) अंकोलकी जड़का कल्क बकरीके मूत्रके साथ पीनेसे चूहेका विष शान्त हो जाता है ।

(६) इन्द्रायणकी जड़, अंकोलकी जड़, तिलोंकी जड़, मिश्री, शहद और घी—इन सबको मिलाकर पीनेसे चूहेका दुस्तर विष उतर जाता है । परीक्षित है ।

(७) कसूमके फूल, गायका दाँत, सत्यानाशी, कटेरी, कबूतरकी बीट, दन्ती, निशोथ, सेंधानोन, इलायची, पुनर्नवा और राब,—इन सब को एकत्र मिलाकर, दूधके साथ पीनेसे चूहेका विष दूर होता है ।

(८) कैथके रसको, गोबरके रस और शहदमें मिलाकर, चाटने से चूहेका विष नाश हो जाता है ।

(९) गोरख-ककड़ी, बेलगिरी, काकोलीकी जड़, तिल और मिश्री—इन सबको एकत्र पीसकर, शहद और घीमें मिलाकर, सेवन करनेसे चूहेका विष नष्ट हो जाता है ।

(१०) बेलगिरी, काकोलीकी जड़, कोयल और तिल—इनको शहद और घीमें मिलाकर सेवन करनेसे चूहेका विष नष्ट हो जाता है।

(११) चौलाईकी जड़को पानीके साथ पीसकर कल्क—लुगदी बना लो । फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना दूध लेकर घी पका लो । इस घीके सेवन करनेसे चूहेका विष तत्काल नाश हो जाता है ।

(१२) सफेद पुनर्नवेकी जड़ और त्रिफला—इनको पीस-छान कर शहदमें मिलाकर पीनेसे मूषक-विष दूर हो जाता है ।

(१३) सोंठ, मिर्च, पीपर, कूट, दारुहल्दी, मुलेठी, सेंधानोन, संचरनोन, मालती, नागकेशर और काकोल्यादि मधुरगणकी जितनी दवाएँ मिलें—सबको "कैथके रसमें" पीसकर, गायके सींगमें भरकर और उसीसे बन्द करके १५ दिन रखो । इस अगदसे विष तो बहुत तरहके नाश होते हैं; पर चूहेके विषपर तो यह अगद प्रधान ही है ।

मच्छरके विषकी चिकित्सा ।

सुश्रुतमें मच्छर पाँच तरहके लिखे हैं:—

(१) समन्दरके मच्छर ।

(२) परिमण्डल मच्छर = गोल बाँधकर रहने वाले ।

(३) हस्ति मच्छर = बड़े मोटे मच्छर या डाँस ।

(४) काले मच्छर।

(५) पहाड़ी मच्छर।

इन सभी मच्छरोंके काटने से स्थान सूज जाता और खुजली बड़े ज़ोरसे चलती है। "चरक" में लिखा है, मच्छरके काटनेसे कुछ-कुछ सूजन और मन्दी-मन्दी पीड़ा होती है। असाध्य कीड़ेके काटे घावकी तरह, मच्छरका घाव भी कभी-कभी असाध्य हो जाता है। पहले चार प्रकारके मच्छरोंका काटा हुआ तो दुःख-सुखसे आराम हो भी जाता है, पर पहाड़ी मच्छरोंका विष तो असाध्य ही होता है। इनके काटेको अगर मनुष्य नाखूनोंसे खुजला लेता है, तो अनेक फुंसियाँ पैदा हो जाती हैं, जो पक जातीं और जलन करती हैं। बहुधा पहाड़ी मच्छरों के काटे आदमी मर भी जाते हैं।

नोट—शरीरपर बादामका तेल मलकर सोने से मच्छर नहीं काटते।

मच्छर भगानेके उपाय।

(१) सनोवरकी लकड़ीकी भूसी या उसके छिलकोंकी धूनी देने से मच्छर भाग जाते हैं।

(२) छरीला और फिटकरीकी धूआँसे मच्छर भाग जाते हैं।

(३) सरूकी लकड़ी और सरूके पत्ते बिछौनेपर रखने से मच्छर खाटके पास नहीं आते।

(४) इन्द्रायणका रस या पानी मकानमें छिड़क देने से पिस्सू भाग जाते हैं।

(५) गन्धककी धूनी या कनेरके पत्तोंकी धूनीसे पिस्सू भाग जाते हैं।

(६) सेहकी चरबी लकड़ीपर मलकर रख देने से उस पर सारे पिस्सू इकट्ठे हो जाते हैं।

(७) कुंदरुके गोंदकी धूनी देनेसे भी मच्छर भाग जाते हैं।

(८) कनेरके पत्तोंका स्वरस ज़मीन और दीवारोंपर बारम्बार छिड़कते रहने से मच्छर भाग जाते हैं ।

(६) शरीरपर बादामका तेल मलकर सोने से मच्छर नहीं काटते । गंधकको महीन पीसकर और तेलमें मिलाकर, उसकी मालिश करके नहा डालने से मच्छर नहीं काटते; क्योंकि नहानेपर भी, गंधक और तेलका कुछ न कुछ अंश शरीरपर रहा ही आता है ।

(१०) मकानकी दीवारोंपर पीली पेवड़ीका या और तरहका पीला रंग पोतने से मच्छर नहीं आते । पीले रंगसे मच्छरको घृणा है और नीले रंगसे प्रेम है । नीले या ब्ल्यू रंगसे पुते मकानोंमें मच्छर बहुत आते हैं ।

(११) अगर चाहते हो कि, हमारे यहाँ मच्छरोंका दौरदौरा कम रहे, तो आप घरको एक दम साफ रखो, कौने-कजौड़ेमें मैले कपड़े या मैला मत रखो । घरको सूखा रखो । घरके आस-पास घास-पात या हरे पौधे मत रखो । जहाँ घास-पात, कीचड़ और अँधेरा होता है, वहीं मच्छर ज़ियादा आते हैं ।

(१२) मच्छरोंसे बचने और रातको सुखकी नींद लेनेके लिये, पलँगोंपर मसहरी लगानी चाहिये । इसके भीतर मच्छर नहीं आते । बंगालमें मसहरीकी बड़ी चाल है । यहाँ इसीसे चैन मिलता है ।

(१३) घोड़ेकी दुमके बाल कमरोंके द्वारोंपर लटकानेसे मच्छर कम आते हैं ।

(१४) भूसी, गूगल, गंधक और बारहसिंगेके सींगकी धूनी देने से मच्छर भाग जाते हैं ।

मच्छर-विष नाशक नुसख़े ।

(१) डाँसके काटे हुए स्थानपर "प्याजका रस" लगाने से तत्काल आराम हो जाता है ।

(२) दो तोले कत्था, एक तोले कपूर और आधा तोले सिन्दूर—इन तीनोंको पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर १०१ बार घी या मक्खन काँसीकी थालीमें धो लो। शेषमें, उस पिसे-छने चूर्णको घीमें खूब मिलाकर एक दिल कर लो। इस मरहमको हर प्रकारके मच्छर, डाँस या पहाड़ी मच्छरके काटे स्थानपर मलो। इसके कई बार मलनेसे एक ही दिनमें सूजन और खुजली वगैरः आराम हो जाती है। इनके सिवा, इस मरहमसे हर तरहके घाव भी आराम हो जाते हैं। खुजलीकी पीली-पीली फुन्सियाँ इससे फौरन मिट जाती हैं। जलन शान्त करनेमें तो यह रामवाण ही है। परीक्षित है।

(३) मच्छर, डाँस तथा अन्य छोटे-मोटे कीड़ोंके काटे स्थानपर "अर्क कपूर" लगानेसे ज़हर नहीं चढ़ता और सूजन फौरन उतर जाती है।

नोट—अर्क कपूर बनानेकी विधि हमारी बनाई "स्वास्थ्यरक्षा" में लिखी है। यह हर नगरमें बना बनाया भी मिलता है।

(४) अगर कानमें डाँस या मच्छर घुस जाय, तो कसौंदीके पत्तोंका रस निकालकर कानमें डालो। वह मरकर निकल आवेगा।

नोट—मकोयके पत्तोंका रस कानमें टपकानेसे भी सब तरहके कीड़े मरकर निकल आते हैं।

मक्खीके विषकी चिकित्सा।

सुश्रुत और चरकमें लिखा है, मक्खियाँ छै प्रकारकी होती हैं:—

(१) कान्तारिका ... ... बनकी मक्खी।

(२) कृष्णा ... ... काली मक्खी।

(३) पिंगलिका ... ... पीली मक्खी ।

(४) मधूलिका ... ... गेहूँके रंगकी या मधु-मक्खी ।

(५) काषायी ... ... भगवाँ रंगकी मक्खी ।

(६) स्थालिका ... ...

कान्तारिका आदि पहली चार प्रकारकी मक्खियोंके काटनेसे सूजन और जलन होती है; पर काषायी और स्थालिकाके काटनेसे उपद्रवयुक्त फुन्सियाँ होती हैं ।

"चरक" में लिखा है, पहली पाँचों प्रकारकी मक्खियोंके काटने से तत्काल फुन्सियाँ होती हैं । उन फुन्सियोंका रंग श्याम होता है । उनसे मवाद गिरता और उनमें जलन होती है तथा उनके साथ मूर्च्छा और ज्वर भी होते हैं । परन्तु छठी स्थालिका या स्थगिका मक्खी तो प्राणोंका नाश ही कर देती है ।

नोट—इन मक्खियोंमें घरेलू मक्खियाँ शामिल नहीं हैं । वे इनसे अलग हैं । ऊपरकी छहों प्रकारकी मक्खियाँ ज़हरीली होती हैं ।

मक्खी भगानेके उपाय ।

हिकमतके ग्रन्थोंमें मक्खियोंके भगानेके ये उपाय लिखे हैं:—

(१) हरताल और नकछिकनीकी धूआँ करो ।

(२) पीली हरताल दूधमें डाल दो; सारी मक्खियाँ उसमें गिर कर मर जायँगी ।

(३) काली कुटकीके काढ़ेमें भी नं० २ का गुण है ।

मक्खी-विषनाशक नुसख़े ।

(१) काली वाम्बीकी मिट्टीको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे चींटी, मक्खी और मच्छरोका विष नष्ट हो जाता है ।

(२) सोया और सेंधानोन एकत्र पीसकर, घीमें मिलाकर, लेप करनेसे मक्खीका विष नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) केशर, तगर, सोंठ, और कालीमिर्च—इन चारोंको एकत्र पीसकर लेप करनेसे मक्खीके डंककी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(४) मक्खीके काटे स्थान पर सेंधानोन मलनेसे ज़हर नहीं चढ़ता।

(५) मक्खीकी काटी हुई जगह पर सिंगीमुहरा पानीमें घिस कर लगा देना अच्छा है।

(६) मक्खीके काटे हुए स्थान पर आकका दूध मलनेसे अवश्य ज़हर नष्ट हो जाता है।

नोट—बर्र और मक्खीके काटनेसे एक समान ही जलन, दर्द और सूजन वगैरः उपद्रव होते हैं, इसलिये "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, जो दवाएँ बर्रके ज़हरको नष्ट करती हैं, वही मक्खीके विषको शान्त करती हैं। हमने बर्रके काटने पर नीचे बहुतसे नुसखे लिखे हैं, पाठक उनसे मक्खीके काटने पर भी काम ले सकते हैं।

बर्रके विषकी चिकित्सा।

हिकमतकी किताबोंमें लिखा है, बर्रके डंक मारनेसे लाल-लाल सूजन और घोर पीड़ा होती है। एक प्रकारकी बर्र और होती है, जिसका सिर बड़ा और काला होता है तथा जिसके ऊपर बूँदें होती हैं। उसके काटनेसे दर्द बहुत ही ज़ियादा होता है। कभी-कभी तो मृत्यु भी हो जाती है।

"चरक"में लिखा है, कणभ—भौंरा विशेषके काटनेसे विसर्प, सूजन, शूल, ज्वर और वमन,—ये उपद्रव होते हैं और काटी हुई जगहमें विशीर्णता होती है।

बर्र और ततैये तथा भौंरे वगैरः कई तरहके होते हैं। कोई काले, कोई नारङ्गी, कोई पीले और कोई ऊदे होते हैं। इनमेंसे पीले ततैये कुछ छोटे और कम-ज़हरी होते हैं; परन्तु काले और ऊदे बहुत तेज़ ज़हरवाले होते हैं। इनके काटनेसे सूजन चढ़ आती है, जलन बहुत होती है और दर्दके मारे चैन नहीं पड़ता; पर तेज़ ज़हर वालेके काटनेसे सारे शरीरमें ददोरे हो जाते और ज्वर भी चढ़ आता है।

बर्रोंके भगानेके उपाय।

(१) गन्धक और लहसनकी धूआँसे बर्र भाग जाती हैं।

(२) खतमीका रस या खुब्बाज़ीका पानी और जैतूनके तेलको शरीर पर मल लेनेसे बर्र नहीं आती।

बर्र-विष नाशक नुसखे।

(१) पीपर जलके साथ पीस कर, बर्रके काटे-स्थान पर लेप करनेसे फौरन आराम हो जाता है।

(२) घी, सेंधानोन और तुलसीके पत्तोंका रस—इन तीनोंको एकत्र मिला कर, बर्रके काटे स्थान पर, लेप करनेसे तत्काल शान्ति आती है। परीक्षित है।

(३) कालीमिर्च, सोंठ, सेंधानोन और संचर नोन--इन चारों को नागर पानके रसमें घोट कर, बर्रकी काटी हुई जगह पर लेप करनेसे फ़ौरन आराम होता है। परीक्षित है।

(४) ईसबगोलको सिरकेमें मिलाकर और लुआब निकाल कर पीनेसे बर्रका विष उतर जाता है।

(५) हथेली भर धनिया खानेसे बर्रका ज़हर उतर जाता है। कोई-कोई ३ मुट्ठी लिखते हैं।

(६) काईको सिरकेमें मिलाकर, काटे हुए स्थानपर लेप करने से बर्रका विष शान्त हो जाता है।

(७) ख़तमी और ख़ुब्बाज़ीको पानीमें पीसकर लुआब निकाल लो। इस लुआबको बर्रके काटे हुए स्थानपर मलो; शान्ति हो जायगी।

(८) बर्रके डंक मारे स्थानपर मक्खी मलनेसे आराम हो जाता है।

(९) बर्रके काटे हुए स्थानपर शहद लगाने और शहद ही खाने से अवश्य लाभ होता है।

(१०) मकोयकी पत्तियाँ, सिरकेमें पीसकर, बर्रके काटे हुए स्थानपर लगानेसे आराम होता है।

(११) इक्कीस या सौ बारका धोया हुआ घी बर्रकी काटी हुई जगहपर लगानेसे आराम होता है।

(१२) बर्रकी काटी हुई जगहको ३।४ बार गरम पानीसे धोने से लाभ होता है।

(१३) हरे धनियेका रस, सिरकेमें मिलाकर, लगानेसे बर्रके काटे हुए स्थानमें शान्ति आ जाती है।

(१४) कपूरको सिरकेमें मिलाकर लेप करनेसे बर्रका ज़हर शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(१५) बड़ी बर्रके छत्तेकी मिट्टीका लेप करनेसे बर्रका विष शान्त हो जाता है। कोई-कोई इस मिट्टीको सिरकेमें मिलाकर लगानेकी राय देते हैं।

(१६) तिलोंको सिरकेमें पीसकर लेप करनेसे बर्रका विष शान्त हो जाता है।

(१७) गन्धकको पानीमें पीसकर लेप करनेसे बर्रका जहर नष्ट हो जाता है।

(१८) जिसे बर्र काटे, अगर वह अपनी जीभ पकड़ ले, तो ज़हर उसपर असर नहीं करे।

(१६) बर्रकी काटी हुई जगहपर ताज़ा गोबर रखनेसे फौरन आराम हो जाता है।

(२०) बर्रकी काटी हुई जगहपर पहले गूगलकी धूनी दो। इसके बाद कोमल आकके पत्ते पीसकर गोला-सा बना लो। फिर उस गोलेको घीसे चुपड़कर, बर्रकी काटी हुई जगहपर बाँध दो। इस उपायसे अत्यन्त लोहित ततैये या बर्रका विष भी शान्त हो जाता है।

(२१) रालका परिषेक करनेसे, बर्रका बाक़ी रहा हुआ डंक या काँटा निकल आता है।

(२२) काली मिर्च, सोंठ, सेंधानोन और काला नोन—इन सब को एकत्र पीसकर और वन-तुलसीके रसमें मिलाकर, बर्रकी काटी हुई जगहपर, लेप करनेसे बर्रका विष नष्ट हो जाता है।

(२३) ख़तमी, खुब्बाज़ी, खुरफा मकोय और काकनज—इन सबके स्वरस या पानीका लेप बर्रके विषको शान्त करता है।

(२४) एक कपड़ा सिरकेमें भिगोकर और बर्फमें शीतल करके बर्रकी काटी जगहपर रखनेसे फौरन आराम होता है।

(२५) निर्मल मुलतानी मिट्टी या कपूर या काई या जौका आटा—इनमेंसे किसीको सिरकेमें मिलाकर बर्रकी काटी हुई जगह पर रखनेसे लाभ होता है।

(२६) ताजा या हरे धनियेके स्वरसमें कपूर और सिरका मिलाकर, बर्रके काटे हुए स्थानपर रखनेसे फौरन शान्ति आती है। परीक्षित है।

(२७) सेवका रुब्ब, सिकंजबीन, खट्टे अनारका पानी, ककड़ी का पानी, कासनीका पानी, काहू और धनिया—ये सब चीज़ें खाने से बर्रके काटनेपर लाभ होता है।

नोट—हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है, जब शहदकी मक्खी डंक मारती है, तब उसका डंक उसी जगह रह जाता है। मधुमक्खीके ज़हरका इलाज बर्रके इलाज

के समान है; यानी एककी दवा दूसरेके विषको शान्त करती है। चींटीके काटे और बर्रके काटेका भी एक ही इलाज है। बड़ी बर्रं काटे या शरीरमें मवाद हो तो फस्द खोलना हितकारी है।

(२८) बर्रं या ततैयेके काटते ही घी लगाकर सेक देना परीक्षित उपाय है। इस उपायसे ज़हर ज़ियादा ज़ोर नहीं करता।

(२९) काटे हुए स्थानपर आकका दूध लगा देनेसे भी बर्रका ज़हर शान्त हो जाता है।

(३०) बर्रकी काटी हुई जगहपर घोड़ेके अगले पैरके टखनेका नाखून पानीमें घिस कर लगाना भी उत्तम है।

(३१) बर्रके काटे स्थानपर ज़रा-सा गन्धकका तेज़ाब लगा देना भी अच्छा है।

(३२) बहुत लोग बर्रके काटते ही दियासलाइयोंका लाल मसाला पानीमें घिस कर लगाते हैं या काटी हुई जगहपर दो बूँद पानी डाल कर दियासलाइयोंका गुच्छा उस जगह मसालेकी तरफ से रगड़ते हैं। फायदा भी होते देखा है। परीक्षित है।

(३३) कहते हैं, कुनैन मल देनेसे भी बर्रं और छोटे बिच्छूका विष शान्त हो जाता है।

(३४) दशांगका लेप करनेसे बर्रका ज़हर फौरन उतर जाता है।

नोट—दशांगकी दवाएँ पृष्ठ ३०२ के नं० १ में लिखी हैं।

(३५) स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक लगाने और चाय या काफी पिलानेसे बर्रका विष शान्त हो जाता है।

चींटियोंके काटेकी चिकित्सा।

चींटीको संस्कृतमें "पिपीलिका" कहते हैं। सुश्रुतमें—स्थूलशीर्षा, संवाहिका, ब्राह्मणिका, अंगुलिका, कपिलिका और चित्र-

वर्णा—छै तरहकी चींटियाँ लिखी हैं। इनके काटनेसे काटी हुई जगहपर सूजन, शरीरके और स्थानोंमें सूजन और आगसे जल जानेकी-सी जलन होती है।

खेतो और घरोंमें चींटे, काली चींटी और लाल चींटी बहुत देखी जाती हैं। इनके दलमें असंख्य-अनगिन्ती चींटी चींटे होते हैं। अगर इन्हें मिठाई या किसी भी मीठी चीज़का पता लग जाता है, तो दलके दल वहाँ पहुँच जाते है। ये सब अँगरेज़ी फौजकी तरह क़ायदेसे क़तार बाँध कर चलती हैं। इनके सम्बन्धमें अँगरेज़ी ग्रन्थों में बड़ी अद्भुत-अद्भुत बाते लिखी हैं। यह बड़ा मिहनती जीव है।

लाल-काली चींटी और बड़े-बड़े चींटे, जिन्हें मकोड़े भी कहते हैं, सभी आदमीको काटते हैं। चींटा बहुत बुरी तरहसे चिपट जाता है। काली चींटीके काटनेसे उतनी पीड़ा नहीं होती, पर लाल चींटीके काटनेसे तो आग-सी लग जाती और शरीरमें पित्ती-सी निकल आती है। अगर यह लाल चींटी खाने-पीनेके पदार्थोंमें खा ली जाती है. तो फौरन पित्ती निकल आती है, सारे शरीरमें ददोरे-ही-ददोरे हो जाते हैं। अतः पानी सदा छानकर पीना चाहिये और खानेके पदार्थ इनसे बचाकर रखने चाहियें और खूब देख-भाल कर खाने चाहिएँ।

चींटियोंसे बचनेके उपाय।

(१) चींटियोंके बिलमें "चकमक पत्थर" रखने और तेलकी धूनी देनेसे चींटियाँ बिल छोड़कर भाग जाती हैं। कड़वे तेलसे चींटे-चींटी बहुत डरते है। अतः जहाँ ये ज़ियादा हों, वहाँ कड़वे तेलके छींटे मारो और इसी तेलको आगपर डाल-डालकर धूनी दो।

(२) तेलमें पिसी हुई गंधक मिलाकर, उसमें एक कपड़ेका टुकड़ा भिगोकर आप जहाँ बाँध देंगे, वहाँ चींटियाँ न जायँगी। बहुतसे लोग ऐसे कपड़ोंको मिठाईके बर्तन या शर्बतोंकी बोतलोंके किनारों पर बाँध देते हैं। इस तरहके गंधक और तेलमें भीगे कपड़ेको लाँघने की हिम्मत चींटियोंमें नहीं।

चींटीके काटनेपर नुसख़े।

(१) साँपकी बमईकी काली मिट्टीको गोमूत्रमें भिगोकर चींटी के काटे स्थानपर लगाओ, फौरन आराम होगा। इस उपायसे विषैली मक्खी और मच्छरका विष भी नष्ट हो जाता है। सुश्रुत।

(२) कालीमिर्च, सोंठ, सेंधानोन और कालानोन—इन सबको बनतुलसीके रसमें पीसकर लेप करने से चींटी, बर्र, ततैया और मक्खीका विष शान्त हो जाता है।

(३) केशर, तगर, सोंठ और कालीमिर्च—इनको पानीमें पीस कर लेप करने से बर्र, चींटी और मक्खीका विष नष्ट हो जाता है।

(४) सोया और सेंधानोन—इनको घीमें पीसकर लेप करने से चींटी, बर्र और मक्खीका विष नाश हो जाता है।

कीट-विष-नाशक नुसख़े।

बुद्धिमान वैद्यको विष-रोगियोंकी शीतल चिकित्सा करनी चाहिये, पर कीड़ोंके विषपर शीतल चिकित्सा हानिकारक होती है, क्योंकि शीतसे कीट-विष बढ़ता है। सुश्रुतमें लिखा है:—

उष्णवर्ज्यो विधिः कार्यो विषार्त्तानां विजानता।
मुक्त्वा कीटविषं तद्धि शीतेनाभिप्रवर्द्धते॥

और भी कहा है:—चूँकि विष अत्यन्त तीक्ष्ण और गरम होता है, इसलिये प्रायः सभी विषोंमें शीतल परिषेक करना या शीतल छिड़के देने चाहियें; पर कीड़ोंका विष बहुत तेज़ नहीं होता, मन्दा होता है। इसके सिवा, उनके विषमें कफवायुके अंश अधिक होते हैं, अतः कीड़ोंके विषमें पसीना निकालने या सेक करनेकी मनाही नहीं है, परन्तु कहीं-कहीं गरम सेककी मनाही भी है। मतलब यह है, चिकित्सामें तर्क-वितर्क और विचारकी बड़ी ज़रूरत है। जिस विषमें वात कफ हों, उसमें पसीने निकालने ही चाहियें, क्योंकि कफके विष से प्रायः सूजन होती है और सूजनमें स्वेदन कर्म करना या पसीने निकालना हितकारक है।

(१) वच, हींग, वायबिडंग, सेंधानोन, गजपीपर, पाठा, अतीस, सोंठ, मिर्च और पीपर इन दसोंको पानीके साथ सिलपर पीसकर पीने और इन्हींका काटे स्थानपर लेप करने से सब तरहके कीड़ों का विष नष्ट हो जाता है। इसका नाम "दशाङ्ग योग" है। यह काश्यप मुनिका निकाला हुआ है।

नोट—यह दशांग योग अनेक बारका आज़मूदा है। चूहेके काटेपर भी इस से फौरन लाभ होता है। सभी कीड़ोंके काटनेपर इसे लगाना चाहिये।

(२) पीपल, पाखर, वड़, गूलर और पारस पीपल,—इनकी छाल को पानीके साथ पीसकर लेप करने से प्रायः सभी कीड़ोंका विष नष्ट हो जाता है।

(३) हींग, कूट, तगर, त्रिकुटा, पाढ़, वायबिडंग, सेंधानोन, जवाखार और अतीस—इन सबको पानीके साथ एकत्र पीसकर लेप करने से कीड़ोंका ज़हर उतर जाता है।

(४) कलिहारी, निर्विषी, तूम्बी, कड़वी तोरई और मूलीके बीज इन सबको एकत्र काँजीमें पीसकर लेप करने से कीड़ोंका विष नाश हो जाता है।

(५) चौलाईकी जड़को पीसकर, गायके घीके साथ, पीने से कीड़ोंका विष नाश हो जाता है ।

(६) तुलसीके पत्ते और मुलहठीको पानीके साथ पीसकर पीनेसे कीड़ोंका ज़हर नाश हो जाता है ।

(७) सिरस, कटभी, अर्जुन, बेल, पीपर, पाखर, बड़, गूलर, और पारस पीपल,—इन सबकी छालोंको पीसकर पीने और इन्हीं का लेप करनेसे जौंकका विष शान्त हो जाता है ।

(८) हुलहुलके बीज २० माशे पीसकर खानेसे सभी तरहका कीट-विष नाश हो जाता है ।

(९) हल्दी, दारूहल्दी और गेरू—इनको महीन पीसकर, लेप करनेसे नाखूनों और दाँतोंका विष शान्त हो जाता है । परीक्षित है।

(१०) कीड़ोंके काटे हुए स्थानपर तत्काल आदमीके पेशाबके तरड़े देने या सींचनेसे लाभ होता है ।

(११) सिरस, मालकाँगनी, अर्जुनवृक्षकी छाल, ल्हिसौड़ेकी छाल और बड़, पीपर, गूलर, पाखर और पारसपीपल—इन सबकी छालोंको पानीमें पीसकर पीने और इन्हींका लेप करनेसे जौंकका ज़हर नष्ट हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—ज़हरीले कीड़ोंके काटनेपर, काटे हुए स्थानका खून अगर जौक लगवाकर निकलवा दिया जाय और पीछे लेप किया जाय, तो बहुत ही जल्दी लाभ हो ।

(१२) सिरसकी जड़, सिरसके फूल, सिरसके पत्ते और सिरसकी छाल तथा सिरसके बीज—इनका काढ़ा बना लो । फिर इसमें सोंठ, मिर्च, पीपर और सेंधानोन मिला लो । शेषमें शहद भी मिला लो और पीओ । "सुश्रुत" में लिखा है, कीट-विषपर यह अच्छा योग है ।

(१३) बर्रे, ततैया, कनखजूरा, बिच्छू, डाँस, मक्खी और चींटी आदिके विषपर "अर्ककपूर" लगाना बहुत ही अच्छा है । परीक्षित है ।

बिल्लीके काटेकी चिकित्सा।

बिल्लीके काटनेसे बड़ी पीड़ा होती है! काटी हुई जगह हरी और सख्त हो जाती है। अगर बिल्ली काट खाय, तो नीचे लिखे उपाय करोः—

(१) मुँहसे चूसकर या पछने लगाकर ज़हरको खींचो।

(२) काटी हुई जगहपर प्याज़ और पोदीना पीसकर लगाओ। साथ ही पोदीना खाओ।

(३) काले दानेको पानीमें पीसकर लेप करो।

(४) काले तिलोंको पानीके साथ पीसकर लेप करो।

नोट—किसी भी लगानेकी दवाके साथ-साथ पोदीना खाना मत भूलो। बिल्लीके काटे आदमीको पोदीना बहुत ही मुफीद है।

नौलाके काटेकी चिकित्सा।

नौला अव्वल तो काटता नहीं; अगर काटता है, तो बड़ी वेदना होती है और दर्द सारे शरीरमें जल्दी ही फैल जाता है। अगर गर्भवती नौली मनुष्यको काट खाती है, तो मनुष्य मर जाता है, क्योंकि उसका इलाज ही नहीं है। नौले के काटनेपर नीचे लिखे उपाय करोः—

(१) काटी हुई जगहपर लहसनका लेप करो।

(२) मटरके आटेको पानीमें घोलकर लेप करो।

(३) कच्चे अञ्जीर पीसकर लेप करो।

(४) अगर काटे हुए स्थानपर, फौरन, विना विलम्ब, नौलेका मांस रख दो, तो तत्काल पीड़ा शान्त हो जाय।

नोट—नौला भी कुत्तेकी तरह कभी-कभी बावला हो जाता है। बावला नौला जिसे काटता है, वह भी बावला हो जाता है। अगर ऐसा हो, तो वही दवा करो जो बावले कुत्तेके काटनेपर की जाती है।

नदीका कुत्ता, मगर और काली मछली आदिके काटेका इलाज।

(१) नमक रूईमें भरकर घावपर लगाओ।

(२) पपड़िया नोन शहदमें मिलाकर घावपर लगाओ।

(३) बतख़ और मुर्ग़ीकी चर्बी लगाओ।

(४) चर्बी, मक्खन और गुले रोग़न मिलाकर लगाओ।

नोट—ऐसे जीवोंके काटनेपर मवाद साफ़ करने और निकालने वाली दवाएँ लगानी चाहियें।

(५) अंकोलके पत्तोंकी धूनी देनेसे अत्यन्त दुःसाध्य मछलीके डंककी पीड़ा भी शान्त हो जाती है।

(६) कड़वा तेल, सत्तू और बाल—इनको एकत्र पीसकर धूनी देनेसे मछलीका विष दूर हो जाता है।

(७) तेलमें इन्द्रजौ पीसकर लेप करनेसे मछलीके डंककी पीड़ा शान्त हो जाती है।

आदमीके काटेका इलाज।

आदमीके काटने या उसके दाँत लगनेसे भी एक तरहका विष चढ़ता है, अतः हम चन्द उपाय लिखते हैं:—

(१) जैतुनके तेलमें मोम गलाकर काटे हुए स्थानपर लेप करो।

(२) अंगूरकी लकड़ीकी राख सिरकेमें मिलाकर लेप करो ।

(३) सौसनकी जड़को सिरकेमें पीसकर लेप करो ।

(४) सौंफकी जड़की छालको शहद्में पीसकर लेप करो ।

(५) गन्दाबिरोज़ा, जैतून, मोम और मुर्गोंकी चरबी—इन सब को मिलाकर मल्हम बना लो । इसका नाम "काली मल्हम" है । इसके लगानेसे भूखे आदमीका काटा हुआ भी आराम हो जाता है ।

नोट—भूखे आदमीका काटना बहुत ही बुरा होता है ।

(६) अगर काटी हुई जगह सूज जाय, तो मुर्दासंगको पानीमें पीसकर लेप कर दो ।

(७) बाकलेका आटा, सिरका, गुले रोग़न, प्याज, नमक, शहद और पानी,—इनमेंसे जो-जो मिलें, मिलाकर काटे स्थानपर लगा दो ।

(८) गोभीके पत्ते शहद्में पीसकर लगानेसे आदमीका काटा हुआ घाव आराम हो जाता है ।

नोट—ऊपर जितने लेप आदि लिखे हैं, वे सब साधारण आदमी के काटने पर लगाये जाते हैं । भूखे आदमी के काटनेसे ज़ियादा तकलीफ होती है। बावले कुत्ते के काटे हुए आदमी का काटना, तो बावले कुत्तेके काटनेके ही समान है; अतः वैसे आदमी से खूब बचो । अगर काट खाय, तो वही इलाज करो, जो बावले कुत्ते के काटने पर किया जाता है ।

छिपकलीके विषकी चिकित्सा ।

संस्कृतमें छिपकलीको गृहगोधिका कहते हैं । छिपकलीके काटनेसे जलन होती है, सूजन आती है, सूई चुभानेका सा दर्द होता और पसीने आते हैं । ये लक्षण "चरक"में लिखे हैं ।

हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है, छिपकलीके काटनेसे घबराहट और

ज्वर होता है तथा काटे हुए स्थानपर हर समय दर्द होता रहता है क्योंकि छिपकलीके दाँत वहीं रह जाते हैं।

हिकमतमें छिपकलीके काटनेपर नीचे लिखे उपाय लिखे हैं:—

(१) काटी हुई जगहमेंसे छिपकलीके दाँत निकालनेके लिये उस जगह तेल और राख मलो।

(२) पहले काटी हुई जगहपर रेशम मलो, फिर वहाँ तेलमें मिला कर राख रख दो।

(३) उपरोक्त उपायोंसे पीड़ा न मिटे, तो मुँहसे चूसकर ज़हर निकाल दो। फिर भूसीको पानीमें औटाकर उस जगह ढालो।

(४) थोड़ा-सा रेशम एक छुरीपर लपेट लो। फिर उस छुरी को काटे हुए स्थानपर रख कर, चारों तरफ खींचो। इस तरह छिपकलीके दाँत रेशममें इलझ कर निकल आवेंगे और पीड़ा शान्त हो जायगी।

(५) ऊनके टुकड़ेको ईसबगोल और बबूलके गोंदके लुआब में भिगो कर, काटे हुए स्थानपर कुछ देर तक रखो। फिर एक साथ ज़ोरसे उसके टुकड़ेको उठालो। इस तरह छिपकलीके दाँत काटे हुए स्थानसे बाहर निकल आवेंगे।

नोट—ऊपरके पाँचो उपाय छिपकलीके दाँत घावसे बाहर करनेके हैं। दाँत निकल आते ही ज्वर जाता रहेगा, और उस जगहका नीलापन और पीप बहना भी बन्द हो जायगा।

श्वान-विष-चिकित्सा।

बावले कुत्तेके लक्षण।

“सुश्रुत” में लिखा है, जब कुत्ते और स्यार प्रभृति चौपाये जानवर उन्मत्त या पागल हो जाते हैं, तब उनकी दुम सीधी हो जाती है, तथा जाबड़े और कन्धे या तो ढीले

हो जाते या अकड़ जाते हैं। उनके मुँहसे राल गिरती है। अक्सर वे अन्धे और वहरे भी हो जाते हैं और जिसे पाते हैं, उसीकी ओर दौड़ते हैं।

नोट—वावले कुत्तेकी पूँछ सीधी होकर लटक जाती है, मुँहसे लार वहुत वहती और गर्दन टेढ़ी-सी हो जाती है। उसकी धुन जिधर लग जाती है, उधर हीको दौड़ता है। दूसरे कुत्तों और आदमियोंपर हमला करता है। कुत्ते उसे देखकर भागते हैं और लोग हल्ला करते हैं, पर वह वहरा या अन्धा हो जानेके कारण न कुछ सुनता है और न देखता है। ये आँखों-देखे लक्षण हैं।

हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है, जब कुत्ता वावला हो जाता है, उसकी हालत वदल जाती है। वावला कुत्ता खानेको कम खाता और पानी देखकर डरता और थर्राता है; प्यासा मरता है, पर पानी के पास नहीं जाता; आँखें लाल हो जाती हैं; जीभ मुँहसे वाहर लटकी रहती है; मुँहसे लार और झाग टपकते रहते हैं, नाकसे तर पदार्थ वहता रहता है। वावला कुत्ता कान ढलकाये, सिर झुकाये, कमर ऊँची किये और पूँछ दवाये—इस तरह चलता है, मानो मस्त हो। थोड़ी दूर चलता है और सिरके वल गिर पड़ता है। दीवार और पेड़ प्रभृतिपर हमले करता है। आवाज़ वैठ जाती है और अच्छे कुत्ते उसके पास नहीं आते—उसे देखते ही भागते हैं।

कुत्ते क्यों वावले हो जाते हैं ?

"सुश्रुत"में लिखा है—स्यार, कुत्ते, ज़रख़, रीछ और वघेरे प्रभृति पशुओंके शरीरमें जव वायु—कफके दूपित होनेसे—दूपित हो जाता है और संज्ञावहा शिराओंमें ठहर जाता है, तव उनकी संज्ञा या वुद्धि नष्ट हो जाती है; यानी वे पागल हो जाते हैं।

पागल कुत्ते प्रभृतिके काटे हुएके लक्षण।

जव वावला कुत्ता या पागल स्यार आदि मनुष्योंको काटते हैं, तव उनकी विपैली डाढ़ें जहाँ लगती हैं, वह जगह सूनी हो जाती और

वहाँसे बहुत-सा काला खून निकलता है। विष-बुझे हुए तीर आदि हथियारोंके लगने से जो लक्षण होते हैं, वही पागल कुत्ते और स्यार आदिके काटने से होते हैं, ये बात "सुश्रुत"में लिखी है।

पागलपनके असाध्य लक्षण।

जिस पागल कुत्ते या स्यार आदिने मनुष्यको काटा हो, अगर मनुष्य उसीकी सी चेष्टा करने लगे, उसीकी सी बोली बोलने लगे और अन्य क्रियाओंसे हीन हो जावे—मनुष्यके-से और काम न करे, तो वह मनुष्य मर जाता है।

जो मनुष्य अपने तईं काटने वाले कुत्ते या स्यार आदिकी सूरत को पानी या काँचमें देखता है, वह असाध्य होता है। मतलब यह कि, काटनेवाले कुत्ते प्रभृतिके न होनेपर भी, अगर मनुष्य उन्हें हर समय देखता है अथवा काँच—आईने या पानीमें उनकी सूरत देखता है, तो वह मर जाता है।

अगर मनुष्य पानीको देखकर या पानीकी आवाज़ सुनकर अकस्मात् डरने लगे, तो समझो कि उसे अरिष्ट है; अर्थात् वह मर जायगा।

नोट—जब मनुष्य कुत्तेके काटनेपर कुत्तेकी सी चेष्टा करता है, उसीकी सी बोली बोलता और पानीसे डरता है, तब बोल-चालकी भाषामें उसे "हड़कबाय" हो जाना कहते हैं।

हिकमतसे बावले कुत्तेके काटने के लक्षण।

अगर बावला कुत्ता या कोई और बावला जानवर मनुष्यको काट खाता है, और कई दिन तक उस मनुष्यका इलाज नही होता, तो उस की दशा निकम्मी और अस्वाभाविक हो जाती है।

बावले कुत्ते या बावले स्यार आदिके काटने से मनुष्यको बड़े-बड़े शोच और चिन्ता-फिक्र होते हैं, बुद्धि हीन हो जाती है, मुँह सूखता है, प्यास लगती है, बुरे-बुरे स्वप्न दीखते हैं, उजालेसे भागता है, अकेला

रहता है, शरीर लाल हो जाता है, अन्तमें रोने लगता है और पानीसे डरकर भागता है, क्योंकि पानीमें उसे कुत्ता दीखता है। उसके शरीर में शीतल पसीने आते, बेहोशी होती और वह मर जाता है। कभी-कभी इन लक्षणोंके होनेसे पहले ही मर जाता है। कभी-कभी कुत्तेकी तरह भूंकता है अथवा बोल ही नहीं सकता। उसके पेशाब द्वारा छोटा सा जानवर पिल्लेकी-सी सूरतमें निकलता है। पेशाब कभी-कभी काला और पतला होता है। किसी-किसीका पेशाब बन्द ही हो जाता है। वह दूसरे आदमीको काटना चाहता है। अगर काँचमें अपना मुँह देखता है, तो नहीं पहचानता, क्योंकि उसे काँचमें कुत्ता दीखता है, इसलिये वह काँचसे भी पानीकी तरह डरता है। जो कुत्तेका काटा आदमी पानीसे डरता है, उसके बचनेकी आशा नहीं रहती।

बहुत बार, बावले कुत्तेके काटनेके सात दिन बाद आदमीकी दशा बदलती है। किसी-किसीकी छै महीने या चालीस दिन बाद बदलती है। कोई-कोई हकीम कहते हैं कि सात बरस बाद भी कुत्ते के काटेके चिह्न प्रकट होते हैं।

बावले कुत्ते या स्यार आदिका काटा हुआ आदमी—दशा बिगड़ जानेपर—जिसे काटता है, वह भी वैसा ही हो जाता है। इतना नहीं, जो मनुष्य बावले कुत्तेके काटे हुए आदमीका भूठा पानी पीता या भूठा खाता है, वह वैसाही हो जाता है।

नोट—यही वजह है कि, हिन्दुओंमें किसीका भी—यहाँ तक कि माँ बाप तकका भी भूठा खाना मना है। भूठा खानेसे एक मनुष्यके रोग-दोष दूसरेमें चले जाते हैं और बुद्धि नष्ट हो जाती है। सभी जानते हैं, कि कोढ़ीका भूठा खानेसे मनुष्य कोढ़ी हो जाता है।

जिसे बावला कुत्ता काटता है, उसकी हालत जल्दी ही एक तरहके उन्मादी या पागलकी सी हो जाती है। अगर यह हालत ज़ोरपर होती है, तो रोगी नहीं जीता, अतः ऐसे आदमीके इलाजमें देर न करनी चाहिये।

बावले कुत्तेके काटे हुएकी परीक्षा।

बहुत बार, अँधेरेकी वजहसे या ऐसे ही और किसी कारणसे, काटने वाले कुत्तेकी सूरत और हालत मालूम नहीं होती, तब बड़ी दिक़्क़त होती है। अगर काटता है पागल कुत्ता और समझ लिया जाता है अच्छा कुत्ता, तब बड़ी भारी हानि और धोखा होता है। जब हड़कबाय हो जाती है—मनुष्य कुत्तेकी तरह भौंकने लगता है; पानीसे डरता या काँच और जलमें कुत्तेकी सूरत देखता है—तब फिर प्राण बचनेकी आशा बहुत ही कम रह जाती है, इसलिये हम हिकमतके ग्रन्थोंसे, बावले कुत्तेने काटा है या अच्छे कुत्तेने—इसके परीक्षा करनेकी विधि नीचे लिखते हैं। फौरन ही परीक्षा करके, चटपट इलाज शुरू कर देना चाहिये। अच्छा हो, अगर पहले ही बावला कुत्ता समझकर आरम्भिक या शुरूके उपाय तो कर दिये जायँ और दूसरी ओर परीक्षा होती रहे।

परीक्षा करनेकी विधि।

(१) अख़रोटकी मींगी कुत्तेके काटे हुए घावपर एक घण्टे तक रखो। फिर उसे वहाँसे उठाकर मुर्ग़ेके सामने डाल दो। अगर मुर्ग़ा उसे न खाय या खाकर मर जाय, तो समझो कि बावले कुत्तेने काटा है।

(२) एक रोटीका टुकड़ा कुत्तेके घावके बलग़म या तरीमें भर कर कुत्तोंके आगे डालो। अगर कुत्ते उसे न खायँ या खाकर मर जायँ, तो समझो कि बावले कुत्तेने काटा है।

(३) रोगीको करौंदेके पत्ते पानीमें पीसकर पिलाओ। जिसपर विषका असर न होगा, उसे क़य न होगी, पर जिसपर विषका असर होगा, उसे क़य होगी। अफीम और धतूरे आदिके विषोंके सम्बन्ध

में जब सन्देह होता है, तब इस उपायसे काम लेते हैं। कुत्ते आदिके विषपर इस तरह परीक्षा करनेकी बात कहीं लिखी नहीं देखी।

हिकमतसे आरम्भिक उपाय।

"तिब्बे अकबरी" वगैरः हिकमतके ग्रन्थोंमें बावले कुत्तेके काटने पर नीचे लिखे उपाय करनेकी सलाह दी गई है:—

(१) बावले कुत्तेके काटते ही, काटी हुई जगहका खून निचोड़ कर निकाल दो अथवा घावके गिर्द पछने लगाओ। मतलब यह, कि हर तरहसे वहाँके दूषित रुधिरको निकाल दो, क्योंकि खूनको निकाल देना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। सींगी लगाकर खून-मिला ज़हर चूसना भी अच्छा है।

(२) रोगीके घावको नश्तर वगैरःसे चीरकर चौड़ा कर दो, जिससे दूषित तरी आसानीसे निकल जाय। घावको कम-से-कम ४० दिन तक मत भरने दो। अगर घावसे अपने-आप बहुत-सा खून निकले, तो उसे बन्द मत करो। यह जल्दी आराम होनेकी निशानी है।

(३) रोगीको पैदल या किसी सवारीपर बैठाकर खूब दौड़ाओ, जिससे पसीने निकल जायँ, क्योंकि पसीनोंका निकलना अच्छा है, पसीनोंकी राहसे विष बाहर निकल जाता है।

(४) अगर भूलसे घाव भर जाय, तो उसे दोबारा चीर दो और उसपर ऐसी मरहम या लेप लगा दो, जिससे विष तो नष्ट हो पर घाव जल्दी न भरे। इस कामके लिये नीचेके उपाय उत्तम हैं:—

(क) लहसन, प्याज़ और नमक—तीनोंको कूट-पीसकर घावपर लगाओ।

(ख) लहसन, जावशीर, कलौंजी और सिरका—इनका लेप करो।

(ग) राल १ भाग, नमक २ भाग, नौसादर २ भाग और जावशीर ३ भाग ले लो। जावशीरको सिरकेमें मिलाकर, उसीमें राल, नमक

और नौसादरको भी पीसकर मिला दो। इस मरहमके लगानेसे घाव भरता नहीं—उल्टा घायल होता है।

(५) जबकि कुत्तेके काटे आदमीके शरीरमें विष फैलने लगे और दशा बदलने लगे, तब बादीके निकालनेकी ज़ियादा चेष्टा करो। इस कामके लिये ये उपाय उत्तम हैं:—

(क) तिरियाक अरबा और दवा-उस्सुरतान रोगीको सदा खिलाते रहो। जिस तरह वैद्यकमें "अगद" हैं, उसी तरह हिकमत में "तिरियाक" हैं।

(ख) जिस कुत्तेने काटा हो, उसीका जिगर भूनकर रोगीको खिलाओ।

(ग) पाषाणभेद इस रोगकी सबसे अच्छी दवा है।

(घ) नहरी कीकड़े १७॥ माशे, पाषाणभेद १७॥ माशे, कुँदरु गोंद १०॥ माशे, पोदीना १०॥ माशे और गिलेमख़तूम ३५ माशे—इन सबको पीस-कूटकर चूर्ण बना लो। इसकी मात्रा ३॥ माशेकी है। इस चूर्णसे बड़ा लाभ होता है।

(६) कुत्तेके काटे आदमीको तिरियाक या पेशाब ज़ियादा लाने वाली दवा देनेसे पानीका भय नहीं रहता।

(७) कुत्तेका काटा आदमी पानीसे डरता है—प्यासा मर जाता है, पर पानी नहीं पीता। रोगी प्यासके मारे मर न जाय, इसलिये एक बड़ी नलीमें पानी भर कर उसे उसके मुँहसे लगा दो और इस तरह पिलाओ, कि उसकी नज़र पानीपर न पड़े। प्यास और खुश्की से न मरने देनेके लिये, तरी और सर्दी पहुँचानेकी चेष्टा करो। ठण्डे शीरे, तर भोजन और प्यास बुझानेवाले पदार्थ उसे खिलाते रहो।

(८) तीन मास तक घावको मत भरने दो। काटे हुए सात दिन बीत जायँ, तब "आकाशबेल" या "हरड़का काढ़ा" रोगीको पिलाकर शरीरका मवाद निकाल दो।

(६) रोगीको पथ्यसे रखो । मांस, मछली, अचार, चटनी, सिरका, दही, माठा, खटाई, गरम और तेज़ पदार्थ उसे न दो। काँसीकी थालीमें खानेको मत खिलाओ और दर्पण मत देखने दो। नदी, तालाब, कूआ और नहर आदि जलाशयोंके पास उसे मत जाने दो। पानी भी पिलाओ, तो नेत्र बन्द करवाकर पिलाओ। हर तरह पानी और सर्दीसे रोगीको बचाओ।

आयुर्वेदके मतसे बावले कुत्तोंके काटेकी चिकित्सा ।

वैद्यक-ग्रन्थोंमें लिखा है, बावले कुत्तेके काटते ही, फौरन, नीचे लिखे उपाय करोः—

(१) दाढ़-लगे स्थानका खून निचोड़ कर निकाल दो। खून निकाल कर उस स्थानको गरमागर्म घीसे जला दो।

(२) घावको घीसे जलाकर, सर्पचिकित्सामें लिखी हुई महा अगद आदि अगदोंमेंसे कोई अगद घी और शहद आदिमें मिलाकर पिलाओ अथवा पुराना घी ही पिलाओ।

(३) आकके दूधमें मिली हुई दवाकी नस्य देकर, सिरकी मलामत निकाल दो।

(४) सफेद पुनर्नवा और धतूरेकी जड़ थोड़ी-थोड़ी रोगीको दो।

(५) तिलका तेल, आकका दूध और गुड़—बावले कुत्तेके विष को इस तरह नष्ट करते हैं, जिस तरह वायु या हवा बादलोंको उड़ा देती है। तिलीका तेल गरम करके लगाते हैं। तिलोंको पीसकर घावपर रखते हैं। आकके दूधका घावपर लेप करते हैं।

(६) लोकमें यह बात प्रसिद्ध है कि, बावले कुत्तेके काटे आदमी को "हड़कवाय" न होने पावे। अगर हो गई तो रोगीका बचना कठिन है।

इसके लिये लोग उसे काँसीकी थाली, आइना, पानी और जलाशयों से दूर रखते हैं। वैद्यकमें भी, विष अपने-आप कुपित न हो जाय इसलिये, दवा खिलाकर स्वयं कुपित करते है। जब विषका नक़ली कोप होता है, तब रोगीको जल-रहित शीतल स्थानमें रखते हैं। वहाँ रोगीकी नक़ली या दवाके कारणसे हुई उन्मत्तता शान्त हो जाती है। "सुश्रुत"में ऐसी नक़ली पागलपन कराने वाली दवा लिखी है:—

शरफोंकेकी जड़ १ तोले, धतूरेकी जड़ ६ माशे और चाँवल ६ माशे—इन तीनोंको चाँवलोंके पानीके साथ महीन पीसकर गोला सा बना लो। फिर उसपर पाँच-सात धतूरेके पत्ते लपेटकर पका लो और कुत्तेके काटे हुएको खिलाओ। इस दवाके पचते समय, अगर उन्मत्तता—पागलपन आदि विकार नज़र आवें, तो रोगीको जलरहित शीतल स्थानमें रख दो। इस तरह करनेसे दवाकी वजह से उन्माद आदि विकार शान्त हो जाते हैं। अगर फिर भी कुछ विष-विकार बाक़ी रहे दीखें, तो तीन दिन या पाँच दिन बाद फिर इसी दवाकी आधी मात्रा दो। दूसरी बार दवा देनेसे सब विष नष्ट हो जायगा। जब विष एकदम नष्ट हो जाय, रोगीको स्नान कराकर, गरम दूधके साथ शालि या साँठी चाँवलोंका भात खिलाओ।

यह दवा इस लिये दी जाती है कि, विष स्वयं कुपित न हो, वरन इस दवासे कुपित हो। क्योंकि अगर विष अपने-आप कुपित होता है, तो मनुष्य मर जाता है और अगर दवासे कुपित किया जाता है, तो वह शान्त होकर निःशेष हो जाता है। यह विधि बड़ी उत्तम है। वैद्योंको अवश्य करनी चाहिये।

सूचना—कुत्तेके काटेके निर्विष होनेपर उसे स्नान आदि कराकर, तेज वमन विरेचनकी दवा देकर शुद्ध कर लेना बहुत ही जरूरी है, क्योंकि अगर बिना शोधन किये घाव भर भी जायगा, तो विष समय पाकर फिर कुपित हो सकता है। चूंकि वमन-विरेचनका काम बड़ा कठिन है, अतः इस प्रकारका इलाज वैद्यों को ही करना चाहिये। वाग्भट्टने लिखा है:—

अर्कक्षीरयुतं चास्य योज्यमाशु विरेचनम्।

आकका दूध-मिला हुआ जुलाब कुत्तेके काटे हुएको जल्दी ही देना चाहिये।

नोट—आकका दूध, तिलका तेल, तिलकुट, गुड़, धतूरेकी जड़ और सफेद पुनर्नवा—विषखपरा,—ये सब कुत्तेके काटेको परम हितकारी हैं।

चन्द अपने-पराये परीक्षित उपाय।

अभी गत वैशाख सं० १९८० में, हम अपनी कन्याकी शादी करने मथुरा गये थे। हमारे पासके घरमें एक मनुष्यको कुत्तेने काटा। हमारे यहाँ, कामवनसे, हमारे एक नातेदार आये थे। उन्होंने कहा, कि नीचे लिखे उपायसे अनेक मनुष्य पागल कुत्तेके काटनेपर आराम हुए हैं। इसके सिवा, हमने उनके कहनेसे पहले भी इस उपायकी तारीफ़ दिहातके लोगोंसे सुनी थी:—

पहले कुत्तेके काटे स्थानपर चिराग़का तेल लगाओ। फिर लाल मिर्च पीसकर ज़ख़ममें दाब दो। ऊपरसे मकड़ीका सफेद जाला धर दो और वहाँ कसकर पट्टी बाँध दो।

इस उपायको औरतें भी जानती हैं। यह उपाय बहुत कम फेल होता है। "वैद्यकल्पतरु"में एक सज्जन लिखते हैं:—

(१) पागल कुत्तेके काटते ही, उसके काटे हुए भागको काट कर जला दो।

(२) विष दूर हो जानेपर, रोगीको खानेके लिये स्नायु शिथिल करने वाली दवाएँ—अफीम, भाँग या वेलाडोना प्रभृति दो।

(३) अगर कुत्तेका काटा हुआ आदमी अधिक अफीम पचाले, तो उससे विषके कीड़े निकल जावें और रोगी बच जावे।

(४) कुकुरबेल नामकी बनस्पति पिलाने से खूब दस्त और क़य होते और विषैले जन्तु मरकर निकल जाते हैं।

कुत्तेके काटनेपर नीचेके लेप उत्तम हैं:—

(१) लहसनको सिरकेमें पीसकर घावपर लेप करो।

(२) प्याज़का रस शहदमें मिलाकर लेप करो।

(३) कुचला आदमीके मूत्रमें पीसकर लगाओ।

(४) कुचला शराबमें पीसकर लगाओ।

(५) शुद्ध कुचला, शुद्ध तेलिया विष और शुद्ध चौकिया सुहागा—इन्हें समान-समान लेकर पीस लो और रख दो। इसमें से रत्ती-रत्ती भर दवा खिलाने से, बावले कुत्तेका काटा, २१ दिनमें, ईश्वर-कृपासे, आराम हो जाता है।

(६) लिहसौढ़ेके पत्ते १ तोले और काली मिर्च १ माशे—आध पाव जलमें घोटकर ६ या १५ दिन पीने से कुत्तेका काटा आदमी आराम हो जाता है।

(७) दोनो ज़ीरे और काली मिर्च पीसकर १ महीने तक पीनेसे कुत्तेका विष शान्त हो जाता है।

(८) अगर कुत्तेके काटने से शरीरपर कोढ़के से चकत्ते हो जायँ, तो आमलासार गंधक ६ माशे, नीलाथोथा ६ माशे और जमाल-गोटा ६ माशे—तीनोंको पीस-छानकर घीमें मिला दो। फिर उस घीको ताम्बेके बर्तनमें रखकर, १०१ बार धोओ। इस घीको शरीर में लगाकर ३ घंटे तक आग तापो। अगर तापने से सारे शरीरपर बाजरेके से दाने हो जायँ, तो दूसरे दिन गोबर मलकर नहा डालो। बस, सब शिकायतें रफ़ा हो जायँगी।

नोट—इस घीको आँखों और गलेपर मत लगाना। मतलब यह कि, इसे गलेसे ऊपर मत लगाना।

श्वान-विष-नाशक नुसख़े।

(१) कड़वी तोरईका रेशे-समेत गूदा निकालो। फिर इस गूदेको एक पाव पानीमें आध घण्टे तक भिगो रखो। शेषमें, इसको मसल-छानकर, बलानुसार, पाँच दिन तक, नित्य, सवेरे पीओ। इस से दस्त और क़य होकर विष निकल जाता है। बावले कुत्तेका कैसा भी विष क्यों न हो, इस दवासे अवश्य आराम हो जाता है, बशर्त्ते कि आयु हो और जगदीशकी कृपा हो।

नोट—बरसात निकल जाने तक पथ्य रखना बहुत जरूरी है। कड़वी तोरई जंगली होनी चाहिये।

(२) कुकुर भाँगरेको पीसकर पीने और उसीका लेप करने से कुत्तेका विष नष्ट हो जाता है।

नोट—भाँगरेके पेड़ जलके पासकी जमीनमें बहुत होते हैं। इनकी शाखों में कालापन होता है। पत्तोंका रस काला सा होता है। सफेद, काले और पीले—तीन तरहके फूलोंके भेदसे ये तीन तरहके होते हैं। इसकी मात्रा २ माशेकी है।

(३) आकके दूधका लेप कुत्ते और बिच्छूके काटे स्थानपर लगानेसे अवश्य आराम हो जाता है। बहुत ही उत्तम योग है।

नोट—ऊपरके तीनों नुसखे आज़मूदा हैं। अनेक बार परीक्षा की है। जिन की जिन्दगी थी, वे बच गये। "वैद्यसर्वस्व"में लिखा है:—

विषमर्कपयो लेपः श्वानवृश्चिकयोर्जयेत्।
कौकुरं पानलेपाभ्यामथश्वानविषं हरेत्॥

अर्थ वही है जो नं० २ और ३ में लिखा है।

(४) अगर किसीको पागल कुत्ता या पागल गीदड़ काट खाय, तो तत्काल, बिना देर किये, सफेद आकका दूध निकालकर, उसमें थोड़ा सा सिन्दूर मिलाकर, उसे रूईके फाहेपर रखकर, काटे हुए

स्थानपर रखकर बाँध दो। इस तरह नियमसे, रोज, ताज़ा आकके दूधमें सिन्दूर मिला-मिलाकर बाँधो। कितने ही दिन इस उपायके करनेसे अवश्य आराम हो जायगा। जब रूई सूख जाय, उतार फैंको। परीक्षित है।

नोट—इस रोगमें पथ्य पालनकी सख़्त ज़रूरत है। मांस, मछली, अचार, चटनी, सिरका, दही, माठा और खटाई आदि गरम और तीक्ष्ण पदार्थ—अपथ्य हैं।

(५) अगर बावला कुत्ता काट खाय, तो पुराना घी रोगीको पिलाओ। साथ ही दूध और घी मिलाकर काटे हुए स्थानपर सींचो यानी इनके तरड़े दो।

(६) सरफोंकेकी जड़ और धतूरेकी जड़—इन दोनोंको चाँवलों के पानीमें पीसकर, गोला बना लो। फिर उसपर धतूरेके पत्ते लपेट दो और छायामें बैठकर पका लो। फिर निकालकर रोगीको खिलाओ। इससे कुत्तेका विष नष्ट हो जाता है।

(७) धतूरेकी जड़को दूधके साथ पीसकर पीनेसे कुत्तेका विष नष्ट हो जाता है।

(८) अंकोलकी जड़ चाँवलोंके पानीके साथ पीसकर पीनेसे कुत्तेका विष दूर हो जाता है।

(९) कठूमरकी जड़ और धतूरेका फल—इनको एकत्र पीसकर, चाँवलोंके जलके साथ पीनेसे कुत्तेका विष दूर हो जाता है।

नोट—कठूमर गूलरका ही एक भेद है।

(१०) अंकोलकी जड़के आठ तोले काढ़ेमें चार तोले घी डाल कर पीनेसे कुत्तेका विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(११) लहसन, कालीमिर्च, पीपर, बच और गायका पित्ता—इन सब को सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। इस दवाके पीने, नस्यकी तरह सूँघने, अंजन लगाने और लेप करनेसे कुत्तेका विष उतर जाता है।

नोट—यह एक ही दवा पीने, लेप करने, नाकमें सूँघने और नेत्रोंमें आँजनेसे कुत्तेके काटे आदमीको आराम करती है।

(१२) जलबेंतकी जड़ और पत्ते तथा कूट—इन दोनोंको जलमें पका और शीतल करके पीनेसे कुत्तेका विष दूर हो जाता है। परीक्षित है।

(१३) जलबेंतके पत्ते और उसीकी जड़को कूट लो। फिर उन्हें पानीमें डालकर काढ़ा कर लो। इस काढ़ेको छानकर और शीतल करके पीनेसे कुत्तेका विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१४) जंगली कड़वी तोरईके काढ़ेमें घी मिलाकर पीनेसे वमन होतीं और विष उतर जाता है। परीक्षित है।

नोट—यह नुसख़ा, कुत्तेके विषों आदि अनेक तरहके विषोंपर चलता है। सभी तरहके विषोंमें वमन कराना सर्वश्रेष्ठ उपाय है और इस दवासे वमन हो कर विष निकल जाता है।

(१५) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, जो कुत्ता काटे उसीका थोड़ा-सा खून निकालकर, पानीमें मिलाकर, कुत्तेके काटे आदमीको पिलाओ। इसके पीनेसे बावले कुत्तेका विष असर न करेगा।

नोट—यह उसी तरहका नुसखा है, जिस तरह हमारे आयुर्वेदमें जो साँप काटे, उसीकी काटनेकी सलाह दी गई है। काटनेसे साँपका खून रोगीके पेटमें जाता है और उसके विषको चढ़ने नहीं देता।

(१६) कुत्तेके काटे स्थानपर, कुचला आदमीके पेशाबमें औटा कर और फिर पीसकर लेप करनेसे बड़ा लाभ होता है।

नोट—साथ ही कुचलेको शराबमें औटाकर, उसकी छाल उतार फेंको। फिर उसमेंसे एक रत्ती रोज़ कुत्तेके काटे आदमीको खिलाओ। अथवा कुचलेको पानी में औटाकर और थोड़ा गुड़ मिलाकर रोगीको खिलाओ। कुचलेकी मात्रा ज़ियादा न होने पावे। बावले कुत्तेके काटनेपर कुचला सर्वोत्तम दवा है। कई बार परीक्षा की है।

(१७) जो कुत्ता काटे, उसीकी जीभको काटकर जला लो। फिर उसकी राखको काटे हुए घावपर छिड़को। इस उपायसे ज़हर असर नहीं करेगा और कुत्तेका काटा घाव भर जायगा।

(१८) तलैना नामक दवाको डिब्बीमें रखकर बन्द कर दो और

भीतर ही सूखने दो। फिर इसको एक चने भर लेकर, थोड़ेसे गुड़में मिलाकर, कुत्तेके काटे आदमीको खिलाओ। इसके सेवन करने से कुत्ते के काटने से बावला हुआ आदमी भी आराम हो जाता है। एक हकीम साहब इसे अपना आजमूदा नुसख़ा कहते हैं।

(१६) अंगूरकी लकड़ीकी राख सिरकेमें मिलाकर कुत्तेके काटे स्थान पर लगानेसे लाभ होता है।

(२०) लाल बानातके टुकड़ेके चने-चने समान सात टुकड़े काट लो। फिर हर टुकड़ेको गुड़में मिलाकर, सात गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे कुत्तेका काटा आराम हो जाता है। यह एक अँगरेजका कहा हुआ नुसख़ा है।

(२१) जिस कुत्ते ने काटा हो, उसीके बाल जलाकर राख कर लो। इस राखको काटे स्थानपर छिड़को। अवश्य लाभ होगा।

(२२) कलौंजीकी जवारस कुत्तेके काटे आदमीको बड़ी मुफीद है। इसे खाना चाहिये।

(२३) कुत्तेकी काटी जगहपर मूलीके पत्ते गरम करके रखनेसे अवश्य लाभ होता है।

(२४) कुत्तेके काटे स्थानपर चूहेकी मैंगनी पीसकर लगाओ।

(२५) कुत्तेके काटे स्थानपर सम्हालूके पत्ते पीसकर लेप करो।

(२६) बाजरेका फूल—जो बालके अन्दर होता है—एक माशे भर लेकर, गुड़में लपेटकर, गोली बनाकर, रोज़ खिलानेसे कुत्तेका काटा आराम हो जाता है।

(२७) चालीस माशे कलौंजी फाँककर, ऊपरसे गुनगुना पानी पीनेसे कुत्तेके काटेको लाभ होता है। तीन दिन इसे फाँकना चाहिये।

(२८) कुत्तेके काटे स्थानपर पछने लगाने यानी खुरचने और खून निकाल देनेके बाद राईको पीसकर लेप करो। अच्छा उपाय है।

(२६) विजयसार और जटामासीको सिलपर पीसकर पानीमें छान लो। फिर एक "मातुलुंगका फल" खाकर ऊपरसे यही छना

हुआ दवाका पानी पीलो। इस नुसख़ेसे पागल कत्तेका काटा निश्चय ही आराम हो जाता है।

(३०) "तिब्बे अकबरी"में लिखा है, कुत्तेके काटे स्थानपर सिरका मलो या ऊनको सिरकेमें भिगोकर रखो। अगर सिरकेमें थोड़ा सा गुले रोग़न भी मिला दो तो और भी अच्छा।

(३१) कुत्तेके काटे स्थानपर थोड़ा सा पपड़िया नोन सिरकेमें मिलाकर बाँध दो और हर तीसरे दिन उसे बदलते रहो।

(३२) प्याज़, नमक, शहद, पपड़िया नोन और सिरका—इनको मिलाकर लगानेसे कुत्तेका काटा आराम हो जाता है।

(३३) नमक, प्याज़, तुतली, बाकला, कड़वा बादाम और साफ शहद—इनको मिलाकर कुत्तेके काटे स्थानपर लगानेसे आराम होता है।

(३४) धतूरेके शोधे हुए बीज इस तरह खाय—पहले दिन १, दूसरे दिन २, तीसरे दिन ३—इस तरह २१ दिन तक रोज़ एक-एक बीज बढ़ाया जाय। फिर इक्कीस बीज खाकर, रोज़ एक-एक बीज घटा कर खाय और १ पर आ जाय। इस तरह धतूरेके बीज बढ़ा-घटाकर खानेसे कुत्तेका विष निश्चय ही नष्ट हो जाता है, पर बीजोंको शास्त्र-विधिसे शोधे बिना न खाना चाहिये।

नोट—धतूरेके बीजोंको १२ घण्टे तक गोमूत्रमें भिगो रखो, फिर निकालकर सुखा लो और उनकी भूसी दूर कर दो। बस इस तरह वे शुद्ध हो जायँगे।

जौंकके विषकी चिकित्सा।

वर्णन।

जौंकें निर्विष और विषैली दोनों तरहकी होती है। निर्विष जौंकें खून बिगड़ जानेपर शरीरपर लगाई जाती हैं। ये मैला या गन्दा खून पीकर मोटी हो जाती और फिर गिर पड़ती हैं। जौंकोंका धन्धा करनेवालोंको ज़हरी जौंकें न पालनी

चाहियें, क्योंकि ज़हरीली जौंकोंके काटनेसे खुजली, सूजन, ज्वर और मूर्च्छा होती है। कोई-कोई लिखते हैं,—जलन, पकाव, विसर्प, खुजली और फोड़े-फुन्सी भी होते हैं। कोई सफेद कोढ़का हो जाना भी कहते हैं।

विषैली जौंकोंकी पहचान।

विषैली जौंकें लाल, सफेद, घोर काली, बहुत चपल, बीचसे मोटी, रोएँ वाली और इन्द्रधनुषकी-सी धारी वाली होती हैं। इन्ही के काटनेसे उपरोक्त विकार होते हैं।

आसाम और दार्जिलिंगकी तरफ ये पाँवोंमें चिपट जातीं और बड़ी तकलीफ देती हैं, अतः जङ्गलोंमें फिरनेवालोंको टखने तक जूते और पायजामा पहनकर घूमना चाहिये।

चिकित्सा।

सिरस, मालकाँगनी, अर्जुनकी छाल, ल्हिसौड़ेकी छाल और बड़, पीपर, गूलर, पाखर और पारसपीपल—इन सबकी छालों को पानीमें पीसकर पीने और लगानेसे जौंकका काटा हुआ आराम हो जाता है।

नोट—जौंकका विष नाश करनेवाले और नुसखे 'कीट-विष-चिकित्सा'में लिखे हैं।

खटमल भगानेके उपाय।

खटमल खाटोंके अन्दर रहते हैं। कलकत्तेमें तो दीवारों, किताबों, तिजोरियोंकी सन्धों और कपड़ोंमें बाज़-बाज़ वक्त बुरी तरहसे भर जाते हैं। रातको चींटियोंकी-सी क़तार निकलती है। तड़का होनेसे पहले ही ये अपने-अपने स्थानोंमें जा छिपते हैं। ये मनुष्यका खून पी-पीकर मोटे होते और रातको नीद भर सोने नहीं देते।

अगर इनसे बचना चाहो तो नीचे लिखे उपाय करो:—

(१) बिस्तर, तकिये और गद्दे खूब साफ रखो। उन्हें दूसरे तीसरे दिन देखते रहो। चादरोंको रोज़ या दूसरे तीसरे दिन धो लो या धुलवा लो। पलँगोंपर किरमिच या और कोई कपड़ा इस तरह मढ़वालो, कि खटमलोंके रहनेको जगह न मिले।

(२) जब सफेदी कराओ, चूनेमें थोड़ी-सी गन्धक भी मिला दो। इस तरह सफेदी करानेसे खटमल दीवारोंमें न रहेंगे।

(३) घर और खाटोंमें गन्धककी धूनी दो।

(४) जिन चीज़ोंसे ये न निकलते हों, उनमें गंधकका धूआँ पहुँचाओ। अथवा मरुवेके काढ़ेमें नीलाथोथा मिलाकर, उस पानी से उन्हें धो डालो और घरको भी उसी जलसे धोओ। मरुवे और गन्धककी बू खटमलोंको पसन्द नहीं।

शेर और चीतेके किये ज़ख्मोंकी चिकित्सा।

बंगसेन में लिखा है,—बाघ, सिंह, भेड़िया, गीदड़, कुत्ता, चौपाये जानवर और जंगली आदमियोंके नाखूनो और दाँतोंमें विष होता है। इनके नाखूनों और दाँतोंसे घाव होकर, वह स्थान सूज जाता और बहता तथा ज्वर हो आता है।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, चीते और शेर प्रभृति जानवरोंके दाँतों और पञ्जोंमें ज़हर होता है। अतः पहले पछने लगाकर विष निकालना चाहिये, उसके बाद लेप वगैरह करने चाहियें।

(१) चाय औटाकर, उसीसे शेरका किया हुआ घाव धोओ। फौरन आराम होगा।

(२) पछनोंसे मवाद निकाल कर, जरावन्द, सौसनकी जड़ और शहद—इन तीनोंको मिलाकर शेर इत्यादिके किये हुए घावों पर लेप करो।

(३) ताम्बेका बुरादा, सौसनकी जड़, चाँदीका मैल, मोम और जैतूनका तेल—इन सबको मिलाकर घाव पर लगाओ। इस मरहम से शेर, चीते, बाघ, भेड़िये और बन्दर आदि सभी चौपायोंके किये हुए घाव आराम हो जाते हैं।

(४) अगर सिंह या शेरका बाल किसी तरह खा लिया जाता है तो बैठते समय पेटमें दर्द होता है। शेरका बाल खाने वाला आदमी अगर अरण्डके पत्तेपर पेशाब करता है, तो पत्तेके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। यही शेरका बाल खानेकी पहचान है। अगर शेरका बाल खाया हो और परीक्षासे निश्चय हो जाय, तो नीचे लिखे उपाय करोः—

(क) कसौंदीके पत्तोंका स्वरस ३ दिन पीओ।

(ख) तीन चार झींगे निगल जाओ।

(५) भेड़िया, बाघ, तेंदुआ, रीछ, स्यार, घोड़ा और सींगवाले जानवरोंके काटे हुए स्थान पर तेल मलना चाहिये।

(६) मोखेके बीज, पत्ते या जड़—इनमेंसे किसी एकका लेप करनेसे भेड़िये और बाघ आदि नं० ५ में लिखे जानवरोंका विष नष्ट हो जाता है।

(७) ईख, राल, सरसों, धतूरेके पत्ते, आकके पत्ते और अर्जुन के फूल—इन सबको मिलाकर, इनकी धूनी देनेसे स्थावर और जंगम दोनों तरहके विष नाश हो जाते हैं। जिस जगह यह धूनी दी जाती है वहाँ सर्प, मैंडक एवं अन्य कीड़े कुछ भी नहीं कर सकते। इस धूनीसे इन सबका विष तत्काल नाश हो जाता है। नं० ५ में लिखे जानवरोंके काटने पर भी यह धूनी पूरा फायदा करती है, अतः उनके काटने पर इसे अवश्य काममें लाओ।

(८) बेलगिरी, अरहर, जवाखार, पाढल, चीता, कमल, कुँभेर

और सेमल—इन सबका काढ़ा बनाकर, उस काढ़े द्वारा शेर आदिके काटे स्थानको सींचनेसे या इस काढ़ेका तरड़ा देनेसे नं० ५ में लिखे सभी जानवरोंका विष शान्त हो जाता है।

मण्डूक-विष-चिकित्सा ।

मैंडक बहुत तरहके होते हैं। उनमेंसे ज़हरीले मैंडक आठ प्रकारके होते हैं:—

(१) काला, (२) हरा, (३) लाल, (४) जौके रंगका (५) दहीके रंगका (६) कुहक (७) भ्रुकुट, और (८) कोटिक।

इनमेंसे पहले छै मैंडकोंमें जहर तो होता है, पर कम होता है। इनके काटनेसे काटे हुए स्थानमें बड़ी खुजली चलती है और मुख से पीले-पीले झाग गिरते हैं। भ्रुकुट और कोटिक बड़े भारी ज़हरी होते हैं। इनके काटनेसे काटी हुई जगहमें बड़ी भारी खाज चलती है, मुँहसे पीले-पीले झाग गिरते हैं, बड़ी जलन होती है, क़य होती हैं और घोर मूर्च्छा या बेहोशी होती है। कोटिकका काटा हुआ आदमी आराम नहीं होता।

नोट—कोटिक मैंडक बीरबहुट्टीके आकारका होता है।

"वंगसेन" में लिखा है—विषैले मैंडकके काटनेसे मैंडकका एक ही दाँत लगता है। दाँत लगे स्थानमें वेदना-युक्त पीली सूजन होती है, प्यास लगती, वमन होती और नींद आती है।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है,—जो मैंडक लाल रंगके होते हैं, उनका विष बुरा होता है। यह मैंडक जिस जानवरको दूरसे भी देखता है, उसी पर ज़ोरसे कूदकर आता है। अगर यह किसी तरह नहीं काट सकता, तो जिसे काटना चाहता है उसे फूँकता है। फूकनेसे भी भारी सूजन चढ़ती और मृत्यु तक हो जाती है।

नहरी और जंगली मैंडकोंके काटने से नर्म सूजन होती है। उनका और शीतल विषोंका एक इलाज है।

नोट—लाल मैंडकोंके काटनेपर "तिरियाक कबीर" देना अच्छा है।

मैंडक-विष नाशक उपाय।

सिरसके बीजोंको थूहरके दूधमें पीसकर लेप करने से मैंडक का विष तत्काल शान्त हो जाता है।

भेड़िये और बन्दरके काटेकी चिकित्सा।

बन्दरके काटने से भी मनुष्यको बड़ी पीड़ा होती है और कभी-कभी घाव बड़ी दिक्कतसे आराम होते हैं। बन्दरके काटनेपर नीचेके उपाय बहुत उत्तम हैं:—

(१) मुर्दासंग और नमक पानीमें पीसकर काटी हुई जगह पर मलो।

(२) काटी हुई जगहपर कलौंजी और शहद मिलाकर लगाओ। इससे घाव खुला रहेगा और विष निकल जायगा।

(३) काटे हुए स्थानपर प्याज़ पीसकर मलो।

(४) जरावन्द, सौसनकी जड़ और शहद—इन तीनोंको मिलाकर घावपर लेप करो।

(५) प्याज़ और नमक कूट-पीसकर बन्दरके घावपर रखो।

(६) ताम्बेका बुरादा, सौसनकी जड़, चाँदीका मैल, मोम और जैतूनका तेल—इनको मिलाकर मरहम बना लो। सिरके से घावको धोकर, यह मलहम लगाने से बन्दर और भेड़ियेका काटा

हुआ स्थान अवश्य आराम हो जाता है। इस कामके लिये यह मरहम बड़ी ही उत्तम है।

नोट—मोमको गलाकर जैतूनके तेलमे मिला लो। फिर शेष तीनोको खूब महीन पीसकर मिला दो। बस, मरहम बन जायगी।

सूचना—बन्दर या भेडियेके काटनेपर पहले पछने लगाकर ज़हर निकाल दो, फिर लेप या मरहम लगाओ।

मकड़ीके विषकी चिकित्सा।

कहते हैं, किसी समय विश्वामित्र राजा महामुनि वशिष्ठजी के आश्रममें गये और उन्हें गुस्सा दिलाया। वशिष्ठजीको क्रोध आया, उससे उनके ललाटपर पसीने आ गये। वह पसीने सामने पड़ी हुई गायकी कुट्टीपर पड़े उनसे ही अनेक प्रकार के लूता नामके कीड़े पैदा हो गये।

लूता या मकड़ीके काटनेसे काटा हुआ स्थान सड़ जाता है, खून बहने लगता है, ज्वर चढ़ आता है, दाह होता है, अतिसार और त्रिदोपके रोग होते हैं, नाना प्रकारकी फुन्सियाँ होती हैं, बड़े-बड़े चकत्ते हो जाते हैं और बड़ी गंभीर, कोमल, लाल, चपल, कलाई लिये हुए सूजन होती है। ये सब मकड़ीके काटनेके सामान्य लक्षण है।

अगर काटे हुए स्थानपर काला या किसी क़दर झाँईवाला, जाले समेत, जलेके समान, अत्यन्त पकनेवाला और क्लेद, सूजन तथा ज्वर सहित घाव हो, तो समझो कि दूषी विष नामकी मकड़ीने काटा है।

असाध्य लूता या मकड़ीके काटनेके लक्षण।

अगर असाध्य मकड़ी काटती है, तो सूजन चढ़ती है, लाल सफेद और पीली-पीली फुन्सियाँ होती है, ज्वर आता है, प्राणान्त करने

वाली जलन होती है, श्वास चलता है, हिचकियाँ आती हैं और सिरमें दर्द होता है।

हमारे आयुर्वेदमें मकड़ियोंकी बहुत क़िस्में लिखी हैं। त्रिमंडल आदि आठ कष्टसाध्य और सौवर्णिक आदि आठ असाध्य मकड़ियाँ होती हैं। ये राईके दानेसे लेकर तीन-तीन और चार-चार इंच तक बड़ी होती हैं।

बहुत बड़ी और उग्र विषवाली मकड़ियाँ घोर वनोंमें होती हैं, जिनके काटनेसे मनुष्यके प्राणान्त ही हो जाते हैं; परन्तु गृहस्थोंके घरोंमें ऐसी ज़हरीली मकड़ियाँ नहीं होतीं, पर जो होती हैं, वे भी कम दुःखदायिनी नहीं होतीं।

मकड़ियोंकी मुँहकी लार, नाखून, मल, मूत्र, दाढ़, रज और वीर्य सबमें ज़हर होता है। बहुत करके मकड़ीकी लार या चेपमें ज़हर होता है। मकड़ीकी लार या चेप जहाँ लग जाते हैं, वहीं दाफड़-ददौरे, सूजन, घाव और फुन्सियाँ हो जाती हैं। घाव सड़ने लगता है। उसमें बड़ी जलन होती और ज्वर तथा अतिसार रोग भी हो जाते हैं। यह देखनेमें मामूली जानवर है, पर है बड़ा भयानक, अतः गृहस्थोंको इसे घरमें डेरा न जमाने देना चाहिये। अगर एक मकड़ी भी होती है, तो फिर सैकड़ों हो जाती हैं। क्योंकि एक-एक मकड़ी सैकड़ों-हज़ारों, तिलसे भी छोटे-छोटे, अण्डे देती है। अगर उनकी लार या चेप कपड़ोंसे लग जाते हैं और मनुष्य उन्हीं कपड़ोंको बिना धोये पहन लेता है, तो उसके शरीरमें मकड़ीका विष प्रवेश कर जाता है। इस तरह अगर मकड़ी खाने-पीनेके पदार्थोंमें अपना मल, मूत्र, वीर्य या लार गिरा देती है, तोभी भयानक परिणाम होता है, अतः गृहस्थोंको अपने घरोंमें हर महीने या दूसरे तीसरे महीने सफेदी करानी चाहिये और इन्हें देखते ही किसी भी उपायसे भगा देना चाहिये। औरतें मकड़ीके विकार होनेपर मकड़ी मसलना कहती हैं।

मकड़ी-विष नाशक नुसखे।

(१) फूलप्रियंगू, हल्दी, दारूहल्दी, शहद, घी और पद्माख—इन सबको मिलाकर सेवन करनेसे सब तरहके कीड़ों और मकड़ी का विप नष्ट हो जाता है।

(२) करं, आकका दूध, कनेर, अतीस, चीता और अख़रोट—इन सबके स्वरसके द्वारा पकाया हुआ तेल लगानेसे मकड़ीका किया हुआ घाव नष्ट हो जाता है।

(३) मण्डवा पानीमें पीसकर लगानेसे मकड़ीके विकार फुन्सी वगैरः नाश हो जाते हैं।

(४) सफेद ज़ीरा और सोंठ—पानीमें पीसकर लगानेसे मकड़ी के विकार नाश हो जाते हैं।

(५) केंचुए पीसकर मलनेसे मकड़ीका ज़हर और उसके दाने आराम हो जाते हैं।

नोट—केंचुए न मिलें तो उनकी मिट्टी ही मलनी चाहिये।

(६) चूनेको नीबूके रसमें खरल करके मलनेसे मकड़ीके दाने मिट जाते हैं।

(७) चूनेको मीठे तेल और चिरौंजीके साथ पीसकर लेप करनेसे मकड़ीके दाने नष्ट हो जाते हैं।

(८) लाल चन्दन, सफेद चन्दन और मुर्दासंग—इन तीनोंको पीसकर लगानेसे मकड़ीका ज़हर नाश हो जाता है।

(९) खली और हल्दी पानीमें पीसकर लेप करनेसे मकड़ीका विप नाश हो जाता है।

(१०) हल्दी, दारूहल्दी, मँजीठ, पतंग और नागकेशर—इन सबको शीतल जलमें एकत्र पीसकर, काटनेके स्थानपर लेप करनेसे मकड़ीका विष शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(११) कटभी, अर्जुन, सिरस, बेल और दूधवाले वृक्षों (पाखर, बड़, गूलर, पीपल और बेलिया पीपल) की छालोंके काढ़े, कल्क या चूर्णके सेवन करनेसे मकड़ी और दूसरे कीड़ोंका विष नष्ट हो जाता है।

(१२) चन्दन, पद्माख, कूट, तगर, ख़स, पाढ़ल, निर्गुण्डी, सारिवा, और बेल—इन सबको एकत्र पीसकर लेप करनेसे मकड़ी का विष नष्ट हो जाता है।

(१३) चन्दन, पद्माख, ख़स, सिरस, सम्हालू, क्षीरविदारी, तगर, कूट, सारिवा, सुगन्धवाला, पाढर, बेल और शतावर—इन सबको एकत्र पीसकर लेप करनेसे मकड़ीका विष नाश हो जाता है।

(१४) चन्दन, पद्माख, कूट, जवासा, ख़स, पाढ़ल, निर्गुण्डी, सारिवा और लिहसौड़ा—इन सबको एकत्र पीसकर लेप करनेसे मकड़ीका विष नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—नं० १२ और इस नं० १४ के नुसख़ेमें कोई बड़ा भेद नहीं। उसमें तगर और बेल है, इसमें जवासा और लिहसौड़ा है; शेष दवायें दोनोंमें एक ही हैं।

(१५) कड़वी खलकी सात दिन धूनी देनेसे मकड़ीका विष नष्ट हो जाता है।

नोट—इसके साथ ही खली और हल्दीको पानीके साथ पीसकर इनका लेप किया जाय, तो क्या कहना, फौरन आराम हो। परीक्षित है। "वैद्यसर्वस्व"में लिखा है:—

याति गोमयलेपेन कण्डूः खर्जुभवा तथा।

कटुपिण्याक धूमकैः मकरीजंविषं याति सप्ताहपरिवर्त्तितैः॥

(१६) सफेद पुनर्नवाकी जड़को महीन पीसकर और मक्खनमें मिलाकर लगाने से मकड़ीके विषसे हुए विकार नष्ट हो जाते हैं।

(१७) अपामार्गकी जड़को महीन पीसकर और मक्खनमें मिलाकर लगाने से मकड़ीके चेपसे हुए दाफड़—ददौरे और फुन्सी आदि सब नाश हो जाते हैं।

(१८) गूलर, पीपर, पारस-पीपल, वड़ और पाखर—इन पाँचों दूधवाले पेड़ोंकी छालोंका काढ़ा करके शीतल कर लो और इससे मकड़ीके विषसे हुए घाव और फुन्सी आदिको धोओ। बहुत जल्दी लाभ होगा।

(१९) कत्था २ तोले, कपूर १ तोले और सिन्दूर ६ माशे—इन तीनोंको महीन पीसकर वारीक कपड़ेमें छान लो और १०० बार धुले घी या मक्खनमें मिला दो। इस मक्खनसे मकड़ीके घाव, फुन्सी और सूजन आदि सब नष्ट हो जाते हैं। वड़ी ही उत्तम मरहम है। परीक्षित है।

(२०) चौलाईका साग पानीमें पीसकर लगानेसे मकड़ीका विष शान्त हो जाता है।

तृतीय खण्ड ।

स्त्री-रोगोंकी चिकित्सा।

प्रदर रोगका बयान।

प्रदर रोगके निदान-कारण।

सब भी जानते हैं, कि स्त्रियोंको हर महीने रजोधर्म होता है। जब स्त्रियोंको रजोधर्म होता है; तब उनकी योनिसे एक प्रकारका खून चार या पाँच दिनों तक बहता रहता और फिर बन्द हो जाता है। इसके बाद यदि उन्हें गर्भ नहीं रहता अथवा उनको रजोधर्म बन्द हो जानेका रोग नहीं हो जाता, तो वह फिर दूसरे महीनेमें रजस्वला होती हैं और उनकी योनिसे फिर चार पाँच दिनों तक आर्त्तव या खून बहता है। यह रजोधर्म होना,—कोई रोग नहीं, पर स्त्रियोंके आरोग्य की निशानी है। जिस स्त्रीको नियत समय पर ठीक रजोधर्म होता है, वह सदा हृष्ट-पुष्ट और तन्दुरुस्त रहती है। मतलब यह, इस समय योनिसे खून बहना,—रोग नहीं समझा जाता। हाँ, अगर चार पाँच दिनसे ज़ियादा, बराबर खून गिरता रहता है, तो औरत कमज़ोर हो जाती है एवं और भी अनेक रोग हो जाते हैं। इसका इलाज किया जाता है। मतलब यह कि जब नाना प्रकारके मिथ्या आहार विहारोंसे स्त्रियोंकी योनिसे खून या अनेक रंगके रक्त बहा करते हैं, तब कहते हैं, कि स्त्रीको "प्रदर रोग" हो गया है।

"भावप्रकाश" में लिखा है—जब दुष्ट रज बहुत ही ज़ियादा बहती है, शरीर टूटता है, अंगोंमें वेदना होती है एवं शूलकी-सी पीड़ा होती है, तब कहते हैं—"प्रदर रोग" हुआ ।

"वैद्यरत्न" में लिखा है:—

अतिमार्गातिगमन प्रभूत सुरतादिभिः ।
प्रदरो जायते स्त्रीणां योनिरक्त स्रुतिःपृथुः ॥

बहुत रास्ता चलने और अत्यन्त परिश्रम करनेसे स्त्रियोंको "प्रदर रोग" होता है । इस रोगमें योनिसे खून बहता है ।

"चरक" में लिखा है—अगर स्त्री नमकीन, चरपरे, खट्टे, जलन करनेवाले, चिकने, अभिष्यन्दी पदार्थ, गाँवके और जलके जीवोंका मांस, खिचड़ी, खीर, दही, सिरका और शराब प्रभृतिको सदा या ज़ियादा खाती है, तो उसका "वायु" कुपित होता और खून अपने प्रमाणसे अधिक बढ़ता है । उस समय वायु उस खूनको ग्रहण करके, गर्भाशयकी रज बहाने वाली शिराओंका आश्रय लेकर, उस स्थानमें रहने वाले आर्त्तवको बढ़ाती है । चिकित्सा-शास्त्र-विशारद विद्वान् उसी बढ़े हुए वायुसंसृष्ट रक्तपित्तको "असृग्दर" या "रक्त-प्रदर" कहते हैं । "वैद्यविनोद" में लिखा है:—

मद्यातिपानमति मैथुनगर्भपाताज्जीर्णाध्व
शोक गरयोग दिवाति निद्रा ।
स्त्रीणाम सृग्धरगदो भवतीति
तस्य प्रत्युद्गतौ भ्रमरुजौदवथुप्रलापौ ॥
दौर्बल्य मोहमद पाण्डुगदाश्च तन्द्रा तृष्णा
तथा निलरुजो बहुधा भवन्ति ।
तं वातपित्त कफजं त्रिविधं चतुर्थं दोषोद्भव
प्रदररोगमिदं वदन्ति ॥

बहुत ही शराब पीने, अत्यन्त मैथुन करने, गर्भपात होने या गर्भ गिरने, अजीर्ण होने, राह चलने, शोक या रञ्ज करने, कृत्रिम

विषका योग होने और दिनमें बहुत सोने वगैरः कारणोंसे स्त्रियोंको "असृग्दर" या "प्रदर" रोग पैदा होता है।

इस प्रदर रोगके अत्यन्त बढ़नेपर भ्रम, व्यथा, दाह—जलन, सन्ताप, बकवाद, कमज़ोरी, मोह, मद, पाण्डुरोग, तन्द्रा, तृष्णा और बहुतसे "वात रोग" हो जाते हैं। यह प्रदर रोग वात, पित्त, कफ और सन्निपात—इन भेदोंसे चार तरहका होता है।

"भावप्रकाश" में प्रदर रोग होनेके नीचे लिखे कारण लिखे हैं:—

(१) विरुद्ध भोजन करना। (२) मद्य पीना।
(३) भोजनपर भोजन करना। (४) अजीर्ण होना।
(५) गर्भ गिरना। (६) अति मैथुन करना।
(७) अधिक राह चलना। (८) बहुत शोक करना।
(९) अत्यन्त कर्षण करना। (१०) बहुत बोझ उठाना।
(११) चोट लगना। (१२) दिनमें सोना।
(१३) हाथी या घोड़ेपर चढ़कर उन्हें खूब भगाना।

प्रदर रोगकी क़िस्में।

प्रदर रोग चार तरहका होता है.—

(१) वातज प्रदर। (२) पित्तज प्रदर।
(३) कफज प्रदर। (४) सन्निपातज प्रदर।

वातज प्रदरके लक्षण।

अगर वातज प्रदर रोग होता है, तो रूखा, लाल, झागदार, व्यथा-सहित, मांसके धोवन-जैसा और थोड़ा-थोड़ा खून बहा करता है।

नोट—"चरक" में लिखा है—वातज प्रदरका खून झागदार, रूखा, साँवला अथवा अकेले लाल रंगका होता है। वह देखनेमें ढाकके काढ़ेके-से रङ्ग का होता है। उसके साथ शूल होता है और नहीं भी होता। लेकिन वायु—कमर, वंक्षण,

हृदय, पसली, पीठ और चूतड़ोंमें बड़े जोरोंसे वेदना या दर्द पैदा करता है । वात-जनित प्रदरमें वायुका कोप प्रबलतासे होता है और वेदना या दर्द करना वायुका काम है, इसीसे बादीके प्रदरमें कमर और पीठ वगैरः में बड़ा दर्द होता है ।

पित्तज प्रदरके लक्षण ।

अगर पित्तके कारणसे प्रदर रोग होता है, तो पीला, नीला, काला, लाल और गरम खून बारम्बार बहता है । इसमें पित्तकी वजहसे दाह—जलन आदि पीड़ाएँ होती है ।

नोट—खट्टे, नमकीन, खारी और गरम पदार्थों के अत्यन्त सेवन करनेसे पित्त कुपित होता और पित्तजनित या पित्तका प्रदर पैदा करता है । पित्त-प्रदरमें खून कुछ-कुछ नीला, पीला, काला और अत्यन्त गरम होता है; बारम्बार पीड़ा होती और खून गिरता है । इसके साथ जलन, प्यास, मोह, भ्रम, और ज्वर,—ये उपद्रव भी होते हैं ।

कफज प्रदरके लक्षण ।

अगर कफसे प्रदर होता है, तो कच्चे रस वाला, सेमल वगैरःके गोंद-जैसा चिकना, किसी क़दर पाण्डुवर्ण और तुच्छ धान्यके धोवन के समान खून बहता है ।

नोट—भारी प्रभृति पदार्थोंके बहुत ही जियादा सेवन करनेसे कफ कुपित होता और कफज प्रदर रोग पैदा करता है । इसमें खून पिच्छल या लिबलिबा, पाण्डुरङ्गका, भारी, चिकना और शीतल होता है तथा श्लेष्म मिले हुए खूनका स्राव होता है । पीड़ा कम होती है, पर वमन, अरुचि, हुल्लास, श्वास और खाँसी—ये कफके उपद्रव नजर आते हैं ।

त्रिदोषज प्रदरके लक्षण ।

अगर त्रिदोष—सन्निपात या वात-पित्त-कफ—तीनों दोषोंके कोपसे प्रदर रोग होता है, तो शहद, घी और हरतालके रंग वाला,

मज्जा और शङ्खकी-सी गन्धवाला खून बहता है। विद्वान् लोग इस चौथे प्रदर रोगको असाध्य कहते हैं, अतः चतुर वैद्यको इस प्रदरका इलाज न करना चाहिये।

नोट—"चरक"में लिखा है—रजस्रावहोने, स्त्रीके अत्यन्त कष्टपाने और खून नाश होने से; यानी सब हेतुओंके मिल जानेसे वात, पित्त और कफ तीनो दोष कुपित हो जाते हैं। इन तीनोंमें "वायु" सबसे जियादा कुपित होकर असाध्य कफ का त्याग करता है; तब पित्तकी तेजीके मारे, प्रदरका खून बदबूदार, लिबलिबा, पीला और जलासा हो जाता है। बलवान वायु, शरीरकी सारी वसा और मेदको ग्रहण करके, योनिकी राहसे, घी, मज्जा और वसाके-से रंगवाला पदार्थ हर समय निकाला करता है। इसी वजहसे उक्त स्त्रीको प्यास, दाह और ज्वर प्रभृति उपद्रव होते हैं। ऐसी क्षीणरक्त—कमज़ोर स्त्रीको असाध्य समझना चाहिये।

खुलासा पहचान।

वातज प्रदरमें—रूखा, झागदार और थोड़ा खून बहता है।
पित्तज प्रदरमें—पीला, नीला, लाल और गरम खून जाता है।
कफज प्रदरमें—सफेद, लाल और लिबलिबा स्राव होता है।
त्रिदोषज प्रदरमें—बदबूदार, गरम, शहदके समान खून बहता है।

नोट—ध्यान रखना चाहिये, सोम रोग मूत्र-मार्गमें और प्रदर रोग गर्भाशयमें होता है। कहा है:—

सोमरूङ् मूत्रमार्गे स्यात्प्रदरोगर्भवर्त्मनि ॥

अत्यन्त रुधिर बहनेके उपद्रव।

अगर प्रदर रोगवाली स्त्रीके रोगका इलाज जल्दी ही नहीं किया जाता, उसके शरीरसे बहुत ही ज़ियादा खून निकल जाता है, तो कमज़ोरी और बेहोशी प्रभृति अनेक रोग उसे आ घेरते हैं। "भाव-प्रकाश" और "बङ्गसेन" प्रभृति ग्रन्थोंमें लिखा है:—

तस्यातिवृत्तौ दौर्बल्यं श्रमोमूर्च्छा मदस्तृषा ।
दाहः प्रलापः पाण्डुत्वं तन्द्रा रोगश्च वातजाः ॥

बहुत खून चूने या गिरने से कमज़ोरी, थकान, बेहोशी, नशा-सा बना रहना, जलन होना, बकवाद करना, शरीरका पीलापन, ऊँघ-सी आना और आँखें मिचना तथा बादीके रोग—आक्षेपक आदि उत्पन्न हो जाते हैं।

प्रदर रोग भी प्राणनाशक है ।

आजकल स्त्री तो क्या पुरुष भी आयुर्वेद नहीं पढ़ते। इसीसे रोगोंकी पहचान और उनका नतीजा नहीं जानते। कोई विरली ही स्त्री होगी, जिसे कोई न कोई योनि-रोग या प्रदर आदि रोग न हो। स्त्रियाँ इन रोगोंको मामूली समझती हैं, इसलिये लाजके मारे अपने घरवालोंसे भी नहीं कहतीं। अतः रोग धीरे-धीरे बढ़ते रहते हैं। रोगकी हालतमें ही व्रत-उपवास, अत्यन्त मैथुन और अपने बलसे अधिक मिहनत वग़ैरः किया करती हैं, जिससे रोग दिन-दूना और रात-चौगुना बढ़ता रहता है। जब हर समय पड़े रहनेको दिल चाहता है, काम धन्धेको तबियत नहीं चाहती, सिरमें चक्कर आते हैं, प्यास बढ़ जाती है, शरीर पीला या सफेद-चिट्टा होने लगता है, तब घरवालोंकी आँखें खुलती हैं। उस समय सद्वैद्य भी इस दुष्ट रोगको आराम करनेमें नाकामयाब होते हैं। बहुत क्या—शेषमें मूर्खा अबला इस कठिनसे मिलने योग्य मनुष्य-देहको त्यागकर, अपने प्यारोंको रोता-विलपता छोड़कर, यमराजके घर चली जाती है। इसलिये, समझदारोंको अव्वल तो इस रोगके होनेके कारणों से स्त्रियोंको वाकिफ़ कर देना चाहिये। फिर भी; अगर यह रोग किसीको हो ही जाय, तो फौरनसे भी पहले इसका इलाज करना या करवाना चाहिये। देखिये आयुर्वेदमें लिखा है:—

असृग्दरो प्राणहरः प्रदिष्टः स्त्रीणामतस्तं विनिवारयेच्च।

सब तरहके प्रदर रोग प्राण नाश करते हैं, इसलिये उनको शीघ्र ही दूर करना चाहिये।

असाध्य प्रदरके लक्षण।

अगर हर समय खून बहता हो, प्यास, दाह और बुख़ार हो, शरीर बहुत कमज़ोर हो गया हो, बहुतसा खून नष्ट हो गया हो, शरीरका रंग पिलाई लिये सफेद हो गया हो तो चतुर वैद्यको ऐसे लक्षणों वाली रोगिणीका इलाज हाथमें न लेना चाहिये। क्योंकि इस दशामें पहुँच कर रोगिणीका आराम होना असम्भव है। ये सब असाध्य रोगके लक्षण हैं।

नोट—सुचतुरवैद्य असाध्य रोगीका इलाज करके वृथा अपनी बदनामी नहीं कराते। हाँ, जिन्हें साध्यासाध्यकी पहचान नहीं, वेही ऐसे असाध्य रोगियोंकी चिकित्सा करने लगते हैं। यही बात हम त्रिदोषज प्रदरके लक्षणोंके नीचे, जो नोट लिखा है उसमें, चरकसे लिख आये हैं। वैद्यको सभी बातें याद रखनी चाहियें। इलाज हाथमें लेकर पुस्तक देखना भारी नादानी है।

इलाज बन्द करनेको शुद्ध आर्त्तवके लक्षण।

"चरक" में लिखा है—

मासान्निष्पिच्छदाहार्ति पंच रात्रानुबन्धि च।
नैवाति बहुलात्यल्पमार्त्तवं शुद्धमादिशेत्॥

यदि स्त्री महीने-की-महीने ऋतुमती हो और उसकी योनिसे पाँच रातसे जियादा खून न गिरे और उस ऋतुका खून दाह, पीड़ा और चिकनाईसे रहित तथा बहुत जियादा या बहुत कम न हो, तो कहते हैं कि शुद्ध ऋतु हुआ।

और भी लिखा है,—ऋतुका खून चिरमिटीके रंगका, लाल कमलके रङ्गका अथवा महावर या बीरबहुट्टीके रंगका हो, तो समझना चाहिये कि विशुद्ध ऋतु हुई।

"वैद्य-विनोद" में लिखा है:—

शशास्त्रवर्णं प्रतिभासमानं लाक्षारसेनापि समंतथा स्यात् ।
तदार्त्तवं शुद्धमतो वदन्ति नरंजयेद्वस्त्रमिदं यदेतत् ॥

अगर स्त्रीके मासिक धर्मका खून या आर्त्तव ख़रगोशके-से खून के जैसा अथवा लाखके रसके समान हो तथा उस खूनमें कपड़ा तर करके पानीसे धोया जाय और धोनेपर खूनका दाग़ न रहे, तो उस आर्त्तव—खूनको शुद्ध समझना चाहिये।

नोट—जब वैद्य समझे कि रोगिणीका प्रदर रोग आराम हो गया, तब उसे सन्देह निवारणार्थ स्त्रीका आर्त्तव—खून इस तरह देखना चाहिये। अगर स्त्रीका ठीक महीनेपर रजोदर्शन हो, खून गिरते समय जलन और पीडा न हो, खूनमें चिकनापन न हो, उसका रङ्ग चिरमिटी, महावर, लाल कमल, या बीरबहुट्टीका सा हो अथवा खरगोशके खून या लाखके रस जैसा हो और उसमें भीगा कपड़ा बेदाग़ साफ हो जाय एवं वह खून पाँच दिन तक बह कर बन्द हो जाय, तो फिर उसको दवा देना वृथा है। वह आराम हो गयी। पर खूनके पाँच दिन तक बहने और बन्द हो जानेमें एक बातका और ध्यान रखना चाहिये; वह यह कि खून चाहे तीन दिन तक बहे, चाहे पाँच दिन अथवा ऋतुके सोलहों दिन तक, पर खूनमें ऊपर लिखे हुए शुद्धिके लक्षण होने चाहिये। यानी उसमें चिकनापन, जलन और पीडा आदि न हो, उसका रङ्ग खरगोशके खून या चिरमिटी प्रभृति का-सा हो; धोनेसे खूनका दाग न रहे। यह बात हमने इसलिये लिखी है कि, अगर स्त्रीका खून जोरसे बहता है, तो तीन दिन बाद ही बन्द हो जाता है। अगर मध्यम रूपसे बहता है, तो पाँच दिनमें बन्द हो जाता है; पर किसी-किसी के पहलेसे ही थोड़ा-थोडा खून गिरता है और वह ऋतुके पहले सोलहों दिन गिरता रहता है। सोलह दिन बाद, जब गर्भाशय या धरणका मुँह बन्द हो जाता है, तब खून बन्द हो जाता है। इसमे कोई दोष नहीं; इसे रोग न समझना चाहिये, बशर्ते कि शुद्ध आर्त्तवके और लक्षण हों। हाँ, अगर सोलह दिनके बाद भी खून बहता रहे, तो रोग होनेमें सन्देह ही क्या ? उसे दवा देकर बन्द करना चाहिये। वैसे खून गिरनेके रोगको औरतें "पैर पडना" कहती हैं। इस कामके लिये आगे पृष्ठ २९६ में लिखा हुआ "चन्दनादि चूर्ण" बहुत ही अच्छा है।

प्रदर रोगकी चिकित्सा-विधि।

वैद्यको प्रदर रोगके लक्षण, कारण अच्छी तरह समझ कर चिकित्सा करनी चाहिये। सब तरहके प्रदरोंमें पहले "वमन" कराने की प्रायः सभी शास्त्रकारोंने राय दी है; पर वमन कराना ज़रा कठिन काम है। जिनको पूरा अनुभव हो, वे ही इस कामको करें। "बङ्गसेन"में लिखा है:—सब तरहके प्रदरोंमें पहले वमन करानी चाहिये और ईखके रस तथा दाखके जलसे तर्पण कराना चाहिये एवं पीपल, शहद, मांड, नागरमोथेका कल्क, जौ और गुड़का शर्बत देना चाहिये। मतलब यह है, इनमेंसे किसीसे तर्पण कराकर वमन करानी चाहिये। "वैद्य विनोद"में लिखा है—

सर्वेषुपूर्वं वमनं प्रादिष्टं रसेक्षु मुद्गोदक तर्पणैश्च।

सब तरहके प्रदरोंमें, ईखके रस और मुद्गोदक—मूंगके यूषसे तर्पण कराकर वमन करानी चाहिये। यद्यपि यह ढँग बहुत ही अच्छा है, पर साधारण वैद्योंको इस खटखटमें न पड़ना ही अच्छा है। वमन करानेके सम्बन्धमें, हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ १३६-१४० में जो लिखा है, उसे पहले देख लेना ज़रूरी है।

सूचना—योनिरोग, रक्तपित्त, रक्तातिसार और रक्तार्शका इलाज जिस तरह किया जाता है; उसी तरह चारों प्रकारके प्रदरोंका भी इलाज किया जाता है। "चरक" में लिखा है:—

योनीनां वातलाद्यानां यद्युक्तामिह भेषजम्।
चतुर्णां प्रदराणाञ्च तत्सर्वं कारयेद्भिषक्॥
रक्तातिसारणांचैव तथा लोहित पित्तिनाम्।
रक्तार्शसाञ्च यत्प्रोक्तं भेषजं तच्चकारयेत्॥

वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज "योनि-रोगों"की जो चिकित्सा कही गई है, वैद्यको चार प्रकारके प्रदरोंमें भी वही

चिकित्सा करनी चाहिये एवं रक्तातिसार, रक्तपित्त और खूनी बवासीरकी जो चिकित्सा कही गई है, वही वैद्यको प्रदर रोगमें भी करनी उचित है । चरकने तो ये पंक्तियाँ लिखकर ही प्रदर चिकित्सा का ख़ात्मा कर दिया है । चक्रदत्तने भी लिखा है:—

रक्तपित्त विधानेन प्रदराश्चाप्युपाचरेत् ॥

रक्तपित्तमें कहे हुए विधान भी प्रदर रोगमें करने उचित हैं । "वङ्गसेन"में भी लिखा है—

तरुण्याहित सेविण्यास्तदल्पोऽपद्रवाभिषक् ।
रक्तपित्त विधानेन यथावत्समुपाचरेत् ॥

यदि अहित पदार्थ सेवन करने वाली स्त्रियोंके अल्प उपद्रव हों, तो रक्तपित्तके विधान या क़ायदेसे चिकित्सा करनी चाहिये ।

प्रदर-नाशक नुसखे ।

(ग़रीबी नुसख़े)

(१) दो तोले अशोककी छाल, गायके दूधमें पका कर और मिश्री मिलाकर, सवेरे-शाम. दोनों समय लगातार कुछ दिन, पीने से घोर रक्तप्रदर निश्चय ही आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—यह नुसख़ा प्रायः सभी ग्रन्थोंमें लिखा हुआ है । हमने इसकी अनेक बार परीक्षा भी की है । वास्तवमें, यह रक्तप्रदर पर अक्सीरका काम करता है । अगर अशोककी छालका काढ़ा पका कर, उसके साथ दूध पकाया जाय और शीतल होनेपर सवेरे ही पिया जाय, तब तो कहना ही क्या ? "भावप्रकाश" में लिखा है—अशोककी छाल चार तोले लेकर, एक हाँडीमें रख कर, ऊपरसे १२८ तोले पानी डाल कर मन्दाग्निसे पकाओ । जब ३२ तोले पानी रह जाय, उसमें ३२ तोले दूध भी मिला दो और फिर पकाओ । जब पकते-पकते केवल दूध रह जाय, नीचे उतार लो । जब दूध खूब शीतल हो जाय, उसमेंसे १६ तोले दूध निकाल कर सवेरे ही पीओ । अगर जठराग्नि कमज़ोर हो तो दूध कम पीओ ।

इस तरह, इस दूधके पीनेसे घोर-से-घोर प्रदर भी शान्त हो जाता है। यह तरकीब सबसे अच्छी है।

(२) पके हुए गूलरके फल लाकर सुखा लो। सूखनेपर पीस-कूटकर छान लो और फिर उस चूर्णमें बराबरकी मिश्री पीसकर मिला दो और किसी बर्त्तनमें मुँह बाँधकर रख दो। यह चूर्ण, सवेरे-शाम, दोनों समय, दूध या पानीके साथ, फाँकनेसे रक्तप्रदर निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) पके हुए केलेकी फली, दूधमें कई बार सानकर, लगातार कुछ दिन खानेसे, योनिसे खून जाना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(४) पका हुआ केला और आमलोंका स्वरस लेकर, इन दोनों से दूनी शक्कर भी मिला लो। इस नुसख़ेके कुछ दिन बराबर सेवन करनेसे प्रदर रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) सवेरे-शाम, एक-एक पका हुआ केला छै छै माशे घीके साथ खानेसे, आठ दिनमें ही प्रदर रोगमें लाभ दीखता है। परीक्षित है।

नोट—अगर किसीको सर्दी मालूम हो, तो इसमें चार बूँद 'शहद' भी मिला लेना चाहिये। इस नुसखेसे प्रदर और धातुरोग दोनो आराम हो जाते हैं।

(६) केलेके पत्ते खूब महीन पीसकर, दूधमें खीर बनाकर, दो-तीन दिन, खानेसे प्रदर रोगमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(७) सफेद चन्दन १ तोला, ख़स १ तोला और कमलगट्टेकी गिरी १ तोला—तीनों दवाओंको, आध सेर चाँवलके धोवनमें, खूब महीन घोट-छानकर, दो तोले पिसी हुई मिश्री मिला दो। इसे दिन में कई बार पीनेसे योनि-द्वारा खून जाना बन्द हो जाता है। इस पर पथ्य केवल दूध-भात और मिश्री है। परीक्षित है।

(८) सवेरे-शाम, पाँच-पाँच नग ताज़ा गुलाबके फूल तीन-तीन माशे मिश्रीके साथ खाओ। ऊपरसे गायका दूध पीओ। चौदह

दिन इस नुसख़ेके सेवन करनेसे अवश्य लाभ होता है। इससे प्रदर रोग, धातु-विकार, मूत्राशयका दाह, पेशाबकी सुर्ख़ी, खूनी बवासीर, पित्त-विकार और दस्तकी क़ब्ज़ियत ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(९) शतावरका रस "शहद" मिलाकर पीनेसे <u>पित्तज प्रदर</u> आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) शारिवाकी हरी जड़ें लाकर पानीसे धोकर साफ कर लो। पीछे उन्हें केलेके ताजा हरे पत्तोंमें लपेटकर, कण्डोंकी आगमें भून लो। फिर जड़ोंमें जो रेशे-से होते हैं, उन्हें निकाल डालो। इसके बाद साफ की हुई शारिवाकी जड़, सफेद ज़ीरा, मिश्री और भूनी हुई सफेद प्याज़—सबको एक जगह पीस लो। फिर सब दवाओंके बराबर "घी" मिला दो। इसमेंसे दिनमें दो बार, अपनी शक्ति अनुसार खाओ। इस नुलखेसे सात दिनमें गर्भवतीका प्रदर रोग तथा शरीरमें भिनी हुई गर्मी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—शारिवाको बँगलामें अनन्तमूल, कल्लघरिट; गुजरातीमें धोली उपल-सरी, काली उपलसरी और अँग्रेज़ीमे इण्डियन सारसा परिला कहते हैं। हिन्दीमें इसे गौरीसर भी कहते हैं।

(११) कड़वे नीमकी छालके रसमें सफेद ज़ीरा डालकर, सात दिन, पीनेसे प्रदर रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) बाँझ-ककोड़ेकी गाँठ १ तोले, शहदमें मिलाकर खानेसे श्वेत प्रदर और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—ककोड़ेकी बेल बरसातमें जंगलमें होती है। इसकी बेल झाड़ या बाढ़के सहारे लगती है। जमीनमें इसकी गाँठ होती है। ककोड़ेमें फूल और फल लगते हैं, पर बाँझ ककोड़ेमें केवल फूल आते हैं, फल नहीं लगते। इसकी बेल पहाड़ी जमीनमें होती है। इसकी गाँठमें शहद मिलाकर सिरपर लेप करने से वातज दर्द-सिर अवश्य आराम हो जाता है।

(१३) कैथके पत्ते और बाँसके पत्ते बराबर-बराबर लेकर

सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। इस लुगदी को शहद मिलाकर खानेसे तीव्र प्रदर रोग भी नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१४) ककड़ीके बीजोंकी मींगी एक तोले और सफेद कमल की पंखड़ी एक तोले लेकर पीस लो। फिर ज़ीरा और मिश्री मिला कर सात दिन पीओ। इस नुसख़ेसे श्वेत प्रदर अवश्य आराम हो जाता है।

(१५) काकजंघाकी जड़के रसमें—लोधका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे श्वेत प्रदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—काकजंघाके पत्ते ओंगा या अपामार्ग-जैसे होते हैं। वृक्ष भी उतना ही ऊँचा कमर तक होता है। नींद लानेको काकजंघा सिरमें रखते हैं। काकजंघा का रस कानमें डालनेसे कर्णनाद और बहरापन आराम होते और कानके कीड़े मर जाते हैं। केवल काकजंघाकी जड़को चाँवलोंके धोवनके साथ पीनेसे पाण्डु-प्रदर शान्त हो जाता है।

(१६) छुहारोंकी गुठलियाँ निकालकर कूट-पीस लो। फिर उस चूर्णको "घी" में तल लो। पीछे "गोपीचन्दन" पीसकर मिला दो। इसके खानेसे प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) खिरनीके पत्ते और कैथके पत्ते पीस कर "घी" में तल लो और खाओ। इस योगसे प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१८) कथीरिया गोंद रातको पानीमें भिगो दो। सवेरे ही उसमें "मिश्री" मिलाकर पीलो। इस नुसख़ेसे प्रदर राग, प्रमेह और गरमी—ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—काँडोलके पेड़में दूध-सा या गोंद-सा होता है। उसीको "कथीरिया गोंद" कहते हैं। काँडोलका वृक्ष सफेद रङ्गका होता है। इसके पत्ते बड़े और फूल लाल होते हैं। वसन्तमें आम-वृक्षकी तरह मौर आकर फल लगते हैं। फल बादाम-जैसे होते हैं। पकनेपर मीठे लगते हैं। इसकी जड़ लाल और शीतल होती है।

(१९) कपासके पत्तोंका रस, चाँवलोंके धोवनके साथ, पीनेसे प्रदर रोग आराम हो जाता है।

नोट—कपासकी जड़ चाँवलोंके धोवनमें घिसकर पीनेसे भी श्वेत प्रदर नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(२०) काकमाचीकी जड़ चाँवलोंके धोवनमें घिस कर पीनेसे प्रदर रोग आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(२१) भिन्डीकी जड़ सूखी हुई दस तोले और पिंडारू सूखा हुआ दस तोले लाकर, पीस-कूट कर छान लो । इसमें से छै-छै माशे चूर्ण, पाव-भर गायके दूधमें एक तोले मिश्री मिलाकर मुँहमें उतारो । इस चूर्णको सवेरे-शाम सेवन करो । अगर कभी दूध न मिले, तो हर मात्रा में ज़रासी मिश्री मिलाकर, पानीसे ही दवा उतार जाओ । प्रदर रोग पर परीक्षित है ।

नोट—कितनी ही श्वेतप्रदर वाली जो किसी भी दवासे आराम न हुईं, इससे १५।२० दिनोंमें ही आराम हो गईं । कितनी ही बार परीक्षा की है ।

(२२) सफेद चन्दन, जटामाँसी, लोध, ख़स, कमलकी केशर, नाग-केशर, बेलका गूदा, नागरमोथा, सोंठ, हाऊबेर, पाढ़ी, कुरैया की छाल, इन्द्रजौ, अतीस, सूखे आमले, रसौत, आमकी गुठलीकी गिरी, जामुनकी गुठलीकी गिरी, मोचरस, कमलगट्टेकी गिरी, मँजीठ, छोटी इलायचीके दाने, अनारके बीज और कूट—इन २४ दवाओंको अढ़ाई-अढ़ाई तोले लेकर, कूट-पीस कर कपड़ेमें छान लो । समय—सवेरे-शाम पीओ । मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक । अनुपान—चाँवलोंके धोवनमें एक-एक मात्रा घोट-छान कर और एक माशे "शहद" मिलाकर रोज़ पीओ । इस नुसख़ेके १५ या २१ दिन पीनेसे प्रदर रोग अवश्य आराम हो जाता है । १०० में ८० रोगी आराम हुए हैं । परीक्षित है ।

(२३) मुद्गपर्णीके रसके साथ तिलीका तेल पकाओ । फिर उस तेलमें कपड़ेका टुकड़ा भिगो कर योनिमें रखो और इसी तेल की बदनमें मालिश करो । इस नुसख़ेसे खूनका बहना बन्द होता और बड़ा आराम मिलता है । परीक्षित है ।

नोट—संस्कृतमें मुद्गपर्णी, हिन्दीमें मुगवन, बँगलामें वनमाष या मुगानि, गुजरातीमें जंगली मग और मरहटीमें मुगवेल या रानमूग कहते हैं। इसकी बेल मूँगके समान होती है, पत्ते भी मूँगके जैसे हरे-हरे होते हैं और फूल पीले आते हैं। फलियाँ भी मूँगके जैसी ही होती हैं। यह वनके मूँग हैं। मुगवनका पंचाङ्ग दवाके काम आता है। मात्रा २ माशेकी है।

(२४) नीमका तेल गायके दूधमें मिलाकर पीनेसे प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२५) मुलैठी, पद्माख, ककड़ीके बीज, शतावर, विदारीकन्द और ईखकी जड़—इन सब दवाओंको महीन पीसकर, १०० बार धुले हुए घीमें मिला दो। इस दवाके योनि, मस्तक और शरीर पर लेप करने से प्रदर रोग आराम हो जाता है।

नोट—किसी और खानेकी दवाके साथ इस दवाका भी लेप कराकर आश्चर्य फल देखा है। अकेली इस दवासे काम नहीं लिया।

(२६) मँजीठ, धायके फूल, लोध और नीलकमल—इनको पीस-छानकर "दूध"के साथ पीनेसे प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२७) दो तोले अशोककी छालको कुचलकर, एक मिट्टीकी हाँडीमें, पाव भर जलके साथ जोश दो। जब चौथाई जल रह जाय, उतारकर, आध पाव दूधमें मिलाकर फिर औटाओ। जब काढ़ा-काढ़ा जल जाय, उतारकर रख दो। जब यह आपही शीतल हो जाय, पीलो। इसको सवेरेके समय पीनेसे बड़ा लाभ होता है। यह योग घोर प्रदरको आराम करता है। परीक्षित है। हमें यह नुसख़ा बहुत पसन्द है।

(२८) रोहितक या रोहिड़ेकी जड़को सिलपर पीसकर खानेसे हल्के लाल रंगका प्रदर आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—इस नुसखेको वृन्द, चक्रदत्त और वैद्यविनोदकारने पाण्डु प्रदर (कफजनित श्वेतप्रदर) पर लिखा है।

(२९) दारुहल्दीको सिलपर पीसकर लुगदी बनालो । इस लुगदी या कल्कमें शहद मिलाकर पीने से श्वेत प्रदर आराम हो जाता है ।

(३०) नागकेशरको पीसकर और माठा या छाछमें मिलाकर ३ दिन पीनेसे श्वेत प्रदर आराम हो जाता है । केवल माठा पीनेसे ही श्वेत प्रदर जाता रहता है । परीक्षित है ।

(३१) चाँवलोंकी जड़को चाँवलोंके धोवनमें औटाकर, फिर उसमें "रसौत और शहद" मिलाकर पीनेसे सब तरहके प्रदर रोग नाश हो जाते हैं, इसमें शक नहीं । परीक्षित है ।

(३२) कुशाकी जड़ लाकर, चाँवलोंके धोवनमें पीसकर, तीन दिन तक, पीनेसे लाल प्रदर से निश्चय ही छुटकारा हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—यह नुसखा वृन्द, चक्रदत्त और वैद्यविनोद सभी ग्रन्थोंमें लिखा है ।

(३३) रसौत और लाखको बकरीके दूधमें मिलाकर पीने से रक्तप्रदर अवश्य चला जाता है । परीक्षित है ।

(३४) चूहेकी मैंगनी दहीमें मिलाकर पीनेसे रक्त प्रदर अवश्य नाश हो जाता है । परीक्षित है । कहा है:—

दध्ना मूषकविष्ठा च लोहिते प्रदरे पिवेत् ।

वंगसेनमें भी लिखा है:—

आखोः पुरीष पयसा निषेव्यं वह्नेर्वलादेकमहद्वयंहंवा ।
स्त्रियो महाशोणितवेगनद्याः क्षणेन पारं परमाप्नुवन्ति ॥

चूहेकी विष्ठाको, दूधके साथ, अग्निबलानुसार, एक या दो दिन तक, सेवन करने से नदीके वेगके समान बहता हुआ खून भी क्षण-भरमें बन्द हो जाता है ।

और भी—चूहेकी मैंगनीमें बराबरकी शक्कर मिलाकर रख लो । इसमें से ६ माशे चूर्ण, गायके धारोष्ण दूधके साथ, पीनेसे सब तरहके प्रदर रोग फौरन आराम हो जाते हैं ।

(३५) लाल पूगीफल—सुपारी, माजूफल, रसौत, धायके फूल, मोचरस, चौलाईकी जड़ और गेरू,—इनको बराबर-बराबर लाकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशेसे १ तोले तक चूर्ण, हर रोज़, चाँवलों के धोवनके साथ, पीनेसे प्रदर रोग चला जाता है। इस नुसख़ेके उत्तम होनेमें सन्देह नहीं।

(३६) चौलाईकी जड़को चाँवलोंके पानीके साथ पीसकर, उसमें "रसौत और शहद" मिलाकर पीनेसे सारे प्रदर रोग अवश्य नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—रसौत और चौलाईकी जड़को, चाँवलोके पानीमें पीस कर और शहद मिला कर पीनेसे समस्त प्रकारके प्रदर नाश हो जाते हैं। चक्रदत्त।

(३७) भुँइ-आमलोंकी जड़, चाँवलोंके धोवनमें पीस-छान कर, पीनेसे दो तीन दिनमें ही प्रदर रोग चला जाता है।

नोट—भुँइ-आमलोके बीज ऊपरकी तरह चाँवलोंके धोवनमें पीस-छानकर पीने से प्रदर रोग, लिंगसे खून जाना और उल्बण रक्तातिसार ये आराम हो जाते हैं।

(३८) काला नोन, सफेद जीरा, मुलहटी और नील-कमल, इन को पीस-छान कर दहीमें मिलाओ; और ज़रासा "शहद" मिलाकर पी जाओ। इस योगसे वात या बादीसे हुआ प्रदर रोग आराम हो जाता है।

नोट—नील कमल न मिले तो 'नीलोफर' ले सकते हो। चारो चीजें डेढ़-डेढ़ माशे, दही चार तोले और शहद आठ माशे लेना चाहिये।

(३९) हिरनके खूनमें शहद और चीनी मिला कर पीने से पित्तज प्रदर रोग आराम हो जाता है।

(४०) बाँसे या अडूसेका स्वरस पीनेसे पित्तज प्रदर रोग आराम हो जाता है।

(४१) गिलोय या गुर्चका स्वरस भी पित्तज प्रदर रोग को नष्ट करता है। यह नुसख़ा पित्तज प्रदर पर अच्छा है।

(४२) आमलोंके कल्कको पानीमें मिला कर, ऊपरसे शहद और मिश्री डाल कर पीनेसे प्रदर रोग जाता रहता है।

(४३) धायके फूल, बहेड़े और आमलेके स्वरसमें "शहद" डालकर पीनेसे प्रदर रोग नाश हो जाता है।

(४४) मकोयकी जड़ चाँवलोंके धोवनके साथ, पीनेसे पाण्डु-प्रदर आराम हो जाता है।

(४५) दारूहल्दी, रसौत, अडूसा, नागरमोथा, चिरायता, बेलगिरी, शुद्ध भिलावे और कमोदिनी—इनको बराबर-बराबर कुल दो या अढ़ाई तोले देकर काढ़ा बना लो। शीतल होनेपर छानकर "शहद" मिला दो। इस काढ़ेके पीनेसे शूल-समेत दारुण प्रदर रोग आराम हो जाता है। काले, पीले, नीले, लाल या अति लाल एवं सफेद सब तरहके प्रदर रोग या योनिसे खून गिरनेके रोग इस नुसख़ेसे आराम हो जाते हैं। योनिसे बहता हुआ खून फौरन बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—भिलावोंको शोध कर लेना ज़रूरी है। हम काढ़ा बनाकर और ६ माशे मिश्री मिलाकर बहुत देते हैं। परीक्षित है।

(४६) भारंगी और सोंठके काढ़ेमें "शहद" मिला कर पीनेसे प्रदर रोग वालीका श्वास और प्रदर दोनों आराम हो जाते हैं। अच्छा नुसख़ा है।

(४७) दशमूलकी दशों दवाओंको, चाँवलोंके पानीमें पीस कर, पीनेसे प्रदर रोग नाश हो जाता है। ३ दिन पीनेसे चमत्कार दीखता है।

(४८) काली गूलर या कठूमरके फल लाकर रस निकाल लो। फिर उस रसमें "शहद" मिलाकर पीओ। इस पर खाँड और दूधके साथ भोजन करो। भगवान् चाहेंगे, तो इस नुसखेसे प्रदर रोग अवश्य नष्ट हो जायगा।

नोट—कठूमर, और कठगूलरि गूलरके भेद हैं। कठूमर शीतल, कसैला तथा दाह, रक्तातिसार, मुँह और नाकसे खून गिरनेको रोकता है। इसपर फूल नहीं आते,

शाखाओंमें फल लगते हैं। फल गोल-गोल अंजीरके जैसे होते हैं। उनमेंसे दूध निकलता है। कठूमर कफ-पित्त नाशक है।

सूचना—भावप्रकाशमें 'औदुम्बर' शब्द ही लिखा है। इससे यदि काली गूलर या कठूमर न मिले, तो गूलरके फल ही ले लेने चाहियें।

(४९) खिरैंटीकी जड़को दूधमें पीसकर और शहद मिलाकर पीनेसे प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

(५०) खिरैंटीकी जड़को चाँवलोंके धोवनमें पीसकर पीनेसे लाल रंगका प्रदर नाश हो जाता है।

नोट—संस्कृतमें 'बला' हिन्दीमें खिरैंटी, बरियारा और बीजवन्द तथा अँगरेजीमें Horn beam leaved कहते हैं।

(५१) बेरोंके चूर्णमें गुड़ मिलाकर, दूधके साथ, पीनेसे प्रदर रोग नाश हो जाता है।

(५२) मोचरसको कच्चे दूधमें पीसकर पीनेसे प्रदर रोग आराम हो जाता है।

(५३) कपासकी जड़को चाँवलोंके पानीके साथ पीसकर पीनेसे पाण्डु या कफजनित श्वेत प्रदर नाश हो जाता है।

(५४) शास्त्रोक्त औषधियोंसे तैयार हुई मदिरा या शराबके पीते रहनेसे रक्तप्रदर और शुक्र प्रदर यानी लाल और सफेद प्रदर दोनों नष्ट हो जाते हैं। इसमें शक नहीं।

चक्रदत्तमें लिखा है:—

शमयति मदिरापानं तदुभयमपि रक्तसंज्ञक शुक्लाख्यौ।

वृन्दमें ऊपरकी लाइनके अलावा इतना और लिखा है:—

विधिविहितं कृतलज्जावरयुवतीनां न सन्देहः॥

(५५) मुलेठी १ तोले और मिश्री १ तोले—दोनोंको चाँवलोंके धोवनमें पीसकर पीनेसे प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—बंगसेनमें मिश्री ४ तोले और मुलेठी १६ तोले दोनोंको एकत्र पीसकर चाँवलोंके जलके साथ पीनेसे रक्तप्रदर आराम होना लिखा है।

(५६) कंघीकी जड़को पीस-छानकर, मिश्री और शहदमें मिलाकर, खानेसे प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—कङ्घी, कंगही या ककहिया एक ही दवाके तीन नाम हैं। संस्कृतमें कङ्घीको 'अतिबला' कहते हैं। याद रखो, बला तीन होती हैं:—(१) बला, (२) महाबला, और (३) अतिबला। बलाको हिन्दीमें खिरेंटी, बरियारा और बीजबन्द कहते हैं। महाबला या सहदेवीको हिन्दीमें सहदेई कहते हैं और अतिबलाको कङ्घी, कंगही या ककहिया कहते हैं। बला या खिरेंटीकी जड़की छालका चूर्ण दूध और चीनीके साथ खानेसे मूत्रातिसार निश्चय ही चला जाता है। महाबला या सहदेई मूत्रकृच्छ्रको नाश करती और वायुको नीचे ले जाकर गुदाद्वारा निकाल देती है। कङ्घी या अतिबला दूध-मिश्रीके साथ पीनेसे प्रमेहको नष्ट कर देती है। ये तीनों प्रयोग अचूक हैं। एक चौथी नागबला और होती है। उसे हिन्दीमें गंगेरन या गुलसकरी कहते हैं। यह मूत्रकृच्छ्र, क्षत और क्षीणता रोगमें हितकारी है। चारों बलाओंके सम्बन्धमें कहा है:—

बलाचतुष्ठयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत् ।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्र पित्तास्र क्षत नाशनम् ॥

चारों तरहकी बला शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कान्तिदायक, चिकनी और काबिज या ग्राही हैं। ये वात, रक्त-पित्त, रुधिर-विकार और क्षयको नाश करती हैं।

ये चारों बला बड़े ही कामकी चीज हैं। इसीसे, हमने प्रसंग न होनेपर भी, इनके सम्बन्धमे इतना लिखा है।

(५७) पवित्र स्थानकी "व्याघ्रनखी" को उत्तर दिशासे लाकर, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमें, कमरमें बाँधनेसे प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—नख, व्याघ्र नख, व्याघ्रायुध ये नखके संस्कृत नाम हैं। व्याघ्रनख कड़वा, गरम, कसैला और कफवात नाशक है। यह कोढ़, खुजली और घावको दूर करता, एवं शरीरका रङ्ग सुधारता है। सुगन्धित चीज है। कहते हैं, यह नदीके जीवोंके नाखून हैं। धूप और तैल आदिमें खुशबूके लिये डाले जाते हैं। नख या नखी पाँच तरहकी होती हैं। कोई बेरके पत्तों जैसी, कोई कमलके पत्तों जैसी और कोई घोड़ेके खुरके आकारकी, कोई हाथीके कान जैसी और कोई सूअरके कान-जैसी होती है। इसकी मात्रा २ माशेकी है।

(५८) तूम्बीके फल पीस-छान कर चीनी मिला दो। फिर

शहदमें उसके लड्डू बना लो। इन लड्डुओंके खानेसे प्रदर रोग नाश हो जाता है।

(५९) दारुहल्दी, रसौत, चिरायता, अडूसा, नागरमोथा, बेलगिरी, शहद, लाल चन्दन और आकके फूल—इन सबका काढ़ा बनाकर और काढ़ेमें शहद मिलाकर पीने से वेदनायुक्त लाल और सफेद प्रदर नाश हो जाता है।

(६०) सूअरका मांस-रस, बकरेका मांस-रस और कुलथीका रस इनमें "दही" और अधिकतर "हल्दी" मिलाकर खाने से वातज प्रदर शान्त हो जाता है।

(६१) ईखका रस पीनेसे पित्तज प्रदर आराम हो जाता है।

(६२) चन्दन, ख़स, पतंग, मुलेठी, नीलकमल, खीरे और ककड़ीके बीज, धायके फूल, केलेकी फली, बेर, लाख, बड़के अंकुर, पद्माख, और कमल-केशर—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बनालो। इस लुगदी में "शहद" मिलाकर, चाँवलोंके जलके साथ पीनेसे, तीन दिन में, पित्तज प्रदर शान्त हो जाता है।

(६३) मिश्री, शहद, मुलेठी, सोंठ और दही—इन सबको एकत्र मिलाकर खानेसे पित्त-जनित प्रदर आराम हो जाता है।

(६४) काकोली, कमल, कमलकन्द, कमल-नाल और कदम्ब का चूर्ण—इनको दूध, मिश्री और शहदमें मिलाकर खानेसे पित्तज प्रदर आराम हो जाता है।

(६५) मुलेठी, त्रिफला, लोध, ऊँटकटारा, सोरठकी मिट्टी, शहद, मदिरा, नीम, और गिलोय—इन सबको मिलाकर सेवन करने से कफका प्रदर रोग आराम हो जाता है।

नोट—सोरठकी मिट्टीको संस्कृतमें "गोपीचन्दन" कहते हैं। सोरठकी मिट्टी न मिले तो फिटकरी ले सकते हो। दोनोंमें समान गुण हैं।

(६६) आमलेके बीजोंका कल्क बनाकर; यानी उन्हें जल के साथ सिलपर पीसकर, जलमें मिला दो। ऊपरसे शहद और मिश्री मिला लो। इस जलके पीनेसे ३ दिनमें श्वेत प्रदर नष्ट हो जाता है।

(६७) त्रिफला, देवदारु, बच, अडूसा, खीलें, दूब, पृश्निपर्णी और लजवन्ती—इनका काढ़ा बनाकर, शीतल करके, फिर शहद मिलाकर पीनेसे सब तरहके प्रदर रोग आराम हो जाते हैं।

(६८) खंज पक्षीकी आँखोंको सिलपर पीसकर, ललाटपर लेप करनेसे प्रदर रोग अवश्य चला जाता है। इस चीजमें यह अद्भुत सामर्थ्य है।

(६९) वथुएकी जड़को दूध या पानीमें पकाकर, ३ दिन तक, पीनेसे प्रदर रोग चला जाता है।

(७०) कमलकी जड़को दूध या पानीमें पकाकर ३ दिन पीनेसे प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

(७१) नीलकमल, भसींडा (कमल-कन्द), लाल शालि-चाँवल, अजवायन, गेरू और जवासा—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छानकर, शहदमें मिलाकर पीनेसे प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

(७२) खिरेंटीकी जड़को दूधमें पीसकर, शहदमें मिलाकर पीनेसे प्रदर रोग नाश हो जाता है।

(७३) कुशाकी जड़ और खिरेंटीकी जड़को चाँवलोंके जलमें पीसकर पीनेसे रक्तप्रदर नाश हो जाता है।

(७४) चूहेकी विष्ठाको जलाकर दूध या पानीके साथ पीनेसे रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

(७५) तृणपञ्चमूलके काढ़ेमें मिश्री मिलाकर पीनेसे प्रदर रोग नाश हो जाता है।

नोट—कुश, कांश, शर, दर्भ और गन्ना—इन पाँचोंको "पंचतृण" या पञ्च-मूल कहते हैं।

(७६) चूहेकी मैंगनी, फिटकरी और नागकेशर,—इन तीनों को बराबर-बराबर लाकर पीस-छान लो। इस चूर्णको शहदमें मिला कर खानेसे हर तरहका प्रदर रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है। मूल लेखकने भी लिखा है—

आखुपुरीष स्फटिका नागकेशराणां चूर्णम्।
मधुसहितं सर्वप्रदररोगे योगोऽयं बहुवारेणह्यनुभूतः॥

(७७) आँवले, हरड़ और रसौतका चूर्ण—योनिसे ज़ियादा खून गिरने और सब तरहके प्रदरोंको दूर करता है। परीक्षित है।

(७८) बंसलोचन, नागकेशर और सुगन्धबाला,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर एक-एक मात्रा चाँवलोंके धोवनमें पीस-छान कर पीनेसे प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(७९) अकेली नागकेशरको चाँवलोंके धोवनके साथ पीस कर और चीनी मिलाकर पीनेसे प्रदर रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

अमीरी नुसख़े।

कुटजाष्टकावलेह।

कौरैयाकी जड़की गीली छाल पाँच सेर लेकर, एक क़लईदार देगमें रख, ऊपरसे सोलह सेर पानी डाल, मन्दाग्निसे काढ़ा बनाओ। जब आठवाँ भाग—दो सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो और फिर दूसरे छोटे क़लईदार बासनमें डाल कर चूल्हेपर रख दो। जब गाढ़ा होनेपर आवे, उसमें पाढ़, सेमरका गोंद, धायके फूल,

रक्तातिसार, बालकोंके आगन्तु दोष, योनिदोष, रजोदोष, श्वेतप्रदर, नीलप्रदर, पीतप्रदर, श्यामप्रदर और लाल प्रदर, सब रोग नाश हो जाते हैं। महर्षि आत्रेयने इस चूर्णको कहा है।

मात्रा—डेढ़ माशेसे तीन माशे तक। एक मात्रा खाकर, ऊपरसे चाँवलोंके पानीमें शहद मिलाकर पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—पाषाण-भेदको हिन्दीमें पाखान-भेद, बँगलामें पाथरचूरी, गुजराती और मरहटीमें पाषाण-भेद कहते हैं। संस्कृतमें पाषाण-भेद, शिला-भेद, अश्म-भेदक आदि अनेक नाम हैं। फारसीमें गोशाद कहते है। यह योनिरोग, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, तिल्ली, पथरी, और गुल्म आदिको नष्ट करता है।

मोइया हिन्दी नाम है। संस्कृतमें इसे मात्रिका और अम्बष्टा कहते हैं। बँगला में भी मात्रिका कहते हैं। मोइयेका पेड़ मशहूर है। इसके पत्तोंका साग बनता है। दवाके काममें इसका सर्वाङ्ग लेते हैं। मात्रा दो माशेकी है।

श्योनाकको हिन्दीमें सोनापाठा, अरलू या टेंटू कहते हैं। बँगलामें शोना-पाता या सोनालू, गुजरातीमें अरलू और मरहटीमें टिंडा या टेंटू कहते हैं। इसकी मात्रा १ माशेकी है। इसका पेड बहुत ऊँचा होता है। फलियाँ लम्बी लम्बी तल-वारके समान दो-दो फुटकी होती है। फलीके भीतर रूई और दाने निकलते हैं।

अर्जुनवृक्ष हिन्दी नाम है। बंगलामें अर्जुन-गाछ और मरहटीमें अर्जुनवृक्ष कहते हैं। हिन्दीमें कोह और काह भी इसके नाम है। सस्कृतमें कुकुम कहते हैं। इसके पेड वनमें बहुत ऊँचे होते हैं। इसकी छाल सफेद होती है। उसमें दूध निकलता है। मात्रा २ माशेकी है।

पाढ़ नाम हिन्दी है। इसे हिन्दीमें पाठ भी कहते हैं। संस्कृतमें पाठा, बंगला में आकनादि, मरहटीमें पहाड़मूल और अँगरेजीमें पैरैरूट कहते हैं। इसकी बेले वनमें होती हैं।

अशोक घृत।

अशोककी छाल १ सेर लेकर ८ सेर जलमें पकाओ, जब पकते-पकते चौथाई पानी रहे उतारकर छान लो। यह काढ़ा हुआ।

इस काढ़ेमें घी १ सेर, चाँवलोंका धोवन १ सेर, बकरीका दूध १ सेर, जीवकका रस १ सेर और कुकुरभाँगरेका रस १ सेर इनको भी मिला दो।

कल्कके लिये जीवनीयगणकी औषधियाँ, चिरौंजी, फालसे, रसौत, मुलेठी, अशोककी छाल, दाख, शतावर और चौलाईकी जड़,—इनमें से प्रत्येक दवाको सिलपर, जलके साथ पीस-पीसकर, दो-दो तोले लुगदी तैयार कर लो और पिसी हुई मिश्री ३२ तोले ले लो।

क़लईदार कड़ाहीमें कल्क या लुगदियो तथा मिश्री और ऊपरके काढ़े वग़ैरःको डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और साफ बर्तनमें रख दो।

इस अशोक घृतके पीनेसे सब तरहके प्रदर रोग—श्वेतप्रदर, नीलप्रदर, काला प्रदर, दुस्तर प्रदर, कोखका दर्द, कमरका दर्द, योनि का दर्द, सारे शरीरका दर्द, मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डु-रोग, दुबलापन, श्वास और खाँसी—ये सब नाश होते हैं। यह घी आयु बढ़ाने वाला, पुष्टि करने वाला और रंग निखारने वाला है। इस घीको स्वयं विष्णु भगवानने ईजाद किया था। परीक्षित है।

शीतकल्याण घृत।

कमोदिनी, कमल, ख़स, गेहूँ, लाल शालि-चाँवल, मुगवन, काकोली, कुम्भेर, मुलेठी, खिरेंटी, कंघीकी जड़, ताड़का मस्तक, बिदारीकन्द, शतावर, शालिपर्णी, जीवक, त्रिफला, खीरेके बीज और केलेकी कच्ची फली—इनमेंसे हरेकको दो-दो तोले लेकर, सिल पर जलके साथ पीस-पीसकर, कल्क या लुगदी बना लो।

गायका दूध ४ सेर, जल २ सेर और गायका घी १ सेर लो। फिर कड़ाहीमें ऊपरसे कल्क और इन दूध, पानी और घीको मिला कर, मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीके सेवन करनेसे प्रदर रोग, रक्तगुल्म, रक्तपित्त, हलीमक, बहुत तरहका पित्त कामला, वातरक्त, अरुचि, जीर्णज्वर, पाण्डु-रोग, मद और भ्रम ये सब नाश हो जाते हैं। जो स्त्रियाँ अल्प पुष्प-

वाली या गर्भ न धारण करने वाली होती हैं, उन्हें इस घीके खाने से गर्भ रहता है । यह घृत उत्तम रसायन है ।

प्रदरारि लौह ।

पहले कुरैयाकी छाल सवा छै सेर लेकर कुचल लो । फिर एक क़लईदार बासनमें, बत्तीस सेर पानी और छालको डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे औटाओ । जब चौथाई या आठ सेर पानी रह जाय, उतारकर, कपड़ेमें छान लो और छूंछको फेंक दो ।

इस छने हुए काढ़ेको फिर क़लईदार बासनमें डाल, मन्दाग्निसे पकाओ, जब गाढ़ा होनेपर आजाय, उसमें नीचे लिखी हुई दवाओं के चूर्ण मिला दो और चट उतार लो ।

काढ़ेमें डालनेकी दवायें—मोचरस, भारङ्गी, बेलगिरी, वराह-कान्ता, मोथा, धायके फूल और अतीस—इन सातोंको एक-एक तोले लेकर, कूट-पीसकर कपड़-छन कर लो । इस चूर्णको और एक तोले "अभ्रक भस्म" तथा एक तोले "लोहभस्म" को उसी (ऊपरके) गाढ़ा होते हुए काढ़ेमें मिला दो ।

सेवन विधि—कुशमूलको सिलपर पीसकर स्वरस या पानी छान लो । एक मात्रा यानी ३ माशे दवा को चाटकर, ऊपरसे कुश-मूलका पानी पीलो । इस लौहसे प्रदर रोग निश्चय ही नाश होता और कोखका दर्द भी जाता रहता है ।

प्रदरान्तक लौह ।

शुद्ध पारा ६ माशे, शुद्ध गन्धक ६ माशे, वङ्गभस्म ६ माशे, चाँदी की भस्म ६ माशे, खपरिया ६ माशे, कौड़ीकी भस्म ६ माशे और लोहभस्म या कान्तिसार तीन तोले—इन सबको खरलमें डालकर, ऊपरसे घीग्वारका रस डाल-डालकर, बारह घण्टों तक घोटो । फिर एक-एक चिरमिटी बराबर गोलियाँ बनाकर, छायामें सुखा

लो और शीशीमें रख दो। इस लौहसे सब तरहके प्रदर रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

सेवनविधि—सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे ज़रा-सा जल पी लेना चाहिये। गोली खाकर, ऊपरसे अशोककी छालके साथ पकाया दूध, जिसकी विधि पहले पृष्ठ ३४४ में लिख आये हैं, पीनेसे बहुत ही जल्दी अपूर्व्व चमत्कार दीखता है। अथवा गोली खाकर, रसौत और चौलाईकी जड़को पीसकर, चाँवलोंके पानीमें छान लो और यही पीओ। ये अनुपान परीक्षित है।

शतावरी घृत।

शतावरका गूदा या रस आध सेर, गायका घी आध सेर, गायका दूध दो सेर लाकर रख लो। जीवनीयगणकी आठों दवाएँ तथा मुलेठी, चन्दन, पद्माख, गोखरू, कौंचके बीजोंकी गिरी, खिरेंटी, कंघी, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, विदारीकन्द, दोनों शारिवा, मिश्री और कुंभेरके फल—इनमें से हरेक दवाको पानीके साथ सिलपर पीस-पीस कर, एक-एक तोले कल्क बना लो। शेषमें सब दवाओंके कल्क, शतावरका रस, घी और दूध सबको क़लईदार बर्तनमें चढ़ा कर, मन्दाग्निसे घी पकालो। इस "शतावरी घृत" के सेवन करनेसे रक्तपित्तके विकार, वातपित्तके विकार, वातरक्त, क्षय, श्वास, हिचकी, खाँसी, रक्तपित्त, अंगदाह, सिरकी जलन, दारुण मूत्रकृच्छ्र और सर्वदोष-जनित प्रदर रोग इस तरह नाश होते हैं, जिस तरह सूर्यसे अन्धकारका नाश होता है।

सोमरोगकी चिकित्सा ।

सोमरोगकी पहचान ।

स्त्री की योनिसे जब प्रसन्न, निर्मल, शीतल, गंधरहित, साफ, सफेद और पीड़ा-रहित जल बहुत ही ज़ियादा बहता रहता है, तब वह स्त्री जलके वेगको रोक नहीं सकती, एकदम कमज़ोर हो जानेकी वजहसे बेचैन रहती है; माथा शिथिल हो जाता है, मुँह और तालू सूखने लगते हैं, बेहोशी होती, जँभाई आती, चमड़ा रूखा हो जाता, प्रलाप होता और खाने-पीनेके पदार्थों से कभी तृप्ति नहीं होती। जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "सोमरोग" कहते हैं। इस रोगमें जो पानी योनिसे जाता है, वही शरीरको धारण करने वाला है। इस रोगमें सोमधातुका नाश होता है, इसीलिये इसे 'सोमरोग' कहते हैं।

जिस तरह पुरुषोंको बहुमूत्र रोग होता है; उसी तरह स्त्रियोंको "सोमरोग" होता है। जिस तरह पेशावों-पर-पेशाव करनेसे मर्द मर जाता है; उसी तरह स्त्रियाँ, योनिसे सोम धातु जानेके कारण, गल-गल कर मर जाती है। साफ, शीतल, गन्धहीन, सफेद पानी सा हर समय बहा करता है। यहाँ तक कि बहुत बढ़ जानेपर औरत पेशाब के वेगको रोक नहीं सकती, उठते-उठते धोतीमें पेशाब हो जाता है, इसलिये इस रोग वालीकी धोती हर वक्त भीगी रहती है। यह रोग औरतोंको ही होता है।

सोमरोगसे मूत्रातिसार।

जब स्त्रीका सोमरोग पुराना हो जाता है, यानी बहुत दिनों तक बना रहता है, तब वह "मूत्रातिसार" हो जाता है। पहले तो सोमरोग की हालतमें पानी-सा पदार्थ बहा करता है; किन्तु इस दशामें बार-म्बार पेशाब होते हैं और पेशाबोंकी मिक़दार भी ज़ियादा होती है। स्त्री ज़रा भी पेशाबको रोकना चाहती है, तो रोक नहीं सकती। परिणाम यह होता है कि, स्त्रीका सारा बल नाश हो जाता है और अन्तमें वह यमालयकी राह लेती है। कहा है—

सोमरोगे चिरंजाते यदा मूत्रमतिस्रवेत्।
मूत्रातिसारं तं प्राहुर्बलविध्वसनं परम्॥

सोमरोगके पुराने होनेपर, जब बहुत पेशाब होने लगता है, तब उसे बलको नाश करनेवाला "मूत्रातिसार" कहते हैं।

नोट—याद रखना चाहिये, सोमरोग मूत्र-मार्ग या मूत्रकी नलीमें और प्रदर-रोग गर्भाशयमें होता है और ये दोनों रोग स्त्रियोंको ही होते हैं।

सोमरोगके निदान-कारण।

जिन कारणोंसे "प्रदर रोग" होता है, उन्हीं कारणोंसे "सोमरोग" होता है। अति मैथुन और अति मिहनत प्रभृति कारणोंसे शरीरके रस रक्त प्रभृति पतले पदार्थ और पानी, अपने-अपने स्थान छोड़कर, मूत्रकी थैलीमें आकर जमा होते और वहाँसे चलकर, योनिकी राह से, हर समय या अनियत समयपर बाहर गिरा करते हैं।

सोमरोग-नाशक नुसख़े।

(१) भिण्डीकी जड़, सूखा पिंडारू, सूखे आमले और विदारीकन्द, ये सब चार-चार तोले, उदड़का चूर्ण दो तोले और मुलेठी दो तोले—लाकर पीस-कूट और छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ६ माशे की है।

एक पुड़िया मुँहमें रख, ऊपरसे मिश्री-मिला गायका दूध पीनेसे सोमरोग अवश्य नाश हो जाता है । दवा सवेरे-शाम दोनों समय लेनी चाहिये । परीक्षित है ।

(२) केलेकी पकी फली, आमलोंका स्वरस, शहद और मिश्री इन सबको मिलाकर खानेसे सोमरोग और मूत्रातिसार अवश्य आराम हो जाते हैं ।

(३) उड़द्का आटा, मुलेठी, विदारीकन्द, शहद और मिश्री— इन सबको मिलाकर सवेरे ही, दूधके साथ सेवन करनेसे सोमरोग नष्ट हो जाता है ।

(४) अगर सोमरोगमें पीड़ा भी हो और पेशावके साथ सोम-धातु वारम्वार निकलती हो तो ताज़ा शराबमें इलायची और तेजपात का चूर्ण मिलाकर पीना चाहिये ।

(५) शतावरका चूर्ण फाँककर, ऊपरसे दूध पीनेसे सोमरोग चला जाता है ।

(६) आमलोंके बीजोंको जलमें पीसकर, फिर उसमें शहद और चीनी मिलाकर पीनेसे, तीन दिनमें ही श्वेतप्रदर और मूत्रातिसार नष्ट हो जाते हैं ।

(७) छै माशे नागकेशरको माठेमें पीसकर, तीन दिन तक पीने और माठेके साथ भात खानेसे श्वेतप्रदर और सोमरोग आराम हो जाते हैं ।

(८) केलेकी पकी फली, विदारीकन्द और शतावर—इन सब को एकत्र मिलाकर, दूधके साथ, सवेरेही पीनेसे सोमरोग नष्ट हो जाता है ।

(९) मुलेठी, आमले, शहद और दूध—इन सबको मिलाकर सेवन करने से सोमरोग नाश हो जाता है ।

योनि रोग-चिकित्सा।

योनि रोगोंकी क़िस्में।

असलमें योनिरोग, प्रदर रोग और आर्त्तव रोग एवं स्त्री-पुरुषोंके रज और वीर्यके शुद्ध, निर्दोष और पुष्ट न होने वगैरः वगैरः कारणोंसे आज भारतके लाखों घर सन्तान-हीन हो रहे हैं। मूर्ख लोग गण्डा-ताबीज़ और भभूतके लिये वृथा ठगाते और दुःख भोगते हैं; पर असल उपाय नहीं करते, इसीसे उनकी मनोकामना पूरी नहीं होती। अतः हम योनि-रोगोंके निदान, कारण और लक्षण लिखते हैं। आर्त्तव रोग या नष्टार्त्तवकी चिकित्सा इस के बाद लिखेंगे।

"सुश्रुत"में और "माधव निदान" आदि ग्रन्थोंमें योनिरोग—भग के रोग—बीस प्रकारके लिखे हैं। उनके नाम ये हैं.—

(१) उदावृता
(२) बन्ध्या
(३) विप्लुता
(४) परिप्लुता
(५) वातला

ये पाँच योनिरोग वायु-दोषसे होते हैं।

(६) लोहिताक्षरा
(७) प्रस्रंसिनी
(८) वामनी
(९) पुत्रघ्नी
(१०) पित्तला

ये पाँच योनिरोग पित्त-दोषसे होते हैं।

(११) अत्यानन्दा (१२) कर्णिनी (१३) चरणा (१४) अतिचरणा (१५) कफजा	ये पाँच योनिरोग कफके दोपसे होते हैं।
(१६) षंढी (१७) अण्डिनी (१८) महती (१९) सूचीवक्त्रा (२०) त्रिदोषजा	ये पाँचों योनिरोग तीनों दोषोंसे होते हैं।

योनिरोगोंके निदान-कारण ।

"सुश्रुत" में योनिरोगोंके निम्नलिखित कारण लिखे हैं:—

(१) मिथ्याचार । (२) मिथ्या विहार ।
(३) दुष्ट आर्त्तव । (४) वीर्यदोष ।
(५) दैवेच्छा ।

आजकल आयुर्वेदकी शिक्षा न पानेसे मर्दोंकी तरह स्त्रियाँ भी समय-बेसमय खातीं, दूध और मछली प्रभृति विरुद्ध पदार्थ और प्रकृति-विरुद्ध भोजन करतीं, गरम मिज़ाज होनेपर भी गरम भोजन करतीं, सर्द मिज़ाज होनेपर भी सर्द पदार्थ खातीं, दिन-रात मैथुन करतीं, व्रत-उपवास करतीं तथा खूब क्रोध और चिन्ता करती हैं। इन कारणों एवं इसी तरहके और भी कारणोंसे उनका आर्त्तव या मासिक खून गरम होकर, उपरोक्त बीस प्रकारके योनिरोग करता है। इसके सिवा, माँ-बापके वीर्य-दोषसे जिस कन्याका जन्म होता है, उसे भी इन

बीसों योनि-रोगोंमेंसे कोई न कोई योनि-रोग होता है। सबसे प्रबल कारण दैवेच्छा है।

बीसों योनिरोगोंके लक्षण।

(१) जिस स्त्रीकी योनिसे झाग-मिला हुआ खून बड़ी तकलीफ के साथ झिरता है, उसे "उदावृत्ता" कहते हैं।

नोट—उदावृत्ता योनि रोगवाली स्त्रीका मासिक धर्म बड़ी तकलीफसे होता है, उसके पेड़ूमें दर्द होकर रक्तकी गाँठ सी गिरती है।

(२) जिसका आर्त्तव नष्ट हो; यानी जिसे रजोधर्म न होता हो, अगर होता हो तो अशुद्ध और ठीक समयपर न होता हो, उसे "बन्ध्या" कहते हैं।

(३) जिसकी योनिमें निरन्तर पीड़ा या भीतरकी ओर सदा एक तरहका दर्द सा होता रहता है, उसे "विप्लुता" योनि कहते हैं।

(४) जिस स्त्रीके मैथुन कराते समय योनिके भीतर बहुत पीड़ा होती है, उसे "परिप्लुता" योनि कहते हैं।

(५) जो योनि कठोर या कड़ी हो तथा उसमें शूल और चोंटने की सी पीड़ा हो, उसे "वातला" योनि कहते हैं। इस रोगवालीका मासिक खून या आर्त्तव बादीसे रूखा होकर सूई चुभानेका सा दर्द करता है।

नोट—यद्यपि उदावृत्ता, बन्ध्या, विप्लुता और परिप्लुता नामक योनियोंमें वायुके कारणसे दर्द होता रहता है, पर "वातला" योनिमें उन चारोंकी अपेक्षा अधिक दर्द होता है। याद रखो, इन पाँचों योनिरोगोंमें "वायु" का कोप रहता है।

(६) जिस योनिसे दाहयुक्त रुधिर बहता है; यानी जिस योनिसे जलनके साथ गरम-गरम खून बहता है, उसे "लोहिताक्षरा" कहते हैं।

(७) जिस स्त्रीकी योनि, पुरुषके मैथुन करनेके बाद, पुरुषके वीर्य और स्त्रीकी रज दोनोंको बाहर निकाल दे, उसे "वामनी" योनि कहते हैं।

(८) जिसकी योनि अधिक देर तक मैथुन करनेसे, लिंगकी रगड़के मारे, बाहर निकल आवे; यानी स्थानभ्रष्ट हो जाय और विमर्दित करनेसे प्रसव-योग्य न हो, उसे "प्रस्रंसिनी" योनि कहते हैं। अगर ऐसी स्त्रीको कभी गर्भ रह जाता है, तो बच्चा बड़ी मुश्किलसे निकलता है।

(९) जिस स्त्रीको रुधिर-क्षय होनेसे गर्भ न रहे, वह "पुत्रघ्नी" योनिवाली है। ऐसी योनि वाली स्त्रीका मासिक खून गर्म होकर कम हो जाता और गर्भगत बालक अकाल या असमयमें ही गिर जाता है।

(१०) जो योनि अत्यन्त दाह, पाक और ज्वर, इन लक्षणों वाली हो, वह "पित्तला" है। खुलासा यों समझिये कि, इस योनि वाली स्त्रीकी भगके भीतर दाह या जलन होती है और भगके मुँहपर छोटी-छोटी फुन्सियाँ हो जाती हैं और पीड़ासे उसे ज्वर चढ़ आता है।

नोट—यद्यपि लोहितक्षरा, प्रस्रंसिनी, पुत्रघ्नी और वामनीमें पित्तकोपके चिह्न पाये जाते हैं और वे चारों योनिरोग पित्तसे ही होते हैं, पर पित्तला योनि-रोगमें पित्तकोपके लक्षण विशेष रूपसे देखे जाते हैं। दाह, पाक और ज्वर पित्तला के उपलक्षण मात्र हैं। उसमेंसे नीला, पीला और सफेद आर्त्तव बहता रहता है।

(११) जिस स्त्रीकी योनि अत्यधिक मैथुन करनेसे भी सन्तुष्ट न हो, उसे "अत्यानन्दा" योनि कहते हैं। इस योनिवाली स्त्री एक दिन में कई पुरुषोंसे मैथुन करानेसे भी सन्तुष्ट नहीं होती। चूँकि इस योनि वाली एक पुरुषसे राज़ी नहीं होती, इसीसे इसे गर्भ नहीं रहता।

(१२) जिस स्त्रीकी योनिके भीतरके गर्भाशयमें कफ और खून मिलकर, कमलके इर्द-गिर्द मांसकन्द-सा बना देते हैं, उसे "कर्णिनी" कहते हैं।

(१३) जो स्त्री मैथुन करनेसे पुरुषसे पहले ही छूट जाती है और वीर्य ग्रहण नहीं करती, उसकी योनि "चरणा" है।

(१४) जो स्त्री कई बार मैथुन करनेपर छुटती है, उसकी योनि "अति चरणा" है।

नोट—ऐसी योनिवाली स्त्री कभी एक पुरुषकी होकर नहीं रह सकती। चरणा और अतिचरणा योनिवाली स्त्रियोंको गर्भ नहीं रहता।

(१५) जो योनि अत्यन्त चिकनी हो, जिसमें खुजली चलती हो और जो भीतरसे शीतल रहती हो, वह "कफजा" योनि है।

नोट—अत्यानन्दा, कर्णिनी, चरणा और अतिचरणा—चारों योनियोंमें कफका दोष होता है, पर कफजामें कफ-दोष विशेष होता है।

(१६) जिस स्त्रीको मासिक धर्म न होता हो, जिसके स्तन छोटे हों और मैथुन करनेसे योनि लिंगको खरदरी मालूम होती हो, उसकी योनि "षण्डी" है।

(१७) थोड़ी उम्र वाली स्त्री अगर बलवान पुरुषसे मैथुन कराती है, तो उसकी योनि अण्डेके समान बाहर लटक आती है। उस योनिको "अण्डिनी" कहते हैं।

नोट—इस रोगवालीका रोग शायद ही आराम हो। इसको गर्भ नहीं रहता।

(१८) जिस स्त्रीकी योनि बहुत फैली हुई होती है, उसे "महती" योनि कहते हैं।

(१९) जिस स्त्रीकी योनिका छेद बहुत छोटा होता है, वह मैथुन नहीं करा सकती, केवल पेशाब कर सकती है, उसकी योनिको "सूची वक्त्रा" कहते हैं।

नोट—ऊपरके योनिरोग वातादि दोषोंसे होते हैं, पर जिस योनि रोगमें तीनों दोषोंके लक्षण पाये जावें, वह त्रिदोषज है।

योनिकन्द रोगके लक्षण।

जब दिनमें बहुत सोने, बहुत ही क्रोध करने, अत्यन्त परिश्रम करने, दिन-रात मैथुन कराने, योनिके छिल जाने अथवा नाखून या दाँतोंके लग जानेसे योनिके भीतर घाव हो जाते हैं, तब वातादि दोष, कुपित होकर, पीप और खूनको इकट्ठा करके, योनिमें बड़हलके फल-जैसी गाँठ पैदा कर देते हैं, उसे ही "योनि कन्द रोग" कहते हैं।

नोट—अगर वातका कोप ज़ियादा होता है, तो यह गाँठ रूखी और फटी-सी होती है। अगर पित्त ज़ियादा होता है, तो गाँठमें जलन और सुर्खी होती है, इससे बुखार भी आ जाता है। अगर कफ ज़ियादा होता है, तो उसमें खुजली चलती और रंग नीला होता है। जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं, उसे सन्निपातज योनिकन्द कहते हैं।

योनि-रोग-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) बीसों प्रकारके योनि-रोग साध्य नहीं होते; कितने ही सहजमें और कितने ही बड़ी दिक़्क़तसे आराम होते हैं। इनमें से कितने ही तो असाध्य होते हैं, पर बाज़ औक़ात अच्छा इलाज होने से आराम भी हो जाते हैं। चिकित्सकको योनिरोगके निदान, लक्षण और साध्यासाध्यका विचार करके इलाजमें हाथ डालना चाहिये।

(२) योनि रोग आराम करनेके तरीके ये हैं:—

(क) तेलमें रूईका फाहा तर करके योनिमें रखना।

(ख) दवाकी बत्ती बनाकर योनिमें रखना।

(ग) योनिमें धूनी या बफारा देना।

(घ) दवाओंके पानीसे योनिको धोना।

(ङ) योनिमें दवाके पानी वग़ैरःकी पिचकारी देना।

(च) खानेको दवा देना।

(छ) अगर योनि टेढ़ी या तिरछी हो गई हो अथवा बाहर निकल आई हो, तो योनिको चिकनी और स्वेदित करके; यानी तेल चुपड़-कर और बफारोंसे पसीने निकालकर, उसे यथास्थान स्थापित करना एवं मधुर औषधियोंका वेसवार बनाकर योनिमें घुसाना।

(ज) रूईका फाहा तेलमें तर करके बलानुसार योनिके भीतर रखना। इससे योनिके शूल, पीड़ा, सूजन और स्राव वगैरः दूर हो जाते हैं।

(झ) टेढ़ी योनिको हाथसे नवाना, सुकड़ी हुईको बढ़ाना और बाहर निकली हुईको भीतर घुसाना।

(३) वातज योनि रोगोंमें—गिलोय, त्रिफला और दातूनिकी जड़—इन तीनोंके काढ़ेसे योनिको धोना चाहिये। इसके बाद नीचे लिखा तेल बनाकर, उसमें रूईका फाहा तर करके, जब तक रोग आराम न हो, बराबर योनिमें रखना चाहिये।

कूट, सेंधानोन, देवदारू, तगर और भटकटैयाका फल—इन सबको पाँच-पाँच तोले लेकर अधकचरा कर लो और फिर एक हाँडी में पाँच सेर पानी भरकर, उसमें कुटी हुई दवाएँ डालकर औटाओ। जब पाँचवाँ भाग पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो। फिर एक क़लईदार कड़ाहीमें एक पाव काली तिलीका तेल डालकर, ऊपरसे छना हुआ काढ़ा डाल दो और चूल्हेपर रखकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय, उतारकर, शीतल होनेपर छान लो और काग लगाकर शीशीमें रख दो।

नोट—पाँचो वातज योनि-रोगोंपर ऊपर लिखा योनि धोनेका जल और यह तेल अनेक बारके परीक्षित हैं। जल्दी न की जाय और आराम न होने तक बराबर दोनों काम किये जायँ, तो १०० में ६० को आराम होता है।

(४) पित्तज योनि-रोगोंमें योनिको काढ़ोंसे सींचना, धोना, तेल लगाना और तेलके फाहे रखना अच्छा है। पित्तज रोगमें शीतल और पित्तनाशक नुसखे काममें लाने चाहियें। शीतल दवाओंके तरड़े देने और फाहे रखनेसे अनेक बार तत्काल लाभ दिखता है। पित्तज योनिरोगोंमें गरम उपचार भयानक हानि करता है।

शतावरी घृत और बला तेल—ये दोनों पित्तनाशक प्रयोग अच्छे हैं।

(५) कफजनित योनि-रोगोंमें शीतल उपचार कभी न करना चाहिये। ऐसे योनि-रोगोंमें गर्म उपचार फायदा करता है। कफजन्य

योनि रोगोंमें रूखी और गरम दवायें देना अच्छा है। उधर पृष्ठ ३७७ में लिखी नं० १५ बत्ती ऐसे रोगोंमें अच्छी पाई गई है।

(६) वातसे पीड़ित योनिमें हींगके कल्कमें घी मिलाकर योनिमें रखना चाहिये।

पित्तसे पीड़ित योनिमें पञ्च बल्कलके कल्कमें घी मिलाकर योनि में रखना चाहिये।

कफजन्य योनि रोगोंमें श्यामादिक औषधियोंके कल्क या लुगदी में घी मिलाकर योनिमें रखना चाहिये।

अगर योनि कठोर हो, तो उसे मुलायम करने वाली चिकित्सा करनी चाहिये।

सन्निपातज योनि-रोगमें साधारण क्रिया करनी चाहिये।

अगर योनिमें बदबू हो, तो सुगन्धित पदार्थोंके काढ़े, तेल, कल्क या चूर्ण योनिमें रखनेसे बदबू नहीं रहती। जैसे,—पृष्ठ ३७८ का नं० १८ नुसख़ा।

(७) याद रखो, सभी तरहके योनि रोगोंमें "वातनाशक चिकित्सा" उपकारी है, पर वातज योनि रोगोंमें स्नेहन, स्वेदन और वस्ति कर्म विशेष रूपसे करने चाहियें। कहा है—

सर्वेषु योनिरोगेषु वातघ्नः क्रमइष्यते।
स्नेहनःस्वेदनो वस्तिर्वातजायां विशेषतः॥

योनिरोग नाशक नुसख़े।

(१) "चरक" में योनि रोगोंपर "धातक्यादि" तेल लिखा है। उस तेलका फाहा योनिमें रखने और उसीकी पिचकारी योनिमें लगाने से विप्लुता आदि योनि रोग, योनिकन्द रोग, योनिके घाव, सूजन

और योनिसे पीप बहना वग़ैरः निश्चय ही आराम हो जाते हैं। यह तेल हमने जिस तरह आज़माया है नीचे लिखते हैं:—

धवके पत्ते, आमलेके पत्ते, कमलके पत्ते, काला सुरमा, मुलेठी, जामुनकी गुठली, आमकी गुठली, कशीश, लोध, कायफल, तेंदूका फल, फिटकरी, अनारकी छाल और गूलरके कच्चे फल—इन १४ दवाओंको सवा-सवा तोले लेकर कूट-पीस लो। फिर एक सेर अढ़ाई पाव बकरीके पेशाबमें, ऊपरके चूर्णको पीस कर, लुगदी बना लो। फिर एक कड़ाहीमें ऊपर लिखी बकरीके मूत्रमें पिसी लुगदी, एक सेर काले तिलोंका तेल और एक सेर अढ़ाई पाव गायका दूध डालकर, चूल्हेपर रख, मन्दाग्निसे पकाओ। जब दूध और मूत्र जल-कर तेलमात्र रह जाय, उतार कर छान लो और बोतलमें भर दो।

नोट—अगर यह तेल पीठ, कमर और पीठकी रीढ़पर मालिश किया जाय, योनिमें इसका फाहा रखा जाय और पिचकारीमें भर कर योनिमें छोड़ा जाय—तो विप्लुता, परिप्लुता, योनिकन्द, योनिकी सूजन, घाव और मवाद बहना अवश्य आराम हो जाते हैं। इन रोगोंपर यह तेल रामबाण है।

(२) वातला योनिमें अथवा उस योनिमें जो कड़ी, स्तब्ध और थोड़े स्पर्शवाली हो—उसके पर्दे बिठा कर—तिलीके तेलका फाहा रखना हितकर है।

(३) अगर योनि प्रस्रंसिनी हो, लिंगकी रगड़से बाहर निकल आई हो, तो उसपर घी मल कर गरम दूधका बफारा दो और उसे हाथसे भीतर बिठा दो। फिर नीचे लिखे वेशवारसे उसका मुँह बन्द करके पट्टी बाँध दो। सोंठ, काली मिर्च, पीपर, धनिया, ज़ीरा, अनार और पीपरामूल—इन सातोंके पिसे-छने चूर्णको पण्डित लोग "वेशवार" कहते हैं।

(४) अगर योनिमें दाह या जलन होती हो, तो नित्य आमलों के रसमें चीनी मिला कर पीनी चाहिये। अथवा कमलिनीकी जड़ चाँवलोंके पानीमें पीसकर पीनी चाहिये।

(५) अगर योनिमेंसे राध निकलती हो, तो नीमके पत्ते प्रभृति शोधन पदार्थोंको सेंधेनोनके साथ पीसकर गोली बना लेनी चाहिये। इन गोलियोंको रोज़ योनिमें रखनेसे राध निकलना बन्द हो जाता है।

(६) अगर योनिमें बदबू आती हो अथवा वह लिबलिबी हो, तो बच, अडूसा, कड़वे परवल, फूल-प्रियंगू और नीम—इनके चूर्ण को योनिमें रखो। साथ ही अमलतास आदिके काढ़ेसे योनिको धोओ। पहले धोकर, पीछे चूर्ण रखो।

(७) कर्णिका नामक कफजन्य योनिरोग हो—गर्भाशयके ऊपर मांस-सा बढ़ा हो—तो आप नीम आदि शोधन पदार्थोंकी बत्ती बनाकर योनिमें रखवाओ।

(८) गिलोय, हरड़, आमला और जमालगोटा,—इनका काढ़ा बना कर, उस काढ़ेकी धारोंसे योनि धोनेसे योनिकी खुजली नाश हो जाती है।

(९) कत्था, हरड़, जायफल, नीमके पत्ते और सुपारी—इनको महीन पीसकर छान लो। पीछे इस चूर्णको मूँगके यूषमें मिला कर सुखा लो। इस चूर्णके योनिमें डालनेसे योनि सुकड़ जाती और जलका स्राव या पानी सा आना बन्द हो जाता है।

(१०) ज़ीरा, कालाज़ीरा, पीपर, कलौंजी, सुगन्धित बच, अडूसा, सेंधानोन, जवाखार और अजवायन—इनको पीस-छान कर चूर्ण कर लो। पीछे इसे ज़रा सेक कर, इसमें चीनी मिलाकर लड्डू बना लो। इन लड्डुओंको अपनी जठराग्निके बल-माफ़िक़ नित्य खानेसे योनिके सारे रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस खानेकी दवाके साथ योनिमें लगानेकी दवा भी इस्तेमाल करने से शीघ्र ही लाभ दीखता है।

(११) चूहेके मांसको पानीके साथ हाँडीमें डालकर काढ़ा बना लो। फिर उसे छानकर, उसमें काली तिलीका तेल मिला

कर, मन्दाग्निसे पकालो। जब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और शीशीमें रख दो। इस तेलमें फाहा भिगोकर, योनिमें रखने से, योनि-सम्बन्धी रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

नोट—चूहेके मांसको तेलमें पकाकर, तेल छान लेनेसे भी काम निकल जाता है। इस चूहेके तेलका फाहा योनिमें रखनेसे योन्यर्श—योनिका मस्सा और योनिकन्द—गर्भाशयके ऊपरका मांसकन्द निश्चय ही आराम हो जाते हैं; पर जब तक पूरा आराम न हो, सब्रके साथ इसे लगाते रहना चाहिये।

(१२) चूहेको भूभलमें दाबकर, उसका आम-बैंगन प्रभृतिकी तरह भरता कर लो। जब भरता हो जाय, उसमें सेंधानोन बारीक पीसकर मिलादो। उस भरतेके योनिमें रखने से योनिकन्द—गर्भाशयपर गाँठ-सी हो जानेका रोग—निस्सन्देह नाश हो जाता है, पर देर लगती है। नं० ११ की तरह योनिका मस्सा भी इसी भरतेसे नष्ट हो जाता है।

नोट—नं० ११ और १२ नुसखे परीक्षित हैं। अगर योन्यर्श—योनिके मस्से और योनिकन्द—योनिकी गाँठ आराम करनी हो, तो आप नं० ११ या १२ से अवश्य काम लें। इन दोनों रोगोंमें चूहेका तेल और भरता अकसीरका काम करते हैं।

(१३) करेलेकी जड़को पीसकर, योनिमें उसका लेप करने से, भीतरको घुसी हुई योनि बाहर निकल आती है।

(१४) योनिमें चूहेकी चरबीका लेप करनेसे, बाहर निकली हुई योनि भीतर घुस जाती है।

(१५) पीपर, कालीमिर्च, उड़द, शतावर, कूट और सेंधानोन—इन सबको महीन पीस-कूटकर छान लो। फिर इस छने चूर्णको सिलपर रख और पानीके साथ पीसकर, अंगूठे-समान बत्तियाँ बना-बनाकर छायामें सुखा लो। इन बत्तियोंके नित्य योनिमें रखनेसे कफ-सम्बन्धी योनि रोग—अत्यानन्दा, कर्णिका, चरणा और अतिचरणा एवं कफजा योनि रोग—निस्सन्देह नष्ट हो जाते और योनि बिल्कुल शुद्ध हो जाती है। यह योग हमारा आजमूदा है।

(१६) तगर, कूट, सेंधानोन, भटकटैयाका फल और देवदारु—इनका तेल पकाकर, उसी तेलमें रूईका फाहा भिगोकर, योनिमें लगातार कुछ दिन रखनेसे, वातज योनि-रोग—उदावृत्ता, बन्ध्या, विप्लुता, परिप्लुता और वातला योनिरोग अवश्य आराम हो जाते हैं। इसका नाम "नताद्य" तेल है। (इसके बनानेकी विधि पृष्ठ ३७३ के नं० ३ में देखो।)

नोट—तेलका फाहा रखनेसे पहले गिलोय, त्रिफला और दातुनिकी जड़—इनके काढ़ेसे योनिको सींचना और धोना जरूरी है। दोनों काम करनेसे पांचों बादीके योनिरोग निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। अनेक बार परीक्षा की है।

(१७) तिलका तेल १ सेर, गोमूत्र १ सेर, दूध २ सेर और गिलोय का कल्क एक पाव—इन सबको कड़ाहीमें चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलमें रूईका फाहा भिगोकर, योनिमें रखनेसे, वातजनित योनि-पीड़ा शान्त हो जाती है। बादीके योनि-रोगोंमें यह तेल उत्तम है। इसका नाम "गुडूच्यादि तेल" है।

(१८) इलायची, धायके फूल, जामुन, मँजीठ, लजवन्ती, मोचरस और राल—इन सबको पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णको योनिमें रखनेसे योनिकी दुर्गन्ध, लिबलिबापन तथा तरी रहना आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

(१९) गिलोय, त्रिफला, शतावर, श्योनाक, हल्दी, अरणी, पियाबाँसा, दाख, कसौंदी, बेलगिरी और फालसे—इन ग्यारह दवाओंको एक-एक तोले लेकर, कूट-पीसकर, सिलपर रख लो और पानीके साथ फिर पीसकर, लुगदी बना लो। इस लुगदीको आधसेर 'घी' के साथ क़लईदार कड़ाही या देगचीमें रखकर मन्दाग्निसे पका लो। इसका नाम "गुडूच्यादि घृत" है। यह घृत योनि-रोगों और वात-विकारोंको नष्ट करता तथा गर्भ स्थापन करता है।

नोट—गुडूच्यादि घृत विशेषकर वातज योनिरोगोंमें स्त्रीको उचित मात्रासे खिलाना-पिलाना चाहिये।

(२०) कड़वे नीमकी निबौलियोंको नीमके रसमें पीस कर, योनिमें रखने या लेप करनेसे, योनि-शूल मिट जाता है। परीक्षित है।

(२१) अरण्डीके बीज नीमके रसमें पीस कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको योनिमें रखने या पानीमें पीसकर इनका लेप करनेसे योनि-शूल मिट जाता है।

(२२) आमलेकी गुठली, बायबिडंग, हल्दी, रसौत और कायफल—इनको बराबर-बराबर लेकर और पीस-कूटकर छान लो। पीछे इस चूर्णको "शहद" में मिला-मिलाकर रोज़ योनिमें भरो। इस नुसख़ेसे "योनिकन्द" रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। पर इसे भरनेसे पहले, हरड़, बहेड़े और आमलेके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर, उससे योनिको सींचना या धोना उचित है; अर्थात् इस काढ़ेसे योनि को धोकर, पीछे ऊपरका चूर्ण शहदमें मिलाकर योनिमें भरना चाहिये। काढ़ा नित्य ताज़ा बनाना चाहिये।

(२३) मँजीठ, मुलेठी, कूट, हरड़, बहेड़ा, आमला, खाँड, खिरेंटी, एक-एक तोले, शतावर दो तोले, असगन्ध चार तोले, असगन्धकी जड़ १ तोले तथा अजमोद, हल्दी, दारूहल्दी, फूलप्रियंगू, कुटकी, कमल, बबूला—कुमुदिनी, दाख, काकोली, क्षीर-काकोली, सफेद चन्दन और लाल चन्दन—ये सब एक-एक तोले लाकर, पीस-कूट कर छान लो। फिर इने चूर्णको सिलपर रख और जलके साथ पीसकर कल्क या लुगदी बना लो।

चौंसठ तोले गायका घी, १२८ तोले शतावरका रस और १२८ तोले दूध तथा ऊपरकी लुगदी—इन सबको क़लईदार कड़ाहीमें रख, मन्दाग्निसे चूल्हेपर पकाओ। जब घीकी विधिसे घी तैयार हो जाय, उतार कर छान लो और रख दो। इसका नाम "फलघृत" है।

सेवन-विधि—इस घीको अगर पुरुष पीता है, तो उसकी मैथुन-शक्ति अतीव बढ़ जाती है और उसके वीर, रूपवान और बुद्धिमान पुत्र पैदा होते हैं।

जिन स्त्रियोंकी सन्तान मरी हुई होती है, जिनकी सन्तान होकर मर जाती है, जिनका गर्भ रह कर गिर जाता है अथवा जिनके लड़की-ही-लड़की होती हैं, उनके इस घीके पीनेसे दीर्घायु, गुणवान, रूपवान और बलवान पुत्र होता है।

इस घीके पीनेसे योनि-स्राव—योनिसे मवाद गिरना, रजो-दोष—रजोधर्म ठीक और शुद्ध न होना तथा दूसरे योनि-रोग नाश हो जाते हैं। यह घी सन्तान और वायुको बढ़ाने वाला है। इस "फलघृत" को अश्विनीकुमारोंने कहा है।

नोट—हमने यह घृत भावप्रकाशसे लिया है। इसमें "सफेद कटेरीकी जड" डालना नहीं लिखा है, तथापि वैद्य लोग उसे डालते हैं। वैद्य लोग इसके लिये जिसका बछड़ा जीता हो और जिसका एक ही रंग हो अर्थात् माता और बछड़े दोनों एक ही रङ्गके हों—ऐसी गायका घी लेते हैं और सदासे इसे आरने या जंगली कण्डोंकी आगपर पकाते हैं।

यह घृत अनेक ग्रन्थोंमें लिखा है। सबमें कुछ न कुछ भेद है। उनमें हींग, वच, तगर और दूना विदारीकन्द—ये दवाएँ और भी लिखी हैं। वैद्य चाहें तो इन्हें डाल सकते हैं।

(२४) घीका फाहा अथवा तेलका फाहा या शहदका फाहा योनिमें रखनेसे, योनिके सभी रोग नाश हो जाते हैं; पर फाहा बहुत दिनों तक रखना चाहिये। परीक्षित है।

(२५) मैनफल, शहद और कपूर—इनको पीस कर, अँगुलीसे, योनिमें लगानेसे गिरी हुई भग ठीक होती. उसकी नसें सीधी होतीं और वह सुकड़ कर तंग भी हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—चक्रदत्तमें लिखा है:—

मदनफलमधु कर्पूरपूरितं भवति कामिनीजनस्य।
विगलित यौवनस्य च वराङ्गमति गाढं सुकुमारम्॥

बूढ़ी स्त्रीकी भी योनि—मैनफल, शहद और कपूरको योनिमें लगानेसे, अत्यन्त सुन्दर और तंग हो जाती है।

(२६) माजूफल, शहद और कपूर—इनको पीसकर, अँगुलीसे, योनिमें लगानेसे गिरी हुई योनि ठीक हो जाती, नसें सीधी होतीं और वह सुकड़ कर तंग हो जाती है। परीक्षित है।

(२७) इन्द्रायणकी जड़ और सोंठ—इन दोनोंको "बकरीके घी" में पीसकर, योनिमें लेप करनेसे, योनिका शूल या दर्द शीघ्र ही नाश हो जाता है। "वैद्यजीवन"-कर्त्ता अपनी कान्तासे कहते हैं—

तरुण्युत्तरणीमूलं छागीसर्पिःसनागरम्।
शिवशस्त्राभिधांबाधां योनिस्थांहन्तिसत्वरम्॥

अर्थ वही है, जो ऊपर लिखा है।

(२८) कलौंजीकी जड़के लेपसे, भीतर घुसी हुई योनि बाहर आती और चूहेके मांस-रसकी मालिशसे बाहर आई हुई योनि भीतर जाती है।

(२९) पंचपल्लव, मुलहटी और मालतीके फूलोंको घीमें डालकर, घीको घाममें पका लो। इस घीसे योनिकी दुर्गन्ध नाश हो जाती है।

(३०) योनिको चुपड़ कर, उसमें बालछड़का कल्क ज़रा गरम करके रखनेसे, वातकी योनि-पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३१) पित्तसे पीड़ित हुई योनि वाली स्त्रीको, पञ्चवल्कलका कल्क योनिमें रखना चाहिये।

(३२) चूहीके मांसको तेलमें डालकर, धूपमें पका लो। फिर इस की योनिमें मालिश करो और चूहीके मांसमें सेंधानोन मिलाकर योनि को इसका बफारा दो। इन उपायोंसे योनिका मस्सा नाश हो जायगा।

(३३) शालई, मदनमंजरी, जामुन और धव—इनकी छाल और पंच बलकलकी छाल—इन सबका काढ़ा करके तेल पकाओ। फिर उसमें रूईका फाहा तर करके योनिमें रक्खो। इससे विप्लुता योनिरोग जाता रहता है।

(३४) वामिनी और पूत योनियोंको पहले स्वेदन करो। फिर उनमें चिकने फाहे रखेो।

(३५) त्रिफलेके काढ़ेमें "शहद" डालकर योनि-सेवन करने या तरड़ा देनेसे योनिकन्द रोग आराम हो जाता है।

(३६) गेरू, अंजन, वायविडंग, कायफल, आमकी गुठली और हल्दी—इन सबका चूर्ण करके और "शहद" में मिलाकर योनिमें रखनेसे योनिकन्द नाश हो जाता है।

(३७) घोंघेका मांस पीसकर, उसमें पकी हुई तिन्तिडिका का रस मिलाकर, लेप करनेसे योनिकन्द रोग नाश हो जाता है।

(३८) कड़वी तोरईके स्वरसमें "दहीका पानी" मिलाकर पीनेसे योनिकन्द रोग नाश हो जाता है।

(३९) आग पर गरम की हुई लोहेकी शलाकासे योनिकन्दको दागनेसे, वहुत विकारोंसे हुआ योनिकन्द भी नाश हो जाता है।

(४०) अड़ूसा, असगन्ध और रास्ना—इनसे सिद्ध किया हुआ दूध पीनेसे योनि-शूल नाश हो जाता है। साथही दन्ती, गिलोय और त्रिफलेके काढ़ेका तरड़ा भी योनिमें देना चाहिये।

नोट—रक्त योनिमें प्रदरनाशक क्रिया करनी चाहिये।

(४१) ढाक, धायके फूल, जामुन, लजालू, मोचरस और राल—इनका चूर्ण वदवू, पिच्छिलता और योनिकन्द आदिमें लाभदायक है।

(४२) सिरसके वीज, इलायची, समन्दर-झाग, जायफल, वायविडंग और नागकेशर—इनको पानीमें पीसकर वत्ती वना लो। इस वत्तीको योनिमें रखनेसे समस्त योनि-रोग नाश हो जाते हैं।

(४३) वड़ी सौंफ का अर्क योनि-शूल, मन्दाग्नि और कृमि-रोगको नाश करता है।

(४४) अर्क पाखाणभेद योनि-रोग, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और गुल्मरोगको नाश करता है।

योनि संकोचन योग।

(भंग तङ्ग करने वाले नुसखे।)

(१) मैनफल, मुलेठी और कपूर—तीनोंको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको तंजेब या महीन मलमलके कपड़ेमें रखकर स्त्रीकी भगमें रखाओ। उम्मीद है, कि कई दिनोंमें, स्त्रीकी ढीली-ढाली और फैली हुई भग खूब सुकड़ कर नर्म हो जायगी। परीक्षित है।

(२) कौंचकी जड़का काढ़ा बनाकर, उससे कितने ही दिनों तक योनि धोनेसे योनि सुकड़ जाती है।

(३) बैंगनको लाकर सुखा लो। सूखनेपर पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णको भगमें रखनेसे भग सुकड़कर तंग हो जाती है।

(४) आककी जड़ लाकर स्त्री अपने पेशाबमें पीस ले। फिर शाफा करके, दो घण्टे बाद मैथुन करे। भग ऐसी तंग हो जायगी कि लिख नहीं सकते।

(५) सूखे कैंचुए भगमें मलनेसे बड़ा आनन्द आता है।

(६) बबूलकी छाल, झड़बेरीकी छाल, मौलसरीकी छाल, कचनारकी छाल और अनारकी छाल—सबको बराबर-बराबर लेकर, कुचल लो और एक हाँडीमें अन्दाज़का पानी भरकर जोश दो। औटाते समय हाँडीमें एक सफेद कपड़ा भी डाल दो। जब कपड़े पर रंग चढ़ जाय, उसे निकाल लो। इस काढ़ेसे योनिको खूब धोओ। इसके बाद, इसी काढ़ेमें रंगे हुए कपड़ेको भगमें रख लो। इस तरह करनेसे योनि सुकड़कर छोकरीकी-सी हो जाती है।

(७) ढाककी कोंपलें या कलियाँ लाकर छायामें सुखा लो। सूखनेपर पीस-छान लो और बराबरकी पीसी हुई मिश्री मिलाकर रख दो। इसमेंसे एक मात्रा चूर्ण रोज़ सात दिन तक खाओ। सात दिन बाद साफ मालूम हो जायगा कि, योनि तंग हो गई। अगर कुछ कसर हो, तो और भी कई दिन खाओ। मात्रा—सवा दो माशेसे नौ माशे तक। अनुपान—शीतल जल।

(८) सूखी बीरबहुट्टी घीमें पीसकर भगमें मलनेसे भग तंग हो जाती है।

(६) बकायनकी छाल लाकर सुखा लो। फिर पीस-छानकर रख लो। इसमेंसे कुछ चूर्ण रोज़ भगमें रखनेसे भग तंग हो जाती है।

(१०) खट्टे पालकके बीज कूट-छानकर भगमें रखनेसे भी योनि सुकड़ जाती है।

(११) इमलीके बीजोंकी गिरी कूट-छानकर रख लो। सवेरे-शाम इस चूर्णको भगमें मलनेसे भग तङ्ग हो जाती है।

(१२) समन्दर-झाग और हरड़के बीजोंकी गिरी बराबर-बराबर लेकर पीस लो। इस चूर्णको भगमें रखनेसे भग तङ्ग हो जाती है।

(१३) चीनिया गोंद छै माशे लाकर महीन पीस लो और दो तोले फिटकरी लाकर भून लो। जब फिटकरी भुनने लगे और उसका पानी-सा हो जाय, उस फिटकरीके पतले रसपर,- पिसे हुए गोंदको पानीमें मिलाकर छिड़को। जब शीतल हो जाय पी लो। इसके बाद, इसमें ज़रा-सा "गुलधावा" मिला दो और फिर सबको पीसो। इस दवाको योनिमें रखनेसे अद्भुत चमत्कार नज़र आता है। "इलाजुलगुर्बा" के लेखक महोदय इसे अपना आज़माया हुआ बताते हैं।

(१४) बेंतकी जड़को मन्दाग्निसे पानीके साथ पकाकर

काढ़ा करलो और उससे योनिको धोओ। इससे बालक होनेके बाद, योनि पहलेकी जैसी तंग हो जाती है। कहा है:—

लोध्रतुम्बीफलालेपो योनि दार्ढ्यं करोति च।
बेतसमूलानिः काथक्षालनेन तथैव च॥

अर्थात् लोध और तूम्बीके लेपसे योनि सख्त हो जाती है। बेंतकी जड़के काढ़ेसे भी योनि दृढ़ हो जाती है।

(१५) ढाकके फल और गूलरके फल—इनको पीस कर, तिली के तेल और शहदमें मिलाकर, योनिपर लेप करनेसे योनि तंग हो जाती है। यह योग और भी अच्छा है।

(१६) बच, नील-कमल, कूट, गोल मिर्च, असगन्ध और हल्दीके लेपसे योनि दृढ़ हो जाती है।

(१७) कड़वी तूम्बीके पत्ते और लोध—इनको मिला कर जलके साथ पीस लो और गोली बनाकर योनिमें रखो। इस उपाय से भी योनि सुकड़ जाती है।

(१८) हरड़, बहेड़, आमले, भाँग, लोध, दूधी और अनारकी छाल—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको अरणीके रसमें घोट कर गोली बना लो। इस गोलीके रातको भगमें रखनेसे योनि सुकड़ जाती है।

नोट—नं० १५, १६ और १८ के नुसखे हमारे एक मित्र अपने आजमूदा कहते हैं।

(१९) वेरीकी जड़की छाल, कनेरकी जड़की छाल, लोध, माजूफल, पद्मकाठ, बिसौंटेकी जड़, कपूर और फिटकरी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और फिर इस चूर्णको योनिमें रखो। इस चूर्णसे योनि सिकुड़ जाती है।

(२०) बिसौंटेकी जड़, फिटकरी, लोध, आमली, वेरकी गुठली की मींगी और माजूफल,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान लो। इस चूर्णको योनिमें रखनेसे योनि सिकुड़ जाती है।

(२१) जामुनकी जड़की छाल, लोध और धायके फूल, इन सब को पीस कर, "शहद" में मिला लो और योनिमें लेप करो। इससे अवश्य योनि सिकुड़ जाती है।

(२२) अकेली छालसे योनिको धोओ। इस उपायसे योनि साफ होकर सिकुड़ जाती है।

नोट—अमलताशके बडे पेड़की जड़की छाल और भाँगको धतूरेके रसमें पीस कर गोली बना लो और छायामें सुखा लो। इन गोलियोंको अपने पेशाबमें घिसकर लिंगपर लेप करो। इससे लिंग दीर्घ, पुष्ट और कड़ा हो जायगा।

असगन्ध, कूट, चित्रक और गजपीपल—इनको पीसकर, भैंसके घीमें मिला लो और लिंगपर लेप करो। इससे लिंग खूब पुष्ट हो जायगा।

मैनसिल, सुहागा, कूट, इलायची और मालतीके पत्तोंका रस, इन सबको कुचल कर तिलके तेलमें डाल कर पकाओ। इस तेलको लिंगपर मलनेसे लिंग कड़ा हो जायगा।

(२३) भाँगकी पोटली बनाकर, योनिमें ३।४ घण्टे रखनेसे, सौ बारकी प्रसूता नारीकी योनि भी कन्याकी सी हो जाती है। "वैद्यरत्न" में कहा है:—

भंगा पोटालिकां दत्वा प्रहरं काममन्दिरे।
शतवारं प्रसूतापि पुनर्भवति कन्यका॥

(२४) मोचरसको पीस-छान कर, योनिमें ३।४ घण्टे तक लगा रखनेसे, सौ बच्चा जनने वालीकी योनि भी सुकड़ जाती है। "वैद्य-रत्न" में ही लिखा है:—

मोचरससूक्ष्मचूर्णं क्षिप्तं योनौ स्थितं प्रहरम्।
शतवार प्रसूताया अपि योनि सूक्ष्मरन्ध्रास्यात्॥

(२५) देवदारु और शारिवाको "घी" में मिलाकर लेप करने से शिथिल योनि भी कड़ी हो जाती है।

(२६) कूट, धायके फूल, बड़ी हरड़, फूली फिटकरी, माजू-फल, हाऊबेर, लोध और अनारकी छाल, इनको पीस कर और शराबमें मिला कर लेप करनेसे योनि दृढ़ हो जाती है।

———:०:———

लोमनाशक नुसख़े ।

(बाल उड़ानेके उपाय)

(१) बालोंको उखाड़ कर, उस जगह थूहरका दूध लगा देनेसे बाल नहीं आते ।

(२) कलीका चूना, मुर्गेकी बीट, संखला (शृङ्खला), धतूरेका रस और घोड़ेका पेशाब—इन सबको मिला कर, बालोंकी जगह लेप करनेसे बाल उड़ जाते हैं ।

(३) कपूर, भिलावे, शंखका चूर्ण, सज्जीखार, अजवायन और अजमोद—इन सबको तेलमें पकाकर "हरताल" पीस कर मिला दो। इस तेलके लगानेसे क्षण-भरमें ही बाल गिर जाते हैं ।

(४) शंखकी राख करके, उसे केलेके डंठलके रसमें मिला दो। पीछे पीस कर बराबरकी हरताल मिला दो। इस दवाके लेपसे गुदा आदिके रोम या बाल नष्ट हो जाते हैं ।

(५) रक्तांजनाकी पुच्छके चूर्णमें सरसोंका तेल मिलाकर सात दिन रख दो। फिर इसका लेप करो। इस तेलसे बालोंका नाश हो जाता है, इसमें शक नहीं।

(६) कसूमके तेलकी मालिश करनेसे ही बाल उड़ जाते हैं ।

(७) अमलताशकी जड़ ४ तोले, शंखका चूर्ण २ तोले, हरताल २ तोले और गधेका पेशाब ६४ तोले,—इनके साथ कड़वा तेल पका-कर रख लो। इस तेलका लेप करनेसे बाल उड़ जाते और फिर नये पैदा नहीं होते। इसे "आरग्वधादि तैल" कहते हैं ।

(८) कपूर, भिलावे, शंखका चूर्ण, जवाखार, मैनसिल और हरताल—इनमें पकाया हुआ तेल क्षण-भरमें बालोंको उड़ा देता है। इसका नाम "कर्पूरादि तैल" है। "चक्रदत" में कहा है:—

कर्पूर भल्लातक शंखचूर्णं क्षारो यावनां च मनःशिला च ।
तैलं विपक्वं हरितालमिश्रं रोमाणि निर्मूलयति क्षणेन ॥

नोट—कपूरादि पाँच दवाओंको, पानीके साथ सिलपर पीस कर, लुगदी बना लो, फिर तेल पकालो। तेल पक जानेपर, इस तेलमें "हरताल" पीस कर मिला दो और बालोंकी जगह लेप करो—यही मतलब है।

(९) सीपी, छोटा शंख, बड़ा शंख, पीली लोध, घंटा और पाटली-वृक्ष—इन सबको जलाकर क्षार बना लो। इस क्षारमें गधेका पेशाब डाल कर घोटो और जितना क्षार हो उसका पाँचवाँ भाग "कड़वा तेल" मिला दो और आग पर पकालो।

यह "क्षार तैल" आत्रेय मुनिका पूजित और महलोंमें देने योग्य है। जहाँ इसकी एक बूँद गिर जाती है, वहाँ बाल फिर पैदा नहीं होते। इससे बवासीरके मस्से, दाद, खाज और कोढ़ प्रभृति भी आराम हो जाते हैं।

(१०) शंखका चूर्ण दो भाग और हरताल एक भाग,—इन दोनोंको एकत्र पीसकर लेप करनेसे बाल गिर जाते हैं।

(११) कसूमका तेल और थूहरका दूध—दोनोंको मिलाकर लेप करनेसे बाल गिर जाते हैं।

(१२) केलेकी राख और श्योनाकके पत्तोंकी राख, हरताल, नमक और छोंकरेके बीज—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे बाल गिर जाते हैं।

(१३) हरताल १ भाग, शंखका चूर्ण ५ भाग और ढाककी राख १ भाग—इन सबको मिलाकर लेप करनेसे बाल गिर जाते हैं।

(१४) कनेरकी जड़, दन्ती और कड़वी तोरई—इन सबको पीस कर, केलेके खार द्वारा तेल पकाओ। यह तेल बाल गिरानेमें उत्तम है। इसे "करवीराद्य तैल" कहते हैं।

(१५) शंखकी राख ६ माशे, हरताल ४॥ माशे, मैनसिल २। माशे और सज्जी-खार ४॥ माशे, इनको जलमें पीसकर बालोंपर लगाओ और बालोंको उखाड़ो। सात बार लगानेसे बालोंकी जड़ ही नष्ट हो जाती है।

(१६) बिना बुझा चूना और हरताल,—दोनोंको बराबर-बराबर लेकर बालोंपर मलो। चूना ज़ियादा होगा तो जल्दी लाभ होगा; यानी बाल जल्दी गिरेंगे। कोई-कोई इसमें थोड़ी-सी अण्डेकी सफेदी भी मिलाते हैं। इसके मिलानेसे जलन नहीं होती।

(१७) जली-सीप, जली गंच और हरताल मिलाकर लगानेसे बाल उड़ जाते हैं।

नोट—"तिब्बे अकबरी" में लिखा है,—गुप्त स्थानके बाल न गिराने चाहिएँ। इससे हानि हो सकती है और काम-शक्ति तो कम हो ही जाती है। गुप्त स्थान के बाल छुरे या उस्तरे से मूँड़नेसे लिंग पुष्ट होता और कामशक्ति बढ़ती है। इसके सिवा और भी अनेक लाभ होते हैं।
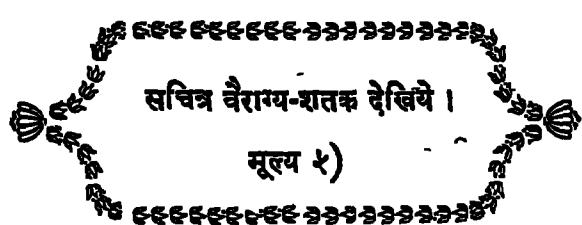
नष्टार्त्तव-चिकित्सा।

...न्द हुए रजोधर्मकी चिकित्सा।

रजोधर्मसे लाभ।

संसारकी सभी स्त्रियाँ हर महीने रजस्वला होती हैं; यानी हर महीने, उनकी योनिसे रज या एक प्रकारका खून रिस-रिस कर निकला करता है। इसीको रजोधर्म होना, मासिक-धर्म होना या रजस्वला होना कहते हैं। यह रजोधर्म स्त्रियों में बारह वर्षकी अवस्थाके बाद आरम्भ होता और पचास सालकी उम्र तक होता रहता है। वाग्भट्ट महोदय कहते हैं:—

मासि मासि रजः स्त्रीणां रसजं स्रवति त्र्यहम्।
वत्सराद्द्वादशादूर्ध्वं याति पचाशतः क्षयम्॥

महीने-महीने स्त्रियोंके रससे रज बनता है और वही रज, तीन दिन तक, हर महीने उनकी योनिसे झरता है। यह रजःस्राव या रजोधर्म बारह वर्षकी उम्रसे ऊपर होने लगता और पचास सालकी उम्र तक होता रहता है; इसके बाद नहीं होता; यानी बन्द हो जाता है।

यह रजका गिरना तीन दिन तक रहता है, पर जिस रहम या गर्भाशयसे यह रज या आर्त्तव अथवा खून निकलकर बाहर बहता है, वह सोलह दिनों तक खुला रहता है। इसीसे ऋतुकाल सोलह दिन का माना गया है। इसी ऋतुकालके समय, स्त्री-पुरुषके परस्पर मैथुन करनेसे, गर्भ रह जाता है। मतलब यह कि, इसी ऋतुकालमें गर्भ रहता है। गर्भ रहनेके लिये स्त्रीका रजस्वला होना जरूरी है, क्योंकि रज गिरनेके लिये गर्भाशयका मुँह खुल जाता है और वह सोलह दिन तक खुला रहता है। इस समय, मैथुन करनेसे, पुरुषका वीर्य गर्भा-

शयके अन्दर जाता है और वहाँ रजसे मिलकर गर्भका रूप धारण करता है। अगर सोलह दिनके बाद मैथुन किया जाता है, तो गर्भ नहीं रहता; क्योंकि उस समय गर्भाशयका मुँह बन्द हो जाता है। रजोधर्म होनेके १६ दिन बाद मैथुन करनेसे, पुरुषका वीर्य योनिके और हिस्सोंमें गर्भाशयसे बाहर—गिरता है। उस दशामें गर्भ रह नहीं सकता। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

आर्त्तवस्रावदिवसादृतुः षोडशरात्रयः।
गर्भग्रहणयोग्यस्तु स एव समयः स्मृतः॥

आर्त्तव गिरने या रजःस्राव होनेके दिनसे सोलह रात तक स्त्री "ऋतुमती" रहती है। गर्भ ग्रहण करने-योग्य यही समय है।

जो बात हमने ऊपर लिखी है, वही बात यह है। स्त्रीके गर्भाशय का मुँह रजोधर्म होनेके दिनसे सोलह रात तक खुला रहता है। इतने समयको "ऋतुकाल" और इतने समय तक यानी सोलह दिन तक स्त्रीको "ऋतुमती" कहते हैं। इसी समय वह पुरुषका संसर्ग होनेसे गर्भ धारण कर सकती है; फिर नहीं। बादके चौदह दिनोंमें गर्भ नहीं रहता, इसीसे बहुत सी चतुरा वेश्या अथवा विधवा स्त्रियाँ इन्हीं चौदह दिनोंमें पुरुष-संग करती हैं।

पिताका वीर्य और स्त्रीका आर्त्तव गर्भके बीज हैं। बिना दोनोंके मिले गर्भ नहीं रहता। अनजान लोग समझते हैं, कि केवल पुरुषके वीर्यसे गर्भ रहता है, यह उनकी ग़लती है। बिना दो चीज़ोंके मिले तीसरी चीज पैदा नहीं होती, यह संसारका नियम है। जब वीर्य और रज मिलते हैं, तभी गर्भोत्पत्ति होती है। वाग्भट्टजी कहते हैं:—

शुद्धे शुक्रार्त्तवे सत्त्वः स्वकर्मक्लेशचोदितः।
गर्भः सम्पद्यते युक्तिवशादग्निरिवारणौ॥

जिस तरह अरणीको मथनेसे आग निकलती है, उसी तरह स्त्री-पुरुषकी योनि और लिंगकी रगड़से—वीर्य और आर्त्तवके

मिलनेसे—अपने कर्म रूपी क्लेशोंसे प्रेरित हुआ जीव गर्भका रूप धारण करता है ।

"भावप्रकाश" में लिखा है:—

कामान्मिथुन-संयोगे शुद्धशोणितशुक्रजः ।
गर्भः संजायते नार्य्याः स जातो बाल उच्यते ॥

जब स्त्री-पुरुष दोनों कामदेवके वेगसे मतवाले होकर आपसमें मिलकर मैथुन करते हैं, तब शुद्ध रुधिर और शुद्ध वीर्यसे स्त्रीको गर्भ रहता है । वही गर्भ पैदा होकर—योनिसे बाहर निकाल कर—बालक कहलाता है ।

और भी लिखा है:—

ऋतौ स्त्रीपुंसयोर्योगे मकरध्वजवेगतः ।
मेढ्रयोन्याभिसघर्षाच्छरीरोष्मानिलाहतः ॥
पुंसः सर्वशरीरस्थं रेतोद्रावयतेऽथ तत् ।
वायुर्मेहनमार्गेण पात्यत्यंगनाभगे ॥
तत् सश्रात्य व्यात्तमुखं याति गर्भाशयं प्रति ।
तत्र शुक्रंवदाथातेनार्त्तवेन युतं भवेत् ॥
शुक्रार्त्तवसमाश्लेषो यदैव खलु जायते ।
जीवस्तदैव विशति युक्तः शुक्रार्त्तवान्तरः ॥

काम-वेगसे मस्त होकर, ऋतुकालमें, जब स्त्री पुरुष आपसमें मिलते हैं—मैथुन-कर्म करते हैं—तब लिंग और योनिके आपसमें रगड़ खानेसे, शरीरकी गरमी और वायुके ज़ोरसे, पुरुषोंके शरीरसे वीर्य द्रवता है । उसको वायु या हवा, लिंगकी राहसे, स्त्रीकी योनिमें डाल देती है । फिर वह वीर्य खुले मुँह वाले गर्भाशयमें बहकर जाता और वहाँ स्त्रीके रजमें मिल जाता है । जब वीर्य और रजका संयोग होता है; जब वीर्य और रज गर्भाशयमें मिलते हैं, तब उन मिले हुए वीर्य और रजमें "जीव" आ घुसता है । जिस तरह सूरजकी किरणों

और सूर्यकान्त मणिके मिलनेसे आग पैदा होता है; उसी तरह वीर्य और आर्त्तव—रज—के मिलनेसे "जीव" पैदा होता है।

इतना लिखनेका मतलब यह है कि, गर्भ रहनेके लिये स्त्रीका ऋतुमती होना परमावश्यक है। जिस स्त्रीको महीने-महीने रजोधर्म नहीं होता, उसे गर्भ रह नहीं सकता। यद्यपि स्त्रियाँ प्रायः तेरहवें सालसे रजस्वला होने लगती हैं; पर अनेक कारणोंसे उनका रजोधर्म होना बन्द हो जाता या ठीक नहीं होता। जिनका रजोधर्म बन्द या नष्ट हो जाता है, वे गर्भ धारण नहीं कर सकतीं, इसीसे कहा है—"बन्ध्या नष्टार्त्तवा ज्ञेया" जिसका रज नष्ट हो गया है, वह बाँझ है, क्योंकि "गर्भोत्पत्तिभूमिस्तुरजस्वला" यानी रजस्वला स्त्री को ही गर्भ रहता है।

यद्यपि बाँझ होनेके और भी बहुतसे कारण हैं। उन्हें हम दत्ता-त्रयी प्रभृति ग्रन्थोंसे आगें लिखेंगे; पर सबसे पहले हम "नष्टार्त्तव" या मासिक बन्द हो जानेके कारण और इलाज लिखते हैं, क्योंकि शुद्ध साफ रजोधर्म होना ही स्त्रियोंके स्वास्थ्य और कल्याणकी जड़ है। जिन स्त्रियोंको रजोधर्म नहीं होता, उनको अनेक रोग हो जाते हैं और वे गर्भको तो धारणकर ही नहीं सकतीं।

प्रकृति, अवस्था और बलसे कम या जियादा रक्तका जाना अथवा तीन दिनसे ज़ियादा खूनका झिरता रहना—रोग समझा जाता है। अगर किसी स्त्रीको महीनेसे दो चार दिन चढ़कर रजोधर्म हो, ज़रा सा खून धोतीके लगकर फिर बन्द हो जाय, पेड़ू में पीड़ा होकर खूनकी गाँठ सी गिर पड़े अथवा एक या दो दिन खून गिरकर बन्द हो जायँ, तो समझना चाहिये कि शरीरका खून सूख गया है—खून की कमी है। अगर तीन दिनसे जियादा खून गिरे या दूसरा महीना लगनेके दो चार दिन पहले तक गिरता रहे, तो समझना चाहिये कि खूनमें गरमी है। अगर खून सूख गया हो या कम हो गया हो, तो

खून बढ़ाने वाली दवायें या आहार सेवन कराकर खून बढ़ाना चाहिये। अगर जियादा दिनों तक खून पड़ता रहे, तो प्रदर रोगकी तरह इलाज करना चाहिये।

मासिक-धर्म बन्द होनेके कारण।

रजोधर्म बन्द होनेके कारण यूनानी ग्रन्थोंमें विस्तारसे लिखे हैं और वह हैं भी ठीक; अतः हम "तिब्बे अकबरी" और "मीज़ान तिब्ब वगैरःसे उन्हें खूब समझा-समझाकर लिखते हैं:—

तिब्बे अकबरीमें रजोधर्म या हैज़का खून बन्द हो जानेके मुख्य आठ कारण लिखे हैं:—

(१) शरीरमें खूनके कम होने या सूख जानेसे रजोधर्म होना बन्द हो जाता है।

(२) सरदीके मारे खून, गाढ़े दोषोंसे मिलकर, गाढ़ा हो जाता और रजोधर्म नहीं होता।

(३) रहम या गर्भाशयकी रगोंके मुँह बन्द हो जानेसे रजोधर्म नहीं होता।

(४) गर्भाशयमें सूजन आ-जानेसे रजोधर्म होना बन्द हो जाता है।

(५) गर्भाशयके घावोंके भर जानेसे रगोंकी तह बन्द हो जाती है, और फिर रजोधर्म नहीं होता।

(६) गर्भाशयसे रजके आनेकी राहमें मस्सा पैदा हो जाता है और फिर उसके कारणसे रजोधर्म नहीं होता; क्योंकि मस्सेके आड़े आ जानेसे रजको बाहर आनेकी राह नहीं मिलती।

(७) स्त्रीके जियादा मोटी हो जानेकी वजहसे गर्भाशयमें रज आनेकी राहें दब जाती हैं, इससे रजोधर्म होना बन्द हो जाता है।

(८) गर्भाशयके मुँहके किसी तरफ घूम जानेसे रजोधर्म होना बन्द हो जाता है।

प्रत्येक कारणकी पहचान।

पहला कारण।

(१) अगर शरीरमें खूनकी कमी होने या खूनके सूख जानेसे मासिकधर्म होना बन्द हुआ होगा, तो स्त्रीका शरीर कमज़ोर और बदनका रङ्ग पीला होगा।

खूनकी कमीके कारण।

(१) अधिक परिश्रम करना।
(२) भूखा रहना या उपवास करना।
(३) मवाद नाशक रोग होना।
(४) गुलाब प्रभृति ज़ियादा पीना।
(५) शरीरसे खूनका निकलना।

खून बढ़ाने वाले उपाय।

(१) पुष्टिकारक भोजन।
(२) मुर्गीका अधभुना अण्डा।
(३) मोटे मुर्गेका शोरबा।
(४) जवान बकरीका मांस।
(५) दूध, घी और मीठा ज़ियादा खाना।
(६) सोना और आराम करना।
(७) विशेष तरीके स्थानमें नहाना।

सूचना—अगर खून सूख गया हो, कम हो गया हो तो, पहले पुष्टिकारक और रक्तवृद्धिकारक आहार-विहार या औषधियाँ सेवन कराकर, खून बढ़ा लेना चाहिये। इसके बाद मासिक धर्म खोलनेके उपाय करने चाहियें।

नोट—हमारे वैद्यकमें भी रस, रक्त आदि बढ़ाने वाले अनेक पदार्थ लिखे हैं। जैसे—

(१) अनार-प्रभृति खून बढ़ानेवाले फल खाना।
(२) पका हुआ दूध मिश्री मिलाकर पीना।

(३) काली मिर्चोंके साथ पकाया हुआ दूध पीना ।

(४) १५ गोलमिर्चें चबाकर मिश्री मिला गरम दूध पीना ।

(५) एक पाव गरम या कच्चे दूधमें १० माशे घी, ६ माशे शहद, १ तोले मिश्री और १५ दाने गोल मिर्चें—सबको मिलाकर, सवेरे-शाम पीना । यह नुसख़ा परीक्षित है । यह सूखे हुए खून को हरा करता और उसे अवश्य बढ़ाता है।

(६) स्नान करना, खुश रहना और नींद भर सोना ।

शरीरका अधिक दुबला-पतला होना भी एक रोग है । इस विषयमें हम "चिकित्सा चन्द्रोदय" पहले भागके पृष्ठ १६४-१६६ में लिख आये हैं । प्रसंग-वश यहाँ भी दो चार दवाएँ शरीर पुष्ट और मोटा करनेकी लिखते हैं:—

(१) असगन्ध, काली मूसली और सफेद मूसली—इन तीनोको बराबर-बराबर लेकर गायके दूधमें पकाओ । जब दूध सूख जांय, उतारकर धूपमें सुखा लो । फिर सिलपर पीसकर, चूर्णके बराबर शक्कर मिला दो और रख दो । इसमें से, हर दिन दो-अढ़ाई तोले चूर्ण लेकर खाओ और ऊपरसे गायका दूध पीओ । यह नुसख़ा दुबली स्त्रियोंको विशेष कर मोटा करता है । परीक्षित है ।

(२) हर दिन दूधमें रोटी चूरकर खानेसे भी शरीर मोटा होता है ।

(३) मीठे बादामकी मींगी, निशास्ता, कतीरा और शक्कर बराबर-बराबर मिलाकर रख लो । इसमेंसे, तोले भर चूर्ण, दूधके साथ, नित्य खानेसे खून बढ़कर शरीर मोटा होता है ।

दूसरा कारण ।

(२) अगर सर्दीके कारण, खून गाढ़े दोषोंसे मिलाकर, गाढ़ा हुआ होगा और उसकी वजहसे मासिक धर्म होना बन्द हुआ होगा; तो स्त्रीका शरीर सुस्त रहेगा, उसके बदनका रङ्ग सफेद होगा, नसों का रङ्ग नीला-नीला चमकेगा, पेशाब जियादा आवेगा, आमाशयके पचावमें गड़बड़ होनेसे कफ-मिला मल उतरेगा, नींदमें भारीपन होगा और खून-हैज़ या आर्त्तव अगर आवेगा, तो पतला होगा ।

रोग नाशक उपाय ।

(१) मवादको नर्म करनेवाली चीज़ें—पारा प्रभृति युक्तिसे दो, जिससे गाढ़े दोष छूट जायँ ।

(२) अँजमोदके बीज, रूमी सौंफ, पोदीना, सौंफ और पहाड़ी पोदीना,—इनको औटाकर, शहद या कन्दमें माजून बना लो और गाढ़े दोष निकालकर खिलाओ, जिससे खून पतला होकर सहजमें निकल जाय।

(३) सोया, दोनों मरुआ, पोदीना, तुलसी, बाबूना, अकलीलुलमलिक और सातर,—इनका काढ़ा बनाकर योनिको भफारा दो।

(४) बालछड़, दालचीनी, तज, हुब्ब, बिलसाँ, जायफल, छोटी इलायची और कूट प्रभृतिसे, जिसमें इत्र पड़ा हो, सेक करो और इन्हीं खुशबूदार दवाओं को आगपर डाल-डालकर गर्भाशयको धूनी दो।

तीसरा कारण।

(३) अगर गर्भाशयकी रगोंके मुँह बन्द हो जानेसे मासिकधर्म होना बन्द हुआ होगा, तो गर्भाशयमें जलन और खुश्की होगी।

कारण—(१) गर्भाशयमें नर्मी और खुश्की।

(२) अजीर्ण।

उपाय—(१) शीरख़िश्त, सिमाक, घीयाके बीजोंकी मींगी, खुब्बाजी और सौंफको कूटकर, शहद और अण्डेकी जर्दीमें मिला लो। फिर उसे कपड़ेपर ल्हेसकर; स्त्रीके मूत्रस्थानपर कई दिनो तक रखो।

नोट—जिस तरह गर्भाशयकी रगोंके मुँह गरमीसे बन्द हो जाते हैं; उसी तरह गर्भाशयमें सुकेड़नेवाली सरदी पैदा होनेसे भी रगोंके मुँह बन्द हो जाते हैं। यद्यपि दुष्ट प्रकृति गर्भाशयमें पैदा होती है, पर उसके चिह्न सारे शरीरमें प्रकट होते हैं, क्योंकि गर्भाशय श्रेष्ठ अंग है। इस दशामें गर्म और मवाद ग्रहण करने वाली दवा देनी चाहिये, जिससे गर्भाशयमें गरमी पहुँचे; ऐसे नुसखे बाँझ होनेके बयानमें लिखे हैं। "बूलकी टिकिया" गर्भाशय नर्म करनेमें सबसे अच्छी है।

बूल	१०॥ माशे
निर्विष	१७॥ माशे
तुलसीके पत्ते	७ माशे
पोदीना	७ माशे
पहाड़ी पोदीना	७ माशे
मंजीठ	७ माशे
हींग	७ माशे
कुन्दलगोंद	७ माशे
जावशीर	७ माशे

इस नुसखेमें जो चीजें घोलने योग्य हों उन्हें घोल लो और जो कूटने योग्य हों उन्हें कूट लो। फिर टिकिया बना लो। जरूरतके माफिक, इसे "देवदारुके काढ़ेके साथ सेवन कराओ। यह दवा गर्भाशयको नर्म करती है।

उपाय—इस हालतमें, यानी गर्मी और खुश्कीसे रोग होनेकी दशामें, तरी पहुँचाने वाली दवा या गिज़ा दो। ऐसी दवाएँ बाँझ-चिकित्सामें लिखी हैं।

चौथा कारण।

(४) अगर सूजन आजानेकी वजहसे रजका आना बन्द हो गया हो, तो उसका इलाज और पहचान सूजन रोगमें लिखी विधिसे करो।

उपाय—हल्दीको महीन पीसकर और घीमें मिलाकर, उसमें रूईका फाहा तर कर लो और उसका शाफा बनाकर गर्भाशयमें रखो। इस नुसखेसे गर्भाशय की सूजन तो नाश हो ही जाती है, इसके सिवा और भी लाभ होते हैं।

पाँचवा कारण।

(५) अगर गर्भाशयके घाव भर जाने और रगोंकी तह बन्द हो जानेसे मासिक धर्म बन्द हुआ हो, तो इस रोगका आराम होना असम्भव है। पर मासिक बन्द होनेवालीको हानि न हो, इसके लिए उसे फस्द खुलवानी, सदा मवाद निकलवाना और मिहनत करनी चाहिये।

छठा कारण।

(६) अगर गर्भाशयपर मस्सा हो जाने या गर्भाशयके मुँह और छेदपर ऐसी ही कोई चीज़ पैदा हो जानेसे रज आनेकी राह रुक गई और उससे रजोधर्म बन्द हो गया हो या संभोग भी न हो सकता हो, तो उचित इलाज करना चाहिये। ऐसी औरतको जब रजोधर्मका समय होता है, बड़ी तकलीफ़ और खिंचावसा होता है।

उपाय—(१) इलाज मस्सोंकी तरह करो।
(२) फस्द प्रभृति खोलो।

सातवाँ कारण।

(७) अगर अधिक मुटापेकी वजहसे गर्भाशयके मार्ग दब कर बन्द हो गये हों, तो उचित उपाय करो।

उपाय—(१) फस्द खोलो।

(२) शरीरको दुबला करो।

(३) मासिक धर्मके समय पाँवकी रगकी फस्द खोलो।

(४) पेशाब लाने वाली दवाएँ और शर्बत दो।

(५) खानेसे पहले मिहनत कराओ।

(६) बिना कुछ खाये स्नान कराओ।

(७) इतरीफल, सगीर, रूमी सौंफ और गुलकन्द मुफीद हैं।

(८) कफनाशक जुलाब दो।

(९) एक माशे चन्द्रस, दो तोले सिकंजीवन और पानीको साथ मिलाकर पिलाओ। भोजनमें सिरका, मसूर और जौकी रोटी खिलाओ। बबूल की छायामें बैठाओ। राँगेकी अंगूठी पहनाओ। मोटे कपड़े पहनाओ। ज़मीनपर सुलाओ। सरदीमें कुछ देर नंगी रखो। कम सोने दो। कुछ चिन्ता लगाओ। इसमेंसे प्रत्येक उपाय मोटे शरीरको दुबला करने वाला है। परीक्षित उपाय हैं।

नोट—अगर गरमी हो, तो गरम चीज काममें न लाओ।

आठवाँ कारण।

(८) गर्भाशय किसी तरफ़को फिर गया हो और इससे मासिकधर्म न होता हो, तो "बन्ध्या चिकित्सा" में लिखा हुआ उचित उपाय करो।

अन्य ग्रन्थोंसे कारण और पहचान।

(१) अगर गर्भाशयमें गरमीसे ख़राबी होगी, तो हैज़का खून या मासिक रक्त काला और गाढ़ा होगा और उसमें गरमी भी होगी।

(२) अगर शीतकी वजहसे खराबी होगी, तो हैज़का खून या आर्त्तव देरसे और बिना जलनके निकलेगा।

(३) अगर खुश्कीसे रोग होगा; तो पेशाबकी जगह—योनि-सूखी रहेगी और हैज़ कम होगा; यानी मासिक रक्त कम गिरेगा।

(४) अगर तरीसे रोग होगा, तो रहम या गर्भाशयसे तरी निकला करेगी। ऐसी स्त्रीको तीन महीनेसे ज़ियादा गर्भ न रहेगा।

(५) अगर मवादकी वजहसे रोग होगा, तो उस मवादकी पहचान उसी तरीक़े होगी, जो रहम या गर्भाशयसे बह-बह कर आती होगी।

(६) अगर शरीरके बहुत मोटे होनेके कारणसे रजोधर्म न होता होगा या गर्भ न रहता होगा, तो स्त्रीको दुबली करनेके उपाय करने होंगे।

(७) अगर अधिक दुबलेपनसे मासिक धर्म न होता होगा या गर्भ न रहता होगा, तो स्त्रीको खून बढ़ानेवाले पदार्थ खिला कर मोटी करनी होगी।

(८) अगर गर्भाशयमें सूजन आ जाने या मस्सा हो जाने या और कोई चीज आड़ी आ जानेसे गर्भ न रहता हो या मासिक खून बाहर न आ सकता हो, तो उनकी यथोचित चिकित्सा करनी चाहिये।

(९) अगर गर्भाशयमें गाढ़ी वायु जमा हो गई होगी और इससे मासिक धर्म न होता होगा, तो पेडू फूला रहेगा और सम्भोगके समय पेशाबकी जगहसे आवाज़के साथ हवा निकलेगी।

उपाय—वायु नाशक दवा दो। पेडू पर वारे लगाओ। रोगन बेदहंजीर १०॥ माशे माउल अमूलमें मिलाकर पिलाओ।

(१०) अगर रहम या गर्भाशयका मुँह सामनेसे हट गया होगा और इससे रजोधर्म न होगा या गर्भ न रहता होगा, तो सम्भोगके समय योनिमें दर्द होता होगा।

(११) जब भगके मुखपर या उसके और गर्भाशयके मुँहके बीचमें अथवा गर्भाशयके मुँहपर कोई चीज़ बढ़कर आड़ी आ जाती है, तब मासिक खून बाहर नहीं आता। हाँ, पुरुष उस स्त्रीसे मैथुन कर सकता है। अगर योनिके मुँहपर ही कोई चीज़ आड़ी आ जाती है, तब तो लिङ्ग भीतर जा नहीं सकता। इस रोगको "रतक़" कहते हैं।

उपाय—बढ़ी हुई चीजको नश्तरसे काट डालो और घावको मरहमसे भर दो।

मासिक धर्म न होने से हानि।

स्त्रीको महीना-महीना रजोधर्म न होनेसे नीचे लिखे रोग हो जाते हैं:—

(१) गर्भाशयका भिचना।

(२) गर्भाशय और भीतरी अंगोंका सूजना।

(३) आमाशयके रोगोंका होना। जैसे, भूख न लगना, अजीर्ण, जी मिचलाना, प्यास और आमाशयकी जलन।

(४) दिमाग़ी रोगोंका होना। जैसे,—मृगी, सिरदर्द, मालिखोलिया या उन्माद और फालिज वगैरः।

(५) सीने या छातीके रोग होना। जैसे, खाँसी और श्वासका तंग होना।

(६) गुर्दे और जिगरके रोग। जैसे, जलन्धर।

(७) पीठ और गर्दनका दर्द।

(८) आँख, कान और नाकका दर्द।

(९) एक तरहका पित्तज्वर।

डाक्टरीसे निदान—कारण।

अँगरेज़ीमें रजोधर्मको "ऐमेनोरिया" कहते हैं। डाक्टरी-मतसे यह तीन तरहका होता है:—

(१) जिसमें खून निकलता ही नहीं।

(२) जिसमें कम या ज़ियादा खून निकलता है।

(३) जिसमें रजोधर्म तकलीफके साथ होता है। इसको "डिसमेनेरिया" कहते हैं।

कारण।

(१) जिसमें खून आता ही नहीं, उसके कारण नीचे लिखे अनुसार हैं:—

(क) बहुत चिन्ता या फिक्र करना।

(ख) चोट लगना।

(ग) ज्वर या कोई और बड़ा रोग होना।

(घ) सर्दी लगना या गला रह जाना।

(ङ) क्षय-कास होना।

(च) बहुत दिनों बाद पति-संग करनेसे दो तीन महीनेको रज गिरना बन्द हो जाना।

(२) जिसमें कम या ज़ियादा खून गिरता है, उसके कारण ये हैं:—

(क) जिस स्त्रीके ज़ियादा औलाद होती हैं और जो बहुत दिनों तक दूध पिलाती रहती है, उसके अधिक खून गिरता है। इस रोगमें कमज़ोरी, थकान आलस्य, कमर और पेड़ूमें दर्द और मुँहका फीकापन होता है।

(३) जिसमें रजोधर्म कष्टसे होता है, उसमें ऋतुकालके ३।४ दिन पहले, पीठके बाँसेमें दर्द होता है, आलस्य बेचैनी और वेदना,—ये लक्षण नज़र आते हैं।

मासिक धर्म पर होमियोपैथी का मत।

होमियोपैथीवालोंने मासिकधर्म बन्द हो जानेके नीचे लिखे कारण लिखे हैं:—

(१) गर्भ रहना।

(२) बहुत रजःस्राव होना।

(३) नये पुराने रोग।

(४) अधिक मैथुन।

(५) ऋतुकालमें गीले वस्त्र पहनना।

(६) बर्फ खाना या और कोई शीतल आहार-विहार करना।

(७) अत्यधिक चिन्ता।

इसके सिवा २।३ मास तक ठीक ऋतुधर्म होकर, फिर दो एक दिन चढ़-उतर कर होता है। इसका कारण—कमज़ोरी और

आलस्य है। एक प्रकारके रजोधर्ममें थोड़ा या बहुत खून तो गिरता है; पर माथेमें दर्द, गालोंपर लाली, हृदय काँपना और पेट भारी रहना,—ये लक्षण होते हैं। इसमें रजोधर्म होते समय तकलीफ होती है और यह तकलीफ रजोधर्मके चार-पाँच दिन पहलेसे शुरू होती है और रजोधर्म होते ही बन्द हो जाती है। इसका कारण कोष्टबद्ध या क़ब्ज़ है।

एक कृत्रिम या बनावटी ऋतु भी होती है। इसमें रज गिरती या थोड़ी गिरती है। लारके साथ खून आता है। खूनकी क़य होतीं और योनिसे सफेद पानी निकलता अथवा रजके एवज़में कोई दूसरा पदार्थ निकलता है।

शुद्ध आर्त्तवके लक्षण।

"बङ्गसेन" में लिखा है—जो आर्त्तव महीने-महीने निकले, जिस में चिकनापन, दाह और शूल न हों, जो पाँच दिनों तक निकलता रहे, न बहुत निकले और न थोड़ा—ऐसा आर्त्तव शुद्ध होता है।

जो आर्त्तव ख़रगोशके खूनके समान लाल हो एवं लाखके रस के जैसा हो और जिसमें सना हुआ कपड़ा जलमें धोनेसे बेदाग़ हो जाय, उसको शुद्ध आर्त्तव कहते हैं।

मासिक धर्म जारी करने वाले नुसखे।

(१) काले तिल ३ माशे, त्रिकुटा ३ माशे और भारंगी ३ माशे—इन सबका काढ़ा बनाकर, उसमें गुड़ या लाल शक्कर मिला कर, रोज़ सवेरे-शाम, पीनेसे मासिक धर्म होने लगता है।

नोट—अगर शरीरमें खून कम हो, तो पहले द्राक्षावलेह, माषादि मोदक, दूध, घी, मिश्री, बालाईका हलवा प्रभृति ताकतवर और खून बढ़ाने वाले पदार्थ

खिलाकर, तब ऊपरका काढ़ा पिलानेसे जल्दी रजोधर्म होता है । ऐसी रोगिणीको उड़द, दूध, दही और गुड़ प्रभृति हित हैं । इनका ज़ियादा खाना अच्छा । रूखे पदार्थ न खाने चाहियें । यह नं० १ नुसख़ा परीक्षित है ।

(२) माल-काँगनी, राई, * विजयसार-लकड़ी और दूधिया-बच—इन चारोंको बराबर-बराबर लेकर और कूट-पीस कर कपड़े में छान लो । इसकी मात्रा ३ माशेकी है । समय—सवेरे-शाम है । अनुपान—शीतल जल या शीतल—कच्चा दूध है ।

नोट—भावप्रकाशमें "शीतेन पयसा" लिखा है । इसका अर्थ शीतल जल और शीतल दूध दोनों ही है । पर हमने बहुधा शीतल जलसे सेवन कराकर लाभ उठाया है । याद रखो, गरम मिज़ाजवाली स्त्रीको यह चूर्ण फायदा नहीं करता । गरम मिज़ाजकी स्त्रीको खून बढ़ाने वाले दूध, घी, मिश्री या अनार प्रभृति खिलाकर खून बढ़ाना और योनिमें नीचे लिखे नं० ३ की बत्ती रखनी चाहिये । मासिकधर्म न होने वालीको मछली, काले तिल, उड़द, और सिरका प्रभृति हितकारी हैं । गरम प्रकृति होनेसे माहवारी खून सूख जाता है, तब वह स्त्री दुबली हो जाती है, शरीरमें गरमी लखाती है एवं खूनकी कमीके और लक्षण भी दीखते हैं । इस दशामें खून बढ़ानेवाले पदार्थ खिलाकर औरतको पुष्ट करना चाहिये, पीछे मासिक खोलनेकी चेष्टा करनी चाहिये ।

(३) कड़वी तुम्बीके बीज, दन्ती, बड़ी पीपर, पुराना गुड़, मनफल, सुराबीज और जवाखार—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । फिर इस चूर्णको "थूहरके दूध" में पीस कर छोटी अँगुलीके समान बत्तियाँ बनाकर छायामें सुखा लो । इनमेंसे एक बत्ती रोज़ गर्भाशयके मुख या योनिमें रखनेसे मासिक धर्म खुल जाता है । परीक्षित है ।

नोट—नं० २ नुसख़ा खिलाने और इस बत्तीको योनिमें रखनेसे, ईश्वरकी दयासे, सात दिनमें ही रजोधर्म होने लगता है अनेक बार परीक्षा की है । अगर खून सूख गया हो, तो पहले खून बढ़ाना चाहिये । अनार खिलाना बहुत मुफीद

* भावप्रकाशमें मालकाँगनीके पत्ते, सज्जीखार, विजयसार और बच,—ये चार दवाएँ लिखी हैं ।

है। शराब खिंच जानेके बाद देग या भबकेमें जो तलछट नीचे रह जाती है, उसे ही "सुराबीज" कहते हैं, यह कलारीमें मिलती है। इस बत्तीमें कोई जवाखार लिखते हैं और कोई मुलहटी।

(४) घरमें बहुत दिनोंकी बँधी हुई आमके पत्तोंकी बन्दनवारको जलमें पका कर, उस जलको छान कर, पीनेसे नष्ट हुआ रजोधर्म फिर होने लगता है।

(५) लाल गुड़हलके फूलोंको, काँजीमें पीस कर, पीनेसे रजोदर्शन होने लगता है।

(६) मालकाँगनीके पत्ते भून कर, काँजीके साथ पीस कर पीनेसे रजोधर्म होता है।

(७) कमलकी जड़को पीस कर खानेसे रजोधर्म होता है।

(८) सुराबीजको शीतल जलके साथ पीनेसे स्त्रियोंको रजोधम होता है।

(९) जवारिश-कलौंजी सेवन करनेसे रजोधर्म जारी होता और दर्द-पेट भी आराम हो जाता है। हैज़का खून जारी करने, पेशाब लाने और गर्भाशयकी पीड़ा आराम करनेमें यह नुसखा उत्तम है। कई बार परीक्षा की है।

(१०) काला जीरा दो तोले, अरण्डीका गूदा आध पाव और सोंठ एक तोला,—सबको जोश देकर पीस लो और पेट पर इसका सुहाता-सुहाता गरम लेप कर दो। कई रोज़में, इस नुसख़ेसे रजोधर्म होने लगता और नलोका दर्द मिट जाता है।

(११) थोड़ा सा गुड़ लाकर, उसमें ज़रा-सा घी मिला दो और एक कलछीमें रख कर आग पर तपाओ। जब पिघल कर बत्ती बनाने लायक़ हो जाय, उसमें ज़रा सा "सूखा बिरौजा" भी मिला दो और छोटी अँगुली-समान बत्ती बना लो। इस बत्तीको गर्भाशयके मुँह या धरनमें रखनेसे रजोधर्म या हैज़ खुल कर होता है।

(१२) मालकाँगनीके पत्ते और विजयसार लकड़ी,—इन दोनोंको दूधमें पीस-छान कर पीनेसे रुका हुआ मासिक फिर खुल जाता है।

(१३) काले तिल, सोंठ, मिर्च, पीपर, भारङ्गी और गुड़—सब दवाएँ समान-समान भाग लेकर, दो तोलेका काढ़ा बनाकर, बीस दिन तक पिया जाय, तो निश्चय ही रुका हुआ मासिक खुल जाय एवं रोग नाश होकर पुत्र पैदा हो।

(१४) योगराज गुग्गुल सेवन करनेसे भी शुक्र और आर्त्तवके दोष नष्ट हो जाते हैं।

(१५) अगर मासिक धर्म ठीक समयसे आगे-पीछे होता हो, तो ख़राबी समझो। इससे कमज़ोरी बहुत होती है। इस हालतमें छातियोंके नीचे "सींगी" लगवाना मुफीद है।

(१६) कपासके पत्ते और फूल आध पाव लाकर, एक हाँडीमें एक सेर पानीके साथ जोश दो। जब तीन पाव पानी जल कर एक पाव जल रह जाय, उसमें चार तोले "गुड़" मिला कर छान लो और पीओ। इस तरह करनेसे मासिक धर्म होने लगेगा।

(१७) नीमकी छाल दो तोले और सोंठ चार माशे; इनको कूट-छान कर, दो तोले पुराना गुड़ मिलाकर, हाँड़ीमें, पाव-डेढ़ पाव पानी डाल कर, मन्दाग्निसे जोश दो, जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो और पीओ। इस नुसखेके कई दिन पीनेसे खून-हैज या रजोधर्म जारी होगा। परीक्षित है।

(१८) काले तिल और गोखरू दोनों तोले-तोले भर लेकर, रात को हाँडीमें जल डाल कर भिगो दो। सवेरे ही मल कर शीरा निकाल लो। उस शीरेमें २ तोले शक्कर मिला कर पी लो। इस नुसख़ेके लगातार सेवन करनेसे खून हैज जारी हो जायगा; यानी बन्द हुआ आर्त्तव बहने लगेगा। परीक्षित है।

(१९) मूलीके बीज, गाजरके बीज और मेथीके बीज—इन

तीनोंको छटाँक-छटाँक भर लाकर, कूट-पीस और छानकर रख लो। इस चूर्णमेंसे हथेली-भर चूर्ण फाँककर, ऊपरसे गरम जल पीनेसे खून—हैज़ जारी हो जाता, यानी रजोधर्म होने लगता है। परीक्षित है।

नोट—इस नुसख़ेको तीन-चार दिन लेनेसे खून—हैज़ जारी होता और रहा हुआ गर्भ भी गिर जाता है। परीक्षित है।

(२०) काँडवेलको गरम राख या भूभलमें भूनकर, उसका दो तोले रस निकाल लो और उसमें उतना ही घी तथा एक तोले "गोपी-चन्दनका चूर्ण" एवं एक तोले "मिश्री" मिलाकर पीओ। इससे औरतोंके रज-सम्बन्धी सभी दोष दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२१) बिनौलेके तेलमें—एक या दो माशे इलायची, ज़ीरा, हल्दी और सेंधानोन मिलाकर, छोटी अँगुलीके बराबर बत्ती या गोली बनाकर, महीन कपड़ेमें उसे लपेटकर, चौथे दिनसे स्त्री उस पोटली को योनिमें बराबर रखेगी, तो नष्टपुष्प या नष्टार्त्तव फिरसे जी जायगा, रजोधर्म होने लगेगा। रजोधर्म ठीक समयपर न होता होगा, कम-अधिक दिनोंमें—महीनेसे चढ़-उतर कर होता होगा तो ठीक समयपर खुलकर होने लगेगा। परीक्षित है।

(२२) खिरनीके बीजोंकी मींगी निकालकर सिलपर पीस लो। फिर एक महीन वस्त्रमें रखकर, उस पोटलीको स्त्रीकी योनि में कई दिन तक रखाओ। पोटली रोज़ ताज़ा बनाई जाय। इस पोटलीसे ऋतुकी प्राप्ति होगी, यानी बन्द हुआ मासिक धर्म फिरसे होने लगेगा। परीक्षित है।

(२३) खीरेतीके फलोंका चूर्ण "नारियलके स्वरस"में मिलाकर एक या तीन दिन देनेसे ही रजोधर्म होने लगता है। परीक्षित है।

नोट—खीरेती नाम मरहटी है। संस्कृतमें इसे "फल्गु" कहते हैं। यह पेड़ बहुत होता है। इसके पत्तोंपर आरीके-से दाँते होते हैं। कोंकन देशमें इसके पत्तों से लकड़ी साफ करते हैं, क्योंकि इनसे लकड़ी चिकनी हो जाती है। कटुम्बरके फल और पत्ते-जैसे ही खीरेतीके फल और पत्ते होते हैं।

(२४) गाजरके बीज सिलपर पीसकर, पानीमें छान लो और स्त्रीको पिलाओ। इस नुसखेसे बन्द हुआ मासिक होने लगेगा। परीक्षित है।

(२५) तितलौकी, साँपकी काँचली, घोषालता, सरसों और कड़वा तेल—इन पाँचोंको आगपर डाल-डालकर, योनिमें धूनी देने से, उचित समयपर रजोदर्शन होने लगता है। परीक्षित है।

नोट—अँगुलीमें बाल लपेटकर गलेमे घिसनेसे भी अनेक बार रजोदर्शन होते देखा गया है।

(२६) जिन स्त्रियोंका पुष्प जवानीमें ही नष्ट हो जाय—रजोधर्म बन्द हो जाय—उन्हें चाहिये कि "इन्द्रायणकी जड़"को सिल पर जलके साथ पीसकर, छोटी अँगुली-समान बत्ती बनालें और उस बत्तीको योनि या गर्भाशयके मुखमें रखें। इस नुसखेसे कई दिनमें खुलकर रजोधर्म होने लगेगा। परीक्षित है।

नोट—(१) इस योगसे विधवाओंका रहा हुआ गर्भ भी गिर जाता है। इस कामके लिये यह नुसखा परमोत्तम है। "वैद्यजीवन" मे लिखा है:—

मूलगवाद्याः स्मरमन्दिरस्थं, पुष्पावरोधस्य बध करोति।
अभर्तृकानां व्यभिचारिणीनां, योगो यमेव द्रुत गर्भपाते॥

नोट—(२) इन्द्रायण दो तरहकी होती हैं—(१) बडी और दूसरी छोटी। यह ज़ियादातर खारी जमीन या कैरोंमें पैदा होती है। इसके पत्ते लम्बे-लम्बे और बीचमें कटे-से होते हैं और फूल पीले रङ्गके पाँच पङ्खड़ीके होते हैं। इसके फल छोटे-छोटे काँटेदार, लाल रङ्गकी छोटी नारङ्गीके जैसे सुन्दर होते हैं। इसके बीचमें बीज बहुत होते हैं।

दूसरी इन्द्रायण रेतीली जमीनमे होती है। उसका फल पीले रङ्गका और फूल सफेद होता है। दवाके काममे उसके फलका गूदा लिया जाता है। उसकी मात्रा ६ रत्तीसे दो माशे तक है। उसके प्रतिनिधि या बदल इसबन्द, रसौत और निशोथ हैं। इन्द्रायणको बंगलामे राखालशशा, मरहटीमें लघु इन्द्रावण या लघुकवंडल, गुजरातीमे इन्द्रवारणं और अँगरेज़ी मे Colocynth कॉलोसिन्थ कहते हैं। बड़ी इन्द्रायणको बँगला

में बढ़वाकाल, मरहटीमें थोर इन्द्रावण, गुजरातीमे मोटो इन्द्रायण और अँगरेज़ी में Bitter apple बिटर एपिल कहते हैं।

(२७) भारंगी, सोंठ, काले तिल और घी—इन चारोंको कूट-पीसकर मिला लो। इसके लगातार पीनेसे बन्द हुआ रजोधर्म निश्चय ही जारी हो जाता है। यह नुसख़ा "वैद्य सर्वस्व" का है। बहुत उत्तम है। लिखा है—

भार्ङ्गींशूंठी तिल घृतं नष्टपुष्पवती पिबेत्।

(२८) गुड़के साथ, काले तिलोंका काढ़ा बनाकर और शीतल करके छान लो। इस नुसख़ेको कई दिन बराबर पीनेसे बहुत समय से बन्द हुआ रजोधर्म फिर होने लगता है। "वैद्यरत्न" में लिखा है—

सगुड़ः श्यामतिलानाक्काथः पीतः सुशीतलो नार्य्यः।
जनयति कुसुमं सहसागतमपि सचिरं निरान्तकम्॥

गुड़से साथ, काले तिलोंका का काढ़ा बना कर और शीतल करके पीनेसे, बहुत कालसे रजोवती न होने वाली नारी भी रजोवती होती है।

(२६) भारंगी, सोंठ, बड़ी पीपर, काली मिर्च और काले तिल इन सबको मिलाकर दो तोले लाओ और पाव भर पानीके साथ हाँडीमें औटाओ। जब चौथाई जल रह जाय, उतारकर छान लो और पीओ। इस नुसख़ेसे रुका या अटका हुआ आर्त्तव फिर जारी हो जाता है; यानी खुलासा रजोधर्म होता है। परीक्षित है।

वैद्यवर विद्यापति कहते हैं:—

भार्ङ्गीव्योषयुतः क्वाथस्तिलजः पुष्परोधहा।

(३०) वही वैद्यवर विद्यापति लिखते हैं—

रामठं च कणा तुम्बीबीजं क्षार समन्वितम्।
दन्ती सेहुरुडदुग्धाभ्या वर्त्तिं कृत्वा भगे न्यसेत।
पुष्पावरोधाय नारीगर्भाधमुत्तमम्॥

हींग, पीपल, कड़वी तूम्बीके बीज, जवांखार और दन्तीकी

जड़—इन सबको महीन पीस-छानकर, इनके चूर्णमें "सेंहुड़का दूध" मिलाकर छोटी अँगुली-जितनी वत्तियाँ बनाकर, छायामें सुखा लो। इन वत्तियोंमेंसे एक वत्ती, रोज़, योनिमें रखनेसे रुका हुआ मासिक धर्म फिर होने लगता है।

(३१) जुन्देवेदस्तर ... ... १॥ माशे
नीले सौसनकी जड़ ... ... ६ ,,
पोदीनेका पानी या अर्क़ ... २ गिलास
शहद ... ... ३१॥ माशे

इन सबको मिलाकर रख लो। यह दो खूराक दवा है। इस दवाके दो बार पिलानेसे ही ईश्वर-कृपासे अनेकबार रज बहने लगता है।

(३२) लाल लोबिया ... ... १०॥ माशे
मेथी दाने ... ... १०॥ ,,
रूमी सौंफ ... ... १०॥ ,,
मँजीठ (अधकुचली) ... १४ ,,

इन चारों चीज़ोंको एक प्याले भर पानीमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, मल-छान लो और इसमें पैंतालीस माशे "सिकंजबीन" मिलाकर गुनगुना करो और पिला दो। साथ ही, नीचे लिखी दवा योनिमें भी रखाओ,—

बूल ... ... १४ माशे
पोदीना ... ... १४ ,,
देवदारू ... ... २८ ,,
तुतली ... ... ३५ ,,
मुनक्का (बीज निकाले हुए) ... ७० ,,

इन सबको कूट-पीस और छान कर "बैलके पित्ते" में मिलाओ। पीछे इसे स्त्रीकी योनिमें रखवा दो। "तिब्बे अकबरी" वाला लिखता है, इस दवासे सात सालका बन्द हुआ खून-हैज़ भी जारी हो जाता है, यानी सात बरससे रजोवती न होने वाली नारी फिर

रजोवती होने लगती है। पाठक इस नुसख़ेको ज़रूर आज़मावें। विचारसे यह नुसख़ा उत्तम मालूम होता है।

(३३) कुर्स मुरमकी एक यूनानी दवा है। इसको महीनेमें ३ बार, हर दसवें दिन, खानेसे रज बहने लगता है। अच्छी दवा है।

नोट—तज, कलौंजी, हुरमुल, तुन्देवेदस्तर, बायबिडंग, बाबूना, मीठा कूट, कबाबचीनी, हंसराज, ऊद, कुर्समुरमुकी, अजवायन, केशर, तगर, सूखा जूफा, करफस, दोनों मरुवे, चनोंका पानी, अमलताशके छिलके, मोथा और तूरमूल प्रभृति दवाएँ हैज़का खून या रजोधर्म जारी करनेको हिकमतमें अच्छी समझी जाती हैं।

(३४) 'इलाजुल गुर्बा" में लिखा है—साफनकी फस्द, ऋतुके दिनोंके पहले, खोलनेसे मासिक धर्मका खून जारी हो जाता है।

(३५) तोम्बा, सुर्ख़ मँजीठ, मेथीके बीज, गाजरके बीज, सोयेके बीज, मूलीके बीज, अजवायन, सौंफ, तितलीकी पत्तियाँ और गुड़—सबको बराबर-बराबर लेकर, हाँडीमें काढ़ा पकाओ। पक जानेपर मल-छान कर स्त्रीको पिलाओ। इस योगसे निश्चय ही रुका हुआ रज जारी हो जाता और गर्भ भी गिर पड़ता है। परीक्षित है।

(३६) अख़रोटकी छाल, मूलीके बीज, अमलताशके छिलके, परसियावसान और बायबिडङ्ग, इनमेंसे हरेक जौकुट करके नौ-नौ माशे लो और गुड़ सबसे दूना लो। पीछे इसे औटाकर औरतको पिलाओ। इससे गर्भ गिरता और खून हैज़ जारी होता है।

नोट—अनेक हकीम इस नुसखेमें कलौंजी और कपासकी छाल भी मिलाते हैं। यह नुसख़ा हमारा आज़मूदा नहीं; पर इसकी सभी दवाये रजोधर्म कराने और गर्भ गिरानेके लिये उत्तम हैं। इसलिये पाठक ज़रूर परीक्षा करें। उनकी मिहनत व्यर्थ न जायगी।

(३७) अगर ऋतु होनेके समय स्त्रीकी कमरमें दर्द होता हो, तो सोंठ ५ माशे, बायबिडङ्ग ५ माशे, और गुड़ ४० माशे—इन सबको औटाकर स्त्रीको पिलाओ। अवश्य आराम हो जायगा।

———o———

बन्ध्या-चिकित्सा।

बाँझ स्त्रीका इलाज।

गर्भ रहनेके लिये शुद्ध रज-वीर्यकी ज़रूरत।

हम पहले लिख आये हैं कि स्त्रीकी रज, गर्भाशय और पुरुषका वीर्य—इन सबके शुद्ध और निर्दोष होनेसे ही गर्भ रहता है। अगर स्त्रीको किसी प्रकारका योनिरोग होता है, उसका मासिक-धर्म बन्द हो जाता है अथवा योनिमें कोई और तकलीफ होती है तथा स्त्रीके योनि-फूलमें सात प्रकारके दोषों मेंसे कोई दोष होता है या प्रदर रोग होता है, तो गर्भ नहीं रहता। इसलिये स्त्रीके योनि-रोग, आर्त्तव रोग, योनिफूल-दोष और प्रदर रोग प्रभृतिको आराम करके, तब गर्भ रहनेका ख़याल मनमें लाना चाहिये। अव्वल तो इन रोगोंकी हालतमें गर्भ रहता ही नहीं— यदि इनमेंसे किसी-किसी रोगके रहते हुए गर्भ रह भी जाता है, तो गर्भ असमयमें ही गिर जाता है, सन्तान मरी हुई पैदा होती है, होकर मर जाती है अथवा रोगीली और अल्पायु होती है।

इसी तरह अगर पुरुषके वीर्यमें कोई दोष होता है, यानी वीर्य निहायत कमज़ोर और पतला होता है, बिना प्रसंगके ही गिर जाता है, रुकावटकी शक्ति नहीं होती, तो गर्भ नही रहता, चाहे स्त्री बिल्कुल निरोग और तन्दुरुस्त ही क्यों न हो। गर्भ रहनेके लिये जिस तरह स्त्रीका निरोग रहना ज़रूरी है, उसके रज प्रभृतिका शुद्ध रहना आवश्यक है, उसी तरह पुरुषके वीर्यका निर्दोष, गाढ़ा, और पुष्ट होना परमावश्यक है। जो लोग आयुर्वेद या हिकमतके ग्रन्थ

नहीं देखते, वे समझते हैं कि बाँझ होनेके दोष स्त्रियोंमें ही होते हैं, मर्दोंमें नहीं। इसीसे वे लोग और घरकी बड़ी-बूढ़ी बच्चा न होनेपर, गर्भ-स्थित न होनेपर, बहूओंके लिये गण्डे-तावीज़ और दवाओंकी फिक्र करती हैं, अनेक तरहके कुवचन सुनाती हैं, ताने मारती हैं और सवेरे ही उनके मुख देखनेमें भी पाप समझती हैं; पर अपने सपूतोंके वीर्यकी ओर उनका ध्यान नहीं जाता। पुरुषके वीर्यमें दोष रहनेसे, स्त्रीके गर्भ रहने योग्य होनेपर भी, गर्भ नहीं रहता। हमने अनेक स्त्री-पुरुषोंके रज और वीर्यकी परीक्षा करके, उनमें अगर दोष पाया तो दोष मिटाकर, गर्भोत्पादक औषधियाँ खिलाईं और ठीक फल पाया; यानी उनके सन्तानें हुईं। अतः वैद्य जब किसी बाँझका इलाज करे, तब उसे उसके पुरुषकी भी परीक्षा करनी चाहिये। देखना चाहिये, कि पुरुष महाशयमें तो बाँझपनका दोष नहीं है। "वंगसेन"में लिखा है:—

एवं योनिषु शुद्धासु गर्भं विन्दन्ति योषितः।
अदुष्टे प्राकृते वीजे बीजोपक्रमणे सति॥

इस तरह "फलघृत" प्रभृति योनि-दोष नाशक औषधियोंसे शुद्ध की हुई योनिवाली स्त्री गर्भको धारण करती है—गर्भवती होती है; किन्तु पुरुषोंके वीजके दूषित न होने—स्वभावसे ही शुद्ध होने या दवाओंसे शुद्ध करनेपर। इसका खुलासा वही है, जो हम ऊपर लिख आये हैं। स्त्रीको आप योनि-रोग वगैरःसे मुक्त कर लें, पर अगर पुरुषके बीजमें दोष होगा, तो स्त्री गर्भवती न होगी—गर्भ न रहेगा। इससे साफ प्रमाणित हो गया कि, गर्भ रहनेके लिये स्त्रीकी रज और पुरुषका वीर्य दोनों ही निर्दोष होने चाहियें। अगर दोनों ही या कोई एक दोषी हो, तो उसीका इलाज करके, रोगमुक्त करके, तब सन्तान होनेकी दवा देनी चाहिये। दवा देने

से पहले, दोनोंकी परीक्षा करनी चाहिये। परीक्षासे ही रज-वीर्य के दोष मालूम होंगे। नीचे हम परीक्षा करनेकी चन्द तरकीबें लिखते हैं।

स्त्री-पुरुषके बाँझपनेकी परीक्षा-विधि ।

पहली परीक्षा ।

"बंगसेन"में लिखा है:—

बीजस्य प्लवनं न स्यात् यदि मूत्रञ्च फेनिलम् ।
पुमान्स्याल्लक्षणैरेतेर्विपरीतैस्तु षण्ढकः ॥

जिसका बीज पानीमें डालनेसे न डूबे और जिसके पेशाबमें झाग उठते हों, उसे मर्द समझो। जिसका बीज पानीमें डूब जाय और पेशाबमें झाग न उठें, उसे नामर्द या नपुंसक समझो।

नोट—बंगसेन लिखते हैं, वीर्य जलमे न डूबे तो मर्द समझो और डूब जाय तो नामर्द समझो। पर अन्य ग्रन्थकार लिखते हैं,—अगर वीर्य एकबारगी ही पानीके भीतर चला जाय—डूब जाय, तो उसे गर्भाधान करने लायक समझो। हमने परीक्षा करके भी इसी बातको ठीक पाया है। हाँ, पेशाबमें झाग उठना बेशक मर्दुमीकी निशानी है।

"इलाजुल गुर्बा" में लिखा है, दो मिट्टीसे भरे हुए नये गमलोंमें बाकले या गेहूँ या जौके सात-सात दाने डाल दो। फिर उन गमलोंमें स्त्री-पुरुष अलग-अलग सात दिन तक पेशाब करें। जिसके गमलेके दाने उग आवें, वह बाँझ नहीं है और जिसके गमलेके दाने न उगें, वही बाँझ है।

दूसरी परीक्षा ।

दो प्यालोंमें पानी भर दो। फिर उन प्यालोंमें स्त्री पुरुष अलग-अलग अपना-अपना वीर्य डालें। जिसका वीर्य पानीमें बैठ

जाय, वह बाँझ नहीं है—वह गर्भ रखने या धारण करने योग्य है। जिसका वीर्य पानीके ऊपर तैरता रहे—न डूबे, उसीमें दोष है।

तीसरी परीक्षा।

स्त्री-पुरुष अलग-अलग दो कद्दू या कदूदूके वृक्षोंकी जड़ोंमें पेशाब करें। जिसके पेशाबसे वृक्ष सूख जायँ, वही बाँझ है और जिसके मूत्रसे वृक्ष न सूखें, वह दुरुस्त है।

चौथी परीक्षा।

मर्दके वीर्यकी परीक्षा—फूल-काँसीके कटोरेमें गरम पानी भर दो। उसमें मर्द अपना वीर्य डाले। अगर वीर्य एक दमसे पानीमें डूब जाय, तो समझो कि मर्द गर्भाधान करने योग्य है, उसका वीर्य ठीक है। अगर वीर्य पानी पर फैल जाय, तो समझो कि यह गर्भाधान करने योग्य नहीं है। अगर वीर्य न ऊपर रहे न नीचे जाय, किन्तु बीचमें जाकर ठहर जाय, तो समझो कि इस वीर्यसे गर्भ तो रह जायगा, पर सन्तान होकर मर जायगी—जियेगी नहीं।

स्त्रीके रजकी परीक्षा—एक मिट्टीके गमलेमें थोड़ेसे सोयेके पेड़ बो दो। उन वृक्षोंकी जड़ोंमें औरत पेशाब करे। अगर पेशाबसे वृक्ष मुर्झा जायँ, तो समझो, कि स्त्री का रज निर्दोष नहीं है। अगर वृक्ष न मुर्झावें—जैसेके तैसे बने रहें, तो समझो स्त्रीका रज शुद्ध है।

नोट—अगर पुरुषका वीर्य और स्त्रीका रज सदोष हो, तो दोनोंको वीर्य और रज शुद्ध करने वाली दवा खिलाकर, वैद्य रज-वीर्यको शुद्ध करे और दवा खिलाकर फिर परीक्षा करे। अगर दुरुस्त पावे तो गर्भाधानकी आज्ञा दे। रज-वीर्य शुद्ध होनेकी दशामें स्त्री पुरुष अगर मैथुन करेंगे, तो निश्चय ही गर्भ रह जायगा। हमने "चिकित्साचन्द्रोदय" चौथे भागमें वीर्यको शुद्ध, पुष्ट और बल-वान करने वाले अनेक आजमूदा नुसखे लिखे हैं। रज और वीर्य शुद्ध करने वाली चन्द दवायें हम यहाँ भी लिखते हैं।

रजशोधक नुसखा।

बबूलका गोंद	...	...	३ तोले
छोटी इलायचीके दाने	...	...	१ ,,
नागौरी असगन्ध	...	...	५ ,,
शतावर	...	...	५ ,,

इन चारों दवाओंको कूट-पीस कर छान लो और रख दो। इस चूर्णकी मात्रा ३ या ४ माशे तक है। एक-एक मात्रा सवेरे-शाम फाँक कर, ऊपरसे गायका धारोष्ण दूध एक पाव पीओ। जब तक आराम न हो जाय या कमसे कम ४० दिन तक इस दवाको खाओ। इसके सेवन करनेसे रज निश्चय ही शुद्ध हो जाती है। परीक्षित है। अपथ्य—मैथुन और गरम पदार्थ।

वीर्यशोधक नुसखा।

सेमरका मूसली	...	...	...	५ तोले
बीजबन्द	...	...	...	५ ,,
मखाने	...	...	...	५ ,,
तालमखाना	...	...	...	५ ,,
सफेदी मुसली	...	...	...	५ ,,
गुलसकरी	...	...	...	५ ,,
कामराज	...	...	...	५ ,,

इन सबको कूट-पीस कर कपड़ेमें छान कर रख लो। मात्रा ६ माशेकी है। सन्ध्या-सवेरे एक-एक मात्रा फाँककर, ऊपरसे मिश्री-मिला गायका धारोष्ण दूध पीओ। कम-से-कम ४० दिन तक इस चूर्णको खाओ। अपथ्य—मैथुन, तेल, मिर्च, खटाई वगैरः गरम पदार्थ। परीक्षित है।

बाँझोंके भेद।

योनिरोग अथवा नष्टार्त्तव प्रभृति बाँझ होनेके कारण हैं, पर इनके

सिवा, गर्भाशयके और दोषोंसे भी स्त्री बाँझ हो जाती है। "दत्ता-त्रयी" नामक ग्रन्थमें लिखा है:—बाँझ तीन तरहकी होती हैं:—

(१) जन्म-बन्ध्या।

(२) मृत बन्ध्या।

(३) काक बन्ध्या।

"जन्म-बन्ध्या" उसे कहते हैं, जिसके जन्म-भर सन्तान नहीं होती। "मृतबन्ध्या" उसे कहते हैं, जिसके सन्तान तो होती है, पर होकर मर जाती है। "काक बन्ध्या" उसे कहते हैं, जिसके एक सन्तान होकर फिर और सन्तान नहीं होती।

बाँझ होनेके कारण।

ऊपर लिखी हुई तीनों प्रकारकी बाँझ स्त्रियाँ, प्रायः फूलमें नीचे लिखे छै दोष हो जाने से बाँझ होती हैं:—

(१) फूल या गर्भाशयमें हवा भर जाने से।

(२) फूल या गर्भाशय पर मांस बढ़ आने से।

(३) फूलमें कीड़े पड़ जाने से।

(४) फूलके वायु-वेगसे ठण्डा हो जाने से।

(५) फूलके जल जाने से।

(६) फूलके उलट जाने से।

कोई-कोई सातवाँ दोष "भूतबाधा" और आठवाँ "कर्मदोष" या पूर्वजन्मके पाप भी मानते हैं।

फूलमें दोष होनेके कारण।

फूलमें दोष हो जानेके कारण तो बहुत हैं, पर मुख्य-मुख्य कारण ये हैं:—

(१) बचपनकी शादी।

(२) छोटी स्त्रीकी बड़े मर्दसे शादी।

(३) स्त्री-पुरुषमें मुहब्बत न होना ।

(४) असमयमें मैथुन करना ।

फूलमें क्या दोष है, उसकी परीक्षा-विधि ।

फूलमें क्या दोष हुआ है, इसको वैद्य स्त्रीके पति-द्वारा ही जान सकता है। वैद्य नाड़ी पकड़कर जान लेय, ऐसा उपाय नहीं। स्त्री जब चौथे दिन ऋतुस्नान करले, तब पति मैथुन करे। मैथुन करनेके बाद, तत्काल ही अपनी स्त्रीसे पूछे; तुम्हारा कौनसा अंग दर्द करता है। अगर स्त्री कहे,—कमरमें दर्द होता है, तो समझो, फूल पर मांस बढ़ गया है। अगर वह कहे,—शरीर काँपता है, तो समझो, फूलमें वायु भर गया है। अगर कहे,—पिंडलियोंमें पीड़ा होती है, तो समझो फूलमें कीड़े पड़ गये हैं। अगर कहे,—छातीमें दर्द है, तो समझो, फूल वायुवेगसे शीतल हो गया है। अगर कहे,—सिरमें दर्द जान पड़ता है, तो समझो, फूल जल गया है। अगर जाँघोंमें दर्द कहे,—तो समझो, कि फूल उलट गया है। इसको खुलासा यों समझिये:—

(१) शरीर काँपना = फूलमें वायु भर गया है।

(२) कमरमें दर्द = फूल पर मांस बढ़ा है।

(३) पिंडलियोंमें दर्द = फूलमें कीड़े पड़ गये हैं।

(४) छातीमें दर्द = फूल शीतल हो गया है।

(५) सिरमे दर्द = फूल जल गया है।

(६) जाँघोंमें दर्द = फूल उलट गया है।

फूल-दोषकी चिकित्सा ।

(१) अगर फूलमें वायु भर गया हो, तो ज़रासी हींगको काली तिलीके तेलमें पीसकर, उसमें रूईका फाहा भिगोकर, तीन दिनों तक योनिमें रखो। हर रोज़ ताज़ा दवा पीस लो। ईश्वर-कृपासे, तीन दिनमें यह दोष नष्ट हो जायगा।

(२) अगर फूलमें मांस बढ़ गया हो, तो काला ज़ीरा, हाथी का नाखून और अरण्डीका तेल—इन तीनोंको महीन पीस कर, पिसी हुई दवामें रूईका फाहा तर करके, तीन दिन तक, योनिमें रखो और चौथे दिन मैथुन करो।

(३) अगर फूलमें कीड़े पड़ गये हों, तो हरड़, बहेड़ा और कायफल—तीनोंको साबुनके पानीके साथ, सिलपर महीन पीस लो। फिर उसमें रूईका फाहा भिगो कर, तीन दिन तक, योनिमें रखो। इस उपायसे गर्भाशयके कीड़े नाश हो जायँगे।

(४) अगर फूल शीतल हो गया हो, तो बच, कालाजीरा और असगन्ध,—तीनोंको सुहागेके पानीमें पीस लो। फिर उसमें रूई का फाहा तर करके, तीन दिन तक, योनिमें रखो। इस तरह फूल की शीतलता नष्ट हो जायगी।

(५) अगर फूल जल गया हो, तो समन्दरफल, सेंधानोन और ज़रा-सा लहसन,—तीनोंको महीन करके, रूईके फाहेमें लपेट कर, योनिमें रखनेसे आराम हो जाता है।

नोट—अगर इस दवासे जलन होने लगे, तो फाहेको निकाल कर फेंक दो। फिर दूसरे दिन उसी तरह फाहा रखो। बस, तीन दिनमें काम हो जायगा। इसे ऋतुकालके पहले दिनसे तीसरे दिन तक योनिमें रखना चाहिये; चौथे दिन मैथुन करना चाहिये। अगर इसी दोषसे गर्भ न रहता होगा, तो अवश्य गर्भ रह जायगा।

(६) अगर फूल या गर्भाशय उलट गया हो, तो कस्तूरी और केशर समान-समान लेकर, पानीके साथ पीसकर गोली बना लो। उस गोलीको ऋतुके पहले दिन भगमें रखो। इस तरह तीन दिन करनेसे अवश्य गर्भाशय ठीक हो जायगा। चौथे दिन स्नान करके मैथुन करना चाहिये। ये छहों उपाय परीक्षित हैं।

हिकमतसे बाँझ होनेके कारण।

जिस तरह ऊपर हमने वैद्यक-ग्रन्थोंके मतसे लिखा है कि,

गर्भाशयमें छै तरहके दोष होनेसे स्त्रियाँ बाँझ हो जाती हैं; इसी तरह हिकमतके ग्रन्थ "तिब्बे अकबरी" में बाँझ होनेके तेरह कारण, दोष या भेद लिखे हैं। इनमेंसे कितने ही हमारे छै दोषोंके अन्दर आ जाते हैं और चन्द नये भी हैं। उन सबके जान लेनेसे वैद्यकी जानकारी बढ़ेगी और उसे बाँझके इलाजमें सुभीता होगा, इसलिये हम उनको विस्तारसे लिखते हैं। अगर वैद्य लोग या अन्य सज्जन हरेक बातको अच्छी तरह समझेंगे, तो उन्हें अवश्य सफलता होगी, "बन्ध्या-चिकित्सा" के लिये उन्हें और ग्रन्थ न देखने होंगे।

(१) गर्भाशयमें शीतका पैदा होकर, वीर्य और खूनको जमा कर सुखा देना।

(२) गर्भाशयमें गरमीका पैदा होकर, वीर्यको जला कर ख़राब कर देना।

(३) गर्भाशयमें खुश्कीका पैदा होकर, वीर्यको सुखा देना।

(४) गर्भाशयमें तरी का पैदा होकर, गर्भके ठहरानेवाली ताक़त को कमज़ोर करना।

(५) वात, पित्त या कफका गर्भाशयमें कुपित होकर वीर्यको बिगाड़ देना।

(६) स्त्रीका मोटा हो जाना और शरीर तथा गर्भाशयमें चरबी का बढ़ जाना।

(७) स्त्रीका एक दमसे दुर्बल या कमज़ोर होना। इस दशामें रजके ठीक न होने या रज पैदा न होनेसे बच्चेके शरीर बननेको मसाला नहीं मिलता और उसे भोजन भी नहीं पहुँचता।

(८) बालकके भोजन—रजका स्त्रीके शरीरमें किसी वजहसे बन्द हो जाना।

(९) गर्भाशयमें गर्म सूजन, सख्ती या निकम्मे घाव होना।

(१०) गर्भाशयमें गाढ़ी हवाका पैदा होना, जो वीर्य और बालक को न ठहरने दे।

(११) गर्भाशयमें सख्त सूजन, रितक या मस्सा पैदा होना।

(१२) गर्भाशयका मुँह जननेन्द्रियके सामनेसे हट जाय। इस वजहसे उसमें पुरुषका वीर्य न जा सके।

(१३) स्त्रीके शरीर या गर्भाशयमें कोई रोग न होनेपर भी, वीर्य को न ठहरने देने वाले अन्यान्य कारणोंका होना।

ऊपरका खुलासा।

गर्भाशयमें सरदी, गरमी, खुश्की और तरीका पैदा होना; वातादिक दोषोंका गर्भाशयमें कोप करना; स्त्रीका अत्यन्त मोटा या दुबला होना; बालकके शरीर पोषण-योग्य रजका न बनना; गर्भाशयमें सूजन, रतक या मस्सा पैदा होना; गाढ़ी हवाका पैदा होना या गर्भाशयमें भर जाना और गर्भाशयके मुँहका सामनेसे हट जाना—ये ही बच्चा न होने या गर्भ न रहनेके कारण हैं।

और भी खुलासा।

(१) गर्भाशयमें सरदी, गरमी, खुश्की या तरी होना।

(२) गर्भाशयमें वात, पित्त और कफका कोप।

(३) स्त्रीका मोटा या अत्यन्त दुबलापना।

(४) स्त्री-शरीरमें रजका न बनना।

(५) गर्भाशयमें गाढ़ी हवाका होना।

(६) गर्भाशयमें सूजन, मस्सा या रतक होना।

(७) गर्भाशयके मुँहका सामनेसे हट जाना।

इन कारणोंसे स्त्री बाँझ हो जाती है। उसे हमल नहीं रहता।

तेरहों भेदोंके लक्षण और चिकित्सा।

पहला भेद।

कारण—सरदी।

नतीजा—वीर्य और खून जम जाते हैं।

लक्षण—

(१) रजोधर्म देरमें हो।

(२) खून लाल, पतला और थोड़ा आवे और जल्दी बन्द न हो।

(३) अगर सरदी सारे शरीरमें फैल जाय, तो रंग सफेद और छूने में शीतल हो। इसके सिवा और भी सरदीके चिह्न हों।

चिकित्सा—

अगर साधारण सरदीका दोष हो, तो गरम दवाओंसे ठीक करो। अगर कफका मवाद हो, तो पहले उसे यारजात और हुकनों से निकाल डालो। इसके बाद और उपाय करोः—

(क) दीवाल मुश्क खिलाओ।

(ख) केशर, बालछड़, अकलील-उल-मलिक, तेजपात, पहाड़ी किर्विया, बतख़की चरबी, मुर्ग़ीकी चरबी, अण्डेकी ज़र्दी और नारदैनका तेल—इन सबको पीस-कूटकर मिला दो। पीछे एक ऊनका टुकड़ा तर कर योनिमें रख दो।

(ग) रजोधर्मसे निपट कर लाल हरताल, दूध, सरूँका फल, सला-रस, गन्दाबिरौज़ा और हब्बुल गारकी धूनी योनिमें दो। इन दवाओंको एक मिट्टीके बर्त्तनमें रखकर, ऊपरसे जलते कोयले भर दो। इस बरतनपर, बीचमें छेद की हुई थाली रख दो। थालीके छेदके सामने, पर थालीसे अलग, स्त्री अपनी योनि को रखे, ताकि धूआँ भीतर जाय।

(घ) योनिको इन्द्रायणके काढ़ेसे धोना लाभदायक है। गर्भस्थान पर वारे लगाना भी उत्तम है।

(ङ) भोजन—उत्तम कलिया, गरम मसाले डाला हुआ तवे पर भूना पक्षियोंका मांस—दालचीनी या उटंगनके बीज महीन पीस कर बुरकी हुई मुर्ग़ीके अधभुने अण्डेकी ज़र्दी,—ये सब ऐसी मरीज़ाको मुफीद हैं।

दूसरा भेद।

कारण—गर्भाशयमें गरमी।

नतीजा—वीर्य जलकर ख़ाक हो जाता है।

लक्षण—

(१) रजमें गरमी, कालापन और गाढ़ापन।

(२) अगर सारे शरीरमें गरमी होगी, तो शरीर दुबला और रंग पीला होगा।

(३) बाल ज़ियादा होंगे।

चिकित्सा—

(१) सर्दी पहुँचानेको शर्बत बनफशा, शर्बत नीलोफर, शर्बत ख़श-ख़ाश, शर्बत सेब या शर्बत चन्दन प्रभृति पिलाओ।

(२) मुर्ग़के बच्चे, हिरन और बकरेका मांस खिलाओ।

(३) घीया या पालक खिलाओ।

(४) अण्डेकी ज़र्दी, मुर्ग़ीकी चर्बी और बतख़की चर्बीको बनफशाके तेलमें मिलाकर स्त्रीकी योनिमें रखवाओ।

(५) जहाँ कहीं पित्त जियादा हो, वहाँसे उसे उचित उपायसे निकालो।

तीसरा भेद।

कारण—गर्भाशयमें खुश्की।

नतीजा—वीर्य सूख जाता है।

लक्षण—

(१) रजस्वला हो, पर बहुत कम।

(२) अगर सारे शरीरमें खुश्की हो, तो शरीर दुबला और निर्बल हो। विशेष खुश्कीसे खाल सूखी सी मालूम हो।

(३) मूत्रस्थान सदा सूखा रहे।

चिकित्सा—

(१) शर्बत बनफशा और शर्बत नीलोफर पिलाओ।

(२) घीया और नीलोफरका तेल तथा बतख और मुर्ग़ीकी चर्बी मलाने और योनि पर मलो।

(३) पाढ़का गूदा, गायका घी और स्त्रीका दूध, इन तीनोंको मिलाकर रख लो। फिर इसमें कपड़ा सानकर, कपड़ेको योनिमें रखवाओ।

चौथा भेद।

कारण—गर्भाशयमें तरी।

नतीजा—गर्भाशयकी शक्ति नष्ट हो जाती है। इससे उसमें वीर्य नहीं ठहर सकता।

लक्षण—

(१) सदा गर्भाशयसे तरी बहा करे।

(२) गर्भ ठहरे तो क्षीण हो जाय और बहुधा तीन माससे अधिक न ठहरे।

चिकित्सा—

(१) तरी निकालनेको यारजात खिलाओ।

(२) इस रोगमें वमन करना मुफीद है।

(३) सूखे भोजन दो। जैसे, कबाब गरम और सूखे मसाले मिलाकर।

(४) इन्द्रायणका गूदा, अंजरूत, सोया, तुतरुग, बूल, केशर और अगर,—इन सबको महीन पीसकर शहदमें मिला लो। फिर इसमें ऊनका टुकड़ा भर कर योनिमें रखो।

(५) गुलाबके फूल, अजफारुतीब, सातर, बालछड़, सुक और तज—इनका काढ़ा बनाकर, उससे गर्भाशयमें डुकना करो।

पाँचवाँ भेद।

कारण—बात, पित्त या कफ।

नतीजा—गर्भाशय और वीर्य बिगड़ जाते हैं।

लक्षण—

(१) कफका दोष होनेसे सफ़ेद तरी, पित्तका दोष होनेसे पीली और बादीसे काली तरी निकलती है।

नोट—यह विषय पहले आ चुका है, पर पाठकोंके सुभीतेके लिये हमने फिर भी लिख दिया है।

चिकित्सा—

(१) सारा मवाद निकालनेको पीनेकी दवा दो।

(२) गर्भाशय शुद्ध करनेको हुकना करो।

छठा भेद।

कारण—मुटाई या मोटा हो जाना।

नतीज़ा—गर्भाशयमें चर्बी बढ़ जाय।

लक्षण—

(१) पेट मुनासिबसे ऊँचा और बड़ा हो।

(२) चलने-फिरनेसे श्वास रुके।

(३) ज़रा भी बादी और मल पेटमें जमा हो जाय, तो बड़ा कष्ट हो।

(४) मूत्र-स्थान या योनिद्वार छोटा हो जाय।

(५) अगर गर्भ रह भी जाय, तो बढ़ कर गिर पड़े।

चिकित्सा—

(१) बदन दुबला करनेको फस्द खोलो।

(२) जुलाब दो।

(३) भोजन कम दो।

(४) इतरीफल और कम्मूनी प्रभृति खुश्क चीजें खिलाओ।

सातवाँ भेद।

कारण—दुबलापन।

नतीजा—स्त्रीके ज़ियादा कमज़ोर होनेसे, बच्चेके अंग बननेको, रजका मैला फोक न रहे और रजके न बननेसे गर्भगत बालकके लिए भोजन भी न बने।

चिकित्सा—

(१) मोटी करनेके लिये दूध, घी एवं अन्य पुष्टिकारक भोजन दो।

(२) खूब आराम कराओ।

(३) बेफिक्र कर दो।

(४) खूब हँसाओ।

(५) खून बढ़ाने वाली दवा दो।

आठवाँ भेद ।

कारण—रजका न बनना।

नतीजा—रजोधर्म न होना।

चिकित्सा—

(१) रजोधर्म जारी करने वाली दवा दो। इस रोगकी दवाएँ "नष्टार्त्तव-चिकित्सा" के पृष्ठ ४०३-४११ में लिखी हैं।

नवाँ भेद ।

कारण—गर्भाशयमें गरम सूजन, कठोरता या निकम्मे घाव।

नतीजा—गर्भ न ठहरे।

चिकित्सा—रोगानुसार इलाज करो।

दसवाँ भेद ।

कारण—गर्भाशयमें गाढ़ी हवा।

नतीजा—वीर्य और बालक गर्भमें न ठहरें।

लक्षण—

(१) पेड़ू सदा फूला रहे।

(२) बादीकी चीज़ोंसे तकलीफ़ हो।

(३) अगर गर्भ ठहर जाय, तो बढ़नेसे पहले गिर पड़े।

(४) मैथुनके समय योनिसे हवाकी आवाज़ उसी तरह आवे, जैसे गुदासे आती है।

चिकित्सा—

(१) अर्क़ गुलाब और अर्क़ सौंफ तथा गुलकन्द आदि दो।

(२) गिलास लगाओ।

(३) गरम माजून दो।

(४) बादी नाश करनेवाले तेल, लेप और खानेकी दवा दो। वायु बढ़ाने वाले पदार्थोंसे बचाओ। नीचेकी माजून बादी नाश करनेको अच्छी हैः—

(५) कचूर, दरुनज, जायफल, लौंग, अकाकिया, अजवायन, अज्ञ-मोदके बीज और सोंठ—ये सात-सात माशे लो। सिरकेमें पड़ा हुआ जीरा १७॥ माशे और जुन्देवेदस्तर १॥। माशे इन सबको कूट-छान कर, कन्द और शहदमें मिला कर, माजून बना लो। मात्रा ४॥ माशे। अनुपान—गुनगुना जल। रोगनाश—बादी।

नोट—दसवाँ भेद बादीका है। इसमें कोई भी वायुनाशक दवा समझकर दे सकते हो। ऊपरकी माजून उत्तम है, इसीसे लिखी है।

ग्यारहवाँ भेद।

कारण—गर्भाशयमें कड़ी सूजन, रितका या रतक अथवा मस्सा।

नतीजा—गर्भाशयका मुँह बन्द हो जाता है। इससे वीर्य गर्भाशयमें नहीं जा सकता। असल बाँझ यही स्त्री है।

चिकित्सा—

(१) इस रोगका इलाज कठिन है। देख-भालकर हाथ डालना चाहिये, ऐसा न हो कि उल्टे लेनेके देने पड़ जायँ। इस रोगमें माँसको गलाने वाली तेज़ दवा काम देती है।

बारहवाँ भेद।

कारण—गर्भस्थानका मुँह सामनेसे हट जाय।

नतीजा—गर्भाशयमें लिङ्गसे निकला हुआ वीर्य न जा सके।

लक्षण—

(१) मैथुनके समय गर्भस्थानमें दर्द हो। दाई अँगुलीसे गर्भाशयको टटोले तो मालूम हो जाय, कि उसका मुँह किस तरफ झुका हुआ है।

(२) कदाचित मरोड़ी हो और मल मूत्र वन्द हो जायँ।

नोट—अधिक कूदने-फाँदने, दौड़ने, भारी वोझ उठाने या खींचने प्रभृति कारणोंसे यह रोग होता है। इसके टेढ़े होनेके दो कारण हैं:—(१) रगोंका भर जाना और उनमें खिंचाव होना, (२) विना मवादके रुकावट और सुकड़न होना।

चिकित्सा—

(१) अगर रोगोंके भर जाने और खिंचावसे गर्भाशय टेढ़ा हुआ हो, तो पाँवकी मोटी नसकी फस्द खोलो।

(२) अगर विना मवादके केवल रुकाव और सूजनसे टेढ़ापन हुआ हो तो अंजीर, वावूना, मेथी, कड़के बीजोंकी मींगी और अलसीके वीज—इन सबके काढ़ेमें तिलीका तेल मिलाकर हुकना करो। वावूनेका तेल, वतख और मुर्गीकी चरवी मलो।

(३) शीतल हम्माम और बफारे, गर्भाशयके सिमटने या रुक जाने में लाभदायक हैं।

(४) अगर गर्भाशयपर तरी गिरनेसे टेढ़ापन हुआ हो, तो "यारज" दो।

(५) जव कारण दूर हो जायँ; केवल टेढ़ापन और झुकाव बाक़ी रह जाय, तव दाई उसे अँगुलीसे सीधा कर दे, जिससे गर्भाशय जननेन्द्रियके सामने हो जाय। अँगुली लगानेसे पहले दाईको तेल, चर्वी, या मोम प्रभृति अँगुलीमें लगा लेना चाहिये, जिससे गर्भाशयको तकलीफ न हो और वह अपनी जगह पर आ जाय।

"दस्तूरुल इलाज" में लिखा है, मवाद निकल जानेके बाद चतुर दाई तिलीके तेलमें उँगली चिकनी करके हाथसे गर्भाशयको सीधा करे और उसकी रगोंको खींचे। इस तरह रोज़ कुछ दिन करनेसे गर्भाशयका मुँह योनिके सामने हो जायगा। उस दशामें मैथुन करनेसे गर्भ रह जायगा।

तेरहवाँ भेद।

(१) स्त्री वीर्य छुटनेके वाद शीघ्र ही उठ खड़ी हो तो गर्भ नहीं रहता।

(२) व्रत-उपवास करने या भूखी रहनेसे बालक क्षीण हो जाता है।

(३) गर्भावस्थामें मैथुन करनेसे गर्भ गिर जाता है, इसलिये गर्भ की दशामें मैथुन न करना चाहिये, क्योंकि गर्भाशयका स्वभाव, बाहरको होकर या मुँह खोल कर, वीर्य खींचनेका है। मैथुनसे बच्चा हिल कर भी गिर पड़ता है।

(४) नहानेकी अधिकतासे भी गर्भाशय नर्म हो जाता है; इसलिये बालक फिसल कर निकल जाता है।

चिकित्सा—जो कारण वीर्यको रोकते, गर्भाशयमें उसे नहीं ठहरने देते, गर्भको क्षीण करते या गिराते हैं, उनसे बचना ही इस भेदका इलाज है।

गर्भप्रद नुसख़े।

(१) हाथी-दाँतका बुरादा ४॥ माशे खानेसे गर्भ रहता है।

(२) मैथुनसे पहले या उसी समय, हाथीका पेशाब पीनेसे गर्भ रहता है। यह नुसख़ा अनेक ग्रन्थोंमें मिलता है।

(३) हींगके पेड़का बीज, जिसे बज्र सीसियालयूस भी कहते हैं, खानेसे अवश्य गर्भ रहता है। हकीम अकबरअली साहब इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा लिखते हैं।

(४) सुक, बालछड़, खुसियत्तुस्सालिब (एक प्रकारकी जड़), बिलसाँका तेल, बकायनका तेल और सौसनका तेल—इन सबको पीस-कूट कर मिला लो। फिर इसमें एक कपड़ा ल्हेस कर योनिमें रखो। पीछे निकालकर मैथुन करो। इससे भी गर्भ रह जाता है।

(५) कायफलको कूट छान कर और बराबरकी शक्कर मिलाकर रख लो। ऋतुस्नानके बाद, तीन दिन तक हथेली-भर खाओ। पथ्य—दूध, भात। पीछे मैथुन करनेसे गर्भ अवश्य रहेगा।

(६) असगन्धको कूट-पीस कर छान लो। इसकी मात्रा ४॥ से ९ माशे तक है। ऋतु आरम्भ होनेसे पहले इसे सेवन करना चाहिये। पथ्य—दूध-भात।

(७) पियाबाँसेकी जड़ी सवा दो माशे लेकर, पानीमें पीस कर; थोड़ेसे गायके दूधके साथ पुरुष खावे और तीन दिन तक स्त्रीको भी खिलावे, उसके बाद मैथुन करे; अवश्य गर्भ रहेगा।

(८) काले धतूरेके फूल पीस कर और शहद-घीमें मिलाकर खानेसे गर्भ रहता है।

(९) एक समन्दर-फल थोड़ेसे दहीमें मिलाकर निगल जानेसे अवश्य गर्भ रहता है। यह नुसख़ा अनेक ग्रन्थोंमें लिखा है।

(१०) करंजवेकी गिरी स्त्रीके दूधमें पीसकर बत्ती बना लो। इसको गर्भाशयमें रखनेसे गर्भधारण-शक्ति हो जाती है।

(११) थोड़ी-सी सरसों पीस कर, ऋतु होनेके तीन दिन बाद, शाफा करो। अवश्य गर्भ रहेगा।

(१२) एक हथेली-भर अजवायन कई दिन तक खानेसे गर्भ रहता है।

(१३) बाज़की बीट कपड़े में लगा कर बत्ती सी बना लो और ऋतुसे निपट कर भगमें रखो। बाज़की बीटमें थोड़ा सा शहद मिला कर खाना भी ज़रूरी है। इन दोनों उपायोंसे गर्भ रहता है। यह नुसख़ा अनेक ग्रन्थोंमें लिखा है। कोई-कोई बिना शहदके भी बाज़की बीट खानेकी राय देते हैं।

(१४) ऋतुके बाद, कबूतरकी बीट भगमें रखनेसे गर्भ रहता है।

(१५) असगन्ध, नागकेशर और गोरोचन—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर पीस छान लो। इसे शीतल जलके साथ सेवन करने या खानेसे गर्भ रहता है।

(१६)-नागकेशरको पीस-छानकर, बछड़ेवाली गायके दूधके साथ खानेसे गर्भ रहता है।

(१७) बिजौरे नीबूके बीज पीसकर, बछड़ेवाली गायके दूधके साथ खानेसे गर्भ रहता है।

(१८) खिरेंटी, खाँड, कंघी, मुलेठी, बड़के अंकुर और नागकेशर, इनको शहद, दूध और घीमें पीसकर पीनेसे बाँझके भी पुत्र होता है।

(१९) ऋतुस्नान करके, असगन्धको दूधमे पकाकर और घी डालकर, सवेरे ही, पीने और रातको भोग करनेसे गर्भ रह जाता है।

(२०) ऋतुस्नान करनेवाली स्त्री अगर, पुष्य नक्षत्रमें उखाड़ी हुई, सफेद कटेहलीकी जड़को, कँवारी कन्याके हाथोंसे दूधमें पिसवाकर पीती है, तो निश्चय ही गर्भ रह जाता है।

(२१) पीले फूलकी कटसरैयाकी जड़, धायके फूल, बड़के अंकुर और नीले कमल,—इन सबको दूधमें पीसकर पीनेसे अवश्य गर्भ रह जाता है।

(२२) जो स्त्री ज़ीरे और सफेद फूलके सरफोंकेके साथ पारस-पीपलके डोडेको पीसकर पीती और पथ्यसे रहती है, वह अवश्य पुत्र जनती है।

(२३) जो गर्भवती स्त्री ढाकके एक पत्तेको दूधमें पीसकर पीती है, उसके बलवान पुत्र होता है। कई बार चमत्कार देखा है। परीक्षित है।

(२४) कौंचकी जड़ अथवा कैथका गूदा अथवा शिवलिंगीके बीजोंको दूधमें पीसकर पीनेसे गर्भवती स्त्री कन्या हरगिज़ नहीं जनती।

(२५) विष्णुकान्ताकी जड़ अथवा शिवलिंगीके बीज जो स्त्री पीती है, वह कन्या हरगिज़ नहीं जनती। उसके पुत्र-ही-पुत्र होते हैं।

(२६) दो तोले नागौरी असगन्धको गायके दूधके साथ सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। फिर उसे एक क़लईदार कढ़ाही या

देगचीमें रखकर, ऊपरसे एक पाव गायका दूध और एक तोले गाय का घी भी डाल दो और अत्यन्त मन्दी आगसे पकाओ। इसके बाद उस दूधको कपड़ेमें छान लो। इस दूधको स्त्री ऋतुस्नान करके चौथे दिन सवेरे ही पीवे और दूध-भातका भोजन करे तो अवश्य गर्भ रहे। मैथुन रातको करना चाहिये। यह नुसख़ा शास्त्रोक्त है, पर हमारा परीक्षित है।

(२७) छोटी पीपर, सोंठ, काली मिर्च और नागकेशर,—इनको बराबर-बराबर लाकर पीस-कूटकर छान लो। इसमें से ६ माशे चूर्ण गायके घीमें मिलाकर, ऋतुस्नानके चौथे दिन, अगर स्त्री चाट ले और रातको मैथुन करे, तो अवश्य पुत्र हो। चाहे वह बाँझ ही क्यों न हो। परीक्षित है।

नोट—नं० २६ और २७ दोनों नुसखे "भैषज्यरत्नावली"के हैं। कितनी ही स्त्रियोंको बतलाये, प्रायः सभीको गर्भ रहा। पर यह शर्त है कि स्त्रीको और कोई रोग जैसे प्रदररोग, योनिरोग, नष्टार्त्तव रोग आदि न हों। हमने अनेक स्त्रियोंको प्रदर आदि रोगोंसे छुडाकर ही यह नुसखे सेवन कराये थे। रोगकी दशामें गर्भाधान करना तो महा मूर्खका काम है। "वंगसेन"में लिखा है—

> क्वाथेन हयगन्धायाः साधितं सघृतं पयः।
> ऋतुस्नाताऽबला पीत्वा गर्भं धत्ते न संशयः॥
> पिप्पलीश्रृंगवेरञ्च मरिचं केशरं तथा।
> घृतेनसह पातव्यं बन्ध्यापि लभते सुतम्॥

इसका वही अर्थ है, ऊपर जो लिख आये हैं। कोई असगन्धको कूट-पीसकर दूध-घीमें पकाते हैं। कोई असगन्धका काढ़ा बनाकर, काढ़ेको दूध घीमें मिला कर पकाते हैं। जब काढ़ा जलकर दूध मात्र रह जाता है, दूधको छानकर ऋतुस्नान करके उठी हुई स्त्रीको पिलाते हैं। दूध और घी बछड़ेवाली गायका लेते हैं।

असगन्धमें गर्भोत्पादक शक्ति बहुत है। इसकी अनेक विधि हैं। हमने नं० ६ और २६ में दो विधि लिखी हैं। अगर स्त्रीको योनिरोग प्रभृति न हों, पर जरा बहुत रोगकी शंका हो, तो पहले नं० ६ की विधिसे ८।१० दिन या २१ दिन असगन्ध खानी चाहिये। फिर ऋतुके चौथे दिन नहाकर, ऊपरकी नं० २६ की विधिसे

लेकर, रातको मैथुन करना चाहिये। अगर इस तरह काम न हो, तो चौथे-पाँचवें और छठे दिन फिर लेकर तब मैथुन करना चाहिये।

सूचना—नं० २७ नुसखा भी कमज़ोर नहीं है। कहीं-कहीं इससे बड़ा चमत्कार देखनेमें आया है। "वैद्यविनोद"-कर्त्ताने इसकी जो प्रशंसा लिखी है सच्ची है।

(२८) नागकेशर और सुपारी—इन दोनोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसके सेवन करनेसे अनेकोंको गर्भ रहा है। परीक्षित है।

(२९) पुत्रजीवक वृक्षकी जड़ दूधमें पीस कर पीनेसे दीर्घायु पुत्र होता है। परीक्षित है।

(३०) पुत्रजीवकी जड़ और देवदारु—इन दोनोंको दूधमें पीस कर पीनेसे भी बड़ी उम्र पाने वाला पुत्र होता है। पाँच-सात बार परीक्षा की है। परीक्षित है।

(३१) मोथा, हल्दी, दारूहल्दी, कुटकी, इन्द्रायण, कूट, पीपर, देवदारु, कमल, काकोली, क्षीर काकोली, त्रिफला, बायविडंग, मेदा, महामेदा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, रास्ना, प्रियंगू, दन्ती, मुलहटी, अजमोद, बच, चमेलीके फूल, दोनों तरहके सारिवा, कायफल, वंशलोचन, मिश्री और हींग—इनमेंसे हरेक दवाको एक-एक तोले लेकर पीस-कूट कर छान लो। फिर उस चूर्णको सिल पर डाल कर पानीके साथ पीस कर लुगदी बना लो।

शेषमें यह लुगदी, एक सेर घी और चार सेर गायका दूध—इनको अच्छी तरह मथ-मिलाकर, क़लईदार कड़ाहीमें चूल्हे पर रख कर, आरने कण्डोंकी मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और रख दो।

अगर मर्द इस घीको चार तोले या दो तोले रोज़ पीवे, तो लगातार कुछ दिन पीनेसे औरतोंमें साँड हो जाय। अगर बाँझ पीवे तो पुत्र जनने लगे। जिन स्त्रियोंका गर्भ पेटमें न बढ़ता हो, जिनके एक सन्तान होकर फिर न हुई हो, जिनके बालक होते ही मर जाते

हों या मरे हुए बच्चे होते हों, उन्हें इस घृतके सेवन करनेसे रूपवान, बलवान और आयुष्मान पुत्र होता है। यह "फलघृत" भारद्वाज मुनिने कहा है। परीक्षित है।

नोट—इस नुसखेमें उस गायका घी लेना चाहिये, जो एक रङ्गकी हो और जिसका बछड़ा जीता हो। इसे आरने—जंगली कण्डोंकी आगसे ही पकाना चाहिये। वैद्यविनोद कर्त्ता लिखते हैं, इसमें लक्ष्मणाकी जड़ भी जरूर डालनी चाहिये। यद्यपि और भी अनेक दवाओंमें पुत्र देनेकी ताकत है, पर लक्ष्मणा उन सबमें सिरमौर है। शास्त्रोंमें लिखा है:—

कथिता पुत्रदाऽवश्यं लक्ष्मणा मुनिपुंगवैः।
लक्ष्मणार्के तु या सेवेद्वन्ध्यापि लभतेसुतम्॥
लक्ष्मणा मधुरा शीता स्त्रीबन्ध्यात्व विनाशिनी।
रसायनकरी बल्या त्रिदोषशमनी परा॥

लक्ष्मणा मुनियोंने अवश्य पुत्र देने वाली कही है। लक्ष्मणाके अर्कको अगर बाँझ भी सेवन करती है, तो पुत्र होता है। लक्ष्मणा-कन्द मधुर, शीतल, स्त्रीके बांझपनको नाश करनेवाला, रसायन और बलकारक है।

लक्ष्मणाकी बेल पुत्रकके जैसी होती है। इसके पत्तोंपर खूनकी सी लाल-लाल छोटी-छोटी बूँदें होती हैं। इसकी आकृति और गन्ध बकरेके समान होती है। लक्ष्मणा, और पुत्रजननी—ये दो लक्ष्मणाके संस्कृत नाम हैं। इनके सिवा और भी बहुतसे संस्कृत नाम हैं। जैसे,—नागपत्री, पुत्रदा, पुत्र कन्दा, नागिनी और नागपुत्री वगैरः वगैरः।

एक ग्रन्थमें लिखा है, लक्ष्मणा बहुत कम मिलती है। यह कहीं-कहीं पहाड़ों में मिलती है। इसके पत्ते चौड़े होते हैं। उनपर चन्दनकी सी लाल-लाल बूँदें होती हैं। इसके नीचे सफेद रङ्गका कन्द होता है।

कहते हैं, लक्ष्मणा गयाके पहाड़ोंपर मिलती है। कोई कहते हैं, हिमालय और उसकी शाखाओंपर अवश्य मिलती है। लक्ष्मणाका वृक्ष बनतुलसीके समान लम्बा-चौड़ा और सूरत-शकलमें भी वैसा ही होता है। बनतुलसीके पत्तोंपर खून की सी बूँदें नहीं होतीं, पर लक्ष्मणापर छोटी-छोटी खूनकी सी बूँदें होती हैं।

शरद् ऋतुमें, लक्ष्मणामें फल फूल आते हैं। उसी मौसममें यानी क्वार कातिकमें, शनिवारके दिन, साँझके समय, स्नान करके, खैरकी लकड़ीकी चार मेखें उसके चारों ओर गाड़कर, उसकी धूप दीप आदिसे पूजा करके, वैद्य उसे

निमंत्रण दे आवे। फिर जब पुष्य, हस्त या मूल नक्षत्रमेंसे कोई नक्षत्र आवे, तब मंत्र पढ़ कर उसे उखाड़ लावे और पीछे न देखे। शास्त्रोंमें लक्ष्मणा लेनेकी यही विधि लिखी है। महर्षि वाग्भट्टने इस मौकेकी कई बातें अच्छी लिखी हैं—

वैद्य, पुष्य नक्षत्रोंमें, सोने चाँदी या लोहेका पुतला बनाकर, उसे आगमें तपाकर लाल करले और फिर उसे दूधमें बुझा दे। फिर पुतलेको निकालकर, उस दूधमेंसे एक अञ्जलि या आठ तोले दूध स्त्रीको पिला दे। साथ ही गोरदण्ड, अपामार्ग—ओंगा, जीवक, ऋषभक और श्वेतकुरंटा—इनमेंसे एक, दो, तीन या सबको जलमें पीसकर स्त्रीको पुष्य नक्षत्रमें पिलावे, तो पुत्रकी प्राप्ति हो। और भी लिखा है:—

क्षीरेण श्वेतबृहतीमूलं नासापुटे स्वयम्।
पुत्रार्थं दक्षिणे सिञ्चेद्वामे दुहितृवाञ्छया॥
पयसा लक्ष्मणामूलं पुत्रोत्पादस्थितिप्रदम्।
नासयास्येन वा पीतं वटशृंगाष्टकम् तथा।
औषधीजीवनीयाश्च बाह्यान्तरुपयोजयेत्॥

सफेद कटेहलीकी जड़को स्त्री स्वयं ही दूधमें पीस कर, पुत्रके लिये नाकके दाहने नथनेमें और कन्याके लिये बाँये नथनेमें सींचे।

पुत्र देनेवाली लक्ष्मणाकी जड़को स्त्री दूधमें पीस कर नाकसे या मुँहसे पीवे। इसके सिवा, बड़के अंकुर प्रभृति अष्टकोंको भी नाक या मुँह द्वारा पीवे एवं जीवनीयगणकी दसों दवाओंको स्नान और उबटनके काममें लावे तथा भोजन और पानमें भी ले, तो जिसके पुत्र न होता होगा पुत्र होगा और होकर मर जाता होगा तो न मरेगा।

जिसके गर्भ न रहता हो या रहकर गिर जाता हो उसको, यदि किसी उपाय से गर्भ रह जाय, तो वह उसी दिन या तीन दिनके अन्दर लक्ष्मणाकी जड़, बड़की कोंपल, पीले फूलकी कंगही अथवा सफेद फूलका बरियारा—इन चारोंमें से जो मिल जाय उसे, बछड़े वाली गायके दूधमें पीस कर, पुत्रकी इच्छासे, अपनी नाकके दाहने छेदमें सींचे। अगर कन्याकी इच्छा हो, तो बायें नथनेमें सींचे। अगर दवा नाकमें डालनेसे गलेमें उतर जाय तो हर्ज नहीं, पर उसे भूल कर भी थूकना ठीक नहीं। इन उपायोंसे गर्भ पुष्ट हो जाता है, गिरनेका भय नहीं रहता। पर, जिस गायका दूध पिया जाय, उसका और बछड़ेका रंग एक ही होना चाहिये। परीक्षित है।

बड़का अष्टक, बड़का फुनगा या कोंपल, पीले फूलकी कंगही या गुलसकरी

अथवा सफेद फूलका वरियारा, सफेद कटेहलीकी जड, औंगा, जीवक, ऋषभक और लक्ष्मणा ये सभी औषधियाँ बाँझको पुत्र देनेवाली प्रसिद्ध हैं। पर इन सबमें "लक्ष्मणा" सबकी रानी है। अगर लक्ष्मणा न मिले, तो सफेद फलकी कटेहली और बड़की कोंपल प्रभृतिसे काम अवश्य लेना चाहिये। कटेहलीका चमत्कार हमने कई बार देखा है।

गर्भ-पुष्टिकर उपाय उस समयके लिये हैं, जब मालूम हो जाय कि गर्भ रह गया। अनेक चतुरा रमणियाँ तो गर्भ रहनेकी उसी क्षण कह देती हैं, कि हमें गर्भ रह गया, पर सबमें यह सामर्थ्य नहीं होती, अतः हम गर्भ रहनेकी पहचान नीचे लिखते हैं। गर्भ रहनेसे स्त्रीमें ये लक्षण पाये जाते हैं:—

(१) दिल खुश हो जाता है।

(२) शरीरमें कुछ भारीपन होता है।

(३) कूख फड़कती है।

(४) गर्भाशयमें गया हुआ मर्दका वीर्य बहकर बाहर नहीं आता।

(५) रजोधर्मके चौथे दिन भी जो जरा-जरा खून या भूंदरा-भूंदरा लाल-लाल पानी सा गिरता है, वह नहीं गिरता—बन्द हो जाता है।

(६) कलेजा धक-धक करता है।

(७) प्यास लगती है।

(८) भोजनकी इच्छा नहीं होती।

(९) रोएँ खडे होते हैं।

(१०) तन्द्रा या ऊँघाई आती और सुस्ती घेरती है।

नाकमें लक्ष्मणा प्रभृतिका रस डालना ही पुंसवन कहलाता है। अगर कोई यह कहे, कि जब गर्भ रहेगा, तब होनहार होगा तो, बच्चा होगा ही। पुंसवनसे क्या लाभ? इसपर महर्षि वाग्भट्ट कहते हैं:—

बली पुरुषकारो हि दैवमप्यतिवर्त्तते।

बलवान् पुरुषार्थ दैव या प्रारब्धको भी उल्लङ्घन करता है। मतलब यह पुरुषार्थके आगे प्रारब्ध या तक़दीर भी हेच हो जाती है।

हमारा अपना अनुभव।

हमने जिस स्त्रीको किसी योनिरोगसे पीड़ित पाया उसे पहले पृष्ठ ४३७ का "फलघृत" सेवन कराकर आरोग्य किया। जब वह योनि-रोगसे छुटकारा पागई, तब पृष्ठ ४३३ के नं० ३१ का फलघृत सेवन

कराया और साथ ही पुरुषको भी "वृष्यतमघृत" या कोई पुष्टिकर औषधि सेवन कराई। जब देखा, कि दोनों नीरोग हो गये, स्त्रीको योनिरोग, प्रदर रोग या आर्त्तव रोग नहीं है और पुरुष तथा स्त्रीके वीर्य और रज शुद्ध हैं, तब ऋतुस्नानके चौथे दिन, स्त्रीको पृष्ठ ४३१-३२ के नं० २६ या २७ नुसख़ोंमेंसे कोई सेवन कराकर, गर्भाधानकी सलाह दी। इस तरह हमें १०० में ६० केसोंमें कामयाबी हुई।

योनिरोग नाशक फलघृत।

गिलोय, त्रिफला, रास्ना, हल्दी, दारूहल्दी, शतावर, दोनों तरह के सहचर, स्योनाक, मेदा और सोंठ—इन ग्यारह दवाओंको सिलपर जलके साथ पीसकर लुगदी कर लो। फिर आधसेर घी और दो सेर दूध तथा लुगदीको क़लईदार कड़ाहीमें चढ़ाकर, जंगली कण्डों की मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही योनि-रोग नाशक फलघृत है। यह योनिरोगकी दशा में रामबाण है। इस घीके पीनेसे योनिमें दर्द होना, उसका अपने स्थानसे हट जाना, बाहर निकल आना और मुँह चौड़ा हो जाना प्रभृति कितने ही योनि रोग, पित्त-योनि, विभ्रान्त योनि तथा षण्ढ योनि ये सब आराम होकर गर्भ-धारणकी शक्ति हो जाती है। योनि-दोष दूर करनेमें यह फलघृत परमोत्तम है। परीक्षित है।

वृष्यतमघृत।

विधायरा लेकर पीस-कूटकर छान लो और फिर उसे सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। यह लुगदी, गायका घी और गायका दूध इन सबको मिलाकर, ऊपरकी तरह घी बना लो और उसे सेवन करो। यह घी पुत्र चाहने वाले पुरुषोंको परमोत्तम है।

नोट—अगर कोई और दवा खाकर वीर्य पुष्ट और शुद्ध कर लिया हो, तो भी यदि कुछ दिन यह घी सेवन किया जायगा, तो उत्तम पुत्र होगा। इससे हानि नहीं, वरन् लाभ ही होगा। परीक्षित है।

(३२) खिरेंटी, कंघी, मिश्री, मुलेठी, दूध, शहद और घी—इन सातोंको एक जगह मिलाकर, पीनेसे गर्भ रहता है ।

(३३) लक्ष्मणाकी जड़को, दूधमें पीसकर, बत्तीके द्वारा नाकके दाहिने छेदमें डालनेसे पुत्र और बाएँ छेदमें डालनेसे कन्या होती है ।

(३४) बड़के अंकुरोंको दूधमें पीसकर, बत्ती बनाकर, नाकके दाहिने छेदमें डालनेसे पुत्र और बाएँमें डालनेसे कन्या होती है ।

(३५) पुष्य नक्षत्रमें सोनेका पुतला बनाकर, उसे आगमें गरम करके, दूधमें बुझाओ । फिर उस दूधमेंसे ३२ तोला दूध स्त्रीको पिलाओ । इस उपायसे भी गर्भ रहता है । चक्रदत्तमें लिखा है:—

कानकान्राजतान्वापि लौहान्पुरुषकानमून् ।
ध्यातानग्नि वर्णान्पयसो दध्नो वाप्युदकस्य वा ।
क्षिप्त्वाञ्जलौ पिबेत्पुष्ये गर्भे पुत्रत्वकारकान् ॥

सोने, चाँदी या लोहेका सूक्ष्म पुरुष बनाकर, उसे आगमें लाल कर लो और दूध, दही या पानीकी भरी अंजलिमें डालकर निकाल लो । फिर उस दूध, दही या पानीको औरतको पिला दो । इससे गर्भ में पुत्र होता है । यह काम पुष्य नक्षत्रमें करना चाहिये ।

(३६) तिलका तेल, दूध, दही, राब और घी—इन सबको मिला कर मोथा और फिर इसमें पीपरोंका चूर्ण डालकर स्त्रीको पिलाओ । अगर वह बाँझ भी होगी, तो भी गर्भ रहेगा ।

(३७) पुष्य नक्षत्रमें लक्ष्मणाकी जड़को उखाड़कर, कन्यासे पिसवाकर, घी और दूधमें मिलाकर, ऋतुकालके अन्तमें, पीनेसे बाँझके भी पुत्र होता है ।

(३८) पताजिया (जीवक) पुत्रकके बीज, पत्ते और जड़को दूधके साथ पीसकर पीनेसे उस स्त्रीके भी सन्तान होती है, जिसकी सन्तान हो-होकर मर गई है ।

(३९) सफेद कटेहली (कटाई) की जड़को दूधके साथ पीस

कर, दाहिनी ओरके नाकके छेद द्वारा पीनेसे पुत्र और बाईं ओरके नाकके छेद द्वारा पीनेसे कन्या होती है। परीक्षित है।

(४०) लक्ष्मणाकी जड़ और सुदर्शनकी जड़को कन्याके हाथों से पिसवाकर, घी और दूधमें मिलाकर, ऋतुकालमें, पीनेसे उस बाँझके भी पुत्र होता है, जिसकी सन्तान मर-मर जाती है।

(४१) पुष्य नक्षत्रमें बड़के अंकुर, विजयसार और मूंगेका चूर्ण—एक रंगकी बछड़े वाली गायके दूधके साथ पीनेसे पुत्र होता है।

(४२) मेदा, मँजीठ, मुलहटी, कूट, त्रिफला, खिरैंटी, सफेद बिलाईकन्द, काकोली, क्षीर काकोली, असगन्धकी जड़, अजवायन, हल्दी, दारूहल्दी, हींग, कुटकी, नील कमल, दाख, सफेद चन्दन और लाल चन्दन, मिश्री, कमोदिनी और दोनों काकोली—इन सबको दो-दो तोले लेकर पीस-कूट-छान लो। फिर सिल पर रख, जलके साथ पीस लुगदी बना लो।

फिर गायका घी ४ सेर, शतावरका रस १६ सेर और बछड़े वाली गायका दूध १६ सेर तथा ऊपरकी दवाओंकी लुगदी,—इन सबको क़लईदार कढ़ाहीमें चढ़ाकर, जंगली कण्डोंकी मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब शतावरका रस और दूध जलकर घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और बर्तनमें रख दो।

यह घी अश्विनीकुमारोंका ईजाद किया हुआ है। यह अव्वल दर्जे का ताक़तवर, स्त्रियोंके योनिरोग, और उन्माद—हिस्टीरिया पर राम-बाण है। यह स्त्रियोंके बाँझपनको निश्चय ही नाश करके पुत्र देता है। हमारा आज़माया हुआ है। इसकी प्रशंसा सच्ची है। वंगसेनमें लिखा है, इस घीको पीनेवाला पुरुष औरतोंमें बैलके समान आचरण करता है। स्त्री अगर इसे पीती है, तो मेधासम्पन्न प्रियदर्शन पुत्र जनती है। जिन स्त्रियोंके गर्भ नहीं रहता, जिनके मरे हुए बालक होते हैं, जिनके

बालक होकर थोड़ी उम्रमें ही मर जाते हैं, जिनके कन्या-ही-कन्या पैदा होती है, उनके सब दोष दूर होकर उत्तम पुत्र पैदा होता है। इससे योनि-रोग, रजो दोष और योनिस्राव रोग भी आराम होते हैं।

नोट—बङ्गसेन और चक्रदत्त प्रभृति सभीने इस नुसखेमें लक्ष्मणाकी जड़ और भी मिलानेको लिखा है। इसके मिला देनेसे इसके गुणोंका क्या कहना? इसका नाम "बृहतफलघृत" है।

(४३) बरियारी, मिश्री, गंगेरन, मुलेठी, काकड़ासिंगी और नागकेशर—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे एक तोला चूर्ण घी, दूध और शहदमें मिलाकर पीनेसे बाँझके भी गर्भ रहता है। परीक्षित है।

(४४) मोरशिखा—मयूर शिखाकी जड़ अथवा सफेद कटेहली या लक्ष्मणाकी जड़को पुष्य नक्षत्रमें लाकर, कँवारी कन्याके हाथों से गायके दूधमें पिसवाकर, ऋतुस्नान करके पीने से अवश्य गर्भ रहता है।

नोट—मोरशिखाके क्षुप होते हैं। इसपर मोरकी चोटीके समान चोटी होती है, इसीसे इसे मोरशिखा कहते हैं। दवाके काममें इसका सर्वांश लेते हैं। इसकी मात्रा २ माशे की है। फारसीमें इसे असलान और लैटिनमें सिलीसिया-क्रिसटाय कहते हैं।

(४५) शिवलिंगीके बीज ज़ीरेके साथ मिलाकर, ऋतुस्नानके बाद, दूधके साथ पीनेसे गर्भ रहता है।

नोट—संस्कृतमें शिवलिंगीको लिंगिनी, बहुपुत्री, ईश्वरी, शिवमल्लिका, चित्रफला, और लिंगसम्भूता आदि नाम हैं। बँगलामें शिवलिंगिनी, मरहटीमें शिवलिंगी, लैटिनमे ब्रायोनिया लेसिनियोसा (Bryonia Laciniosa) कहते हैं। यह स्वादमें चरपरी, गरम और बदबूदार होती है। यह रसायन, सर्व सिद्धि-दाता, वशीकरण और पारेको बाँधने वाली है। इसकी बेल चलती है। इसके फल नीले, गोल और बेरके बराबर होते हैं। फलोंके ऊपर सफेद चित्र होते हैं, इसीसे इसे "चित्रफला" कहते हैं। फलोंमेंसे जो बीज निकलते हैं, उनकी आकृति शिवलिंगके जैसी होती है। इसके पत्ते अरण्डके समान होते हैं, पर उनसे छोटे होते हैं। शिवलिंगी और शंखिनीके फल एकसे होते हैं; परन्तु

शंखिनीके बीज शंख जैसे होते हैं, जब कि शिवलिंगीके शिवलिंग-जैसे होते हैं। शंखिनीके फल भी पकनेपर लाल हो जाते हैं, पर इनपर शिवलिंगीके फलोंकी तरह सफेद-सफेद छींटे नहीं होते। शंखिनीका फल कड़वा और दस्तावर होता है, पर शिवलिंगीका चरचरा और रसायन होता है।

(४६) पारस-पीपलके बीज सफेद ज़ीरेके साथ मिलाकर, ऋतु-स्नानके बाद, दूधके साथ पीने से गर्भ रहता है।

नोट—हिन्दीमें पारसपीपल, गजदण्ड और गजहुण्ड कहते हैं। बंगलामें गजशुण्डी, गुजरातीमे पारशपीपलो और लैटिनमें पोपलनिया कहते हैं।

पारस-पीपल दुर्जर, चिकना, फलमें खट्टा, जड़में मीठा, कसैला और स्वादिष्ट मींगी वाला होता है। इसका पेड़ भी पीपरके समान ही होता है। पीपलके पेड़ में फूल नहीं होते, पर पारस-पीपरमें भिन्डीके जैसे पीले फूल भी होते हैं। इसके फलके डोरे भिन्डीके आकारके होते हैं। इसकी मात्रा २ माशेकी है।

(४७) बाराहीकन्द, कैथा और शिवलिंगीके बीज—बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। ऋतुस्नानके बाद, दूधके साथ यह चूर्ण खानेसे अवश्य गर्भ रहता और पुत्र होता है।

(४८) बिदारीकन्दके साथ "सोना भस्म" खानेसे पुत्र होता है।

(४९) काकमाचीके अर्कके साथ "सोना भस्म" खानेसे गर्भ रहता, रजोधर्म शुद्ध होता और प्रदर रोग नष्ट होता है।

(५०) असगन्धकी जड़के साथ "चाँदीकी भस्म" बच्चेवाली गायके दूधमें पीस कर खानेसे बाँझके भी पुत्र होता है, इसमें शक नहीं।

नोट—परीक्षित है। जिस बाँझको किसी तरह गर्भ न रहता हो, वह इसे ३ दिन सेवन करे, अवश्य गर्भ रहेगा।

(५१) मातुलिंगीके बीजोंको बछड़ेवाली गायके दूधमें पीस कर, उसके साथ "चाँदीकी भस्म" खानेसे बाँझके भी पुत्र होता है। इसमें सन्देह नही।

(५२) शिवलिंगीके बीजोंके साथ, ऊपरकी विधिसे, दूधमें पीस कर, "चाँदीकी भस्म" खानेसे अवश्य पुत्र होता है।

(५३) ऋतुस्नानके बाद, नागकेशरको अतिबलाके साथ पीस कर, दूधके साथ पीनेसे अवश्य चिरजीवी पुत्र होता है। परीक्षित है।

(५४) ऋतुस्नान करके चौथे दिन, शिवलिंगीका एक फल निगल लेनेसे बाँझके भी पुत्र होता है, इसमें शक नहीं। "वैद्यरत्न" में लिखा है:—

शिवलिंगी फलमेकमृत्वन्ते यावला गिलति।
वन्ध्यापि पुत्ररत्नं लभेत सानात्रसंदेहः॥

(५५) "चक्रदत्त" में लिखा है—स्त्री सवेरे ही ब्राह्मणको दान दे और शिवकी पूजा करे। फिर सफेद खिरैंटी—बलाकी जड़ और मुलहटी दोनों एक-एक तोले लेकर पीस-छान ले और उसमें चार तोले चीनी मिला दे। फिर; एक रंग वाली बछड़े सहित गायके दूधमें बहुतसा घी मिलाकर, इसके साथ उपरोक्त चूर्णको फाँके और दिन-भर अन्न न खाय, अगर भूख लगे तो दूध-भात खाय। अगर वीर्यवान बलवान पुरुष अपनी ही स्त्रीमें मन लगाकर मैथुन करे, तो निश्चय ही पुत्र हो।

(५६) गोशालामें पैदा हुए बड़की पूर्व और उत्तरकी शाखा लेकर, दो उड़द और दो सफेद सरसों दहीमें मिलाकर, पुष्य नक्षत्रमें, पी जानेसे शीघ्र ही गर्भ धारण करने वाली स्त्रीके पुत्र होता है। चक्रदत्त।

(५७) सफेद सरसों, वच, ब्राह्मी, शंखाहूली, काकड़ासिंगी, काकोली, मुलहटी, कूट, कुटकी, सारिवा, त्रिफला, असवर्ण, पूतिकरञ्ज, अडूसाके फूल, मँजीठ, देवदारु, सोंठ, पीपर, भाँगरेके बीज, हल्दी, फूलप्रियंगू, हुलहुल, दशमूल, हरड़, भारंगी, असगन्ध और शतावर— इनमेंसे प्रत्येकको आठ-आठ तोले लेकर कुचल लो और सोलह सेर जलमें औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर नितार और छान लो। फिर इस काढ़ेमें एक सेर "घी" मिला कर, क़लईदार कड़ाही में मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर धर लो।

सेवन-विधि—अपुत्रा नारीको दो माशे और गर्भवतीको ८ माशे रोज़ खिलाओ।

रोगनाश—इसे "सोमघृत" कहते हैं। इसके सेवन करनेसे निरोग-पुत्र होता है। बाँझ भी शूर और पण्डित पुत्र जनती है। इसके पीनेसे शुक्रदोष और योनि-दोष दोनों नष्ट हो जाते हैं। सात दिन ही सेवन करने से वाणीकी जड़ता और गूँगापन–मिनमिनापन नाश हो जाते हैं और सेवन करने वाला एक बार सुनी बातको याद रखनेवाला श्रुतिधर हो जाता है। जिस घरमें यह सोमघृत रहता है, वहाँ अग्नि और वज्र आदिका भय नहीं होता और वहाँ कोई अल्पायु होकर नहीं मरता।

(५८) सरसों, बच, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, साँठी, क्षीर-काकोली, कूट, मुलहटी, कुटकी, त्रिफला, दोनों अनन्तमूल, हल्दी, पाठा, भाँगरा, देवदारू, सूरज बेल, मँजीठ, दाख, फालसा, कँभारी, निशोथ, अडूसेके फूल और गेरू—इन सबको दो-दो तोले लेकर, साढ़े बारह सेर पानीमें काढ़ा बना लो। चौथाई पानी रहने पर उतार लो। फिर इस काढ़ेमें ६४ तोले घी मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ जब घी मात्र रह जाय, उतार लो। तैयार होते ही "ओं नमो महाविनायकायामृतं रक्ष रक्ष मम फलसिद्धिं देहि रुद्रवचनेन स्वाहा" इस मंत्र द्वारा सात दूबसे इस घीको अभिमंत्रित कर लो।

सेवन-विधि—दूसरे महीनेसे इसे गर्भवती सेवन करे और छठे महीनेसे आगे सेवन न करे। इसके सेवन करनेसे शूरवीर और पण्डित पुत्र पैदा होता है। सात रात्रि सेवन करनेसे मनुष्य दूसरे की सुनी हुई बातको याद रखने वाला हो जाता है। जहाँ यह दवा रहती है, वहाँ बालक नहीं मरता। इसके प्रतापसे बाँझ भी निरोग पुत्र जनती है तथा योनि-रोगसे पीड़ित नारी और वीर्यदोषसे दुष्ट हुए पुरुष शुद्ध हो जाते हैं।

(५६) अगर रजस्वला नारी बड़की जटा गायके घीमें मिलाकर पीती है, तो गर्भ रह जाता है। मगर नवीना नारीको जवान पुरुषके साथ संभोग करना चाहिये। कहा है—

ऋतौरूद्रजटांनीत्वा गोघृतेन या च पिबेत्।
सा नारी लभते गर्भमेतद्धस्तिकवेर्मतम्॥

(६०) नागकेशर और ज़ीरा—इन दोनोंको गायके घीमें अगर स्त्री तीन दिन पीती है, तो गर्भ रह जाता है । कहा हैः—

नागकेशरसंयुक्तं जीरकं गोघृतेनच ।
त्रिदिन या पिबेन्नारी सगर्भा भामिनी भवेत् ॥

(६१) रविवारके दिन जड़ और पत्तों समेत सर्पाक्षि (सितार) को उखाड़ लाओ । फिर एक रंगकी गायके दूधमें कन्यासे उसे पिसवाओ । इसमेंसे दो तोले रोज़ अगर बाँझ स्त्री, ऋतु-कालमें, सात दिन तक, पीती है तो गर्भ रह जाता है । पथ्य—गायका दूध, साँठी चाँवल और मीठे पदार्थ खाने चाहियें । अपथ्य—चिन्ता, फिक्र, क्रोध, भय, दिनमें सोना, सरदी, गरमी या धूप सहना मना है ।

(६२) कंघईको पानीके साथ पीनेसे स्त्री गर्भवती होती है ।

(६३) पारस-पीपलके बीजोंको पीसकर घी और चीनीके साथ खानेसे गर्भ रह जाता है । इसे ऋतुकालमें सेवन करना चाहिये ।

(६४) लजवन्ती ... . ४॥ माशे
मिश्री ... ... ४॥ माशे
लौंग ... ... ४॥ माशे
ईसबगोल ... ... ४॥ माशे
माजूफल ... ... ४॥ मामे
बंसलोचन ... ... ४॥ माशे
मोचरस ... ... ४॥ माशे
सीपभस्म ... . २। माशे
खिरेंटी .. .. ४॥ माशे
खैर ... ... ४॥ माशे
सहँजना ... . ४॥ माशे
गोखरु ... ... ४॥ माशे
सोंठ ... ... ४॥ माशे

अजवायन	...	...	...	४॥ माशे
कमलगट्टा	...	...	...	४॥ "
जायफल	...	...	...	४॥ "
गजकेसर	..	...	...	६ "
कायफल	...	..	...	४॥ "
साँच पथरी	...	...	...	४॥ "
उटंगन	...	..	...	२२॥ "

इनको कूट-पीस और छानकर रख लो। सवेरे ही गायके घी और शहदके साथ रोज़ खाओ। ईश्वर-दयासे गर्भ रहेगा। पथ्य दूध भात। १ मास तक अपथ्य पदार्थ त्यागकर दवा खाओ।

(६५) निर्गुण्डी	..	.	...	२४ तोले
जायफल	..	...	..	२ "
लजवन्ती	...	...	...	१ "
जावित्री	...	.	...	१ "
ईसबगोल	...	...	..	१ "
मगजी	...	...	...	१ "
शतावर	...	..	...	५ माशे
शिलाजीत (शुद्ध)		..	...	२ तोले

सबको कूट-पीस और छान लो, फिर ५ सेर गायके दूधमें औटाओ; जब सूखकर चूर्ण-सा हो जाय, तब तोलकर दवासे दूनी मिश्री मिला दो। फिर एक सेर गायका घी और ४ तोले वंगेश्वर मिला दो। जब सब एक दिल हो जायँ, सुपारीके बराबर रोज़ १ या २ महीने तक खाओ। अपथ्य—खट्टा, मीठा, चरपरा। इसके सेवन करने से, ईश्वर-कृपा से, १० मास में बालक होगा।

(६६) अबीध मोती आधा, मूँगा आधा और जायफल आधा—इन सबको पीसकर अगर बाँझ तीन दिन पीती है, तो गर्भ रह जाता है।

बृहत् कल्याण घृत।

नागरमोथा, कूट, हल्दी, दारुहल्दी, पीपल, कुटकी, काकोली, क्षीरकाकोली, वायविडङ्ग, त्रिफला, बच, मेदा, रास्ना, असगन्ध, इन्द्रायण, फूलप्रियंगू, दोनों सारिवा, शतावर, दन्ती, मुलेठी, कमल, अजमोद, महामेदा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, चमेलीके फूल, वंसलोचन, मिश्री, हींग और कायफल—इन सबको दो-दो तोले या बराबर-बराबर लेकर, पीस-कूटकर छान लो। फिर इन्हें सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी या कल्क लना लो। फिर कल्कसे चौगुना दूध ले कर इस कल्क और दूधके साथ घी पकाओ। किन्तु इस घीको पुष्यनक्षत्रमें, ताम्बेके कलईदार बासनमें, मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी पक जाय, निकाल कर रख लो। दवाएँ अगर दो-दो तोले लोगे, तो सब मिला कर तीन पाव होंगी। कुटने-पिसने और लुगदी बनने पर भी तीन पाव ही रहेंगी। इस दशामें घी तीन सेर लेना और गायका दूध बारह सेर लेना। सबको चूल्हे पर चढ़ा कर मन्दाग्निसे पकाना। जब दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर रख देना। खूब शीतल होने पर छान कर बासनमें भर लेना।

रोगनाश—इस घीके उचित मात्राके साथ सेवन करनेसे पुरुष स्त्रियो में बैल के समान आचरण करता है। जिस स्त्रीके कन्या-ही-कन्या होती हों, जिसकी सन्तान होकर मर जाती हों, जिसके गर्भ ही न रहता हो, जिस के गर्भ रह कर नष्ट हो जाता हो या जिसके पेटसे मरी सन्तान होती हो, उन सब को यह "बृहत कल्याण घृत" परमोप-

योगी है। इसके सेवन करनेसे बाँझ स्त्री भी वेद्वेदाङ्गके जानने वाला, रूपवान, बलवान, अजर और शतायु पुत्र जनती है।

नोट—यद्यपि इस नुसखेमें "लचमणा" की जडका नाम नहीं आया है, तो भी सुवैद्य इसमें उसे डालते हैं। लचमणाके मिलानेसे निश्चय ही गर्भ रहता और पुत्र होता है।

वृहत् फलघृत।

मँजीठ, मुलेठी, कूट, त्रिफला, खाँड, खिरैंटी, मेदा, क्षीर-काकोली, काकोली, असगन्धकी जड़, अजमोद, हल्दी, दारूहल्दी, हींग, कुटकी, नीलकमल, कमोदिनी—कुमुदफूल, दाख, दोनों काकोली, लाल चन्दन, और सफेद चन्दन—इन २१ दवाओंको पहले कूट-पीसकर महीन कर लो। फिर सिलपर रखकर, पानीके साथ भाँगकी तरह पीसकर लुगदी या कल्क बना लो। घी चार सेर और शतावरका रस सोलह सेर तैयार रखो।

शेषमें, ऊपरकी लुगदी, घी और शतावरके रसको क़लईदार कड़ाहीमें चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब रस जलकर घी मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर साफ बासनमें रख दो।

रोगनाश—इस घीके मात्राके साथ पीनेसे बन्ध्यादोष, मृतवत्सा-दोष, योनिदोष और योनिस्राव आदि रोग आराम होते हैं।

जिस स्त्रीको गर्भ नहीं रहता, जिसके मरी सन्तान होती है, जिसके अल्पायु सन्तान होती है, जिसकी सन्तान होकर मर जाती है, जिसके कन्या-ही-कन्या होती है, उसके लिये यह "फलघृत" उत्तम है। अगर पुरुष इस घीको पीता है, तो स्त्रियोंकी खूब तृप्ति करता है। इस घृतको अश्विनीकुमारोंने निकाला था।

नोट—यद्यपि इसमें "लचमणा" का नाम नहीं आया है, तथापि वैद्य लोग इसमें उसे डालते हैं। अगर मिले तो अवश्य डालनी चाहिये।

"चक्रदत्त" में लिखा है, प्रत्येक दवाको एक-एक तोले लेकर और पीस कर

लुगदी बना लो। फिर घी ६४ तोले और शतावरका रस और दूध दोनों मिलाकर २५६ तोले लो और यथाविधि घी पकालो। हमारे नुसखेमें दूध नहीं है, वंगसेनमें भी घीसे चौगुना शतावरका रस और दूध लेना लिखा है। अब यह बात वैद्योंकी इच्छापर निर्भर है, चाहे जिस तरह इस घीको बनावें। हमने जिस तरह परीक्षा की, उस तरह लिख दिया।

दूसरा फलघृत।

दोनों तरहके पियाबाँसा, त्रिफला, गिलोय, पुनर्नवा, श्योनाक, हल्दी, दारूहल्दी, रास्ना, मेदा, शतावर—इन ग्यारह दवाओंको पीस-कूटकर, सिलपर रख, जलके साथ फिर पीसकर लुगदी या कल्क बना लो।

इन सब दवाओंको दो दो तोले लो; घी ६४ तोले लो और गाय का दूध २५६ तोले लो। सबको मिलाकर, कड़ाहीमें रख, चूल्हेपर चढ़ा, मन्दाग्निसे घी पकालो।

रोगनाश—इस घीके पीनेसे योनि-शूल, पीड़िता, चलिता, निःसृता और विवृता आदि योनि रोग आराम होते और स्त्रीमें गर्भ-धारण-शक्ति पैदा होती है। यह घृत योनिदोष नाश करके गर्भ रखनेमें उत्तम है। परीक्षित है।

नोट—पुनर्नवा सफेद, लाल और नीला इस तरह कई प्रकारका होता है। इसको विषखपरा और साँठ या साँठी भी कहते हैं। लालको लाल पुनर्नवा या लाल विपखपरा कहते हैं। नीलेको नीला पुनर्नवा या नीली साँठ कहते हैं। बंगलामें श्वेत गांदावन्ने, रक्तगांदावन्ने और नील गांदावन्ने कहते हैं। कोई-कोई बंगाली इसे श्वेत पुण्या भी कहते हैं। सफेद पुनर्नवा गरम और कड़वा होता है। यह कफ, खाँसी, विष, हृदयरोग, खूनविकार, पीलिया, सूजन और वात-वेदना नाशक है। मात्रा २ माशेकी है।

दोनों पियाबाँसोंसे मतलब दोनों तरहके सहचरों या कटसरैयासे है। यह सहचर या कटसरैया दो तरहकी होती हैं:—(१) कटसरैया या पियाबाँसा (२) पीली कटसरैया। इस विषयमें हम विस्तारसे अन्यत्र लिख आये हैं।

श्योनाकको हिन्दीमें सोनापाठा, अरलू या टेंटू कहते हैं। बँगलामें शोना-पाता या सोनालू कहते हैं।

तीसरा फलघृत।

मोथा, हल्दी, दारूहल्दी, कुटकी, इन्द्रायण, कूट, पीपल, देवदारु, कमल, काकोली, क्षीर-काकोली, त्रिफला, बायबिडंग, मेदा, महामेदा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, रास्ना, प्रियंगू, दन्ती, मुलहटी, अज-मोद, बच, चमेलीके फूल, दोनों तरहके सारिवा, कायफल, बंसलोचन, मिश्री और हींग—इन तीस दवाओंको एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर छान लो। फिर सिल पर रख, जलके साथ भाँगकी तरह पीस लो। यही कल्क है।

फिर एक सेर घी और चार सेर गायका दूध तथा ऊपरकी लुगदी या कल्कको मिलाकर खूब मथो और चूल्हे पर रखकर, आरने उपलोंकी आगसे पकाओ। जब घी तैयार हो जाय, दूध जल जाय, घीको उतारकर छान लो।

मात्रा—चार तोलेकी है। पर बलाबल-अनुसार कम या इतनी ही लेनी चाहिये।

रोगनाश—इस घीको अगर पुरुष पीवे तो औरतोंमें साँड़ हो जाय और बाँझ पीवे तो पुत्र जने। जिन स्त्रियोंको गर्भ तो रह जाता है पर पेट बढ़ता नहीं, जिनके कन्या ही कन्या होती हैं जिनके एक सन्तान होकर फिर नहीं होती, जिनकी सन्तान होकर मर जाती है या जिनके मरे हुए बच्चे होते हैं—वे सब इस घीके पीनेसे रूपवान, बलवान और आयुष्मान् पुत्र जनती हैं। इस घीको भारद्वाज मुनिने निकाला था। परीक्षित है। (यह घी हम पृष्ठ ४३३ में भी लिख आये हैं)

फलकल्याण घृत।

मँजीठ, मुलेठी, कूट, त्रिफला, खाँड, बरियारेकी जड़, मेदा, विदारीकन्द, असगन्ध, अजमोद, हल्दी, दारूहल्दी, हींग, कुटकी,

लाल कमल, कुमुदफूल, दाख, काकोली, क्षीर काकोली, सफेद चन्दन और लाल चन्दन—इन दवाओंको दो-दो तोले लाकर, पीस-कूट लो। फिर सिल पर रख, पानीके साथ, भाँगकी तरह पीसकर लुगदी या कल्क बना लो।

फिर गायका घी चार सेर, शतावरका रस आठ सेर और दूध आठ सेर—इनको और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मथ लो। शेष में, सबको कड़ाहीमें रख मन्दाग्निसे पकाओ। जब दूध और शतावर का रस जलकर घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

रोगनाश—इस घीके पीनेसे गर्भदोष, योनिदोष और प्रदर आदि रोग शान्त होकर गर्भ रहता है। परीक्षित है।

नोट—कल्ककी दवाओंमें अगर मिले, तो लक्ष्मणाकी जड़ भी दो तोले मिलानी चाहिये।

प्रियंगादि तैल।

प्रियंगूफूल, कमलकी जड़, मुलेठी, हरड़, बहेड़ा, आमले, रसौत, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, मँजीठ, सोवा, राल, सेंधानोन, मोथा, मोचरस, काकमाची, बेलका गूदा, बाला, गजपीपर, काकोली और क्षीर काकोली—इन सबको चार-चार तोले लेकर, पीसकूट कर, सिल पर रख, पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

काली तिलीका तेल चार सेर, बकरीका दूध चार सेर, दही चार सेर और दारूहल्दीका काढ़ा चार सेर और ऊपरकी लुगदी,—इन सबको मिलाकर मंदाग्निसे तेल पका लो। जब सब पतली चीजें जल जायँ, तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

रोगनाश—इस तेलकी मालिश करनेसे योनिरोग, ग्रहणी और अतिसार ये सब नाश हो जाते हैं। गर्भ रखनेमें तो यह तेल रामवाण ही है। अगर फलघृत पिया जाय और यह तेल लगाया जाय, तो

निश्चय ही बाँझके रूपवान, बलवान और आयुष्मान पुत्र हो। परीक्षित है।

शतावरी घृत।

शतावरका रस १६ सेर और बछड़े वाली गायका दूध १६ सेर तैयार कर लो।

फिर मेदा, मँजीठ, मुलहटी, कूट, त्रिफला, खिरेंटी, सफेद बिलाईकन्द, काकोली, क्षीर काकोली, असगन्ध, अजवायन, हल्दी, दारूहल्दी, हींग, कुटकी, नीला कमल, दाख, सफेद चन्दन और लाल चन्दन—इन उन्नीस दवाओंको दो-दो तोले लेकर और सिलपर पीस कर लुगदी बना लो।

फिर बछड़े वाली गायका घी चार सेर, लुगदी, शतावरका रस और दूध सबको चूल्हेपर चढ़ाकर, मन्दाग्निसे पकालो। जब दूध वग़ैरः जलकर घी मात्र रह जाय, उतार कर छानलो।

रोगनाश—इस घीके पीनेसे स्त्रियोंके योनि रोग, उन्माद-हिस्टिरिया एवं बन्ध्यापन—सब नाश हो जाते हैं। इन रोगोंपर यह घी रामबाण है।

नोट—यह का यही नुसख़ा हम पहले लिख आये हैं, सिर्फ बनानेमें थोड़ा भेद है। हमने इस तरह बनाकर और भी अधिक चमत्कार देखा है, इसी से फिर पिसेको पीसा है।

वृष्यतम घृत।

विधायरेकी जड़ एक छटाँक लाकर, सिलपर पानीके साथ पीस कर, लुगदी बनालो। फिर एक पाव गायका घी और एक सेर गाय का दूध—इन तीनोंको क़लईदार बर्तनमें रख, मन्दाग्निसे घी पका लो। यह घी अत्यन्त पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और वीर्योत्पादक है। इस घी को पुत्रकामी पुरुषको अवश्य पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—(१) इसी हिसाबसे चाहे जितना घी बना लो, इस घीको दो-चार महीने खा कर, शुद्ध रज और योनि वाली स्त्रीसे अगर पुरुष मैथुन करे, तो निश्चय ही गर्भ रहे और महाबलवान् पुत्र हो । यह घी आज़मूदा है । "बंगसेन" में लिखा है:—

वृद्धदारुकमूलेन घृतंपक्वं पयोन्वितम् ।
एतदवृष्यतमं सर्पिः पुत्रकामः पिबेन्नरः ॥

अर्थ वही है, जो ऊपर लिखा है । इसमें साफ "पिबेन्नरः" पद है, फिर न जाने क्यों बंगसेनके अनुवादकने लिखा है—"पुत्रकी इच्छा करने वाली स्त्री पान करे ।"

नोट—(२) विधायरेको हिन्दीमें विधारा और काला विधारा कहते हैं । संस्कृतमें वृद्धदारू, जीर्णदारू और फंजी आदि कहते हैं । बँगलामें बितारक, बीजतारक और बिद्धडक कहते है । मरहटीमें श्वेत वरधारा और गुजरातीमें वरधारो कहते हैं । विधारा दो तरहका होता है:—

(१) वृद्धदारू और (२) जीर्ण दारू । जीर्णदारूको फंजी भी कहते हैं । विधारा समुद्र-शोप-सा जान पडता है, क्योंकि समुद्र शोष और विधारेके फूल, पत्ते, वेल आदिमें कुछ भी फर्क नहीं दीखता । कितने ही वैद्य तो विधारे और समुद्रशोपको एकही मानते हैं । कोई-कोई कहते है, समुद्रशोष और समुद्रफूल—ये दोनों विधारेके ही भेद हैं ।

कुमारकल्पद्रुम घृत ।

पहले बकरेका मांस तीस सेर और दशमूलकी दशों दवाएँ तीन सेर—इन दोनोंको सवा मन पानीमें डाल कर औटाओ । जब चौथाई यानी १२॥ सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो और मांस वग़ैरः को फैंक दो ।

गायका दूध चार सेर, शतावरका रस चार सेर और गायका घी दो सेर भी तैयार रखो ।

कूट, शठी, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, प्रियंगूफूल, त्रिफला, देवदारु, तेजपात, इलायची, शतावर, गंभारीफल, मुलेठी, क्षीर-काकोली, मोथा, नीलकमल, जीवन्ती, लाल चन्दन, काकोली, अनन्तमूल, श्याम-लता, सफेद वरियारेकी जड़, सरफोंकेकी जड़, कोहड़ा, विदारीकन्द,

मजीठ, सरिवन, पिठवन, नागकेशर, दारुहल्दी, रेणुक, लताफटकीकी जड़, शंखपुष्पी, नीलवृक्ष, बच, अगर, दालचीनी, लौंग और केशर—इन ४० दवाओंको एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर, सिलपर रख, पानी के साथ, भाँगकी तरह पीसकर कल्क या लुगदी बना लो।

शुद्ध पारा एक तोले, शुद्ध गंधक १ तोले, निश्चन्द्र अभ्रक भस्म १ तोले और शहद एक सेर—इनको भी तैयार रखो।

बनानेकी विधि—मांस और दशमूल के काढ़े, दूध, शतावरके रस और घी तथा दवाओंके कल्क या लुगदी—इन सबको मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर शीतल करो और घीको छान लो। शेषमें, पककर तैयार हुए शीतल घीमें पारा, गंधक, अभ्रक भस्म और शहद मिला दो। अब यह "कुमारकल्पद्रुम घृत" तैयार हो गया।

सेवन विधि—इस घीकी मात्रा ६ माशेकी है। बलाबल अनुसार कम-ज़ियादा खाना चाहिये। इस घीके पीनेसे स्त्रियोंके योनिरोग वग़ैरः समस्त रोग और गर्भाशयके दोष नष्ट होकर गर्भ रहता है। इस घीकी जितनी भी तारीफ की जाय थोड़ी है। अमीरोंके घरोंकी स्त्रियाँ इसे अवश्य खायँ और निर्दोष होकर पुत्र जनें।

नोट—इस घीको खाना और प्रियंगू आदि तेलको मलवाना चाहिये।

बन्ध्या बनानेवाली औषधियाँ।

गर्भ न रहने देनेवाली औषधियाँ।

(१) अगर स्त्री—रजोधर्म होनेके समयमें—पीपल, वायविडंग और सुहागा—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, पीस छानकर रख ले और ऋतुस्नान करके एक-एक मात्रा चूर्ण गरम दूधके साथ फाँके तो कदापि गर्भ न रहे। परीक्षित है।

नोट—इस चूर्णको ऋतुकालमें, पाँच दिन तक जल या दूध से फाँकना चाहिये।

(२) चार तोले हरड़की मींगी मिश्री मिलाकर, तीन दिन, खाने से रजोधर्म नहीं होता। जब रजोधर्म न होगा, गर्भ भी न रहेगा।

(३) दूधीकी जड़को बकरीके दूधमें मिलाकर, तीन दिन, पीनेसे स्त्री रजस्वला नहीं होती।

(४) पुष्यार्क योगमें, धतूरेकी जड़ लाकर कमरमें बाँधनेसे कभी गर्भ नहीं रहता। विधवाओंके लिये यह उपाय अच्छा है। "वैद्यरत्न" में लिखा है:—

धत्तूरमूलिका पुष्ये गृहीता कटिसंस्थिता ।
गर्भनिवारयत्येवरडा वेश्यादियोषिताम् ॥

(५) पलाश यानी ढाकके बीजोंकी राख शीतल जलके साथ पीनेसे स्त्रीको गर्भ नहीं रहता। "वैद्यवल्लभ" में लिखा है—

रक्षापलाशबीजस्य पीत्वाशीतेन वारिणा ।
न भ्रूणं लभते नारी श्री हस्तिकचिनामतः ॥

(६) पाँच दिन तक हींगके साथ तेल पीनेसे गर्भ नहीं रहता।

(७) चीतेके पिसे-छने चूर्णमें गुड़ और तेल मिलाकर, तीन दिन तक, पीनेसे गर्भ नहीं रहता।

(८) करेलेके रसके पीनेसे गर्भ नहीं रहता।

(९) पुराने गुड़के साथ उड़द खानेसे गर्भ नहीं रहता।

(१०) जाशुकीके सूखे फल खानेसे गर्भ नहीं रहता।

(११) ढाकके बीज, शहद और घी—इन तीनोंको मिलाकर ऋतु समयमें, अगर स्त्री योनिमें रखे, तो फिर कभी गर्भ न रहे। "वैद्यरत्न" में लिखा है—

पलाशबीजमध्वाज्यलेपात्सामर्थ्ययोगतः ।
योनिमध्ये ऋतौ गर्भ धत्ते स्त्री न कदाचन ॥

(१२) चूहे की मैंगनी शहदमें मिलाकर योनिमें रखनेसे गर्भ नहीं रहता।

(१३) ख़च्चरका पेशाब और लोहेका बुझा हुआ पानी मिलाकर अगर स्त्री पीती है, तो गर्भ नहीं रहता।

(१४) सूखी हाथीकी लीद शहदमें मिलाकर खानेसे जन्मभर गर्भ नहीं रहता।

(१५) हाथीकी लीद योनिपर रखनेसे भी गर्भ नहीं रहता।

(१६) पाखानभेद महँदीमें मिलाकर स्त्रीके हाथोंपर लगानेसे गर्भ नही रहता और रजोधर्म होना वन्द हो जाता है।

(१७) पहली वार जनने वाली स्त्रीके बच्चा जननेके वाद जो खून निकलता है, उसे यदि कोई स्त्री सारे शरीरपर मल ले, तो उम्र भर गर्भवती न हो।

(१८) लोहेका बुझाया हुआ पानी पीनेसे गर्भ नहीं रहता।

(१९) जो स्त्री ऋतुकालमें गुड़हलके फूलोंको आरनाल नामकी काँजीमें पीसकर, तीन दिन तक पीती और चार तोले भर उत्तम पुराना गुड़ सेवन करती है, वह हरगिज़ गर्भवती नहीं होती।

(२०) तालीसपत्र और गेरू—इन दोनोंको दो तोले शीतल जल के साथ चार दिन पीनेसे गर्भ नहीं रहता—स्त्री वाँझ हो जाती है।

(२१) ऋतुवती नारी अगर ढाकके वीज जलमें घोटकर तीन दिन तक पीती है तो वाँझ हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) ऋतुवती स्त्री अगर सात या आठ दिन तक खीरेके बीज पीती है, तो वाँझ हो जाती है।

(२३) वेरकी लाख औटाकर और तेलमें मिलाकर, तीन दिन तक, दो-दो तोले रोज़ पीनेसे गर्भ नहीं रहता।

(२४) जसवन्तके एक तोले फूल काँजीमें पीसकर, ऋतुकालमें, पीनेसे गर्भ नहीं रहता।

(२५) ऋतुकालमें, तीन दिन तक, एक छटाँक पुराना गुड़ नित्य खानेसे गर्भ नहीं रहता ।

(२६) ढाकके बीजोंकी राखमें हींग मिलाकर खाने और ऊपर-से दूध पीनेसे गर्भ नही रहता ।

(२७) अगर स्त्री बाँझ होना चाहे तो उसे हाथीके गूका निचोड़ा हुआ रस एक तोले, थोड़ेसे शहदमें मिलाकर, ऋतुधर्म होने के पीछे, तीन दिनों तक पीना चाहिये ।

नोट—हाथीकी सूखी लीद शहदमे मिलाकर खानेसे जीते-जी गर्भ नहीं रहता । हाथीकी लीद योनिपर रखनेसे भी गर्भ नहीं रहता ।

(२८) हाथीके गूमें भिगोई हुई बत्ती योनिमें रखनेसे स्त्री बाँझ हो जाती है ।

(२९) नौसादर और फिटकरी बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ पीसकर, ऋतुके बाद, योनिमें रखनेसे स्त्री बाँझ हो जाती है ।

(३०) अगर स्त्री हर सवेरे एक लौंग निगलती रहे, तो उसे कभी गर्भ न रहे ।

(३१) ऋतुके दिनोंके बाद, इस्पन्द नागौरी जलाकर खानेसे स्त्रीको गर्भ नहीं रहता ।

(३२) अगर मर्द लिङ्गके सिरमें मीठा तेल और नमक मलकर मैथुन करे, तो गर्भ न रहे । इस दशामें गर्भाशय वीर्यको नहीं लेता ।

(३३) अगर स्त्री रजोदर्शन होनेके पहले दिनसे लगाकर उन्नी-सवें दिन तक, हल्दी पीस-पीसकर खाय, तो उसे हरगिज़ गर्भ न रहे।

(३४) अगर स्त्री चमेलीकी जड़ और गुले चीनियाका ज़ीरा बराबर-बराबर लेकर और पीसकर, रजोधर्म होनेके पहले दिनसे तीसरे दिन तक—तीन दिन खाती और ऊपरसे एक-एक घूँट पानी पीती है, तो कभी गर्भवती नहीं होती ।

(३५) फराश वृक्षकी छाल और गुड़ औटाकर पीनेसे स्त्रीको गर्भ नहीं रहता ।

(३६) मैथुनके बाद, योनिमें काली मिर्च रखनेसे गर्भ नहीं रहता।

(३७) अगर स्त्री तीन माशे छै रत्ती नील खाले तो कदापि गर्भवती न हो।

(३८) अगर स्त्री चमेलीकी एक कली निगल ले, तो एक साल तक गर्भवती न हो।

(३९) अगर स्त्री एक रेंडीका गूदा निगल जाय, तो एक साल तक गर्भवती न हो। अगर दो रेंडीका गूदा निगल ले, तो दो साल तक गर्भ न रहे।

(४०) मैथुनके समय खानेका नोन भगमें रखनेसे गर्भ नहीं रहता।

(४१) अगर किसी लड़केका पहला दाँत गिरने वाला हो, तो औरत उसका ध्यान रखे। ज्योंही वह गिरे, उसको हाथमें लेले, ज़मीनपर न गिरने दे। फिर उस दाँतको चाँदीके जन्तरमें मढ़ा कर अपनी भुजापर बाँधले। इस उपायसे हरगिज गर्भ न रहेगा।

(४२) अगर स्त्री, मैथुनके समय, मेंडककी हड्डी अपने पास रक्खे, तो कदापि गर्भ न रहे।

(४३) काकुंजके सात दाने, ऋतुधर्मके पीछे, निगल लेनेसे स्त्री को गर्भ नहीं रहता।

(४४) अगर स्त्री बाँझ होना चाहे, तो थूहरकी लकड़ी लाकर छायामें सुखा ले। सूखनेपर उसे जलाकर राख करले और राखको पीस-छान कर रखले। फिर इसमेंसे एक माशे-भर राख लेकर, उसमें माशे भर शक्कर मिला दे और खा जावे। इस तरह २१ दिन तक इस राखके खानेसे गर्भ-धारण-शक्ति मारी जाती है और गर्भ नहीं रहता।

(४५) मनुष्यके कानका मैल और एक दाना बाकलेका पश्मीने में बाँधकर, स्त्री अपने गलेमें लटका ले। जब तक गलेमें यह रहेगा, हरगिज़ गर्भ न रहेगा।

(४६) अगर स्त्री अपने बेटेके पेशाबपर पेशाब करे, तो उसे कभी गर्भ न रहे।

(४७) अगर स्त्री हर महीने थोड़ा ख़च्चरका पेशाब पी लिया करे, तो कभी गर्भ न रहे।

(४८) अगर स्त्री चाहे कि मैं गर्भवती न होऊँ, तो उसे माजूफल पानीके साथ महीन पीस कर, उसमें रूई भिगोकर, उसका गोला-सा बना कर, मैथुनसे पहले, अपनी योनिमें रख लेना चाहिये। इस उपायसे गर्भ नहीं रहता और भोगके बाद अगर गर्भाशयमें पीड़ा होती है, तो वह भी मिट जाती है।

(४६) पुरुषको चाहिये, मैथुनके समय स्त्रीको बहुत आलिंगन न करे, उसके पाँवोंको ऊँचे न उठावे और जब वीर्य छुटने लगे, लिंगको गर्भाशयसे दूर करले; यानी बाहरकी ओर खींच ले। स्त्री और पुरुष दोनों साथ-साथ न छुटें। ज्योंही वीर्य निकल जाय, दोनों झट अलग हो जायँ। स्त्री मैथुनसे निपटते ही जल्दी उठ खड़ी हो और आगेकी ओर सात या नौ बार कूदे और छींकें ले, जिससे गर्भाशयमें गया हुआ वीर्य भी निकल पड़े। इन बातोंके सिवा पुरुष मैथुन करते समय लिंगकी सुपारीपर तिलीका तेल लगा ले। इस उपायसे वीर्य फिसल जाता और गर्भाशयमें नहीं ठहरता। सबसे अच्छा उपाय यह है, कि मर्द लिंगपर पतला कपड़ा लपेट कर मैथुन करे, जिससे वीर्य कपड़ेमें ही रह जाय।

फ्रान्स देशकी विलासिनी रमणियाँ बच्चा जनना पसन्द नहीं करतीं, इसलिये वहाँ वालोंने एक प्रकारकी लिंगकी टोपियाँ बनाई हैं। मैथुन करते समय मर्द उन टोपियोंको लिंगपर चढ़ा लेते हैं। इससे वीर्य उन टोपियोंमें ही रह जाता है और स्त्रियोंको गर्भ नहीं रहता। ऐसी टोपी कलकत्तेमें भी आगई हैं।

गर्भिणी-रोगकी चिकित्सा।

ज्वर नाशक नुसखे।

(१) मुलेठी, लालचन्दन, ख़स, सारिवा और कमलके पत्ते—इनका काढ़ा बनाकर, उसमें मिश्री और शहद मिलाकर पीनेसे गर्भिणी स्त्रियोंका ज्वर जाता रहता है।

(२) लालचन्दन, सारिवा, लोध, दाख और मिश्री—इनका काढ़ा पीनेसे गर्भिणीका ज्वर शान्त हो जाता है।

(३) बकरीके दूधके साथ "सोंठ" पीनेसे गर्भिणी स्त्रियोंका विषमज्वर आराम हो जाता है।

अतिसार-ग्रहणी आदि नाशक नुसखे।

(४) सुगन्धबाला, अरलू, लालचन्दन, खिरेंटी, धनिया, गिलोय, नागरमोथा, ख़स, जवासा, पित्तपापड़ा और अतीस—इन ग्यारह दवाओंका काढ़ा बनाकर पिलानेसे गर्भिणी स्त्रियोंके अतिसार, संग्रहणी, ज्वर, योनिसे खून गिरना, गर्भस्राव, गर्भस्रावकी पीड़ा, दर्द या मरोड़ीके साथ दस्त होना आदि निश्चय ही आराम हो जाते हैं। यह नुसख़ा सूतिका रोगोंके नाश करनेके लिये प्राचीन कालमें ऋषियोंने कहा था। परीक्षित है।

(५) आमकी छाल और जामुनकी छालका काढ़ा बनाकर, उसमें "खीलोंका सत्तू" मिलाकर खानेसे गर्भिणीका ग्रहणी रोग तत्काल शान्त होता है।

(६) कुशा, काँस, अरण्डी और गोखरूकी जड़—इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदीको दूधमें रख-

कर, दूधको पका और छान लो और पीछे मिश्री मिला दो। इस दूध को पीनेसे गर्भशूल या गर्भवतीका दर्द आराम हो जाता है।

(७) गोखरू, मुलेठी, कटेरी और पियाबाँसा,—इनको ऊपर की विधिसे सिलपर पीसकर, दूधमें मिलाकर, औटा लो। पीछे छान कर मिश्री मिला दो और पिला दो। इस दूधसे गर्भकी वेदना शान्त हो जाती है।

(८) कसेरू, कमल और सिंहाड़े—इनको पानीके साथ पीस कर लुगदी बना लो और दूधमें औटाकर दूधको छानलो। इस दूध के पीनेसे गर्भवती सुखी हो जाती है।

(९) अगर गर्भवतीके पेटपर अफारा आ जाय, पेट फूल जाय, तो वच और लहसनको सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदीको दूधमें डाल कर दूधको औटालो। जब औट जाय, उसमें हींग और काला नोन मिला कर पिला दो। इससे अफारा मिटकर गर्भिणीको सुख होता है।

(१०) शालिधानोंकी जड़, ईखकी जड़, डाभकी जड़, काँसकी जड़ और सरपतेकी जड़,—इनको सिलपर पीसकर लुगदी बना लो और ऊपरकी विधिसे दूधमें डालकर, दूधको पका-छान लो और गर्भिणीको पिला दो। इस पंचमूलके साथ पकाये हुए दूधके पीनेसे गर्भिणीका रुका हुआ पेशाब खुल जाता है। इसके सिवा इस नुसख़ेसे प्यास, दाह-जलन और रक्तपित्त रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—गर्भिणीके दाह आदि रोगोंमें वैद्यको शीतल और चिकनी क्रिया करनी चाहिये।

गर्भस्राव और गर्भपात।

गर्भस्राव और गर्भपातके निदान-कारण।

गर्भावस्थामें मैथुन करने, राह चलने, हाथी या घोड़ेपर चढ़ने,

मिहनत करने, अत्यन्त दबाव पड़ने, कूदने, फलाँगने, गिरने, दौड़ने, व्रत-उपवास करने, अजीर्ण होने, मलमूत्र आदि वेगोंके रोकने, गर्भ गिराने वाले तेज़ और गर्म पदार्थ खाने, विषम—ऊँचे-नीचे स्थानों पर सोने या बैठने, डरने और तीक्ष्ण, गर्म, कड़वे तथा रूखे पदार्थ खाने-पीने आदि कारणोंसे गर्भस्राव या गर्भपात होता है।

गर्भस्राव और गर्भपातमें फर्क़?

चौथे महीने तक जो गर्भ खूनके रूपमें गिरता है, उसे "गर्भस्राव" कहते हैं; लेकिन जो गर्भ पाँचवें या छठे महीनेमें गिरता है, उसे "गर्भपात" कहते हैं।

खुलासा यह, कि चार महीने तक या चार महीनेके अन्दर अगर गर्भ गिरता है, तो वह खूनके रूपमें होता है, यानी योनिसे यकायक खून आने लगता है, पर मांस नहीं गिरता; इसीसे उसे "गर्भस्राव होना" कहते हैं। क्योंकि इस अवस्थामें गर्भ स्रवता या चूता है। पाँचवें महीने के बाद गर्भका शरीर बनने लगता है और उसके अङ्ग सख्त हो जाते हैं। इस अवस्थामें अगर गर्भ गिरता है, तो मांसके छीछड़े, खून और अधूरा बालक गिरता है, इसीसे इस अवस्थाके गिरे गर्भको "गर्भपात" होना कहते हैं।

गर्भस्राव या गर्भपातके पूर्व रूप।

अगर गर्भ स्रवने या गिरनेवाला होता है, तो पहले शूलकी पीड़ा होती और खून दिखाई देता है।

खुलासा यह है, कि अगर किसी गर्भिणीके शूल चलने लगें और खून आने लगे तो समझना चाहिये, कि गर्भस्राव या गर्भपात होगा।

गर्भ अकालमें क्यों गिरता है?

जिस तरह वृक्षमें लगा हुआ फल चोट वगैरः लगनेसे अकाल या असमयमें गिर पड़ता है; उसी तरह गर्भ भी चोट वग़ैरः लगने

और विषम आसन पर बैठने आदि कारणोंसे असमयमें ही गिर पड़ता है ।

गर्भपातके उपद्रव ।

जब गर्भपात होता या गर्भ गिरता है, तब जलन होती, पसलियोंमें शूल चलते, पीठमें पीड़ा होती, पैर चलते यानी योनिसे खून गिरता, अफारा आता और पेशाब रुक जाता है ।

गर्भके स्थानान्तर होनेसे उपद्रव ।

जब गर्भ एक स्थानसे दूसरे स्थानमें जाता है, तब आमाशय और पक्वाशयमें क्षोभ होता, पसलियोंमें शूल चलता, पीठमें दर्द होता, पेट फूलता, जलन होती और पेशाब बन्द हो जाता है; यानी जो उपद्रव गर्भपातके समय होते हैं, वही सब गर्भके स्थानान्तर होनेसे होते हैं ।

हिदायत ।

अगर गर्भ-स्राव या गर्भपात होने लगे, तो जहाँ तक सम्भव हो, चिकित्सा द्वारा उसे रोकना चाहिये । अगर किसीको गर्भस्राव या गर्भपातका रोग ही हो, तो उसे हर महीने "गर्भसंरक्षक दवा" देकर गर्भको गिरनेसे बचाना चाहिये । अगर गर्भ रुके नहीं—रुकनेसे गर्भिणीकी जानको खतरा हो, अथवा कष्ट होनेकी सम्भावना हो, तो उस गर्भको गर्भ गिरानेवाली दवा देकर गिरा देना चाहिये । हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है,—"अगर गर्भवती कम-उम्र हो, दर्द सहने योग्य न हो, गर्भसे उसके मरने या किसी भारी रोगमें फँसनेकी संभावना हो, तो गर्भको गिरा देना ही उचित है ।" जिस तरह हमने गर्भोत्पादक नुसखे लिखे हैं, उसी तरह हम आगे गर्भ गिरानेवाले नुसखे भी लिखेंगे ।

गर्भपात और उसके उपद्रवोंकी चिकित्सा।

(१) भौंरीके घरकी मिट्टी, मोंगरेके फूल, लजवन्ती, धायके फूल, पीला गेरू, रसौत और राल—इनमेंसे सब या जो-जो मिलें, उन्हें कूट-पीसकर छान लो। इस चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

(२) जवासा, सारिवा, पद्माख, रास्ना, मुलेठी और कमल—इनको गायके दूधमें पीसकर पीनेसे गर्भस्राव बन्द हो जाता है।

(३) सिंघाड़ा, कमल-केशर, दाख, कसेरू, मुलहटी और मिश्री—इनको गायके दूधमें पीसकर पीनेसे गर्भस्राव बन्द हो जाता है।

(४) कुम्हार बर्तन बनाते समय, हाथमें लगी हुई मिट्टीको पोंछता जाता है। उस मिट्टीको लाकर गर्भिणीको पिलानेसे गिरता हुआ गर्भ थम जाता है।

(५) खिरेंटीकी जड़ कँवारी कन्याके काते हुए सूतमें बाँधकर, कमरमें लपेटनेसे गिरता हुआ गर्भ थम जाता है।

(६) कुश, काश, लाल अरण्डकी जड़ और गोखरू—इनको दूधमें औटाकर और मिश्री मिलाकर पीनेसे गर्भवतीकी पीड़ा दूर हो जाती है। दवाओंका कल्क १ तोले, दूध ३२ तोले और पानी १२८ तोले लेकर दूध पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, छान लो।

(७) कसूमके रंगे हुए लाल डोरेमें एक करंजुआ बाँधकर गर्भिणी की कमरमें बाँध देनेसे गर्भ नहीं गिरता। अगर गर्भ रहते ही यह कमरमें बाँध दिया जाय और नौ महीने तक बँधा रहे, तो गर्भ गिरनेका भय ही न रहे।

नोट—कंटक करंज या करंजुएके पेड़ माली लोग फुलवाड़ियोंकी वाड़ोंपर रक्षाके लिये लगाते है। इनके फल कचौरी जैसे होते हैं। इनके इर्द-गिर्द इतने काँटे होते हैं कि तिल धरनेको जगह नहीं मिलती, फलमेंसे चार पाँच दाने निकलते हैं। उन दानोंको ही "करंजुवा" या "करंजा" कहते हैं। दानेके ऊपर

का छिलका राखके रङ्गका होता है, पर भीतरसे सफेद गिरी निकलती है। इसे संस्कृतमें कण्टक करंज, हिन्दीमें करंजा या करंजुवा, वंगलामें काँटाकरंज और अँगरेज़ीमें वोंडकनट कहते हैं।

(८) कुहरवा यशमई और दरुनज अकरवी गर्भिणीकी कमरमें बाँध देनेसे गर्भ नहीं गिरता।

(९) कँवारी कन्याके काते हुए सूतसे गर्भिणीको सिरसे पाँवके नाखून तक नापो। उसी नापके २१ तार लेलो। फिर काले धतूरे की जड़ लाकर, उसके सात टुकड़े कर लो और हर टुकड़ेको उस तारमें अलग-अलग बाँध दो। फिर उस जड़ बँधे हुए सूतको स्त्री की कमरमें बाँध दो। हरगिज़ गर्भ न गिरेगा।

(१०) गर्भिणीके बाँयें हाथमें जमुर्रदकी अँगूठी पहना देनेसे खून वहना या गर्भस्राव-गर्भपात होना वन्द हो जाता है।

(११) ख़तमीके वीज और मुल्तानी मिट्टीको "मकोय के रस" में पीसकर, योनिमें लगा देनेसे गर्भ नहीं गिरता और भगकी जलन और खुजली मिट जाती है।

(१२) भीमसेनी कपूर, अर्क़ गुलावमें पीसकर, भगमें मलनेसे गर्भ गिरना वन्द हो जाता है।

(१३) गूलरकी जड़ या जड़की छालका काढ़ा वनाकर गर्भिणी को पिलानेसे गर्भस्राव या गर्भपात वन्द हो जाता है।

नोट—अगर गर्भिणीको भूख न लगती हो, तो वडी इलायची २ माशे कन्दमें मिलाकर खिलाओ।

(१४) गर्भिणीकी कमरमें अकेला "कुहरवा" बाँध देनेसे गर्भ नहीं गिरता।

इसी कुहरवेको गलेमें बाँधनेसे कमल-वायु आराम हो जाता है और छाती पर रखनेसे प्लेग या ताऊन भाग जाता है।

(१५) अगर गर्भ चलायमान हो, तो गायके दूधमें कच्चे गूलर पका कर पीने चाहियें।

(१६) कसेरु, सिंघाड़े, पद्माख, कमल, मुगवन और मुलेठी—इनको पीस-छान और मिश्री मिलाकर दूधके साथ पीनेसे गर्भस्राव आदि उपद्रव नाश हो जाते हैं। इस दवापर दूध-भातके सिवा और कुछ न खाना चाहिये।

(१७) कसेरु, सिंघाड़े, जीवनीयगणकी दवाएँ, कमल, कमोदिनी, अरण्डी और शतावर—इनको दूधमें औटाकर और मिश्री मिलाकर पीनेसे गर्भ गिरता-गिरता ठहर जाता और पीड़ा नष्ट हो जाती है।

(१८) विदारीकन्द, अनारके पत्ते, कच्ची हल्दी, त्रिफला, सिंघाड़े के पत्ते, जाती फूल, शतावर, नील कमल और कमल—इन आठोंको दो-दो तोले लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर तेलकी विधिसे तेल पकाकर रख लो। इस तेलकी मालिश करनेसे गर्भशूल, गर्भस्राव आदि नष्ट हो जाते और गिरता-गिरता गर्भ रह जाता है। इस तेलका नाम "गर्भविलास तैल" है। परीक्षित है।

(१९) कबूतरकी बीट शालि चाँवलोंके जलके साथ पीनेसे गर्भस्राव या गर्भपातके उपद्रव दूर हो जाते हैं।

(२०) शहद और बकरीके दूधमें कुम्हारके हाथकी मिट्टी मिला कर खानेसे गिरता हुआ गर्भ ठहर जाता है।

गर्भिणीकी महीने-महीनेकी चिकित्सा।

पहला महीना।

पहले महीनेमें—मुलेठी, सागौनके बीज, असगन्ध और देवदारु—इनमेंसे जो-जो मिलें; उन सबका एक तोला कल्क दूधमें घोल कर गर्भिणीको पिलाओ।

दूसरा महीना।

दूसरे महीनेमें—अश्मन्तक, काले तिल, मँजीठ और शतावर—इनमेंसे जो मिलें, उनका एक तोले कल्क दूधमें घोलकर गर्भिणी को पिलाओ।

तीसरा महीना ।

तीसरे महीनेमें—वंदा, फूल प्रियंगू, कंगुनी और सफेद सारिवा—इनमेंसे जो मिलें, उनका एक तोले कल्क दूधमें घोलकर पिलाओ ।

चौथा महीना ।

चौथे महीनेमें—सफेद सारिवा, काला सारिवा, रास्ना, भारंगी, और मुलेठी—इनमेंसे जो मिलें, उनका एक तोले कल्क दूधमें घोलकर पिलाओ ।

पाँचवाँ महीना ।

पाँचवें महीनेमें—कटेरी, बड़ी कटेरी, कुम्भेर, बड़ आदि दूध-वाले वृक्षोंकी बहुत-सी छोटी-छोटी कोंपलें और छाल—इनमेंसे जो-जो मिलें, उन सबका एक तोले कल्क दूधमें घोलकर पिलाओ ।

छठा महीना ।

छठे महीनेमें—पिठवन, बच, सहँजना, गोखरू और कुम्भेर—इनका एक तोले कल्क दूधमें घोलकर पिलाओ ।

सातवाँ महीना ।

सातवें महीनेमें—सिंघाड़े, कमलकन्द, दाख, कसेरु, मुलेठी और मिश्री—इनमेंसे जो मिलें, उनका एक तोले कल्क दूधमें घोल-कर पिलाओ ।

नोट—सातों महीनोंमें, दवाओंको शीतल जलमें पीसकर और दूधमें मिला कर पिलानेसे गर्भस्राव और गर्भपात नहीं होता । इसके सिवाय, गर्भ-सम्बन्धी शूल भी नष्ट हो जाता है ।

आठवाँ महीना ।

आठवें महीनेमें—कैथ, कटाई, बेल, परवल, ईख और कटेरी—इन सबकी जड़ोंको शीतल जलमें पीसकर, एक तोले कल्क तैयार कर लो । फिर इस कल्कको १२८ तोले जल और ३२ तोले दूधमें डालकर पकाओ । जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाय, छानकर पिलाओ ।

नोट—इस मासमें मैथुन कतई त्याग देना चाहिये। क्योंकि इस महीनेमें मैथुन करनेसे गर्भ निश्चय ही गिर जाता या अन्धा, लूला, लँगड़ा हो जाता है।

नवाँ महीना।

नवें महीनेमें—मुलेठी, सफेद सारिवा, काला सारिवा, असगन्ध और लाल पत्तोंका जवासा—इनको शीतल जलमें पीस कर, एक तोले कल्क लेकर चार तोले दूधमें घोलकर पिलाओ।

दसवाँ महीना।

दसवें महीनेमें—सोंठ और असगन्धको शीतल जलमें पीस कर, फिर उसमेंसे एक तोले कल्क लेकर, १२८ तोले जल और बत्तीस तोले दूधमें डाल कर पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, छान कर गर्भिणीको पिला दो।

अथवा

सोंठको दूधमें औटाकर शीतल करके पिलाओ।

अथवा

सोंठ, मुलेठी और देवदारुको दूधमें औटाकर पिलाओ। अथवा इन तीनोंके एक तोले कल्कको चार तोले दूधमें घोलकर पिलाओ।

ग्यारहवाँ महीना।

ग्यारहवें महीनेमें—खिरनीके फल, कमल, लजवन्तीकी जड़ और हरड़—इनको शीतल जलमें पीस कर, फिर एक तोले कल्कको दूधमें घोलकर पिलाओ। इससे गर्भिणीका शूल शान्त हो जाता है।

बारहवाँ महीना।

बारहवें महीनेमें मिश्री, विदारीकन्द, काकोली और कमलनाल इनको सिलपर पीस कर, इसमेंसे एक तोला कल्क पीनेसे शूल मिटता; घोर पीड़ा शान्त होती और गर्भ पुष्ट होता है।

इस तरह महीने-महीने चिकित्सा करते रहनेसे गर्भस्राव या गर्भपात नहीं होता; गर्भ स्थिर हो जाता और शूल वगैरः उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

वायुसे सूखे गर्भकी चिकित्सा।

योनिस्रावकी वजहसे अगर बढ़ते हुए गर्भका बढ़ना रुक जाता है और वह पेटमें हिलने-जुलनेपर भी कोठेमें रहा आता है, तो उसे "उपविष्टिक गर्भ" कहते हैं। अगर गर्भकी वजहसे पेट नहीं बढ़ता एवं रूखेपन, और उपवास आदि अथवा अत्यन्त योनिस्रावसे कुपित हुए वायुके कारणसे कृश गर्भ सूख जाता है, तो उसे "नागोदर" कहते हैं। इस दशामें गर्भ चिरकालमें फुरता है और पेटके बढ़नेसे भी हानि ही होती है।

अगर वायुसे गर्भ सूख जाय और गर्भिणीके उदरकी पुष्टि न करे, पेट ऊँचा न आवे, तो गर्भिणीको जीवनीयगणकी औषधियोंके कल्क द्वारा पकाया हुआ दूध पिलाओ और मांसरस खिलाओ।

अगर वायुसे गर्भ संकुचित हो जाय और गर्भिणी प्रसवकाल बीत जानेपर भी; यानी नवाँ, दसवाँ, ग्यारहवाँ और बारहवाँ महीना बीत जानेपर भी बच्चा न जने, तो बच्चा जनानेके लिये, उससे ओखलीमें धान डाल कर मूसलसे कुटवाओ और विषम आसन या विषम सवारीपर बैठाओ। वाग्भट्टमें लिखा है,—उपविष्टक और नागोदरकी दशामें बृंहण, वातनाशक और मीठे द्रव्योंसे बनाये हुए घी, दूध और रस गर्भिणीको पिलाओ।

हिकमतमें एक "रिजा" नामक रोग लिखा है, उसके होनेसे स्त्रीकी दशा ठीक गर्भवतीके जैसी हो जाती है। जिस तरह गर्भ रहनेपर स्त्रीका रजःस्राव बन्द हो जाता है; उसी तरह 'रिजा' में भी रज बन्द हो जाती है। रङ्गमें अन्तर आ जाता है। भूख जाती रहती है। संभोग या मैथुनकी इच्छा नहीं रहती। गर्भाशय का मुँह बन्द हो जाता है और पेट बड़ा हो जाता है। गर्भवतियोंकी तरह पेटमें

कड़ापन और गति मालूम होती है। ऐसा जान पड़ता है, मानों पेटमें बच्चा हो। अगर हाथसे दबाते हैं, तो वह सख्ती दाहिने बायें हो जाती है।

इस रोगके लक्षण बेढंगे होते हैं। कभी तो यह किसी भी इलाजसे नहीं जाता और उम्रभर रहा आता है और कभी जलोदर या जलन्धरका रूप धारण कर लेता है। कभी बच्चा जननेके समयका-सा दर्द उठता है और एक मांसका टुकड़ा तर पदार्थ और मैलेके साथ निकल पड़ता है अथवा बहुत सी हवा निकल पड़ती है या कुछ भी नहीं निकलता।

अनेक बार झूठे गर्भका मवाद सड़ जाता है और अनेक बार उस मवादमें जान पड़ जाती है और वह जानवरकी सी सूरतमें तब्दील हो जाता है। अखबारों में लिखा देखते हैं, फलाँ औरतके कछुएकी सी शकलका बच्चा पैदा हुआ। कई घण्टों तक जीता या हिलता-जुलता रहा। एक बार एक स्त्रीने मुर्गेकी सूरतका बच्चा जना। ऐसे-ऐसे उदाहरण बहुत मिलते हैं।

सच्चे और झूठे गर्भकी पहचान।

अगर रोग होता है, तो पेट बड़ा होता है और हाथ पाँव सुस्त रहते हैं, पर पेटकी सख्तीकी गति बालककी सी नहीं होती। पेटपर हाथ रखने या दबानेसे वह इधर उधर हो जाती है; परन्तु जो अपने आप हिलता है वह और तरहका होता है। बच्चा समयपर हो जाता है, पर यह रोग चार चार बरस तक रहता है और किसी-किसीको उम्र भर। इलाजमें देर होनेसे यह जलन्धर हो जाता है।

इसके होनेके ये कारण हैं:—

(१) गर्भाशयमें कड़ी सूजन हो जानेसे, रज निकलना बन्द हो जाता है और रजके बन्द हो जानेसे यह रोग होता है। (२) गर्भाशयके परतोंमें गाढ़ी हवा रुक जाती है उसके न निकलनेसे पेट फूल जाता है। इस दशामें जलन्धरके लक्षण दीखते हैं।

प्रसवका समय।

गर्भिणी नवें, दसवें, ग्यारहवे अथवा बारहवे महीनेमें बच्चा जनती हैं। अगर कोई विकार होता है, तो बारहवें महीनेके बाद भी बच्चा होता है।

वाग्भट्टमें लिखा है:—

तस्मिंस्त्वेकाहयातेऽपि कालः तेरतः परम्।
वर्षाद्विकारकारी स्यात्कुक्षौ वातेन धारितः॥

आठवें महीनेका एक दिन बीतने बाद और बारहवें महीनेके अन्त तक बालकके जन्मका समय है। बारहवें महीनेके बाद, कोखमें वायुद्वारा रोका हुआ गर्भ, विकारोंका कारण होता है।

बच्चा होनेके २४ घण्टों पहलेके लक्षण।

जब ग्लानि हो, कोख और नेत्र शिथिल हों, थकान हो, नीचेके अंग भारी-से हों, अरुचि हो, प्रसेक हो, पेशाब बहुत हों, जाँघ, पेट, कमर, पीठ, हृदय, पेड़ू और योनिके जोड़ोंमें पीड़ा हो; योनि फटती सी जान पड़े, योनिमें शूल चलें, योनिसे पानी आदि झिरें, जननेके समयके शूल चलें और अत्यन्त पानी गिरे, तब समझो कि बालक आज ही या कल होगा; यानी ये लक्षण होनेसे २४ घण्टोंमें बच्चा हो जाता है। देखा है, बच्चा होनेमें अगर २४ घण्टोंसे कमीकी देर होती है, तो पेशाब बारम्बार होने लगते हैं, दर्द ज़ोरसे चलते हैं और पानीसे धोती तर हो जाती है। पानी और ज़रा-सा खून आनेके थोड़ी देर बाद ही बच्चा हो जाता है।

सूचना—गर्भवतीको गर्भावस्थामें क्या कर्त्तव्य और क्या अकर्त्तव्य है, उसे पथ्य क्या और अपथ्य क्या है, पेटमें लड़का है या लड़की, गर्भिणीकी इच्छा पूरी करना परमावश्यक है, गर्भमें बच्चा क्यों नहीं रोता, किस महीनेमें गर्भके कौन-कौन अङ्ग बनते हैं,—इत्यादि गर्भिणी-सम्बन्धी सैकड़ों बातें हमने अपनी लिखी "स्वास्थ्यरक्षा" नामक सुप्रसिद्ध पुस्तकमें विस्तारसे लिखी हैं। चूंकि "चिकित्सा-चन्द्रोदय" का प्रत्येक खरीदार "स्वास्थ्यरक्षा" अवश्य खरीदता है, इससे हम उन बातोंको यहाँ फिर

लिखना व्यर्थ समझते हैं । जिन्हें ये बातें जाननी हों, "स्वास्थ्यरक्षा" देखें ।

प्रसव-विलम्ब-चिकित्सा ।

गर्भिणी जब बच्चा जन लेती है, तब उसका नया जन्म होता है । जिस तरह पेटमें बच्चेके मर जानेपर स्त्रीकी जानको ख़तरा होता है, उसी तरह अनेक कारणोंसे जीते हुए बच्चेके जल्दी न निकलने अथवा ओलनाल, जेर या झिल्लीके पेटमें कुछ देर रुके रहनेसे स्त्रीकी मौतका सामान हो जाता है । इसलिये बच्चा जनने वालीकी जीवन-रक्षा और सुखके लिये चन्द ऐसे उपाय लिखते हैं, जिनसे बालक आसानीसे योनिके बाहर आ जाता है । यद्यपि रुके हुए गर्भ और जेर प्रभृतिको सहजमें निकाल देने वाले मन्त्र-तन्त्र और योग वैद्यकमें बहुतसे लिखे हैं; पर बालकके रुक जानेके निदान-कारण प्रभृतिका हमारे यहाँ बहुत ही संक्षिप्त ज़िक्र है । आयुर्वेदकी अपेक्षा हिकमतमें इस विषयपर खूब प्रकाश डाला गया है । अतः हम तिब्बे अकबरी, मीज़ान तिब्ब और इलाजुल-गुर्बा प्रभृतिसे दो-चार उपयोगी बातें, पाठकोंके लाभार्थ, नीचे लिखते हैं:—

हिकमतसे निदान-कारण और चिकित्सा ।

मुख्य चार कारण ।

बालकके होनेमें देर लगने या कठिनाई होनेके मुख्य चार कारण हैं:—

(१) गर्भवतीका मोटा होना ।

(२) सर्द हवा या सर्दीसे गर्भाशयके मुखका सुकड़ जाना ।

(३) बालकके ऊपरकी झिल्लीका बहुत ही मोटा होना ।

(४) प्रकृति और हवाकी गरमी ।

पहले कारणका इलाज ।

(१) अगर स्त्री मोटी होती है, तो उसका गर्भाशय भी मोटा होता है । मुटाईकी वजहसे गर्भाशयका मुँह तंग हो जाता है, यानी जिस सूराख या राहमें होकर बालक आता है, उस सूराखकी चौड़ाई काफी नहीं होती । अगर बालक दुबला-पतला होता है, तब तो उतनी कठिनाई नहीं होती । अगर कहीं मोटा होता है, तब तो महा विपद्का सामना होता है । ऐसे मौक़ोंके लिये हकीमोंने नीचे लिखे उपाय लिखे हैं:—

(क) बनफ़शेका तेल, जम्बकका तेल, जैतूनका तेल, मुर्ग़ और बतख़की चर्बी एवं गायकी पिंडलीकी चर्बी,—इनको बच्चा जननेवाली स्त्रीके पेट और पीठपर मलो ।

(ख) बाबूना, सोया और दोनों मरुवोंको पानीमें औटा कर, उसी पानीमें बच्चा जननेवालीको बिठाओ । यह पानी स्त्रीकी ढूँडी सूंडी या नाभि तक रहना चाहिये । इसलिये ढेर सा काढ़ा औटाकर एक टबमें भर देना चाहिये और उसीमें स्त्रीको बिठा देना चाहिये ।

(ग) जंगली पोदीना और हंसराज इन दोनोंका काढ़ा बनाकर मिश्री मिला दो और स्त्रीको पिला दो ।

(घ) काला दाना, जुन्देवेदस्तर और नकछिकनी—इनको पीस-छान कर छींक आनेके लिये स्त्रीको सुँघाओ । जब छींक आने लगें, तब स्त्रीके नाक और मुँहको बन्द कर दो, ताकि भीतरकी ओर ज़ोर पड़े और बालक सहजमें निकल आवे ।

(ङ) स्त्रीकी योनिको घोड़े, गधे या ख़च्चरके खुरोंका धूआँ पहुँचाओ। इनमें से जिस जानवरका खुर मिले, उसीका महीन चूरा करके आगपर डालो और स्त्रीको इस तरह बिठाओ कि, धूआँ योनिकी ओर जावे।

(च) अगर स्त्री मांस खानेवाली हो, तो उसे मोटे मुर्गेका शोरवा बना कर पिलाओ।

दूसरे कारणका इलाज।

(२) अगर सर्द हवा या और किसी प्रकारकी सर्दी पहुँचनेसे गर्भाशयका मुँह सुकुड़ या सिमट गया हो, तो इसका यथोचित उपाय करो। इसके पहचाननेमें कुछ दिक़त नहीं। अगर गर्भाशय और योनि सर्द या सुकड़े हुए होंगे, तो दीख जायँगे—हाथसे पता लग जायगा। इसके लिये ये उपाय करोः—

(क) स्त्रीको गर्म हम्माममें ले जाकर गुनगुने पानीमें बिठाओ।

(ख) गर्म और मवादको नर्म करनेवाले तेलोंकी मालिश करो।

(ग) शहदमें एक कपड़ा ल्हेस कर मूत्र-स्थानपर रखो।

तीसरे कारणका इलाज।

(३) गर्भाशयमें बालकके चारों तरफ़ एक झिल्ली पैदा हो जाती है। इस झिल्लीको "मुसीमिया" कहते हैं। इससे गर्भगत बालककी रक्षा होती है। यह कद्दूदानेकी थैली जैसी होती है, पर उससे ज़ियादा चौड़ी होती है। जब बालक निकलनेको ज़ोर करता है और यदि बलवान होता है, तो यह झिल्ली झट फट जाती है। बालक उसमेंसे निकल कर, गर्भाशयके मुँहमे होता हुआ, योनिके बाहर आ जाता है; पर झिल्ली पीछे निकलती है। अगर यह झिल्ली ज़ियादा मोटी होती है, तो बालकके ज़ोर करनेसे जल्दी नहीं फटती। बच्चा उससे बाहर निकलनेकी कोशिश करता है और उसे इसमें तकलीफ़ भी बहुत होती

है, पर झिल्लीके बहुत मोटी होनेकी वजहसे वह निकल नहीं सकता। ऐसे मौक़ेपर बच्चा मर जाता है। बच्चेके मर जानेसे ज़च्चा या प्रसूता की जान भी ख़तरेमें हो जाती है। इस समय चतुर दाई या डाक्टर की ज़रूरत है। चतुर दाईको बाँयें हाथसे झिल्लीको खींचना और तेज़ छुरेसे उसे इस तरह काटना चाहिये, कि ज़च्चा और बच्चा दोनोंको कष्ट न हो। झिल्लीके सिवा और जगह छुरा या हाथ पड़ जानेसे ज़च्चा और बच्चा दोनों मर सकते हैं।

चौथे कारणका इलाज ।

(४) अगर मिज़ाजकी गरमी और हवाकी गरमीसे बालकके होनेमें कठिनाई हो, तो उसका उचित उपाय करना चाहिये। यह बात गरमीके होने और दूसरे कारणोंके न होनेसे सहजमें मालूम हो सकती है। हकीमोंने नीचे लिखे उपाय बताये हैं:—

(क) बनफ़शाका तेल, लाल चन्दन और गुलाब,—इनको ज़च्चाके पेट और पीठपर मलो।

(ख) खट-मिट्ठे अनारका रस, तुरंजबीनके साथ स्त्रीको पिलाओ।

(ग) गरम चीज़ोंसे स्त्रीको बचाओ। क्योंकि इस हालतमें गरमी करने वाले उपाय हानिकारक हैं। स्त्रीको ऐसी जगहमें रखो, जहाँ न गरमी हो और न सर्दी।

चन्द लाभदायक शिक्षायें ।

जिस रोज़ बच्चा होनेके आसार मालूम हों, उस दिन ये काम करोः—

(क) बच्चा होनेके दो चार दिन रह जायँ तबसे, स्त्रीको नर्म और चिकने शोरबेका पथ्य दो। भोजन कम और हलका दो। शीतल जल, खटाई और शीतल पदार्थोंसे स्त्रीको बचाओ। किसी भी कारण से नीचेके अंगोंमें सरदी न पहुँचने दो।

(ख) जननेवालीको समझा दो, कि जब दर्द उठे तब हल्ला-गुल्ला मत करना, सन्तोष और सब्रसे काम लेना तथा पाँव पर ज़ोर देना, जिससे ज़ोरका असर अन्दर पहुँचे।

(ग) जब जननेके आसार नमूदार हों, स्त्रीको नहानेके स्थान या सोहरमें ले जाओ। बहुत सा गर्म जल उसके सिर पर डालो और तेलकी मालिश करो। स्त्रीसे कहो, कि थोड़ी दूर चल-चल कर उकरु बैठे।

(घ) ऐसे समयमें दाईको इनमेंसे कोई चीज़ गर्भाशयके मुँह पर मलनी और लगानी चाहिये—अलसीके बीजोंका लुआव या तिलीके तेलका शीरा, बादामका तेल या मुर्ग़ेकी चर्बी या बतख़की चर्बी बनफ़शेके तेलमें मिली हुई। गर्भाशय पर इनमेंसे कोई सी चीज़ मलने या लगानेसे बच्चा आसानीसे फिसल कर निकल आता है।

(ङ) जब ज़रा-ज़रा दर्द उठे, तभी जनने वालीको मलमूत्र आदिसे निपट लेना चाहिये। अगर अजीर्ण हो, तो नर्म हुकनेसे मलको निकाल देना चाहिये।

नोट—ये सब उपाय बच्चा जनने वाली स्त्रियोंके लिये लाभदायक हैं। पर, जिनको बालक जनते समय कष्ट हुआ ही करता है, उनके लिये तो इनका किया जाना विशेष रूपसे परमावश्यक है।

शीघ्र प्रसव कराने वाले उपाय।

(१) "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है—चकमक पत्थर कपड़ेमें लपेटकर स्त्रीकी रान पर बाँध देनेसे बच्चा आसानीसे हो जाता है। पर "तिब्बे अकबरी" में लिखा है—अगर स्त्री चकमक पत्थरको बाँयें हाथमें रखे, तो सुखसे बच्चा हो जाय। कह नहीं सकते, इनमेंसे कौन सी विधि ठीक है, पर चकमक पत्थरकी राय दोनोंने ही दी है।

(२) घोड़ेकी लीद और कबूतरकी बीट पानीमें घोल कर स्त्रीको पिला देनेसे बालक सुखसे हो जाता है।

(३) "तिब्बे अकबरी" और "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है कि अठारह माशे अमलताशके छिलकोंका काढ़ा औटाकर स्त्रीको पिला देनेसे बच्चा सुखसे हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई अमलताशके छिलकोंके काढ़ेमें "शर्बत बनफशा या चनोंका पानी" भी मिलाते हैं। हमने इन दोनोंके बिना मिलाये केवल अमलताशके छिलकोंके काढ़ेसे झिल्ली या जेर और बच्चा आसानीसे निकल जाते देखे हैं।

(४) स्त्रीकी योनिमें घोड़ेके सुमकी धूनी देनेसे बच्चा सुखसे हो जाता है।

(५) योनिके नीचे काले या दूसरे प्रकारके साँपोंकी काँचलीकी धूनी देनेसे बालक और जेर नाल आसानीसे निकल आते हैं। हकीम अकबर अली साहब लिखते हैं, कि यह हमारा परीक्षा किया हुआ उपाय है। इससे बच्चा वगैरः निश्चय ही फौरन निकल आते हैं, पर इस उपायसे एकाएकी काम लेना मुनासिब नहीं, क्योंकि इसके ज़हरसे बहुधा बालक मर जाते हैं। हमारे शास्त्रोंमें भी लिखा है—

कटुतुम्ब्याहेनिर्मोक कृतवेधनसर्षपैः।
कटुतैलान्वितैर्योनेधूमः पातयतेऽपराम्॥

कड़वी तूम्बी, साँपकी काँचली, कड़वी तोरई और सरसों—इन सबको कड़वे तेलमें मिला कर,—योनिमें इनकी धूनी देनेसे अपरा या जेर गिर जाती है।

हमारी रायमें जब बच्चा पेटमें मर गया हो, उसे काटकर निकालने की नौबत आ जावे, उस समय साँपकी काँचलीकी धूनी देना अच्छा है। क्योंकि इससे बच्चा जनने वालीको तो किसी तरहकी हानि होती ही नहीं। अथवा बच्चा जीता-जागता निकल आवे, पर जेर या अपरा न निकले, तब इसकी धूनी देनी चाहिये। हाँ, इसमें शक नहीं कि, साँपकी काँचली जेर या मरे-जीते बच्चेको निकालनेमें है अकसीर। "तिब्बे अकबरी" में, जहाँ मरे हुए बच्चेको पेटसे निकालने

का ज़िक्र किया गया है, लिखा है—साँपकी काँचली और कबूतरकी बीट—इन दोनोंको मिलाकर, योनिमें इनकी धूनी देनेसे बच्चा फौरन ही निकल आता है। अकेली साँपकी काँचलीकी धूनी भी काफी है। अगर यह उपाय फेल हो जाय, मरा हुआ बच्चा न निकले, तो फिर दाईको हाथ डाल कर ही जेर या बच्चा निकालना चाहिये।

(६) बाबूनेके नौ माशे फूलोंका काढ़ा बना और छान कर, उसमें ३ माशे "शहद" मिला कर स्त्रीको पिला देनेसे बच्चा सुखसे हो जाता है।

(७) बच्चा जननेवालीके बाँयें हाथमें "मकनातीसी पत्थर" रखने से बच्चा सुखसे हो जाता है। "इलाजुल गुर्बा" के लेखक महाशय इस उपायको अपना आज़माया हुआ कहते हैं।

नोट—एक यूनानी निघण्टुमें लिखा है, कि चुम्बक पत्थरको रेशमी कपड़ेमें लपेट कर स्त्रीकी बाईं जाँघमें बाँधनेसे बच्चा जल्दी और आसानीसे होता है।

चुम्बक पत्थरको अरबीमें हजरत "मिकनातीस" और फारसीमें 'संग आह-नरुबा' कहते हैं। यह मशहूर पत्थर लोहेको अपनी तरफ खींचता है। अगर शरीरके किसी भागमें सूई या ऐसी ही कोई चीज, जो लोहेकी हो, घुस जाय और निकालनेसे न निकले, तो वहाँ यही चुम्बक पत्थर रखनेसे वह बाहर आ जाती है।

(८) "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है—बच्चा जननेवालीको हींग खिलानेसे बच्चा सुखसे होता है। "तिब्बे अकबरी" में हींगको जुन्दे-बेदस्तरमें मिलाकर खिलाना ज़ियादा गुणकारी लिखा है।

(९) योनिमें मनुष्यके सिरके बालोंकी धूनी देनेसे बच्चा जननेमें विशेष कष्ट नहीं होता।

(१०) करिहारीकी जड़, रेशमके धागेमें बाँध कर, स्त्री अपने बाँयें हाथमें बाँध ले, तो बच्चा जनते समयका कष्ट व पीड़ा दूर हो जाय। परीक्षित है।

(११) सूरजमुखीकी जड़ और पाटलाकी जड़ गर्भिणीके कंठमें बाँध देनेसे बच्चा सुखसे हो जाता है।

(१२) पीपर और बचको पानीमें पीसकर और रेंडीके तेलमें मिलाकर, स्त्रीकी नाभिपर लेप कर देनेसे बचा सुखसे होता है। परीक्षित है।

(१३) बिजौरेकी जड़ और मुलेठीको घीमें पीस कर पीनेसे बच्चा सुखसे पैदा होता है। परीक्षित है। कोई-कोई इसमें शहद भी मिलाते हैं। "वैद्यजीवन" में लिखा है:—

मध्वाज्ययष्ठीमधुलुंगमूलं निपीय सूते सुमुखी सुखेनेन।
सुतडुलांभः सितधान्यकल्कनाद्वमिर्गच्छाति गार्भिणीनाम॥

जिस स्त्रीको बच्चा जनते समय अधिक कष्ट हो, उसे मुलेठी और बिजौरे की जड़—इन दोनोंको पानीमें पीस-घोल और गरम करके पिलानेसे बालक सुखसे हो जाता है। जिस गर्भवतीको कय जियादा होती हों, उसे धनियेका चूर्ण खाकर ऊपरसे मिश्री मिला चाँवलोंका पानी पीना चाहिये।

(१४) आदमीके बहुतसे बाल जलाकर राख करलो। फिर उस राखको गुलाब-जलमें मिलाकर बच्चा जननेवालीके सिरपर मलो। सुखसे बालक हो पड़ेगा।

(१५) लाल कपड़ेमें थोड़ा नमक बाँधकर, बच्चा जननेवालीके बायें हाथकी तरफ़ लटका देनेसे, बिना विशेष कष्टके सहजमें बच्चा हो पड़ता है।

(१६) अगर बच्चा जननेवालीको भारी कष्ट हो, तो थोड़ी सी साँपकी काँचली उसके चूतड़ोंपर बाँध दो और उसकी योनिमें थोड़ी सी काँचलीकी धूनी भी दे दो। परमात्मा चाहेगा तो सहजमें बालक हो जायगा; कुछ भी तकलीफ न होगी।

(१७) बारहसिंगेका सींग स्त्रीके स्तनपर बाँध देनेसे भी बच्चा सुखसे हो जाता है।

(१८) गिद्धका पंख बच्चा जनने वालीके पाँवके नीचे रख देनेसे बच्चा बड़ी आसानीसे हो जाता है।

(१६) सरफोंकेकी जड़ बच्चा जननेवालीकी कमरमें बाँधनेसे बालक शीघ्रही बाहर आ जाता है।

(२०) जीते हुए साँपके दाँत स्त्रीके कंठ या गलेमें लटका देनेसे बच्चा सुखसे होता है।

(२१) इन्द्रायणकी जड़को महीन पीसकर और घीमें मिलाकर, योनिमें रखनेसे बच्चा सुखसे हो जाता है।

नोट—इन्द्रायणकी जड़ योंही योनिमें रखनेसे भी बालक बाहर आ जाता है। यह चीज इस कामके लिये अथवा गर्भ गिरानेके लिये अकसीरका काम करती है।

(२२) गायका दूध आध पाव और पानी एक पाव मिलाकर स्त्रीको पिलानेसे तुरन्त बच्चा हो पड़ता है; कष्ट ज़रा भी नहीं होता।

(२३) काग़ज़पर चक्रव्यूह लिखकर स्त्रीको दिखानेसे भी बच्चा जल्दी होता है।

(२४) फालसेकी जड़ और शालपर्णीकी जड़—इनको एकत्र पीसकर, स्त्रीकी नाभि, पेडू और भगपर लेप करनेसे बच्चा सुखसे होता है।

(२५) कलिहारीके कन्दको काँजीमें पीसकर स्त्रीके पाँवोंपर लेप करनेसे बच्चा सुख-पूर्व्वक होता है।

(२६) तालमखानेकी जड़को मिश्रीके साथ चबाकर, उसका रस गर्भिणीके कानमें डालनेसे बच्चा सुखसे होता है।

नोट—हिन्दीमें तालमखाना, संस्कृतमें कोकिलाक्ष, बंगलामें कुलियाखाड़ा, कुले काँटी, मरहटीमें तालिमखाना और गुजरातीमें एखरो कहते हैं।

(२७) श्यामा और सुदर्शन-लताको पीसकर और उसमेंसे बत्तीस तोले लेकर स्त्रीके सिरपर रख दो। जब तक उसका रस पाँवों तक टपककर न आ जाय, सिरपर रखी रहने दो। इससे बच्चा सुख-पूर्व्वक होता है।

(२८) चिरचिरेकी जड़को उखाड़कर, योनिमें रखनेसे बच्चा सुखसे होता है।

नोट—चिरचिरेको चिरचिरा, लटजीरा और ओंगा कहते हैं। संस्कृत में अपा-मार्ग, बँगलामें अपांग, मरहटीमें अवाड़ी और गुजरातीमें अघेड़ो कहते हैं। इसके दो भेद हैं—(१) सफेद, और (२) लाल। यह जंगलमें अपने-आप पैदा हो जाता है। बडे कामकी चीज है।

(२९) पाढ़की जड़को पीसकर योनिपर लेप करने या योनि में रखनेसे बच्चा सुखसे हो जाता है।

नोट—पाढ़ और पाठ, हिन्दी नाम हैं। संस्कृतमें पाठा, बँगलामें आकनादि और मरहटीमें पहाड़ मूल कहते हैं।

(३०) अड़ूसेकी जड़को पीसकर योनिपर लेप करने या योनि में रखनेसे बालक सुखसे होता है।

नोट—हिन्दीमें अड़ूसा, वासा और बिसौंटा; बंगलामें बासक, मरहटीमें अड़ूसा और गुजरातीमें अड़ुरसो कहते हैं। दवाके काममें अड़ूसेके पत्ते और फूल आते हैं। मात्रा चार माशेकी है।

(३१) शालिपर्णीकी जड़को चाँवलोंके पानीमें पीसकर नाभि, पेड़ू और भगपर लेप करनेसे स्त्री बच्चा सुखसे जनती है।

नोट—हिन्दीमें सरिवन, संस्कृतमें शालिपर्णी, बँगलामें शालपानि, मरहटी में सालवण और गुजरातीमें समेरवो कहते हैं।

(३२) पाढ़के पत्तोंको स्त्रीके दूधमें पीसकर पीनेसे मूढ़गर्भकी व्यथासे स्त्री शीघ्र ही निवृत्त हो जाती है, यानी अड़ा हुआ बच्चा निकल आता है।

नोट—पाढके लिये पिछला नं० २६ का नोट देखिये।

(३३) उत्तर दिशामें पैदा हुई ईखकी जड़ उखाड़कर, स्त्रीके बराबर डोरेमें बाँधकर, कमरमें बाँध देनेसे सुखसे बच्चा होता है।

(३४) उत्तर दिशामें उत्पन्न हुए ताड़के वृक्षकी जड़को कमर में बाँधनेसे बच्चा सुखसे पैदा होता है। बच्चा जननेवालीको पीड़ा नहीं होती।

(३५) गायके मस्तककी हड्डीको जच्चाके घरकी छतपर रखने से स्त्री तत्काल सुख-पूर्वक बच्चा जनती है।

नोट—मरी गायका सूखा मस्तक, जिसमें केवल हड्डी ही रह गई हो, लेना चाहिये।

(३६) कड़वी तूम्बी, साँपकी केंचली, कड़वी तोरई और सरसों—इनको कड़वे तेलमें मिलाकर, इनकी धूनी योनिमें देनेसे अपरा अर्थात् जेर गिर जाती है।

(३७) प्रसूताकी कमरमें भोजपत्र और गूगलकी धूनी देनेसे जेर गिर जाती और पीड़ा तत्काल नष्ट हो जाती है।

(३८) बालोंको उँगलीमें बाँधकर कण्ठ या मुँहमें घिसनेसे जेर आदि गिर जाती है।

(३९) कलिहारीकी जड़ पीसकर हाथ या पाँवोंपर लेप करनेसे जेर आदि गिर जाती है।

(४०) कूट, शालिधानकी जड़ और गोमूत्र,—इनको एकत्र मिलाकर पीनेसे निश्चय ही जेर आदि गिर जाते हैं।

(४१) सरिवन, नागदौन और चीतेकी जड़—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण गर्भिणीको खिलानेसे शीघ्र ही बच्चा होता और प्रसवमें पीड़ा नहीं होती।

नोट—नागदौन-नागदमन और बरियारा हिन्दी नाम हैं। संस्कृतमें नागदमनी, बँगलामें नागदना, मरहटीमें नागदाणा और गुजरातीमें झीपटो कहते हैं।

(४२) मैनफलकी धूनी योनिके चारों ओर देनेसे सुखसे बच्चा हो जाता है।

(४३) कलिहारीकी जड़ डोरेमें बाँधकर हाथमें बाँधनेसे सुखसे बच्चा हो जाता है।

(४४) हुलहुलकी जड़ डोरेमें बाँधकर हाथ या सिरमें बाँधनेसे शीघ्र ही बालक हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—सूरजमुखीकी जड़को ही हुलहुल कहते हैं। अङ्गरेजीमें उसे सनफ्लावर (Sun flower) कहते हैं।

(४५) पोईकी जड़को सिलपर जलके साथ पीस कर, इसमें

तिलका तेल मिलाकर, उसे योनिके भीतर रखने या लेप करनेसे स्त्री सुखसे बच्चा जनती है ।

(४६) कलिहारीकी गाँठ पानीमें पीसकर अपने हाथपर लेप कर लो । जिस स्त्रीको बच्चा जननेमें कष्ट हो, उसके हाथको अपने लेप लगे हुए हाथसे छूओ अथवा उस गाँठमें धागा पिरोकर स्त्रीके हाथ या पैरमें बाँध दो । इस उपायसे बालक सुखसे हो जाता है । परीक्षित है ।

(४७) केलेकी गाँठ कमरमें बाँधो । इसके बाँधनेसे फौरन बच्चा होगा । ज्योंही बच्चा और जेर निकल चुके, गाँठको खोलकर फेंक दो । परीक्षित है ।

(४८) गेहूँकी सेमई पानीमें उबालो । फिर कपड़ेमें छान कर पानी निकाल लो । आध सेर सेमईके पानीमें आध पाव ताज़ा घी मिला लो । इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा पानी स्त्रीको पिलाओ । ज्योंही पेट दुखना शुरू हो, यह पानी देना बन्द कर दो । जल्दी और सुखसे बच्चा जनानेको यह उपाय उत्तम और परीक्षित है ।

(४९) कड़वे नीमकी जड़ स्त्रीकी कमरमें बाँधनेसे तुरन्त बच्चा हो जाता है । बच्चा हो चुकते ही जड़को खोलकर फेंक दो । परीक्षित है।

(५०) काकमाचीकी जड़ कमरमें बाँधनेसे सहजमें बालक हो जाता है । परीक्षित है ।

(५१) कसौंदीकी पत्तियोंका रस स्त्रीको पिलानेसे सुखसे बालक हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—संस्कृतमें कासमर्द और हिन्दीमें कसौंदी कहते हैं । इसके पत्तोंका रस कानमें डालनेसे कानमें घुसा हुआ डांस या मच्छर मर जाता है ।

(५२) तूम्बीकी पत्ती और लोध—इनको बराबर-बराबर लेकर, पीस लो और योनिपर लेप कर दो । इससे शीघ्र ही बालक हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—साथ ही बिजौरेकी जड और मुलहटीको पीस कर, शहद और घीमें मिलाकर स्त्रीको पिला दो। इन दोनों उपायोंके करनेपर भी क्या बच्चा जनने वाली को कष्ट होगा? इसे खिलाओ और शालिपर्णीकी जड़को चाँवलोंके पानीमें पीस कर स्त्रीकी नाभि, पेड़ू और योनिपर लेप कर दो। ये नुसखे कभी फेल नहीं होते।

(५३) सुधा, इन्दु और समुद्र—इन तीन नामोंको ज़ोरसे सुनाने से गर्भ जल्दी ही स्थान छोड़ देता है।

(५४) ताड़की जड़, मैनफलकी जड़ और चीतेकी जड़—इनके सेवन करनेसे मरा हुआ और जीता हुआ गर्भ आसानीसे निकल आता है। चक्रदत्त।

(५५) "एरंडस्य बनेः? काको गंगातीरमुपागतः इतः पिबति पानीयं विशल्या गर्भिणी भवेत्।" इस मन्त्रसे सात बार पानीको मतरकर पिलानेसे गर्भिणीका शल्य नष्ट हो जाता है, यानी बच्चा सुख से हो जाता है। चक्रदत्त।

(५६) "मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वं भयाद्गर्भ एह्येहि मारिच स्वाहा।" इस च्यवन मन्त्रसे मतरे हुए पानीको पीनेसे स्त्री सुखसे बच्चा जनती है। चक्रदत्त-बंगसेन।

नोट—इन मंत्रोंसे मतरा हुआ जल पिलाया जाय और कड़वी तूम्बी, साँपकी काँचली, कड़वी तोरई और सरसोंको बराबर बराबर लेकर और कड़वे तेलमें मिलाकर इनकी स्त्रीकी योनिमें धूनी दी जाय तो सुखसे बालक होनेमें क्या शक है? यह नुसखा जीते और मरे गर्भके निकालनेमें रामवाण है। परीक्षित है।

(५७) तीसका मन्त्र लिखकर, मिट्टीके शकोरेमें रखकर और धूप देकर बच्चा जनने वाली को दिखानेसे सुखसे बालक होता है। यह बात वैद्यरत्न और बंगसेन आदि अनेक ग्रन्थोंमें लिखी है।

नोट—तीसका मंत्र हमारी लिखी "स्वास्थ्यरक्षा" में मौजूद है।

(५८) चोंटली यानी चिरमिटीकी जड़के सात टुकड़े और उसी के सात पत्ते कमरमें बाँधनेसे स्त्री सुखसे बच्चा जनती है।

(५६) पाढ़ और चिरचिरेकी जड़ दोनोंको जलमें पीसकर, योनिमें लेप कर देनेसे तत्काल बच्चा होता है ।

(६०) हाथ पैरके नाखूनों और नाभिपर सेहुँड़के दूधका लेप करनेसे स्त्री फौरन ही बच्चा जनती है ।

(६१) फालसेकी जड़ और शालपर्णीकी जड़को पीसकर योनि पर लेप करनेसे मूढ़ गर्भवती स्त्री भी सुखसे बच्चा जनती है ।

(६२) कूट और तालीसपत्रको पानीके साथ पीसकर, कुल्थीके काढ़ेके साथ पिलानेसे सुखसे बच्चा होता है ।

(६३) बाँसकी जड़ कमरपर बाँधनेसे निश्चय ही सुखसे बालक होता है ।

(६४) घरके पानीमें घरका धूआँ पीनेसे गर्भ जल्दी निकलता है ।

मरा हुआ बच्चा निकालने और गर्भ गिरानेके उपाय ।

गर्भ गिराना पाप है ।

गर्भ गिराना या हमल इस्कात करना ईश्वर और राजा—दोनोंके सामने महा पाप है । अगर राजा जान पाता है, तो भारी दण्ड देता है और यदि राजाकी नज़रोंसे मनुष्य बच भी जाता है, तो ईश्वरकी नज़रोंसे तो बच ही नहीं सकता । हमारी स्मृतियोंमें लिखा है, भ्रूणहत्या करने वाले को लाखों-करोड़ों बरसों तक रौरव नरकमें रहना होता है । यहाँ यम-दूत अपराधीको घोर-घोर कष्ट देते हैं । अतः

ईश्वरसे डरनेवालोंको न तो व्यभिचार करना चाहिये और न गर्भ गिराना चाहिये। एक पाप तो व्यभिचार है और दूसरा गर्भ गिराना। व्यभिचारसे गर्भ गिराना हज़ारों-लाखों गुना बढ़कर पाप है, क्योंकि इससे एक निर्दोष प्राणीकी हत्या होती है। अगर किसी तरह व्यभिचार हो ही जाय, तो भी गर्भको तो भूलकर भी न गिराना चाहिये। ज़रासी लोक-लज्जाके लिये इतना बड़ा पाप कमाना महामूर्खता है। दुनिया निन्दा करेगी, बुरा कहेगी, पर ईश्वर के सामने तो अपराधी न होना पड़ेगा।

हम हिन्दुओंमें पाँच-पाँच या सात-सात और जियादा-से-ज़ियादा नौ दश बरसकी उम्रमें कन्याओंकी शादी कर दी जाती है। इससे करोड़ों लड़कियाँ छोटी उम्रमें ही विधवा हो जाती हैं। वे जानती भी नहीं, कि पुरुष-सुख क्या होता है। जब उनको जवानीका जोश आता है, कामदेव ज़ोर करता है, तब वे व्यभिचार करने लगती हैं। पुरुष-संग करनेसे गर्भ रह जाता है। उस दशामें वह गर्भ गिराने में ही अपनी भलाई समझती हैं। अनेक स्त्री-पुरुष पकड़े जाकर सज़ा पाते हैं, अनेक दे-लेकर बच जाते हैं और अनेकोंका पुलिसको पता ही नहीं लगता। हमारी रायमें, अगर विधवाओंका पुनर्विवाह कर दिया जाय, तो यह हत्याएँ तो न हों।

आर्यसमाजी विधवा-विवाह पर ज़ोर देते हैं, तो सनातनी हिन्दू उनकी मसखरी करते और विधवा-विवाहको घोर पाप बतलाते हैं। पर उन्हें यह नही सूझता कि अगर विधवा-विवाह पाप है, तो भ्रूण-हत्या कितना बड़ा पाप है। भ्रूणहत्या और व्यभिचार उन्हे पसन्द है, पर विधवा-विवाह पसन्द नही!! जो स्त्रियाँ विधवा-विवाहके नामसे कानोंपर उँगली धरती हैं, इसका नाम लेना भी पाप समझती हैं, वे ही घोर व्यभिचार करती हैं। ऐसी घटनाएँ हमने आँखों से देखी हैं। हमारी ५० सालकी उम्रमें, हमने इस बातकी बारीकी से

जाँच की, तो हमें यही मालूम हुआ कि हिन्दुओंकी सौ विधवाओंमें से नब्बे व्यभिचार करती हैं, पर ८० फी सदीमें तो हमें ज़रा भी शक नहीं। हम कट्टर सनातन धर्मी और कृष्णके भक्त हैं, आर्यसमाजी नहीं; पर विधवा-विवाहके मामलेमें हम उनसे पूर्ण-तया सहमत हैं। हमने हर पहलूसे विचार करके एवं धर्मशास्त्रका अनुशीलन और अध्ययन करके ही अपनी यह राय स्थिर की है। हमने कितनी ही विधवाओंसे विधवा-विवाहपर उनकी राय भी ली, तो उन्होंने यही कहा, कि मर्द आप तो चार-चार विवाह करते है, पर स्त्रियाँ अगर अक्षतयोनि भी हों, तो उनका पुनर्विवाह नहीं करते। यह उनका घोर अन्याय है। कामवेगको रोकना महा कठिन है। अगर ऐसी विधवाएँ व्यभिचार करें तो दोष-भागी हो नहीं सकतीं; हिन्दुओंको अब लकीरका फ़क़ीर न होना चाहिये। विधवा-विवाह जारी करके हज़ारों पाप और कन्याओंके शापसे बचना चाहिये। विधवा-विवाह न होनेसे हमारी हज़ारों लाखों विधवा बहन-बेटियाँ मुसलमानी हो गईं। हम व्यभिचार पसन्द करें, भ्रूणहत्याको बुरा न समझें, अपनी स्त्रियोंको मुसलमानी बनते देख सकें, पर रोती विलपती विधवाओंका दूसरा विवाह होना अच्छा न समझें; हमारी इस समझकी बलिहारी है। हमने नीचे गर्भ गिरानेके नुसख़े इस ग़रज़से नहीं लिखे कि, व्यभिचारिणी विधवायें इन नुसख़ोंको सेवन करके गर्भ गिरावें, बल्कि नेक स्त्रियोंकी जीवनरक्षाके लिए लिखे हैं।

गर्भ गिराना उचित है।

हिकमतमें लिखा है, नीचेकी हालतमें गर्भ गिराना उचित है:—

(१) गर्भिणी कम-उम्र और नाज़ुक हो एवं दर्द न सह सकती हो। बच्चा जननेसे उसकी जान जानेकी सम्भावना हो।

(२) गर्भ न गिरानेसे स्त्रीके भयानक रोगोंमें फँसनेकी सम्भावना हो।

(३) बच्चा जननेके दर्द चार दिनों तक रहें, पर बालक न हो, तब समझना चाहिये कि बच्चा पेटमें मर गया। उस दशामें गर्भिणी की जान बचानेके लिए फौरनसे पहले गर्भ गिरा देना चाहिये। अगर मरा हुआ बच्चा स्त्रीके पेटमें देर तक रहता है, तो उसे जहर चढ़ जाता और वह मर जाती है।

पेटमें मरे और जीते बच्चेकी पहचान।

अगर बालक पेटमें कड़ा पत्थरसा हो जाय, गर्भिणी करवट बदले तो वह पत्थरकी तरह इधरसे उधर गिर जाय, गर्भिणीकी नाभि पहलेकी अपेक्षा शीतल हो जाय, छाती कमज़ोर हो जाय, आँखों की सफेदीमें स्याही आ जाय अथवा नाक, कान और सिर सफेद हो जायँ, पर होंठ लाल रहें, तो समझो कि बच्चा मर गया। बहुत बार देखा है, जब पेटमें बच्चा मर जाता है, तब वह हिलता नहीं— पत्थर सा रखा रहता है, स्त्रीके हाथ-पाँव शीतल हो जाते हैं और श्वास लगातार चलने लगता है। इस दशामें गर्भ गिराकर ही गर्भिणीकी जान बचायी जा सकती है।

याद रखना चाहिये, जिस तरह मरे हुए बालकके देर तक पेट में रहनेसे स्त्रीके मर जानेका डर है, उसी तरह बच्चेके चारों ओर रहनेवाली झिल्ली, जेरनाल या अपराके देर तक पेटमें रहनेसे भी स्त्रीके मरनेका भय है।

नोट—यद्यपि हमने "प्रसव-विलम्ब-चिकित्सा" और "गर्भ गिरानेवाले योग" अलग-अलग शीर्षक देकर लिखे हैं; पर इन दोनों शीर्षकोंमें लिखी हुई दवाएँ एक ही हैं। दोनोंसे एक ही काम निकलता है। इनके सेवनसे बच्चा जल्दी होता तथा मरा बच्चा और झिल्ली या जेरनाल निकल आते हैं। ऐसे ही अवसरोंके लिए हमने गर्भ गिरानेवाले उपाय लिखे हैं।

गर्भ गिरानेवाले नुसखे ।

(१) गाजरके बीज, तिल और चिरौंजी—इन तीनोंको गुड़के साथ खानेसे निश्चय ही गर्भ गिर जाता है। "वैद्यरत्न"में लिखा है—

गुंजनस्य च वीजानि तिलकाराविके अपि ।
गुड़ेनभुक्तमेतत्तु गर्भं पातयाति ध्रुवम् ॥

(२) सोंठ तीन माशे और लहसन पन्द्रह माशे दोनोंको पानीमें जोश देकर काढ़ा बना लो। इस नुसखेके तीन दिन पीनेसे गर्भ गिर पड़ता है। "वैद्य वल्लभ" में लिखा है—

विश्वौषधात्पंचगुणं रसोनकमुत्काल्य नारी त्रिदिनं प्रपाययेत ।
गर्भस्यापातः प्रभवेत्सुखेन योगोयमाद्यः कविहस्तिनामतः ॥

(३) पीपर, पीपलामूल, कटेरी, निर्गुण्डी और फरफेंदू—इनको बराबर-बराबर पाँच-पाँच या छै-छै माशे लेकर कुचल लो और हाँडीमें पाव-सवा पाव जल डालकर काढ़ा बना लो। चौथाई जल रहने पर उतारकर छान लो और पीओ। इस नुसखेसे गर्भ गिर जाता है।

नोट—फरफेंदूका दूसरा नाम इन्द्रायण है।

(४) चिरमिटीका चार तोले चूर्ण जलके साथ तीन दिन पीनेसे गर्भ गिर जाता है।

(५) अलसीके तेलको औटाकर, उसमें पुराना गुड़ मिला दो और स्त्रीको पिलाओ। इस नुसखेसे ३।४ दिनमें या जल्दी ही गर्भ गिर जाता है।

(६) चार तोले अलसीके तेलमें "गूगल" मिलाकर औटा लो और स्त्रीको पिलाओ। इस नुसखेसे गर्भ अवश्य गिर जायगा।

(७) इन्द्रायणकी जड़ योनिमें रखनेसे गर्भ गिर जाता है।

(८) इन्द्रायणकी जड़की बत्ती बनाकर योनिमें रखनेसे भी गर्भ गिर जाता है।

(६) फिटकरी और बाँसकी छाल—इन दोनोंको औटाकर काढ़ा कर लो। फिर इसमेंसे ३२ माशे काढ़ा नित्य सात दिन तक पीनेसे गर्भ गिर जाता है।

(१०) हज़ार-इस्पन्दके बीज खाने और बिलसाँके तेलमें कपड़ा भिगो कर योनिमें रखनेसे गर्भ गिर जाता है।

(११) हकीम लोग कहते हैं, अगर गर्भिणी बखुरमरियम पर पाँव रख दे, तो गर्भ गिर जाय।

(१२) इन्द्रायणके पत्तोंका स्वरस निकाल कर, गर्भाशयमें पिचकारी देनेसे और इसी स्वरसमें एक ऊनका टुकड़ा भिगोकर योनिमें रखनेसे गर्भ गिर जाता है। परीक्षित है।

(१३) गावज़ुबाँकी जड़का स्वरस पिचकारी द्वारा गर्भाशयमें पहुँचाने या इसी स्वरसमें कपड़ेकी बत्ती भिगोकर गर्भाशयमें रखनेसे गर्भ गिर जाता है।

(१४) दस माशे चूका-घास सिलपर पीसकर खानेसे फौरन ही गर्भ गिरता है।

(१५) साढ़े दस माशे हींग और साढ़े दस माशे सूखी तुलसी—इन दोनोंको मिला कर, सवेरे-शाम, "देवदारु" के काढ़ेके साथ पीनेसे फौरन गर्भ गिरता है। यह एक खूराक दवा है।

(१६) नौसादर ३५ माशे और छरीला १०॥ माशे लाकर रख लो। पहले छरीलेको पीसकर बहुत थोड़े पानीमें घोल दो।

इसके बाद नौसादरको महीन पीस कर छरीलेके पानीमें मिला दो और छुहारेकी गुठली-समान बत्ती बनाओ। इस बत्तीको सारी रात गर्भाशयके मुँहमें रखो और दोनों जाँघोंको एक तकियेपर रखकर सो जाओ। इस उपायसे गर्भ गिर जायगा।

(१७) साँपकी काँचलीकी धूनी योनिमें देनेसे गर्भ गिर जाता है। काले साँपकी काँचली अधिक गुणकारी है।

(१८) अगर स्त्री गरम-मिज़ाज वाली हो और गर्भ गिराना हो, तो ३३॥ माशे ख़तमी सिलपर पानीके साथ पीसकर, आध सेर जलमें मिला दो और उसे पिला दो। इस दवासे बालक फिसल कर निकल पड़ेगा।

(१९) सत्तर माशे तिल कूट कर २४ घण्टों तक पानीमें भिगो रखो। सवेरे ही कपड़ेमें छान कर उस पानीको पीलो। इस नुसख़े से बालक फिसल कर निकल आवेगा।

(२०) जङ्गली पोदीना, खङ्गाली लकड़ी, तुर्की अगर, कड़वा कूट, तज, अजवायन, पोदीना, दोनों तरहके मरूवे, नाकरून घास के बीज, मेथी, पहाड़ी गन्दना, काली झाँप, ऊदबिलसाँ और तगर—सबको बराबर-बराबर लेकर एक बड़े घड़ेमें औटाकर काढ़ा कर लो। फिर उस काढ़ेको एक टब या गहरे और चौड़े बर्तनमें भर दो और उस काढ़ेमें स्त्रीको बिठा दो, गर्भ गिर जायगा। जब गर्भ गिर जाय, गूगल, ज़ुफा, हुमुल, सातरा, अलेकुल-बतम और राई—इनमेंसे जो-जो चीज़ मिलें, उनको आगपर डाल-डालकर गर्भाशय को धूनी दो। इस उपायसे रज गिरता रहेगा—गाढ़ा न होने पावेगा।

(२१) इन्द्रायणका गूदा, तुतलीके पत्ते और कूट—इनको सात-सात माशे लेकर, महीन पीस लो और बैलके पित्तेमें मिलाकर नाभिसे पेडू और योनि तक इसका लेप कर दो, गर्भ गिर जायगा।

(२२) इन्द्रायणके स्वरसमें रूईका फाहा भिगोकर योनिमें रखनेसे गर्भ गिर जाता है।

(२३) कड़वे तेलमें साबुन मिलाकर, उसमें रूईका फाहा भिगोकर, गर्भाशयके मुँहमें रखनेसे गर्भ गिर जाता है।

(२४) कड़वी तोरई बीजों समेत पानीके साथ सिलपर पीस-कर, नाभिसे योनि तक लेप करने और इसीमें एक रूईका फाहा भिगोकर गर्भाशयमें रखनेसे गर्भ गिर जाता है।

(२५) मुरमक्की गुड़में लपेटकर खाने और परवल पीसकर शाफा करनेसे गर्भ गिर जाता है।

(२६) बथुएके बीज १॥ तोले लाकर, आधसेर पानीमें डाल कर काढ़ा बनाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतारकर कपड़ेमें छान लो और पिलाओ। इस नुसखेसे अवश्य गर्भ गिर जाता है। बहुत उत्तम नुसख़ा है।

(२७) साढ़े चार माशे अश्नान पीस-कूट और छानकर फाँकने से गर्भ गिर जाता है।

(२८) सहँजनेकी छाल और पुराना गुड़—इनको औटाकर पीने से गर्भ गिर जाता और जेरनाल या झिल्ली आदि निकल आते हैं।

(२९) जङ्गली कबूतरकी बीट और गाजरके बीज बराबर-बराबर लेकर, आगपर डाल-डालकर, योनिको धूनी देनेसे गर्भ गिर जाता है।

(३०) ऊँटकटारेकी जड़ पानीके साथ सिलपर पीसकर पेट पर लेप करनेसे गर्भ गिर जाता है।

(३१) गुड़हलके फूल जलके साथ पीसकर, नाभिके चारों तरफ लेप करनेसे गर्भ गिर जाता है।

(३२) गंधक, मुरमक्की, हींग और गूगल, इन चारोंको महीन पीसकर, आगपर डाल-डालकर गर्भाशयको धूनी देनेसे गर्भ गिर जाता है। अगर इनमें बैलका पित्ता भी मिला दिया जाय, तब तो कहना ही क्या ?

(३३) घोड़ेकी लीद योनिके सामने जलाने या धूनी देनेसे जीते हुए और मरे हुए बच्चे फौरन निकल आते हैं।

(३४) अनारकी छालकी धूनी योनिमें देनेसे गर्भ गिर जाता है।

(३५) निहार मुँह या ख़ाली क़लेजे दश माशे शोरा खानेसे गर्भ गिर जाता है।

(३६) अरण्डकी नरम टहनीको रेंडीके तेलमें भिगोकर गर्भाशयके मुखमें रखनेसे गर्भ गिर जाता है ।

(३७) गधेके खुर और उसीके गूकी गर्भाशयको धूनी देनेसे गर्भ गिर जाता है ।

(३८) मेथी, हल्दी और फिटकरी बीस-बीस माशे, तूतिया दस माशे और भड़भूँजेके छप्परका धूआँ दस माशे—इन सबको पानीके साथ पीसो और बत्ती बना लो। पहले गर्भाशयके नर्म करनेको उसमें घी और पोदीनेकी पट्टी रखो। इसके बाद सवेरे-शाम ऊपरकी बत्ती गर्भाशयके मुखमें रख दो; गर्भ गिर जायगा।

जब गर्भ गिर जाय, घीमें फाहा भिगोकर गर्भाशयमें रख दो। इससे पीड़ा नष्ट हो जायगी। साथ ही गोखरू ६ माशे, खरबूजेके बीज १ तोले और सौंफ १ तोलेको औटाकर छान लो और मिश्री मिलाकर स्त्रीको पिला दो। इसके सिवा और कुछ भी खानेको मत दो। पानीके बदलेमें. कपासकी हरी, काली और बाँसकी हरी गाँठ प्रत्येक अस्सी-अस्सी माशे लेकर पानीमें औटा लो और इसी पानी को पिलाते रहो। जिस स्त्रीके पेटसे मरा हुआ बच्चा निकलता है, उसे यही पानी पिलाते हैं और खानेको कई दिन तक कुछ नहीं देते। कहते हैं, इस जलके पीनेसे ज़हर नहीं चढ़ता।

(३९) गाजरके बीज, मेथीके बीज और सोयेके बीज—तीनों छब्बीस-छब्बीस माशे लेकर, दो सेर पानीमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो। इस नुसख़ेके कई दिन पीनेसे गर्भ गिर जाता है।

(४०) एलुआ, विषखपरेकी जड़, तूतिया, खिरनीके बीज और महुएके बीज,—बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस लो। फिर पानीके साथ सिलपर पीसकर बत्ती बना लो और उसे गर्भाशयमें रखो।

इस तरह सवेरे-शाम कई दिन तक ताज़ा बत्ती रखनेसे गर्भ गिर जाता है। परीक्षित है।

(४१) अरण्डकी कली २० माशे, एलुआ ४ माशे और खिरनीके बीजोंकी गिरी ४ माशे—इन सबको पानीके साथ महीन पीसकर बत्ती बना लो और गर्भाशयमें रखो। सवेरे-शाम ताज़ा बत्ती रखनेसे २।३ दिनमें गर्भ गिर जाता है।

(४२) अखरोटकी छाल, बिनौलेकी गिरी, मूलीके बीज, गाजर के बीज, सोयेके बीज, और कलौंजी—इनको बराबर-बराबर लेकर जौकुट कर लो। फिर इनके वज़नसे दूना पुराना गुड़ ले लो। सबको मिलाकर हाँडीमें पानीके साथ औटा लो। जब तीसरा भाग पानी रह जाय, उतारकर पी लो। इस नुसखेसे गर्भ गिर जाता है। परीक्षित है।

मूढ़गर्भ-चिकित्सा।

मूढ़गर्भके लक्षण।

जो गर्भ योनिके मुँहपर आकर अड़ जाता है, उसे "मूढ़ गर्भ" कहते हैं। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

मूढ़ः करोति पवनः खलु मूढगर्भं।
शूलंच योनि जठरादिषु मूत्रसंगम्॥

अपने कारणोंसे कुपित हुई—कुण्ठित चालवाली वायु, गर्भाशय में जाकर, गर्भकी गति या चालको रोक देती है, साथ ही योनि और पेटमें शूल चलाती और पेशाबको बन्द कर देती है।

खुलासा यह कि, वायुके कुपित होनेकी वजहसे गर्भ योनिके

मुँहपर आकर अड़ जाता है, न वह भीतर रहता है और न बाहर, इससे जनने वाली स्त्रीकी ज़िन्दगी ख़तरेमें पड़ जाती है। कोई कहते हैं, वह गर्भ चार प्रकारसे योनिमें आकर अड़ जाता है और कोई कहते हैं, वह आठ प्रकारसे अड़ जाता है। पर यह बात ठीक नहीं, वह अनेक तरहसे योनिमें आकर अड़ जाता है।

मूढ़ गर्भकी चार प्रकारकी गतियाँ।

(१) जिसके हाथ, पाँव और मस्तक योनिमें आकर अटक जाते हैं वह मूढ़ गर्भ कीलके समान होता है, इसलिये उसे "कीलक" कहते हैं।

(२) जिसके दोनों हाथ और दोनों पाँव बाहर निकल आते हैं और बाक़ी शरीर योनिमें अटका रहता है, उसे "प्रतिखुर" कहते हैं।

(३) जिसके दोनों हाथोंके बीचमें होकर सिर बाहर निकल आता है और बाक़ी शरीर योनिमें अटका रहता है, उसे "बीजक" कहते हैं।

(४) जो दरवाजेकी आगलकी तरह, योनि-द्वार पर आकर अटक जाता है, उसे "परिघ" कहते हैं।

मूढ़ गर्भकी आठ गति।

(१) कोई मूढ़ गर्भ सिरसे योनि-द्वारको रोक लेता है।

(२) कोई मूढ़ गर्भ पेटसे योनि-द्वार रोक लेता है।

(३) कोई कुबड़ा होकर, पीठसे योनिद्वारको रोक लेता है।

(४) किसीका एक हाथ बाहर निकल आता और बाक़ी शरीर योनिद्वारमें अटका रहता है।

(५) किसीके दोनों हाथ बाहर निकल आते हैं, बाक़ी सारा शरीर योनिद्वारमें अड़ जाता है।

(६) कोई मूढ़ गर्भ आड़ा होकर योनिद्वारमें अड़ा रहता है।

(७) कोई गर्दनके टूट जानेसे, तिर्छा मुँह करके योनिद्वारको रोक लेता है।

(८) कोई मूढ़ गर्भ पसलियोंको फिराकर योनि-द्वारमें अटका रहता है।

सुश्रुतके मतसे मूढ़गर्भकी आठ गति।

(१) कोई मूढ़ गर्भ दोनों साथलोंसे योनिके मुखमें आता है।

(२) कोई मूढ़ गर्भ एक साथल—जाँघसे कुबड़ा होकर दूसरी साथलसे योनिके मुँहमें आता है।

(३) कोई मूढ़गर्भ शरीर और साथलको कुबड़े करके कूलोंसे आड़ा होकर, योनिद्वारपर आता है।

(४) कोई मूढ़ गर्भ अपनी छाती, पसली और पीठ इनमेंसे किसी एकसे योनिद्वारको ढककर अटक जाता है।

(५) कोई मूढ़ गर्भ पसलियों और मस्तकको अड़ाकर एक हाथ से योनिद्वारको रोक लेता है।

(६) कोई मूढ़ गर्भ अपने सिरको मोड़कर दोनों हाथोंसे योनिद्वारको रोक लेता है।

(७) कोई मूढ़ गर्भ अपनी कमरको टेढ़ी करके, हाथ, पाँव और मस्तकसे योनिद्वारमें आता है।

(८) कोई मूढ़ गर्भ एक साथलसे योनिद्वारमें आता और दूसरीसे गुदामें जाता है।

असाध्य मूढ़गर्भ और गर्भिणीके लक्षण।

जिस गर्भिणीका सिर गिरा जाता हो, जो अपने सिरको ऊपर न उठा सकती हो, शरीर शीतल हो गया हो, लज्जा न रही हो,

कोखमें नीली-नीली नसें दीखती हों, वह गर्भको नष्ट कर देती है और गर्भ उसे नष्ट कर देता है।

मृतगर्भके लक्षण ।

मूढ़ गर्भकी दशामें बच्चा जीता भी होता है और मर भी जाता है। अगर मर जाता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) गर्भ न तो फड़कता है और न हिलता-जुलता है ।

(२) जननेके समयके दर्द नहीं चलते ।

(३) शरीरका रंग स्याही-माइल-पीला हो जाता है ।

(४) श्वासमें बदबू आती है ।

(५) मरे हुए बच्चेके सूज जानेके कारण शूल चलता है ।

नोट—बंगसेनने पेटपर सूजन होना और भावमिश्रने शूल चलना लिखा है। तिब्बे अकबरीमें लिखा है, अगर पेटमें गति न जान पड़े, बच्चा हिलता-डोलता न मालूम पड़े, पत्थर सा एक जगह रखा रहे, स्त्रीके हाथ पाँव शीतल हो गये हों और साँस लगातार आता हो, तो बालकको मरा हुआ समझो ।

पेटमें बच्चेके मरनेके कारण ।

गर्भके पेटमें मर जानेके यों तो बहुतसे कारण हैं, पर शास्त्रमें तीन कारण लिखे हैं:—

(१) आगन्तुक दुःख । (२) मानसिक दुःख ।
(३) रोगोंका दुःख ।

खुलासा यह है कि, महतारीके प्रहार या चोट आदि आगन्तुक कारणोंसे और शोक-वियोग आदि मानसिक दुःखोंसे तथा रोगोंसे पीड़ित होनेके कारण गर्भ पेटमें ही मर जाता है। बहुतसे अज्ञानी सातवें, आठवें और नवें महीनोंमें या बच्चा होनेके दो चार दिन

पहले तक मैथुन करते हैं। मैथुनके समय किसी बातका ध्यान तो रहता नहीं, इससे बालकको चोट लग जाती और वह मर जाता है। इसी तरह और किसी वजहसे चोट लगने या किसी इष्ट मित्र या प्यारे नातेदारके मर जाने अथवा धन या सर्वस्व नाश हो जानेसे गर्भवतीके दिलपर चोट लगती है और इसके असरसे पेटका बच्चा मर जाता है। इसी तरह शरीरमें रोग होनेसे भी बच्चा पेटमें ही मर जाता है। पेटमें बच्चेके मर जानेसे, उसका बाहर निकलना कठिन हो जाता है और स्त्रीकी जानपर आ जाती है।

और ग्रन्थोंमें लिखा है—अगर गर्भवती स्त्री वातकारक अन्नपान सेवन करती है एवं मैथुन और जागरण करती है, तो उसके योनि-मार्गमें रहने वाली वायु कुपित होकर, ऊपरको चढ़ती और योनिद्वार को बन्द कर देती है। फिर भीतर रहने वाली वायु गर्भगत बालकको पीड़ित करके गर्भाशयके द्वारको रोक देती है, इससे पेटका बच्चा अपने मुँहका साँस रुक जानेसे तत्काल मर जाता है और हृदयके ऊपरसे चलता हुआ साँस—गर्भिणीको मार देता है। इसी रोगको "योनिसंवरण" रोग कहते हैं।

नोट—बादी पदार्थ खाने-पीने, रातमें जागते और गर्भावस्थामें मैथुन करने से योनि-मार्ग और गर्भाशयका वायु कुपित होकर 'योनि-संवरण' रोग करता है। इसका नतीजा यह होता है कि, पेटका बच्चा और माँ दोनो प्राणोंसे हाथ धो बैठते हैं, अतः गर्भवती स्त्रियोंको इन कारणोंसे बचना चाहिये।

गर्भिणीके और असाध्य लक्षण।

जिस गर्भिणीको योनि-संवरण रोग हो जाता है—जिसकी योनि सुकड़ जाती है, गर्भ योनिद्वारपर अटक जाता है, कोखोंमें वायु भर जाता है, खाँसी श्वास उपद्रव पैदा हो जाते हैं—अथवा मक्कल शूल उठ खड़ा होता है, वह गर्भिणी मर जाती है।

नोट—यद्यपि प्रसूता स्त्रियोंको मक्कल शूल होता है, गर्भिणी स्त्रियोंको नहीं; तो भी सुश्रुतके मतसे जिसके बच्चा न हुआ हो, उसको भी मक्कलशूल होता है।

मूढ़गर्भ-चिकित्सा।

मूढ़गर्भ निकालनेकी तरकीबें।

"सुश्रुत"में लिखा है, मूढ़गर्भका शल्य निकलनेका काम जैसा कठिन है वैसा और नहीं है, क्योंकि इसमें योनि, यकृत, प्लीहा, आँतोंके विवर और गर्भाशय इन स्थानोंको टोह-टोह या जाँच-जाँच कर वैद्यको अपना काम करना पड़ता है। भीतर-ही-भीतर गर्भको उकसाना, नीचे सरकाना, एक स्थानसे दूसरे स्थान पर करना उखाड़ना, छेदना, काटना, दबाना और सीधा करना—ये सब काम एक हाथसे ही करने पड़ते हैं। इस कामको करते-करते गर्भगत बालक और गर्भिणीकी मृत्यु हो जाना सम्भव है। अतः मूढ़ गर्भको निकालनेसे पहले वैद्यको देशके राजा अथवा स्त्रीके पतिसे पूँछ और सुनकर इस काममें हाथ लगाना चाहिये। इसमें बड़ी बुद्धिमानी और चतुराई की जरूरत है। ज़रा भी चूकनेसे बालक या माता अथवा दोनों मर सकते हैं। इसीसे "बंगसेन"में लिखा है:—

गर्भस्य गतयश्चित्रा जायन्तेऽनिलकोपतः।
तत्राऽनल्पमतिर्वैद्यो वर्त्तते मातिपूर्वकम्॥

वायुके कोपसे गर्भको अनेक प्रकारकी गति होती हैं। इस मौके पर वैद्यको खूब चतुराईसे काम करना चाहिये।

याभिः सकटकालेऽपि वहृवयो नार्यः प्रसाविताः।
सम्यगुलब्ध यशस्तास्तु नार्यः कुर्युरिमां क्रियाम्॥

जिसने ऐसे संकट-कालमें भी अनेक स्त्रियोंको जनाया हो और इस काममें जिसका यश फैल रहा हो, ऐसी दाईको यह काम करना चाहिये।

(१) अगर गर्भ जीता हो, तो दाईको अपने हाथमें घी लगाकर, योनिके भीतर हाथ डालकर, यत्नसे गर्भको बाहर निकाल लेना चाहिये।

(२) अगर मूढ़ गर्भ मर गया हो, तो शस्त्रविधि या अस्त्र-चिकित्साको जानने वाली, हलके हाथ वाली, निर्भय दाई गर्भिणीकी योनिमें शस्त्र डाले।

(३) अगर गर्भमें जान हो, तो उसे किसी हालतमें भी शस्त्रसे न काटना चाहिये। अगर जीवित गर्भ काटा जाता है, तो वह आप तो मरता ही है, साथही माँको भी मारता है। "सुश्रुत"में लिखा है:—

सचेतनं च शस्त्रेण न कथचन दारयेत्।
दीर्यमाणोहि जननीमात्मान चैव घातयेत्॥

अगर जीता हुआ बालक गर्भमें रुका हुआ हो, तो उसे किसी दशामें भी न काटना चाहिये। क्योंकि उसके काटनेसे गर्भवती और बालक दोनों मर जाते हैं।

(४) अगर गर्भ मर गया हो, तो उसे तत्काल बिना विलम्ब शस्त्रसे काट डालना चाहिये। क्योंकि न काटने या देरसे काटनेसे मरा हुआ गर्भ माताको तत्काल मार देता है। "तिब्बे अकबरी" में भी लिखा है,—अगर बालक पेटमें मर जाय अथवा बालक तो निकल आवे, पर झिल्ली या जेर रह जाय तो सुस्ती करना अच्छा नहीं। इन दोनोके जल्दी न निकालनेसे मृत्युका भय है।

(५) गर्भगत बालक जीता हो, तो उसे जीता ही निकालना चाहिये। अगर न निकल सके तो "सुश्रुत" में लिखे हुए "गर्भमोक्ष मन्त्र" से पानी मतर कर, बच्चा जननेवालीको पिलाना चाहिये। इस मन्त्रसे मतरा हुआ पानी इस मौक़ेपर अच्छा काम करता है, रुका हुआ गर्भ निकल आता है। वह मन्त्र यह है:—

मुक्ताः पोशर्विपाशाश्च क्ताः सूर्येण रश्मयः।
मुक्ताः सर्व भयाद्गर्भ एह्येहि माचिरं स्वाहा॥

इस मन्त्रको "च्यवन मन्त्र" कहते हैं। इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित किये हुए जलके पीनेसे स्त्री सुखसे जनती है।

नोट—यह मंत्र सुश्रुतमें है। उससे चक्रदत्त प्रभृति अनेक ग्रन्थकारोंने लिया है। मालूम होता है, यह मंत्र काम देता है। हमने तो कभी परीक्षा नहीं की। हमारे पाठक इसकी परीक्षा अवश्य करें।

(६) जहाँ तक हो, अटके हुए गर्भको ऊपरी उपायों यानी योनि में धूनी देकर, कोई दवा गले या मस्तक प्रभृतिपर लगा या रखकर निकालें। हमने ऐसे अनेक उपाय "प्रसव विलम्ब चिकित्सा" में लिखे हैं। जब उनमेंसे कोई उपाय काम न दे, तब "अस्त्र-चिकित्सा" का आश्रय लेना ही उचित है। पर इस काममें देर करना हिंसा करना है। "वाग्भट्ट" में लिखा है,—अगर गर्भ अड़ जावे तो नीचे लिखे उपायोंसे काम लोः—

(क) काले साँपकी काँचलीकी योनिमें धूनी दो।

(ख) काली मूसलीकी जड़को हाथ या पैरमें बाँधो।

(ग) ब्राह्मी और कलिहारीको धारण कराओ।

(घ) गर्भिणीके सिरपर थूहरका दूध लगाओ।

(ङ) बालोंको अँगुलीमें बाँधकर, स्त्रीके तालू या कंठको घिसो।

(च) भोजपत्र, कलिहारी, तूम्बी, साँपकी काँचली, कूट और सरसों—इन सबको मिलाकर योनिमें इनकी धूनी दो और इन्हींको पीस कर योनिपर लेप करो।

अगर इन उपायोंसे गर्भ न निकले और मन्त्र भी कुछ काम न दे, तब राजासे पूछकर और पतिसे मंजूरी लेकर गर्भको यत्नसे निकालो।

सेमलके निर्यासमें घी मिलाकर हाथको चिकना करो और इसी को योनिमें भी लगाओ। इसके बाद, अगर गर्भ न निकलता दीखे, तो हाथसे निकाल लो।

अगर हाथसे न निकल सके, तो मरे हुए गर्भ और शल्यतन्त्रको जानने वाला वैद्य, साध्यासाध्यका विचार करके, धन्वन्तरिके मतसे, उस गर्भको शस्त्रसे काटकर निकाले।

अगर चोट वग़ैरः लगनेसे स्त्री मर जाय और उसकी कोखमें गर्भ फड़के, तो वैद्य स्त्रीको चीरकर बालकको निकाल ले।

अगर स्त्री जीती हो और गर्भ न निकलता हो, तो वैद्य गर्भाशय को बचाकर और गर्भिणीकी रक्षा करके, एक साथ फुरतीसे शस्त्र चलानेमें दक्ष वैद्य चतुराईसे काम करे। ऐसा वैद्य धन-धान्य मित्र और यशका भागी होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—अगर बालक गर्भमें मर जाय, तो वैद्य उसे शीघ्र ही जैसे हो सके साबत ही निकाल ले। विद्वान् वैद्यको इसमें दो घड़ीकी भी देर करना उचित नहीं, क्योंकि गर्भमें मरा हुआ बालक शीघ्र ही माताको मार डालता है।

वैद्यको अस्त्रसे काम लेते समय मंडलाग्र नामक यंत्रसे काम लेना चाहिये। क्योंकि इसकी नोक आगेसे तेज़ नहीं होती, पर वृद्धिपत्र यन्त्रसे काम न ले, क्योंकि इस औज़ारकी नोक आगेसे तेज़ होती है। इससे गर्भवतीकी आँतें आदि कटकर मर जानेका भय है। हाँ, इस चीरफाड़के काममें वही हाथ लगावे, जिसे मनुष्य-शरीरके भीतरी अंगोंका पूरा ज्ञान हो।

लिख आये हैं, कि जीता हुआ बालक गर्भमें रुका हो, तो उसे कदाचित भी शस्त्रसे न काटना चाहिये, क्योंकि जीते बालकको काटनेसे बालक और माँ दोनों मर जाते हैं।

गर्भमें बालक मर गया हो, तो वैद्य स्त्रीको मीठी-मीठी हितकारी बातोंसे समझा कर, मंडलाग्र शस्त्र या अँगुली शस्त्रसे बालकका सिर विदारण करके, खोपड़ीको शंकुसे पकड़कर अथवा पेटको पकड़ कर अथवा कोखसे पकड़ कर बाहर खींच ले। अगर सिर छेदनेकी ज़रूरत न हो, यदि गर्भका सिर योनिके द्वारपर ही हो, तो उसकी कनपटी या गंडस्थलको पकड़ कर उसे खींच ले। यदि कन्धे रुके हों, तो कन्धोंके पाससे हाथोंको काटकर निकाल ले।

अगर गर्भ मशककी तरह आड़ा हो या पेट हवासे फूला हो, तो पेटको चीरकर, आँतें निकाल कर, शिथिल हुए गर्भको बाहर खींचले। जो कूले या साथल अटके हों, तो कूलोंको काट कर निकाल ले।

मरे हुए गर्भके जिस-जिस अंगको वैद्य मथे या छेदे या चीरे, उन्हें अच्छी तरहसे काट-काट कर बाहर निकाल ले। उनका कोई भी अंश भीतर न रहने दे। काटते और निकालते समय एवं पीछे भी चतुराईसे स्त्रीकी रक्षा करे।

गर्भ निकल आवे, पर अपरा या जेर अथवा ओलनाल न निकले, तो उसे काले साँपकी काँचलीकी धूनी देकर या उधर लिखे हुए लेप वगैरः लगाकर निकाल ले। अगर इस तरह न निकले, तो हाथमें तेल लगा कर हाथसे निकाल ले। पसवाड़े मलनेसे भी जेर निकल आती है। ऐसे समयमें दाई स्त्रीको हिलावे, उसके कन्धों और पिंडलियोंको मले और योनिमें खूब तेल लगावे।

अपरा या ओलनाल न निकलनेसे हानि।

बच्चा हो जानेपर अगर जेर या अम्बर न निकले, तो वह अम्बर दर्द चलाती, पेट फुलाती और अग्निको मन्दी करती है।

जेर निकालनेकी तरकीबें।

अँगुलीमें बाल बाँधकर, उससे कंठ घिसनेसे अम्बर गिर जाती है।

साँपकी काँचली, कड़वी तूम्बी, कड़वी तोरई और सरसों—इन्हें एकत्र पीसकर और सरसोंके तेलमें मिला कर, योनिके चारों ओर धूनी देनेसे अम्बर गिर जाती है।

प्रसूताके हाथ और पाँवके तलवोंपर कलिहारीकी जड़का कल्क लेप करनेसे जेर गिर जाती है।

चतुर दाई अपने हाथकी अँगुलियोंके नख कौटकर, हाथमें घी लगाकर, धीरे-धीरे हाथको योनिमें डालकर अम्बरको निकाल ले।

जब मरा हुआ गर्भ और ओलनाल दोनो निकल आवें तब,

दाई स्त्रीके शरीरपर गरम जल सींचे, शरीरपर तेलकी मालिश करे और योनिको भी घी या तेलसे चुपड़ दे।

वक्तव्य।

यहाँ तक हमने मूढ़गर्भ-सम्बन्धी साधारण बातें लिख दी हैं। यह विद्या—चीरफाड़की विद्या—बिना गुरुके सामने सीखे आ नहीं सकती। यद्यपि "सुश्रुत" में चीरफाड़के औज़ारों और उनके चलानेकी तरकीबें विस्तारसे लिखी हैं। पहलेके वैद्य ऐसे सब औज़ार रखते थे और चीरफाड़का अभ्यास करते थे। पर आजकल, जबसे इस देशमें विदेशी राजा अँगरेज़ आये, यह विद्या उड़ गई। डाक्टरोंने इस विद्यामें चरमकी उन्नति की है, अतः जिन्हें मूढ़गर्भको अस्त्र-चिकित्सासे निकालना सीखना हो, वे किसी सरजरीके स्कूलमें इसे सीखें। कोई भी वैद्य बिना सीखे-देखे चीरफाड़ न करे। हाँ, दवाओंके ज़ोरसे काम हो सके, तो वैद्य करे।

बादकी चिकित्सा।

पीपर, पीपरामूल, सोंठ, बड़ी इलायची, हींग, भारंगी, अजमोद, बच, अतीस, रास्ना और चव्य—इन सबको पीसकूटकर छान लो। इस चूर्णको गरम पानीके साथ स्त्रीको खिलाना चाहिये।

दोषोंके निकालने और पीड़ा दूर होनेके लिये, इन्हीं पीपर आदि दवाओंका काढ़ा बनाकर, और उसमें घी मिलाकर प्रसूता को पिलाओ।

इन दवाओंको तीन, पाँच या सात दिन तक पिलाकर, फिर घी प्रभृति स्नेह पदार्थ पिलाओ। रातके समय उचित आसव या संस्कृत अरिष्ट पिलाओ।

जब स्त्री सब तरहसे शुद्ध हो जाय, तब उसे चिकना, गरम और थोड़ा अन्न दो। रोज़ शरीरमें तेलकी मालिश कराओ। उससे कह दो कि क्रोध न करे।

वात नाशक द्रव्योंसे सिद्ध किया हुआ दूध दस दिन तक पिलाओ । फिर दस दिन यथोचित मांसरस दो ।

जब कोई उपद्रव न रहे, स्त्री स्वस्थ अवस्थाकी तरह बलवती और रूपवती हो जाय और गर्भको निकाले हुए चार महीने बीत जायँ, तब यथेष्ट आहार विहार करे ।

प्रसूताकी मालिशके लिये बला तैल ।

"सुश्रुत" में लिखा है योनिके संतर्पण, शरीरपर मलने, पीने और वस्तिकर्म तथा भोजनमें वायु-नाशक "बलातेल" प्रसूता स्त्रीको सेवन कराओ—

बला (खिरैंटी) की जड़का काढ़ा		...	८ भाग
दशमूलका काढ़ा	...	...	८ "
जौका काढ़ा	...	...	८ "
बेरका काढ़ा	...	...	८ "
कुलथीका काढ़ा	...	...	८ "
दूध	...	...	८ "
तिलका तेल	...	...	१ "

इन सबको मिलाकर पकाओ । पकते समय मधुर गण (काकोल्यादिक) और सेंधानोन मिला दो ।

अगर, राल, सरल निर्यास, देवदारू, मँजीठ, चन्दन, कूट, इलायची, तगर, मेदा, जटामासी शैलेय (शिलारस), पत्रज, तगर, शारिवा, वच, शतावरी, असगन्ध, शतपुष्प—सोवा और साँठी—इन सबको तेलसे चौथाई लेकर पीस लो और पकते समय डाल दो । जब पककर तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो । फिर इसे सोने चाँदी या चिकने मिट्टीके बासनमें रख दो और मुँह बाँध दो ।

यह तेल समस्त वात-व्याधि और प्रसूताके समस्त रोग नाशक है । जो बाँझ गर्भवती होना चाहे उसको—क्षीणवीर्य पुरुषको, वायु

से क्षीणको, जिसके गर्भमें चोट लगी हो या अत्यन्त चोट लगी हो, टूटे हुए, थके हुए, आक्षेपक, आदि वातव्याधियों वालोंको तथा फोतोंके रोगवालोंको परम लाभदायक है। खाँसी, श्वास, हिचकी और गुल्म, इसके सेवन करनेसे नाश हो जाते तथा धातु पुष्ट और स्थिर-यौवन होता है। यह राजाओंके योग्य है।

और तेल

तिलोंको खिरेंटीके काढ़ेकी सात भावनाएँ दो और फिर कोल्हू में उनका तेल निकालकर—सौ बार उसे खिरेंटीके काढ़ेमें पकाओ। इस तेलको निर्वात स्थानमें, बलानुसार, नित्य पीने और जब तेल पच जाय तब चिकने भातको दूधके साथ खानेसे बड़ा लाभ होता है। इस तरह १६ सेर तेल पीने और यथोक्त भोजन करनेसे १ साल में खूब रूप और बल हो जाता है। सब दोष नाश होकर १०० वर्ष की आयु हो जाती है। सोलह-सोलह सेर तेल बढ़नेसे सौ-सौ वर्ष की उम्र बढ़ती है।

प्रसूतिका-चिकित्सा।

सूतिका रोगके निदान।

अत्यन्त वातकारक स्थानके सेवन करने आदिसे, अयोग्य आचरणसे, दोषोंको कुपित करने वाले आचरणसे, विषम भोजन और अजीर्णसे प्रसूता या ज़च्चाको जो रोग होते हैं, उन्हें "सूतिका रोग" कहते हैं। वे कष्टसाध्य हो जाते हैं।

सूतिका रोग।

अंगोंका टूटना, ज्वर, खाँसी, प्यास, शरीर भारी होना, सूजन, शूल और अतिसार—ये रोग प्रसूताको विशेषकर होते हैं। यह रोग प्रसूताको होते हैं, इसलिये "सूतिका रोग" कहे जाते हैं।

"वैद्यरत्न"में लिखा है—

अंगमर्दो ज्वरः कम्पः पिपासा गुरुगात्रता।
शोथः शूलातिसारौ च सूतिकारोग लक्षणम्॥

शरीर टूटना, ज्वर, कँपकँपी, प्यास, शरीर भारी होना, सूजन, शूल और अतिसार ये प्रसूति रोगके लक्षण हैं।

"बङ्गसेन"में लिखा है—

प्रलापो वेपथुयस्याः सूतिका सा उदाहृता।

जिसमें प्रलाप—आनतान बकना और कम्प—कँपकँपी आना—ये लक्षण हो, उसे "सूतिका रोग" कहते हैं।

नोट—कम्प होना सभीने लिखा है, पर भावमिश्रने "कम्प"के स्थानमें "कास" यानी खाँसी लिखी है।

ज्वर, अतिसार, सूजन, पेट अफरना, बलनाश, तन्द्रा, अरुचि और मुँहमें पानी भर-भर आना इत्यादि रोग स्त्रीको मांस और बल की क्षीणतासे होते हैं। ये सूतिका रोगोंके विशेष निदान हैं। ये रोग जब सूतिका को होते हैं, तब सूतिका रोग कहे जाते हैं।

इन रोगोंमेंसे यदि कोई रोग मुख्य होता है, तो ज्वर आदि अन्य रोग उसके "उपद्रव" कहलाते हैं।

स्त्री कबसे कब तक प्रसूता?

बच्चा जननेके दिनसे डेढ़ महीने तक अथवा रजोदर्शन होने तक स्त्रीको "प्रसूता" कहते हैं। यह धन्वन्तरिका मत है। कहा है—

प्रसूता सार्धमासान्ते दृष्टे वा पुनरार्त्तवे।
सूतिका नामहीना स्यादिति धन्वन्तरेर्मतम्॥

प्रसूताको पथ्यपालनकी आवश्यकता।

सूतिका रोग बड़े कठिन होते और बड़ी दिक़्क़तसे आराम होते हैं। अगर पथ्य पालन न किया जाय, तो आराम होना कठिन ही नहीं, असम्भव है। जिसका सारा दूषित खून निकल गया हो, वह एक महीने तक चिकना, पथ्य और थोड़ा भोजन करे, नित्य पसीने ले, शरीरमें तेल मलवावे और पथ्यमें सावधान रहे।

पथ्य—लंघन, हल्के, पसीने, गर्भाशय और कोठोंका शोधन, उबटन, तैलपान, चटपटे, कड़वे और गरम पदार्थोंका सेवन, दीपन-पाचन पदार्थ, शराब, पुराने साँठी चाँवल, कुलथी, लहसन, बैंगन, छोटी मूली, परवल, बिजौरा, पान, खट्टा मीठा अनार तथा अन्य कफवात नाशक पदार्थ प्रसूताके लिये हित हैं। किसी-किसीने पुराने चाँवल, मसूर, उड़द का जूस, गूलर और कच्चे केलेका साग आदि भी हितकर लिखे हैं।

अपथ्य—भारी भोजन, आग तापना, मिहनत करना, शीतल हवा, मैथुन, मलमूत्रादि रोकना, अधिक खाना और दिनमें सोना आदि हानिकारक हैं।

चार महीने बीत जायँ और कोई भी उपद्रव न रहे, तब परहेज़ त्यागना चाहिये।

उपद्रवविशुद्धाञ्च विज्ञाय वरवर्णिनीम्।
उर्द्ध चतुर्भ्यो मासेभ्यः परिहारं विवर्जयेत्॥

सूतिका रोगोंकी चिकित्सा।

सूतिका रोग नाशार्थ वातनाशक क्रिया करनी चाहिये। जिस रोगका ज़ोर हो, उसीकी दवा देनी चाहिये। दस दिन तक वातनाशक दवाओंके साथ औटाया हुआ दूध पिलाना चाहिये। सिरस की लकड़ीकी दाँतुन करानी चाहिये। सूतिका रोगोंकी चिकित्सा हमने "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भाग, अठारहवें अध्यायके पृष्ठ ४२२-४२७

में लिखी है। मक्कल शूलकी चिकित्सा हमने "स्वास्थ्यरक्षा" पृष्ठ २३२-२३३ में लिखी है। लेकिन जिनके पास "स्वास्थ्यरक्षा" न होगी, वे तकलीफ पायेंगे, इसलिये हम उसे यहाँ भी लिखे देते हैं।

मक्कल शूल।

बच्चा और जेरनालके योनिसे बाहर आते ही, अगर दाई प्रसूता की योनिको तत्काल भीतर दबा नहीं देती, देर करती है, तो प्रसूता की योनिमें वायु घुस जाती है। वायुके कुपित होनेसे हृदय और पेड़ू में शूल चलता, पेटपर अफारा आ जाता एवं ऐसे ही और भी वायुके विकार हो जाते हैं। वायुके योनिमें घुस जानेसे हृदय, सिर और पेड़ूमें जो शूल चलता है, उसे "मक्कल" कहते हैं।

"भावप्रकाश" में लिखा है,—प्रसूता स्त्रियोंके रुक्ष कारणोंसे बढ़ी हुई वायु—तीक्ष्ण और उष्ण कारणोंसे सुखाये हुये खूनको रोककर, नाभिके नीचे, पसलियोंमें, मूत्राशयमें अथवा मूत्राशयके ऊपरके भाग में गाँठ उत्पन्न करती है। इस गाँठके होनेसे नाभि, मूत्राशय और पेटमें दर्द चलता है, पक्वाशय फूल जाता और पेशाब रुक जाता है। इसी रोगको "मक्कल" कहते हैं।

चिकित्सा।

(१) जवाखारका महीन चूर्ण सुहाते-सुहाते गरम जल या घीके साथ पीनेसे मक्कल आराम होता है।

(२) पीपर, पीपरामूल, काली-मिर्च, गजपीपर, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, सरसों, हींग, भारंगी, पाढ़, इन्द्रजौ, ज़ीरा, बकायन, चुरनहार, अतीस, कुटकी और बायबिडङ्ग—इन २१ दवाओंको "पिप्पल्यादि गण" कहते हैं। इनके काढ़ेमें "सेंधानोन" डालकर पीनेसे मक्कल शूल, गोला, ज्वर, कफ और वायु कतई नष्ट हो जाते हैं तथा अग्नि दीपन होती और आम पच जाता है।

(३) सोंठ, मिर्च, पीपर, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर और धनिया,—इन सबके चूर्णको, पुराने गुड़में मिलाकर, खानेसे मकल शूल आराम हो जाता है।

सूतिका रोग नाशक नुसखे।

(१) सौभाग्य शुण्ठी पाक।

घी ८ तोले, दूध १२८ तोले, चीनी २०० तोले और पिसी-छनी सोंठ ३२ तोले,—इन सबको एकत्र मिलाकर, गुड़की विधिसे, पकाओ। जब पकनेपर आवे इसमें धनिया १२ तोले, सौंफ २० तोले, और बायबिडंग, सफेद जीरा, सोंठ, गोल मिर्च, पीपर, नागरमोथा, तेजपात, नागकेशर, दालचीनी और छोटी इलायची प्रत्येक चार-चार तोले पीस-छानकर मिला दो और फिर पकाओ। जब तैयार हो जाय, किसी साफ बासनमें रख दो। इसके सेवन करने से प्यास, वमन, ज्वर, दाह, श्वास, शोथ, खाँसी, तिल्ली और कृमिरोग नाश हो जाते हैं।

(२) सौभाग्य शुण्ठी मोदक।

कसेरू, सिंघाड़े, पद्म-बीज, मेथा, सफेद ज़ीरा, कालाजीरा, जायफल, जावित्री, लौंग, शैलज—शिलाजीत, नागकेशर, तेजपात, दालचीनी, कचूर, धायके फूल, इलायची, सोआ, धनिया, गजपीपर, पीपर, गोलमिर्च और शतावर इन २२ दवाओंमें से हरेक चार-चार तोले, लोहा-भस्म ८ तोले, पिसी-छनी सोंठ एकसेर, मिश्री आधसेर, घी एक सेर और दूध आठ सेर तैयार करो। कूटने-पीसने योग्य दवाओंको कूट-पीस-छान लो; फिर चौथे भागमें लिखे पाकोंकी विधिसे लड्डू बना लो। इसमें से छह माशे पाक खानेसे सूतिका-जन्य अतिसार, ग्रहणी आदि रोग शान्त होकर अग्नि वृद्धि होती है।

(३) जीरकाद्य मोदक।

सफेद ज़ीरा ३२ तोले, सोंठ १२ तोले, धनिया १२ तोले, सोवा ४ तोले, अजवायन ४ तोले और काला ज़ीरा ४ तोले—इनको पीस-छान कर, ८ सेर दूध, ६ सेर चीनी और ३२ तोले घीमें मिलाकर पकाओ। जब पकने पर आवे, इसमें त्रिकुटा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, बाय-विडंग, चव्य, चीता, मोथा और लौंगका पिसा-छना चूर्ण और मिला दो। इससे सूतिकाजन्य ग्रहणी रोग नाश होकर अग्नि वृद्धि होती है।

(४) पञ्चजीरक पाक।

सफेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, सोया, सोंफ, अजमोद, अजवायन, धनिया, मेथी, सोंठ, पीपर, पीपरामूल, चीता, हाऊबेर, बेरोंका चूर्ण, कूट और कबीला—प्रत्येक चार-चार तोले लेकर पीस-छान लो। फिर गुड़ ४०० तोले या पाँच सेर, दूध १२८ तोले और घी १६ तोले लेकर, सबको मिलाकर पाककी विधिसे पाक बना लो। इसके खानेसे सूतिका-जन्य ज्वर, क्षय, खाँसी, श्वास, पाण्डु, दुबलापन और बादी के रोग नाश होते हैं।

(५) सूतिकान्तक रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, अभ्रक भस्म और ताम्बा-भस्म, इन सब को बराबर-बराबर लेकर, खुलकुड़ीके रसमें घोटकर, उड़द-समान गोलियाँ बनाकर, छायामें सुखा लो। इस रसको अदरखके स्वरसके साथ सेवन करने से सूतिकावस्थाका ज्वर, प्यास, अरुचि, अग्निमांद्य और शोथ आदि रोग नाश हो जाते हैं।

(६) प्रतापलंकेश्वर रस।

शुद्ध पारा १ तोले, अभ्रक भस्म १ तोले, शुद्ध गंधक १ तोले, पीपर

३ तोले, लोहभस्म ५ तोले, शंख-भस्म ८ तोले, आरने कण्डोकी राख १६ तोले और शुद्ध मीठा विष एक तोले—इन सबको एकत्र घोट लो। इसमें से २ रत्ती रस शुद्ध गूगल, गिलोय, नागरमोथा और त्रिफलेके साथ मिला कर देनेसे प्रसूत रोग और धनुर्वात रोग नाश हो जाते हैं। अदरखके रसके साथ देनेसे सन्निपात और बवासीर रोग नाश हो जाते हैं। भिन्न-भिन्न अनुपानोके साथ यह रस सब तरहके अतिसार और संग्रहणीको नाश करता है। यह रस स्वयं जगत्माता पार्वतीने कहा है।

(७) वृहत् सूतिका विनोद रस।

सोंठ १ तोले, गोलमिर्च २ तोले, पीपर ३ तोले, सेंधानोन ६ माशे, जावित्री २ तोले और शुद्ध तूतिया २ तोले—इन सबको मिला कर निर्गुण्डीके रसमें ३ घण्टे तक खरल करके रख लो। इस रसके मात्रासे सेवन करनेसे तरह-तरहके सूतिका रोग नाश हो जाते हैं।

(८) सूतिका गजकेसरी रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध अभ्रकभस्म, सोनामक्खीकी भस्म, त्रिकुटा और शुद्ध मीठा विष—सबको बराबर-बराबर लेकर, खरल करके रख लो। मात्रा ४ रत्ती की है। इसको उचित अनुपानके साथ सेवन करनेसे सूतिका-जन्य ग्रहणी, मन्दाग्नि, अतिसार, खाँसी और श्वास आराम होते है।

(९) हेमसुन्दर तैल।

धतूरेके गीले फल पीस कर, चौगुने कड़वे तेलमें डालकर पकाओ। कोई २५ मिनटमें "हेमसुन्दर तैल" बन जायगा। यह तेल मालिश करनेसे दुष्ट पसीने आने और सूतिका रोगोको नाश करता है।

ग़रीबी नुसखे ।

(१०) पञ्चमूल, मोथा, गिलोय, गंधाली, सोंठ और वाला—इनके काढ़ेमें ६ माशे शहद मिलाकर पीनेसे सूतिका ज्वर और वेदना नाश हो जाते हैं ।

(११) सोंठ, काकड़ासिंगी और पीपरामूल—इनको एकत्र मिला कर सेवन करनेसे प्रसूतिका ज्वर और वात रोग नष्ट हो जाते हैं ।

(१२) दशमूलके काढ़ेमें पीपलोंका चूर्ण डाल और कुछ गरम करके पीनेसे बढ़ा हुआ प्रसूतिका रोग भी शान्त हो जाता है ।

(१३) हींग, पीपर, दोनों पाढ़ल, भारंगी, मेदा, सोंठ, रास्ना, अतीस और चव्य इन सबको मिलाकर पीस-कूट-छान लो इसके सेवन करनेसे योनिका शूलि मिटकर योनि नर्म हो जाती है ।

(१४) वेल और भाँगरेकी जड़ोंको सिलपर पानीके साथ पीस कर, मदिराके साथ पीनेसे योनि-शूल तत्काल नाश हो जाता है।

(१५) इलायची और पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । इसमें थोड़ा सा कालानोन डाल कर, मदिराके साथ, पीनेसे योनि-शूल नाश हो जाता है ।

(१६) विजौरे नीबूकी जड़, मोतियाकी जड़, वेलगिरी और नागरमोथा—इनको एकत्र पीस कर लेप करनेसे प्रसूताका शिरोरोग नाश हो जाता है ।

(१७) सोंठ, मिर्च, पीपर, पीपरामूल, देवदारु, चव्य, चीता, हल्दी, दारूहल्दी, हाऊवेर, सफेद ज़ीरा, जवाखार, सेंधानोन, काला-नोन और कचियानोन,—इनको बराबर-बराबर लेकर, सिलपर जलके साथ पीस कर, गरम जलके साथ लेनेसे सुखसे पाखाना हो जाता है ।

(१८) पञ्चमूलका काढ़ा बनाकर, उसमें सेंधानोन डाल कर सुहाता-सुहाता पीनेसे सूतिका रोग नाश हो जाता है ।

(१९) पञ्चमूलके काढ़ेमें गरम किया हुआ लोहा बुझाकर पीनेसे सूतिका रोग नाश हो जाता है।

(२०) वारुणी मदिरामें गरम किया हुआ लोहा बुझाकर, उस मदिराको पीनेसे सूतिका रोग नाश हो जाता है।

(२१) अगर प्रसूताके शरीरमें वेदना हो, तो सागौनकी छाल, हींग, अतीस, पाढ़, कुटकी और तेजबलका काढ़ा, कल्क या चूर्ण "घी" के साथ लेनेसे दोषोंकी शान्ति होकर वेदना नाश होती है।

(२२) पीपर, पीपरामूल, सोंठ, इलायची, हींग, भारंगी, अजमोद, बच, अतीस, रास्ना और चव्य—इन दवाओंका कल्क या चूर्ण "घी"में भूनकर सेवन करनेसे दोषोंकी शान्ति होकर वेदना नाश होती है।

(२३) अगर शरीरमें दर्द हो, तो दशमूलका काढ़ा सूतिकाको पिलाओ।

(२४) अगर खाँसी हो तो "सूतिकान्तक रस" सेवन कराओ।

(२५) अगर अतिसार या संग्रहणी हो, तो "जीरकाद्य मोदक" या "सौभाग्यशुण्ठी मोदक" सेवन कराओ।

स्त्रीकी योनिके घाव वग़ैरःका इलाज।

तूम्बीके पत्ते और लोध—बराबर-बराबर लेकर, खूब पीसकर योनिमें लेप करो। इससे योनिके घाव तत्काल मिट जाते हैं।

ढाकके फल और गूलरके फल—इन्हें तिलके तेलमें पीसकर योनिमें लेप करनेसे योनि दृढ़ हो जाती है।

प्रसव होने बाद अगर पेट बढ़ गया हो, तो स्त्री २१ दिन तक सवेरे ही पीपरामूलके चूर्णको दहीमें घोलकर पीवे।

स्तन कठोर करनेके उपाय ।

श्रीपर्णीकी छालके कल्क और उसीके पत्तोंके स्वरसके साथ तेल पकाकर, शीशीमें रख लो। इस तेलमें एक साफ कपड़ा भिगो-भिगोकर, एक महीने तक, स्तनोंपर बाँधनेसे स्त्रियोंके गिरे हुए ढीले-ढाले स्तन पुष्ट और कठोर हो जाते हैं। कहा है:—

श्रीपर्णीरसकल्काभ्यातैलंसिद्धं तिलोद्भवम् ।
तत्तैलं तूलकेनैव स्तनस्योपरि दापयेत् ॥
पतितावुऽत्थितौस्यातामंगनायाः पयोधरौ ।

नोट—श्रीपर्णी-अरनी या गनियारीको कहते हैं। पर कई टीकाकारोंने इसका अर्थ बिजौरा या शालिपर्णी लिखा है। कह नहीं सकते, यह कहाँ तक ठीक है। यह नुसखा चक्रदत्त, वृन्द और वैद्य-विनोद प्रभृति अनेक ग्रन्थोंमें मिलता है। यद्यपि हमने परीक्षा नहीं की है, तथापि उम्मीद है कि, यह सोलह आने कारगर हो। जब इसे बनाना हो, श्रीपर्णीकी छाल लाकर, सिलपर पीसकर, कल्क बना लो और इसीके पत्तोंको पीसकर स्वरस निचोड़ लो। जितनी लुगदी हो उससे दूना स्वरस और स्वरससे दूना तेल—काले तिलोंका तेल—लेकर, कलईदार बर्तनमें रखकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकालो और छानकर शीशीमें रख लो। फिर ऊपर लिखी विधिसे इसमें कपड़ा तर कर-करके नित्य स्तनोंपर बाँधो।

(२) चूहेकी चरबी, सूअरका माँस, भैंसका माँस और हाथीका माँस—इन सबको मिलाकर, स्तनोंपर मलनेसे स्तन कठोर और पुष्ट हो जाते हैं।

(३) कमलगट्टेकी गिरीको महीन पीस-छानकर, दूध दहीके साथ पीनेसे खूब दूध आता और बुढ़ापेमें भी स्तन कठोर हो जाते हैं।

नोट—कमलगट्टोंको रातके समय, पानीमें भिगो दो और सवेरे ही चाकूसे उनके छिलके उतार लो। भीगे हुए कमलगट्टोंके छिलके आसानीसे उतर आते है। छिलके उतारकर, उनके भीतरकी हरी-हरी पत्तियोंको निकालकर फेंक दो, क्योंकि, वह हानिकारक होती हैं। इसके बाद उन्हें खूब सुखाकर, कूट-पीस और

छान लो। यह उत्तम चूर्ण है। इस चूर्ण के बलानुसार, उचित मात्रामें दही दूध के साथ लगातार कुछ दिन खानेसे स्तनों में खूब दूध आता और वे कठोर भी होजाते हैं।

(४) गायका घी, भैंसका घी, काली तिलीका तेल, काली निशोथ, कृताञ्जली, बच, सोंठ, गोलमिर्च, पीपर और हल्दी—इन दसों दवाओं को एकत्र पीस कर कुछ दिन नस्य लेने से एक-दम से गिरे हुए स्तन भी उठ आते हैं।

(५) बच्चा जननेके बादके पहले ऋतु कालमें, चावलोंके पानी या धोवन की नस्य लेने से गिरे हुए ढीले स्तन उठ आते और कठोर हो जाते हैं।

यह नस्य ऋतुकालके पहले दिन से १६ दिन तक सेवन करनी चाहिये। एक दो दिनमें लाभ नहीं हो सकता। विद्यापतिजी भी यही बात कहते हैं।

आर्त्तवस्नानादिवसात् षोडषाहं निरंतरम्।
तण्डुलादेकनस्येन काठिन्य कुचयोः स्थिरम्॥

जिस दिनसे स्त्री रजस्वला हो, उस दिनसे सौलह दिन तक बराबर चाँवलों के धोवन की नस्य ले, तो उसके गिरे हुए स्तन कठोर और पुष्ट हो जायँ।

(६) भैंसका नौनी घी, कूट, खिरेंटी बच और बड़ी खिरेंटी इन सबको पीसकर स्तनोंपर लगानेसे स्तन कठोर और पुष्ट हो जाते हैं।

बढ़े हुए पेटको छोटा करनेका उपाय।

(७) पीपरों को महीन पीस-छान कर, मथिक नामक माठे के साथ पीनेसे चन्द रोज़में प्रसूताकी कुक्षि या कोख दब या घट जाती है।

(८) माधवी की जड़ महीन पीस-छान कर, मथित-माठे, के साथ पीनेसे कुछ दिनोंमें प्रसूताका पेट छोटा और कमर पतली हो जाती है।

(६) मालतीकी जड़को माठेके साथ पीस कर, फिर उसमें घी और शहद मिलाकर सेवन करनेसे प्रसूता का बढा हुआ पेट छोटा होजाता है ।

(१०) आमले और हल्दीको एकत्र पीस-छानकर सेवन करनेसे प्रसूताका बढ़ा हुआ पेट छोटा हो जाता है ।

स्तन और स्तन्य रोग नाशक उपाय ।

स्तन रोग के कारण और भेद ।

दूधवाली या बिना दूधवाली स्त्रीके स्तनोंमें दोष पहुँच कर खून और मांसको दूषित करके "स्तन रोग" करते है । यह स्तनरोग कन्याओंको नही होता । क्योंकि कन्याओंके स्तनोंकी धमनी रुकी हुई होती है, इसलिये उनमें दोषों का सञ्चार नहीं होता और इसीसे उनको स्तनको स्तन-रोग नहीं होते। "सुश्रुत" में लिखा है:—

धमन्यः संवृतद्वाराः कन्यानां स्तनसंश्रिताः ।

दोषावसरणास्तासां न भवन्ति स्तनामयः ॥

बच्चा जननेवाली—प्रसूता और गर्भवती स्त्रियोंकी धमनियाँ स्वभाव से ही खुल जाती हैं, इसी से स्राव करती हैं, यानी उनमें से दूध निकलता है ।

पाँच तरहके स्तनरोगोंके लक्षण, रुधिर-जन्य विद्रधिको छोड़ कर, बाहर की विद्रधि के समान होते हैं ।

स्तन रोग पाँच तरहके होते हैं:—

(१) वातजन्य । (२) पित्तजन्य ।

(३) कफजन्य । (४) सन्निपात जन्य ।

(५) आगन्तुक ।

नोट—चोट लगने या शल्य से जो स्तनरोग होते हैं, वह आगन्तुक कहलाते हैं। रुधिर के कोप से स्तन रोग नहीं होते, यह स्वभाव की बात है।

हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है—खून चलता-चलता स्तनों की छोटी नसों में गरमी, सरदी या और कारणों से रुक कर सूजन पैदा कर देता है। उस समय पीड़ा होती और ज्वर चढ़ आता है। इस दशा में बड़ी तकलीफ होती है। बहुत बार बालक के सिर की चोट लगने से भी नसों का मुँह बन्द होकर पीड़ा खड़ी हो जाती है।

चिकित्सा-विधि ।

अगर स्तनों में सूजन हो, तो वैद्य विद्रधि रोगके अनुसार इलाज करे; परन्तु सेक आदि स्वेदन-कर्म कभी न करे। स्तनरोग में पित्तनाशक शीतल पदार्थ प्रयोग करे और जौंक लगा कर ख़राब खून निकाले।

स्तनपीड़ा नाशक नुसख़े ।

(१) इन्द्रायण की जड़ पानी या बैल के मूत्र में घिस कर लेप करने से स्तनों की पीड़ा और सूजन तुरन्त मिट जाती है।

(२) अगर स्तनों में खुजली, फोड़ा, गाँठ या सूजन वगैरः हो जाय, तो शीतल दवाओं का लेप करो। १०८ बार धोये हुए मक्खन में मुर्दासंग और सिन्दूर पीस-छान कर मिला दो और उसे फिर २१ बार धोओ। इसके बाद उसे स्तनों पर लगा दो। इस लेप से फोड़े-फुन्सी और घाव आदि सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) जौंक लगवाकर ख़राब खून निकाल देने से स्तन-पीड़ा में जल्दी लाभ होता है।

(४) हल्दी और घीग्वार की जड़ पीस कर स्तनों पर लगानेसे स्तन रोग नाश होजाते हैं। किसीने कहा है:—

कुमारिकारसंलेपो हरिद्रारज- सान्वितः ।
कवोष्णं स्तनशोथस्य नाशन सर्वसम्मताम् ॥

घीग्वार के पट्ठे के रस में हल्दी का चूर्ण डालकर गरम कर लो। फिर सुहाता-सुहाता स्तनों की सूजन पर लेप कर दो। इस से सूजन फौरन उतर जायगी।

(५) ककोंटक और जटामाँसी को पीस कर स्तनों पर लेप करने से जादू की तरह आराम होता है।

(६) निबौलियों के तेल के समान और कोई दवा स्तनपाक मिटाने वाली नहीं है; यानी स्तन पकते हों तो उन पर निबौलियों का तेल चुपड़ो। कहा है—

स्तनपाकहरं निम्बतैलतुल्यं न चापरम् ॥

(७) अगर बालक स्तनों को दाँतों से काटता हो, तो चिरायता पीस कर स्तनों पर लगा दो।

नोट—स्तन पीड़ा नाशक और नुसखे "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ ४२८-४३० में देखिये।

दुग्ध-चिकित्सा ।

स्त्री का दूध वातादि दोषों के कुपित होनेसे दूपित हो जाता है। अगर बच्चा दूपित दूध पीता है, तो बीमार हो जाता है।

वात-दूषित दूधके लक्षण ।

अगर दूध पानी में डालने से पानी में न मिले, ऊपर तैरता रहे और कसेला स्वाद हो तो उसे वायु से दूपित समझो।

पित्त-दूषित दूधके लक्षण ।

अगर दूध में कड़वा, खट्टा और नमकीन स्वाद हो तथा उस में पीली रेखा हों, तो उसे पित्त-दूपित समझो।

कफ दूषित दूधके लक्षण।

अगर दूध गाढ़ा और लसदार हो तथा पानीमें डालनेसे डूब जाय, तो उसे कफ-दूषित समझो।

त्रिदोष-दूषित दूधके लक्षण।

अगर दो दोषोंके लक्षण दीखें, तो दूधको दो दोषोंसे और तीन दोषोंके लक्षण हों तो तीन दोषोंसे दूषित समझो। किसीने लिखा है—अगर दूध आम समेत, मलके समान, पानी-जैसा, अनेक रंग-वाला हो और पानीमें डालनेसे आधा ऊपर रहे और आधा नीचे चला जाय, तो उसे त्रिदोषज समझो।

उत्तम दूधके लक्षण।

जो दूध पानीमें डालनेसे मिल जाय, पाण्डुरंगका हो, मधुर और निर्मल हो, वह निर्दोष है। ऐसा ही दूध बालकके पीने योग्य है।

बालकोंके रोगोंसे दूधके दोष जाननेकी तरकीब।

अगर दूध पीने वाले बालककी आवाज़ बैठ गई हो, शरीर दुबला हो गया हो, उसके मलमूत्र और अधोवायु रुक जाते हों, तो समझो कि दूध वायुसे दूषित है।

अगर बालकके शरीरमें पसीने आते हों, पतले दस्त लगते हों, कामला रोग हो गया हो, प्यास लगती हो, सारे शरीरमें गरमी लगती हो, तथा पित्तकी और भी तकलीफें हों तो समझो कि दूध पित्तसे दूषित है।

अगर बालकके मुँहसे लार बहुत गिरती हो, नींद बहुत आती हो, शरीर भारी रहता हो, सूजन हो, नेत्र टेढ़े हों और वह वमन या कय करता हो, तो समझो कि दूध कफसे दूषित है।

दूध शुद्ध करनेका उपाय ।

(१) अगर दूध वायुसे दूषित हो, तो माता या धायको तीन दिन तक दशमूलका काढ़ा पिलाओ ।

(२) अगर दूध पित्तसे दूषित हो, तो माँको गिलोय, शतावर, परवलके पत्ते, नीमके पत्ते, लाल चन्दन और अनन्तमूलका काढ़ा मिश्री मिलाकर पिलाओ ।

(३) अगर दूध कफसे दूषित हो, तो माँको त्रिफला, मोथा, चिरायता, कुटकी, बमनेटी देवदारु, बच और अकुवनका काढ़ा पिलाओ।

नोट—दो दोष और तीन दोषोंसे दूषित दूध हो, तो दो या तीन दोषोंकी दवाएँ मिलाकर काढ़ा बनाओ और पिलाओ ।

(४) परवलके पत्ते, नीमके पत्ते; विजय सार, देवदारु, पाठा, मरोड़फली, गिलोय, कुटकी और सौंठ—इनका काढ़ा पिलानेसे किसी भी दोषसे दूषित दूध शुद्ध हो जाता है ।

दूध बढ़ाने वाले नुसखे ।

(१) सफेद ज़ीरा और साँठी चाँवल, दूधमें पकाकर, कुछ दिन पीनेसे स्तनोंमें दूध बढ़ जाता है। परीक्षित है ।

दूध कम होनेके कारण ।

स्तनोंमें दूध कम आनेके मुख्य ये कारण हैं:—

(१) स्त्रीकी कमजोरी ।

(२) स्त्रीको ठीक भोजन न मिलना ।

नोट—अगर स्त्री कमजोर हो, तो उसे ताकत बढ़ने वाली दवा और पुष्टिकारक भोजन दो ।

(२) सफेद, ज़ीरा नानख्वाह और नमक-सङ्ग—इनको बराबर-बराबर लेकर और महीन पीस-छानकर, दहीमें मिलाकर खानेसे स्तनोंमें दूध बढ़ता है ।

(३) अजमोद, अनीसूँ, बोजीदाँ और तुख्म सोया—इनको पीस-छान और शहदमें मिलाकर, मात्राके साथ सेवन करनेसे स्तनोंमें दूध बढ़ जाता है।

(४) अर्क स्वर्णवल्ली सेवन करनेसे दूध बढ़ता और मस्तकशूल आराम हो जाता है।

(५) अर्क सोमवल्ली पीनेसे स्तनोंमें दूध बढ़ जाता है। यह रसायन है।

(६) कमलगट्टोंका पिसा-छना चूर्ण दूध और दहीके साथ खाने से स्तनोंमें खूब दूध आता है।

(७) केवल विदारीकन्दका स्वरस पीनेसे स्तनोंमें खूब दूध आता है।

(८) दूधमें सफेद ज़ीरा मिलाकर पीनेसे स्तनोंमें खूब दूध आता है। कहा है:—

अक्षीरा स्त्री पिबेज्जीर सक्षीरं सा पयस्विनी ॥

बिना दूधवाली स्त्री अगर दूधमें ज़ीरा पीवे तो दूध वाली हो जाय।

(९) शतावरको दूधमें पीसकर पीनेसे स्तनोंमें दूध बढ़ता है।

(१०) गरम दूधके साथ पीपरोंका पिसा-छना चूर्ण पीनेसे स्तनोंमें दूध बढ़ता है।

(११) बनकपासकी जड़ और ईखकी जड़—दोनों बराबर-बराबर लेकर काँजीमें पीस लो। इसमेंसे ६ माशे दवा खानेसे स्तनों में दूध बढ़ता है।

(१२) हल्दी, दारुहल्दी, इन्द्र जौ, मुलेठी और चकवड़—इन पाँचोंको मिलाकर दो या अढ़ाई तोले लेकर काढ़ा बनाने और पीने से स्तनोंमें दूध बढ़ जाता है।

(१३) बच, अतीस, मोथा, देवदारु, सोंठ, शतावर और अनन्त-मूल—इन सातोंको मिलाकर कुल दो या अढ़ाई तोले लो और काढ़ा बनाकर स्त्रीको पिलाओ। इस नुसख़ेसे स्तनोंमें दूध बढ़ जाता है।

(१४) सफेद ज़ीरा दो तोले, इलायचीके बीज एक तोले, मग़ज़ खीरेका बीस दाना और मग़ज़कद्दू बीस दाना—इन सबको पीस-कूटकर छान लो। इस दवाके सेवन करनेसे स्तनोंमें दूध बढ़ता और शुद्ध—निर्दोष होता है।

सेवन-विधि—अगर जाड़ेका मौसम हो, तो एक-एक मात्रामें पिसी मिश्री मिलाकर स्त्रीको फँकाओ और ऊपरसे बकरीका दूध पिला दो। अगर मौसम गरमीका हो तो इस दवाको सिलपर घोट-पीस-कर पानीमें छान लो, पीछे शर्बत नीलोफर मिलाकर पिला दो। केवल शर्बत नीलोफर पिलानेसे ही दूध बढ़ जाता है।

नोट—नं० १, ६, ७, ८, ६ और १० के नुसखे परीक्षित हैं नं० ११, १२, और १३ भी अच्छे हैं।

ऋतुका रुधिर अधिक बहना बन्द करनेके उपाय।

जब रजोधर्मके दिनोंको छोड़कर, स्त्रीकी योनिसे खून गिरता है; यानी नियत दिनोंको छोड़कर, पीछे भी खून गिरता है, तो बोल-चालकी भाषामें उसे "पैर पड़ने या पैर जारी होने"का रोग कहते हैं। हकीम लोग इस रोगको "इस्तख़ासा" कहते हैं। हमारे यहाँ इस रोगका वही इलाज है, जो प्रदर रोगका है। फिर भी हम नीचे चन्द ग़रीबी नुसख़े

ऐसे खूनको बन्द करनेके लिए लिखते हैं। अगर योनिसे खून गिरता हो, तो नीचेके नुसख़ोंमें से किसी एकसे काम लोः—

(१) छातियोंके नीचे सींगी लगाओ।

(२) बकायनकी कोपलोंका एक तोले स्वरस पीओ।

(३) कपासके फूलोंकी राख हथेली-भर, नित्य, शीतल जलके साथ फाँको।

(४) कुड़े की छाल सात माशे कूट-छान कर और थोड़ी चीनी मिलाकर पानी के साथ फाँको।

(५) मसूर, अरहर और उड़द—तीनों दो तोले और साँठी चाँवल एक तोले—चारोंको जला कर राख करलो। इसमेंसे हथेली-भर राख सवेरे शाम फाँकनेसे योनिसे खून बहना, पैर चलना या पैर जारी होना बन्द हो जाता है।

(६) जले हुए चने, तज और लोध—बराबर-बराबर लेकर पीस लो और फिर सबकी बराबर चीनी मिलादो। इसमेंसे हथेली हथेली भर फाँको।

(७) राल को महीन पीस कर और उसमें बराबर की शक्कर मिला कर फाँको।

(८) छोटी दुद्धी को कूट छान कर रखलो और हर सवेरे उसमें से हथेली भर फाँको।

(९) असगन्ध को कूट-पीस और छान कर रखलो। फिर उस में बराबर की मिश्री पीसकर मिला दो। उसमें से एक तोले दवा शीतल जलके साथ रोज़ फाँको।

(१०) बबूलका गोंद भून लो। फिर उसमें बराबरका गेरू मिला दो और पीस लो। उसमें से ७॥ माशे दवा हर सवेरे फाँको।

(११) हारसिंगार की कोंपलें जल के साथ सिल पर पीस कर, भाँगकी तरह पानीमें छान कर पीलो।

(१२) मुल्तानी मिट्टी पानीमें भिगो दो। फिर उसका नितरा हुआ पानी दिनमें कई बार पीओ।

(१३) सूखा और पुराना धनिया एक हथेली भर औटा लो और छानकर पीलो।

(१४) कचनार की कली, हरा गूलर, खुरफेका साग, मसूरकी दाल और पटसनके फूल—इन सबको पकाकर लाल चाँवलोंके भातके साथ खाओ।

(१५) अनार की छाल औटाकर एक तोले भर पीओ।

(१६) गधेकी लीद सुखा कर और पोटली में बाँधकर योनि में रखो।

(१७) छै माशे गेरू और ६ माशे सेलखड़ी एकत्र पीस कर पानी के साथ फाँको।

(१८) छै माशे मालतीके फूल और ६ माशे शक्कर मिलाकर फाँको।

(१९) बैंगन की कोंपलें पानी में घोट छान कर पीओ।

(२०) शुद्ध शंख ज़ीरा और मिश्री बराबर-बराबर लेकर पीस छानलो। इसमेंसे ६ माशे रोज़ खाने से खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२१) सूखी बकरी की मैंगनी पीसकर और पोटली में रख कर उस पोटली को गर्भाशय के मुख के पास रखो। अगर इसमें थोड़ा सा "कुन्दर" भी मिला दो तो और भी अच्छा।

(२२) सात हारसिंगार की कोंपलें और सात काली मिर्च पानी में पीस-छान कर पीलो।

(२३) भुना जीरा और कच्चा जीरा लेकर और लाल चाँवलों के बीचमें पीसकर भगमें रखो। इससे फौरन खून बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२४) रसौत १ माशे, राल १ माशे, बबूल का गोंद १ माशे और सुपारी २॥ माशे,—इनको सिलपर पानी के साथ पीसकर एक-

एक माशे की टिकियाँ बनालो। इनमें से २।३ टिकियाँ खानेसे खून बन्द हो जाता है।

(२५) गाय केपाँच सेर दूधमें एक पाव चिकनी सुपारी पीसकर मिलादो और औटाओ। जब औट जाय, उसमें आधसेर चीनी डाल दो और चाशनी करो। फिर छोटी माई ५२॥ माशे, बड़ी माई ५२॥ माशे, पकी सुपारीके फूल १०५ माशे, धायके फूल १०५ माशे और ढाक का गोंद १० तोले— इन सबको महीन पीस कर कपड़-छन करलो। जब चाशनी शीतल होने लगे, इस छने चूर्ण को उसमें मिला दो और चूल्हेसे उतारकर साफ़ बर्तनमें रख दो। मात्रा २० माशे से ६० माशे तक। इस सुपारी-पाक के खाने से योनिसे नदीके समान बहता हुआ खून भी बन्द हो जाता है।

नरकी जननेन्द्रियाँ ।

पुरुष और स्त्रीके जो अङ्ग सन्तान पैदा करनेके काममें आते हैं, उन्हें "जननेन्द्रियाँ" कहते हैं। जैसे, लिंग और भग।

पुरुष और स्त्री दोनोंकी जननेन्द्रियाँ एक तरहकी नहीं होतीं। उनमें बड़ा भेद है। दोनों ही की जननेन्द्रियाँ दो-दो तरहकी होती हैं:—(१) बाहरसे दीखनेवाली और (२) बाहरसे न दीखनेवाली।

बाहरसे दीखनेवाली जननेन्द्रियाँ ।

पुरुषका शिश्न या लिंग और अण्डकोषमें लटके हुए अण्ड—ये बाहरसे दीखनेवाली पुरुषकी जननेन्द्रियाँ हैं। पुरुषकी तरह स्त्री की भग बाहरसे दीखनेवाली जननेन्द्रिय है। भगकी नाक, भगके होठ और योनिद्वार प्रभृति भी भगके हिस्से हैं। ये भी बाहरसे दीखते हैं।

भीतरी जननेन्द्रियाँ ।

पुरुष और स्त्री दोनोंकी भीतरी जननेन्द्रियाँ वस्तिगह्वर या पेड़ू की पोलमें रहती हैं, इसीसे दीखती नहीं। शुक्राशय, शुक्रप्रणाली, प्रोस्टेट और शिश्नमूल ग्रन्थि—ये पुरुषके पेड़ूकी पोलमें रहनेवाली भीतरी जननेन्द्रियाँ हैं। इसी तरह डिम्बग्रन्थि, डिम्ब प्रनाली, गर्भाशय और योनि—ये स्त्रीके पेड़ूकी पोलमें रहनेवाली जननेन्द्रियाँ हैं।

शिश्न या लिङ्ग।

शिश्न या लिङ्ग मर्दके शरीरका एक अङ्ग है। इसीमें होकर मूत्र मूत्राशयसे बाहर आता है और इसीसे पुरुष स्त्रीसे मैथुन करता है। जब लिङ्ग ढीला, शिथिल या सोया रहता है, तब वह तीन या चार इञ्च लम्बा होता है। जब पुरुष स्त्रीको देखता, छूता या आलिङ्गन करता है, तब उसे हर्ष होता है। उस समय उसकी लम्बाई बढ़ जाती है और वह पहलेसे खूब कड़ा भी हो जाता है। अगर इस समय वह सख़्त न हो जाय, तो योनिके भीतर जा ही न सके। जिन पुरुषोंका लिङ्ग हस्तमैथुन आदि कुकर्मोंसे ढीला हो जाता है, वह मैथुन कर नहीं सकते। मैथुनके लिये लिङ्गके सख़्त होनेकी ज़रूरत है।

शिश्न-मणि।

लिङ्गके अगले भागको मणि या सुपारी अथवा शिश्नमुण्ड—लिङ्गका सिर कहते हैं। इसमें एक छेद होता है। उस छेदमें होकर ही मूत्र और वीर्य बाहर निकलते हैं। इस सुपारीके ऊपर चमड़ी होती है, जिसे सुपारीका घूँघट भी कहते है। यह हटाने से ऊपरको हट-जाती और फिर खींचने से सुपारीको ढक लेती है। जब यह चमड़ी या घूँघटकी खाल तङ्ग होती है, तब हटानेसे नही हटती; यानी घूँघट बड़ी मुश्किलसे खुलती है। मैथुनके समय इसके हट जानेकी जरूरत रहती है। अगर इसके विना हटे मैथुन किया जाता है, तो पुरुषको बड़ी तकलीफ होती है और मैथुन-कर्म भी अच्छी तरह नही होता। इसीसे बहुतसे आदमी तङ्ग आकर, इसे मुसलमानोंकी तरह कटवा डालते हैं। कटवा देनेसे कोई हानि नहीं होती। मुसलमानोंमें तो इसका दस्तूर ही हो गया। बाज़-बाज़ औक़ात छोटे-छोटे बालकोंकी यह चमड़ी अगर तङ्ग होती है, तो उन्हें बड़ा कष्ट होता है। जब उनकी पालने

वाली सफाई करनेके लिये इस घूँघटको खोलती है, तब वे रोते-चीखते हैं और कभी-कभी पेशाब करते समय किच्छते और चिल्लाते हैं।

इस मणि या सुपारीके पीछे गोल और कुछ गहरी-सी जगह होती है। वहाँ एक प्रकारकी बदबूदार चिकनी चीज़ जमा हो जाती है। यह चीज़ वहीं बनती रहती है। जब यह ज़ियादा बनती है या सुपारी बहुत दिनों तक धोई नहीं जाती, तब यह बहुत इकट्ठी हो जाती है और वहाँसे चलकर सुपारीपर भी आ जाती है। जो मूर्ख लिङ्गको रोज़ नहीं धोते, उनकी सुपारी या उसकी गर्दनमें इस चिकने पदार्थ से फुन्सियाँ हो जाती हैं। बहुत बार लिंगार्श या उपदंश रोग भी हो जाता है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

हस्ताभिघातान्नखदन्तघातादधावनादत्युपसेवनाद्वा ।
योनिप्रदोषाच्चभवन्ति शिश्ने पञ्चोपदंशा विविधोपचारैः ॥

हाथकी चोट लगने, नाखून या दाँतोंसे घाव हो जाने, लिंगको न धोने, पशु प्रभृतिके साथ मैथुन करने और बाल वाली या रोगवाली स्त्रीसे मैथुन करने से पाँच तरहका उपदंश या गरमी रोग हो जाता है। लिंगार्श होने से सुपारीके नीचे मुर्गे की चोटीके समान फुन्सियाँ हो जाती हैं।

शिश्न-शरीर।

सुपारी और लिंगकी जड़के बीचमें जो लिंगका हिस्सा है, उसे लिंगका शरीर कहते हैं। लिंगका कुछ भाग फोतों या अण्ड-कोषों के नीचे ढका रहता है। इसे ही लिंगकी जड़ या शिश्नमूल कहते हैं। लिंगका पिछला हिस्सा मूत्राशय या वस्तिसे मिला रहता है।

मूत्राशयके नीचले भागसे लेकर सुपारीके सूराख़ तक पेशाव वहनेके लिये एक लम्बी राह बनी हुई है। इसे मूत्र-मार्ग कहते हैं। पेशाव आनेका एक द्वार भीतर और एक बाहर होता है। जिस जगहसे मूत्रमार्ग शुरू होता है, उसे ही भीतरका मूत्रद्वार कहते है और सुपारी के छेदको बाहरका मूत्रद्वार कहते हैं। पुरुषके मूत्र-मार्गकी लम्बाई ७।८ इंच और स्त्रीके मूत्रमार्गकी लम्बाई डेढ़ इंच होती है। भीतरी मूत्रद्वारके नीचे प्रोस्टेट नामकी एक ग्रन्थि रहती है। मूत्रमार्गका एक इंच हिस्सा इसी ग्रन्थिमें रहता है।

अण्डकोष या फोते।

लिंगके नीचे एक थैली रहती है, उसे ही अण्डकोष कहते हैं। संस्कृतमें उसे वृष्ण कहते हैं। फोतोंकी चमड़ीके नीचे वसा नहीं होती, पर मांसकी एक तह होती है। जब यह मांस सुकड़ जाता है, तब यह थैली छोटी हो जाती है और जब फैल जाता है, तब बड़ी हो जाती है। सर्दीके प्रभावसे यह मांस सुकड़ता और गर्मीसे फैलता है। बुढ़ापेमें मांसके कमज़ोर होनेसे यह थैली ढीली हो जाती और लटकी रहती है।

इस अण्डकोष या थैलीके भीतर दो अण्ड या गोलियाँ रहती हैं। दाहिनी तरफ़वालेको दाहिना अण्ड और बाईं तरफवालेको बाँयाँ अण्ड कहते हैं। अण्डकोष या अण्डोंकी थैलीके भीतर एक पर्दा रहता है, उसीसे वह दो भागोंमें बँटा रहता है। उस पर्देका बाहरी चिह्न वह सेवनी है, जो अण्डकोषकी थैलीके बीचमें दीखती है। यह सेवनी पीछेकी तरफ मलद्वार या गुदा और आगेकी तरफ लिंग की सुपारी तक रहती है।

इस अण्डकोषके भीतर दो कड़ीसी गोलियाँ होती हैं, इन्हें "अण्ड" कहते हैं। ये दोनों अण्ड जिस चमड़ेकी थैलीमें रहते हैं, उसे "अण्ड-कोष" कहते हैं। इन अण्डोंके ऊपर एक झिल्ली रहती है। इस झिल्ली

की दो तह होती हैं। जब इन दोनों तहोंके बीचमें पानी-जैसा पतला पदार्थ जमा हो जाता है; तब अण्ड बड़े मालूम होते हैं। उस समय "जलदोष" हो गया है या पानी भर गया है, ऐसा कहते हैं।

इस अंडको "शुक्र-ग्रन्थि" भी कहते हैं। इसमें दो-तीन सौ छोटे-छोटे कोठे होते है। इन कोठोमें बाल-जैसी पतली आठ नौ सौ नलियाँ रहती है। ये नलियाँ वहुत ही मुड़ी हुई रहती हैं और पीछेकी तरफ जाकर एक दूसरेसे मिलकर जाल सा बना देती हैं। इस जालमें से बीस या पच्चीस वड़ी नलियाँ निकलती हैं और आगे चलकर इन सबके मिलनेसे एक वड़ी नली बन जाती है। इसीको "शुक्र प्रनाली" कहते है। शुक्र-ग्रन्थिकी नलियाँ वास्तवमें छोटी-छोटी नलीके आकार की ग्रन्थियाँ है। इन्हींमें वीर्य बनता है। इस वीर्य या शुक्रके मुख्य अवयव शुक्रकीट या शुक्राणु हैं।

अंडकोषको टटोलनेसे, ऊपरके हिस्सेमें, एक रस्सी सी मालूम होती है, इसी रस्सीमें वँधे हुए अण्ड अण्डकोषमें लटके रहते हैं। इस रस्सीको अण्डधारक रस्सी कहते है। यह पेट तक चली जाती है। कभी-कभी उसी राहसे अंत्र या आँतोंका कुछ भाग अंडकोष में चला आता है, तव फोते वढ़ जाते हैं। उस समय "अंत्रवृद्धि" रोग हो गया है, ऐसा कहते है।

शुक्राशय ।

लिख आये है, कि अण्ड या शुक्र-ग्रन्थिमें शुक्र या वीर्य बनता है। यही शुक्र शुक्र-प्रणाली द्वारा शुक्राशयमें आकर जमा होता है। फिर मैथुनके समय, यह शुक्राशयसे निकलकर, मूत्रमार्गमें जा पहुँचता और वहाँसे सुपारीके छेदमें होकर योनिमें जा गिरता है। यह शुक्राशय भी वस्तिगह्वर या पेड़ूकी पोलमें, मूत्राशयसे लगा रहता है। शुक्राशयकी दो थैली होती हैं। इनके पीछे ही मलाशय है।

शुक्र या वीर्य ।

शुक्र या वीर्य दूधके से रंगका गाढ़ा-गाढ़ा लसदार पदार्थ होता है। उसमें एक तरहकी गन्ध आया करती है। अगर वह कपड़ेपर लग जाता है, तो वहाँ हलके पीले रंगका दाग़ हो जाता है। अगर वही कपड़ा आगके सामने रखा जाता या तपाया जाता है, तो उस दाग़का रंग गहरा हो जाता है। वीर्यसे तर कपड़ा सूखनेपर सख़्त हो जाता है।

वीर्य पानीसे भारी होता है। एक बार मैथुन करनेसे आधेसे सवा तोले तक वीर्य निकलता है। वीर्यके सौ भागोंमें ९० भाग जल, १ भाग सोडियम नमक, १ भाग दूसरी तरहके नमकोंका, ३ भाग खटिक प्रभृति पदार्थोंका और पाँच भाग एक तरहके सेलोंके होते हैं, जिन्हें शुक्राणु या शुक्रकीट कहते हैं।

शुक्राणु या शुक्रकीट ।

अगर कोई ताज़ा वीर्यको खुर्दबीन शीशेमें देखे, तो उसे उसमें बड़ी तेज़ीसे दौड़ते हुए कीड़े दीखेंगे। इन्हीको शुक्राणु, शुक्रकीट या सेल कहते हैं। सन्तान इन्हींसे होती है। जिनके शुक्रमें शुक्रकीट नहीं होते, जिनकी शुक्रग्रन्थियोंसे ये नहीं बनते, वे पुरुष सन्तान पैदा कर नही सकते। हाँ, बिना इनके कदाचित मैथुन कर सकते है। एक बारके निकले हुए वीर्यमें ये कीड़े एक करोड़ अस्सी लाखसे लगाकर बाईस करोड़ साठ लाख तक होते हैं। अगर आप वीर्यको एक काँचके गिलासमें रख दें, तो कुछ देरमें दो तहें हो जायँगी। ऊपरकी तह पतली और दहीके तोड़-जैसी होगी, पर नीचेकी गाढ़ी और दूधके रंगकी होगी। सारे शुक्रकीट नीचे बैठ जाते हैं, इसीसे नीचेकी तह गाढ़ी होती है। नीचेकी तह जितनी ही गहरी और गाढ़ी होगी, उसमें उतने ही शुक्रकीट अधिक होंगे।

शुक्रकीटकी लम्बाई एक इंचके हज़ारवें भाग या पाँचसौवें भाग के जितनी होती है। इस कीड़ेका अगला भाग मोटा और अण्डेकी सी शकलका होता है तथा पिछला भाग पतला और नोकदार होता है। अगले भागको सिर, सिरके पीछेके दबे हुए भागको गर्दन, बीचके भागको शरीर और शरीरके अन्तिम भागको दुम या पूँछ कहते हैं। शुक्रकीट या वीर्यके कीड़े वीर्यके तरल भागमें तैरा करते हैं। कमज़ोर कीड़े धीरे-धीरे और ताक़तवर तेज़ीसे दौड़ते फिरते हैं। इनकी दुम पानीमें तैरते हुए या ज़मीनपर रेंगते हुए साँपकी तरह हरकत करती जान पड़ती है।

शुक्रकीट कब बनने लगते हैं।

शुक्रकीट चौदह या पन्द्रह बरसकी उम्रमें बनने लगते हैं, परन्तु इस समयके शुक्रकीट बलवान सन्तान पैदा करने योग्य नहीं होते। अच्छे शुक्रकीट बीस या पच्चीस सालकी उम्रमें बनते हैं। अतः जो लोग छोटी उम्रमें ही मैथुन करने लगते हैं, उनकी अपनी वृद्धि रुक जाती है और जो सन्तान पैदा होती है, वह निर्बल और अल्पायु होती है। इसलिये २०। २५ वर्षकी उम्रसे पहले स्त्री-प्रसंग न करना चाहिये।

शुक्रग्रन्थियोंमे शुक्रकीट तो बनते ही हैं। इनके सिवा एक और बड़ा काम होता है—एक और कामकी चीज़ बनती है। यद्यपि सन्तान पैदा करनेके लिये उसकी ज़रूरत नहीं होती, पर वह खूनमें मिलकर शरीरके भिन्न भिन्न अङ्गोंमें पहुँचती और उन्हें बलवान करती है। हर पुरुषको शरीर बढ़नेके समय इसकी दरकार होती है। अगर हम किसीके अण्डोंको जवानी आनेसे पहले ही निकाल दें, तो वह अच्छी तरह न बढ़ेगा। उसके डाढ़ी मूँछ वग़ैरः जवानीके चिह्न अच्छी तरह न निकलेंगे। बैल और साँडका फ़र्क़ सभी जानते हैं। जब बछड़े के अण्ड निकाल लेते हैं, तब वह बैल बन जाता है। बैल न तो

सन्तान पैदा कर सकता है और न वह साँडके समान बलवान ही होता है। वही बछड़ा अराड रहनेसे साँड बन जाता है और खूब पराक्रम दिखाता है; अतः सब अङ्गोंके पके पहले, इन शुक्र-ग्रन्थियो—अराडोंसे शुक्र बनानेका काम लेना, अपनी और औलादकी हानि करना है। इसलिये २५ सालसे पहले मैथुन द्वारा या और तरह वीर्य निकालना परम हानिकर है। इसीसे सुश्रुतने २४ वर्षके पुरुष और सोलह सालकी स्त्रीको विवाह करके गर्भाधान करनेकी आज्ञा दी है, पर आजकल तो १३।१४ सालका लड़का बहूके पास भेज दिया जाता है! उसीका नतीजा है, कि हिन्दू क़ौम आज सबसे कमज़ोर और सबसे मार खाने वाली मशहूर है।

नारीकी जननेन्द्रियाँ।

जिस तरह मर्दके लिङ्ग और अराडकोष होते हैं; उसी तरह स्त्रीके भग और उसके दूसरे हिस्से होते हैं। भग, भगनासा, भगके होठ और योनिद्वार ये बाहरसे दीखते हैं। वस्तिगह्वर या पेडूकी पोलमें डिम्बग्रन्थि, डिम्बप्रनाली, गर्भाशय और योनि—ये होते हैं। ये बाहरसे नहीं दीखते।

भग।

भगके बीचों-बीचमें एक दराज़-सी होती है। उसके दोनों ओर चमड़ीके झोलसे बने हुए दो कपाट या किवाड़से होते हैं। चमड़ीके नीचे बसा होनेकी वजहसे वे उभरे होते हैं। अगर ये दोनों कपाट हटाये जाते हैं, तो भीतर दो पतले-पतले कपाट और दीखते हैं। इस

तरह बड़े और छोटे दो कपाट होते हैं। इनको बड़े और छोटे भगोष्ठ या भगके होंठ भी कहते हैं।

अगर हम अंगुलीसे दोनों भगोष्ठोंको हटावें, तो दरार या फाँकमें दो सूराख़ नज़र आवेंगे। इनमेंसे एक सूराख बड़ा और दूसरा छोटा होता है। बड़ा सूराख योनिकी राह है। इसीको योनिद्वार या योनि का दरवाजा भी कहते हैं। मैथुनके समय पुरुषका लिङ्ग इसी छेदमें होकर भीतर जाता है। इसीमें होकर, मासिक धर्मके समय, रज बह-बहकर बाहर आता है और इसी राहसे बालक बाहर निकलता है। इस छेदसे कोई आधा इञ्च ऊपर दूसरा छेद होता है। यह मूत्र-मार्गका छेद और उसका बाहरी द्वार है। पेशाब इसीमें होकर बाहर आता है।

जिन स्त्रियोंका पुरुषोंसे समागम नहीं होता, उनके योनिद्वारपर चमड़ेका पतला पर्दा पड़ा रहता है। इस पर्देमें भी एक छेद होता है। इस छेदमें होकर रजोधर्मका रज या खून बाहर आया करता है। जब पहले-पहल मैथुन किया जाता है, तब लिङ्गके ज़ोरसे यह पर्दा फट जाता है। उस समय स्त्रीको कुछ तकलीफ होती है और थोड़ा-सा खून भी निकलता है। किसी-किसीका यह पर्दा बहुत पतला और छेद चौड़ा होता है। इस दशामें मैथुन करने पर भी चमड़ा नहीं फटता और लिङ्ग भीतर चला जाता है। जब तक यह पर्दा मौजूद रहता है और उसका छेद बड़ा नहीं होता, तब तक यह समझा जाता है, कि स्त्रीका पुरुषसे समागम नहीं हुआ। इस पर्देको योनिच्छद योनिका ढकना कहते हैं।

बड़े भगोष्ठ ऊपर जाकर एक दूसरेसे मिल जाते हैं। जहाँ वे मिलते हैं, वह स्थान कुछ ऊँचा या उभरा सा होता है। इसे "कामाद्रि" कहते हैं। जवानी आनेपर यहाँ बाल उग आते हैं।

कामाद्रिके नीचे और दोनों बड़े होठोंके बीचमें और पेशाबके

बाहरी छेदके ऊपर एक छोटा अंकुर होता है। इसे भगनासा या भगकी नाक कहते हैं। जिस तरह मर्दके लिंग होता है, उसी तरह स्त्रीके यह होता है। लिंग बड़ा होता है और यह छोटा होता है। जब मैथुन किया जाता है, तब इसमें खून भर आता है, इसलिये लिंग की तरह यह भी कड़ा हो जाता है। इसमें लिंगकी रगड़ लगनेसे बेतहाशा आनन्द आता है। जब मैथुन हो चुकता है तब खून लौट जाता है, इसलिये यह भी लिंगकी तरह ढीला हो जाता है।

डिम्ब-ग्रन्थियाँ।

जिस तरह मर्दके दो अंड या शुक्र-ग्रन्थियाँ होती हैं; उसी तरह स्त्रीके भी ऐसे ही दो अंग होते हैं। इनमें डिम्ब बनते हैं, इसलिये इन्हें डिम्ब-ग्रन्थियाँ कहते हैं। स्त्रीके डिम्ब और शुक्राणुके मिलनेसे ही गर्भ रहता है। ये डिम्बग्रन्थियाँ वस्ति-गह्वर या पेडूकी पोलमें रहती हैं। एक ग्रन्थि गर्भाशयकी दाहिनी ओर और दूसरी बांई ओर रहती है। दोनों ग्रन्थियोंमें अन्दाज़न बहत्तर हज़ार डिम्ब-कोष होते हैं और हरेक कोषमें एक-एक डिम्ब रहता है। डिम्ब-ग्रन्थियोंके भीतर छोटी-बड़ी थैलियाँ होती हैं, उन्हींको डिम्बकोष कहते हैं।

गर्भाशय।

यह वह अंग है जिसमें गर्भ रहता है। यह वस्तिगह्वर या पेडूकी पोलमें रहता है। इसके सामने मूत्राशय और पीछे मलाशय रहता है। गर्भाशयके दोनों बगल, कुछ दूरीपर डिम्ब-ग्रन्थियाँ होती हैं। गर्भाशयका आकार कुछ-कुछ नाशपातीके जैसा होता है, परन्तु स्थूल भाग चपटा होता है। गर्भाशयकी लम्बाई ३ इंच, चौड़ाई २ इंच और मुटाई १ इंच होती है। वज़नमें यह अढ़ाईसे साढ़े तीन तोले तक होता है।

गर्भाशयका ऊपरी भाग मोटा और नीचेका भाग, जो योनिसे जुड़ा रहता है, पतला होता है। नीचेके भागमें एक छेद होता है,

इसे गर्भाशयका बाहरी मुँह कहते हैं। इसे अँगुलीसे छू सकते हैं।

गर्भाशय भीतरसे पोला होता है। उसके अन्दर बहुत जगह नहीं होती, क्योंकि अगली-पिछली दीवारें मिली रहती हैं। गर्भ रह जाने पर गर्भाशयकी जगह बढ़ने लगती है।

गर्भाशयके ऊपरी भागमें, दाहिनी-बाँईं ओर डिम्बप्रणालियोंके मुख होते हैं। जिस तरह डिम्ब-ग्रन्थियाँ दो होती हैं; उसी तरह डिम्ब-प्रणाली भी दो होती हैं। एक दाहिनी ओर और दूसरी बाईं ओर। ये दोनों प्रनालियाँ या नालियाँ गर्भाशयसे आरम्भ होकर डिम्ब-ग्रन्थियो तक जाती हैं। जब डिम्बग्रन्थियोंसे कोई डिम्ब निकलता है, तब वह डिम्ब-प्रनाली झालरके सहारे डिम्ब-प्रनालीके छेद तक और वहाँसे गर्भाशय तक पहुँचता है।

योनि ।

योनि वह अङ्ग है, जिसमें होकर मासिक खून बाहर आता, मैथुन के समय लिंग अन्दर जाता और प्रसवकालमें बच्चा बाहर आता है। वास्तवमें, योनि भी एक नली है, जिसका ऊपरी सिरा पेड़ूमें रहता है और गर्भाशयकी गर्दनके नीचेके भागके चारो ओर लगा रहता है। गर्भाशयका बाहरी मुख इस नलीके अन्दर रहता है।

योनिकी लम्बाई तीन या चार इंच होती है और उसकी दीवारें एक दूसरेसे मिली रहती हैं। इसीसे कोई चीज या कीड़ा-मकोड़ा आसानीसे अन्दर जा नहीं सकता। योनिकी लम्बाई-चौड़ाई दबाव पड़नेपर ज़ियादा हो सकती है। द्वारके पाससे योनि तंग होती है, बीचमें चौड़ी होती है और गर्भाशयके पास जाकर फिर तंग हो जाती है। योनिके द्वारपर योनि-संकोचनी पेशियाँ होती हैं, जो उसे सुकेड़ती हैं। योनिकी दीवारोंपर एक बड़ा शिराजाल या नस-जाल है, जो मैथुनके समय खूनसे भर जाता है। इसीके कारणसे मैथुनके समय योनिकी दीवारें पहलेसे मोटी हो जाती हैं।

स्तन।

स्त्रीके स्तन या दुग्ध-ग्रन्थियाँ भी होती हैं। स्तनोंकी बौंटनियों या घुण्डियोंमें १२ से २० तक छेद होते हैं। कुमारियोंके स्तन छोटे होते हैं। ज्यो-ज्यों कन्या जवान होती है, उसकी जननेन्द्रियाँ बढ़ती हैं। जवानी आनेपर स्तन भी बढ़ते हैं और भगके ऊपर बाल भी आते हैं। जब स्त्री गर्भवती होती है और बालकको दूध पिलाती है, तब ये स्तन बड़े हो जाते हैं। जिसने गर्भ धारण न किया हो, उस स्त्रीका स्तनमण्डल हल्का गुलाबी होता है। गर्भके दूसरे मासमें स्तनमण्डल बड़ा और उसका रंग गहरा हो जाता है। अन्तमें वह काला हो जाता है। जब स्त्री दूध पिलाना बन्द करती है, तब स्तन-मण्डलका रंग फिर हल्का पड़ने लगता है; परन्तु उतना हल्का नहीं होता, जितना कि गर्भवती होनेके पहले था।

आर्त्तव-सम्बन्धी जानने योग्य बातें।

जब कन्या जवान होने लगती है, तब उसकी योनिसे एक तरह का लाल पतला पदार्थ हर महीने निकला करता है। इसीको रजोधर्म या रजस्वला होना कहते है। रजोदर्शनके साथ ही जवानी के और चिह्न भी प्रकट होते हैं—स्तन बढ़ते हैं और भगके ऊपर बाल आते हैं।

आर्त्तव खून-मिला हुआ स्राव है, जो गर्भाशयसे निकल कर आता है। इस खूनमें श्लेष्मा मिली रहती है, इसीसे यह जल्दी जम नही सकता। सब स्त्रियोंके समान आर्त्तव नहीं होता। यह एक से तीन या चार छटाँक तक होता है।

आर्त्तव निकलनेके दो-चार दिन पहलेसे जब तक वह निकलता रहता है, स्त्रियोंको आलस्य और भोजनसे अरुचि होती है।

कमर, कूल्हों और पेड़ूमें भारीपन होता है। बाज़ी स्त्रियोंका मिज़ाज चिड़चिड़ा हो जाता है। जो अमीरीकी वजहसे मोटी हो जाती हैं, जिनको क़ब्ज और अजीर्ण रहता है, जो जोश दिलानेवाली पुस्तकें—लण्डन रहस्य या छवीली भटियारी प्रभृति पढ़ती हैं या ऐसी बातें सुनती और करती हैं, उनके पेड़ू, कमर और कूल्होंमें बड़ी वेदना होती और उनके हाथ पैर टूटा करते हैं।

इस गरम देशकी स्त्रियोको बारह या चौदह सालकी उम्रमें रजोधर्म होने लगता है। किसी-किसीको बारह वर्षके पहले ही होने लगता है। यूरोप आदि शीतप्रधान देशोकी स्त्रियोंको चौदह पन्द्रह सालकी उम्रमें रजोदर्शन होता है। जिन घरोंकी लड़कियाँ खाती तो बढ़ियाँ-बढ़ियाँ माल हैं और काम करती हैं कम तथा जो पतिसंग या विवाह-शादीकी बातें बहुत करती रहती हैं, उन्हे रजोदर्शन जल्दी होता है। ग़रीब घरोकी कमज़ोर और रोगीली लड़कियोंको रजो-दर्शन देरमें होता है।

बारह या चौदह सालकी उम्रसे रजोधर्म होने लगता और ४५ या ५० सालकी उम्र तक होता रहता है। जब गर्भ रह जाता है, तब रजोधर्म नही होता। जब तक स्त्री गर्भवती रहती है, रजोधर्म बन्द रहता है। जो स्त्रियाँ अपने बच्चोको दूध पिलाती है, वे बच्चा जननेके कई महीनों तक भी रजस्वला नही होतीं। ४५ और ४६ सालके दरम्यान रजोधर्म होना स्वभावसे ही बन्द हो जाता है। जब तक स्त्री रजस्वला होती रहती है, उसे गर्भ रह सकता है। कभी-कभी रजोदर्शन होनेके पहले और रजोदर्शन बन्द होनेके बाद भी गर्भ रह जाता है।

आर्त्तव निकलनेके दिनोंमें स्त्रीकी बाक़ी जननेन्द्रियोंमें भी कुछ फेरफार होता रहता है। डिम्बग्रन्थि, डिम्बप्रनालियाँ और योनि अधिक रक्तमय हो जाती हैं और उनका रङ्ग गहरा हो जाता है। गर्भाशय भी कुछ बढ़ जाता है।

दो आर्त्तव या मासिक धर्मोंके बीचमें २८ दिनका अन्तर रहता है। किसी-किसीको एक या दो दिन कम या जियादा लगते हैं। बहुधा तीन या चार दिन तक रजःस्राव होता है। किसी-किसीको एक दिन और किसीको ज़ियादा-से-ज़ियादा छै दिन लगते हैं। छै दिनोंसे अधिक रजःस्राव होना या महीनेमें दो बार होना रोग है। इस दशा में इलाज करना चाहिये।

मैथुन।

मैथुन, केवल सन्तान पैदा करनेके लिये है, पर विधाताने इसमें एक अनिर्वचनीय आनन्द रख दिया है। इससे हर प्राणी इसे करना चाहता है और इस तरह जगदीशकी सृष्टि चलती रहती है।

मैथुन करने से पुरुषका शुक्र या वीर्य स्त्रीकी योनिमें पहुँचता है। जब ठीक विधिसे मैथुन किया जाता है, तब लिंगकी सुपारी योनिकी दीवारोंसे रगड़ खाती है। इस रगड़का असर नाड़ियों द्वारा मस्तिष्क तक पहुँचता है। इस समय स्त्री और पुरुष दोनोंको बड़ा आनन्द आता है।

योनिकी दीवारें एक श्लेष्मय रससे भीगी रहती हैं। बहुतसे अनजान इसे स्त्रीका वीर्य समझ लेते हैं। पर इस तर पदार्थमें सन्तान पैदा करनेकी सामर्थ्य नहीं होती। यह ख़ाली योनिकी दीवारोंको गीली रखता है, जिससे लिंगकी रगड़से योनिकी श्लेष्मिक कलाको नुक़सान न पहुँचे।

जब सुपारी गर्भाशयके मुँहसे मिल जाती है, तब स्त्रीको बहुत ही ज़ियादा आनन्द आता है। अगर सुपारी या शिश्नमुण्ड गर्भाशय के पास न पहुँचे या उससे रगड़ न खाय, तो मैथुन व्यर्थ है। स्त्रीको ज़रा भी आनन्द नहीं आता। जब सुपारी और गर्भाशयके मुख मिलते हैं, तब वीर्य बड़े ज़ोरसे निकलता और गर्भाशयके मुँहके

पास ही योनिमे गिरता है। गर्भाशयका स्वभाव वीर्यको चूसना है, अतः वह अनेक बार उसे फौरन ही चूस लेता है। वीर्य निकल चुकते ही मैथुन-कर्म ख़तम हो जाता है। वीर्य निकलते ही खून लौट जाता है, इसलिये लिंग शिथिल हो जाता है। बहुत मैथुन हानि-कारक है। अत्यधिक मैथुनसे स्त्री-पुरुष दोनो ही यक्ष्मा या राजरोग प्रभृति प्राणनाशक रोगोंके शिकार हो जाते हैं।

गर्भाधान।

जब पुरुषका वीर्य स्त्रीके गर्भाशयमें जाता है, तब उसमें शुक्र-कीट भी होते हैं। शुक्रकीटोका डिम्बोसे अधिक अनुराग होता है; अतः जिस डिम्ब प्रणालीमें डिम्ब होता है, उसीमें शुक्रकीट घुसते हैं। मतलब यह है कि, शुक्रकीट धीरे-धीरे गर्भाशयसे डिम्ब-प्रणालीमें जा पहुँचते हैं। गर्भ रहनेके लिये शुक्रकीटकी ही ज़रूरत होती है। वीर्यके साथ शुक्रकीट तो बहुत जाते हैं, पर इनमें जो शुक्रकीट ज़बरदस्त होता है, वही डिम्बके अन्दर घुस पाता है।

बहुतसे अनजान समझते हैं कि, गर्भाशयमे अधिक वीर्यके जाने से गर्भ रहता है। यह बात नही है। गर्भके लिये एक शुक्रकीट ही काफी होता है। इसलिये अगर ज़रासा वीर्य भी गर्भाशयमें रह जाता है तो गर्भ रह जाता है. योनि. गर्भाशय और डिम्ब-प्रणालीमें शुक्रकीट कई दिनोंतक जीते रहते हैं; अतः जिस दिन मैथुन किया जाय उसी दिन गर्भ रह जाय, यह बात नही है। शुक्रकीटोंके जीते रहनेसे मैथुन के कई दिन बाद भी गर्भ रह सकता है।

असलमें शुक्राणु और डिम्बके मिलनेको गर्भाधान कहते हैं; यानी इन दोनोंके मिलनेसे गर्भ रहता है। जब एक शुक्राणु या शुक्रके कीड़ेका एक ही डिम्बसे मेल होता है, तब एक ही गर्भ रहता और एक ही बच्चा पैदा होता है। जब कभी दो शुक्रकीटों का दो डिम्बोंसे मेल हो जाता है, तब दो गर्भ पैदा होते हैं। इस

दशामें स्त्री एक साथ या थोड़ी देरके अन्तरसे दो बच्चे जनती है कभी-कभी दो शुक्रकीटोंका एक डिम्बसे मेल हो जाता है, तब जो बालक पैदा होता है, उसके आपसमें जुड़े हुए दो शरीर होते हैं। ऐसे बालक बहुधा बहुत दिन नहीं जीते।

शुक्रकीट और डिम्बका संयोग बहुधा डिम्बप्रणालीमें होता है, पर कभी-कभी गर्भाशयमें भी हो जाता है। इन दोनोंके मेलको ही गर्भाधान होना कहते हैं और इन दोनोंके मेलसे जो चीज़ बनती है, उसे ही गर्भ कहते हैं।

नाल क्या चीज़ है?

भ्रूण, गर्भ या बच्चा गर्भाशयकी दीवारसे एक रस्सी द्वारा लटका रहता है। इस रस्सीको ही नाल या नाभिनाल कहते हैं। क्योंकि नाल एक तरफ भ्रूण या बच्चेकी नाभिसे लगा रहता है और दूसरी ओर गर्भाशय-कमलसे। नाभिनाल उतना ही लम्बा होता है, जितना कि भ्रूण या बच्चा। कभी-कभी यह बहुत लम्बा या छोटा भी होता है।

कमल किसे कहते हैं?

उस स्थानको जिससे भ्रूण नाल द्वारा लटका रहता है, "कमल" कहते हैं। कमल सामान्यतः गर्भाशयके गात्रमें या तो ऊपरकी ओर या उसकी अगली-पिछली दीवारोंमें बनता है। कभी-कभी यह गर्भाशयके भीतरी मुखके पास भी बन जाता है, यह अच्छा नहीं। इससे बच्चा जनते समय अधिक खून जानेसे जच्चाकी जान जोखिम में रहती है। यह कमल तीसरे महीनेमें अच्छी तरह बन जाता है। कमलके ये काम हैं—

(१) कमल भ्रूणको धारण करता और इसके द्वारा भ्रूण माता के शरीरसे जुड़ा रहता है।

(२) कमल द्वारा ही भ्रूणका पोषण होता है।

कमलसे ही भ्रूणके साँस लेनेका काम होता है।

(३) कमल ही भ्रूणके रक्त-शोधक यंत्रका काम करता है।

जिस तरह बच्चेका पोषण कमलके द्वारा होता है, उसी तरह उसके श्वासोच्छ्वासका काम भी कमल द्वारा ही होता है।

गर्भका वृद्धि क्रम।

तीन चार सप्ताहके गर्भकी लम्बाई तिहाई इञ्च और भार सवासे डेढ़ माशे तक होता है। परिमाण चीटीके समान होता है। मुखके स्थानपर एक दरार और नेत्रोंकी जगह दो काले तिल होते हैं।

छै सप्ताहका गर्भ—इसकी लम्बाई आधा इंचसे एक इंच तक और बोझ तीनसे ५ माशे तक होता है। सिर और छाती अलग-अलग दीखते हैं। चेहरा भी साफ दीखता है। नाक, आँख, कान और मुँहके छेद बन जाते तथा हाथोंमें उँगलियाँ निकल आती हैं। कमल बनना भी आरम्भ हो जाता है।

दो मासका गर्भ—इसकी लम्बाई डेढ़ इंचके क़रीब और भार आठसे बीस माशे तक। नाक, होठ और आँखें दीखती हैं; परन्तु भ्रूण लड़का है या लड़की, यह नहीं मालूम होता। मलद्वार, फुफ्फुस, और प्लीहा आदि दीखते हैं।

तीन मासका गर्भ—इसकी लम्बाई टाँगोंको छोड़ कर दो-तीन इंच और भार अढ़ाई छटाँकके क़रीब होता है। सिर बहुत बड़ा होता है। अँगुलियाँ अलग-अलग दीखती हैं। भगनासा या शिश्न भी नज़र आते हैं, अतः कन्या है या पुत्र, इस बातके जाननेमें सन्देह नहीं रहता।

चार मासका गर्भ—इसकी लम्बाई साढ़े तीन इंचके क़रीब और टाँगोंको मिलाकर छै इंचके लगभग। सिरकी लम्बाई कुल शरीरकी लम्बाईसे चौथाई होती है। गर्भका लिंग साफ दीखता है। नाखुन बनने लगते हैं। कहीं-कहीं रोएँ दीखने लगते हैं और हाथ-पाँव कुछ-कुछ हरकत करने लगते हैं।

पाँच मासका गर्भ—सिरसे एड़ी तक दस इंचके क़रीब लम्बा और बोझमें आध सेर होता है। सारे शरीरपर बारीक बाल होते हैं। यकृत अच्छी तरह बन जाता है। आँतोंमें कुछ मल जमा होने लगता है। गर्भ कुछ हिलता-डोलता है। माताको उसका हरकत करना या हिलना-डोलना मालूम होने लगता है। नाखुन साफ दीखते हैं।

छै मासका गर्भ—इसकी लम्बाई सिरसे एड़ी तक १२ इंच और भार एक सेरके क़रीब होता है। सिरके बाल और स्थानोंकी अपेक्षा ज़ियादा लम्बे होते है। भौं और बरौनियाँ बनने लगती है।

सात मासका गर्भ—इसकी लम्बाई १४ इञ्च और भार डेढ़ सेरके लगभग। सिरपर कोई पाँच इञ्च लम्बे बाल होते है। आँतोंमें मल इकट्ठा हो जाता है। इस मासमें पैदा हुए बालकका अगर यत्नसे पोषण किया जाय, तो बच भी सकता है, पर ऐसे बालक बहुधा मर जाते हैं।

आठ मासका गर्भ—इसकी लम्बाई १६।१७ इञ्च और भार दो सेरके क़रीब होता है। इस मासमें पैदा हुआ बच्चा, अगर सावधानी से पालन किया जाय, तो जी सकता है।

नौ मासका गर्भ—इसकी लम्बाई १८ इञ्च तक और भार सवा दो सेरसे अढ़ाई सेर तक होता है। इस मासमें अण्ड बहुधा अण्डकोष में पहुँच जाते हैं।

दस मासका गर्भ—इसकी लम्बाई २० इञ्चके लगभग और वज़न सवा तीनसे साढ़े तीन सेरके क़रीब होता है। शरीर पूरा बन जाता है। हाथोंकी अँगुलियोके नाखुन पोरुओंसे अलग दीखते हैं। पैरकी उँगलियोके नख पोरुओ तक रहते है; आगे नहीं बढ़े रहते। टटरीके बाल १ इञ्च लम्बे होते हैं। अगर बालक जीता हुआ पैदा होता है, तो वह ज़ोरसे चिल्लाता है और यदि उसके होठोमें कोई चीज़ दी जाती है, तो वह उसे चूसनेकी चेष्टा करता है।

गर्भ गर्भाशयमें किस तरह रहता है ?

पहलेके महीनोंमें जब भ्रूण छोटा होता है, उसका सिर ऊपर और धड़ नीचे रहता है; पर पीछेके महीनेंमें सिर नीचे और चूतड़ ऊपर हो जाते हैं। ९६ फी सदी भ्रूण इसी तरह रहते हैं; यानी सिर नीचे और चूतड़ ऊपर रहते हैं। योनिसे पहिले सिर निकलता है और पीछे चूतड़ निकलते हैं। लेकिन जब सिर ऊपर और चूतड़ नीचे होते हैं, तब बालक चूतड़के बल होता है। कभी-कभी कन्धे, पैर या हाथ भी पहिले निकल आते हैं। सिरके बल होना, सबसे उत्तम और सुखदाई है।

बच्चा जननेमें किन स्त्रियोंको कम और किनको ज़ियादा पीड़ा होती है ?

बच्चा जनने वालीको जच्चा या प्रसूता कहते है। भ्रूण या बच्चेका शरीरसे निकलकर बाहर आना "प्रसव" या "जनना" कहलाता है। बच्चा जननेमें कमोबेश पीड़ा सभीको होती है। पर नीचे लिखी स्त्रियों को पीड़ा कम होती है:—

(१) जो स्त्रियाँ मज़बूत होती हैं।

(२) जो मिहनत करती हैं।

(३) जो शान्त-स्वभाव होती हैं।

(४) जिनका वस्तिगह्वर विशाल होता है और जिनके वस्तिगह्वर की हड्डियाँ ठीक तौरसे बनी होती हैं।

देखा है, दिहातियोंकी हृष्ट-पुष्ट स्त्रियाँ बच्चा जननेके दिन तक खेतपर जातीं, वहाँ काम करतीं और सिरपर घासका बोझा लाद कर घर वापस आती हैं। राहमें ही बच्चा हो पड़ता है, तो वे उसे अकेली ही जनकर, लहँगेमें रखकर, घर चली आती हैं। उन्हे विशेष

पीड़ा नहीं होती; लेकिन अमीरोंकी स्त्रियाँ अथवा नीचे लिखी स्त्रियाँ बच्चा जननेमें बड़ी तकलीफ सहती हैं:—

(१) जो दुर्बल या नाज़ुक होती हैं।

(२) जो कम उम्रमें बच्चा जनती हैं।

(३) जो अधिक अमीर होती हैं।

(४) जो किसी भी तरहकी मिहनत नहीं करतीं।

(५) जिनका वस्तिगह्वर अच्छी तरह बना हुआ नहीं होता, जिनका वस्तिगह्वर विशाल—लम्बा-चौड़ा न होकर तंग होता है और जिनके वस्तिगह्वरकी हड्डियाँ किसी रोगसे मुड़ जाती हैं।

(६) जो ईश्वरीय नियमों या क़ानून-कुदरतके खिलाफ़ काम करती हैं।

(७) जिनका स्वभाव चंचल होता है।

(८) जो बच्चा जननेसे डरती हैं।

बच्चा जननेके समय स्त्रीके दर्द क्यों चलते हैं ?

बच्चा जननेका समय नज़दीक होनेपर, स्त्रीके गर्भाशयका मांस सुकड़ने लगता है, पर वह एक-दमसे नहीं सुकड़ जाता, धीरे-धीरे सुकड़ता है। इसी सुकड़नेसे लहरोंके साथ दर्द या वेदना होती है। मांसके सुकड़नेसे गर्भाशयकी भीतरी जगह कम होने लगती है और जगहकी कमी एवं गर्भाशयकी दीवारोंके दबावसे गर्भाशय के भीतरकी चीजें—बच्चा और जेरनाल वगैरः बाहर निकलना चाहते हैं।

इतनी तंग जगहोंमें से बच्चा आसानीसे कैसे निकल आता है ?

जब बच्चा होनेवाला होता है, तब गर्भके पानीसे भरी हुई पोटली सी गर्भाशयके मुँहमें आकर अड़ जाती है। इससे गर्भाशयका मुँह चौड़ा हो जाता है और बालकके सिर निकलने लायक़ जगह

हो जाती है। जब बच्चेका सिर गर्भाशयके मुँहमें आ पड़ता है, तब उसके आगे जो पानीकी पोटली होती है, वह भारी दबाव पड़नेसे फट जाती और गर्भका जल बह-बह कर योनिके बाहर आने लगता है। इस जल-भरी पोटलीके फूटनेके साथ ज़रा सा खून भी दिखाई देता है। गर्भ-जलसे योनि और भग खूब तर हो जाते हैं और इसी वजहसे बच्चा सहजमें फिसल आता है।

बाहर आते ही बच्चा क्यों रोता है ?

ज्योंही बच्चा योनिके बाहर आता है, वह जोरसे चिल्लाता है। यह चिल्लाकर रोना मुफीद है, इससे वह श्वास लेता और हवा पहली ही बार उसके फुफ्फुसोंमें घुसती है। अगर बालक होते ही नहीं रोता, तो उसके जीनेमें सन्देह हो जाता है; यानी वह मर जाता है। अगर पेटसे मरा बालक निकलता है, तो वह नहीं रोता।

अपरा या जेरनालके देरसे निकलनेमें हानि ?

अगर बच्चा बाहर आनेके एक घण्टेके अन्दर अपरा या जेरनाल वगैरः बाहर न आ जावें, तो ख़राबीका ख़ौफ है। इन्हें दाईको फौरन निकालनेके उपाय करने चाहिएँ। बच्चा होनेके बाद पेटसे एक लोथड़ा सा और निकलता है, उसीको अपरा या जेरनाल कहते हैं।

प्रसूताके लिये हिदायत।

जब बच्चा और बच्चेके बाद अपरा या जेरनाल गर्भाशयसे निकल आते हैं, तब गर्भाशय अपनी पहली ही हालतमें होने लगता है। यहाँ तक कि चौदह या पन्द्रह दिनोंमें वह इतना छोटा हो जाता है कि, वस्तिगह्वर या पेडूमें घुस जाता है। जब तक गर्भाशय पेडूमें न घुस जाय, प्रसूताको चलने-फिरने और मिहनत करनेसे बचना चाहिये। चालीस या बयालीस दिनमें गर्भाशय ठीक अपनी असली हालतमें हो जाता है, तब फिर किसी बातका भय नहीं रहता।

बालक होनेके बारह या चौदह दिनों तक योनिसे थोड़ा-थोड़ा पतला पदार्थ गिरा करता है। इसमें ज़ियादा हिस्सा खूनका होता है। पहले खून निकलता है, पर पीछे वह कम होने लगता है। तीन चार दिन बाद भूँदरा-भूँदरा पानीसा गिरता है। एक हफ्ते बाद वह स्राव पीला हो जाता है। इस स्रावमें खूनके सिवा और भी अनेक चीजें होती हैं। इसमें एक तरहकी बू भी आया करती है। यदि भीतर से आनेवाले पदार्थमें बदबू हो या उसका निकलना कम पड़ जाय या वह क़तई बन्द हो जाय, तो ग़फ़लत छोड़कर इलाज करना चाहिये।

धन्यवाद! इस छोटेसे लेखके लिखनेमें हमें "हमारी शरीर रचना" नामकी पुस्तक और डाकृर कार्त्तिक चन्द्रदत्त महोदय एल० एम० एस० भूतपूर्व सिविल सर्जन हैदराबाद, दकन, से बहुत सहायता मिली है, अतः हम उक्त पुस्तकके लेखक महोदय और डाकृर साहब मज़कूर को अशेष धन्यवाद देते हैं। डाकृर त्रिलोकीनाथ जीको हम विशेष रूपसे धन्यवाद इसलिए देते हैं, कि हम उनके ऋणी सबसे अधिक हैं। हमने इस खण्डमे स्त्री रोगोकी चिकित्सा लिखी है। उसका अधिक सम्बन्ध नरनारीकी जननेन्द्रियोसे है, इसलिए हमें शरीरके इन अंगोके सम्बन्धमें कुछ लिखना जरूरी था। यह मसाला हमे उक्त ग्रन्थमे अच्छा मिला, इसीसे हम लोभ संवरण न कर सके।

झाँई और नीलिका वगैरःकी चिकित्सा।

जो लोग ज़ियादा शोच-फ़िक्र-चिन्ता या क्रोध करते हैं, अपने बलसे अधिक परिश्रम या मिहनत करते हैं, हर समय किसी-न-किसी चिन्ताजनक ख़यालमें ग़लताँ-पेचाँ रहते हैं, उनके चेहरोंपर कम उम्रमें ही काले, लाल या सफेद दाग़ अथवा चकत्तेसे हो जाते हैं। उनके सुन्दर और दर्शनीय चेहरेपर असुन्दर और अदर्शनीय हो जाते हैं।

आयुर्वेदग्रन्थोंमें लिखा है—क्रोध और परिश्रमसे कुपित हुआ वायु, पित्तसे मिलकर, मुखपर आकर, वेदना-रहित सूक्ष्म और काला सा चकत्ता मुँहपर कर देता है। उसे ही व्यंग और झांईं कहते हैं। किसी ने लिखा है, वात और पित्त सुर्ख़ रंगके दाग़ कर देते हैं, उन्हें ही झाँईं कहते हैं। किसीने लिखा है, शरीरपर बड़ा या छोटा, काला या सफेद, वेदनारहित जो मण्डलाकार दाग़ हो जाता है, उसे "न्यच्छ" कहते हैं। सुर्ख़ दाग़को व्यंग या झाँईं और नीलेको नीलिका या नीली झाँईं कहते हैं।

हिकमतमें लिखा है,—तिल्ली, जिगर या पेटके फसादसे, धूप और गरम हवामें फिरनेसे तथा शोच-फ़िक्र और ग़म करने एवं अत्यन्त स्त्री प्रसंग करनेसे आदमीका चेहरा स्याह, मैला बदरूप और दाग़ धब्बेवाला हो जाता है; अतः धूप, गरम हवा, चिन्ता और स्त्री-प्रसंग को त्यागकर तिल्ली और जिगर प्रभृतिकी दवा करनी चाहिये और मुँहपर कोई अच्छा उबटन मलना चाहिये।

चिकित्सा।

(१) अर्जुन वृक्षकी छाल और सफेद घोड़ेके खुरकी मषी—इन दोनोंका लेप झाँईको नाश करता है।

(२) आकके दूधमें हल्दी पीसकर लगानेसे नयी क्या—पुरानी झाँई भी चली जाती है। परीक्षित है।

(३) तेलकी, २१ दिन तक प्रतिमर्षण नस्य देनेसे, गालों पर उठी हुई फुन्सियाँ इस तरह नष्ट हो जाती हैं, जिस तरह धर्म-सेवन से पाप।

(४) केशर, चन्दन, तमालपत्र, ख़स, कमल, नीलकमल, गोरोचन, हल्दी, दारूहल्दी, मँजीठ, मुलहटी, सारिवा, लोध, पतंग, कूट, गेरू, नागकेशर, स्वर्णक्षीरी, प्रियंगू, अगर और लालचन्दन—इन २१ चीज़ोंको एक-एक तोले लेकर, पानीके साथ, सिलपर महीन पीस कर, लुगदी या कल्क बना लो। फिर काली तिलीके एक सेर तेलमें ऊपरकी लुगदी और चार सेर पानी मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय (पर तेल न जले) उतारकर छान लो और बोतलमें भरकर रख दो।

इस तेलको राजरानियों या धनी मनुष्योंको मुखपर लगाना चाहिये। मुहासे, व्यङ्ग, नीलिका, झाँई, दुश्छवि—सूरत बिगड़ना और विवर्णता—मुँहका रङ्ग बिगड़ जाना आदि चेहरेके रोग नष्ट होकर, चेहरा अतीव मनोहर और मुख-कमल केशरके समान कान्तिमान हो जाता है। जिन लोगोंके चेहरे ख़राब हो रहे हों, वे इस तेलको बनाकर अवश्य लगावें। इस तेलसे उनका चेहरा सचमुच ही मनोहर हो जायगा। परीक्षित है।

(५) चेहरे पर ख़रगोशका खून लगानेसे व्यङ्ग और झाँई नाश हो जाती हैं।

(६) मँजीठको शहदमें मिलाकर लेप करनेसे झाँई अवश्य नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(७) बड़के अङ्कुर और मसूर—इन दोनोंको गायके दूधमें पीस कर लगाने या लेप करनेसे झाँईं नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(८) वरनाकी छाल बकरीके दूधमें पीसकर लेप करनेसे झाँईं आराम हो जाती है।

नोट—वरनाको हिन्दीमें वरना और बरुए तथा बँगलामें बरुए गाछ कहते हैं। यह वातपित्त नाशक है।

(९) जायफल पानीमें घिसकर लगानेसे झाँईं चली जाती है।

(१०) बादामकी मींगी पानमें घिसकर मुखपर लेप करनेसे झाँईं चली जाती है।

(११) मसूरकी दालको दूधमें पीस लो। फिर उसमें जरा-सा कपूर और घी मिला दो। इस लेपसे झाँईं या नीली झाँईं नाश होकर चेहरा कमलके जैसा मनोहर हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) एक तरबूज़में छोटासा छेद करलो और उसमें पाव भर चाँवल भर दो। इसके बाद उस छेदका मुख उसी तरबूज़के टुकड़ेसे बन्द करके, सात दिन तक, तरबूज़को रखा रहने दो। आठवें दिन, चाँवलोंको निकालकर सुखा लो। ऐसे चाँवलोंको महीन पीसकर, उबटनकी तरह, नित्य, मुखपर लगानेसे झाँईं आदि नाश हो जाते हैं।

(१३) आमकी बिजली और जामुनकी गुठली लगानेसे झाँईं नाश हो जाती है।

(१४) नाजबोंकी पत्ती और तुलसीकी पत्ती दोनोंको पीसकर मुख पर मलनेसे झाँईं या काले दाग़ नष्ट हो जाते हैं।

(१५) पहले कितने ही दिनों तक, कुलीजन पानीमें पीस-पीस कर झाँईं या काले दाग़ों पर लगाओ। इससे चमड़ेके भीतरकी स्याही नष्ट हो जायगी। इसके कुछ दिन लगाने बाद, चाँवलोंको पानीमें महीन पीसकर उन्हीं दाग़ोंके स्थानों पर लेप कर दो। इनसे चमड़ेका रङ्ग एकसा हो जायगा।

(१६) चौलाईकी जड़ और डाली लाकर जला लो। इस राख को पानीमें पीसकर झाँई पर मलो और आध घण्टे तक धूपमें बैठो। जब लेप सूख जाय, उसे गरम पानीसे धो डालो। इसके बाद लाहौरी नमक पीसकर मुख पर मलो। इन उपायोंसे झाँई या काले दाग़ नष्ट हो जायँगे।

(१७) तुलसीकी सूखी पत्तियाँ पानीमें पीसकर मुखपर मलनेसे काले दाग़ नष्ट हो जाते हैं।

(१८) कलमी शोरा और हरताल चार-चार माशे लाकर पीस लो। फिर उस चूर्णके तीन भाग कर लो। एक भागको पानीमें पीसकर मुख पर मलो। आध घण्टे तक धूपमें बैठो और फिर गरम जलसे धोलो। दूसरे दिन फिर इसी तरह करो। तीन दिनमें झाँई या दाग़ों का नाम भी न रहेगा।

(१९) करञ्जवे की गरी गायके दूधमें पीसकर लेप करो, इससे चेहरा बुर्राक चमकीला हो जायगा।

(२०) नीमके बीज सिरके में पीसकर मलनेसे झाँई नाश हो जाती है।

(२१) अंजरूत १ तोले और सफेद कत्था ६ माशे—दोनों को गायके ताज़ा दूधमें पीसकर, दिनमें कई बार मलनेसे झाँईं खूब जल्दी आराम हो जाती है।

(२२) कबूतरकी बीट पानीमें पीसकर, हर रोज़, दिनमें कई बार मलनेसे झाँईं नष्ट हो जाती है।

(२३) मसूरकी दाल नीबूके रसमें पीसकर लगानेसे झाँईं नाश हो जाती है।

(२४) हल्दी और काले तिल भैसके दूधमें पीसकर लगानेसे छीप नष्ट हो जाती है।

(२५) चीनियाके फूल, छाल और पत्ते—पानीमें पीसकर लगानेसे छीप नाश हो जाती है।

(२६) चीनियाके फूल नीबूके रसमें पीसकर लगानेसे छीप चली जाती है ।

(२७) सुहागा और चन्दन पानीमें पीसकर लगानेसे छीप चली जाती है ।

(२८) पँवारके बीजोंको अधकुचले करके, दहीके पानीमें मिला दो और तीन दिन रखे रहने दो; फिर इस पानीको बदनपर मलकर नहा डालो; छीप नष्ट हो जायगी ।

(२९) कलमलीके बीज दूधमें पीसकर, उबटनकी तरह मलनेसे चेहरा साफ हो जाता है ।

(३०) चिड़ियाकी बीट सुखाकर और पीसकर मुँहपर मलनेसे चेहरा सुन्दर हो जाता है ।

(३१) पीली सरसों एक पावको दूधमें डालकर औटाओ । जब जलते-जलते दूध जल जाय, सरसोंको निकालकर सुखा दो । फिर रोज इसमेंसे थोड़ी सी सरसों लेकर, महीन पीसकर उबटन बना लो और मुखपर मलो । चेहरा चमक उठेगा ।

(३२) चाँवल, जौ, चना, मसूर और मटर—इन सबको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो । फिर इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा चून नित्य लेकर, उबटन सा बना लो और मुखपर मलो । चेहरा एकदम मनोहर हो जायगा ।

नोट—चाँवल, जौ, चना, मसूर और मटरमेंसे प्रत्येक मुँहको साफ कर सकते हैं । अगर किसी एकका भी उबटन बनाया जाय तो भी लाभ होगा । चेहरा साफ हो जायगा ।

(३३) समग़ अरबी, कतीरा और निशास्ता,—इनको पीसकर रख लो नित्य ईसबगोल के लुआबमें इस चूर्णको मिलाकर, सफरमें मुँहपर मलो । राह चलनेके समय जो चेहरेपर स्याही आ जाती है, वह न आवेगी । चेहरा साफ बना रहेगा ।

(३४) नारियलके भीतरका एक पूरा गोला लेकर, उसमें

चाकूसे छेद कर लो। फिर २० माशे केशर और २० माशे जवासा, पानीमें पीसकर, उस गोलेमें भर दो और उसीके टुकड़ेसे उसका मुँह बन्द कर दो। इसके बाद एक बर्तनमें आठ सेर गायका दूध भर कर, उसमें वह गोला रख दो और दूधके बर्तनको चूल्हेपर चढ़ाकर मन्दी-मन्दी आगसे औटने दो। जब दूध जलकर सूख जाय, गोले या खोपरेको निकाल लो। फिर इस खोपरेमेंसे दवाको निकाल कर पीस लो और चने-समान गोलियाँ बनाकर, छायामें सुखा कर रख लो। इसमेंसे एक गोली नित्य पानमें रख कर खानेसे चेहरा खूबसूरत हो जाता है। ख़ासकर स्त्रियोंको तो यह नुसख़ा परी ही बना देता है।

(३५) बंगभस्म और लाखका रस—महातर, इन दोनोंको मिलाकर लेप करनेसे झाँईं नष्ट हो जाती है।

(३६) मँजीठ, लोध, लाल चन्दन, मसूर, फूल प्रियंगू, कूट और बड़की कोपल—इन सबको पीस कर उबटनकी तरह मुँह पर मलनेसे छायी और झाँईं आदि नाश होकर चेहरा साफ और सुन्दर हो जाता है।

(३७) गोंद, कतीरा और निशास्ता—ईसबगोलके पानी या लुआबमें पीस कर मुँह पर मलनेसे मुँहका रंग साफ-उजला हो जाता है।

नोट—चेहरा सुन्दर बनाने वालेको गरम हवा, धूप, स्त्री-प्रसंग और सोच-फिक्रको, कम-से-कम कुछ दिनोंको त्याग देना चाहिये, क्योंकि बहुत करके इन कारणोंसे ही चेहरा कुरूप हो जाता है; अतः कारणोंके त्यागे बिना, कोरा उबटन या लेप करनेसे क्या होगा ?

(३८) चौकिया सुहागा ३ तोले, केशर ३ तोले, शुद्ध सिंगरफ ३ तोले, शुद्ध मैनसिल ३ तोले और मुर्दासंग ६ तोले—इन सबको खरलमें डालकर पाँच दिन बराबर घोटो, इसके बाद रख लो। इसमें से थोड़ी-थोड़ी दवा तिलीके तेलमें मिला कर, शरीर पर मलनेसे

सेंहुआ, दाद और मुँहकी झाँई—ये सब रोग नाश हो जाते हैं। यह दवा राजाओंके लायक़ है।

मुहासोंकी चिकित्सा ।

वात, कफ और खूनके कोपसे, जवानीमें मुँह पर जो सेमलके काँटोंके समान फुन्सियाँ होती हैं, उन्हें बोलचालकी ज़बानमें "मुहासे" और संस्कृतमें "मुखदूषिका" कहते हैं। इनसे खूबसूरत चेहरा बदसूरत दीखने लगता है। बहुत लोग इस रोगकी दवा तलाश किया करते हैं, अतः हम नीचे मुहासे-नाशक दवाएँ लिखते हैं:—

"तिब्बे अकबरी" और "इलाजुलगुर्बा" आदि हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है:—

(१) सरकी फस्द खोलो।

(२) जुलाब देकर, शीतल दवाओंका लेप करो।

आयुर्वेद-ग्रन्थोंमें लिखा है:—

मुहासे, न्यच्छ, व्यंग और नीलिका इनको नीचेके उपायोंसे दूर करो:—

(१) शिरावेधन करो—फस्द खोलो।

(२) लेप और अभ्यञ्जनादिसे काम लो।

मुहासे नाशक नुसखे ।

(१) अमलताशके वृक्षकी छाल, अनारकी छाल, लोध, आमाहल्दी और नागरमोथा,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर इसे पानीमें मिलाकर, नित्य, मुँह पर मला करो और सूखने पर धो डाला करो।

(२) बेरकी गुठलीकी मींगी, मुलहटी और कूट—इनको समान-समान लेकर, पानीमें महीन पीसो और मुँहपर नित्य मलो।

(३) जवासेका काढ़ा करके, उसीसे नित्य मुँह धोया करो।

(४) गायके दूधमें खुरफेके बीज पीस कर, उबटनकी तरह रोज़ मलो और पीछे मुँह धो लो।

(५) नरकचूर और समन्दर-झाग—दोनोंको पानीमें महीन पीस कर, उबटनकी तरह रोज़ लगाओ।

(६) थोड़ा सा कुचला पानीमें भिगो दो। २।३ घण्टे बाद मलकर पानी-पानी छान लो और कुचला फैंक दो। फिर, सफेद चिरमिटीकी गिरी और लाहौरी नोन समान-समान लेकर, कुचलेके पानीमें पीस कर मुहासोंपर लेप करो।

(७) केवल नरकचूर पानीमें पीसकर मुहासोपर लगाओ।

(८) नीबूके रसमें पीली कौड़ी पीसकर मिला दो। जब वह सूख जाय, फिर और कौड़ी पीसकर मिला दो। जब यह पिछली कौड़ी भी सूख जाय, इस मसालेको सवेरे-शाम मुँहपर मलो। मुँह साफ हो जायगा।

(९) सिरसकी छाल और काले तिल समान-समान लेकर, सिरके में पीसकर मुँहपर लेप करो।

(१०) कलौंजी सिरके में पीसकर, रातको मुँहपर लगाकर सो जाओ। सवेरे ही उठकर पानीसे धो डालो। इस उपायसे, कई दिनोंमें, मुहासे और मस्से दोनों नष्ट हो जायँगे।

(११) झड़बेरीके बेरोंकी राख कर लो। उस राखको पानीमें मिलाकर मुँहपर लेप करो।

(१२) मँजीठ, लालचन्दन, मसूर, लोध और लहसनकी कोंपल—इनको पानीके साथ महीन पीसकर, रातको मुहासोंपर लगा कर सो जाओ और सवेरे ही धो डालो।

(१३) लोध, धनिया और वच, इन तीनोंको पानीमें पीसकर मुहासोंपर लेप करो। परीक्षित है।

(१४) गोरोचन और काली मिर्चोंको पानीके साथ पीसकर मुहासोंपर लेप करो। परीक्षित है।

(१५) सरसों, वच, लोध और सेंधानोन—इनका लेप मुहासे नाश करनेमें अकसीर है।

(१६) वच, लोध, सोंठ, पीपर और काली मिर्च—इनको समान-समान लेकर पानीमें महीन पीसकर लेप करो। इससे मुहासे निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७) तिल, वालछड़, सोंठ, पीपर, काली मिर्च और सफेद ज़ीरा—इनको समान-समान लेकर और महीन पीसकर मुखपर लेप करनेसे मुहासे नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) सेमलके काँटोंको गायके दूधमें पीसकर लेप करनेसे मुहासे ३ दिनमें नष्ट हो जाते हैं।

नोट—वमन करानेसे भी लाभ देखा गया है।

(१९) लालचन्दन और केशरको पानीमें पीसकर लेप करनेसे मुहासे नष्ट हो जाते हैं।

नोट—पके हुए पिण्डालूका लेप करनेसे वातकी गाँठ नाश हो जाती है।

(२०) जायफल, लालचन्दन और कालीमिर्च—समान-समान लेकर, पानीमें पीसकर मुँहपर लेप करनेसे मुहासे नष्ट हो जाते हैं।

मस्से और तिलोंकी चिकित्सा ।

शरीरपर वेदना-रहित, सख्त उर्दके समान, काली और उठी हुई सी जो फुन्सी होती है, उसे संस्कृतमें "माष" और बोल-चालकी ज़बानमें "मस्सा" कहते हैं।

वात, पित्त और कफके योगसे, चमड़ेपर, जो काले तिलके जैसे दाग़ हो जाते हैं, उन्हें "तिलकालक" या "तिल" कहते हैं ।

चमड़ेसे ज़रा ऊँचा काला या लालसा दाग़ जो चमड़ेपर पड़ जाता है, उसे "जतुमणि" या "लहसन" कहते हैं ।

नोट—सामुद्रक शास्त्रमें तिल, मस्से और लहसनके शुभाशुभ लक्षण लिखे हैं । पुरुषके दाहने और स्त्रीके बायें अंगपर होनेसे ये शुभ और इसके विपरीत अशुभ समझे जाते हैं ।

चिकित्सा ।

(१) अगर इनको नष्ट करना हो, तो इनको तेज़ छुरी या नश्तर से छीलकर, इनको क्षार, तेज़ाब या आगपर तपाये लोहेसे जला दो; बस ये नष्ट हो जायँगे । पीछे कोई मरहम लगाकर घाव आराम कर लो ।

(२) शरीरमें जितने मस्से हों, उतनी ही काली मिर्च लेकर शनिवारको न्यौत दो । फिर रविवारके सवेरे ही उन्हें कपड़ेमें बाँधकर, राहमें छोड़ दो । मस्से नष्ट हो जायँगे ।

(३) मोरकी वीट सिरकेमें मिलाकर, मस्सोंपर लगानेसे मस्से नष्ट हो जाते हैं ।

(४) मस्सेको जंगली कण्डेसे खुजा लो और फिर उस जगह चूना और सज्जी पानीमें घोलकर मलो । तीन दिनमें मस्सा जाता रहेगा ।

(५) धनिया पीसकर लगानेसे मस्से और तिल नष्ट हो जाते हैं ।

(६) चुकन्दरके पत्ते शहदमें मिलाकर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं ।

(७) खुरफेकी पत्ती मस्सोंपर मलनेसे मस्से नष्ट हो जाते हैं ।

(८) सीपकी राख सिरकेमें मिलाकर मस्सोंपर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं ।

पलित रोग चिकित्सा ।

असमयमें बाल सफेद होनेका इलाज ।

शोक और परिश्रम आदिसे कुपित हुआ वायु शरीरकी गरमीको सिरमें ले जाता है; उधर मस्तकमें रहने वाला भ्राजक पित्त भी क्रोधसे कुपित हो जाता है। "प्रकुपित हुआ एक दोष दूसरे दोषको भी कुपित करता है," इस वचनके अनुसार, वात और पित्त कफको भी कुपित करते हैं। कुपित हुआ कफ बालोंको सफेद कर देता है। इस तरह इन तीनों दोषोंके कोपसे बाल सफेद हो जाते हैं। असमयमें बाल सफेद होने के रोगको "पलित रोग" कहते हैं।

चिकित्सा।

(१) आमले नग २, हरड़ नग २, बहेड़ा नग १, लोहचूर ६ तोले और आमकी मींगी ५ तोले—इन सबको लोहेके बर्तनमें महीन पीसकर, थोड़ा पानी मिला दो और रात भर खरलमें ही पड़ा रहने दो। दूसरे दिन इसका लेप बालोंपर करो। अकाल या जवानी में हुआ पलितरोग तत्काल आराम हो जायगा; यानी सफेद बाल काले हो जायँगे।

(२) भाँगरा, सफेद तिल, चीतेकी जड़ और माठा—इनको मिलाकर खानेसे पलित रोग नाश हो जाता है।

(३) आमले और लोहका चूर्ण दोनों पानीमें पीसकर लेप करने से पलित रोग नाश हो जाता है।

(४) भाँगरा, नीलके पत्ते और लोहभस्म,—इनको बराबर-

बराबर लेकर, बकरीके मूत्रमें पीसकर, लेप करनेसे सिरके बाल काले हो जाते हैं:—

अजामूत्रे भृगंराजं नीलीपत्रमयांरजः।
पिष्ट्वा सम्यक प्रलिम्पेद्वै केशाः स्युर्भ्रमरोपमाः॥

(५) हरड़, बहेड़ा, आमले, नीलके पत्ते, भाँगरा और लोहका चूर्ण—इनको भेड़के मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे बाल काले हो जाते हैं।

(६) कुँभेरकी जड़, पियाबाँसेकी जड़ या फूल, केतकीकी जड़, लोहेका चूरा, भाँगरा और त्रिफला—इन छहोका चार तोले कल्क तैयार करो, यानी इन सबको सिल पर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। उसमेंसे चार तोले लुगदी ले लो। काली तिलीके पाव भर तेलमें इस लुगदीको रख कर, ऊपरसे एक सेर पानी मिला दो और पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। फिर इस तेलको लोहेके बर्तनमें भरकर मुँह बन्द कर दो, और एक महीने तक जमीनमें गाड़ रखो। पीछे निकालकर बालोमें लगाओ। इस तेलसे काँसीके फूल-जैसे सफेद बाल भी काले हो जाते हैं। इसका नाम "केशरञ्जन तेल" है।

नोट—ऊपरकी छहों चीजोंका रस या मिली हुई लुगदी जितनी हो, उससे तेल चौगुना लेना चाहिये। यह और नं० १ नुसख़ा उत्तम नुसखे है।

(७) लोहेका चूर्ण, भाँगरा, त्रिफला, और काली मिट्टी—इन सबको एकत्र पीसकर, ईखके रसमे मिलाकर, एक महीने तक ज़मीनमें गाड़ रखो और फिर निकालकर लगाओ। इस तेलके लगानेसे जड़ समेत बाल काले हो जाते हैं।

(८) लोहचून, पानीमें पिसे हुए आमले और ओड़हलके फूल—इन सबको पानीमें मिलाकर, इस पानीसे जो सदा स्नान करता रहता है, उसे कदापि पलित रोग या बाल सफेद होनेकी बीमारी नहीं होती।

(९) नीमके बीजोंको भाँगरेके रसकी और विजयसारके रसकी भावना दो। फिर कोल्हूमें उन बीजोंका तेल निकलवा लो। इस तेलकी नस्य लेने और नित्य दूध भात खानेसे बाल जड़से काले हो जाते हैं।

नोट—भाँगरेके रसमें बीजोंको मसलकर भीगने दो और फिर सुखालो। दूसरे दिन विजयसारके रसमे भीगने दो और फिर मसलकर सुखालो। शेषमें कोल्हूमें तेल निकलवा लो। इस तेलको "निम्ब बीज तैल" कहते हैं।

(१०) केतकी, भाँगरा, नीलकी पत्ती, अर्जुनके फूल, अर्जुनके बीज, पियाबाँसा, तिल, पीपर, मैनफल. लोहेका चूर्ण, गिलोय, कमल, सारिवा, त्रिफला, पद्माख और कीचड़—इनको सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। इनकी जितनी लुगदी हो, उससे चौगुना तिलीका तेल लो। तेलसे चौगुना त्रिफलेका और भाँगरेका काढ़ा पकाकर रख लो। पीछे लुगदी, तेल और दोनों काढ़ोंको कड़ाहीमें पकाओ। तेल मात्र रहने पर उतार लो और छानकर बोतलमें भर दो। इस तेलसे बाल अञ्जनके जैसे काले हो जाते हैं और उपजिह्विक रोग भी नष्ट हो जाता है। इसका नाम "केतक्यादि तैल" है।

(११) कुम्भेर, अर्जुन, जामुन और पियाबाँसा—इन चारके फूल, आमकी गुठली, मैनफल और त्रिफला, इन सबको चार-चार तोले लेकर कल्क बनाओ, यानी पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदीको ३२ तोले तिलीके तेल, १२८ तोले दूध, १२८ तोले भाँगरेका रस और १२८ तोले महुएके फलोंके रसके साथ कड़ाहीमें रख, मन्दाग्निसे तेल पकालो। जब काढ़े और दूध जलकर तेलमात्र रह जाय, उतारकर मल-छान लो। इस तेलके बालोंमें लगानेसे बाल भौंरेके समान काले हो जाते हैं। इस तेलकी नास देनेसे भी एक महीनेमें कुन्द चन्द्रमा और शंखके समान बाल भी काले-स्याह हो जाते हैं। इसका नाम

"काश्मर्याद्य" तैल है। इसके लगानेवाला १०० बरस तक जीता है।

(१२) मुलेठीकी पिसी हुई लुगदी ४ तोले, गायका दूध १२८ तोले और भाँगरेका रस १२८ तोले तथा तेल १६ तोले—इन सब को कड़ाहीमें रखकर पकालो। तेल मात्र रहनेपर उतार लो। इस "मधुक तैल" की नाश देनेसे पलित रोग नष्ट हो जाता है।

(१३) पुण्डरिया, पीपर, मुलेठी, चन्दन और कमलको सिल पर एकत्र पीसकर लुगदी बना लो। लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना आमलोका रस—इन सबको कड़ाहीमें डाल, तेल पकालो। इस तेलकी नस्य और मालिशसे मस्तकके सारे सफेद बाल काले हो जाते हैं।

(१४) नील, केतकीकी जड़, केलेकी जड़, घमिरा, पियावांसा, अर्जुनके फूल, कसूमके बीज, काले तिल, तगर, कमलका सर्व्वाङ्ग, लोहचूर्ण, मालकाँगनी, अनारकी छाल, गिलोय और नीले कमल की जड़—ये सब दो-दो तोले, त्रिफला २० तोले, भाँगरेका रस अढ़ाई सेर, काली तिलीका तेल आध सेर, इन सबको एक लोहे के घड़ेमें भरकर, उसका मुँह बन्द करके कपड़-मिट्टी (ख़ाली मुख पर) कर दो और उसे जमीनके गड्ढेमें रखकर, उसके चारों ओर घोड़ेकी लीद भर दो। पीछे ऊपरसे मिट्टी डालकर गाड़ दो। चालीस रोज़ बाद, उसे निकालकर आगपर पकाओ। जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

हर चौथे दिन इसको बालोंपर लगाओ और चार घण्टे रहने दो। इसके बाद हरड़के पानीसे सिर धो डालो। इसके लगानेसे बाल काले रहेंगे। यह योग "सुश्रुत"का है इसे हमने २।३ बार आज़माया है, इसीसे लिखा है।

नोट—छै घण्टे पहले थोड़ीसी छोटी हरड कुचलकर पानीमें भिगो दो। यही हरड़का पानी है।

(१५) एक कड़ाहीमें गैंदेकी पंखड़ी काटकर डाल दो। ऊपर से एक सेर मीठा तेल भी मिला दो और औटाओ। जब पत्तियाँ गल जायँ, उतारकर, एक बर्तनमें मसाले समेत तेलको भर दो और मुँह बन्द करके, ज़मीनमें एक मास तक गाड़े रहो। फिर निकाल कर बालोपर मलो। इससे बाल काले हो जायँगे।

(१६) दो सेर झाऊकी जड़ कूटकर कड़ाहीमें रखो। उसमें दो सेर तिलीका तेल रख दो और चार सेर पानी भर दो। फिर इसे मन्दाग्निसे औटाओ, जब सारा पानी और आधा तेल जल जाय उतारकर रख लो। इसमें से गाढ़ी-गाढ़ी तेल-मिली दवा लेकर सिर में मलो। थोड़े दिनके मलनेसे ही बाल काले हो जायेंगे और फिर कभी सफेद न होंगे।

(१७) सौ मक्खियाँ तिलीके तेलमें डालकर चालीस दिन तक धूपमें रखो। फिर तेलको छानकर रख लो। इस तेलके नित्य लगानेसे बाल सदा काले रहेंगे।

इन्द्रलुप्त या गंजकी चिकित्सा।

निदान-कारण।

रोमोंकी जड़में रहनेवाला खून, पित्तके साथ कुपित हो कर, रोमोंको गिरा देता है, इसके बाद खूनके साथ कफ, रोम-कूपोंको रोक देता है, इससे फिर बाल पैदा नहीं होते। इस रोगको "इन्द्रलुप्त, खालित्य और रूज्या" कहते हैं। बोल-चालकी भाषामें "गंज या टाँक" कहते हैं।

स्त्रियोंको गंजरोग क्यों नहीं होता?

यह रोग स्त्रियोंको नहीं होता, क्योंकि उनका खून, रजोधर्म

होनेसे, हर महीने शुद्ध होता रहता है। इसी वजहसे उनके रोम-कूप या बालोंके छेद नहीं रुकते।

"तिब्बे अकबरी" में बालोंके उड़नेके सम्बन्धमें बहुत कुछ लिखा है। उसमेंसे दो चार कामकी बातें हम यहाँ पर लिखते हैं। गंज रोगमें सिरके बाल उड़ जाते हैं और कनपटियोंके रह जाते हैं। अगर यह हालत बुढ़ापेमें हो, तब तो इसका इलाज ही नहीं है। अगर जवानीमें हो, तो दवा करनेसे आराम हो सकता है। अगर सिर पर ज़ियादा बोझा उठानेसे बाल उड़ते हों, तो बोझा उठाना बन्द करना ज़रूरी है। शेख़ बूअली सेनाने अपनी किताब 'शिफा' में लिखा है, स्त्रियोंके सिरके बाल नहीं उड़ते, क्योंकि उनमें तरी ज़ियादा होती है और नपुंसकोंके भी नहीं उड़ते, क्योंकि उनकी प्रकृतिमें कुछ नपुंसकता होती है।

चिकित्सा।

(१) रोगीको स्निग्ध और खिन्न करके मस्तककी फस्द खोलो, यानी स्नेहन और स्वेदन क्रिया करके, सिरकी या सरेरूकी फस्द खोलो और मैनसिल, कसीस, नीलाथोथा और काली मिर्च—इन को बराबर-बराबर लेकर, पानीके साथ पीस कर, गंजकी जगह लेप करो।

नोट—यह नुसखा सुश्रुतके चिकित्सा-स्थानका है। वैद्यविनोद आदि ग्रन्थोंमें भी लिखा है।

(२) कुटकीको कड़वे परवलके पत्तोंके रसके साथ पीसकर, तीन दिन तक, लगानेसे पुराना गंज रोग भी आराम हो जाता है।

(३) कटेरीका रस शहदमें मिलाकर गञ्ज पर लगानेसे गञ्ज रोग नाश हो जाता है।

(४) हाथी-दाँतकी राखमें, बकरीका दूध और रसौत मिला

कर, गञ्ज पर लेप करनेसे मनुष्यके पैरोंके तलवोंमें भी बाल आ जाते हैं।

नोट—यह नुसखा "वैद्यविनोद" का है। इस नुसखेको जराजरा सा उलट फेर करके अनेक वैद्योंने लिखा है और बड़ी तारीफें की हैं। चिकित्साञ्जनमें लिखा है:—

हस्तिदन्तमसीतार्क्ष्यामिन्द्रलुप्ते प्रलेपनम् ।
प्राज्येन पयसा कुर्यात्सर्वथा तद्विनश्यति ॥

हाथीदाँतकी भस्म और रसौत दोनोको बराबर-बराबर लेकर, घी और दूधमें मिला लो। जिसके सिरके बाल गिरे जाते हों, उसके सिरमें इसका लेप करो। इस उपायके करनेसे गञ्ज रोग नाश हो जायगा और सिरके बाल फिर कभी न गिरेंगे। "भावमिश्रजी" ने भी इस नुसखेकी तारीफ की है।

(५) चमेलीके पत्ते, कनेर, चीता और करंज—इनको समान-समान लेकर, पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीके वजनसे चौगुना मीठा तेल लो और तेलसे चौगुना जल या बकरीका दूध लो। सबको मिलाकर, पकालो। तेल मात्र रहने पर उतार लो। इस तेलको सिर पर मलनेसे गञ्ज रोग नाश हो जाता है।

नोट—यह नुसखा हम "वैद्यविनोद" से लिख रहे हैं। वास्तवमें यह नुसखा "सुश्रुत" चिकित्सास्थानका है। वैद्यविनोदमें होनेसे, हमें विश्वास है, यह नुसखा और ऊपरका नं० ४ का नुसखा जरूर उत्तमहोगे। "भावप्रकाश" में भी यह मौजूद है। "वरना" और जियादा लिखा है।

(६) "भावप्रकाश" में लिखा है, कड़वे परवलोंके पत्तोंका स्वरस निकाल कर, गञ्ज पर मलनेसे, तीन दिनमें बहुत पुरानी गञ्ज भी आराम हो जाती है।

नोट—इस नुसखे और नं० २ नुसखेमें 'कुटकी' का ही फर्क है। "भावप्रकाश" में—तिक्तपटोल पत्र स्वरसैर्घृष्टवा शमं याति है और वैद्यविनोदमें—तिक्तापटोलपत्र स्वरसै है। तिक्त कड़वेको और तिक्ता कुटकीको कहते हैं।

(७) गञ्ज रोगमें, मस्तकको बारम्बार खुरचकर, चिरमिटीको पानीके साथ पीसकर लेप करना चाहिये। अगर जड़ ज़ियादा नीची हो गई होगी, तो भी इस नुसख़ेसे लाभ होगा।

नोट—यह नुसख़ा भी सुश्रुतका है, पर हम "वैद्यविनोद"से लिख रहे हैं।

(८) "सुश्रुत"में लिखा है, श्योनाक और देवदारुके लेपसे गंज-रोग जाता है।

(९) गोखरू और तिलके फूलोंमें उनके बराबर घी और शहद मिलाकर, सिरपर लगानेसे सिर बालोंसे भर उठता है।

(१०) मुलेठी, नील कमल, दाख, तेल, घी और दूध—इन सब को मिलाकर, सिरपर लगानेसे गञ्ज रोग नाश हो जाता है तथा बाल सघन और दृढ़ हो जाते हैं।

(११) भाँगरा पीसकर मलनेसे गंज या बालखोरा रोग नाश हो जाते है।

(१२) चुकन्दरके पत्तोंका अस्सी माशे स्वरस कड़वे तेलमें जलाकर, तेलका लेप करनेसे गञ्ज रोग आराम हो जाता है।

(१३) घोड़े या गधेका खुर जलाकर राख कर लो। फिर इस राख को मीठे तेलमें मिलाकर गंजपर मलो। इससे गंज रोग चला जायगा।

(१४) गंधक पानीमें पीसकर और शहद मिलाकर लगानेसे गंज रोग जाता है।

(१५) आमलोंको चुकन्दरके रसमें पीसकर सिरपर लगानेसे ५।६ दिनमें बाल आ जाते हैं।

(१६) थोड़ा सा दही ताम्बेके बर्तनमें उस समय तक घोटो, जब तक कि वह हरा न हो जाय, हरा हो जानेपर, उसका लेप करो। इस उपायसे बाल आ जाते हैं।

(१७) कुन्दश और हाथीदाँतका बुरादा, मुर्ग़की चरबीमें मिला कर लगानेसे अवश्य बाल उग आते हैं। लिखा है, अगर हथेलीपर लगाओ, तो वहाँ भी बाल आ जायँ।

बाल लम्बे करनेके उपाय ।

(१) नीमके पत्ते और बेरके पत्ते पीसकर सिरमें लगालो और दो घण्टे बाद धो डालो । २१ दिनमें बाल खूब लम्बे हो जायँगे ।

(२) कलौंजीको पानीमें पीसकर, उसीसे बाल धोनेसे सात दिनमें, बाल लम्बे हो जाते हैं ।

(३) आमले नीबूके रसमें पीसकर बालोंकी जड़में मलनेसे बाल लम्बे हो जाते हैं ।

(४) करीलकी जड़ पीसकर बालोंकी जड़में मलनेसे बाल लम्बे हो जाते हैं ।

(५) नहाते समय काले तिलोंकी पत्तियोंसे बाल धोनेसे बाल लम्बे हो जाते हैं ।

(६) सरोके पत्ते पाँच तोले और आमले दस तोले—दोनोको अढ़ाई सेर पानीमें औटाओ । जब गल जायँ, तिलीका तेल आध सेर ऊपरसे डाल दो और पकने दो । जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर सबको मसल लो । दवाओंको उसीमें रहने देना । इस दवा-समेत तेलके सिरमें मसलनेसे बाल बढ़ते और काले होते हैं ।

(७) कसूमके बीज और कसूमके पेड़की छाल—दोनोंको बराबर-बराबर लेकर राख कर लो । इस राखको चमेलीके तेलमें मिलाकर मल्हम सी बना लो । बालोंकी जड़ोंमें इस मरहमके मलने से बाल लम्बे और नरम हो जाते हैं ।

(८) भैसके दहीमें ककोड़ेकी जड़ पीसकर सिरमें लेप करनेसे और फिर सिर धोकर तेलकी मालिश करनेसे बाल खूब बढ़ जाते हैं । लेपको २।३ घण्टे रखना चाहिये और २१ दिन तक बराबर उसे लगाना चाहिये । एक मित्र इसे आज़मूदा कहते हैं ।

कफ, खून और कीड़ोंके प्रकोपसे, सिरमें, अनेक मुँह वाली और अत्यन्त क्लेदयुक्त व्रण या फुन्सियाँ होती हैं। इन को ही अरुंषिका कहते हैं। बोलचालकी भाषामें इन्हें "वराही" कहते हैं।

चिकित्सा ।

(१) जौंक लगाकर सिरका ख़राब खून निकाल दो।

(२) माठा और सेंधानोनके काढ़ेसे सिरको बारम्बार धोओ। इसके बाद कोई लेप करो।

(३) परवल, नीम और अडूसा—इनके पत्ते पीसकर लेप करो।

(४) मिट्टीके ठीकरेमें कूटको भूनकर पीस लो। फिर उसे तेलमें मिलाकर लेप कर दो। इससे खुजली, क्लेद, दाह और पीड़ा सब नाश हो जाते हैं।

(५) दारूहल्दी, हल्दी, चिरायता, नीमकी छाल, अडूसेके पत्ते और लाल चन्दनका बुरादा—सबको बराबर-बराबर लेकर, सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। लुगदीसे चौगुना काली तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी मिलाकर तेल पका लो। तेल मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस तेलके लगानेसे अरुंषिका, दाह, जलन, मवाद, दर्द तथा अन्य जगहके घाव, फोड़े, फुन्सी जड़से आराम हो जाते हैं। ऐसा कोई चर्म रोग ही नहीं है, जो इस तेलके लगातार लगानेसे आराम न हो। हज़ारों रोगी आराम हुए हैं। परीक्षित है।

वृषणकच्छू-चिकित्सा ।

जो मनुष्य स्नान करते समय शरीरका मैल साफ नहीं करता, फोतों और लिंग आदि गुप्त अंगोंको खूब अच्छी तरह नहीं धोता, उसके फोतोंमें मैल जम जाता है । जब उस मैलपर पसीने आते हैं, तब खुजली चलने लगती है । खुजाते रहनेसे वहाँ फुन्सी-फोड़े हो जाते हैं, जिनमेंसे राध बहने लगती है । इस रोगको "वृषणकच्छू" कहते है । यह फोतोंका रोग कफ और रक्तके कोपसे होता है ।

चिकित्सा ।

राल, कूट, सेंधानोन और सफेद सरसों—इन चारोंको पीसकर उबटन बना लो और फोड़ोंपर मलो । इस उबटनसे वृषणकच्छू या फोतोंकी खुजली फौरन मिट जाती है ।

नोट—पिछले पृष्ठ ५६७ के नं० ५ तेलसे भी फोतोंकी खुजली वगैरः व्याधियाँ आराम होती हैं ।

कखौरीकी चिकित्सा ।

बाँहकी बगलमें, एक महा कष्टदायक फोड़ा होता है, उसे ही कखौरी, कँखलाई या काँखहरी कहते हैं । यह रोग पित्तके कोपसे होता है ।

चिकित्सा ।

(१) देवदारु, मैनसिल और कूट—इन तीनोंको पीस और स्वेदित करके लेप करनेसे कफ-वातसे उत्पन्न हुई कँखलाई नष्ट हो जाती है ।

(२) जदवार ख़ताईको गुलाबजलमें घिस कर लेप करनेसे कँखलाई जाती रहती है।

(३) चकचूनीकी पत्ती और अरण्डकी पत्ती—इन दोनोंको समान-समान लेकर और पीसकर गरम कर लो। थोड़ा-सा नमक मिलाकर पीस लो और गरम करके बाँध दो। कँखलाई नष्ट हो जायगी।

दारुणक रोग-चिकित्सा।

कफ और वातके प्रकोपसे बालोंकी जगह कड़ी और रूखी हो जाती है और वहाँ खाज चलती है, इसको "दारुणक रोग" कहते हैं। बोलचालकी ज़बानमें इसे फिहाँसों या खोसी निकलना कहते हैं।

चिकित्सा।

(१) ललाटकी शिराको स्निग्ध और स्विन्न करके, नश्तरसे छेद कर खून निकालो। फिर अवपीड़ नस्य देकर सिरकी मलामत निकालो और कोई तेल मलो, अथवा कोई लेप आदि करो।

नोट—जिसे शिरावेधन करने या फस्द खोलनेका पूरा ज्ञान और अभ्यास हो, जिसे नसोंका ज्ञान हो, वही इस कामको करे, नहीं तो लेनेके देने पड़ेंगे। बिना शिरावेधन किये, कोरी दवाओंसे भी यह रोग आराम हो सकता है।

(२) प्रियालके बीज, मुलहटी, कूट, उड़द और सेंधानोन—इनको पीसकर और शहदमें मिलाकर सिरपर लेप करो।

(३) चिरमिटी पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना मीठा तेल और तेलसे चौगुना भाँगरेका रस लेकर सबको मिला लो और आगपर पकाओ। तेल मात्र रहनेपर उतार कर छान लो। इस तेलके लगानेसे खुजली, दारुणक रोग, हृद्रोग, कोढ़ और मस्तक-रोग नाश होते हैं।

(४) भाँगरा, त्रिफला, कमल, सातला, लोहचूर्ण और गोवर—इनके साथ तेल पकाकर लगानेसे दारुणक रोग नष्ट होता और गिरे हुए वाल सघन और टिकाऊ होते हैं ।

(५) महुआकी छाल, कूट, उड़द और सेंधानोन,—इनको वरावर-वरावर लेकर महीन पीस लो और शहदमें मिलाकर सिरपर लेप करो । इससे दारुणक रोग नष्ट हो जाता है ।

(६) पोस्तको दूधमें पीसकर लेप करनेसे दारुणक रोग नाश हो जाता है ।

नोट—पोस्ताके दाने या ख़सख़ासके वीजोंको दूधमें पीसकर लगाओ ।

(७) चिरौंजीके वीज, मुलहटी, कूट, उड़द और सेंधानोन—इनको एकत्र पीसकर और शहदमें मिलाकर लगानेसे दारुणक रोग जाता रहता है ।

(८) आमकी गुठली और हरड़—दोनोंको समान-समान लेकर, दूधमें पीसकर सिरमें लगानेसे दारुणक रोग चला जाता है ।

(९) नीबूका रस चीनीमें मिलाकर सिरपर लगाने और ५।६ घण्टे वाद सिर धोनेसे सिरकी रूसी-भूसी नष्ट हो जाती है ।

(१०) चनेका वेसन आध घण्टे तक सिरकेमें भिगो रखो । फिर उसे शहदमें मिलाकर सिरपर मलो । इससे रूसी-भूसी और वफा नाश हो जाती है ।

(११) सावुनसे सिर धोकर तेल लगानेसे रूसी-भूसी नष्ट हो जाती है ।

(१२) चुकन्दरकी जड़ और चुकन्दरके पत्तोंका काढ़ा वनाकर, उसमें थोड़ा नमक मिला दो । इस काढ़ेको सिरपर डालनेसे रूसी-भूसी और जूँ नष्ट हो जाती हैं ।

नोट—पारेको मूलीके पत्तोंके रसमें या पानोंके रसमें पीसकर, उसमें एक डोरा भिगो लो और उसे सिरमें रख दो । सारी जूँ २।३ दिनमें मर जायँगी ।

यक्ष्माके निदान-कारण।

आयुर्वेद-ग्रन्थोंमें लिखा हैः—

वेगरोधात्क्षयाच्चैव साहसाद्विषमाशनात्।
त्रिदोषो जायते यक्ष्मागदो हेतुचतुष्टयात्॥

मल-मूत्रादि वेगोंके रोकने, अधिक व्रत-उपवास करने, अति मैथुन आदि धातुक्षयकारी कर्म करने, बलवान् मनुष्यसे कुश्ती लड़ने अथवा बिना समय खाने—कभी कम और कभी ज़ियादा खाने आदि कारणोंसे "क्षय" "यक्ष्मा" रोग होता है। यह क्षय रोग त्रिदोष या सान्निपातिक है, क्योंकि तीनों दोषोंसे होता है। उपरोक्त चार कारणों के सिवा, इसके होनेके और भी बहुत कारण हैं; पर वे सब इन चार कारणोंके अन्तर्भूत हैं।

खुलासा यह है, कि यक्ष्मा रोग नीचे लिखे हुए चार कारणोंसे होता हैः—

(१) मलमूत्रादि वेग रोकनेसे।

(२) अति मैथुन द्वारा धातुक्षय करनेसे।

(३) अपनी ताक़तसे ज़ियादा साहस करनेसे।

(४) कम-ज़ियादा और समय-वेसमय खानेसे।

चारों कारणोंका खुलासा।

नोट—(१) ऊपर जो वेग रोकनेकी बात लिखी है, क्या उससे मल, मूत्र, छींक, डकार, जंभाई, अधोवायु, वीर्य, आँसू, वमन, भूख, प्यास, श्वास और

नींद—इन तेरहों वेगोंके रोकनेसे मतलब है ? अगर यही बात है, तो इन तेरह वेगोंके रोकनेसे तो "उदावर्त्त" रोग होना लिखा है। कहा है:—

वातविरामूत्रजृम्भाश्रु क्षवोद्गारवमीन्द्रियैः।
क्षुत्तृष्णोच्छ्वास निद्राणां धृत्योदावर्त्तसंभवः॥

यह बात तो ठीक नही। कहीं वेगोंके रोकनेसे "उदावर्त्त" होना लिखा हो और कही "यक्ष्मा"।

चूँकि मल-मूत्र आदि वेगोंके रोकनेसे "उदावर्त्त" होता है, इससे मालूम होता है, यहाँ अधोवायु, मल और मूत्र—इन तीनों वेगोंसे मतलब है। "भाव-प्रकाश" में ही लिखा है,—"वातमूत्र पुरीषानि निगृह्णामि यदानरः" अर्थात् अधोवायु, मूत्र और मलके रोकनेसे "क्षय" रोग होता है। भरद्वाजने स्पष्ट ही कहा है:—

वातमूत्र पुरीषाणां ह्रीभयाद्यैर्यदा नरः।
वेगं निरोधयेत्तेन राजयक्ष्मादि सम्भवः॥

मनुष्य जब शर्म-लाज और डरके मारे अधोवायु, मूत्र और मलको रोकता है, तब उसे "राजयक्ष्मा" आदि रोग हो जाते हैं।

मतलब यह है, कि जो लोग आस-पास बैठनेवालोंकी शर्मके मारे या अपने बड़ोंके भयसे अधोवायु या गुदाकी हवाको रोक लेते हैं अथवा किसी काममें दत्तचित्त रहने या मौका न होनेसे पाखाने-पेशाबकी हाजतको रोक लेते हैं उनको "क्षय रोग" हो जाता है। यह बड़ी ग़लती है। पर हम लोगोंमें ऐसी चाल ही पड़ गई है, कि अगर कोई सभ्य या ऊँचे दर्जेका आदमी चार आदमियोंके बीच में बैठ कर हवा खोलता है, तो लोग उसके सामने ही या उसके पीठ-पीछे उसकी मसखरी करते हैं, उसे गँवार कहते है। इस सम्बन्धमें शाहन्शाह अकबर और बीरबलकी दिल्लगी मशहूर है। मर्दोंकी अपेक्षा औरतोंमें यह बेहूदा चाल और भी जियादा है। कन्याओंको छोटी उम्रमें ही यह पट्टी पढ़ा दी जाती है, कि अपने बड़ों या खास कर सास, ससुर और पति आदिकी मौजूदगीमें अधोवायु कभी न खोलना, उसे ऊपर चढ़ा लेना या रोक लेना। इसका नतीजा यह होता है, कि मर्दोंकी निस्बत औरतें इस मूँजी रोगकी शिकार जियादा होती हैं और चढ़ती जवानीमें ही बल-मांस-हीन हाड़ोंके कङ्काल होकर यमसदनकी राही होती हैं। मर्द तो अनेक मौक़ोंपर अधोवायुको खुलने

देते हैं, पर औरतें इसकी जियादा रोक करती हैं। यद्यपि हमारी समाजमें यह औंडी चाल पड़ गई है और सबको इसके विपरीत काम करना बुरा मालूम होता है, तो भी "स्वास्थ्यरक्षा" के लिये वेगोंको न रोकना चाहिये। जब ये सब निकलना चाहे, किसी भी उपायसे इन्हें निकाल देना चाहिये। जानवर अपने इन वेगोंको नहीं रोकते, इसीसे ऐसे पाजी रोगोंके पंजोंमें नहीं फँसते।

(२) यक्ष्माका दूसरा कारण धातुओंका क्षय करना है। असलमें धातुओंके क्षयसे ही क्षय रोग होता है। अनेक नासमझ नौजवान दमादम मैशीन चलाते हैं। उन्हें हर समय स्त्री-प्रसंग ही अच्छा लगता है। एक बार, दो बार या चार छै बारका कोई नियम नहीं। 'अपनी पूँगी जब चाहे तब बजाई।' नतीजा यह होता है, कि वीर्यके नाश होनेसे मज्जा, अस्थि और मेद, मांस प्रभृति सभी धातुएँ क्षीण होने लगती हैं। इनके आधार पर ही मनुष्य-चोला खड़ा रहता है। जब आधार कमजोर हो जाता है या नहीं रहता है, तब चोला गिर पडता है। मतलब यह है कि, वीर्यके नाश होनेसे वायु कुपित होता है और फिर वह मज्जा प्रभृति शेष धातुओंको चर जाता है—शरीरको सुखा डालता है, तब मनुष्य क्षीण हो जाता है। अतः दीर्घजीवन चाहनेवालोंको इस निश्चय ही प्राणघातक रोगसे बचनेके लिये अति मैथुनसे बचना चाहिये। शास्त्र-नियमसे मैथुन करना चाहिये। मैथुनसे जाहिरा आनन्द आता है, पर वास्तवमें यह भीतर-ही-भीतर जीवनी शक्तिका नाश करता और मनुष्यकी आयुको कम करता है।

अति मथुनके सिवा, व्रत-उपवासोंका नम्बर लगा देना और दूसरोंको देख कर जलना-कुढ़ना या उनसे ईर्षा-द्वेष रखना भी क्षयके कारण हैं। इनसे भी धातुएँ क्षीण होती हैं। हम हिन्दुओं और विशेष कर जैनी हिन्दुओंमें व्रत—उपवासकी बड़ी चाल है। आज एकादशी है, कल नरसिंह चौदस है, परसों रविवार है,—इस तरह आठ वारोंमें नौ उपवास होते हैं। जैनियोंमें एक-एक स्त्री महीनोंके उपवास कर डालती है। यही वजह है, कि हिन्दुओंकी अधिकांश स्त्रियाँ राजरोग, क्षय रोग या तपेदिकके चंगुलमें फँसकर भरी जवानीमें उठ जाती हैं। स्वास्थ्य-लाभके लिये उपवासकी बड़ी जरूरत है, पर जब स्वास्थ्य नाश होने लगे, तब लकीरके फकीर होकर उपवास किये जाना, अपनी मौत आप बुलाना है। अतः उचितसे अधिक उपवास हरगिज न करने चाहिएँ।

(३) यक्ष्माका तीसरा कारण साहस है। जो लोग अपने बलसे जियादा काम करते, रातदिन कामके पीछे ही पडे रहते हैं अथवा अपनेसे जियादा ताक़तवरों

से कुश्ती लड़ते, बहुत भारी चीज़ खींचते या उठाते या ऐसे ही और काम करते हैं, अपनी ताकतका ध्यान रखकर काम नहीं करते, बदनमें ८ घण्टे मिहनत करने की शक्ति होनेपर भी १४ घण्टे काम करते हैं। उन्हें क्षय रोग अवश्य होता है।

(४) चौथा कारण विषम भोजन है। जो लोग किसी दिन नाक तक ठूँसकर खाते हैं, किसी दिन आधे पेट भी नहीं, छटाँक भर चने चबाकर ही दिन काट देते हैं, किसी दिन, दिनके दस बजे, तो किसी दिन शामके २ बजे और किसी दिन रातके आठ बजे भोजन करते हैं; यानी जिनके खाने पीनेका कोई नियम और क़ायदा नहीं है, वे पशु-रूपी मनुष्य क्षय केशरीके शिकार होते हैं। अतः समझदारोंको खाने-पीनेमें नियम-विरुद्ध काम न करना चाहिये। हमने इस विषयमें अपनी बनाई सुप्रसिद्ध "स्वास्थ्यरक्षा" नामक पुस्तकमे विस्तारसे लिखा है। जो मनुष्य उस ग्रन्थके अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं, उनके जीवन का बेडा सुखसे पार होता है।

इन चार कारणोंके अलावः बहुत शोक या चिन्ता-फ़िक्र करना, असमयमें बुढ़ापा आना, बहुत राह चलना, अधिक मिहनत करना, अति मैथुन करना और व्रण या घाव होना भी—क्षय रोगके कारण लिखे हैं। पर ये सब इन चारोंके अन्दर आ जाते हैं। देखनेमें नये मालूम होते हैं; पर वास्तवमें इनसे जुदे नहीं हैं।

हारीत लिखते हैं—मिहनत करने, बोझा उठाने, लम्बी राह चलने, अजीर्णमें भोजन करने, अति मैथुन करने, ज्वर चढ़ने, विषम स्थानपर सोने और अति शीतल पदार्थोंके सेवन करनेसे कफ कुपित होता है। फिर वह अपने साथी वायु और पित्तको भी कुपित कर देता है। इस तरह वात, पित्त और कफ—इन तीनों दोषों से क्षय रोग होता है।

और भी लिखा है—खाना कम खाने और कसरत जियादा करने, दिन-रात सवारीपर चढ़कर फिरने, अधिक मैथुन करने और बहुत लम्बी सफर करने या राह चलनेसे क्षय रोग होता है। इनके सिवा, फोड़े-फुन्सियोंके बहुत दिनो तक बने रहने, शोक करने, लंघन करने, डरने और व्रत-उपवास करनेसे मनुष्यको महा भयङ्कर यक्ष्मा रोग होता है।

पूर्वकृत पाप भी क्षय रोगके कारण हैं।

हारीत मुनि कहते हैं, जो मनुष्य पूर्व जन्ममें देवमूर्त्तियोंको तोड़ता है, गर्भगत जीवको दुःख देता है, गाय, राजा, ब्राह्मण और बालककी हत्या करता है, किसीके लगाये बाग़ और स्थानका नाश करता है, स्त्रियोंको जानसे मार डालता है—देवताओंको जलाता है; किसीका धन नाश करता है, देवताओंके धनको हड़पता है, गर्भ गिराता या हमल इस्कात करता है और किसीको विष देता है—उस मनुष्यको इन विपरीत कर्मोंके फल-स्वरूप महादारुण रोग राजयक्ष्मा होता है। और भी लिखा है, स्वामीकी स्त्रीको भोगने, गुरुपत्नीकी इच्छा करने, राजाका धन हरने और सोना चुरानेसे भी राजयक्ष्मा होता है। कहा भी है—

कुष्ठ च राजयक्ष्मा च प्रमेहो ग्रहणी तथा।
मूत्रकृच्छ्रंश्मरी कास अतीसार भगन्दरौ॥
दुष्टं व्रणं गंडमाला पक्षाघातोक्षिनाशनं।
इत्येवमादयो रोगा महापापोद्भवाः स्मृताः॥

कोढ़, राजयक्ष्मा, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, खाँसी, अतिसार, भगन्दर, नासूर, गण्डमाला, पक्षाघात—लकवा और नेत्र फूट जाना—ये सब रोग घोर पाप करनेसे होते हैं।

यक्ष्मा आदि शब्दोंकी निरुक्ति।

"भावप्रकाश" में लिखा है—इस रोगका मरीज वैद्य-हकीमकी खूब पूजा करता है, इसलिये इसे "यक्ष्मा" कहते हैं।

किसीने लिखा है—राजा चन्द्रको क्षय रोग हुआ। वैद्योंको उसके आराम करनेमें बड़ी-बड़ी मुश्किलातोंका सामना करना पड़ा, उन्हें

बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ दरपेश आईं, तब वे लोग इस शोष या क्षय रोगको "यक्ष्मा" कहने लगे ।

क्षय रोग सब रोगोंसे ज़बर्दस्त है, सबमें प्रबल है और अतिसार आदि इसके भयङ्कर सिपाही है, इससे वैद्य इसे "रोगराज" कहते हैं। वास्तवमें, यह है भी रोगोंका राजा ही ।

सम्पूर्ण क्रियाओं और धातुओंको यह क्षय करता है, इसीसे इसे "क्षय" कहते हैं। "वाग्भट्ट" में लिखा है:—यह देह और औषधियों को क्षय करता है, इसलिये इसे "क्षय" कहते हैं अथवा इसका जन्म ही क्षयसे है, इसलिए इसे "क्षय" कहते हैं।

यह रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र—इन सातों धातुओंको सोखता या सुखाता है, इसलिए इसका नाम "शोष" रखा गया है ।

क्षय, शोष, रोगराज और राजयक्ष्मा—ये चारों एक ही यक्ष्मा रोगके चार नाम या पर्य्याय शब्द हैं ।

क्षय रोगकी सम्प्राप्ति ।

क्षय रोग कैसे होता है ?

जब कफ-प्रधान वात आदि तीनों दोष कुपित हो जाते हैं, तब उनसे रस बहने वाली नाड़ियोंके मार्ग रुक जाते हैं। रसवाहिनी शिराओं या नाड़ियोंके रुकनेसे क्रमशः रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र धातुएँ क्षीण होती है। जब सब धातुएँ क्षीण हो जाती हैं, तब मनुष्य भी क्षीण हो जाता है।

मनुष्य जो कुछ खाता-पीता है, उसका पहले रस बनता है। रस से रक्त या खून, खूनसे मांस, माससे मेद, मेदसे अस्थि, अस्थिसे मज्जा और मज्जासे शुक्र या वीर्य बनता है। समस्त धातुओंका कारण रूप "रस" है; यानी मांस, मेद आदि छहों धातुओंको बनाने वाला

"रस" है। रससे ही खून आदि धातुएँ बनती हैं। जब रस ही न होगा, रक्त कहाँसे होगा? रक्त न होगा, तो मांस भी न होगा। जिन नालियोंमें होकर "रस" रक्त बनानेकी मैशीनमें पहुँचता और वहाँ जाकर खून हो जाता है, उन नालियोंकी राहें जब दोषोंके कुपित होनेसे बन्द हो जाती हैं, तब "रस" बननेकी मैशीनमें पहुँच ही कैसे सकता है? वह वहाँका वहीं यानी अपने स्थान—हृदय—में जलकर, खाँसीके साथ मुँहसे निकल जाता है। रस नहीं रहता और इसीसे खून तैयार करनेवाली मैशीनमें नही पहुँचता, इसका नतीजा यह होता है, कि खून दिन-पर-दिन कम होता जाता है और खूनके कम होनेसे मांस आदि भी कम होने लगते हैं। "चरक"में लिखा है:—

रसःस्रोतःसु रुद्धेसु, स्वास्थानस्थो विदह्यते।
सउर्द्ध कासवेगेन, बहुरूपः प्रवर्त्तते॥

स्रोतों या छेदो अथवा नाड़ियोंके रुक जानेपर, हृदयमें रहने वाला रस विदग्ध हो जाता है, जल जाता है। इसके बाद वह, ऊपर की ओरसे, खाँसीके वेगके साथ, मुँह द्वारा, अनेक तरहका होकर बाहर निकल जाता है।

दूसरे शब्दोंमें यों कह सकते हैं, कि रस ही सब धातुओंकी सृष्टि करनेवाला है। जब उस रसकी ही चाल रुक जाती है, उसी की राहें बन्द हो जाती हैं, तब रक्त आदि धातुओंका पोषण कैसे हो सकता है? वाग्भट्ट महाराज इसी बातको और ढँगसे कहते हैं। उनका कहना है,—जिस तरह तन्दुरुस्त आदमियोंके खाये-पिये पदार्थ शरीरकी अग्नि और धातुओंकी गरमीसे पकते हैं, उस तरह क्षय-रोगीके खाये-पिये पदार्थ शरीर और धातुओंकी गरमीसे नहीं पकते। उसके खाये-पिये पदार्थ कोठोंमें पचते हैं और पचकर उनका मल बन जाता है, रस नहीं बनता। चूँकि रस नहीं बनता, मल बनता है, इसलिये रक्त आदि धातुओंका पोषण नहीं होता—उनके

बढ़नेको असल मसाला—रस नहीं मिलता। जब रस नहीं, तब खून कहाँ ? और जब खून नहीं, तब मांसकी तो बात ही क्या है ? क्षय-रोगी केवल मल या विष्ठाके सहारे जीता है। मल टूटा और जीवन नाश हुआ। यों तो सभीके बलका सहारा मल और जीवनका अव-लम्ब वीर्य है, पर क्षयरोगीको तो केवल मलका ही आसरा है, क्योंकि उसमें वीर्यकी तो कमी रहती है।

एक बात और भी है, जिस तरह कारण-भूत या सब धातुओंको पैदा करनेवाले "रस" के क्षय होनेसे—कमी होने या नाश होनेसे—कार्यभूत या रससे पैदा हुई धातुओ—खून वगैरः—का क्रमसे क्षय होता है; ठीक उसी तरहपर उल्टे क्रमसे, कार्यभूत शुक्रके क्षयसे कारणरूप मज्जा आदि धातुओंका क्षय होता है। खुलासा यों सम-झिये, कि जिस तरह सब धातुओंके पैदा करनेवाले "रस"के नाश होने से, रक्त, मांस और मेद आदि धातुओंका नाश होता है; उसी तरह रस से बनी हुई रक्त आदि धातुओंमें से वीर्यका नाश होनेसे मज्जा, अस्थि, मेद और मांस आदि धातुओंका भी नाश होता है, यानी जिस तरह रसकी घटतीसे खून आदिकी घटती होती है; उसी तरह शुक्र-वीर्य की कमीसे उसके पैदा करनेवाली मज्जा आदि धातुएँ भी घट जाती हैं,—उस हालतमें, वेगोंके रोकने आदि कारणोंसे, वातादि दोष कुपित होते है और रस बहानेवाली नाड़ियोंकी राह बन्द कर देते हैं। इसलिये खून बनानेवाली मैशीनमें खून बननेका मसाला "रस" नहीं पहुँचता। रसके न पहुँचनेसे खून नहीं बनता और खून न बननेसे मांस वगैरः नहीं बनते। इस दशामें—उल्टी हालतमें—पहले मैथुन से वीर्य कम होता है। वीर्यके कम होनेसे वायु कुपित होता है। वायु कुपित होकर मज्जादि धातुओंको शोख लेता है। धातुओंके सूखनेसे मनुष्य सूख जाता है। हम समझते है, धातुओंके सीधी और उल्टी राह से क्षय होनेकी बात पाठक अब समझ जायँगे। और भी साफ यों

समझिये,—इस दशामें पहले रसका क्षय होता है, रसके क्षयसे मांस का क्षय होता है, मांससे मेदका, मेदसे अस्थिका, अस्थिसे मज्जा का और मज्जासे वीर्यका क्षय होता है। इस दशामें पहले वीर्यका, फिर मज्जाका, फिर अस्थिका, फिर मेद और मांस आदिका क्षय होता है।

क्षयके पूर्व्व रूप।

(क्षय होनेसे पहले नज़र आने वाले चिह्न)

जब किसीको क्षय रोग होने वाला होता है, तब पहले उसमें नीचे लिखे हुए चिह्न या लक्षण नज़र आते हैं:—

श्वास रोग होता है, शरीरमें दर्द होता है, कफ गिरता है, तालू सूखता है, कय होती है, अग्नि मन्दी हो जाती है, नशा सा बना रहता है, नाकसे पानी गिरता है, खाँसी और अधिक नींद आती है। तात्पर्य्य यह है, कि जिनको क्षय होने वाला होता है, उनमें क्षय होने से पहले उपरोक्त शिकायतें देखनेमें आती हैं।

इन लक्षणोंके सिवा क्षयके पंजोंमें फँसने वाले मनुष्यका मन मांस और मैथुनपर अधिक चलता है और उसकी आँखें सफेद हो जाती है।

वाग्भट्ट महाराज कहते है, जिसे क्षय होने वाला होता है, उसे पीनस या जुकाम होता है, छींकें बहुत आती हैं, उसका मुँह मीठा-मीठा रहता है, जठराग्नि मन्दी हो जाती है, शरीर शिथिल और गिरा-पड़ा-सा हो जाता है, मुँह थूक या पानीसे भर-भर आता है, वमन होती हैं, खानेको दिल नहीं चाहता है। खाने-पीनेपर बल कम होता जाता है, मुँह और पैरों पर वरम या सूजन चढ़ आती है और दोनों नेत्र सफेद हो जाते है। इनके सिवा, क्षय रोगी खाने-पीनेके शुद्ध-साफ बर्तनोंको अशुद्ध समझता है, खाने-पीनेके पदार्थोंमें उसे मक्खी, तिनका या बाल प्रभृति दीखते हैं, अपने हाथोंको देखा करता है, दोनों भुजाओंका प्रमाण जानना चाहता है, सुन्दर शरीर देखकर भी

डरता है, स्त्री, शराब और मांसकी बहुत ही इच्छा करता है एवं उसके नाखून और बाल भी बहुत बढ़ते हैं। यह सब तो जाग्रत अवस्थाकी बातें हैं। सो जानेपर, स्वप्नमें, क्षयवाला पतंग, सर्प, बन्दर और किरकेंटा आदिसे तिरस्कृत होता है। कोई लिखते हैं, कौआ, तोता, नीलकण्ठ, गिद्ध, बन्दर और किरकेंटा आदि पशु-पक्षियोंपर अपने तईं सवार और बिना जलकी सूखी नदियाँ देखता है तथा हवा, धूएँ या दावानल—बनकी आगसे पीड़ित या सूखे हुए वृक्ष देखता है, बाल, हाड़ या राखके ढेरोंपर चढ़ता है, शून्य या जन-शून्य गाँव या देश देखता है और आकाशसे गिरते हुए तारे और पहाड़ देखता है। यह क्षय रोग होनेसे पहलेके लक्षण या क्षयके पेशख़ीमे हैं। क्षयके आनेसे पहले ये सब तशरीफ लाते हैं। चतुर लोग इन लक्षणोंको देखते ही होशियार और सावधान हो जाते हैं। यहीसे वे रोगके कारणोंको रोकते और मौजूदा शिकायतोंका इलाज करते हैं। ऐसे लोग क्षयसे बहुत कम मरते है। जो क्षयके पूर्व्व रूपों को नहीं जानते और इसलिये सावधान नही होते, उनको फिर नीचे लिखी शिकायतें या उपद्रव हो जाते हैं:—

पूर्व्व रूपके बादके लक्षण।

पहले पूर्वरूप होते हैं, उनके बाद रोग। जब क्षय रोग प्रकट हो जाता है, तब ज़ुकाम, खाँसी, स्वरभेद—गला बैठना, अरुचि, पसलियों का संकोचन और दर्द, खूनकी कय और मलभेद—ये लक्षण होते हैं।

राजयक्ष्माके लक्षण।

त्रिरूप क्षयके लक्षण।

पहला दर्जा।

जब क्षय रोग प्रकट होता है, तब पहले कन्धों और पसलियोंमें वेदना होती है, हाथो और पैरोंके तलवे जलते हैं तथा ज्वर चढ़ा रहता है।

नोट—लिख चुके हैं कि, यक्ष्मा तीनों दोषों—वात, पित्त और कफ—के कोपसे होता है। ऊपर जो लक्षण लिखे गये हैं, वे साधारण यक्ष्मा या यक्ष्माके पहले दर्जेके हैं। इस अवस्था या दर्जेका यक्ष्मा आराम हो सकता है।

इस रोगमें सारी धातुओंका क्षय होकर, सारे शरीरका शोषण होता है, ऐसा समझना चाहिये। कन्धों और पसलियोंमें शूल चलना, हाथ-पैर जलना और सारे शरीरमें ज्वर बना रहना—ये तीन लक्षण "चरक" में होनहार के लिखे हैं। "सुश्रुत" में छै लक्षण और लिखे हैं। उन्हें हम नीचे लिखते हैं:—

यक्ष्माके लक्षण।

षटरूपक्षय।

दूसरा दर्जा।

"सुश्रुत" में अन्नपर अरुचि, ज्वर, श्वास-खाँसी, खून दिखाई देना और स्वर-भेद—ये लक्षण यक्ष्माके लिखे हैं। खुलासा यो समझिये, कि खानेकी बात तो दूर रही,खानेका नाम भी बुरा लगता है। ज्वरसे शरीर तपा करता है, साँस फूलता रहता है, खाँसी चलती रहती है, थूकके साथ खून गिरा करता और गला बैठ जाता है। यह यक्ष्माके दूसरे दर्जेके लक्षण हैं। इन लक्षणोंके प्रकट हो जानेपर, कोई भाग्यशाली प्राणी सुवैद्यके हाथोमें जाकर, बच भी जाता है, पर बहुत कम। इसके आगे तीसरा दर्जा है। तीसरे दर्जे वालोंकी तो समाप्ति ही समझिये। वे असाध्योंकी गिनतीमें हैं।

हारीत कहते हैं, छातीमें क्षत या घाव होने, धातुओंके क्षय होने, जोरसे कूदने, अत्यन्त मैथुन करने और रूखा भोजन करनेसे, शरीर क्षीण होकर, मन्द ज्वर हो जाता है और ज्वरके अन्तमें सूजन चढ़ आती है;मैल, मल और मूत्र अधिक आते हैं, अतिसार हो जाता है; खाया-पिया नहीं पचता; खाँसी ज़ोरसे चलती है; थूक बहुत आता

है; शरीर सूखता है; स्त्रीकी इच्छा ज़ियादा होती है और बात सुनना बुरा लगता है। जिसमें ये लक्षण पाये जायँ, उसे "राजयक्ष्मा" है। जिस राजयक्ष्मा रोगीके पैर सूने हो जाते हैं, जिसे एक ग्रास भोजन भी बुरा लगता है और जिसकी आवाज़ एक दमसे मन्दी हो जाती है, उसका राजयक्ष्मा आराम नहीं होता।

दोषोंकी प्रधानता-अप्रधानता ।

लिख आये हैं कि, यक्ष्मा रोग वातादिक तीनों दोषोंके कोपसे होता है, पर उन तीनोंमेंसे कोई-न-कोई दोष प्रधान या सबसे ऊपर होता है। जो प्रधान होता है, उसीके लक्षण या ज़ोर अधिक दीखता है।

अगर वायुकी उल्वणता, प्रधानता या अधिकता होती है तो स्वर-भंग—गला बैठना, कन्धों और पसलियोंमें दर्द और संकोच,—ये लक्षण होते हैं, यानी वायुके बढ़नेसे गला बैठता और कन्धों तथा पसलियोंमें पीड़ा होती है। ये वाताधिक्य या वायुके अधिक होनेके चिह्न हैं।

अगर पित्त उल्वण या प्रधान होता है, तो ज्वर, दाह, अतिसार और खून निकलना ये लक्षण होते हैं; यानी पित्तके बढ़नेसे ज्वरसे शरीर तपता, हाथ-पैर जलते, पतले दस्त लगते और मुँहसे खून आता है।

अगर कफ़ उल्वण या अधिक होता है, तो सिरमें भारीपन, अन्न पर मन न चलना, खाँसी और कण्ठ जकड़ना—ये लक्षण होते हैं; यानी अगर कफ बढ़ा हुआ होता है, तो रोगीका सिर भारी रहता है, खानेका नाम नहीं सुहाता, खाँसी आती और गला बैठ जाता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—क्षय रोग, तीनों दोषोंका सन्निपात रूप होनेसे, एक ही तरहका माना गया है, तो भी उसमें दोषोंकी उल्वणता या प्रधानता होनेके कारण, उन्हीं उन दोषोंके चिह्न देखनेमें आते हैं।

स्थान-भेदसे दोषोंके लक्षण।

वाग्भट्ट कहते हैं, अगर दोष ऊपर रहता है, तो ज़ुकाम, श्वास, खाँसी, कन्धों और सिरमें दर्द, स्वरपीड़ा और अरुचि—ये उपद्रव होते हैं। अगर दोष नीचेके अंगोंमें होता है, तो अतिसार और शरीर सूखना—ये उपद्रव होते हैं। अगर दोष कोठेमें रहता है, तो कय या वमन होती है। अगर दोष तिरछा होता है, तो पसलियोंमें दर्द होता है। अगर दोष सन्धियों या जोड़ोंमें होता है, तो ज्वर चढ़ता है। इस तरह क्षय रोगमें ११ उपद्रव होते हैं।

साध्यासाध्यत्व।

साध्य लक्षण।

क्षय रोग साधारणतः कष्टसाध्य है, बड़ी दिक़्क़तोंसे आराम होता है; पर अगर रोगीके बल और मांस क्षीण न हुए हों, तो चाहे यक्ष्माके ग्यारहो लक्षण क्यों न प्रकट हो जायँ, वह आराम हो सकता है। खुलासा यह है, कि यक्ष्माके समस्त लक्षण प्रकाशित हो जानेपर भी रोगी आराम हो सकता है, बशर्त्ते कि, उसके बल और मांस क्षीण न हुए हों।

"बंगसेन" में लिखा है, जिनकी इन्द्रियाँ वशमें हैं, जिनकी अग्नि दीप्त है और जिनका शरीर दुबला नहीं हुआ है, उन यक्ष्मा वालोंका इलाज करना चाहिये। वे आराम हो जायँगे।

असाध्य लक्षण।

अगर रोगीके बल और मांस क्षीण हो गये हों, पर यक्ष्माके ग्यारह रूप प्रकट न हुए हों; खाँसी, अतिसार, पसलीका दर्द, स्वर-भंग—

गला बैठना, अरुचि और ज्वर ये छै लक्षण हों अथवा श्वास, खाँसी, और खून थूकना—तीन लक्षण हों तो रोगीको असाध्य समझो ।

अगर रोगीमें जुकाम प्रभृति लक्षण कम भी हों, पर रोगी रोग और दवाके बलको न सह सकता हो, तो वैद्य उसको असाध्य समझकर, उसका इलाज न करे, यह वाग्भट्टका मत है ।

नोट—अगर रोगीमें जुकाम आदि सब लक्षण हों, पर वह रोग और दवाके बलको सह सकता हो, तो आराम हो जायगा ।

भावमिश्र जी कहते हैं, यशकामी वैद्य ग्यारह या छै अथवा ज्वर, खाँसी और खून थूकना इन तीन लक्षणों वालोंका इलाज नहीं करते ।

जो क्षय रोगी खूब ज़ियादा खाने-पीनेपर भी सूखता जाता है, वह असाध्य है—आराम न होगा ।

जिस रोगीको अतिसार हो—पतले या आम मरोड़ी वगैरःके दस्त लगते हों, उसका इलाज वैद्यको न करना चाहिये; क्योंकि वह असाध्य है । कहा है—

मलायत्तं बलं पुंसां शुक्रायत्तं चजीवितम् ।
तस्माद्यत्नेन संरक्षेद्यक्ष्मिणो मलं रेतसी ॥

मनुष्योंका बल मलके अधीन है और जीवन वीर्यके अधीन है, अतः क्षय रोगीके मल और वीर्यकी रक्षा यत्नसे—खूब होशियारीसे करनी चाहिये ।

क्षय रोगका अरिष्ट ।

जिस क्षय-रोगीकी आँखें सफेद हो गई हों, अन्नमें अरुचि हो—खानेको मन न चाहता हो और ऊर्द्ध श्वास चलता हो, उसे अरिष्ट है, वह मर जायगा ।

जिस रोगीका बहुत-सा वीर्य कष्टके साथ गिरता हो, वह क्षय-रोगी मर जायगा ।

अगर यक्ष्मा-रोगी खूब खानेपर भी क्षीण होता जाता हो, उसे अतिसार हो या उसके पेट और फोतोंपर सूजन हो, तो समझो कि रोगीको अरिष्ट है, वह मर जायगा।

नोट—इन ऊपर लिखे हुए उपद्रवोंमेंसे, यदि कोई एक उपद्रव भी उपस्थित हो, तो यक्ष्मा-रोगीका मरण समझना चाहिये।

क्षय-रोगीके जीवनकी अवधि।

आयुर्वेद ग्रन्थोंमें लिखा है,—जो यक्ष्मारोगी जवान हो और जिस की चिकित्सा उत्तमोत्तम वैद्य करते हों, वह एक हजार दिन या दो बरस, नौ महीने और दस दिन तक जी सकता है। कहा है:—

परं दिनसहस्रन्तु यदि जीवति मानवः।
सुभिषग्भिरुपक्रान्तस्तरुणः शोषपीड़ितः॥

मतलब यह है, कि यक्ष्मा रोग बड़ी कठिनसे आराम होता है। जिसकी टूटी नहीं होती, जिसपर ईश्वरकी दया होती है, उसे सद्वैद्य मिल जाते हैं। अच्छे अनुभवी विद्वान् वैद्योंकी चिकित्सासे यक्ष्मा-रोगी आराम हो जाता है; यानी प्रायः पौने तीन वरसकी उम्र बढ़ जाती है। इस अवधिके बाद, आराम हो जानेपर वह फिर यक्ष्मा-रोगमें फँसकर मर जाता है। किसी-किसीने तो यहाँ तक लिख दिया है। कि अगर यक्ष्मा रोगी दवा दारु करनेसे आराम हो जाय, तो मनमें समझो कि उसे यक्ष्मारोग था ही नहीं, कोई दूसरा रोग था। क्योंकि यक्ष्मा रोग तो किसी भी दवासे आराम होता ही नहीं।

हारीत मुनि कहते हैं—

सञ्जीवेच्चतुरो मासान्षण्मास वा बलाधिकः।
उत्कृष्टैश्च प्रतीकारैः सहस्राह तु जीवति।
सहस्रात्परतो नास्ति जीवेत राजयक्ष्मिणः॥

राजयक्ष्मा रोगी चार महीनों तक जीता है। अगर उसमें ताक़त ज़ियादा है, तो छै महीने जीता है। अगर उत्तम-से-उत्तम चिकित्सा

होती रहे, तो हज़ार दिन या पौने तीन बरस तक जीता है। हज़ार दिनसे अधिक किसी तरह नहीं जी सकता। क्योंकि इतने दिनों बाद उसके प्राण, बल और वीर्य क्षीण हो जाते और इन्द्रियाँ विकल हो जाती हैं।

जो यक्ष्मा कभी घटता और कभी बढ़ता नहीं, बल्कि एक समान बना रहता और उत्तम चिकित्सासे धीरे-धीरे घटता है, वह अन्तमें अच्छे इलाजसे घट जाता है। जिस यक्ष्मावालेकी खाँसी कभी घट जाती और कभी बढ़ जाती है, कभी कफ आता, कभी बन्द हो जाता और फिर बढ़ जाता है, वह यक्ष्मा रोगी तीन या छै महीनेसे ज़ियादा नहीं जीता—अवश्य मर जाता है। उस समय अमृत भी काम नहीं करता।

हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है, कि यक्ष्मा या तपेदिक पहले और दूसरे दर्जेका होनेसे आराम हो जाता है, तीसरे दर्जेपर पहुँच जानेसे बड़ी दिक़्क़तोंसे आराम होता और चौथेमें पहुँच जानेसे तो असाध्य ही हो जाता है।

चिकित्सा करने-योग्य क्षय-रोगी।

जिस क्षय-रोगीका शरीर ज्वरसे न तपता हो, जिसमें चलने-फिरनेकी कुछ सामर्थ्य हो, जो तेज़ दवाओंको सह सकता हो, जो पथ्य पालन करनेमें मज़बूत हो, जिसे खाना पच जाता हो और जो बहुत दुबला या कमज़ोर न हो, उस क्षय-रोगीकी चिकित्सा करनी चाहिये। ऐसे रोगीकी उत्तम चिकित्सा करनेसे वैद्यको यश मिल सकता है, क्योंकि ये सब क्षयरोगके पहले दर्जेके लक्षण हैं। "सुश्रुत" आदि ग्रन्थोंमें लिखा है:—

ज्वरानुबन्धरहितं बलवन्त क्रियासहम्।
उपक्रमेदात्मवन्तं दीप्ताग्निमकृशं नरम्॥

जो क्षय-रोगी ज्वरकी पीड़ासे रहित, बलवान, चिकित्सा-सम्बन्धी क्रियाओंको सह सकने वाला, यत्न करने वाला, धीरज धरने वाला और प्रदीप्त अग्निवाला हो और जो दुबला न हो, उसकी चिकित्सा करनी चाहिये।

निदान-विशेषसे शोष विशेष ।

शोषरोगके और छै भेद ।

निदान विशेषसे शोष या क्षय रोग छै तरहका होता है:—

(१) व्यवाय शोष—यह अति मैथुनसे होता है।

(२) शोक शोष—यह बहुत शोक या रंज करनेसे पैदा होता है।

(३) वार्द्धक्य शोष—यह असमयके बुढ़ापेसे होता है।

(४) व्यायाम शोष—यह बहुत ही कसरत-कुश्तीसे होता है।

(५) अध्व शोष—यह बहुत राह चलनेसे होता है।

(६) व्रण शोष—यह व्रण या घाव होनेसे होता है।

उरःक्षत शोष—यह छातीमे घाव होनेसे होता है।

नोट—यद्यपि उरःक्षत रोगको यक्ष्मासे अलग, पर उसके बाद ही कई आचार्यों ने लिखा है, पर हम उसे यहाँ इसलिये लिख रहे हैं कि उसकी और यक्ष्माकी चिकित्सामें कोई प्रभेद नहीं। जो यक्ष्माका इलाज है, वही उरःक्षत का इलाज है।

व्यवाय शोषके लक्षण ।

इस शोषमें, "सुश्रुत" में लिखे हुए, वीर्यक्षयके सब चिह्न होते हैं; यानी लिंग और अण्डकोषों—फोतोंमें पीड़ा होती है, मैथुन करनेकी सामर्थ्य नहीं रहती अथवा मैथुन करते समय अनेक बार वीर्य स्खलित होता है; पर बहुत थोड़ा वीर्य निकलता है और रोगीका शरीर पाण्डुवर्णका हो जाता है। इस प्रकारके क्षय रोगमें पहले वीर्य क्षय होता है। वीर्यके क्षय होनेसे वायु कुपित होकर मज्जा आदि धातुओंको क्षय करता है।

खुलासा यह है, जो अत्यन्त मैथुन करते हैं, उनका शरीर पीला पड़ जाता है। क्योंकि वीर्यके क्षय होनेसे उलटे क्रमसे धातुएँ क्षीण होने लगती हैं। पहले वीर्य क्षीण होता है, फिर वायु कुपित होता और मज्जाको क्षीण करता है। मज्जाके क्षीण होनेसे अस्थियाँ क्षीण होती हैं। अस्थियोंके क्षीण होनेसे मेद, मेदके क्षीण होनेसे मांस, मांसके क्षीण होनेसे खून और खूनके क्षीण होनेसे रस क्षीण होता है। अथवा यों समझिये कि, जब वीर्य क्षीण हो जाता है, तब मज्जा उसकी कमीको पूरा करती है और खुद कम हो जाती है। मज्जाको कम देखकर, अस्थियाँ उसकी कमीको पूरा करतीं और खुद कम हो जाती हैं। इसी तरह एक दूसरी धातुकी कमी पूरी करनेके लिए प्रत्येक धातु कम होती जाती है। धातुओंके कम होने या क्षीण होनेसे मनुष्य क्षीण हो जाता है।

शोक शोषके लक्षण।

जिस चीज़के न होने या नष्ट हो जानेसे रोगीको शोक होता है, शोक शोषमें, उसी चीज़का ध्यान उसे सदैव बना रहता है। उसके अङ्ग शिथिल हो जाते हैं। व्यवाय-शोष-रोगीकी तरह उसकी शुक्र आदि समस्त धातुएँ क्षीण होने लगती हैं। फ़र्क़ इतना ही होता है, कि व्याधिके प्रभावसे लिंग और फोतो प्रभृतिमें पीड़ा आदि उपद्रव नहीं होते।

खुलासा यह है जिस तरह अत्यन्त स्त्री-प्रसंग करनेसे शोष रोग हो जाता है, उसी तरह शोक, चिन्ता या फ़िक्र करनेसे भी शोष रोग हो जाता है। शोक-शोष होनेसे शरीर ढीला और गिरा-पड़ा-सा रहता है और बिना धातु-क्षयके भी धातुक्षयके लक्षण देखनेमें आते हैं। चिन्ताके समान शरीरकी धातुओंको नाश करनेवाला और दूसरा नहीं है। चिन्तासे क्षणभरमें हाथ-पैर गिर पड़ते हैं, बैठ कर उठा

नहीं जाता और चार क़दम चला नहीं जाता । चिता और चिन्ता दो बहिन हैं । इन दोनोंमें चिन्ता बड़ी और चिता छोटी है । क्योंकि चिता तो निर्जीव या मुर्देको जलाकर भस्म करती है, पर चिन्ता जीते हुएको जलाती और मोटे-ताज़े शरीरको ख़ाक कर देती है । चिन्तामें इतना बल है, कि वह अकेली ही, बिना किसी रोगके, खून और मांस आदि धातुओंको चर जाती है । इस रोगमें सारे काम स्वयं चिन्ता करती है, रोगका तो नाम है; अतः चिकित्सकको पहले रोगीका शोक दूर करना चाहिये । क्योकि रोगके कारण—चिन्ताके मिटे बिना रोग आराम हो नहीं सकता ।

वार्द्धक्य शोषके लक्षण ।

वार्द्धक्य शोषवाले या जरा-शोष-रोगीका शरीर दुबला हो जाता है । वीर्य, बल, बुद्धि और इन्द्रियाँ कमज़ोर या मन्दी हो जाती हैं, कँपकँपी आती है, शरीरकी कान्ति नष्ट हो जाती है, गलेकी आवाज़ काँसीके फूटे बासन-जैसी हो जाती है, थूकनेसे कफ नहीं निकलता, शरीर भारी रहता और भोजनसे अरुचि रहती है । मुँह, नाक और आँखोंसे पानी बहा करता है, पाखाना और शरीर दोनों ही सूखे और रूखे हो जाते हैं ।

खुलासा यह है, जो यक्ष्मा रोग जरा अवस्था, बुढ़ापे या ज़ईफीसे होता है, उसमें रोगीका शरीर एकदम दुबला हो जाता है, वीर्य कम हो जाता है, बुद्धि कमजोर हो जाती है, इन्द्रियोंके काम शिथिल हो जाते हैं, आँख, नाक, कान आदि इन्द्रियाँ अपने-अपने काम सुचारु रूपसे नहीं करतीं, हाथ और मुँह काँपते हैं, खाना अच्छा नहीं लगता, गलेसे फूटे हुए काँसीके बर्तन-जैसी आवाज़ निकलती है; रोगी घबरा जाता है, पर कफ नहीं निकलता, शरीरपर बोझ-सा रखा जान पड़ता है; मुँहका स्वाद बिगड़ जाता है; मुँह, नाक और आँखोंसे

पानी गिरता है, मल या पाखाना सूखा और रूखा उतरता है तथा शरीर भी सूखा और रूखा हो जाता है।

नोट—यह शोष रोग उस बुढ़ापेमें बहुत कम होता है, जो जवानी पार होने या अपने समयपर सबको आता है; बल्कि असमयके बुढ़ापेमें होता है। कहते हैं, यक्ष्मा रोग बहुधा चालीस सालसे कमकी उम्रमें होता है।

अध्व शोषके लक्षण ।

अध्व शोष अधिक रास्ता चलनेसे होता है। इस शोषमें मनुष्य के अङ्ग शिथिल या ढीले हो जाते हैं। शरीरकी कान्ति आगमें भुनी हुई चीज़के जैसी और खरदरी हो जाती है, शरीरके अवयव छूनेसे स्पर्शज्ञान नहीं होता और प्यास लगनेके स्थान—गला और मुँह सूखने लगते हैं।

खुलासा यह है कि, इस शोषवालेका सारा शरीर ढीला और बेकाम हो जाता है, शरीरकी शोभा जाती रहती है, हाथ-पैरोंमें चुटकी काटनेपर कुछ मालूम नहीं होता; यानी वे सूने हो जाते हैं और कंठ तथा मुख सूखते हैं।

व्यायाम शोषके लक्षण ।

इस प्रकारके शोषमें अध्वशोषके लक्षण मिलते हैं और क्षत या घाव न होनेपर भी, उरःक्षत शोषके चिह्न नज़र आते है।

ध्यान रखना चाहिये, जो लोग अधिक कसरत-कुश्ती या और मिहनतके काम करते हैं, अपने आधे बलके अनुसार कसरत आदि नहीं करते, उनको निश्चय ही यक्ष्मा रोग हो जाता है। जो मूर्ख केवल कसरतसे बलवृद्धि करनेकी हौंस रखते हैं, उन्हें इस बातपर ध्यान देना चाहिये। कसरतके नियम-क़ायदे हमने अपनी "स्वास्थ्य-रक्षा" में विस्तारसे लिखे हैं।

व्रणशोषके निदान-लक्षण।

अगर व्रण या फोड़े वाले मनुष्यके शरीरसे रुधिर या खून निकल जाता है अथवा और किसी वजहसे खून घट जाता है, घावमें दर्द होता और आहार घट जाता है, तो उसको शोष रोग हो जाता है।

उरःक्षत शोषके निदान।

बहुत ज़ियादा तीर कमान चलाने, बड़ा भारी बोझ उठाने, बलवानके साथ युद्ध या कुश्ती करने, विषम या ऊँचे-नीचे स्थानसे गिरने, दौड़ते हुए बैल, घोड़े, हाथी, ऊँट या मोटर गाड़ी आदिके रोकने, लकड़ी, पत्थर या हथियार आदिको ज़ोरसे फैकने, दूसरोको मारने, बहुत ज़ोरसे चीख़ने, वेदशास्त्रोंके पढ़ने, ज़ोरसे भागने या दूर जाने, गहरी नदियोंको तैरकर पार करने, घोड़ेके साथ दौड़ने, अकस्मात् उछलने-कूदने या छलांग भरने, कला खाने, जल्दी-जल्दी नाचने अथवा ऐसे ही साहसके और काम करनेसे मनुष्यकी छाती फट जाती है और उसे भयङ्कर उरःक्षत रोग हो जाता है। जो लोग अत्यन्त चोट लगनेपर भी स्त्री-सङ्गम करते हैं और जो रूखा तथा बहुत थोड़ा प्रमाणका भोजन करते हैं, उन्हें भी उरःक्षत रोग होता है।

खुलासा यह है, कि जो लोग ऊपर लिखे काम करते है, उनकी छाती फट जाती और उसमें घाव हो जाते हैं। इस छातीमें घाव होने के रोगको ही "उरःक्षत" रोग कहते हैं; क्योंकि उरका अर्थ हृदय और क्षतका अर्थ घाव है। उरःक्षत रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी छाती फट या टूटकर गिर पड़ना चाहती है।

क्षय और उरःक्षतके निदान-लक्षण आदि महामुनि हारीतने विस्तारसे लिखे हैं। उनके जाननेसे पाठकोको बहुत कुछ लाभ होने की सम्भावना है, अतः हम उन्हें भी यहाँ लिखते हैं:—

उरःक्षत रोगीकी छाती बहुत दुखती है। ऐसा जान पड़ता है,

मानो कोई छातीको चीरे डालता है या उसके दो टुकड़े किये डालता है, पसलियोंमें दर्द होता है, सारे अंग सूखने लगते हैं, देह काँपने लगती है; अनुक्रमसे वीर्य, बल, वर्ण, कान्ति और अग्नि क्षीण होती है; ज्वर चढ़ता है, मनमें दीनता होती है, मलभेद या दस्त होते हैं, अग्नि मन्द हो जाती है; खाँसनेसे काले रङ्गका, बदबूदार, पीला, गाँठदार, बहुत-सा खून-मिला कफ बारम्बार गिरता है। उरःक्षत रोगी वीर्य और ओजके क्षयसे अत्यन्त क्षीण हो जाता है।

खुलासा यह है, कि जो आदमी अपनी ताक़तसे ज़ियादा काम करता है, उसकी छाती फट जाती है; यानी उसके लंग्ज़ या फैंफड़ोंमें ख़राब हो जाती है, वह फट जाते हैं। उनके फटने या उनमें घाव हो जानेसे मुँहसे खून आने लगता है। अगर उस घावका जल्दी ही इलाज नहीं होता, वह ज़ख्म दवाएँ खिलाकर जल्दी ही भरा नहीं जाता, तो वह पक जाता है। पकनेसे मवाद पड़ जाता है और वही मुँहसे निकलने लगता है। वह घाव फिर नहीं भरता और नासूर हो जाता है। बस, इसीको "उरःक्षत" कहते हैं। उरःक्षतका अर्थ हृदयका घाव है। लंग्ज़ या फैंफड़े हृदयमें रहते हैं, इसीसे इसे "उरःक्षत" कहते हैं।

नोट—याद रखो,—लिवर, कलेजा, जिगर या यकृतमें बिगाड़ होनेसे भी मुँहसे खून या मवाद आने लगता है। अतः वैद्यको अच्छी तरह समझ-बूझकर इलाज करना चाहिये। मनुष्य-शरीरमें यकृत दाहिनी ओरकी पसलियोंके नीचे रहता है। इसका मुख्य काम खून और पित्त बनाना है।

जब यकृत या लिवरमें मवाद भर जाता या सूजन आ जाती है, तब उसके छूनेसे तकलीफ़ होती है। अगर दाहिनी तरफ़की पसलीके नीचे दबानेसे सख्ती-सी मालूम हो अथवा फोड़ा-सा दूखे, कुछ पीड़ा हो अथवा दाहिनी करवट लेटनेसे दर्द हो या खाँसी जोरसे उठे, तो समझो कि यकृतमे मवाद भर गया है।

जब किसी रोगीका पुराना ज्वर या खाँसी अनेक चेष्टा करनेपर भी आराम न हों, कम-से-कम तब तो यकृतकी परीक्षा करो। क्योंकि यकृतमें सूजन आये बिना ज्वर और खाँसी बहुत दिनों तक ठहर नहीं सकते।

उरःक्षतके विशेष लक्षण।

उरःक्षत रोगीकी छातीमें अत्यन्त वेदना होती है, खूनकी कय होती हैं और खाँसी बहुत आती है; खून, कफ, वीर्य और ओजका क्षय होनेसे लाल रंगका खून-मिला पेशाब होता है तथा पसली, पीठ और कमरमें घोरातिघोर वेदना होती है।

निदान विशेषसे उरःक्षतके लक्षण।

व्रणके अवरोधसे, धातुको क्षीण करने वाले मैथुनसे, कोठेम वायुकी प्रतिलोमता और प्रतिलोम हुए मलसे जिसकी छाती फट जाती है,—उसका श्वास, अन्न पचते समय, बदबूदार निकलता है।

साध्यासाध्य लक्षण।

अगर उरःक्षत रोगके कम लक्षण हों, अग्निदीप्त हो, शरीरम बल हो और यह रोग थोड़े ही दिनोंका हुआ हो, तो साध्य होता है; यानी आराम हो जाता है।

जिस उरःक्षतको पैदा हुए एक साल हो गया हो, वह बड़ी मुश्किलसे आराम होता है।

जिस उरःक्षतमें सारे लक्षण मिलते हों, उसे असाध्य समझकर उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये।

नोट—अगर कोई उत्तम वैद्य मिल जाता है, तो आराम हो भी जाता है, पर रोगी हज़ार दिनसे अधिक नहीं जीता।

अगर मुखसे खून गिरता है यानी खूनकी क़य होती हैं, खाँसी का ज़ोर होता है, पेशाबमें खून आता है, पसलियोंमें दर्द होता है और पीठ तथा कमर जकड़ जाती है—तो उरःक्षत रोगी नहीं जीता, क्योंकि ये असाध्य रोगके लक्षण हैं।

यक्ष्मा-चिकित्सामें चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें ।

(१) सभी तरहके यक्ष्मा त्रिदोषज होते हैं; यानी हर तरहके यक्ष्मा वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंके कोपसे होते हैं । यद्यपि यक्ष्मामें तीनो ही दोषोंका कोप होता है, पर तीनोंमेंसे किसी एक दोषकी उल्वणता या प्रधानता होती ही है । अतः दोषोंके बला-बलका विचार करके, शोषवालेकी चिकित्सा करनी चाहिये । "चरक" में लिखा है:—

यद्यपि सभी यक्ष्मा त्रिदोषसे होते हैं, तथापि वातादि दोषोंके बलाबलका विचार करके यक्ष्माका इलाज करना चाहिये । जैसे कन्धे और पसलियोंमें दर्द, शूल और स्वर-भेद हो, तो वायुकी प्रधानता समझनी चाहिये । अगर ज्वर, दाह और अतिसार हों एवं खूनकी कय होती हो, तो पित्तकी प्रधानता समझनी चाहिये । अगर सिर भारी हो, अन्नपर अरुचि हो, खाँसी और कण्ठकी जकड़न हो, तो कफकी प्रधानता जाननी चाहिये ।

जिस तरह दोषोंके बलाबलका विचार करना आवश्यक है; उसी तरह इस बातका भी विचार करना ज़रूरी है, कि रोगीके शरीरमें किस धातुकी कमी हो रही है, कौनसी धातु क्षीण हो रही है । जैसे रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र—इनमेंसे किस धातुकी क्षीणता है । अगर खून कम हो, तो खूनकी कमी पूरी करनी चाहिये । अगर रस-क्षयके लक्षण दीखें, तो रस-क्षयकी चिकित्सा करनी चाहिये । अगर मांस-क्षयके चिह्न हों, तो उसका इलाज करना चाहिये । क्योंकि बिना धातुओंके क्षीण हुए यक्ष्मा रोग असाध्य नहीं होता;

अनेक अधूरे या अधकचरे वैद्य यक्ष्माके निदान लक्षण मिला-कर, रोगीको यक्ष्मा नाशक उत्तमोत्तम औषधियाँ तो दमादम दिये जाते हैं, पर कौन-कौनसी धातुएँ क्षीण हो गई हैं, इसका ख़याल ही नही करते. इसीसे उनको सफलता नहीं होती, उनके रोगी आराम नहीं होते। यह काया इन्हीं रस रक्त आदि सातो धातुओं पर ठहरी हुई है। अगर ये क्षीण होंगी, तो शरीर कैसे रहेगा? यहाँ यह रस रक्त आदि धातुओके क्षय होनेके लक्षण और उनकी चिकित्सा साथ-साथ लिखते हैं—

रसक्षयके लक्षण।

अगर रसका क्षय होता है, तो बड़ी खुश्की रहती है, अग्नि मन्द हो जाती है, भूख नहीं लगती, खाना हज़म नहीं होता, शरीर काँपता है, सिरमें दर्द होता है, चित्त उदास रहता है, यकायक दिल बिगड़कर रंज या शोच हो जाता है और सिर घूमता है।

रस बढ़ानेवाले उपाय।

अगर क्षय रोगीके शरीरमें रस या रक्तकी कमीके चिह्न पाये जावें, तो भूलकर भी रसरक्त-विरोधी दवा न देनी चाहिये, वल्कि इनको बढ़ानेवाली दवा देनी चाहिये। हारीत कहते हैं,—जांगल देशके जीवोंका मास खाना, गिलोय, अदरख या अजवायनमें पकाया हुआ क्वाथ या जल पीना और काली मिर्चोंके साथ पकाया हुआ दूध रातके समय पीना अच्छा है। इनसे रसकी वृद्धि होती और क्षय रोग नाश होता है। अन्नोंमें गेहूँ, जौ और शालि चाँवल भी हित हैं। नीचे लिखे हुए उपाय परीक्षित हैं:—

(१) गिलोयका सत्त अदरखके स्वरसके साथ चटानेसे रस-रक्तकी वृद्धि होती है।

(२) गिलोयका काढ़ा या फाँट पिलाना भी रस और रक्त बढ़ानेको अच्छे हैं ।

(३) काली मिर्चोंके साथ पकाया हुआ गायका दूध अथवा औटाये हुए गायके दूधमें मिश्री और दस-पन्द्रह दाने गोल मिर्च डालकर पीना रसरक्त बढ़ानेका सर्वश्रेष्ठ उपाय है; पर इसे रात के समय पीना चाहिये । इस तरहका औटाया हुआ दूध जुकामको भी फौरन आराम करता है ।

नोट—इन उपायोंसे रस और रक्त दोनो बढ़ते हैं ।

(४) अगर रोगी खानेको माँगे, तो बरस दिनके पुराने गेहूँकी खमीर उठायी रोटी, जौकी पूरी और पुराने और शालि चाँवलोका भात—ये सब रोगीको दे सकते हो ।

रक्तक्षयके लक्षण ।

अगर रक्तक्षय या खूनकी कमी होगी, तो पाण्डुरोग हो जायगा, शरीर पीला पड़ जायगा, काम-धन्धेको दिल न चाहेगा, श्वास रोग होगा, मुँहमें थूक भर-भर आवेगा, अग्नि मन्द होगी, भूख न लगेगी और शरीर सूखेगा। अगर ये लक्षण दीखे, तो खूनकी कमी समझकर खून बढ़ानेके उपाय करने चाहिएँ ।

रक्त बढ़ानेके उपाय ।

हारीत कहते हैं:—घी, दूध, मिश्री, शहद, गोलमिर्च और पीपर—इनका पना बनाकर पीनेसे खूनकी वृद्धि अवश्य होती है ।

हारीत मुनिका यह योग हमने अनेक बार आज़माया है, जैसी तारीफ लिखी है वैसा ही है:—अगर रोगीका मिज़ाज सर्द हो तो पाव भर दूध औटालो; अगर मिज़ाज गरम हो तो औटाने की दरकार नहीं; कच्चे या औटे हुए दूधमें एक तोले घी, ६।७ माशे

मधु, एक तोले मिश्री, १५।२० दाने काली मिर्चोंके और आधी पीपर—इन सबको पीसकर मिला दो और एक दिल करलो। इसी को पना कहते हैं। इसको किसी दवाके बाद या अकेला ही सन्ध्या-सवेरे पिलानेसे खून बढ़ता है, इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं। इस पनेके पीनेसे अनेकों हाड़ोंके पंजर मोटे-ताज़े और तन्दुरुस्त हो गये। उनका क्षय भाग गया। पर ख़ाली इस पनेसे ही काम नहीं चल सकता। इसके पिलानेसे पहले, कोई यक्ष्मा-नाशक ख़ास दवा भी देनी चाहिये। अगर खूनकी कमी ही हो, कोई उपद्रव न हो और रोगका ज़ोर न हो, तो केवल इस पनेसे ही क्षय आराम होते देखा है। खाने को हल्का भोजन देना चाहिये।

मांस क्षयके लक्षण।

मांस-क्षय होनेसे शरीर एक दमसे दुबला-पतला हो जाता और काम धन्धेको दिल नहीं चाहता, क्योंकि शरीर शिथिल हो जाता है, नींद नहीं आती, किसी-किसीको बहुत ज़ियादा नींद आती है, बातें याद नहीं रहतीं और शरीरमें ताक़त नहीं रहती।

मेद क्षयके लक्षण।

मेदकी कमी होनेसे शरीर थका-सा रहता है, कहीं दिल नहीं लगता, बदन टूटता और चलने-फिरनेकी ताक़त कम हो जाती है; श्वास और खाँसीका ज़ोर रहता है; खानेको दिल नहीं चाहता, और अगर कुछ खाया जाता है, तो हज़म भी नहीं होता।

मेद बढ़ानेवाले उपाय।

"हारीत संहिता"में लिखा है,—अनूपदेशके जीवोंका मांस, हलके अन्न, घी, दूध, कल्प-संज्ञक शराब और मधुर पदार्थ, 'सितो-

पलादि चूर्ण,' पीपरोंके साथ पकाया हुआ बकरीका दूध—ये सब मेद बढ़ानेको उत्तम हैं। खुलासा यह कि, घी, दूध, मिश्री, मक्खन और मीठे शर्बत, जांगलदेशके जानवरोंके मांसका रस, हल्के और जल्दी हज़म होने वाले अन्न, सितोपलादि चूर्ण, शहदमें मिलाकर सवेरे-शाम चाटना और ऊपरसे मिश्री मिला हुआ बकरीका दूध पीना-मेदक्षय वाले क्षय रोगीको परम हितकर हैं। इनसे मेद बढ़ती और क्षय नाश होता है।

अस्थिक्षयके लक्षण।

अस्थि या हड्डियोंके क्षय होनेसे मन उदास रहता है, कामको दिल नहीं चाहता, वीर्य कम हो जाता है, मुटाई नाश हो कर शरीर दुबला हो जाता है, संज्ञा नहीं रहती, शरीर काँपता है, वमन होती हैं, शरीर सूखता है, सूजन आती है और चमड़ा रूखा हो जाता है इत्यादि।

नोट—राजयक्ष्मा या जीर्णज्वर अगर बहुत दिनों तक रहते हैं, तो आदमी की हड्डियाँ पोली पड़ जाती हैं। विशेषकर, हाथ, पैर, कमर और पसलियोंके हाड़ तो अवश्य ही पतले हो जाते हैं। हड्डियोंके पतले पड़नेसे ऊपर लिखे लक्षण होते हैं।

अस्थि वृद्धिके उपाय।

हारीत कहते हैं,—पके हुए घी और दूध अस्थि-वृद्धिके लिये अच्छे हैं। सब तरहके मीठे अन्न और जांगल देशके जीवोंके मांस भी हितकारी हैं।

शुक्र क्षयके लक्षण।

शुक्र या वीर्यके क्षय या कमीसे भ्रम होता है, किसी बात पर दिल नहीं जमता, अकस्मात् चिन्ता या फिक्र खड़ी हो जाती है, धीरज नहीं रहता, रोगी जीवनसे निराश हो जाता है, हाथ पैर और

मुँहपर सूजन आ जाती है, रातको नींद नहीं आती, मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहता है; अथवा दाह या जलन होती है, क्रोध आता है, स्त्रियाँ बुरी लगती है, शरीर काँपता है, जी घबराता है, जोड़ोंपर सूजन आ जाती है और शरीर रूखा हो जाता है।

शुक्र बढ़ानेके उपाय।

हारीत कहते हैं, अगर वीर्य कम हो गया हो, तो उसके बढ़ानेके लिये नीचे लिखे पदार्थ हित हैं। जैसे,—अच्छी तरह पकाये हुए रस, नौनी घी, दूध, मीठे पदार्थ, ककहीकी जड़की छाल, विदारीकन्द और सेमलकी मूसरीको दूधके साथ मिश्री मिलाकर पीना। चौथे भागके पृष्ठ १८४ में लिखी हुई "धातुवर्द्धक-सुधा" गायको खिलाकर, वही दूध पीनेसे वीर्य खूब बढ़ता है।

(२) अगर क्षय-रोगी ताक़तवर हो और उसके वातादिक दोष बढ़े हुए हों तो स्नेह, स्वेद, वमन, विरेचन और वस्ति-क्रियासे उसका शरीर शुद्ध करना चाहिये। पर, अगर रोगीके रस रक्त आदि धातु क्षीण हो गये हों, तो भूलकर भी वमन विरेचन आदि पञ्चकर्मों से काम न लेना चाहिये। जो वैद्य बिना सोचे-समझे ऊँटपनेसे क्षय-रोगीकी शुद्धिके लिये कय और दस्त आदि कराते हैं, उनके रोगी बिना मौत मरते हैं। मनुष्योंका बल वीर्यके अधीन है और जीवन मलके अधीन है, इसलिये धातुक्षीण-क्षय-रोगीके वीर्य और मलकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये। जिसमें क्षय-रोगीका जीवन तो मल ही के अधीन होता है। वाग्भट्टमें लिखा है—

सर्वधातुक्षयार्त्तस्य बलं तस्य हि विड्बलम्।

जिसकी समस्त धातुएँ क्षीण हो गई हैं, उस क्षयरोगीको एक मात्र विष्ठाके बलका ही सहारा है।

"वाग्भट्ट"में ही और भी कहा है, कि क्षय रोगीका खाया-पिया, शरीर और धातुओंकी अग्निसे न पककर, कोठोंमें पकता है और

मल हो जाता है और उसी मलके सहारे वह जीता है। इससे क्षय-रोगी अगर बलवान न हो तो उसे पञ्चकर्मोंसे शुद्ध न करना चाहिये। अगर दस्त एकदम न होता हो, मल सूख गया हो, तो हलकी सी दस्तावर दवा देकर एकाध दस्त करा देना चाहिये।

(३) कोई भी रोग क्यो न हो, सबमें पथ्य-पालन और अपथ्य के त्यागकी बड़ी जरूरत है। बिना पथ्य-पालन किये रोगी अमृतसे भी आराम हो नहीं सकता है, जब कि पथ्य-पालनसे बिना दवाके ही आराम हो जाता है। बहुत-से रोग ऐसे हैं, जिनमें रोगीका मन उन्हीं चीजोंपर चलता है, जिनसे रोगीका रोग बढ़ता है अथवा जो चीजें रोगीके हक़में नुक़सानमन्द हों। ख़ासकर क्षय रोगीका दिल ऐसे ही पदार्थोंपर चलता है, जिनसे उसकी रस, रक्त, मांस, मेद आदि धातुएँ क्षीण होनेकी सम्भावना हो। इसलिये क्षय रोगीका मन जिन-जिन पदार्थोंपर चले, उन-उन पदार्थोंको उसे हरगिज़ न देना चाहिये। उसे ऐसे ही पदार्थ देने चाहियें, जिनसे उसकी धातुएँ बढ़ें और गरमी कम हो। क्षय-रोगीको मीठे घन पदार्थ सदा हितकारी हैं, क्योंकि इनसे धातुओं की वृद्धि होती है।

(४) अगर जीर्णज्वर और यक्ष्मावालेको उत्तम-से-उत्तम दवा देनेपर भी लाभ न हो, तो उसके यकृतपर ध्यान देना चाहिये। क्योंकि यकृतके दोष आराम हुए बिना हज़ारों दवाओंसे भी जीर्ण ज्वर और क्षय रोग आराम हो नही सकते। यकृतमें ख़राबी होने, सूजन आने या मवाद पड़नेसे मन्दा-मन्दा ज्वर चढ़ा रहता है, भूख नहीं लगती, कमज़ोरी आ जाती है और शरीर पीला हो जाता है। हमारे शास्त्रोंमें यकृतके निदान लक्षण बहुत ही कम लिखे हैं। वंगसेनने वेशक अच्छा प्रकाश डाला है। वह लिखते हैं—

मन्दज्वराग्निः कफपित्तलिंगै रुपद्रुतः क्षीणबलोतिपाण्डुः ।
सव्यान्य पार्श्वेयकृतप्रदुष्टे ज्ञेयं यकृदाल्युदरं तथैव ॥

रोगीके शरीरमें मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहे, भूख मारी जाय, कफ और पित्तका कोप दीखे, बल नाश हो जाय और शरीरका रङ्ग पीला पड़ जाय, तो समझो कि दाहिनी पसलीके नीचे रहने वाला यकृत—लिवर—कलेजा या जिगर ख़राब हो गया है।

हिकमतकी पुस्तकोंमें लिखा है, अक्सर तपेकोनः, तपेदिक और सिलकी बीमारी वालो यानी जीर्णज्वर, क्षय और उर.क्षत-रोगियोंके यकृतमें सूजन या वरम आ जाती है। यकृत या लिवरमें सूजन आजानेसे जीर्णज्वर और यक्ष्मा तथा उरःक्षत रोग असाध्य हो जाते हैं। अगर जल्दी ही यकृतका इलाज न करनेसे उसमें मवाद पड़ जाता है, तो उस दशामें मुँहकी राहसे वह मवाद या ज़रा-ज़रा-सा खून-मिला-मवाद निकलने लगता है। "इलाजुल गुर्वा" में लिखा है, सिल या फैंफड़ेमें घाव होनेसे ऐसा बुख़ार आता है, कि वह सैकड़ो तरहके उपाय करनेसे भी नहीं उतरता। खाँसीके साथ खून निकलता और रोगी दिन-दिन बल-हीन होता जाता है। इस हालतमें बासलीककी फस्द खोलना और पीछे ज्वर और खाँसीकी दवा करना हितकारी है। इसकी साफ पहचान यही है. कि यकृतमें सूजन और मवाद पड़नेसे रोगी अगर दाहिनी करवट सोता है, तो खाँसी ज़ोरसे उठती है, अतः रोगी दाहिनी करवट सोना नहीं चाहता और सो भी नहीं सकता। यकृतकी ख़राबीका हाल वैद्य हाथसे छूकर भी जान सकता है। अगर दाहिनी पसलियोंके नीचे दबानेसे कड़ापन मालूम होता हो, पके फोड़े पर हाथ लगाने-जैसा दर्द होता हो, तो निश्चय ही यकृतमें ख़राबी हुई समझनी चाहिये। इस हालतमें फस्द खोलना, यकृत पर लेप लगाना और यकृत-दोष नाशक दवा देना हितकारी

है। अगर यकृतमें दर्द हो, तो उस पर तारपीनका तेल मलकर गरम जलसे सेक करना चाहिये अथवा गोखुरूको गरम करके और बोतल में भर कर सेक करना चाहिये अथवा गरम जल या गोखुरूमें फलालैनका टुकड़ा भिगोकर सेक करना चाहिये। हमने यहाँ दो चार बातें इशारतन लिख दी हैं। यकृतके निदान-लक्षण और चिकित्सा हमने सातवें भागमें लिखे हैं।

(५) यक्ष्मा रोग नाशार्थ कोई खास दवा जैसे, लवंगादि चूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, च्यवनप्राश अवलेह, द्राक्षारिष्ट, जातीफलादि चूर्ण, मृगांक रस प्रभृति उत्तमोत्तम रसों या दवाओंमेंसे कोई देनी चाहिये, पर साथ ही ऊपरके उपद्रव जैसे कन्धोंका दर्द और स्वरभङ्ग आदिके ऊपरी उपाय भी करने चाहिएँ। इस तरह करनेसे रोगीको उतना ज़ियादा कष्ट नहीं होता। जैसे,—रोगी बहुत ही कमज़ोर हो तो उसे घी, दूध, शहद, कालीमिर्च और मिश्रीका पना बनाकर, किसी दवाके बाद, सबेरे-शाम थोड़ा-थोड़ा पिलाना चाहिये। अथवा नौनी घीमें मिश्री और शहद मिलाकर खिलाना चाहिये। बकरीका दूध पिलाना चाहिये। बकरीके घीमें दूरा या चीनी मिलाकर पिलाना चाहिये। अगर पच सके तो बकरीका मांस खिलाना चाहिये। यक्ष्मा-रोगीको बकरी और हिरन बहुत हितकारी हैं, इसीसे वैद्य लोग क्षय-रोगीके पलँगके पास हिरन या बकरीको बाँध रखते हैं। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

छागमांसं पयश्छागं छागं सर्पिः सनागरम् ।
छागोपसेवा शयनं छागमध्ये तु यक्ष्मनुत् ॥

बकरीका मांस खाना, बकरीका दूध पीना, सोंठ मिला कर बकरीका घी खाना, बकरोंकी सेवा करना और बकरे-बकरियोंमें सोना—यक्ष्मा-रोगीको हित है।

अगर कन्धों और पसलियोंमें दर्द हो, तो शतावर, क्षीर-काकोली, गन्धतृण, मुलहटी और घी—इन सबको पीस और गरम करके, इनका लेप दर्दस्थानों पर करना चाहिए। अथवा गूगल, देवदारु, सफेद चन्दन, नागकेशर और घी—इन सबको पीस और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप दर्द-स्थानोंपर करना चाहिये।

अगर खूनकी क़य होती हो, तो महावरका स्वरस दो तोले और शहद ६ माशे—इनको मिलाकर पिलाना चाहिये।

नोट—पीपल, बेर और शीशम आदि वृक्षोंकी शाखाओंपर जो लाल-लाल पदार्थ लगा रहता है, उसे "लाख" कहते हैं। पीपरकी लाख उत्तम होती है। पीपरकी लाखको गरम जलमें पकाकर महावर बनाते हैं।

(६) लिख आये हैं, कि क्षय-रोगीके पथ्यापथ्यका खूब ख़याल रखना चाहिये। उसे अपथ्य अहार-विहारोंसे बचाना चाहिये। क्षयवालेको आग तापना, रातमें जागना, ओसमें बैठना, घोड़े आदि पर चढ़ना, गाना-बजाना, ज़ोरसे चिल्लाना, स्त्री-प्रसंग करना, पैदल चलना, कसरत करना, हुक्का-सिगरेट पीना, मलमूत्र आदि वेगोंका रोकना, स्नान करना और कामोत्तेजक कामोंसे बचना चाहिये; क्योंकि इस रोगमें मैथुन करनेकी इच्छा बहुत प्रबल होती है। मैथुन करनेसे वीर्य क्षय होता है और वीर्य-क्षयसे क्षयरोग होता है। जिस कामसे रोग पैदा हो, वही काम करना सदैव बुरा है। विशेषकर, वीर्यक्षयसे हुए यक्ष्मामें तो इस बातको न भूलने की बड़ी ही ज़रूरत है।

क्षय रोगपर
प्रश्नोत्तर।

प्र०—क्षयरोगके और नाम क्या हैं ?

उ०—क्षयरोगको संस्कृतमें क्षय, यक्ष्मा, शोष और रोगराज कहते हैं।

हिकमतमें इसे तपेदिक और सिल कहते हैं।

डाक्टरीमें इसे कनज़मशन (Consumption), थाइसिस (Pthisis) और टूबर क्लोसिस (Tuberculosis) कहते हैं।

प्र०—क्षयके ये नाम क्यो ?

उ०—इस रोगमें, शरीरका रोज़-ब-रोज़ क्षय होता है; अथवा यह शरीरकी रस रक्त आदि धातुओंको क्षय करता है अथवा यह रोग वैद्योंकी चिकित्साका क्षय करता है, इसलिये इसे "क्षय" कहते हैं।

यह रोग पहले किसी सोम या चन्द्र नामके राजाको हुआ था, इसलिये इसे "राजयक्ष्मा" कहते हैं।

राजाओंके आगे-पीछे अनेक लोग चोबदार मुसाहिब वगैरः चलते हैं, उसी तरह इसके साथ भी अनेक रोग चलते हैं, इसलिए इसे "रोगराज" कहते हैं।

यह रस आदि सात धातुओंको सुखाता है, इसलिए इसे "शोष" कहते हैं।

कनज़मशनका अर्थ भी क्षय है। इस रोगसे शरीर छीजता है। फैफड़ोंकी नाशकारिणी शक्ति जल्दी-जल्दी या धीरे धीरे तरक्की करती है, इसलिए इसे अँगरेज़ीमें थाइसिस और कनज़मशन कहते हैं। इसको टूबर क्लोसिस इसलिए कहते हैं, कि एक टूबरकिल

नामक कीड़ा (Germ) या कीटाणु फेंफड़ोंमें पैदा होकर, उन्हें आहिस्ते-आहिस्ते खा-खाकर नष्ट कर देता है। साथ ही टॉकसाइन नामक एक भयंकर विष पदा कर देता है, जिसका परिणाम बहुत ही भयानक और मारक है।

प्र०—डाक्टरीमें क्षयके क्या कारण लिखे हैं ?

उ०—आयुर्वेदके मतसे हम इसके पैदा होनेके कारण लिख आये हैं। अब हम डाक्टरीसे इसके कारण दिखाते हैं—

डाक्टरीमें इसकी पैदाइशका कारण, असल में, कीटाणु या जर्म (Germ) है। बहुतसे क्षय-रोगी जहाँ-तहाँ थूक देते हैं। उनके थूक-खखारमें से कीटाणु श्वास-द्वारा या भोजनके पदार्थों पर बैठ कर दूसरे स्वस्थ लोगोंके फेंफड़ों या आमाशयोंमें घुस जाते हैं और इस तरह क्षय रोग पैदा करते हैं।

जो लोग मिलों या अंजनो वग़ैरः में काम करते हैं, अथवा छापे-ख़ानों या टेलरशापोंमें काम करते हैं अथवा बहुत शराब वग़ैरः पीते हैं, उनके शरीर इन कीटाणुओंके डेरा जमानेके लायक़ हो जाते हैं।

जिनके शरीर निमोनिया, प्लेग, इनफ्लूएंजा, चेचक या माता वग़ैरः रोगोंसे कमज़ोर हो गये हैं, उन पर क्षयके कीड़े जल्दी ही हमला कर देते हैं।

जिनके रहनेके स्थान घनी (Densely-populated) बस्तीमें होते हैं, जिनके घरोंमें अँधेरा ज़ियादा होता है, जिनके रहनेके कमरे खूब हवादार (Well ventilated) नहीं होते, जिनके श्वासमें धूल, धूआँ या गर्द गुबार ज़ियादा जाता है, उन पर क्षयके कीटाणु अवश्य हमला करते हैं।

जिनको रात-दिन नोन तेल लकड़ीकी चिन्ता रहती है, जिन्हें काफी भोजन और पर्याप्त घी-दूध नहीं मिलता, जो भंग, चरस,

अफीम, गाँजा, चन्डू और शराब वगैरः नशीली चीज़ोंको ज़ियादा सेवन करते हैं, जिन्हे घनी बस्तीमें रहनेकी वजहसे साफ हवा नहीं मिलती, जो लोग हस्त मैथुन—हैन्ड प्रैक्टिस या मास्टर बेशन प्रभृति क़ानून-कुदरतके ख़िलाफ काम करते हैं, उन सब लोगोंके शरीर क्षयके कीड़ोंके बसनेके लिए उपयुक्त स्थान होते हैं।

प्र०—कुछ और भी कारण बताओ।

उ०—छातीमें चोट लग जाने, किसी बुरी या बदबूदार चीज़के फैफड़ोंमें यकायक घुस जाने, गरम शरीरमें यकायक सर्दी लग जाने, गरम जगहसे यकायक सर्द जगहमें चले जाने, ठन्डी हवा या लूओंमें शरीर खुला रखने, किसी वजहसे फैफड़ों द्वारा खून जाने, ऋतुओं में उलट-फेर होने, किसी तेज़ चीज़से छातीके फटने आदि अनेकों कारणों से क्षय रोग होता है। लेकिन आजकल ज़ियादातर यह रोग रातमें जागने, वेश्याओंमें रातभर घूमने, अति मैथुन करने, रात-दिन घाटे-नफेकी चिन्ता करने, बाल-बच्चोंके गुज़ारेकी चिन्तामें चूर रहने आदि कारणोंसे होता है।

प्र०—यह रोग किनको अधिक होता है?

उ०—यह रोग मर्दोंकी अपेक्षा औरतोंको एवं बूढ़े और बच्चोंकी अपेक्षा जवानोंको ज़ियादा होता है। कोई-कोई कहते हैं कि, औरतों की अपेक्षा मर्दोंको यह ज़ियादा होता है। बहुत करके, अठारह सालकी उम्रसे तीस साल तककी उम्र वालोंको यह अपना शिकार बनाता है।

काश्मीर प्रभृति उत्तरीय देशोंमें यह रोग गरमी और जाड़ेमें होता है। पूर्वीय देशोंमें, ख़रीफकी ऋतुमें होता है। ऐसे लोग सुचिकित्सक की चिकित्सासे आराम हो सकते हैं, पर जिन्हें यह रोग गर्मियोंमें होता है, उनका आराम होना कठिन ही नहीं, असम्भव है।

जिनकी छाती छोटी होती है, जिनकी गर्दन लम्बी और आगे को झुकी हुई होती है, जिनके कन्धोंपर मांस बहुत ही कम होता है, ऐसे लोगोंको यह ज़ियादा होता है।

प्र०—क्षयकी साफ पहचान बताओ।

उ०—अगर नीचे लिखे लक्षण देखे जावें तो क्षय समझोः—

(१) कन्धे और पसलियोंमें दर्द।

(२) हाथ-पैरोंमें जलन होना।

(३) सारे शरीरमें महीन-महीन ज्वर रहना।

(४) शारीरिक वज़नका नित्य प्रति घटना।

प्र०—क्षयरोगीके लक्षण बताओ।

उ०—पहले खाँसी आती है। सूखी खाँसी बहुधा होती है। हलका हलका ज्वर रहता है। पीछे कुछ दिन बाद खाँसीमें खून आने लगता है। चेहरा लाल-सुर्ख़ हो जाता है। नाखून टेढ़े होने लगते और बहुत बढ़ जाते है। आँखें नेत्र-कोषोंमें घुस जाती हैं। पैरोंपर कभी-कभी सूजन चढ़ आती है। जिधरके फैफड़ेमें घाव होता है, उधरकी तरफ लेटनेसे तकलीफ होती है। कफ फैफड़ोंके घरोंमें जमा हो जाता है। उसकी गाँठें पड़ जाती है। अन्तमें पककर, राध आने लगती है।

अथवा यों समझिये:—

रोग होनेसे पहले रोगीको बहुत दिनों तक ज़ुकाम बना रहता है। नाक बहा करती है। छींकें आया करती हैं। पीछे ज़ुकामसे ही बुख़ार हो जाता है। यह बुख़ार ज़रा-सी फुरफुरी या सर्दी लगकर चढ़ता है। फैफड़ोंमें जलन-सी होने लगती है। खाँसी आती रहती है। उसमें कफके साथ थोड़ा-थोड़ा खून आता रहता है। दिलकी धड़कन (Palpitation of heart) बढ़ जाती है। छातीका दर्द धीरे-धीरे बढ़ता है। दमेके कारण बड़ी तकलीफ होती है। गला

मालूम है। हाथोंकी हथेली और पैरोंके तलवोंमें जलन होती है। कभी-कभी कण्ठके रुकनेसे रोगी बेचैन-सा हो जाता है। या तो नींद आती ही नहीं या बहुत ज़ियादा आती है। पहले तो जीभ सफ़ेद होती है, पर पीछे लाल नज़र आती है। आँखें भीतरको घुस जाती हैं। उनका रंग सफ़ेद हो जाता है। होठ काले या नीले हो जाते हैं। चेहरा ज़र्द हो जाता है। छातीमें सुई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है। रोगी बड़ी तकलीफ़से छातीको पकड़कर खाँसता है। बड़ी मुश्किल से थोड़ा लसदार और चेपदार कफ़ खूनी-मायल निकलता है।

प्र०—इसके लक्षण विशेष बताइये।

उ०—पहले पहले ही ज़ुकाम होता है, फिर सूखी खाँसी आने लगती है, यद्यपि इस समय ज्वर पैदा ही होता है, पर ज़ोरमें नहीं होता; तो भी इसके मारे रोगीको बड़ी तकलीफ़ होती है। रोगीके मुखसे लसदार-चेपदार और चिकना-चिकना बलग़म निकलने लगता है। इसके बाद, उस कफ़में ख़ून मिलकर आने लगता है, इसलिए वह स्याही-माइल होता है। इसके भी बाद, कभी सूखी, कभी गीली और कभी हरी पीप आने लगती है। बहुत देर ठहरकर खून-ही-खून ज़ियादा आने लगता है। उसमें घोर दुर्गन्ध होती है। पीपकी बदबू ऐसी होती है, जैसी कि मुर्देके सड़नेकी होती है। जिनकी पीप बहुत ही ज़ियादा सड़ जाती है या जिनके ज़ुकाम रोगके शुरूमें बहुत दिन तक बना रहता है, उनको कफ थूकनेके समय मुँह ही बदबू मालूम होती है।

जो बलग़म-थूक खाँसनेके साथ आता है, वह पानीमें डालनेसे डूब जाता है। रोगीके कफकी परीक्षा, पानीसे गिलास भरकर, उस में कफ डालकर की जाती है। हकीम लोग जलके भरे गिलासमें कफको डालते हैं। उसे बिना हिलाये-डुलाये, १२ घण्टे बाद देखते हैं। अगर कफ पानीपर तैरता रहता है तो रोगको साध्य मानते हैं, डूब जाता है तो असाध्य मानते हैं। अगर इस तरह जलकी परीक्षा से निर्णय नहीं होता, तो जलते हुए कोयलेपर कफको डालते हैं। अगर

उसके जलनेसे भयंकर बदबू उठती है तो उसे "सिल हक़ीक़ी" कहते हैं। यह अवस्था भयंकर होती है। रोगीका आराम होना असम्भव समझा जाता है। कोई कहते है, अगर कफके जलनेपर उससे हड्डीके जलने की सी बू या गन्ध आवे तो समझो कि, रोगीको ठीक "क्षय" रोग हुआ है। क्योंकि क्षयमें ज्वर और खाँसी प्रभृति लक्षण देखनेमें आते हैं। जीर्ण ज्वर प्रभृतिमें भी ये ही लक्षण होते हैं। इसलिये क्षय-ज्वर और दूसरे ज्वर या क्षयकी खाँसी और अन्य खाँसियोका पहचानना कठिन होता है।

प्र०—क्षयवालेके कफके सम्बन्धमें और भी कहिये।

उ०—लिख आये हैं, कि कफ चिपचिपा होता है। कभी वह अत्यन्त गाढ़ा गोंदसा होता है, कभी मटमैलासा खून-मिला होता है। उसमें गोंदकी तरह इतना चेप होता है कि, जिस बर्त्तनमें रोगी कफ थूकता है, उसके उल्टा कर देनेपर भी वह नही छूटता। अगर पीप कम पका होता है, तो उसके साथ खून आता है और घावके से खुरण्टके छिलके निकलते हैं। अगर आप किसी घड़ीसाज़से खुर्दबीन शीशा (micro-scope) लाकर वर्तनमें देखें, तो आपको उसमें क्षयरोगको पैदा करनेवाले कीटाणु या जर्म (Germs) दिखाई देंगे। इनके सिवा खून और चर्बी प्रभृति और भी कितने ही पदार्थ दीखेंगे।

प्र०—आप क्षयके लक्षण साफ तौरपर एक बार और बताइये, पर मुख्तसिरमें।

उ०—इस रोगवालेको बुखार हर वक्त चढ़ा रहता है। खाना खाने के बाद कुछ और बढ़ जाता है। इसके सिवा, ज़ुकाम, खाँसी, कफ का बहुतायतसे आना, कफके साथ पीप आना, बालोंका बढ़ना, कन्धो और पसलियोंमें वेदना, हाथ-पैरोंमें जलन, या तो भूख लगना ही नहीं या बहुत लगना, गालों या चेहरेपर ललाई, बदनमें रूखापन या खुश्की, मुँहसे खून आना वग़ैरः लक्षण अवश्य होते हैं। रोगीकी

नाड़ी तेज़, गरम, बारीक और अन्दरको घुसी हुई चलती है। पेशाब में चर्बी और चिकनाई आती है। रोगी दिन-ब-दिन सूखता जाता है।

प्र०—क्षयके ज्वरके सम्बन्धमें कुछ और कहिये।

उ०—क्षयरोगमें ज्वर तो मुख्य लक्षण है और खाँसी उसकी सहचरी है। इसमें थर्मामीटर लगाकर देखनेसे ज्वर प्रायः ९८॥ डिग्रीसे १०३ डिग्री तक देखा जाता है। किसीको इस रोगमें दो बार ज्वरके दौरे होते हैं। पहला दौरा दिनके १२ बजेसे दोपहर बाद २ बजे तक होता है। दूसरा दौरा शामके ६ बजेसे रातके ६ बजे तक होता है। पहला १२ बजेवाला दौरा कुछ खानेके बाद होता है। तड़काऊ, रातके तीन बजे, सभी क्षयवालोको पसीने आते हैं और ज्वर कम हो जाता है। पर ज्वरकी इस कमीसे रोगीको कोई लाभ नहीं होता, उसकी ताक़त रोज़-ब-रोज़ घटती जाती है। अन्तमें वह यमालयका राही होता है। हाँ, एक बात और है। प्रायः ज्वरका ताप १०३ डिग्री तक रहता है, पर कोई-कोईको इससे भी ज़ियादा होता है। सवेरे ३ बजे सभी क्षयवालोंका बुखार नहीं उतर जाता। कितनोंका बेशक कम हो जाता है; पर कितने ही तो चौबीसों घण्टों ज्वरके तापसे यकसाँ तपते रहते हैं; यानी हर समय ज्वर एकसा चढ़ा रहता है। जिनका ज्वर तड़काऊ तीन बजे पसीने आकर हलका हो जाता है, उनका ज्वर भी दिनके १२ बजे, दोपहरको, अवश्य फिर बढ़ जाता है।

प्र०—रोगीकी नाड़ीके सम्बन्धमें भी कुछ कहिये।

उ०—रोगीकी नाड़ी या नब्ज तेज़ चलती, गरम और बारीक रहती तथा भीतरको घुसी हुई सी चलती है। नाड़ीकी चाल बेशक तेज़ रहती है, लेकिन रोगकी कमी-बेशी होनेपर नाड़ीकी चालमें फर्क़ हो जाता है। रोग होनेपर, आरम्भमें, नाड़ीकी चाल तेज़ होती है, पर ज्यों-ज्यों रोग अपना भयङ्कर रूप धारण करता या बढ़ता जाता

है, नाड़ीकी चाल भी तेज़ होती जाती है। नाड़ीपर उँगली रखकर और दूसरे हाथमें घड़ी लेकर, अगर आप नाड़ीके खटके गिनें, तो आपको ९० से लेकर १०० तक खटके एक मिनटमें गिननेमें आवेंगे। लेकिन कभी-कभी एक मिनटमें ११० वार तक नाड़ीके खटके गिन्ती में आते देखे जाते हैं।

प्र०—क्षय ज्वरके पसीनो और दूसरे ज्वरोंके पसीनोंमें क्या अन्तर है?

उ०—क्षय-ज्वरमें रातके समय दो-तीन दफा बहुत ही ज़ियादा पसीने आते हैं, यहाँ तक कि ओढ़ने-बिछानेके सारे कपड़े पसीनोंसे तर हो जाते हैं। पसीने इस रोगमें छातीपर अकसर आते हैं; जब कि और ज्वरोंमें सारे शरीरमें आते हैं। इस रोगमें पसीने आनेसे रोगी एकदम जल्दी-जल्दी कमज़ोर होता जाता है। पसीनोंसे उसे सुख नहीं मिलता, उसका शरीर हल्का नही होता, जैसा कि दूसरे ज्वरोंमें पसीने आनेसे रोगीका शरीर हल्का हो जाता और उसे आराम मिलता है। रातमें पसीने आते है, उसे डाक्टरीमें रात के पसीने (Night Perspiration) कहते हैं। ये रातके पसीने इस क्षय रोगमें रोगके असाध्य (Incurable) होनेकी निशानी हैं। ऐसा रोगी नही बचता।

प्र०—इस रोगमें पेशाब कैसा होता है?

उ०—क्षय रोगीके पेशाबमें चर्बी और चिकनाई होती है। पेशाब का रंग किसी क़दर कलाई लिये होता है। जब रोगीका खून क्षयकी वजहसे जलता है, तब पेशाबमें श्यामता या कलाई होती है। जब पित्तकी ज़ियादती होती है तब पेशाबका रंग पीला होता है। अगर क्षय-रोगीका पेशाब सफेद रंगका हो तो समझो कि, रोगीकी ओज धातु क्षीण हो रही है। अगर ऐसा हो, तो रोगीको असाध्य समझो और उसका इलाज हाथमें मत लो। मूर्ख वैद्य रोगीका पेशाब सफेद

देखकर मनमें समझते हैं कि, रोगीको आराम है; लेकिन यह बात उल्टी है। क्षयमें पेशाब सफेद होना मरण-चिह्न है।

प्र०—अच्छा, क्षय-रोगीकी जीभ कैसी होती है ?

उ०—क्षय-रोगीकी जीभ शुरूमें सफेद रहती है, लेकिन दिन बीतनेपर वह लाल-लाल दिखाई पड़ती है। ज्यों-ज्यों रोगीका मरण-काल निकट आता जाता है, उसकी जीभ अनेक तरहके रंगोंकी दिखाई देने लगती है। कभी किसी रंगकी होती है और कभी किसी रंगकी।

प्र०—क्षय-रोगीके शरीरके किन-किन अंगोंमें वेदना होती है ?

उ०—क्षय-रोगीकी छातीमें भयङ्कर वेदना होती है। तीरसे छिदते हैं। उसकी पीठ और पसलियोंमें भी वेदना होती है। इसी तरह कभी कन्धे, कभी पीठ और कभी छाती या पसवाड़ोंमें पीड़ा होती है। अगर एक तरफके फैफड़ेमें रोग होता है तो पीड़ा एक तरफ होती है। अगर दोनो तरफके फैफड़ोंमें रोग होता है तो दोनों तरफ वेदना होती है। खाँसने, साँस लेने और दर्दकी जगहपर हाथ लगाने या दबानेसे बड़ी तकलीफ होती है।

प्र०—क्या क्षय-रोगीके शरीरकी तपत या गरमी कभी कम होती है ?

उ०—यद्यपि क्षय रोगीको पसीने दिन-रातमें कई बार और बहुत आते हैं। रातके समय तो ख़ास तौरसे बहुत पसीने आते हैं, पर इन पसीनोंसे उसकी तपत या शरीरकी गरमी कम नहीं होती। उसका बदन तो पसीनों-पर-पसीने आनेपर भी तपता ही रहता है। अगर ईश्वरकी कृपासे वह आराम ही हो जाता है, तब उसकी तपत कम होती है।

प्र०—क्षय रोगीके मल-त्याग और भूखकी क्या हालत होती है ?

उ०—इस रोगीको बहुधा भूख नहीं लगती, क्योंकि आमाशय अपना काम (Function) बन्द कर देता है। लिवर और तिल्ली

बढ़ जाते हैं। रोगीको वमन होतीं, जी मिचलाता और पतले दस्त लगते हैं।

प्र०—क्या क्षय रोगीका दिमाग़ भी ख़राब हो जाता है ?

उ०—आप जानते होंगे, मनुष्य शरीरमें ख़ून चक्कर लगाया करता है। वह हृदयमें आकर शुद्ध होता है और शुद्ध होकर शरीरके सब अङ्गोंको पोषण करता है। चूकि क्षय रोगमें फैंफड़े कफसे भर जाते हैं, इसलिये वह .ख़ूनको शुद्ध नही करते। अशुद्ध रक्त ही मस्तकमें जाता है। इसलिये मस्तकमें अनेक विकार हो जाते हैं। रोगीका सिर भारी रहता है। वह मनमानी बकता है। किसी बात पर क़ायम नहीं रहता, उसे नींद नहीं आती। रात-भर करवटें बदलता है। चैन नहीं पड़ता। करवट भी बदलना कठिन हो जाता है; क्योंकि ताक़त नही रहती। सीधा पड़ा रहता है। सीधे पड़े रहनेसे उसकी पीठ लग जाती है, अतः पीठमें घाव हो जाता है। बैठना चाहता है, पर बैठा नहीं रहा जाता, इसलिये फिर पड़ जाता है। मस्तिष्क-विकारोंके कारण रोगीको बड़ी तकलीफ और बेचैनी रहती है।

प्र०—कोई ऐसी तरकीब बताइये जिससे साधारण आदमी भी आसानीसे जान सके कि, रोगीको क्षय है या अन्य ज्वर ?

उ०—साधारण ज्वरमें, अगर खाना खानेके बाद, ज्वर रोगी पर आक्रमण करता है तो रोगीको मालूम हो जाता है कि, मुझे ज्वर चढ़ रहा है; पर यक्ष्मामें यह बात नहीं होती। क्षय वालेको भी भोजनके बाद ज्वर बढ़ता है, पर रोगीको पता नहीं लगता।

साधारण ज्वरमें, अगर पसीना आता है तो कमो-बेश सारे शरीरमें आता है; पर क्षय-ज्वरमें, पसीना छाती पर ज़ियादा आता है। यह फ़र्क़ है।

साधारण ज्वरमें, पसीने आनेसे रोगीका बदन हल्का हो जाता

है, उसे आराम मालूम होता है; पर क्षयज्वरमें पसीना आनेसे शरीर हल्का नहीं होता, बल्कि कमज़ोरी ज़ियादा जान पड़ती है।

साधारण किसी भी ज्वरमें, रोगीके शरीर पर हाथ रखने या उसका बदन छूनेसे उसी समय बदन गरम जान पड़ता है; किन्तु क्षय रोगीके शरीर पर हाथ रखनेसे, उसी समय, हाथ रखते ही, बदन गरम नहीं मालूम होता। हाँ, थोड़ी देर होनेसे गरमी जान पड़ती है।

साधारण कोई ज्वर अपने समय पर चढ़ता और समय पर उतर भी जाता है। और, सवेरेके समय तो ज्वर अवश्य ही उतर जाता है, लेकिन क्षय-रोगीका ज्वर हर समय कमोबेश बना ही रहता है। तीन बजे रातको खूब पसीने आते हैं, पर फिर भी ज्वर नहीं उतरता, कुछ-न-कुछ बना ही रहता है।

विषमज्वर या शीतज्वर आदिमें किनाइन (Quinine) देनेसे अवश्य लाभ होता है, लेकिन क्षयज्वरमें कुनैन देनेसे कोई फायदा नहीं होता, बल्कि नुक़सान ही होता है।

और ज्वरोंके साथ की खाँसियोंमें पीप नही आती, कफमें कोई गन्ध नहीं होती; लेकिन क्षयकी खाँसीमें रोगीके कफमें पीप होती है, खून होता है, उसमें बदबू होती है। अगर क्षय वालेका कफ आगके जलते हुए कोयले पर डाला जाता है, तो उससे हड्डी जलने की-सी या पीपकी-सी बुरी दुर्गन्ध आती है।

और ज्वरवाले रोगीका मुँह सोते समय खुला नहीं रहता। अगर खाँसी होती है तो कभी-कभी खुला रहता है, लेकिन क्षयरोगी का मुँह सोते समय खुला रहता है, क्योंकि उसके फैफड़े कमज़ोर हो जाते हैं।

प्र०—क्षय रोग तीन दर्जोंमें बाँटा जाता है, उसके तीनों दर्जोंके लक्षण कहिये।

उ०—नीचे हम तीनों अवस्थाओंके लक्षण लिखते हैं:—

पहला दर्जा—सबसे पहले जुकाम होता है, वह बहुत दिनों तक बना रहता है। थोड़ी-थोड़ी सूखी खाँसी आती रहती है। फिर जुकाम बिगड़ जाता और बढ़कर मन्दा-मन्दा ज्वर पैदा कर देता है। यह ज्वर ऐसा होता है कि, रोगीको मालूम भी नहीं होता। खाँसने पर थोड़ा-थोड़ा पतलासा कफ आता है। हाथोंकी हथेलियाँ और पावोंके तलवे जलते हैं। कन्धे और पसवाड़े दर्द करते हैं। भूख-प्यास वगैरःमें ज़ियादा फेर-फार नहीं होता। यह पहला दर्जा है। अगर रोगी यहीं चेत जावे; किसी अनुभवी वैद्यके हाथमें चला जावे, तो जगदीशकी दयासे आराम हो सकता है।

दूसरा दर्जा—ग़फ़लत करनेसे जाड़ा लगकर ज्वर चढ़ने लगता है। जिस समय पीप बनने लगती है, ज्वर ठण्ड लगकर रातमें दो बार चढ़ता है। कमज़ोरी मालूम होती है, खाँसी चलती रहती है, फैंफड़ोंसे खून आने लगता है, हाथ-पाँवोंमें जलन होती है, मन्दा-मन्दा ज्वर हर समय बना ही रहता है, जरा भी मिहनत करने से—मिहनत चाहे दिमाग़ी हो चाहे शारीरिक—फौरन थकान आ जाती है, दिलकी धड़कन बढ़ जाती है, जीभ सफेद हो जाती हैं, मुँह लाल और होठ नीले हो जाते है। आँखें सफेद और भीतर को नेत्रकोषोंमे घुसी जान पड़ती हैं। छातीमें सुई चुभानेकी सी वेदना होती है, खाँसी बहुत बढ़ जाती है। खाँसनेसे काँसीके फूटे बासनकी सी आवाज़ निकलती है। ज्वर थर्मामीटरसे देखनेपर १०३ डिग्री तक देखा जाता है। नाड़ीकी फड़कन प्रति मिनट पीछे ११० या इससे भी अधिक हो जाती है। रोगीकी बेचैनी बढ़ जाती है। नींद नहीं आती। शरीर सूखता और कमज़ोर होता जाता है। कमजोरी बहुत ही ज़ियादा हो जाती है। इस अवस्था या दर्जेमें अगर पूर्ण अनुभवी वैद्यका इलाज जारी हो जावे, तो कुछ लाभ हो सकता है। रोगी कुछ दिन और संसारमें रह सकता है। रोगसे कतई छुटकारा होना तो असम्भव ही नहीं महाकठिन अवश्य है।

तीसरा दर्जा—इस दर्जेमें ज्वर और खाँसी सभीका ज़ोर बढ़ जाता है । कफ पहलेसे गाढ़ा होकर अधिकतासे आने लगता है । जहाँ गिराया जाता है, वहाँ गोंदकी तरह चिपक जाता है । उसमें खूनके लोथड़े होते हैं । कफमें जो पीप आती है, उसमें दुर्गन्ध होती है । यह रोगीको स्वयं अपनी नाकसे मालूम होती और बुरी लगती है । रोगीको न सोते चैन न बैठे चैन । उठता है, बैठता है, फिर पड़ जाता है, क्योंकि बैठनेकी ताक़त नहीं होती । उसकी आवाज़ बदल जाती है । गरमीके मौसममे वह चाहता है कि, मैं अपने हाथ-पाँव बर्फमें डाले रहूँ । कभी हाथ-पैरोंका ठंडे जलसे भिगोता है कभी निकालता है, पर चैन नही पड़ता । सवेरे ही छाती और सिर पर गाढ़ा और चेपदार पसीना बहुत आता है । उसे नींद नहीं आती । पावोंपर सूजन बढ़ आती है । बाल गिरने लगते हैं । ज्वर साढ़े अट्ठानवे डिग्रीसे १०३ डिग्री तक होता रहता है । ज्वरके दो दौरे ज़रूर होते है । खाना खाने बाद, अगर आता है, तो १२ बजे ज्वर बढ़ता है और यह दो बजे तक बढ़ी हुई हालतमें रहता है, फिर हलका हो जाता है । शामको ६ बजेसे रातके ६ बजे तक फिर ज्वरका दौरा हो जाता है । वह रातको तीन बजे तक पसीने आकर कुछ हल्का हो जाता है, पर एकदम उतर नही जाता । इस तरह रोगीकी हालत दिन पर दिन बिगड़ती जाती है और ये सब शिकायतें उसकी जीवनी-शक्तिको नाश कर देती है । कोई इलाज कारगर नही होता । अन्तमें रोगी सब कुटुम्बियोंको रोता बिलपता छोड़कर, यमराजका मेहमान बननेको. इस ना-पायेदार दुनियासे कूच कर जाता है ।

प्र०—जब रोगीका अन्त समय निकट आ जाता है, तब क्या हालतें होती है ?

उ०—जब रोगीका मृत्युकाल पास आ जाता है, तब उसकी भूख खुल जाती है, पहले वह नहीं खाता था तो भी अब कुछ खाने लगता है । उसका आमाशय अपना काम नही करता, इसलिए उसका खाया-

पिया पतले दस्तों और वमनके द्वारा बाहर निकल जाता है। उसके नेत्र नेत्रकोषोमें घुसे हुए साफ सफेद चमकते हैं, गाल बैठ जाते हैं, सिर चमकने लगता है और पैरोंकी पीठ सूज़ जाती हैं। इस तरह होते-होते उसे ज़ोरसे खाँसी आती है। उससे रोगीको खूनकी क़य होती है और वह दूसरी दुनियाको कूच कर देता है।

प्र०—कितने दिन पहले हम रोगीके मरणके सम्बन्धमें जान सकते हैं और किन लक्षणोंसे?

उ०—कालज्ञानका अभ्यास करनेसे वैद्य या जो कोई भी अभ्यास करे वह, कम-से-कम छै महीने पहले, रोगीके मरणकालके सम्बन्ध में जान सकता है।

जब रोगीके मुँहसे उसके फैफड़ोंके टुकड़े या नसोंके हिस्से निकलने लगते हैं, दोष गाढ़े रूपमें निकलने बन्द हो जाते हैं, पैरोंकी पीठ सूज जाती है, उनपर वरम आ जाता है, तब रोगीके मरनेमें प्रायः चार दिन रह जाते हैं।

जब रोगीके दोनों जावड़ोंपर बड़े-बड़े दानों-जैसी कोई चीज़ पैदा हो जाती है, तब उसके मरनेमें ५२ दिन रह जाते हैं।

जब रोगीके सिरमें काले रंगका एक बड़ा दाना-सा निकल आता है और उसे दबानेपर पीड़ा नहीं होती, तब रोगीके मरनेमें ४० दिन रह जाते हैं।

जब रोगीके सिरपर लाल-लाल फुन्सियाँ निकल आती है। उनसे चिकना-सा पीला-पीला पानी निकलता है और अँगूठेपर हरियाली सी आ जाती है, तब रोगी चार दिनसे अधिक नहीं जीता।

प्र०—चिकित्सा न करने योग्य असाध्य रोगियोंके लक्षण बताइये।

उ०—क्षय-रोगीका थूक जलके भरे गिलासमें डालनेसे अगर डूब जाये—नीचे पैदेमें बैठ जावे, तो उसका इलाज मत करो; क्योंकि वह नहीं बचेगा। अगर थूक या कफ पानीपर तैरता रहे, तो बेशक इलाज करो। मुमकिन है, अच्छे इलाजसे आराम हो जावे।

क्षय-रोगीके कफको जलते हुए कोयलेपर डाल दो। अगर उस से घोर दुर्गन्ध उठे, तो रोगीको असाध्य समझो और उसका इलाज हाथमें मत लो।

कफ पानीके भरे बर्तनमें डालनेसे डूब जावे, पैंदेमें बैठ जावे, आगपर डालनेसे दुर्गन्ध दे, बाल गिरने लगें, पतले दस्त लगें, या आमके दस्त आवें, आँखें और पेशाब सफेद हों, खाँसी और ज़ुकाम का ज़ोर हो, भोजनपर रुचि न हो, कफ निकलनेमें बहुत तकलीफ हो, नेत्र आँखोंके खड्डोंमें घुस जावें, कमज़ोरी बहुत हो जावे, ज्वरका ज़ोर ज़ियादा हो, तब समझ लो कि रोगी नहीं बचेगा। उसका इलाज हाथमें लेकर वृथा बदनामी कराना है।

जिस रोगीको दम-दमपर पतली टट्टी लगती हो, कफके बड़े-बड़े ढप्पे गिरते हों, श्वास बढ़ रहा हो, हिचकियाँ चलती हों, पहले पैरों पर सूजन आई हो या और अंग सूज गये हों, कन्धों और पसवाड़ों वगैरःमें पीड़ा बहुत हो, रोगीको चैन न हो तो समझ लो कि, रोगी हरगिज़ नहीं बचेगा।

जिस रोगीको अच्छा वैद्य अच्छी-से-अच्छी दवा दे, पर उसका रोग न घटे, दिनपर दिन उपद्रव बढ़ते जावें; कमज़ोरी अधिक होती जावे, और रोगी अपने मुँहसे बारम्बार कहता हो कि, मैं अब नहीं बचूँगा, वह रोगी हरगिज़ नहीं बचेगा, अतः ऐसे रोगीका इलाज कभी भी न करना चाहिये।

प्र०—डाक्टर लोग क्षय रोगकी पैदाइश किस तरह कहते हैं?

उ०—डाक्टर कहते हैं, क्षयका प्रधान कारण कीटाणु या जर्म (Germs) हैं। इनको अँगरेज़ीमें बैसीलस ट्यूबरक्लोसिस (Bacillus Tuberculosis) कहते हैं। डाक्टर कहते हैं कि फैंफड़ोंमे इन कीटाणुओं के हुए बिना क्षय रोग नहीं होता। इन कीड़ोंके रहनेकी जगह क्षय-रोगी का थूक-खकार या कफ वगैरः है। क्षय-रोगी इधर-उधर चाहे जहाँ थूक देते हैं, उनमेंसे ये कीटाणु, स्वस्थ मनुष्यके शरीरमें, उसके साँस

लेनेके समय, नाक द्वारा, भीतर घुस जाते हैं अथवा भोजन पर बैठकर भोजन-द्वारा अच्छे-भले मनुष्यके आमाशयमें पहुँच जाते हैं। अगर वंशमें किसीको क्षय रोग होता है और उसके थूक-खकार आदिसे बचाव नहीं रखा जाता, तो उसके थूक वग़ैरःके कीड़े दूसरोंके अन्दर प्रवेश करके क्षय पैदा करते हैं।

हवा और धूलमें मिलकर जिस तरह और रोगोंके कीड़े एक जगहसे दूसरी जगह जा पहुँचते हैं, उसी तरह इस क्षय रोगके कीड़े भी क्षय रोगीके कफसे निकल कर, हवामें मिलकर, तन्दुरुस्त आदमियोंके नाक और मुँहमें घुस कर, फैफड़ो तक जा पहुँचते हैं और फिर वहाँ अपना डेरा जमा लेते हैं।

ये कीटाणु प्रायः नित्य बढ़ते रहते हैं और थूक-द्वारा वाहर निकल-निकल कर भले चंगोको मारते हैं। ये इतने छोटे होते हैं कि, इनकी छुटाईका कोई हिसाब भी नहीं लगाया जा सकता। ये नङ्गी आँखों (Naked eyes) से नहीं दीखते। हाँ, ख़ुर्दबीन या सूक्ष्म-दर्शक यंत्र, जिसे अँगरेज़ीमें माईक्रोसकोप कहते हैं, से वे अच्छी तरह नज़र आते हैं।

जब क्षय-रोगी आराम हो जाता है, तब डाक्टर लोग अक्सर क्षय-रोगीके खून और थूककी परीक्षा ख़ुर्दबीनसे करते हैं। अगर उनमें क्षयके कीटाणु नही पाये जाते, तब उसे रोगमुक्त समझते हैं। हाँ, अगर ये पचीस हज़ार कीटाणु, एक सीधमें, पंक्ति लगा कर, एक दूसरेसे सटकर, रखे जावें तो ये एक इञ्च लम्बी जगहमें आजावेंगे। इसी तरह एक पद्म जीवाणुओंका वज़न सिर्फ एक माशे भर होता है। ये बहुत जल्दी बढ़ते हैं। २४ घन्टेमें एक कीटाणुसे तीन पद्मके क़रीब हो जाते हैं। इस तरह ये वढ़ते बढ़ते रोगीके फैंफड़ोंमें घाव पैदा करके उन्हें ख़राब कर देते हैं। घाव हो जानेसे ही रोगीके थूकमें खून और पीप आने लगते हैं। रोगी कमज़ोर होता जाता है

और कीड़ोंका वंश बढ़ता जाता है। ये इतने छोटे जीव, जिनको आदमी ध्यानमें भी नहीं ला सकता, दुर्लभ मानव देहका सत्यानाश कर देते हैं।

ये कीटाणु नित्यप्रति बढ़ते रहते हैं, और थूक-द्वारा बाहर निकलते हैं; इसलिये रोगीको बारम्बार थूकना पड़ता है। इसवास्ते रोगीके थूकनेको एक चीनीका टीनपाट रखना चाहिये। उसमें थोड़ा पानी डालकर चन्द क़तरे कारबॉलिक ऐसिड या फिनाइलके डाल देने चाहिएँ; क्योंकि वे इन दोनो दवाओंसे फौरन नाश हो जाते हैं। जो लोग ऐसा इन्तज़ाम नहीं करते, थूकको जहाँ-तहाँ पड़ा रखते हैं, वह अपनी मौत आप बुलाते हैं, क्योकि कफके सूख जाने पर, ये कीटाणु हवामें उड़-उड़ कर, साँस लेनेकी राहोसे, दूसरे लोगोंके अन्दर घुसते और उन्हें भी वेमौत मारते है। रोगीको खुद ही पराई बुराई या औरोंके नुक़सानका ख़याल करके दीवारों, फर्शों और सीढ़ियों पर न थूकना चाहिये। आप मरने चले, पर दूसरोंको क्यो मारते हैं?

इन कीड़ोंकी बात हमारे त्रिकालज्ञ ऋषि-मुनि भी जानते थे। यूरोपियनोंने अवश्य पता लगाया है, पर अब लाखों-करोड़ों वर्ष बाद। हमारे "शतपथ ब्राह्मण" में एक श्लोक है—

नो एव निष्टीवेत् तस्मात् यद्यप्यासक्तः।
इव मन्येत अभिवातं परीयाच्छ्रीर्वै सोमः॥
पाप्मा यक्ष्मः सयाथाश्रेय स्यायाति पापीयान्।
प्रत्य वरो हे देव यस्माद्यक्ष्माः प्रत्यवरोहाति॥

अर्थात् हे देव, आप कैसेही कमज़ोर क्यों न हों, आप उठने बैठने में असमर्थ क्यों न हों, आप जहाँ-तहाँ न थूकें, क्योंकि यक्ष्मा एक पाप है। वह पापी दूसरों पर चढ़ बैठता है। यानी यक्ष्मा छुतहा (Contagious या Infecticus) रोग है। वह एकसे दूसरेको लग जाता है। अथवा यक्ष्माके कीड़े एकके थूकसे निकल कर, नाक-मुख आदि

श्वास-मार्गों द्वारा दूसरोंके अन्दर घुस जाते और उनका प्राणनाश करते हैं।

प्र०—यक्ष्मा कहाँ-कहाँ होता है ?

उ०—यक्ष्मा शरीरके प्रत्येक अंगमें हो सकता है और होता भी है, पर विशेष रूपसे वह नीचे लिखे अंगोंमें होता है:—

(१) फैफड़े, (२) कंठ, (३) हड्डी, (४) हड्डी और उनके जोड़, (५) आँतें, और (६) कंठमाला।

मतलब यह कि, उपरोक्त फैंफड़े आदिका क्षय बहुत करके होता है। सारे शरीरमें तब होता है, जब कीटाणु टाकसिन नामक विष पैदा करते हैं और वह विष सारे शरीरमें फैलता है; पर ऐसा कम होता है। आजकल तो बहुत करके फैफड़ोंका ही क्षय होता है और उसीसे रोगी चोला छोड़ चल देता है। शुरूमें यह फैंफड़ेके अगले भागमें होता है। अगर बायें फैफड़ेपर होता है तो दाहने फैफड़े से काम चला जाता है, पर ऐसा भी बहुत कम होता है।

प्र०—फैंफड़ोंके क्षयके लक्षण तो बताइये।

उ०—(१) छाती तंग होती, कन्धे झुक जाते, (२) धीरे-धीरे शरीर मे कमज़ोरी होती और कभी-कभी एक-दमसे कमज़ोरी आ जाती है। (३) चमड़ा ज़रा-ज़रा पीला-सा हो जाता है। (४) कभी-कभी गालों पर ललाई दीखती है। (५) ज़ुकाम बहुधा बना रहता है। (६) रोगी का मिज़ाज बदल जाता है। दयालु स्वभाववाला निर्दयी हो जाता और निर्दयी दयालु हो जाता है। (७) पहले जो चीज़ें या जो बातें अच्छी मालूम होती थी; क्षय होनेपर बुरी लगती हैं। रुचि बदल जाती है। (८) काम करनेसे थकाई जल्दी आने लगती है। (९) शामके वक्त मन्दा-मन्दा ज्वर या हरारत रहती है। टैम्परेचर ९८॥ से ९९॥ डिग्री तक हो जाता है। (१०) भूख नहीं लगती, (११) दिलकी धड़कन बढ़ जाती है। (१२) छातीमें दर्द होता है। (१३) खाँसी

चलती है। (१४) शामको खाँसी बढ़ जाती है। (१५) आँखें ज़ियादा सफेद हो जाती हैं। (१६) फेंफड़ोंमें दाह या जलन होती है।

प्र०—वातप्रधान, पित्तप्रधान और कफप्रधान क्षयके लक्षण बताओ।

उ०—

वातप्रधान क्षय ।

(१) सिरमें दर्द, (२) पसलियोंमें दर्द, (३) कन्धों वगैरःमें दर्द, (४) गला बैठ जाना, (५) आवाज़में खरखराहट, और (६) मन्दा-मन्दा ज्वर।

पित्तप्रधान क्षय ।

(१) छातीमें सन्ताप, (२) हाथ-पैरोंमें जलन, (३) पतले दस्त (अतिसार), (४) खून मुँहसे आना, (५) मुँहमें बदबू, और (६) तेज़ बुख़ार।

कफप्रधान क्षय ।

(१) अरुचि, (२) वमन, (३) खाँसी, (४) श्वास, (५) सिर-दर्द, (६) शरीरमें दर्द, (७) पसीने आना, (८) जुकाम, (९) मन्दाग्नि, (१०) मुँह मीठा-मीठा रहना, (११) हर समय मन्दा-मन्दा ज्वर।

प्र०—यक्ष्माकी मर्यादा कहो।

उ०— *नरं दिन सहस्त्रन्तु यदि जीवति मानवः ।*
सुभिषग्भिरुपक्रान्तस्तरुणः शोषपीडितः ॥

अगर क्षयरोगी १००० दिन तक जीता रहे तो समझो कि, रोगी जवान था और किसी सुचिकित्सकने उसका इलाज किया था।

प्र०—हिकमतवाले क्षयपर क्या कहते हैं?

उ०—हकीम लोग क्षयको दिक या तपेदिक कहते हैं। इस तपेदिकके लक्षण हमारे प्रलेपक ज्वरसे मिलते हैं। प्रलेपक ज्वर कफ-पित्तसे होता है, पर कोई-कोई उसे त्रिदोषसे हुआ मानते हैं।

प्रलेपक ज्वरमें हलका-हलका ज्वर रहता है, पसीनोंसे शरीर तर रहता है और ठण्डकी फुरफुरी लगती है। अँगरेज़ीमें इसे हैकटिक फीवर कहते हैं।

हिकमतके मतसे कमज़ोरी, क्षीणता, मन्दाग्नि और अति मैथुन आदि इसके कारण है। कहते हैं, उसमें सर्दी लग कर बुख़ार चढ़ता है, हाथ-पाँवके तलवे गर्म रहते हैं, मन्दा-मन्दा ज्वर रहता है, भूख नही लगती, पसीना चीकटा-सा आता है, जीभ पर मैल होता है, दस्त लगते हैं, किसी अंगमें पीप पैदा हो जाता है तथा थकान और वेदना वग़ैरः लक्षण होते हैं। सारांश यह कि, हकीमोंका दिक़, डाक्टरों का हैकटिक फीवर और आयुर्वेदका प्रलेपकज्वर राजयक्ष्माकी एक ख़ास अवस्था है, यानी वह किसी अवस्था विशेषमें होता है।

हकीम लोग क्षयको "सिल" भी कहते हैं। हमारी रायमे "सिल" उरःक्षतको कहना चाहिये। सिल शब्दका अर्थ कमज़ोरी और दुबलापन होता है और दिकका अर्थ भी कमज़ोर है।

हकीम कहते हैं कि, नीचे लिखे कारणोंसे यह रोग होता है:—

(१) नजलेके पानीके फैफड़ो पर गिरने और ख़राश पैदा कर देनेसे दिक़ होता है।

(२) न्यूमोनियाका ठीक-ठीक इलाज न होने, उसके दोषोंके पक जाने और फैंफड़ोमें जलन कर देनेसे दिक़ होता है।

(३) पुरानी खाँसीका अच्छा इलाज न होने, उसके बहुत दिनों तक बने रहने, उसकी वजहसे फैफड़ोंके कमज़ोर हो जाने, और उनमें ख़राश होकर घाव हो जानेसे दिक़ होता है।

वे इसको दो हिस्सोंमें तक़सीम करते हैं:—

(१) सिल—हक़ीक़ी।

(२) सिल—ग़ैरहक़ीक़ी।

उनकी तारीफ।

(१) सिलहक़ीक़ी होनेसे रोगीके थूकमें ख़ून और पीप आते हैं।

(२) सिल-ग़ैर-हक़ीक़ी होनेसे केवल कच्चा कफ आता है। खून और पीप नहीं आते।

(१) सिल ग़ैर-हक़ीक़ी—जिसमें ख़ाली कच्चा कफ गिरता है, आराम हो सकती है; पर (२) सिल हक़ीक़ी, जिसमें खून और पीप निकलते हैं, आराम होनी मुश्किल है।

पहचाननेकी तरकीब।

सिल हक़ीक़ी है या ग़ैर हक़ीक़ी—इसकी पहचान हकीम लोग नीचेकी तरकीबोंसे करते हैं:—

वे लोग सिलवाले रोगीके थूकको पानीसे भरे गिलासमें डाल देते हैं और उसे बिना हिलाये-डुलाये घण्टे-दो-घण्टे रखे रहते हैं। फिर देखते हैं कि, रोगीका कफ ऊपर तैर रहा हैं या गिलासके पैंदे में जा बैठा है।

अगर कफ ऊपर तैरता हुआ पाया जाता है, नीचे नहीं बैठता, तब रोगको सिल ग़ैरहक़ीक़ी समझते हैं और रोगीका इलाज हाथमें ले लेते हैं, क्योंकि उन्हें आराम हो जानेकी आशा हो जाती है।

अगर कफ पैंदेमें नीचे चला जाता है, तो सिल-हक़ीक़ी समझते हैं। ऐसे रोगीका इलाज हाथमें नहीं लेते, क्योंकि सिल हक़ीक़ीका आराम होना मुश्किल है।

और परीक्षा-विधि।

अगर इस परीक्षामें कुछ शक रहता है, तो वे रोगीके कफ या थूकको जलते हुए कोयलेपर डाल देते हैं। अगर उससे घोर दुर्गन्ध आती है, तो सिलहक़ीक़ी समझते हैं और उस रोगीका इलाज नहीं करते।

प्र०—रोगी और परिचारकके सम्बन्धमें भी कुछ कहिये।

उ०—रोगी और परिचारक यानी मरीज़ और तीमारदारी करने वाला भी चिकित्साके दो मुख्य अंग हैं। केवल उत्तम औषधि और

सद्वैद्यसे ही रोग नहीं जा सकता। बहुधा रोगीके ज़िद्दी और क्रोधी वग़ैरः होने तथा सेवा करनेवाले (तीमारदार) के अच्छा न होनेसे, आसानीसे आराम हो जानेवाले रोग भी कष्ट-साध्य या असाध्य हो जाते हैं, अतः हम उन दोनोंके सम्बन्धमें यहाँ कुछ लिखते हैं, क्योंकि यक्ष्मा जैसे महा रोगमें इसकी बड़ी ज़रूरत है।

रोगीको वैद्यपर पूर्ण श्रद्धा और भक्ति रखनी चाहिये। वैद्यकी आज्ञा ईश्वरकी आज्ञा समझनी चाहिये। दवा और पथ्यापथ्यके मामलेमें कभी ज़िद न करनी चाहिए। जैसा वैद्य कहे वैसा ही करना चाहिये।

रोगी और रोगीके सेवकके कमरे साफ़ लिपे-पुते, हवादार और रोशनी वाले (Well-ventilated) होने चाहिएँ। रोगीके बिस्तर सदा साफ़-सफेद रहने चाहिएँ। थूकनेके लिये पीकदानी रक्खी रहनी चाहिये। उसमें राख रहनी चाहिये। अथवा चीनीके टीनपाट में थोड़ा पानी डाल कर, उसमें कुछ कारबोलिक ऐसिड या फिनाइल मिला देनी चाहिये। रोगीके पलँगकी चादर, उसके पहननेके कपड़े रोज़ बदल देने चाहियें।

सेवक या परिचारकको रोगीकी कड़वी बातों या गाली-गलौज से चिढ़ना न चाहिए। बुद्धिमान लोग रोगी, पागल और बालककी बातोंका बुरा नहीं मानते। मनमें समझना चाहिये कि, रोगने रोगी को चिड़चिड़ा या ख़राब कर दिया है। रोगीका इसमें ज़रा भी क़ुसूर नहीं। वह जो कुछ करता है, रोगके ज़ोरसे करता है, अपनी इच्छासे नहीं।

परिचारकको चाहिये, रोगीको सदा तसल्ली दे। वह बात न करना चाहे, तो उसे बात करनेको वृथा न सतावे। ऐसी बातें कहे कि जिनसे उसका दिल खुश हो। अगर रोगी चाहे तो अच्छे-अच्छे

दिलचस्प क़िस्से-कहानी सुनावे । रोगीसे बहुत देर तक बातें करनेसे उसमें कमजोरी आती है और कमज़ोरी बढ़नेसे रोग बढ़ता और मौत पास आती है ।

रोगीके साफ़ बिछौनोपर उत्तमोत्तम सुगन्धित फूल डाले रखने चाहिएँ । उसे खुशबूदार फूलोंकी मालाएँ पहनानी चाहिएँ । उसके सामने मेज़पर गुलदस्ते रखने चाहिएँ । अगर रोगी धनवान हो तो उसे फूलोंकी शय्यापर सुलाना चाहिए ।

रोगीके पीनेका पानी—वैद्यकी आज्ञानुसार—औटा-छानकर, साफ़ सुराहीमें रखना चाहिये । उस सुराहीको रोज़ कपूरसे बसा देना चाहिये । पीनेके पानीपर कपड़ा ढका रखना चाहिये । रोगीके आराम होनेका इसपर बहुत कुछ दारमदार है । सवेरेका औटाया पानी रातको और रातका औटाया सवेरे नहीं पिलाना चाहिए । जल हमेशा खुले मुँह—बिना ढक्कन दिये—औटाना उचित है ।

रोगीके कमरेमें अधिक भीड़-भाड़ न होने देनी चाहिए । लोगोके जमा होनेसे कमरेकी हवा गन्दी होती है, जिससे रोगीको नुकसान पहुँचता है । उसके कमरेमें धूल-धूआँ वग़ैरः न होने चाहिएँ । धूल और धूएँसे खाँसी रोग पैदा होता और बढ़ता है और क्षय रोगीको खाँसी पहले ही होती है ।

रोगीके कमरेमें बिजलीका पंखा न होना चाहिये । अगर ज़रूरत हो तो कपड़ेका पंखा लगवा लेना चाहिए—अथवा दूसरे भागमें लिखे हुए तरीक़ेसे हाथके पंखेकी हवा करनी चाहिए । बिजली या गैसकी रोशनी भी रोगीको हानिकारक होती है । मिट्टीका तेल या किरासिन तेल भी बुरा होता है । चिराग़ देशी ढंगका जलाना अच्छा है । अगर रोगी अमीर हो तो कपूरकी बत्तियाँ या घीके दीपक जलाने चाहिएँ । ग़रीबको तिलीके तेलके चिराग़ जलाने चाहियें । मोमबत्तीकी रोशनी भी अच्छी होती है ।

रोगीके कमरेमें लोवान या गूगलकी धूनी रोज़ सवेरे-शाम देनी चाहिए। गूगलकी धूनी वहुत उत्तम होती है। "अथर्व वेद" में लिखा है—

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनंशपथाअश्नुते।
यं भेषजस्य गुग्गुलो सुरभिर्गन्ध अश्नुते॥
विश्वञ्चस्तस्माद यक्ष्मा मृगाश्वाइवेरते।
यद् गुग्गुल सैन्धव वद्वाप्यासि समुदियम्॥

जो आदमी गूगलकी सुन्दर गन्धको सूँघता है, उसे यक्ष्मा नहीं सताता। सब तरहके कीटाणु इसकी गन्धसे हिरनोंकी तरह भाग जाते हैं। अतः रोगीके कमरे और आस-पासके कमरोंमें, गूगल, लोवान, कपूर, छारछरीला, मोथा, सफेद चन्दन, और धूप इत्यादिकी धूनी नित्यप्रति देनी चाहिए।

रोगीके कमरे और उसके आस-पासके कमरोंमें गुलाव-जल और इत्र वगैरः सुगन्धित द्रव्योंका छिड़काव करना चाहिये। द्वारोंपर फूलोंकी मालाएँ, आमकी वन्दनवारें या नीमके पत्तोंको वाँध देना चाहिये, ताकि कमरेमें जो हवा आवे वह शुद्ध और खुश-वूदार हो।

रोगीको नित्य सवेरे सूर्योदयसे पूर्व ही उठा देना चाहिये। फिर उसे किसी ऐसी सवारीमें जिसमें वैठनेसे कष्ट न हो, विठाकर शहर से वाहर जंगलमें ले जाना चाहिये। वहीं उसे शौच वग़ैरःसे निपटाना चाहिये। सवेरेकी वेलाको अमृत-वेला कहते हैं। उस समयकी अमृतमय वायुसे खूनमें लाली और तेज़ी आती और मन प्रसन्न होता है। हाँ, रोगीको चाहिये, कि वह वहाँ अपने दोनों हाथ सिरपर उठा कर, मुँहसे धीरे-धीरे हवा खींचे और नाक द्वारा धीरे-धीरे निकाल दे। हवाको कुछ देर अपने अन्दर रोककर तव छोड़ना चाहिये। ऐसा व्यायाम नित्य प्रति करनेसे रोगीको वड़ा लाभ होगा। शामको

भी, सूर्यास्तके पहले ही, रोगीको जंगलमें जाना और उसी तरह मुँहसे श्वास खींच-खींचकर, कुछ देर रोककर, नाकसे छोड़ना चाहिये। अगर मौसम बरसात हो तो जंगलमें न जाकर अपने घरके बाहर किसी सायादार और खुली जगहमें ताज़ी हवा खानी चाहिये, पर बरसाती ठण्डी हवासे बचना भी चाहिये। मौसम गरमीमें, रोगी धनवान हो तो, जरूर शिमला, मसूरी, दार्जीलिंग प्रभृति शीतल स्थानोंमें चले जाना चाहिए। क्षय-रोगीको गरमी बहुत लगती है। अगर वह ऐसे ठण्डे स्थानोंमें जाकर अपना इलाज करावे, तो बड़ी जल्दी रोगमुक्त हो। क्षय-रोगीको स्नानकी मनाही नहीं है। अगर उसमें ताक़त हो, तो डुबकी लगाकर नहावे। अगर वह इस लायक़ न हो तो शीतल जलमें तौलिया भिगो-भिगोकर शरीरको रगड़-रगड़कर धोवे और फिर पोंछकर साफ धुले हुए वस्त्र पहन ले। अगर रोगी कमज़ोर हो तो निवाये जलसे यह काम करे। समुद्र-स्नान अगर मयस्सर हो तो ज़रूर करे। वह क्षयरोगीको मुफीद है।

जब रोगी बाहर टहलने जावे, तब घरके दूसरे लोग उस घरको साफ़ करके, उसके पलँगकी चादर वग़ैरः बदल दें। क्षयवालेके पलँगकी चादरको नित्य बदल देना अच्छा है, क्योंकि वह उसके पसीनोंसे रोज़ गन्दी हो जाती है। उसको कपड़े भी नित्य-की-नित्य धोबीके धुले हुए या घरके धुले पहनाने चाहियें। कुछ भी न हो तो रोगीके कपड़ोंको खूब उबलते हुए जलमें डाल दें और उसमें थोड़ासा कारबोलिक ऐसिड भी डाल दें; ताकि क्षयके कीटाणु वग़ैरः नष्ट हो जावें। रोगीके कपड़े घरके और लोग हरगिज़ काममें न लावें। रोगीको खाने-पीनेको पथ्य पदार्थ देने चाहियें। इस रोगमें तन्दुरुस्त गधीका दूध हितकर समझा जाता है। पर उसे यानी गधीको गिलोय और अड़ूसा वग़ैरः खिलाना चाहिये। गायका दूध दो, तो तन्दुरुस्त गायका दो। बहुतसी गायोंको यक्ष्मा होता है। उनका दूध पीनेसे अच्छे-

भलोंको क्षय हो जाता है। हाँ, गायका दूध कच्चा कभी न पिलाना चाहिये; औटाकर पिलाना चाहिये।

शुक्रजन्य क्षय रोगीको दूध-घी, मांस-रस या शोरवा अथवा शतावर आदिके साथ बनाये पदार्थ या दूध आदि हितकर हैं। जिसे शोकसे क्षय हुआ हो उसे मीठे, ठण्डे, चिकने दूध वगैरः पदार्थ देने चाहिएँ। उसको तसल्ली देनी चाहिये और ऐसी बातें कहनी चाहिएँ, जिनसे उसका दिल खुश हो। क्षयवालेको उसका दाह शान्त करने, ताक़त लाने और कफ नाश करनेके लिये आगे लिखा हुआ "षडंग यूष" देना चाहिए। अध्व शोष (राह चलनेसे हुए शोष) वाले रोगीको ठण्डी, मीठी और पुष्टिकारक दवाएँ और पथ्य देने चाहिएँ। उसे दिनमें सुलाना और हर तरह आराम देना चाहिए।

क्षय-रोगीको, आम तौरपर, गेहूँका दलिया, गेहूँके दरदरे आटे के फुलके, जौका आटा, साँठी चाँवल, घी, दूध, मक्खन, बकरेके मांसका शोरवा, बथुएकी तरकारी, कमलकी जड़, तोरई, हरा कद्दू, पुराने चाँवलोंका भात, पुराने गेहूँकी ख़मीर उठायी रोगी, जौकी पूरी, काली मिर्चोंके साथ पकाया मिश्री-मिला गायका दूध पिलाना चाहिए और आसानीसे पच जाने वाली खानेकी चीज़ें रोगीको देना अच्छा है। साबूदाना, अरारूट, मैलिन्सफ़ूड आदि पथ्य हल्के होते हैं। बहुत ही कमज़ोरको यही देने चाहिएँ। जंगली पक्षियो और हिरन आदिका मांस-रस, हल्की शराब, बकरीका घी, जौका माँड, मूँगका जूस और बकरेके मांसका शोरवा विशेष हितकर है। यह शोरवा, ज़ुकाम, सिरदर्द, खाँसी, स्वास, स्वरभंग और पसलीकी पीड़ा—क्षय-सम्बन्धी छहों विकारोंके शान्त करनेमें बहुत अच्छा समझा जाता है।

बहुत सी उपयोगी बातें हमने "यक्ष्मा-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें" शीर्षकके अन्तर्गत लिखी हैं। उन सबपर रोगी और चिकित्सकको खूब ध्यान देना चाहिये।

रोगीके सब काम नियम और बँधे टाइमसे होने चाहिएँ। उसे शारीरिक और मानसिक (Physical & mental) परिश्रम, स्त्रीप्रसंग, चिन्ता-फिक्र और बहुत ज़ियादा खाने-पीने प्रभृतिसे बचना चाहिये। बैंगन, बेलफल, करेला, राई, गुस्सा, दिनमें सोना, मीठा खाना और मैथुन करना क्षय वालेको परम अहितकारक हैं। राह चलनेकी थकानसे हुए अध्वशोषमें दिनमें सोना बुरा नहीं है।

हाँ, एक बात और सबसे जरूरी कहकर हम अपने प्रश्नोत्तर ख़त्म करेंगे। वह यह है कि क्षय-रोगीको, जहाँ तक संभव हो, बकरीका ही दूध, दही और घी देना चाहिए। क्योंकि बकरीके दूध-घी आदिमें अधिक गुण होते हैं। वह जो आक, नीम प्रभृतिके पत्ते खाती है, इसीसे उसके घी दूध आदिमें क्षय रोगनाशक शक्ति होती है। क्षय और प्रमेहका बड़ा सम्बन्ध है। प्रमेहीको बकरियोंके बीचमें सोना और बकरीकी मींगनी वगैरः खानेसे आराम होना अनेक आचार्य्योंने लिखा है। आगे यक्ष्मा नाशक नुसख़ा नम्बर २ देखिये।
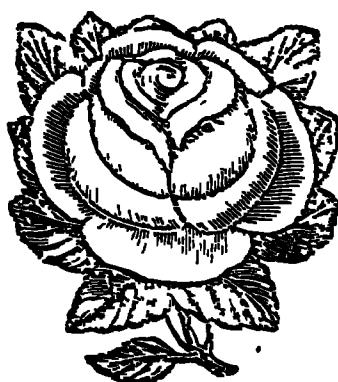
यक्ष्मानाशक नुसख़े।

(१) अर्जुनकी छाल, गुलसकरी और कौंचके बीज—इनको दूध में पीसकर, पीछे शहद, घी और चीनी मिलाकर पीनेसे राजयक्ष्मा और खाँसी—ये रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इन दवाओंके ६ माशे चूर्णको—पाव भर बकरीके कच्चे दूधमें, ३ माशे शहद और ६ माशे चीनी मिलाकर, उसीके साथ फाँकना चाहिये। परीक्षित है।

(२) बकरीका मांस खाना, बकरीका दूध पीना, बकरीके घी में सोंठ मिलाकर पीना और बकरे-बकरियोंके बीचमें सोना—क्षय रोगीको लाभदायक है। इन उपायोंसे ग़रीब यक्ष्मा-रोगी निश्चय ही आराम हो सकते हैं।

(३) शहद, सोनामक्खीकी भस्म, बायबिडंग, शुद्ध शिलाजीत, लोहभस्म, घी और हरड़—इन सबको मिलाकर सेवन करने और पथ्य पालन करनेसे उग्र राजयक्ष्मा भी आराम हो जाता है।

नोट—बंगसेनके इसी नुसखेमें सोनामक्खी नहीं लिखी है।

(४) नौनी घीमें शहद और चीनी मिलाकर खाने और ऊपरसे दूध-सहित भोजन करनेसे क्षय रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(५) ना-बराबर शहद और घी मिलाकर चाटनेसे भी पुष्टि होती और क्षय नाश होता है। घी १० माशे और शहद ६ माशे इस तरह मिलाना चाहिये। परीक्षित है।

(६) खिरैंटी, असगन्ध, कुम्भेरके फल, शतावर और पुनर्नवा—इनको दूधमें पीसकर नित्य पीनेसे उरःक्षत रोग चला जाता है।

(७) बकरेके चिकने मांस-रसमें पीपर, जौ, कुलथी, सोंठ, अनार, आमले और घी—मिलाकर पीनेसे पीनस, ज़ुकाम, श्वास, खाँसी, स्वरभङ्ग, सिरदर्द, अरुचि और कन्धोंका दर्द—ये छै तरहके रोग नाश होते हैं ।

(८) असगन्ध, गिलोय, भारङ्गी, बच, अडूसा, पोहकरमूल, अतीस और दशमूलकी दशो दवाएँ—इन सबका काढ़ा पीने और ऊपरसे दूध और मांसरस खानेसे यक्ष्मा रोग नाश हो जाता है ।

(९) बन्दरके मांसको सुखाकर पीस लो । इसके सूखे मांस-चूर्णको खाकर, दूध पीनेसे यक्ष्मा नाश हो जाता है । कहा हैः—

कपिमांस तथा पीत क्षयरोगहरं परम् ।
दशमूल बलारास्नाकषायः क्षयनाशनः ॥

बन्दरका मांस भी बकरीके दूधके साथ पीनेसे क्षयको नष्ट करता है । दशमूल, खिरेंटी और रास्नाका काढ़ा भी क्षयको दूर करता है । परीक्षित है ।

(१०) हिरन और बकरीके सूखे मांसका चूर्ण करके, बकरीके दूधके साथ पीनेसे क्षय रोग चला जाता है ।

(११) बच, रास्ना, पोहकरमूल, देवदारु, सोंठ और दशमूल की दशों दवाएँ—इनका काढ़ा पीनेसे पसलीका दर्द, सिरका रोग, राजयक्ष्मा और खाँसी प्रभृति रोग नाश हो जाते हैं ।

(१२) दशमूल, धनिया, पीपर और सोंठ, इनके काढ़ेमें दाल-चीनी, इलायची, नागकेशर और तेजपात—इन चारोंके चूर्ण मिला कर पीनेसे खाँसी और ज्वरादि रोग नाश होकर बलवृद्धि और पुष्टि होती है ।

(१३) दो तोले लाख, पेठेके रसमें पीसकर, पीनेसे रक्तक्षय या मुँहसे खून गिरना आराम होता है ।

(१४) चव्य, सोंठ, मिर्च, पीपर और वायविडंग—इन सबका चूर्ण घी और शहदमें मिलाकर चाटनेसे क्षय रोग निश्चय ही नाश हो जाता है।

(१५) त्रिकुटा, त्रिफला, शतावर, खिरेंटी और कंघी—इन सबके पिसे-छने चूर्णमें "लोहभस्म" मिलाकर सेवन करनेसे अत्यन्त उग्र यक्ष्मा, उरःक्षत, कण्ठरोग, बाहुस्तम्भ और अर्दित रोग नाश हो जाते हैं।

(१६) परेवा पक्षीके मांसको धूपमें, नियत समयपर, सुखा कर, शहद और घीमें मिलाकर, चाटनेसे अत्यन्त उग्र यक्ष्मा भी नाश हो जाता है।

(१७) असगन्ध और पीपलके चूर्णमें शहद, घी और मिश्री मिलाकर चाटनेसे क्षय रोग चला जाता है।

(१८) मिश्री, शहद और घी मिलाकर चाटनेसे क्षय नष्ट हो जाता है। नाबराबर घी और शहद मिलाकर चाटने और ऊपरसे दूध पीनेसे क्षय रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(१९) सोया, तगर, कूट, मुलेठी और देवदारू,—इनको घीमें पीस कर पीठ, पसली, कन्धे और छातीपर लेप करनेसे इन स्थानों का दर्द मिट जाता है।

(२०) कबूतरका मांस बकरीके दूधके साथ खानेसे यक्ष्मा नाश हो जाता है। कहा है—

सशोषितं सूर्यकरैर्हि मास पारावत यः प्रतिघस्रमत्ति।
सर्पिर्मधुभ्या विलिहन्नरो वा निहन्ति यक्ष्माणमतिप्रगल्भम्॥

कबूतरका मांस, सूरजकी किरणोंसे सुखाकर, हर दिन खानेसे अथवा उसमें घी और शहद मिलाकर चाटनेसे अत्यन्त बढ़ा हुआ राजयक्ष्मा भी नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२१) दिनमें कई दफ़ा दो-दो तोले अंगूरकी शराब, महुएकी शराब या मुनक्केकी शराब पीनेसे यक्ष्मा नाश हो जाता है।

नोट—यक्ष्मा रोगमें शराब पीना हितकर है, पर थोड़ी-थोड़ी पीनेसे लाभ होता है।

(२२) गायका ताज़ा मक्खन ६ माशे, शहद ४ माशे, मिश्री ३ माशे और सोनेके वरक़ १ रत्ती इनको मिलाकर खानेसे यक्ष्मा अवश्य नाश हो जाता है। यह नुसख़ा कभी फेल नहीं होता। परीक्षित है।

(२३) बकरीका घी बकरीके ही दूधमें पकाकर और पीपल तथा गुड़ मिला कर सेवन करनेसे भूख बढ़ती, खाँसी और क्षय नाश होते है। परीक्षित है।

(२४) अगर क्षय या जीर्णज्वर वालेके शरीरमें ज्वर चढ़ा रहता हो, हाथ-पैर जलते हो और कमज़ोरी बहुत हो, तो "लाक्षादि तैल" की मालिश कराना परम हितकर है। अनेकों बार परीक्षा की है। कहा भी है—

दौर्बल्ये ज्वर सन्तापे तैलं लाक्षादिकं हितम् ।
सघृतान्राजमाषान्यो नित्यमश्नाति मानवः ।
तस्य क्षयः क्षयं यान्ति मूत्रमेहोति दारुणः ॥

कमज़ोरी, ज्वर और सन्तापमें लाक्षादि तैल हितकारी है। जो मनुष्य राजमाष—एक प्रकारके उड़दोंको घीके साथ खाता है, उसका क्षय और अति दारुण प्रमेह रोग नाश हो जाता है।

धान्यादि क्वाथ ।

धनिया, सोंठ, दशमूल और पीपर—इन तेरह दवाओंको बराबर, बराबर कुल मिलाकर दो या अढ़ाई तोले लेकर, काढ़ा बनाकर, पिलानेसे यक्ष्मा और उसके उपद्रव—पसलीका दर्द, खाँसी, ज्वर, दाह, श्वास और ज़ुकाम नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

त्रिफलाद्यवलेह ।

त्रिफला, त्रिकुटा, शतावर और लोह-चूर्ण—हरेक दवा चार-चार तोले लेकर कूटकर रख लो। इसमेंसे एक तोले चूर्णकी मात्रा शहद के साथ चटानेसे उरःक्षत और कंठ-वेदना नाश हो जाते हैं।

विडंगादिलेह।

वायविडंग, लोहभस्म, शुद्ध शिलाजीत और हरड़—इनका चूर्ण घी और शहदके साथ चाटनेसे प्रबल यक्ष्मा, खाँसी और श्वास आदि रोगोंका नाश होता है। परीक्षित है।

सितोपलादि चूर्ण।

तज १ तोले, इलायची २ तोले, पीपर ४ तोले, वंसलोचन ८ तोले और मिश्री १६ तोले—इन सबको पीस-छान कर रखलो। यही "सितोपलादि चूर्ण" है। इस चूर्णसे जीर्णज्वर—पुराना बुख़ार, और क्षय या तपेदिक निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस चूर्णको मामूली तौरसे शहदमें चटाते हैं। अगर रोगीको दस्त लगते हों तो शर्बत अनार या शर्बत बनफशामें चटाते हैं। इन शर्बतोंके साथ यह खूब जल्दी आराम करता है। इसकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। यक्ष्मा-वालेको एक मात्रा चूर्ण, शहद ४ माशे और मक्खन या घी १० माशेमें मिलाकर चटानेसे भी बहुत बार अच्छा चमत्कार देखा है। जब इसे घी और शहदमें चटाते हैं, तब "सितोपलादि लेह या चटनी" कहते हैं। "चक्रदत्त" में लिखा है—इस सितोपलादिको घी और शहदमें मिलाकर चटानेसे श्वास, खाँसी और क्षय नाश होते हैं तथा अरुचि, मन्दाग्नि, पसलीका दर्द, हाथ-पैरोंकी जलन, कन्धोंकी जलन और दर्द, ज्वर, जीभका कड़ापन, कफरोग, सिरके रोग और ऊपरका रक्तपित्त ये भी आराम होते हैं। इस चूर्णकी प्रायः सभी आचार्योंने भर-पेट प्रशंसा की है और परीक्षामें ऐसा ही प्रमाणित भी हुआ है। हमारे दवाखानेमें यह सदा तैयार रहता है और हम इन रोगोंमें बहुधा पहले इसे ही रोगियोंको देते हैं।

मुस्तादि चूर्ण।

नागरमोथा, असगन्ध, अतीस, सोंठकी जड़, श्रीपर्णी, पाठा, शतावरी, खिरेंटी और कुड़ाकी छाल—इनका चूर्ण दूधके साथ पीनेसे श्वास और उरःक्षत रोग नाश होते हैं। परीक्षित है।

वासावलेह ।

अडूसा और कटेरीका रस शहद और पीपर मिलाकर, पीनेसे शीघ्र ही दारुण श्वास आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

दूसरा वासावलेह ।

अडूसेके आध सेर स्वरसमें शुद्ध सोनामक्खी. मिश्री और छोटी पीपर—ये तीनों चार-चार तोले मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ । जब गाढ़ा हो जाय उतारलो और शीतल होनेपर उसमें चार तोले शहद मिलादो और अमृतबान या शीशीमें रखदो । इसमेंसे एक तोले रोज़ खानेसे खाँसी, कफ, क्षय और बवासीर रोग नष्ट हो जाते हैं । परीक्षित है ।

तालीसादि चूर्ण ।

तालीस-पत्र १ तोले, गोलमिर्च २ तोले, सोंठ ३ तोले, पीपर ४ तोले, वंसलेचन ५ तोले, छोटी इलायचीके दाने ६ माशे, दालचीनी ६ माशे और मिश्री ३२ तोले—इन सबको पीस-कूटकर कपड़-छान करलो और रखदो । इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है । इसके अनुपान शहद, कच्चा दूध, बासी पानी, मिश्रीकी चाशनी, अनारका शर्बत, बनफशाका शर्बत या चीनीका शर्बत है, यानी इनमेंसे किसी एक के साथ इस चूर्णको खानेसे श्वास, खाँसी, अरुचि, संग्रहणी, पीलिया, तिल्ली, ज्वर, राजयक्ष्मा और छातीकी वेदना—ये सब आराम होते हैं । इस चूर्णसे पसीने आते हैं और हाड़ोंका ज्वर निकल जाता है । अनेक बार आज़मायश की है । इसे बहुत कम फेल होते देखा है । अगर इसके साथ-साथ "लाक्षादि तैल" की मालिश भी की जाय, तब तो कहना ही क्या ? परीक्षित है ।

लवंगादि चूर्ण ।

लौंग, शुद्ध कपूर, छोटी इलायची, कल्मी-तज, नागकेशर, जायफल, ख़स, बैतरा-सोंठ, कालाज़ीरा, काली अगर, नीली झाँईका बंसलोचन, जटामासी, कमलगट्टेकी गिरी, छोटी पीपर, सफेद चन्दन, सुगन्धवाला और कंकोल—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर सब दवाओंके वज़नसे आधी "मिश्री" पीसकर मिला दो और बर्तनमें मुँह बन्द करके रख दो। इसका नाम "लवंगादि चूर्ण" है। इसकी मात्रा ४ रत्तीसे २ माशे तक है। यह चूर्ण राजाओंके खाने योग्य है।

यह चूर्ण अग्नि और स्वाद बढ़ाता, दिलको ताक़त देता, शरीर पुष्ट करता, त्रिदोष नाश करता, बल बढ़ाता, छातीके दर्द और दिलकी घबराहटको दूर करता, गलेके दर्द और छालोंका नाश करता, खाँसी, ज़ुकाम, 'यक्ष्मा', हिचकी, तमक-श्वास, अतिसार, उरःक्षत—कफके साथ मवाद और खून आने, प्रमेह, अरुचि, गोला और संग्रहणी आदिको नाश करता है। परीक्षित है।

नोट—कपूर खूब सफेद और जल्दी उड़ने वाला लेना चाहिये और कमलगट्टे के भीतरकी हरी-हरी पत्ती निकाल देनी चाहिये, क्योंकि वह विषवत् होती हैं।

जातीफलादि चूर्ण ।

यह नुसख़ा हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" तीसरे भागके संग्रहणी प्रकरणमें लिखा है, वहाँ देखकर बना लेना चाहिये। इस चूर्णसे संग्रहणी, श्वास, खाँसी, अरुचि, क्षय और वात-कफ-जनित ज़ुकाम ये सब आराम होते हैं। बादी और कफका ज़ुकाम नाश करने और उसे बहानेमें तो यह रामबाण है। इससे जिस तरह संग्रहणी आराम होती है, उसी तरह क्षय भी नाश होता है। जिस रोगीको क्षयमें ज़ुकाम,

संग्रहणी, खाँसी, श्वास आदि उपद्रव होते हैं, उसके लिये बहुत ही उत्तम है । इसके सेवन करनेसे रोगीको नींद भी आती है और वह अपने दुःखको भूल जाता है ।

अगर क्षय-रोगीको इसे देना हो, तो इसे, शामके वक्त, शहदमें मिलाकर चटाना और ऊपरसे निवाया-निवाया दूध मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये । शामको इसके चटाने और सवेरे "लवंगादि चूर्ण" खिलानेसे अवश्य लाभ होगा । यह अपना काम करेगा और वह खाना हज़म करेगा, भूख लगायेगा, नींद लायेगा और दस्तको बाँधेगा ।

नोट—अगर क्षय-रोगीको पाखाना साफ़ न होता हो अथवा कफके साथ खून आता हो या कफमें बदबू मारती हो, तो "द्राक्षारिष्ट" दिनमें कई बार चटाना चाहिये । जिन क्षयवालोंको कब्ज़की शिकायत रहती हो, उनके लिये "द्राक्षारिष्ट" रामबाण है । हमने इन चूर्णों और दाखोंके अरिष्टसे बहुत रोगी आराम किये हैं ।

द्राक्षारिष्ट ।

उत्तम बड़े-बड़े बीज निकाले हुए मुनक्के सवा सेर लेकर, क़लईदार देग या कड़ाहीमें रखकर, ऊपरसे दस सेर पानी डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ । जब अढ़ाई सेर पानी बाक़ी रह जाय, उतारकर शीतल कर लो और मल छान लो । पीछे उसमें सवा सेर मिश्री भी मिला दो । इसके बाद दालचीनी २ तोले, छोटी इलायचीके बीज २ तोले, नागकेशर २ तोले, तेजपात २ तोले, वायविडंग २ तोले और फूल-प्रियंगू २ तोले, काली मिर्च १ तोले और छोटी पीपर १ तोले,—इन सबको जौकुट करके उसी मुनक्कोंके मिश्री-मिले काढ़ेमें मिला दो । पीछे एक चीनी या काँचके बरतनमें चन्दन, अगर और कपूरकी धूनी देकर, यह सारा मसाला भर दो । ऊपरसे ढकना बन्द करके कपड़-मिट्टीसे सन्धें बन्द कर दो । हवा जानेको साँस न रहे, इसका ध्यान रखो । फिर इसे एक महीने तक ऐसी जगहपर रख दो, जहाँ दिनमें

धूप और रातको ओस लगे। जब महीना-भर हो जाय, मुँह खोलकर सबको मथो और छानकर बोतलोंमें भर दो और काग लगादो। बस यही सुप्रसिद्ध "द्राक्षारिष्ट" है। ध्यान रखो, यह कभी बिगड़ता नहीं।

इसकी मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक है। इसे अकेला ही या "लवंगादि चूर्ण" और "जातीफलादि चूर्ण" सवेरे शाम देकर, दोपहरके बारह बजे, सन्ध्याके ४ बजे और रातको दस बजे चटाना चाहिये। इस अकेलेसे भी उरःक्षत रोग नाश होता है। अगर कफके साथ हर बार खून आता हो, तो इसे हर दो-दो घण्टेपर देना चाहिये। मुखसे खून आनेको यह फौरन ही आराम करता है। इसके सेवन करनेसे बवासीर उदावर्त्त, गोला, पेटके रोग, कृमिरोग, खूनके दोष, फोड़े-फुन्सी, नेत्र-रोग, सरके रोग और गलेके रोग भी नाश हो जाते हैं। इससे अग्नि वृद्धि होती, भूख लगती, खाना हजम होता और दस्त साफ होता है। अनेक बारका परीक्षित है।

दूसरा द्राक्षारिष्ट।

बड़े-बड़े बिना बीजके मुनक्के सवा सेर लेकर, चौगुने जल यानी पाँच सेर पानीमें डालकर, क़लईदार बासनमें मन्दाग्निसे औटाओ जब सवा सेर या चौथाई पानी बाक़ी रह जाय, उतारकर मल-छानलो। फिर उसमें पाँच सेर अच्छा गुड़ मिलादो और तज, इलायची, नाग-केशर, महँदीके फूल, काली मिर्च, छोटी पीपर और बायबिडंग—दो-दो तोले लेकर, महीन पीस छानकर उसीमें डालदो और क़लईदार कड़ाही में उड़ेलकर फिर औटाओ। औटाते समय कलछीसे चलाना बन्द मत करो। अगर न चलाओगे तो गुठलेसे हो जायँगे। जब औट जाय, इसे अमृतबानोंमें भर दो। इसकी मात्रा १ से चार तोले तक है। बलाबल देखकर मात्रा मुक़र्रर करनी चाहिये। इसके सेवन करनेसे छातीका दर्द, छातीके भीतरका घाव, श्वास, खाँसी, यक्ष्मा, अरुचि,

प्यास, दाह, गलेके रोग, मन्दाग्नि, तिल्ली और ज्वर आदि रोग नाश हो जाते हैं। अनेक बारका परीक्षित है। कभी फेल नहीं होता।

द्राक्षासव।

बड़े-बड़े दाख सवासेर, मिश्री पाँच सेर, झड़बेरीकी जड़की छाल अढ़ाई पाव, धायके फूल सवा पाव, चिकनी सुपारी, लौंग, जावित्री, जायफल, तज, बड़ी इलायची, तेजपात, सोंठ, मिर्च, छोटी पीपर, नागकेशर, मस्तगी, कसेरू, अकरकरा और मीठा कूट—इनमेंसे हरेक आध आध पाव तथा साफ पानी सवा छत्तीस सेर—इन सबको एक मिट्टी के घड़ेमें भरकर, ऊपरसे ढकना रखकर, कपड़मिट्टीसे मुख बन्द करदो। फिर ज़मीनमें गहरा गड्ढा खोदकर, उसीमें घड़ेको रखकर ऊपरसे मिट्टी डालकर दबादो और १४ दिन मत छेड़ो। पंद्रह दिन बाद घड़ेको निकालकर, उसका मसाला भभकेमें डालकर, अर्क़ खींचलो। इस अर्क़में दो-तोले केशर और एक माशे कस्तूरी मिलाकर, काँचके माँडमें भरकर रख दो और तीन दिन तक मत छेड़ो। चौथे दिनसे इसे पी सकते हो। सवेरे ही छै तोले, दोपहरको १० तोले और रातको १५ तोले तक पीना चाहिये। ऊपरसे भारी और दूध घीका भोजन करना चाहिये।

इस आसवके पीनेसे खाँसी, श्वास और राजयक्ष्मा रोग नाश होते वीर्य बढ़ता, दिल खुश और ज़रा-ज़रा नशा आता है। इसके पीने वालेकी स्त्रियाँ दासी हो जाती हैं। भाग्यवानोंको ही यह अमृत मयस्सर होता है। यक्ष्मा वालेके लिए यह ईश्वरका आशीर्वाद है। कई दफा परीक्षित है।

द्राक्षादि घृत।

बिना बीजके मुनक्के दो सेर और मुलेठी तीन पाव—दोनोंको खरल

में कुचलकर, रातके समय दस सेर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही मन्दाग्निसे औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर छानलो।

इसके बाद, बिना बीजोंके मुनक्के चार तोले, मुलेठी छिली हुई चार तोले और छोटी पीपर आठ तोले, इन तीनोको सिलपर पीस कर लुगदी बनालो।

इसके भी बाद गायका उत्तम घी दो सेर, तीनों दवाओंकी लुगदी और मुनक्का-मुलेठीका काढ़ा—इन सबको क़लईदार कड़ाही में चढ़ाकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। ऊपरसे थनदुहा गायका दूध आठ सेर भी थोड़ा-थोड़ा करके उसी कड़ाहीमें डालदो। जब दूध और काढ़ा जल जायँ; तब चूल्हेसे उतारकर छान लो और किसी बासनमें रख दो।

इस घीको रोगीको पिलाते हैं, दाल रोटी और भातके साथ खिलाते हैं। अगर पिलाना हो, तो घी में तीन पाव मिश्री पीसकर मिला देनी चाहिये। जिन रोगियोंको घी दे सकते हैं, उन्हें यह दवाओंसे बना द्राक्षादि घृत खिलाना-पिलाना चाहिये। क्योंकि खाँसी वालोको अगर मामूली घी खिलाया जाता है, तो खाँसी बढ़ जाती है। जिस क्षय-रोगीको खाँसी बहुत जोरसे होती है, उसे मामूली घी नुक़सान करता है; पर बिना घी दिये रोगीके अन्दर खुश्की बढ़ जाती है। अतः ऐसे रोगियोको यही घी पिलाना चाहिये। क्षय और खाँसी वालोंको यह घी अमृत है। यह खुश्की मिटाता, खाँसीको आराम करता और पुष्टि करता है।

च्यवनप्राश अवलेह।

१ बेल, २ अरणी, ३ श्योनाककी छाल, ४ गंभारी, ५ पाढ़ल, ६ शालपर्णी, ७ पृश्निपर्णी, ८ मुगवन, ९ माषपर्णी, १० पीपर, ११ गोखरू, १२ बड़ी कटेरी, १३ छोटी कटेरी, १४ काकड़ासिंगी, १५ भुई आमला, १६

दाख, १७ जीवन्ती, १८ पोहकरमूल, १९ अगर, २० गिलोय, २१ हरड़, २२ वृद्धि, २३ जीवक, २४ ऋषभक, २५ कचूर, २६ नागरमोथा, २७ पुनर्नवा, २८ मेदा, २९ छोटी इलायची, ३० नील कमल, ३१ लालचन्दन, ३२ विदारीकन्द, ३३ अडूसेकी जड़, ३४ काकोली, ३५ काकजंघा, और ३६ बरियारेकी छाल:—

इन ३६ दवाओंको चार-चार तोले लो और उत्तम आमले पाँच सौ नग लो। इन सबको ६४ सेर पानीमें डालकर, क़लईदार बासन में औटाओ। जब १६ सेर पानी बाक़ी रहे, उतारकर काढ़ा छान लो।

इसके बाद, छाननेके कपड़ेमेंसे आमलोंको निकाल लो। फिर उनके बीज और ततूरे या रेशा निकालकर, उनको पहले २४ तोले घीमें भून लो। इसके बाद उन्हें फिर २४ तोले तेलमें भून लो और सिलपर पीसकर लुगदी बनालो।

अब अढ़ाई सेर मिश्री, ऊपरका छना हुआ काढ़ा और पीसे हुए आमलोंकी लुगदी—इन सबको क़लईदार बासनमें मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते और घोटते-घोटते लेहके जैसा यानी चाटने लायक़ हो जाय, उतारकर नीचे रखो।

फिर तत्काल बंसलोचन १६ तोले, पीपर ८ तोले, दालचीनी २ तोले, तेजपात २ तोले, इलायची २ तोले और नागकेशर २ तोले—इन छहोंको पीस-छानकर उसमें मिला दो। जब शीतल हो जाय उसमें २४ तोले शहद भी मिला दो और घीके चिकने बर्तनमें रखदो।

इसकी मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक है। इसे खाकर ऊपरसे बकरीका दूध पीना चाहिये। कमज़ोरको ६ माशे सवेरे और ६ माशे शामको चटाना चाहिये। कोई-कोई इसपर गायका गरम दूध पीने की भी राय देते हैं।

इसके सेवन करनेसे विशेषकर खाँसी और श्वास नाश होते हैं; क्षतक्षीण, बूढ़े और बालककी अग्नि वृद्धि होती है, स्वरभंग, छाती

के रोग, हृदयरोग, वातरक्त, प्यास, मूत्रदोष और वीर्य-दोष नाश होते हैं। इसके सेवन करनेसे ही महावृद्ध च्यवन ऋषि जवान, बलवान, और रूपवान हुए थे। यह कमज़ोर और धातुक्षीणवाले स्त्री पुरुषों के लिए अमृत-समान है। जो इसको बुढ़ापेकी लैन-डोरी आते ही सेवन करता है, वह जवान-पट्ठा हो जाता है। इसकी कृपासे उसकी स्मरण-शक्ति, कान्ति, आरोग्यता, आयु और इन्द्रियोंकी सामर्थ्य बढ़ती, स्त्री-प्रसंगमें आनन्द आता, शरीर सुन्दर होता और भूख बढ़ती है।

बृहत् वासावलेह।

अडूसेकी जड़की छाल १२॥ सेर लाकर ६४ सेर पानीमें डाल कर पकाओ, जब चौथाई या १६ सेर पानी बाक़ी रहे, उतार कर छान लो। फिर उसमें १२ सेर चीनी और त्रिकुटा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, कायफल, नागरमोथा, कूट, कमीला, सफेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, तेवड़ी, पीपरामूल, चव्य, कुटकी, हरड़, तालीसपत्र और धनिया—इनमेंसे हरेकका चार-चार तोले पिसा-छना चूर्ण मिलाकर पकाओ और घोटो, जब अवलेहकी तरह गाढ़ा होनेपर आवे, उतार कर शीतल कर लो। जब शीतल हो जाय, उसमें एक सेर शहद मिला दो। इसकी मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है। अनुपान—गरम जल है। इसके सेवन करनेसे राजयक्ष्मा, स्वरभंग, खाँसी और अग्निमान्द्य आदि रोग नाश होते हैं।

वासावलेह।

अडूसेका स्वरस १ सेर, सफेद चीनी ६४ तोले, पीपर ८ तोले और घी ३२ तोले,—इन सबको एक क़लईदार बासनमें डाल कर, मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते अवलेहके समान हो जाय, उतार लो। जब खूब शीतल हो जाय, ३२ तोले शहद मिला कर किसी अमृतबानमें रख दो। इसके सेवन करनेसे राजयक्ष्मा, श्वास

खाँसी, पसलीका दर्द, हृदयका शूल, रक्तपित्त और ज्वर ये रोग नाश होते हैं ।

कर्पूराद्य चूर्ण ।

कपूर, दालचीनी, कंकोल, जायफल, तेजपात और लौंग प्रत्येक एक-एक तोले, बालछड़ २ तोले, गोलमिर्च ३ तोले, पीपर ४ तोले, सोंठ ५ तोले और मिश्री २० तोले—सबको एकत्र पीसकर कपड़े में छान लो ।

यह चूर्ण हृदयको हितकारी, रोचक, क्षय, खाँसी, स्वरभंग, क्षीणता, श्वास, गोला, बवासीर, वमन और कण्ठके रोगोंको नाश करता है । इसको सब तरहके खाने-पीनेके पदार्थोंमें मिलाकर रोगीको देना चाहिये । जो लोग दवाके नामसे चिढ़ते हैं, उनके लिए यह अच्छा है ।

षडंग यूष ।

जौ ४ तोले, कुल्थी ४ तोले और बकरेका चिकना मांस १६ तोले इन सबको अठगुने या १९२ तोले (२ सेर डेढ़पाव) जलमें पकाओ । जब पकते-पकते चौथाई पानी रहजाय, चार तोले घी डालकर बघार दे दो । फिर इसमें १ तोले सेंधानोन, ज़रा सी हींग, थोड़ा-थोड़ा अनार और आमलोंका स्वरस, ६ रत्ती पानीके साथ पिसी हुई सोंठ और छै ही रत्ती पानीके साथ पीसी हुई पीपर डाल दो । इसी मांस-रसका नाम "षडंगयूष" है । इस यूषके पीनेसे क्षय वालेके जुकाम या पीनस आदि सभी विकार नष्ट हो जाते हैं ।

चन्दनादि तैल ।

चन्दन, नख, मुलेठी, पद्माख, कमलकेशर, नेत्रवाला, कूट-छार-छरीला, मँजीठ, इलायची, पत्रज, वेल, तगर, कंकोल, ख़स, चीढ़,

देवदारु, कचूर, हल्दी, दारुहल्दी, सारिवा, कुटकी, लौंग, अगर, केशर, रेणुका, दालचीनी और जटामासी—इन सबको पहले हमामदस्तेमें कूट लो। फिर कुटे हुए चूर्णको सिलपर रख पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

पीपर-वृक्षकी लाख सवा सेर लाकर, पाँच सेर पानीमें डालकर औटाओ। जब चौथाई या सवा सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

अब एक क़लईदार कड़ाहीमें तीन सेर तिलीका तेल, अढ़ाई सेर दहीका तोड़, सवा सेर लाखका छाना हुआ पानी और ऊपरकी लुगदी रखकर मन्दाग्निसे पकाओ। आठ नौ घण्टे बाद जब पानी और दहीका तोड़ जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर बोतलमें भर दो।

इस तेलकी नित्य मालिश करानेसे ज्वर, यक्ष्मा, रक्तपित्त, उन्माद, पागलपन, मृगी, कलेजेकी जलन, सिरका दर्द और धातुके विकार नाश होकर शरीरकी कान्ति सुन्दर होती है। जीर्णज्वर और यक्ष्मा पर कितनी ही बार आज़मायश की है। परीक्षित है।

नोट—जब झाग उठने लगें तब घीको पका समझो और जब झाग उठकर बैठ जायँ, झागोंका नाम न रहे, तब समझो कि तेल पक गया। यह चन्दनादि तैल क्षय और जीर्णज्वरपर खासकर फ़ायदेमन्द है। शरीर पुष्टि करने वाला चन्दनादि तैल हमने "स्वास्थ्यरक्षा" में लिखा है।

लाक्षादि तैल।

इस तैलकी मालिशसे जीर्णज्वरी और क्षय-रोगीको बड़ा फ़ायदा होता है। प्रत्येक ग्रन्थमें इसकी तारीफ़ लिखी है और परीक्षामें भी ऐसा ही साबित हुआ है। इसके बनानेकी विधि "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ ३६४ में लिखी है। यद्यपि उस विधिसे बनाया तेल बहुत गुण करता है, पर उसके तैयार करनेमें समय

ज़ियादा लगता है, इसलिये एक ऐसी विधि लिखते हैं, जिससे १२ घण्टेमें ही लाक्षादि तैल तैयार हो जाता है ।

पीपलकी लाख एक सेर लाकर चार सेर पानीमें डालकर औटाओ । जब एक सेर या चौथाई पानी बाक़ी रहे, उतारकर छान लो । फिर उस छने हुए पानीमें काली तिलीका तेल १ सेर और गायके दहीका तोड़ ४ सेर मिला दो ।

इन सब कामोंसे पहले ही या लाखको चूल्हेपर रखकर, सौंफ, असगन्ध, हल्दी, देवदारु, रेणुका, कुटकी, मरोड़फली, कूट, मुलेठी, नागरमोथा, लाल चन्दन, रास्ना, कमलगट्टेकी गरी और मँजीठ एक-एक तोले लाकर, सिलपर सबको पानीके साथ पीसकर लुगदी कर लो ।

एक क़लईदार कड़ाहीमें, लाखके छने पानी, तेल और दहीके तोड़को डालकर, इस लुगदीको भी बीचमें रख दो और मन्दाग्निसे बारह घण्टे पकाओ । जब पानी और दहीका तोड़ ये दोनो जल जायँ, केवल तेल रह जाय, उतारकर शीतल कर लो और छानकर बोतलोंमें भर दो।

इस तेलके लगाने या मालिश करानेसे जीर्णज्वर, विषमज्वर, तिजारी, खुजली, शरीरकी बदबू और फोड़े-फुन्सी नाश हो जाते हैं । इससे सिरके दर्दमें भी लाभ होता है । अगर गर्भिणी इसकी मालिश कराती है, तो उसका गर्भ पुष्ट होता और हाथ-पैरोंकी जलन मिटती है । यह तेल अपने काममें कभी फेल नहीं होता ।

राजमृगाङ्क रस ।

मारा हुआ पारा ३ भाग, सोनाभस्म १ भाग, ताम्बाभस्म १ भाग, शुद्ध मैनसिल २ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग और शुद्ध हरताल २ भाग—इन सबको एकत्र महीन पीसकर, एक बड़ी पीली कौड़ीमें भर लो । फिर बकरीके दूधमें पीसे हुए सुहागेसे कौड़ीका मुँह बन्द

कर दो। इसके बाद उस कौड़ीको एक मिट्टीके बर्तनमें रखकर, उस बर्तनपर ढकना रखकर, उसका मुँह और दराज़ कपड़-मिट्टीसे बन्द कर दो और सुखा लो।

अब एक गज़ भर गहरा, गज़ भर चौड़ा और उतना ही लम्बा गढ़ा खोदकर, उसमें जंगली कण्डे भरकर, बीचमें उस मिट्टीके बासन को रख दो और आग लगा दो। जब आग शीतल हो जाय, उस बासन को निकालकर, उसकी मिट्टी दूर कर दो और रसको निकाल लो। इसका नाम "राज मृगाङ्क रस" है। इसमेंसे चार रत्ती रस, नित्य, १८ कालीमिर्च, दस पीपर, ६ माशे शहद और १० माशे घीके साथ खाने से वायु और कफ-सम्बन्धी क्षय रोग तत्काल नाश हो जाता है।

अमृतेश्वर रस।

पाराभस्म, गिलोयका सत्त और लोह भस्म—इनको एकत्र मिला कर रख लो। इसीका नाम "अमृतेश्वर रस" है। इसमेंसे २ से ६ रत्ती तक रस ना-बराबर घी और शहदमें मिलाकर नित्य चाटनेसे राजयक्ष्मा शान्त हो जाता है। यह योग "रसेन्द्रचिन्तामणि" का है।

कुमुदेश्वर रस।

सोनाभस्म १ भाग, शुद्ध पारा १ भाग, मोती २ भाग, भुना सुहागा १ भाग और गंधक १ भाग—इनको काँजीमें खरल करके, गोला बना लो। गोलेपर कपड़ा और मिट्टी लहेसकर उसे सुखा लो। फिर एक हाँडीमें नमक भरकर, बीचमें उस गोलेको रख दो। इसके बाद हाँडीपर पारी रखकर, उसकी सन्ध और मुँह बन्द करके, उसे चूल्हेपर चढ़ा दो और दिन-भर नीचेसे आग लगाओ। जब दिन भर या १२ घण्टे आग लग ले, उसे उतारकर शीतल कर लो। शीतल

होनेपर, उसमें सिद्ध हुए रसको निकाल लो । इसीका नाम "कुमुदेश्वर रस" है ।

इसकी मात्रा एक रत्तीकी है, अनुपान घी और कालीमिर्च है । एक मात्रा खाकर, ऊपरसे कालीमिर्च-मिला घी पीना चाहिये । इसके सेवन करनेसे अत्यन्त खानेवाला, प्रमेही, अतिसार-रोगी, नित्य प्रति क्षीण होनेवाला रोगी और जिसके नेत्र सफेद हो गये हों ऐसा मनुष्य, खाँसी और क्षय रोगवाला रोगी निश्चय ही आराम होते हैं ।

मृगाङ्क रस ।

शुद्ध पारा १ तोले, सोनाभस्म ३ तोले और सुहागेकी खील २ माशे—इन सबको काँजीमें पीसकर और गोला बना कर सुखा लो । फिर उसे मूषमें रख कर बन्द कर दो । इसके बाद, एक हाँडीमें नमक भर कर, उसके बीचमें दवाओंके गोले वाली मूष रख कर, हाँडीपर ढकना देकर, हाँडीकी सन्धें और मुख बन्द कर दो । फिर आगपर चढ़ाकर ४ पहर तक पकाओ । पीछे उतार कर शीतल कर लो । इस की मात्रा २ से ४ रत्ती तक है । एक मात्रा रसको शहदमें मिलाकर, उसमें १० कालीमिर्च या १० पीपर पीस कर मिला दो और चाटो । इस रससे राजयक्ष्मा और उसके उपद्रव नाश होते हैं ।

महामृगाङ्क रस ।

सोना भस्म १ भाग, पाराभस्म २ भाग, मोती-भस्म ३ भाग, शुद्ध गंधक ४ भाग, सोनामक्खीकी भस्म ४ भाग, मूंगा भस्म ७ भाग और सुहागेकी खील ४ भाग, इन सबको शर्बती नीबूके रसमें ३ दिन तक खरल करो और गोला बना कर तेज़ धूपमें सुखा लो । सूखनेपर उस गोलेको मूषमें रख कर बन्द करो । फिर एक हाँडीमें नमक भर कर, उसके बीचमें मूषको रख कर, हाँडीका मुख अच्छी तरह

बन्द कर दो और हाँडीको चूल्हेपर चढ़ा १२ घण्टों तक बराबर आग लगने दो। इसके बाद उतारकर शीतल कर लो। इसकी मात्रा २ रत्ती की है। अनुपान गोल-मिर्च और घी अथवा पीपलोंका चूर्ण और घी। इसके सेवन करनेसे राजयक्ष्मा, ज्वर, अरुचि, वमन, स्वर-भंग और खाँसी प्रभृति रोग आराम होते हैं।

यक्ष्मा, तपेदिक या जीर्णज्वर पर स्वर्णमालती वसन्त सर्वोत्तम दवा है। उसकी विधि हमने दूसरे भागमें लिखी है, पर यहाँ फिर लिखते हैं—

सुवर्ण भस्म	१ तोले
मोती गुलाबजलमें घुटे	२ ,,
शिंगरफ शुद्ध रूमी	३ ,,
काली मिर्च धुली-छनी	४ ,,
जस्ता भस्म	८ ,,

पहले सोनेकी भस्म और शिंगरफको खरलमें डालकर ६ घण्टों तक घोटो। फिर इसमे मोतीकी ख़ाक़, मिर्च और जस्ता-भस्म भी मिला दो और तीन घण्टे खरल करो। इसके भी बाद, इसमें गायका लूनी घी इतना डालो कि मसाला खूब चिकना हो जावे। अन्दाज़न ६ तोले घी काफी होगा। घी मिलाकर, इसमें काग़ज़ी नीबुओंका रस डालते जाओ और खरल करते रहो, जब तक घी की चिकनाई क़तई न चली जावे, बराबर खरल करते रहो। चाहे जितने दिन खरल करनी पड़े। बिना चिकनाई गये, मालती बसन्त कामका न होगा। कोई-कोई इसे ४६ दिन या सात हफ़्ते तक खरल करनेकी राय देते हैं। कहते हैं, ७ हफ़्ते घोटनेसे यह रस बहुत ही बढ़िया बनता है। अगर इस पर खूब परिश्रम किया जावे तो बेशक हुक्मी दवा बने।

नोट—अगर सोनाभस्म न हो तो सोने के वर्क़ मिला सकते हो, पर सोनेके वर्क़ जाँच कर ख़रीदना। आजकल इनमें कपट-व्यवहार होने लग गया है। अगर सुवर्णभस्मकी जगह सोनेके वर्क़ मिलाओ तो सोनेके वर्क़ और शिंगरफ

या हिंगुलको तब तक घोटना जब तक कि वर्कोंकी चमक न चली जावे। बसन्तमालतीमें शुद्ध सूरती खपरिया-भस्म डाली जाती है, पर वह आजकल ठीक नहीं मिलती, इसलिए जस्ताभस्म मिलाई जाती है और करीब-करीब उसीके बराबर काम देती है।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा कम-से-कम १ रत्ती की है। सवेरे-शाम खानी चाहिये।

सितोपलादि चूर्ण	१ माशे
शहद असली	६ माशे
मालती बसन्त	१ रत्ती

तीनोंको मिलाकर चाटनेसे जीर्णज्वर, तपेदिक, क्षय थाइसिस, तपेक़ोनः, कमज़ोरी, क्षयकी खाँसी, साधारण खाँसी, अतिसार या संग्रहणीके साथ रहने वाला ज्वर, औरतोंका प्रसूतज्वर आदि इसके सेवनसे निस्सन्देह जाते रहते हैं। किसी रोगके आराम हो जाने पर जो कमज़ोरी रह जाती है, वह भी इससे चली जाती और ताक़त आती है।

अथवा

गिलोयका सत्त	२ माशे
छोटी पीपरोंका चूर्ण	२ रत्ती
छोटी इलायचीका चूर्ण	२ रत्ती
बसन्त मालती	१ रत्ती
शहद	४ माशे

इन सबको मिलाकर चाटनेसे जीर्णज्वर और क्षयज्वरमें निश्चय ही लाभ होता है।

अथवा

बसन्त मालती	१ रत्ती
छोटी पीपरका चूर्ण	२ रत्ती

शहद	३ माशे

इस तरह चाटनेसे भी पुराना ज्वर चला जाता है।

नोट—छोटी पीपरोंको २४ घण्टेतक गायके दूधमें भिगोकर और पीछे निकाल कर, छायामें सुखा लेना चाहिये। ऐसी पीपर सितोपलादि चूर्णमें डालनी चाहिएँ और ऐसी ही मालती वसन्तके साथ खानी चाहिएँ।

अथवा

मक्खन	२ तोले
मिश्री	१ तोले
मालती वसन्त	१ रत्ती

मिलाकर खानेसे बल वीर्य बढ़ता और सूखी खाँसी आराम हो जाती है।

एक और बढ़िया वसन्त मालती।

जस्ता-भस्म	२ तोले
काली मिर्च (साफ)	२ तोले
सोनेके वर्क	१ तोले
अबीध मोती	१ तोले
शुद्ध शिंगरफ	४ तोले
छोटी पीपरका चूर्ण	२ तोले
शुद्ध खपरिया	४ तोले
गिलोयका सत्त	२ तोले
अभ्रक भस्म (निश्चन्द्र)	१ तोले
कस्तूरी	आधे तोले
अम्बर	आधे तोले

बनानेकी विधि।

(१) काली मिर्च, पीपर, गिलोयका सत्त—इनको पीसकर कपड़ेमें छान अलग-अलग रख दो।

(२) मोतियोंको खरलमें पीसकर, एक दिन, अर्क़ बेदमुश्क डाल-डालकर खरल करो और अलग रख दो।

(३) शुद्ध शिंगरफ और मोतियोंको खरलमें डाल घोटो और काली मिर्च, पीपरका चूर्ण, खपरिया भस्म, गिलोयका सत्त, अभ्रक भस्म—ये सब मिलाकर ३ घण्टे घोटो। अन्तमें सोनेके वर्क भी अलग पीसकर मिलादो और खूब खरल करो। जब तक सोनेके वर्क की चमक न चली जावे, खरल करते रहो।

(४) जब सब दवाएँ मिल जावें, तब इसमें १० तोले गायका मक्खन मिला दो और खरल करो।

(५) जब मक्खनमें सब चीजें मिल जावें, तब काग़ज़ी नीबुओं का रस डाल-डालकर खूब खरल करो, जब तक चिकनाई क़तई न चली जावे खरल करते रहो, उकताओ मत। चिकनाई चली जाने से ही दवा अच्छी बनेगी।

(६) जब चिकनाई न रहे, उसमें कस्तूरी और अम्बर भी मिला दो और घोटकर एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। बस; अमृत—सच्चा अमृत बन गया।

नोट—छोटी पीपर पीस-छानकर इस चूर्णमें नागरपानोंके रसकी २१ भावनायें देकर सुखा लो और शीशीमें रख लो।

सेवन विधि।

अड़ूसेके नौ पत्तोंका रस, ज़रा-सा शहद, एक माशे ऊपरकी भावना दी हुई पीपरोंका चूर्ण और १ रत्ती मालती बसन्त—सबको मिलाकर चटनी बनालो। सवेरे-शाम इस चटनीको चटाना चाहिये।

इसके अलावः दिनके २ बजे, च्यवनप्राश २ तोले ताज़ा गायके दूधमें सेवन कराना चाहिए और रातको, सोनेसे पहले, २ रत्ती सोना भस्म, ६ माशे सितोपलादि चूर्णमें मिलाकर सेवन कराना चाहिये।

इस तरह २ महीने बसन्तमालती—यह ख़ास तौरसे बनाई हुई बसन्तमालती—सेवन करानेसे कैसा भी क्षय-ज्वर क्यों न हो, अवश्य लाभ होगा। इतना ही नहीं, रोग आराम होकर, एक बार फिर नई जवानी आजावेगी।

(२५) कुमुदेश्वर रस भी क्षय रोगमें बड़ा काम करता है। उसके सेवनसे वह रोगी, जिसकी आँखें सफेद हो गई हैं और जो नित्यप्रति क्षीण होता है, आराम हो जाता है। हमने कुमुदेश्वर रसकी एक विधि पहले लिखी है, यहाँ हम एक और कुमुदेश्वर रस लिखते है, जो बहुत ही जल्दी तैयार होता और क्षयको मार भगाता है। ग़रीबोंके लिए अच्छी चीज़ है:—

शुद्ध पारा

शुद्ध गंधक

अभ्रक भस्म हज़ार पुटी

शुद्ध शिंगरफ

शुद्ध मैनशिल

लोहभस्म

इन सबको समान-समान लेकर, खरलमें डाल, २ घण्टे तक खरल करो। फिर इसमें शतावरके स्वरसकी २१ भावनाएँ देकर सुखा लो। बस, कुमुदेश्वर रस तैयार है।

नोट—लोहभस्म वह लेना, जो मैनशिल द्वारा फूँकी गई हो और ४० आँच की हो, अगर ताज़ा शतावर न मिले तो शतावरका काढ़ा बना कर भावना देना।

सेवन-विधि।

कुमुदेश्वर रस	३ रत्ती
मिश्री	२ माशे
कालीमिर्चका चूर्ण	५ नगका
शहद	४ माशे

इस तरह मिलाकर सवेरे-शाम और दोपहरको चटाओ।

अगर रोगीको क्षय या और ज्वरके कारण दाह—जलन हो तो इस रसमें १ माशे बंसलोचन और १।२ रत्ती छोटी इलायचीका चूर्ण मिला कर देना चाहिए। दो मात्रामें ही जलन दूर हो जावेगी।

अगर रोगीका पेशाब पीला आता हो, और उसमें जलन होती हो, तो रोगीको चन्दनादि अर्क़ ६ तोला और शर्बत बनफ़शा ४ तोले मिलाकर दिनमें ३ बार पिलाना चाहिए। यह अर्क़ पेशाबकी जलन और पीलेपनको दो चार मात्रामें ही नाश कर देता है। इस अर्क़को कुमुदेश्वर रस सेवन कराते हुए, उसके साथ-साथ, दूसरे टाइमपर देते हैं। यह अर्क़ ज्वर नाश करनेमें भी अपूर्व चमत्कार दिखाता है।

चन्दनादि अर्क़।

सफेद चन्दन, लालचन्दन, ख़सकी जड़, पद्माख, नागरमोथा, ताज़ा गिलोय, शाहतरा, नीमकी छाल, गुलाबके फूल, फूल-नीलोफर, त्रिफला, दारूहल्दी, कासनी, कौंचके बीजोंकी गरी, सौंफ, नेत्रवाला, धनिया, तुलसीके बीज, धमासा, मुण्डी, मुलहटी, छोटी इलायची, पोस्तके डोडे, बहेड़ेकी जड़, गन्नेकी जड़, जवासेकी जड़, कासनीकी जड़ और गावज़ुबाँ—ये सब एक-एक तोले, पेठेका रस १ सेर, लम्बी लौकीका रस १ सेर, काहू १ छटाँक और कुलफा १ छटाँक।

इनमेंसे पेठे और लौकीके रस अलग रख दो और शेष दवाओं को जौकुट करलो। बादमें, एक चीनीके टीनपाटमें पेठे और लौकी का रस डाल, उसमें दवाओंका चूर्ण डाल कर शामको भिगोदो, सवेरे उसमें १०।१२ सेर जल डाल दो।

भभके के मुँहमें १ माशे केशर, १ माशे कस्तूरी, १ माशे अम्बर और ३ माशे कपूरकी पोटली बना लटका दो। फिर अर्क़की विधिसे अर्क़ खींचलो, पर आग मन्दी रखना। दस बोतल या ७॥ सेर अर्क़ खींच

सकते हो। अगर इसे और भी बढ़िया बनाना हो, तो इस अर्क़में बकरीका दूध मिला-मिलाकर, दो बार फिर अर्क़ खींच लेना चाहिये।

नोट—ये तीनों नुसख़े पं० देवदत्तजी शर्मा—वैद्यशास्त्री, शङ्करगढ़ ज़िला गुरुदासपुरके हैं; अतः हम शास्त्रीजीके कृतज्ञ हैं। हमने ये परोपकारार्थ लिये हैं, आशा है, आप क्षमा करेंगे। "परोपकाराय सतां विभूतयः।"

(२६) क्षय रोग नाशक एक और उत्तम औषधि लिखते हैं—

इलायची, तेजपात, पीपर, दालचीनी, जेठी-मधु, चिरायता, पित्त-पापड़ा, खैरकी छाल, जवासा, पुनर्नवा, गोरखमुण्डी, नागकेशर, बबूलकी छाल और अडूसा—इन सबको एक-एक छटाँक लेकर जौकुट करो और सबका ६४ भाग—छप्पन सेर पानी डालकर, क़लईदार कड़ाहीमें काढ़ा पकाओ। जब चौथाई यानी १४ सेर पानी रह जावे, उतारकर, उसमें १ सेर शहद मिलाकर, चीनीके पुख्ता भाँड़में भर दो। उसका मुँह बन्द करके, सन्धोंपर कपरौटी कर दो और जमीनमें गढ़ा खोदकर एक महीना गाड़े रखो।

एक महीने बाद निकालकर छान लो। अगर इसे बहुत दिन टिकाऊ बनाना हो, तो इसमें हर दो सेर पीछे सवा तोले रैक्टीफाईड स्पिरिट मिला दो।

इसकी मात्रा तीन माशेकी होगी। हर मात्रा २ तोले जलमें मिलाकर, रोगीको, रोगकी हर अवस्थामें, दे सकते हैं। यह बहुत उत्तम योग है। यह पेटेन्ट दवाके तौरपर बेचा जा सकेगा, क्योंकि यह बिगड़ेगा नहीं।

(२७) हमने पीछे इसी भागमें "द्राक्षासव" का एक नुसख़ा अपना सदाका आज़मूदा लिखा है। यहाँ एक और नुसख़ा लिखते हैं। यह भी उत्तम है:—

(१) ढाई सेर बीज निकाले मुनक्के लेकर कुचल लो और साढ़े पच्चीस सेर जलमें डाल, क़लईदार कड़ाहीमें काढ़ा पकालो। जब

चौथाई जल रहे उतार लो। उस काढ़ेको एक मज़बूत मिट्टी या चीनीके वर्तनमें भर दो।

फिर उसमें १० सेर एक सालका पुराना गुड़ डाल दो। ६४ तोले धायके फूल कूटकर डाल दो। और, वायविडंग, पीपर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर और काली मिर्च हरेक चार-चार तोले भी डाल दो। इसके वाद, उसका मुँह बन्दकर सन्धों पर कपरौटी करके, जमीनमें १ महीने तक गाड़ रखो।

एक महीने वाद, छानकर काममें लाओ। यह उत्तम "द्राक्षासव" है। अगर इसे और वढ़िया करना हो, तो इसका भभके द्वारा अर्क़, खींच लो। अगर इसे कम मात्रामें ज़ियादा गुणकारी और वहुत दिन तक न विगड़ने वाला वनाना चाहो, तो इसमें हर सौ तोलेमें एक तोले रैक्टीफाइड स्पिरिट मिला देना।

सेवन-विधि ।

अगर स्पिरिट न मिलावें तो इसकी मात्रा आधा तोलेसे २ तोले तक हो सकती है, पर स्पिरिट मिलानेपर इसकी मात्रा १॥ माशे से ३ माशे तक है। इसे शीतल जलमें मिलाकर पीना चाहिये।

(२८) हमने उधर सितोपलादि चूर्ण, तालीसादि चूर्ण और लवंगादि चूर्ण लिखे हैं। वहाँ हमने उनके बनानेकी विधि और गुण लिखे हैं, पर यह नहीं लिखा कि रोगकी किस-किस अवस्थामें कौन-सा चूर्ण देना चाहिये; अतः यहाँ लिखते हैं:—

सितोपलादि चूर्ण ।

अगर क्षय या जीर्णज्वर रोगीको खाँसी, श्वास, हाथ-पैरोंके तलवोंमें जलन या सारे शरीरमें जलन हो अथवा अरुचि, मन्दाग्नि, पसलीका दर्द, कन्धोंकी जलन, कन्धोंका दर्द, जीभका कड़ापन, सिरमें रोग आदि हों तो सितोपलादि चूर्ण १॥ माशेसे ३ माशे तक

शहद	४ माशे
मक्खन	१० माशे

में मिलाकर सवेरे-शाम चटाओ।

अथवा

मक्खन	२ तोले
मिश्री	१ तोले

के साथ एक एक मात्रा चटाओ।

अगर क्षय या जीर्णज्वर वालेको पतले दस्त लगते हों तो

शर्बत अनार

या

शर्बत बनफशा

में सितोपलादि चूर्णकी मात्रा चटाओ। दस्तोंको लाभ होगा।

अगर जल्दी ही फ़ायदा पहुँचाना हो, तो इसमें स्वर्णमालती वसन्त भी एक-एक रत्ती मिला दो। जैसा पीछे लिख आये हैं।

लवङ्गादि चूर्ण।

अगर रोगीको भूख न लगती हो, छातीमें दर्द रहता हो, श्वास की शिकायत हो, खाँसी हो, भोजनपर रुचि न हो, शरीर कमज़ोर हो, हिचकियाँ आती हों, पतले दस्त लगते हों, दस्तमें लसदार पदार्थ आता हो, पेटमें रोग हो, पेशाबकी राहसे पेशाबमें वीर्य प्रभृति धातुएँ जाती हों, तो आप उसे "लवंगादि चूर्ण" ४ रत्तीसे १॥ या दो माशे तक शहदमें मिलाकर दो।

अगर क्षय-रोगीको पतले दस्त लगते हों, कफके साथ मवाद और खून जाता हो, दिल घबराता हो, मुँहमें छाले हों और संग्रहणी हो, शरीर एक दम कमज़ोर हो गया हो तब इसे ज़रूर देना चाहिये।

अगर रोगीका खाँसी ज़ोरसे आती हो, ज्वर उतरता न हो, पसीने

आते न हों, तिल्ली, पीलिया, अतिसार, संग्रहणी और छातीमें दर्द वगैरः लक्षण हों तब आप

तालीसादि चूर्ण ।

तीनसे ६ माशे तक, नीचेके अनुपानोंके साथ, समझ-बूझकर दीजियेः—

(१) शर्बत अनार, (२) शर्बत बनफ़शा,
(३) मिश्रीकी चाशनी, (४) मिश्रीका शर्बत,
(५) कच्चा दूध, (६) बासी जल,
(७) शहद ।

कर्पूरादि चूर्ण ।

अगर रोगीको स्वरभंग, सूखी ओकारी, खाँसी, श्वास, गोला, बवासीर, दाह, कंठमें छाले या कोई और तकलीफ हो, तब "कर्पूरादि चूर्ण" २ से ३ माशे तक, नीचेके अनुपानोंके साथ, ज़रूरत होनेसे, रोगके उपद्रव रोकनेको देना चाहिये; यानी मुख्य दवाओंके बीचमें, उपद्रव शान्त करनेको, किसी मुनासिब वक्तपर, दे सकते हो।

अनुपानः—

(१) अर्क गुलाब, (२) शहद,
(३) जल, (४) केलेके खंभका जल ।

अश्वगन्धादि चूर्ण ।

अगर उरःक्षतके कारण कोखमें दर्द हो, पेटमें शूल चलते हों, मन्दाग्नि, क्षीणता आदि लक्षण क्षय-रोगीमें हों, तो आप "अश्वगन्धादि चूर्ण" २ से ३ माशे तक, नीचे लिखे अनुपानोंके साथ, सबेरे-शाम दीजिये ।

(१) शहद या गरम जलके साथ—वातज क्षयमें ।
(२) बकरीके घीके साथ—पित्तज क्षयमें ।
(३) मधुके साथ—कफज क्षयमें ।

(४) मक्खनके साथ—धातु-क्षय में।

(५) गायके दूधके साथ—मूर्च्छा और पित्तज विकारों में।

इसके बनानेकी विधि हमने पहले नहीं लिखी थी, इसलिए यहाँ लिखते हैं:—

असगन्ध—	...	...	४० तोले
सोंठ—	...	...	२० „
पीपर—	...	...	१० „
मिश्री—	...	...	५ „
दालचीनी—	...	...	१ „
तेजपात—	...	...	१ „
नागकेशर—	...	...	१ „
इलायची—	...	...	१ „
लौंग—	...	...	१ „
भरंगीकी जड़—	...	...	१ „
तालीस पत्र—	...	...	१ „
कचूर—	...	...	१ „
सफेद ज़ीरा—	...	...	१ „
कायफल—	...	...	१ „
कवावचीनी—	...	...	१ „
नागरमोथा—	...	...	१ „
रास्ना—	...	...	१ „
कुटकी—	...	...	१ „
जीवन्ती—	...	...	१ „
मीठा कूट—	...	...	१ „

सबको अलग-अलग कूट-छानकर, पीछे तोल-तोलकर मिला दो। यही "अश्वगन्धादि चूर्ण" है।

क्षय-ज्वर या जीर्णज्वरको नाश करनेमें "जयमंगल रस" एक ही है। इससे सब तरहके जीर्णज्वर, धातुगत ज्वर, विषमज्वर, आदि आठों ज्वर नाश हो जाते हैं। क्षयमें भी वह खूब काम करता है, इसीसे यहाँ लिखते हैं:—

हिंगुलोत्थ पारा	...	४ माशे
शुद्ध गंधक	...	४ माशे
शुद्ध सुहागा	...	४ माशे
ताम्बा भस्म	...	४ माशे
बंग भस्म	...	४ माशे
सोनामक्खी-भस्म	...	४ माशे
सैंधा नोन	...	४ माशे
काली मिर्चका चूर्ण	...	४ माशे
सोना भस्म	...	४ माशे
कान्तलोह-भस्म	...	४ माशे
चाँदी-भस्म	...	४ माशे

इन सबको एकत्र मिलाकर, एक दिन "धतूरेके रस" में खरल करो। दूसरे दिन "हारसिंगारके रस" में खरल करो। तीसरे दिन "दशमूलके काढ़े" के साथ खरल करो और चौथे दिन "चिरायतेके काढ़े" के साथ खरल करो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो।

सफेद ज़ीरेका चूर्ण और शहदमें एक रत्ती यह रस मिलाकर चाटनेसे समस्त ज्वरोंको नाश करता है। यह जीर्णज्वर या क्षयज्वर की प्रधान औषधि है।

---

(१) एलादि गुटिका।

छोटी इलायचीके बीज, तेजपात, दालचीनी, मुनक्का और पीपर दो-दो तोले तथा मिश्री, मुलेठी, खजूर और दाख—चार-चार तोले लेकर, सबको महीन पीस-छानकर, खरलमें डालकर और ऊपरसे शहद दे-देकर घोटो। जब घुट जाय, एक एक तोलेकी गोलियाँ बना लो। इनमें से, अपने बलाबल अनुसार, एक या आधी गोली नित्य खानेसे खाँसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, वमन, मूर्च्छा, नशासा बना रहना, भौंर आना, खून थूकना, प्यास, पसलीका दर्द, अरुचि, तिल्ली, आमवात, स्वर-भंग, क्षय और राजरोग आराम हो जाते हैं। ये गोलियाँ वीर्य बढ़ानेवाली और रक्तपित्त नाश करनेवाली हैं। परीक्षित हैं। उरःक्षतवाले इन्हें ज़रूर सेवन करें।

नोट—हम इन गोलियोंको छै-छै माशेकी बनाते हैं और उरःक्षतवालेको दोनों समय खिलाकर, ऊपरसे बकरीका ताजा दूध मिश्री-मिला पिलाते हैं।

(२) दूसरी एलादि गुटिका।

इलायचीके बीज ६ माशे, तेजपात ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, पीपर २ तोले, मिश्री ४ तोले, मुलेठी ४ तोले, खजूर या छुहारे ४ तोले और दाख ४ तोले,—इन सबको महीन पीस-छानकर, शहद मिलाकर, एक एक तोलेकी गोलियाँ बनालो। इनमें से एक गोली नित्य खानेसे

पहली एलादि गुटिकामें लिखे हुए सब रोग नाश होते हैं। यह बटी उरःक्षतपर प्रधान है। कामी पुरुषोंके लिए परम हितकारी है।

नोट—राजयक्ष्माको हिकमतमें तपेदिक या दिक कहते हैं और उरःक्षतको सिल कहते हैं। इनमें बहुत थोड़ा फर्क है। उरःक्षतमें हृदयके भीतर जख्म हो जाता है, जिससे खखारके साथ खून या मवाद आता है, ज्वर चढ़ा रहता है, खाँसी आती रहती है और रोगीको ऐसा मालूम होता है, मानों कोई उसकी छातीको चीरे डालता है।

(३) बलादि चूर्ण।

खिरेंटी, असगन्ध, कुम्भेरके फल, शतावर और पुनर्नवा—इनको दूधमें पीसकर नित्य पीनेसे उरःक्षत-शोष नाश हो जाता है।

(४) द्राक्षादि घृत।

बड़ी-बड़ी काली दाख ६४ तोले और मुलहटी ३२ तोले,—इनको साफ पानीमें पकाओ। जब पकते-पकते चौथाई पानी रह जाय, उसमें मुलहटीका चूर्ण ४ तोले, पिसी हुई दाख ४ तोले, पीपरोंका चूर्ण ८ तोले और घी ६४ तोले—डाल दो और चूल्हेपर चढ़ाकर मन्दाग्नि से पकाओ। ऊपरसे चौगुना गायका दूध डालते जाओ। जब दूध और पानी जलकर घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। फिर शीतल होनेपर, इसमें ३२ तोले सफेद चीनी मिला दो। यही "द्राक्षादि घृत" है। इस घीके पीनेसे उरःक्षत रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। इससे ज्वर, श्वास, प्रदर-रोग, हलीमक रोग और रक्तपित्त भी नाश हो जाते हैं।

नोट—हम यक्ष्मा-चिकित्सामें भी "द्राक्षादि घृत" लिख आये हैं। दोनों एक ही हैं। सिर्फ बनानेके ढँगमें फर्क है। यह शास्त्रोक्त विधि है। वह हमारी अपनी परीक्षित विधि है।

उरःक्षतपर ग़रीबी नुसख़े।

(५) धानकी खील ६ माशे लेकर, गायके आधपाव कच्चे दूध और ६ माशे शहदमें मिलाकर पीओ और दो घण्टे बाद फिर गाय का कच्चा दूध एक पाव मिश्री मिलाकर पीओ। इस नुसख़ेसे उरःक्षत या सिल रोगमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(६) पोस्तेके दाने ३ तोले और ईसबगोल १ तोले,—दोनोंको मिलाकर, आध सेर पानीमें, काढ़ा बनाओ। जब पाव-भर काढ़ा रह जाय, छान लो और क़लईदार बर्तनमें डाल दो। ऊपरसे मिश्री आध सेर, ख़सख़स ६ माशे और बबूलका गोंद ६ माशे पीसकर मिला दो। शेषमें, इसे आगपर थोड़ी देर पकाओ और उतारकर बोतलमें भर कर काग लगा दो। इसमेंसे एक तोले-भर दवा नित्य खानेसे उरःक्षत या सिलका रोग अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(७) ६।७ माशे मुल्तानी मिट्टी, महीन पीसकर, सवेरे ही, पानी के साथ, कुछ दिन खानेसे उरःक्षत या सिल रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(८) पीपरकी लाख ३ या ६ माशे, महीन पीसकर, शहदमें मिलाकर, खानेसे उरःक्षत रोग नाश हो जाता है। कई बारका परीक्षित नुसख़ा है।

(९) एक माशे लाल फिटकरी, महीन पीस-छानकर, ठण्डे पानीके साथ फाँकनेसे उरःक्षत और मुँहसे खखारके साथ खून आना बन्द हो जाता है। मुँहसे खून आना बन्द करनेकी यह आज़मूदा दवा है।

नोट—अगर खखारके साथ मुँहसे खून आवे, तो हृदयकी गर्मीसे समझो। अगर बिना खखारके अकेला ही मुखसे खून आवे, तो मस्तिष्क या भेजेके विकारसे समझो। अगर खाँसीके साथ खून आवे, तो कलेजेमें विकार समझो।

(१०) अगर उरःक्षत रोगीको खूनकी क़य होती हो और ख़ून आना बन्द न होता हो, तो दो तोले फिटकरीको महीन पीसकर, एक

सेर पानीमें घोल लो और ऊपरसे पानीकी बर्फ भी मिला दो। इस पानीमें एक कपड़ा भिगो-भिगोकर रोगीकी छातीपर रखो। जब पहला कपड़ा सूख जाय, दूसरा भिगोकर रखो। साथ ही बिहीदानेके लुआबमें मिश्री मिलाकर, उसमेंसे थोड़ा-थोड़ा यही लुआब रोगीको पिलाते रहो। जब तक खून आना बन्द न हो, यह क्रिया करते रहो। बदनपर "नारायण तैल" या "माषादि तैल" की मालिश भी कराते रहो। तेलकी मालिशसे सरदी पहुँचनेका खटका न रहेगा। एक काम और भी करते रहो, रोगीके सिरपर "चमेलीका तेल" लगवाकर सिरको गुलाब-जलसे धो दो और सिरपर ख़स या कपड़ेके पंखेकी हवा करते रहो, ताकि रोगी बेहोश न हो। इस उपायसे अनेक बार उरःक्षत वालोंका मुँहसे खून आना बन्द किया है। परीक्षित है।

(११) अगर ऊपरकी दवाका भिगोया कपड़ा छातीपर रखनेसे लाभ न हो—खून बन्द न हो, तो सफेद चन्दन, लालचन्दन, धनिया, ख़स, कमलगट्टेकी गरी, शीतल मिर्च (कबाबचीनी), सेलखड़ी, कपूर, कल्मीशोरा और फिटकरी—इन दसोंको महीन पीसकर, सेर-डेढ़-सेर पानीमें घोल दो और उसीमें कपड़ा भिगो-भिगोकर छातीपर रखो। बीच-बीचमें दूध और मिश्री मिलाकर पिलाते रहो। अगर इस दवासे भी लाभ न हो, तो "इलाजुल गुर्बा" की नीचेकी दवासे काम लो।

(१२) बबूलकी कोंपल १ तोले, अनारकी पत्तियाँ १ तोले, आमले १ तोले और धनिया ६ माशे—इन सबको रातके समय शीतल जल में भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर, इसमें थोड़ी सी मिश्री मिला दो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा पानी दिनमें तीन चार बार पिलानेसे अवश्य मुँहसे खून आना बन्द हो जायगा। परीक्षित है।

(१३) अगर ऊपरकी दवासे भी लाभ न हो तो "गुलख़ैरू" एक

तोले भर, रातके समय, थोड़ेसे पानीमें भिगो दो और सवेरे ही मल-छान कर रोगीको पिला दो। इस नुसख़ेसे अन्तमें ज़रूर फायदा होता है।

(१४) गिलोय एक तोले और अडूसेकी पत्तियाँ १ तोले—इन दोनोंको औटाकर छानलो और फिर सम्मग़ अरबी ८ माशे पीसकर मिला दो और पिलाओ। इस नुसख़ेसे भी खून थूकना बन्द हो जाता है।

(१५) ८० माशे चूकेके बीज, पुराना धनिया ८ माशे, कतीरा ४ माशे, सम्मग़ अरबी ४ माशे, सहॅजना ४ माशे और माजूफल ४ माशे—इनको पीस कूट कर टिकिया बनालो। इनमेंसे आठ माशे खानेसे खून थूकना बन्द हो जाता है।

नोट—अगर रोगीको दस्त भी लगते हो और दस्त बन्द करनेकी जरूरत हो, तो इस नुसखेमें अढ़ाई रत्ती 'शुद्ध अफीम' और मिला देनी चाहिये।

(१६) सम्मग़ अरबी, मुलतानी मिट्टी और कतीरा—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर इसमेंसे सात माशे चूर्ण ख़श-ख़ाश और अदरख़के रसमें मिला कर पीओ। इस उपायसे भी खून थूकना आराम हो जाता है।

(१७) अडूसेकी सूखी पत्ती ६ माशे महीन पीस कर और शहद में मिला कर खानेसे मुँहसे खून थूकना अवश्य आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—अगर अडूसेकी पत्तियाँ गीली हों, तो १ तोले लेनी चाहियें।

(१८) पानीमें पीसी हुई गोभी चार माशे खानेसे खून थूकना आराम होता है। इससे खूनकी कय भी बन्द हो जाती है।

(१९) थोड़ी-थोड़ी अफीम खानेसे भी खून थूकना बन्द हो जाता है।

नोट—तोरईं, कद्दू, पालकका साग, खुरफा, लाल साग, छिले हुए मसूर, कचनार और उसकी कोंपलें—ये सब खून थूकनेको बन्द करते हैं।

(२०) संग-जराहत, ज़हर-मुहरा, सफेद कत्था, कतीरा, सम्मग़ अरबी, निशास्ता, सफेद ख़शख़ाश, ख़तमीके बीज और गेरू—प्रत्येक

चार-चार माशे और अफीम १ माशे—इन दसों दवाओंको कूट-छान कर गोलियाँ बनालो । इन गोलियोसे सिल या उरःक्षत रोग आराम हो जाता है । दो-तीन बार परीक्षा की है ।

नोट—अगर ज्वर तेज हो तो इस नुसखेमें रोगीके मिजाजको देखकर, थोड़ा सा कपूर भी मिलाना चाहिये । कपूरके मिलानेसे ज्वर जल्दी घटता है । अगर रोगीके मरनेका भय हो, तो वासलीककी फस्त खोल देनी चाहिये । फिर उसके बाद ज्वर और खाँसीकी दवा करनी चाहिये । अगर मुँहसे खून आता हो, तो छातीपर दवाके पानीमें भीगे कपडे रखकर या गुलखैरू आदि पिलाकर पहले खून बन्द कर देना चाहिये । जब तक खून बन्द न हो जाय, "ऐलादिवटी" वगैरः कोई मुख्य दवा न देनी चाहिये और खानेको भी दूध मिश्री, दूधका साबूदाना या दूध भातके सिवाय और कुछ न देना चाहिये । ज्योंही खून बन्द हो जाय, जो दवा उचित समझी जाय देनी चाहिये ।

(२१) गेंगटे या केंकड़ेकी राख ४० माशे, निशास्ता ८ माशे, सफेद ख़शख़ाश ८ माशे, काली ख़शख़ाश ८ माशे, साफ़ किये हुए खुरफेके बीज १२ माशे, छिली हुई मुलहटी १२ माशे, छिले हुए ख़तमीके बीज १२ माशे, सम्मग़ अरबी ४ माशे, कतीरा गोंद ४ माशे—इन सब दवाओंको पीस-छान कर "ईसबगोल" के लुआबमें घोटकर, टिकियाँ बना कर छायामें सुखालो । इसकी मात्रा ८ माशेकी है । इस टिकियासे दिक़ और सिल यानी यक्ष्मा और उरःक्षत दोनो नाश हो जाते हैं ।

(२२) अंजुबारकी जड़ चार तोले, मीठे अनारके छिलके २ तोले, हुब्बुल्लास २ तोले और बुरादा सफेद चन्दन १८ माशे—इन सबको रातके समय, एक सेर पानीमें, भिगो दो और मन्दी आगसे पकाओ । जब आधा पानी रह जाय, मल कर छान लो । फिर इसमें आध सेर मिश्री और ताज़ा बबूलकी पत्तियोका स्वरस आधपाव मिला दो और चाशनी पकालो । इस शर्बतको, दिनमें ६ बार, एक-एक तोलेकी मात्रासे, चाटनेसे, खून थूकना या खूनकी कय होना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

लिख आये हैं कि यकृतमें सूजन या मवाद आजानेसे ही जीर्णज्वर यक्ष्मा और उरःक्षत रोग जड़ पकड़ लेते हैं। इन रोगोंमें यकृतमें बहुधा विकार हो ही जाते हैं। वैद्यको चाहिये, कि रोगीके यकृतपर हाथसे टोह कर और रोगीको दाहिनी करवट सुलाकर, इस बातका पता लगाले, कि यकृतमें मवाद या सूजन तो नहीं हैं। अगर मवाद या सूजन होगी, तो रोगीको दाहिनी करवट कल नहीं पड़ेगी, उस ओर सोनेसे खाँसीका ज़ोर होगा और छूनेसे पके फोड़ेपर हाथ लगानेका सा दर्द होगा। जब यह मालूम हो जाय, कि यकृतमें ख़राबी है, तब यह देखना चाहिये कि, सूजन गरमीसे है या सर्दीसे; अगर सूजन गरमीसे होगी, तो यकृत-स्थान छूनेसे गरम मालूम होगा, यकृतमें जलन होगी और वहाँ खुजली चलती होगी। अगर सूजन सरदीसे होगी, तो छूनेसे यकृतकी जगह कड़ी-सख्त और शीतल मालूम होगी।

(२३) अगर सूजन सरदीसे हो, तो दालचीनी १० माशे, सुगन्धबाला १० माशे, बालछड़ १० माशे और केशर ४ माशे, इनको "बाबूनेके तेल" में पीसकर यकृतपर धीरे-धीरे मलो।

(२४) अगर सूजन गरमीसे हो, तो तेजपात ३ माशे, कपूर ३ माशे, रूमी मस्तगी ३ माशे, गेरू ६ माशे, गुलाबके फूल ६ माशे, गुलबनफ़शा ६ माशे, सफेद चन्दन ६ माशे और सूखा धनिया ६ माशे—इन सबको खूब महीन पीसकर, दिनमें चार-पाँच वार, यकृत पर लेप करो।

छहों प्रकारके शोष रोगोंकी चिकित्सा-विधि।

व्यवाय शोषकी चिकित्सा।

ऐसे रोगीका मांसरस, मांस और घी मिले भोजन तथा मधुर और अनुकूल पदार्थोंसे उपचार करना चाहिये।

शोक शोषकी चिकित्सा ।

शोक शोष वालेका हर्ष बढ़ाने वाले और शोक मिटाने वाले पदार्थों से उपचार करो। उसे धीरज बँधाओ, दूध-मिश्री पिलाओ तथा चिकने, मीठे, शीतल, अग्निदीपक और हलके भोजन दो।

व्यायाम शोषकी चिकित्सा ।

व्यायाम शोष वालेको चिकने, शीतल, दाह-रहित, हितकारक, हल्के पदार्थ देने चाहियें। शोक, क्रोध, मैथुन, परनिन्दा, द्वेषबुद्धि आदिको त्याग देने और शान्ति तथा सन्तोष धारण करनेकी सलाह देनी चाहिये। इस रोगीकी शीतल और कफ बढ़ानेवाले बृंहण पदार्थोंसे चिकित्सा करनी चाहिये।

अध्वशोषकी चिकित्सा ।

ऐसे मनुष्यको उत्तम मुलायम आसन, गद्दी या पलँगपर बिठाना चाहिये, दिनमें सुलाना चाहिये, शीतल, मीठे और पुष्टिकारक अन्न और मांसरस खानेको देने चाहियें।

व्रणशोषकी चिकित्सा ।

इस रोगीको चिकने, अग्निको दीपन करनेवाले, मीठे, शीतल, ज़रा-ज़रा खट्टे यूष और मांस-रस आदि खिला-पिलाकर चिकित्सा करनी चाहिये।

उरःक्षतमें पथ्यापथ्य ।

उरःक्षत रोगीके पथ्यापथ्य ठीक व्यायाम शोषकी चिकित्सामें लिखे अनुसार हैं।

यक्ष्मा और उरःक्षत रोगमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

मदिरा—शराब, जङ्गली जानवरोंका सूखा मांस, मूँग, साँठी-चाँवल, गेहूँ, जौ, शालि चाँवल, लाल चाँवल, बकरेका मांस, मक्खन, दूध, घी, कच्चा मांस खानेवाले पक्षियोंका मांस, सूर्यकी तेज़ किरणों और चन्द्रमाकी किरणोंसे तपे हुए और शीतल लेह्य—चाटनेके पदार्थ, बिना पके मांसका चूरा, गरम मसाला, चन्द्रमाकी किरण, मीठे रस, केलेकी पकी गहर, पका हुआ कटहल, पका आम, आमले, खजूर, छुहारे, पुहकरमूल, फालसे, नारियल, सहँजना, ताड़के ताज़ा फल, दाख, सौंफ, सेंधानोन, गाय और भैंसका घी, मिश्री, शिखरन, कपूर, कस्तूरी, सफेद चन्दन, उबटन, सुगन्धित वस्तुओंका लेप, स्नान, उत्तम गहने, जलक्रीड़ा, मनोहर स्थानमें रहना, फूलोंकी माला, कोमल सुगन्धित हवा, नाच, गाना, चन्द्रमाकी शीतल किरणों में विहार, वीणा आदि बाजोंकी आवाज़, हिरणके जैसी आँखों वाली स्त्रियोंको देखना, सोने, मोती और जवाहिरातके गहने पहनना, दान-पुण्य करना और दिल खुश रखना—ये सब क्षय रोगीको हितकारी हैं।

जो रोगी अधिक दोषो वाला पर बलवान हो, उसे हलका जुलाब देकर दवा सेवन करानी चाहिये।

जिस क्षय वालेका मांस सूखा जाता हो, उसे केवल मांस खाने वाले जानवरोंका मांस ज़ीरेके साथ खिलाना चाहिये। शाम-सवेरे हवा खिलानी चाहिये। दवाओंके बने हुए "चन्दनादि तैल" या "लाक्षादि तैल" वगैरःमें से किसी की मालिश करवाकर शीतकालमें गरम जलसे और गरमीमें शीतल जलसे स्नान कराना चाहिये।

गरमीकी ऋतुमें छतपर जाड़ेमें पटे हुए मकानमें और वर्षाकालमें हवादार कमरेमें सोना चाहिये, फूलमाला पहननी चाहिएँ और रूपवती स्त्रियोंसे मन प्रसन्न करना चाहिये; पर मैथुन न करना चाहिये।

अपथ्य

ज़ियादा दस्तावर दवा खाना, मलमूत्र आदि वेग रोकना, मैथुन करना, पसीना निकालना, नित्य सुर्मा लगाना, बहुत जागना, अधिक मिहनत करना, बाजरा, ज्वार, चना, अरहर आदि रूखे अन्न खाना, एक खाना पचे बिना दूसरा खाना खाना, अधिक पान खाना, लहसन, सेम, ककड़ी, उड़द, हींग, लाल मिर्च, खटाई, अचार, पत्तोंका साग, तेलके पदार्थ, रायता, सिरका, बहुत कड़वे पदार्थ, क्षार पदार्थ, स्वभावविरुद्ध भोजन, कुंदरु और दाहकारी पदार्थ—ये सब पदार्थ भी अपथ्य हैं ।
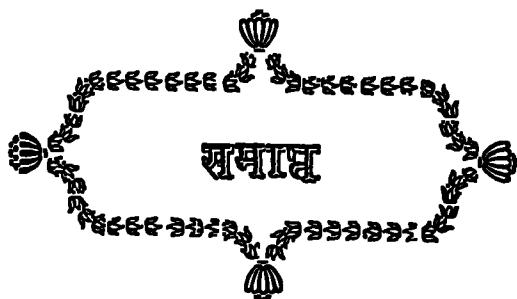
स्वास्थ्यरक्षा और चिकित्सा-चन्द्रोदय आदि ग्रन्थोंके लेखक, वयोवृद्ध बाबू हरिदासजीकी, तीस बरसकी हजारों बार आजमाई हुई, कभी भी फेल न होनेवाली औषधियाँ।

आनन्द वर्द्धक चूर्ण।

(सिर्फ गरमीके मौसममें मिलता है।)

इस चूर्णके सेवनसे तत्कालही जो विचित्र तरी आती है, उसे यह बेचारी जड़ क़लम लिखकर बता नहीं सकती। यह अनेक शीतल, खुशबूदार और दिलदिमाग़में तरी लानेवाली दवाओंसे बनाया गया है। इसको नियमसे पीनेवालेको लूह लगने या हैज़ा होनेका डर तो सुपनेमें भी नहीं रहता। इससे धातुपर तरी पहुंचती है। यह गर्म मिज़ाज यानी पित्त प्रकृतिके लोगोंको दस्त साफ लाता और भाँग पीनेवालोंको उष्ण वात (गरम वायु) की बीमारी नहीं होने देता। औरतोंको इसके पिलानेसे उनका मासिक धर्म्म ठीक महीनेमें होने लगता है। यह खूनकी कमीबेशीको ठीक करता और जिनका मासिक धर्म्म गर्मीसे बन्द होगया है, उनका मासिक धर्म्म खोल देता है। भाँग पीनेवाले इसे भाँगमें मिलाकर पी सकते हैं, क्योंकि इसमें नमकीन चीजें नहीं हैं। रोगी इसे यदि घोटकर पिये, तो बिना परहेज़ रहनेसे भी आँखोंकी जलन, माथेकी घुमरी, चक्कर आना, आँखोंके सामने अँधेरा रहना, हाथपैरके तलवे जलना, दस्त-पेशाब जलकर होना, बदनका बिना बुखार गर्म रहना, नाक या मुँहसे खून जाना वगैरः गर्मी और उष्णवातकी ऊपर लिखी सारी शिकायतें रफ़ा हो जाती हैं। इसके समान शीतल दवा और

कहीं नहीं है। ग़रीब-अमीर सब पी सकें और अपनी गृहलक्ष्मियोंको भी पिला सकें, इस कारण हमने इसका दाम घटाकर केवल १) लागत मात्र कर दिया है।

क्षुधासागर चूर्ण।

यह चूर्ण इतना तेज़ है, कि पेटमें पहुंचतेही अजीर्णकी तो गिन्तीही नहीं, पत्थरको भी भस्म कर देता है। भूख लगाने, खाना हज़म करने, और दस्तको क़ायदेसे लानेमें यह चूर्ण अपना सानी नहीं रखता; औरतें इसे ख़ूब पसन्द करती हैं। इतने गुणकारक स्वादिष्ट चूर्णकी एक शीशीका दाम हमने केवल ॥) रक्खा है। एक शीशीमें ३० खूराक चूर्ण है। घरमें लेजाकर रखनेसे समयपर यह वैद्यका काम देता है।

हिंगाष्टक चूर्ण।

इस चूर्णके खानेसे भोजनपर रुचि होती है, भूख बढ़ती है, खाना हजम होता है और पेट हलका रहता है। भूख बढ़ानेमें तो यह चूर्ण रामबाण ही है। सुस्वादु भी खूब है। दाम १ शीशीका ॥) आना।

क्षारादि चूर्ण।

इसके सेवनसे अजीर्ण तो तत्कालही भस्म हो जाता है। अम्ल-पित्त, खट्टी डकार आना, वमन या कय होना, जी मिचलाना, गलेमें कफ़ सूखकर लिपट जाना, गला और छाती जलना आदि रोग आराम करनेमें यह अक्सीरका काम करता है। कई प्रकारके स्वदेशी क्षारोंसे यह चर्ण बनता है। खानेकी तरकीब डिब्बीपर छपी है। दाम १ शीशीका ॥) आना।

उदरशोधन चूर्ण।

आजकल कलकत्ता-बम्बईमें क़रीब-क़रीब १०० में से ९० आदमि-

योंको दस्त साफ न होनेकी शिकायत बनी रहती है। इसके लिये लोग मारे-मारे फिरते हैं। ज़रासी बातको विदेशी दवा लेकर अपने धन-धर्मको जलाञ्जलि दे बैठते हैं।

यह चूर्ण रातको फाँककर सोजाने से सवेरे एक दस्त ख़ूब साफ हो जाता और भूख खुलती है। दस्त साफ़ रहनेसे कोई और रोग भी नहीं होता। खानेमें दिक्कत नही। परहेजकी ज़रूरत नहीं। दाम १० खुराककी शीशीका ॥) आना मात्र है।

प्रदरान्तक चूर्ण।

अजीर्ण, गर्भपात, अतिमैथुन, अत्यन्त भोजन, दिनमें सोने और सोच करनेसे स्त्रियोंको चार प्रकारका प्रदर रोग होता है। इसमें गुप्त स्थानसे लाल, पीला, काला मांसके धोवनके समान जल बहता है। इसका इलाज न होनेसे औरतोंको बहुमूत्र रोग हो जाता है। फिर वे बेचारी शर्म-ही-शर्ममें अपने प्यारे माँबाप, भाई-बन्धु व पतिको रोता-कपलता छोड़ यमसदनको सिधार जाती हैं। इस वास्ते इस रोगके इलाजमें ढिलाई करना नादानी है। हमारा आज़मूदा प्रदरान्तक चूर्ण, पथ्यसहित, कुछ दिन सेवन करनेसे, चारो प्रकारके प्रदरोंको इस तरह नाश करता है, जैसे सूर्य भगवान् अन्धकारका नाश करते हैं। दाम १ शीशीका २)

सर्वसोज़ाकनाशक चूर्ण।

यह चूर्ण पेशाबके समस्त रोगोंपर रामबाणका काम करता है। इसको विधानपत्रानुसार सेवन करनेसे पेशाबकी जलन, पेशाबका बूँद बूँद होना, पेशाबके साथ खून या पीप आना, धोतीमें पीला-पीला दाग़ लगना, पेडूका भारी रहना, बालकोंका पेशाब चूनासा जम जाना, पेशाब बन्द हो जाना, पेशाब मट-मैला, गदला या तेल सा होना अथवा गर्म होना आदि समस्त पेशाबकी बीमारियाँ इस चूर्णसे निस्सन्देह नाश हो जाती हैं। जिनका सोज़ाक पुराना पड़ गया हो—

कभी-कभी पेशाब बन्द हो जाता हो—मूत्रमार्ग सकड़ा हो जानेसे सलाई फिरानेकी ज़रूरत पड़ती हो, वह घबरावें नहीं और लगातार इस चूर्णको सेवन करें; निस्सन्देह उनकी इच्छा पूरी होगी। इस चूर्णके सेवनसे अधिक प्यासका लगना भी मिट जाता है। पेशाबके रोगियोंको यह चूर्ण दूसरा अमृत है। एक शीशी सेवन करते-करते ही लोग खुद तारीफ़के दरिया बहाने लगते हैं। दाम १ शीशी २॥)

अकबरी चूर्ण।

यह अमृत-समान चूर्ण दिल्लीके बादशाह अकबरके लिये उस जमानेके हकीमोने बनाया था। क़लममें ताक़त नहीं जो इस चूर्णके पूरे गुण लिख सके। यह चूर्ण खानेमें दिल खुश और सुस्वाद है, अग्निको जगाता और भोजनको पचाता है। कैसा ही अधिक खाना खा लीजिये, फिर पेट खालीका खाली हो जायगा। अजीर्ण (बदहज़मी) को पेटमें जाते ही भस्म कर देता है। खट्टी डकारें आना, जी मिचलाना, उल्टी होना, पेट भारी रहना, पेटकी हवा न खुलना, पेट या पेडूका कड़ा रहना, पेटमें गोला सा बना रहना, पाखाना साफ न होना आदि पेटके सारे रोगोके नाश करनेमें रामबाण या विष्णु भगवान्का सुदर्शन चक्र है। दाम छोटी शीशी ॥) बड़ीका ।॥) है।

नवाबी दन्तमञ्जन।

इस मञ्जनको रोज दाँतोमें मलनेसे दाँतोसे खून आना, मसूड़े फूलना, मुँहमें बदबू आना, दाँतोमें दर्द होना या कीड़ा लगना आदि समस्त दन्तरोग आराम हो जाते हैं। हिलते हुए दाँत बज्रके समान मज़बूत होकर मोतीकी लड़ीके समान चमकने लगते हैं। बादशाही जमानेमें नवाब और बादशाह इसे लगाया करते थे, इसीसे इसका नाम नवाबी दन्तमञ्जन है। दाम १ शीशी ॥)

भोजन सुधाकर मसाला।

यह मसाला खानेमें निहायत मज़ेदार है। जो एक बार इसे चख

लेता है, उसे इसकी चाट पड़ जाती है। दाल सागमें ज़रा-सा मिलाने से वह खूब ज़ायकेदार बन जाते हैं। पत्थर या काँचकी कटोरीमें ज़रा देर भिगोकर, ज़रा-सी चीनी मिलाकर, खानेसे सुन्दर चटनी बन जाती है। मुसाफिरी या परदेशमें जहाँ अच्छा साग तरकारी या अचार नहीं मिलता, यह बड़ा ही काम देता है। बालक, बूढ़े, स्त्री-पुरुष सब इसे खूब पसन्द करते हैं। दाम १ डि० ॥) आना।

लवणभास्कर चूर्ण।

यह चूर्ण हमने बहुत अच्छी विधिसे तैयार कराया है। हमने खूब जाँच कर देखा है, कि पेटकी पुरानीसे पुरानी बीमारी इसके १ हफ्ते सेवन करनेसे ही आराम होनेका विश्वास हो जाता है। "शार्ङ्ग-धर संहिता" में इसे संग्रहणी रोगपर अच्छा लिखा है, मगर हमने इससे अपने कल्पित किये अनुपानोंके साथ संग्रहणी, आमवात, मन्दाग्नि, वायुगोला, दस्तक़ब्ज़, तिल्ली और शरीरकी सूजन वग़ैरः आराम किये हैं। विधि-पत्र चूर्णके साथ है। दाम १ डि० १)

नमक सुलेमानी।

यह नमक आजकल बहुत जगह मिलता है; परन्तु लोग ठीक विधिसे नहीं बनाते और एक-एकके दश-दश करते हैं। हम इसे असली तौरपर तैयार कराते हैं और बहुत कम मूल्यपर बेचते हैं। इसके सेवनसे अजीर्ण, बदहज़मी, भूख न लगना, पेट भारी रहना, खट्टी डकारें आना, जी मिचलाना, वमन या क़य होना आदि समस्त शिकायतें रफा हो जाती हैं। चूर्ण खानेमें खूब ज़ायकेदार है। दाम अढ़ाई तोलेका ॥।) है।

बालरोग नाशक चूर्ण।

इस चूर्णके सेवन करनेसे बालकोंका ज्वरातिसार, ज्वर और पतले दस्त, खाँसी, श्वास और वमन—क़य होना—ये सब आराम हो

जाते हैं। इस नुसखेको चढ़े हुए ज्वरमें भी देनेसे कोई हानि नहीं। यह शहदमें मिलाकर चटाया जाता है। बालकको ज्वर या अतिसार अथवा दोनो एक साथ हों तथा खाँसी वग़ैरः भी हों, आप इसे चटावें, फौरन आराम होगा। हर गृहस्थको इसे घरमें रखना चाहिये। दाम १ शीशीका ।≈)

सितोपलादि चूर्ण।

इस चूर्णके सेवनसे जीर्ण ज्वर या पुराना ज्वर निश्चय ही आराम होता है। इससे अनेक रोगी आराम हुए हैं। जो रोगी इससे आराम नहीं हुए, वे फिर शायद ही आराम हुए। जीर्ण ज्वरके सिवा इससे श्वास, खाँसी, हाथ-पैरोंकी जलन, मन्दाग्नि, जीभका सूखना, पसलीका दर्द, अरुचि, मन्दाग्नि, भोजनपर मन न चलना और पित्तविकार प्रभृति रोग भी आराम हो जाते हैं। मतलब यह कि जीर्णज्वर रोगीको ज्वर के सिवा उपरोक्त शिकायतें हों, तो वह भी आराम हो जाती हैं। अगर किसीको पुराना ज्वर हो, तो आप इसे मँगाकर अवश्य खिलावें, ज़रूर लाभ होगा। यह चूर्ण शहद, शर्वत बनफ़शा, शर्वत अनार या मक्खनमें चटाया जाता है। दवा चटाते ही गायके थनोंसे निकला गरमागर्म दूध (आगपर गरम न करके) पिलाना होता है। हाँ, अगर जीर्ण ज्वरीको पतले दस्त भी होते हों, तो यह चूर्ण शहदमें न चटाकर, शर्वत अनारमें चटाते हैं और ऊपरसे दूध नहीं पिलाते। अगर दस्त वहुत होते हों, तो हमारे यहाँसे "अतिसारगजकेशरी चूर्ण" या "विल्वादि चूर्ण" मँगाकर बीच-बीचमें यथाविधि खिलाना चाहिये। साथ ही "लाक्षादि तैल" की मालिश करानी चाहिये; क्योंकि जीर्ण ज्वरीका वदन वहुत ही रूखा हो जाता है। यह तेल रूखेपनको नाश करके ज्वरको नाश करता है। दाम १ शीशीका १) और १॥)

अतिसारगजकेशरी चूर्ण।

इस चूर्णके सेवनसे आँव-खूनके दस्त, पतले दस्त यानी हर तरह

का घोर अतिसार भी बातकी बातमें आराम हो जाता है। आज़मूदा दवा है। हर गृहस्थको एक शीशी पास रखनी चाहिये। दाम १ शीशीका ॥=)

कामदेव चूर्ण।

इस चूर्णके लगातार २ महीने खानेसे धातुक्षीणता और नई नामर्दी आराम होती है। स्त्री-प्रसंगमें अपूर्व आनन्द आता है। जिनकी स्त्री-इच्छा घट गई हो, स्त्री-प्रसंगको मन न चाहता हो, वे इस चूर्णको चुपचाप मन लगाकर २ मास तक खावें। इसके सेवनसे उन्हें संसारका आनन्द फिरसे मिल जायगा। आजकल लोगोंने जो विज्ञापन दे रखे हैं, उनके धोखेमें न फँसिये। वह कोरी धोखेबाज़ी है। जिन्हें एक अक्षर भी वैद्यकका नहीं आता, उन्होंने भोले लोगोको ठगनेके लिये खूब चमकीले भड़कीले विज्ञापन दे दिये हैं और आदमीको शेरसे कुश्ती करता दिखा दिया है। उनसे कहिये कि पहले आप शेरसे लड़कर हमें तमाशा दिखा दें, तब हम आपकी दवाके १०० गुने दाम देंगे। हमें धर्मका भय है, अतः मिथ्या लिखना बुरा समझते हैं। कोई भी धातु-पुष्टिकी दवा बिना ६० दिनके फायदा नहीं कर सकती, क्योंकि आजकी खाई दवाकी धातु ४० दिनमें बनती है। फिर दस पाँच दिनमें धातु-रोग कैसे चला जायगा? आप इस चूर्णको मँगाकर प्रेमसे खाइये, मनोरथ पूरा होगा। दाम १ शीशीका २॥) रु०।

धातुपुष्टिकर चूर्ण।

इस चूर्णके सेवन करनेसे पानी जैसी पतली धातु कपूरके समान सफेद और खूब गाढ़ी हो जायगी। पेशाबके आगे या पीछे धातुका गिरना या सूतसा निकलना बन्द हो जायगा। साथ ही स्त्री-प्रसंगकी खूब इच्छा होगी। अगर आप स्त्री-प्रसंग न करें और १२ महीने इसे खालें तो निस्सन्देह आप सिंहसे दोदो हाथ कर सकेंगे। आपकी उम्र पूरे १०० या १२० सालकी हो जायगी तथा आपका पुत्र सिंहके समान

पराक्रमी होगा। आप इसे मँगाकर, और नहीं तो चार महीने तो सेवन करें। इन चूर्णोंके सेवन करनेमें जाड़ेकी क़ैद नहीं, हर मौसममें ये खाये जा सकते हैं। हम फिर कहते हैं, आप ठगोंके धोखेमें न आकर, इन दोनों चूर्णको सेवन करें। भगवान् कृष्णकी दयासे आप की मनोवाञ्छा पूरी होगी। दाम १ शीशीका २॥) रु०।

हरिबटी।

इन गोलियोंके सेवन करनेसे सब तरहकी संग्रहणी, अतिसार, ज्वरातिसार, रक्तातिसार, निश्चय ही, आराम हो जाते हैं। इन्हें हर गृहस्थ और मुसाफिरको सदा पास रखना चाहिये। समयपर बड़ा काम देती हैं। हज़ारों बार आज़माइश हो चुकी है। दाम १ शीशीका ॥)

नोट—अभी हाल हीमें इन गोलियोंने एक पुराने ज्वर और आमातिसारसे मरणासन्न रोगिणीकी जान बचाई है, जिसे नामी-नामी डाक्टर त्याग चुके थे। इन गोलियोंसे दस्त तो आराम हुए ही, पर किसी भी दवासे न उतरनेवाला, हर समय बना रहनेवाला ज्वर भी साफ जाता रहा। इन्हें केवल ज्वरमें न देना चाहिये। अगर ज्वर और दस्तोंका रोग दोनों साथ हों तब देकर चमत्कार देखना चाहिये।

नपुंसक संजीवन बटी।

क़लममें ताक़त नहीं, जो इन गोलियोंकी तारीफ कर सके। इनके सेवनसे नामर्द भी मर्द हो जाता है तथा प्रसंगमें खूब स्तम्भन होता है। शामको दो या चार गोलियाँ खालेनेसे अपूर्व्व स्वर्गीय आनन्द आता है। बदनमें दूनी ताक़त उसी समय मालूम होती है। स्त्री-प्रसंगमें दूनी तेज़ी और डबल रुकावट होती है। साथ ही प्रमेह, शरीरका दर्द, जकड़न, गठिया, लकवा, बहुमूत्र, खाँसी और श्वासको भी ये गोलियाँ आराम कर देती हैं। जिन लोगोंको प्रमेह, बहुमूत्र, खाँसी और श्वास की शिकायत हो, उन्हें ये गोलियाँ सवेरे-शाम दोनों समय खाकर मिश्री मिला गरम दूध पीना चाहिये। भगवत्‌की दयासे अद्भुत चम-

ार दीखेगा। दाम फी शीशी १) या २) या ४) गरम मिज़ाज वालों
ो ये गोलियाँ कम फायदा करती हैं।

कासगजकेसरी बटी।

ये गोलियाँ तर और खुश्क यानी सूखी और गीली दोनों प्रकारकी
ाँसियोंमें रामबाणका काम करती हैं। एक दिन-रात सेवन करनेसे ही
ायङ्कर खाँसीमें लाभ नज़र आने लगता है। इनके चूसनेसे मुँहके
ाले भी आराम हो जाते हैं। १०० गोलीकी शी० का दाम ॥)

शीतज्वरान्तक गोलियाँ।

ये गोलियाँ बहुत तेज़ हैं। इनके २।३ पारी सेवन करनेसे सब
ारहके शीतपूर्व्वक ज्वर यानी पहिले ठण्ड लग कर आने वाले बुख़ार
ेस्सन्देह उड़ जाते हैं। रोज़-रोज़ आनेवाले, दिनमें दो बार चढ़ने
ातरने वाले, इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि कष्टसाध्य ज्वरोंको
अक्सर हमने इन्हीं "शीतज्वरान्तक गोलियों" से एक ही दो पारीमें
ड़ा दिया है। सिये तापों या जूड़ी ज्वर पर यह गोलियाँ कुनैनसे
ज़ार दरजे अच्छी हैं। दाम ४० गोलीकी शीशीका ।॥)

नेत्रपीड़ा-नाशक गोली।

ये गोलियाँ आँख दुखने पर अक्सीरका काम करती हैं। कैसी
ही आँखें दुखती हों, लाल हो गई हो, कड़क मारती हों, रात-दिन
चैन न आता हो, एक गोली साफ़ चिकने पत्थरपर बासी जलमें
घिसकर आँजनेसे फौरन आराम होता है। बच्चे और स्त्रियोंकी
आँखें अक्सर दुखा करती हैं, इस वास्ते हर गृहस्थको एक शीशी
पास रखनी चाहिये। दाम ६ गोलीकी शीशीका ॥)

असली नारायण तेल।

(वायुरोगोका दुश्मन)

इस जगत्प्रसिद्ध "नारायण तेल" को कौन नहीं जानता?

वैद्यकशास्त्रमें इसकी खूबही तारीफ लिखी है। आज़मानेसे हमने भी इसे अनेक अङ्गरेज़ी दवाओंसे अच्छा पाया है। लेकिन आजकल यह तेल असली कम मिलता है; क्योंकि अव्वल तो इसकी बहुतसी जड़ी.बूटियाँ बड़ी मुश्किल और भारी ख़र्चसे मिलती हैं; दूसरे, इसके तैयार करनेमें भी बड़ी मिहनत करनी पड़ती है, इसी वजहसे कलकतिये कविराज इसे बहुत महँगा बेचते हैं। हमारे यहाँ यह तेल बड़ी सफ़ाई और शास्त्रोक्त विधिसे तैयार किया जाता है। यही कारण है कि, अनेक देशी वैद्य लोग इसे हमारे यहाँसे लेजाकर अपने रोगियोंको देते और धन तथा यश कमाते हैं। यह तेल हमारा अनेक बारका आज़माया है। हज़ारो रोगी इससे आराम हुए है।

हम विश्वास दिलाते हैं कि, इसकी लगातार मालिश करानेसे शरीरका दर्द, कमरका दर्द, पैरोंमें फूटनी होना, शरीरका दुबलापन या रूखापन, शरीरकी सूजन, अर्द्धाङ्ग वायु, लकवा मारजाना, शरीर का हिलना, काँपना, मुखका खुला रह जाना या बन्द हो जाना, शरीर डण्डेके समान तिरछा हो जाना, अंगका सूनापन, झनझनाहट, चूतड़से टखने तकका दर्द आदि समस्त वायुरोग निस्सन्देह आराम हो जाते हैं। यह तेल भीतरी नसोंको सुधारता, सुकड़ी नसोंको फैलाता और हड्डी तकको नर्म कर देता है; तब बादी या वायुके नाश करनेमें क्या सन्देह है? गठिया और शरीरका दर्द आदि आराम करनेमें तो इसे नारायणका सुदर्शन चक्रही समझिये। दाम आधापावकी १ शीशीका १॥) मात्र है।

मस्तकशूलनाशक तेल।

(सिरदर्द नाशक अद्भुत तेल)

इस तैलको स्नान करनेसे पहिले रोज, सिरमें लगानेसे सिरके सारे रोग नाश हो जाते हैं। इसकी तरीकी तारीफ नहीं हो सकती। यह तेल बालोको काले, रसीले और चिकने रखता है। आँख नाकसे

मैला पानी निकालकर मगज़ और आँखोंको ठण्डा कर देता है। पढ़ने-लिखनेमें चित्त लगाता और माथेकी थकानको दूर कर देता है। गरमी, सरदी, ज़ुकाम या बादीसे कैसा ही घोर सिरदर्द हो, लगाते ही ५ मिनटोंमें छूमन्तर हो जाता है। सिर दर्दकी इसके समान जल्दी आराम करने वाली दवा और नहीं है। आप कामसे छुट्टी पाकर इसे लगाकर शीतल पानीसे सिर धो लीजिये। फिर देखिये, कि यह स्वदेशी पवित्र तैल कैसा स्वर्गका आनन्द दिखाता है। वकील, माष्टर, मुनीम, विद्यार्थी, दलाल, दूकानदार सबको इस अद्भुत तैल को ख़रीद कर परीक्षा करनी चाहिये। सुन्दर सुडौल २ औन्सकी शीशीका दाम भी हमने केवल ।|।) ही रक्खा है। बङ्ग देशमें इसका खूब प्रचार है। कोई गृहस्थ इससे ख़ाली न रहना चाहिये।

कृष्णविजय तैल।

(चर्मरोगका शत्रु)

अगर आपको या आपके मित्र पड़ोसियोंको खून-फ़िसादका रोग है, अगर बदनमें लाल २ या काले २ चकत्ते हो जाते हैं, अगर दाद, खाज, खुजली, फोड़े, फुन्सियोंसे शरीर ख़राब हो रहा है या शरीरमें घाव हैं, तो आप हमारा मशहूर "कृष्णविजय तेल" क्यों नहीं लगाते?

हमारे तीस बरसके परीक्षित कृष्णविजय तेलसे सूखी गीली खाज, खुजली, फोड़े फुन्सी या गर्मीकी सूजन, अपरस, सेंहुआ, सफेद दाग़ भभूत आदि चमड़ेके ऊपर होनेवाले समस्त रोग जादूकी तरह आराम होते हैं। जिनका बिगड़ा खून अँगरेज़ी सालसेकी शीशियों-पर-शीशियाँ पीनेसे न आराम हुआ हो, जिनके शरीरके घाव अँगरेज़ी नामी दवा "कारबोलिक आयल" या "आयडोफर्म"से न आराम हुए हों, वे एक बार इस नामी "कृष्णविजय तेल"की परीक्षा ज़रूर करें। यह तेल कभी निष्फल नहीं होता। गये ३० बरसमें इसने लाखों रोगियोंको सड़नेसे बचाया है। जिसके नाखून गलकर गिर गये हों,

यदि वह शख़्स भी इस अमृत-समान "कृष्णविजय तेल"को कुछ दिन बराबर लगाता जावे, तो निस्सन्देह उसके फिर नये नाख़ून निकल आवेंगे। यदि यह "कृष्णविजय तेल" किसी अँगरेज़ी दवाख़ानेमें होता तो अच्छे लेबल, चमकदार शीशी और दवाख़ानेके अनाप-शनाप ख़र्चके कारण २) रुपये शीशीसे कममें न बिकता। परन्तु हमने स्वदेशी दवाका प्रचार करने और ग़रीब-अमीर सबको फायदा पहुँचानेकी ग़रज़से इसकी दश तोलेकी शीशीका दाम सिर्फ़ लागत मात्र १) रक्खा है।

कर्णरोगान्तक तैल।

इस तेलको कानमें डालनेसे कान बहना, कानमें दर्द होना, सनसनाहट होना आदि कानके सारे रोग अवश्य आराम हो जाते हैं। ४।६ महीने का बहारापन भी जाता रहता है। दाम १ शीशीका १) एक रुपया।

तिला नामर्दी।

यह तिला नामर्दके लिये दूसरा अमृत है। इसके लगातार ४० दिन लगानेसे हर प्रकारकी नामर्दी आराम हो जाती है। नसोंमें नीलापन, टेढापन, सुस्ती और पतलापन आदि दोष, जो लड़कपनकी बुरी आदतोंसे पैदा हो जाते हैं, अवश्य ठीक हो जाते हैं। इस तिलेके लगानेसे छाले आबले भी नहीं पड़ते और न जलन ही होती है। चीज़ अमीरोंके लायक़ है। बाज़ारू तिलोंके लिये ठगाना बेवक़ूफ़ी है। यह आज़माई हुई चीज़ है; जिसे दिया वही आराम हुआ। धातु-दोष तिलेसे आराम न होगा। अगर धातु कमज़ोर हो तो हमारी "नपुंसक संजीवन वटी" या "धातु पुष्टिकर चूर्ण" या 'कामदेव चूर्ण' भी सेवन करना उचित है। दाम १ शीशी तिलेका ५)

विषगर्भ तैल।

यह तेल अत्यन्त गर्म है। शीतप्रधान वायु रोगोंमें इससे बहुत

उपकार होता है। सन्निपात या हैज़ेमें जब शरीर शीतल और नाड़ी गति-हीन हो जाती है, तब इस तेलमें एक और तेल मिलाकर मालिश करनेसे शरीर गर्म हो जाता और नाड़ी चलने लगती है। गृहस्थ और वैद्य लोगोंको इसे अवश्य पास रखना चाहिये। दाम आध पावका २)

चन्दनादि तैल।

यह तैल तासीरमें शीतल है। इसकी मालिश करनेसे सिरकी गर्मी, हाथ-पैरों और आँखोंकी जलन आदि निश्चय ही आराम हो जाती हैं। बदनमें तरी व ताक़त आती है। धातुक्षीण वाले यदि इसे, खानेकी दवाके साथ, शरीरमें मालिश कराकर स्नान किया करें तो अठगुणा फ़ायदा हो। दाम आध पावका २)

कामिनीरञ्जन तैल।

इस तैलका नाम "कामिनीरञ्जन तैल" इस वास्ते रक्खा गया है, कि यह तेल दिल्लीके बादशाह जहाँगीरका मन चुराने वाली अलौकिक सुन्दरी—नूरजहाँ बेगमको बहुत ही प्यारा था।

चार वर्ष तक इसके गुणोंकी परीक्षा करके हमने इस अपूर्व तेल को प्रकाशित किया है। कामिनी रञ्जन तेल मस्तिष्क (Brain) शीतल करने वाली औषधियोंके योगसे तैयार होता है। इसकी मीठी सुगन्ध से दिमाग़ मवत्तर हो जाता है। इसकी हलकी खुशबू चटपट नहीं उड़ जाती, बल्कि कई दिनों तक ठहरती है। सदा इस तेलके व्यवहार करनेसे बाल भौंरेके समान काले और चिकने बने रहते हैं; असमयमें ही नहीं पकते। औरतोंके बाल कमर तक फर्राने लगते हैं और उनकी असली सुन्दरताको दूना करते हैं। बालोंको बढ़ाने, चिकना और काला करनेके सिवा, इस तेलके लगातार लगानेसे शिरकी कमज़ोरी, आँखोंके सामने अँधेरा आना, चक्कर आना, माथा घूमना, सिर-दर्द, आँखोंकी कमज़ोरी, बातोंका याद न रहना आदि

दिमाग़ सम्बन्धी समस्त सिरके रोग आराम हो जाते हैं। इस तेलकी जिस क़द्र तारीफ़ की जाय थोड़ी है। लेकिन हम स्थानाभावसे इसकी प्रशंसा यहीं ख़तम करते है। इस तेलको राजा-महाराजा सेठ-साहूकारोके सिवा औसत दरजेके सज्जन भी व्यवहार कर सकें, इस-लिये इसकी क़ीमत फी शीशी ।।।) रखी है।

महासुगन्ध तैल ।

इस तेलका लगाने वाला कैसा ही बेढंगा मोटा क्यों न हो, धीरे-धीरे सुन्दर और सुडौल हो जाता है। इसके सिवाय इसके लगाने वालेका रूप खिल उठता है तथा शरीर सुन्दर और खूबसूरत हो जाता है। इसके लगानेसे धातु बढ़ती है तथा खाज, खुजली प्रभृति चमड़ेके रोग नाश हो जाते हैं। यह तेल अमीरो और राजा-महाराजाओंको सदा लगाना चाहिये। इसके समान धातुको पुष्ट करने वाला, ताक़त को बढ़ाने वाला, शरीरको सुडौल और खूबसूरत बनाने वाला और तेल नहीं है। जिन की मुटाई कम करनी हो, वे अगर हमारा "खून-सफ़ा अर्क़" भी शहद मिलाकर पीवे, तो और भी जल्दी मुटाई कम होगी। दाम १ शीशीका २॥)

माषादि तैल।

यह तैल निहायत गरम है। इसके लगानेसे गठिया, बदनका दर्द जकड़न, लकवा, पक्षाघात प्रभृति शीतवायुके रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं। जिनके रोगमें शीत या सरदी अधिक हो, वे इसे ही लगावें। दाम १ शीशीका २)

दादनाशक अर्क़ ।

इस अर्क़के रूईके फाहे द्वारा लगानेसे दाद साफ उड़ जाते हैं। खूबी यह कि, यह अर्क़ न लगता है और न जलता है। सबसे बड़ी बात यह है, कि आप बढ़िया-से-बढ़िया कपड़े पहने हुए इसे लगावें,

कपड़े खराब न होंगे। आज तक ऐसी चीज़ कहीं नहीं निकली। अगर आपके दाद हों तो इस अर्कको मँगाइये और लगाकर दादोंसे निजात पाइये। दाम १ शीशीका ॥) आना।

स्तम्भन बटी।

यथा नाम तथा गुण है। सन्ध्या-समय १ या २ गोली खाकर ऊपर से दूध-मिश्री पी लीजिये। फिर देखिये कितना आनन्द आता है। इस की अधिक तारीफ यहाँ लिख नहीं सकते। अगर आप कामिनीके प्यारे बनना चाहते हैं, तो १ शीशी पास रखिये और आनन्द लूटिये। दाम १ शीशीका ॥)

लिंग स्थूलकारक बटी।

अगर पोतोंकी सूजन, नसोंकी कमज़ोरी या धातुकी कमीसे लिंगेन्द्रिय दुबली हो—ठीक मोटी न हो, तो इस गोलीके १ मास या २ मास लगाते रहनेसे लिंगेन्द्रिय अवश्य मोटी हो जाती है। अनेक आदमियोंको लाभ हुआ है। दाम १ शीशीका २)

अर्क़ खून सफ़ा।

इस अर्क़की जितनी तारीफ करें थोड़ी समझिये। आज १८ वर्षसे हम इस अर्क़की परीक्षा कर रहे हैं। इस अर्क़के सेवनसे १०० में १०० रोगियोंको फायदा हुआ है। अधिक क्या कहें, जिनके शरीरमें खून ख़राब होने या पारेके दोषसे चलनीके-से छेद हो गये थे, जिनके शरीर में अनगिन्ती काले-काले दाग़ और चकत्ते हो गये थे, जिनके पास बैठनेसे लोग नाक-भौं सकोड़ते थे, जिनको कितनी ही शीशियाँ सालसे की पिलाकर डाकूरोंने असाध्य कहकर त्याग दिया था, इस सालसे अर्थात् "अर्क़ खून सफ़ा" के लगातार नियम-पूर्वक पीनेसे वही रोगी बिलकुल चंगे हो गये।

अधिक प्रशंसा करनेसे लोग बनावटी समझेंगे, मगर इस अमृत-समान अर्क़के पूरे गुण लिखे बिना भी रह नहीं सकते। इसके पीने

से १८ प्रकारके कोढ़, सफेद दाग़, बनरफ या भभूत, सुन्नबहरी, आत-शक या गर्मी रोग, पारेके दोष, हाथीपाँव, अर्धाङ्गवायु, लकवा, शरीर की बेढङ्गी मुटाई, खाज खुजली, दाफड़ या चकत्ते आदि सारे चर्मरोग निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। लेकिन ध्यान रखिये, कि नया खून और नयी धातु पैदा करना छोकरोंका खेल नहीं है। जन्म-भरका कोढ़ एक आदित्य वारमें आराम नहीं हो जाता। खून साफ करने वाली और धातु पुष्ट करनेवाली दवाएँ लगातार कुछ दिन सेवन करनेसे ही फायदा होता है। इन दोनो रोगोंमें जल्दबाजी करनेसे कार्य सिद्धि नही होती। साधारण रोगमें ४ बोतल और पुराने या असाध्य रोगमें १ दर्जन बोतल पीना चाहिये। अगर इस अर्क के साथ हमारा "कृष्णविजय" तेल भी मालिश कराया जाय, तब तो सोनेमें सुगन्ध ही हो जाय। यह अर्क रेलवे द्वारा मँगाना ठीक है। दाम एक बड़ी बोतलका २)

नोट—यह अर्क कमसे-कम तीन बोतल मँगाना चाहिये। अव्वल तो बिना तीन बोतल पिये साफ तौरसे फायदा नजर नहीं आता; दूसरे, एक और तीन बोतल का रेलभाड़ा एक ही लगता है। मंगानेवालेको कम-से-कम आधे दाम पहले भेजने चाहिये और अपने नजदीकी रेलवे स्टेशनका नाम लिखना चाहिये।

गरमी रोगकी मलहम।

इस मलहमके लगानेसे गर्मीके घाव, टाँचियाँ, जलन और दर्द फौरन आराम होते हैं। मलहम लगाते ही ठण्डक पड़ जाती है। अगर इन्द्रीपर सूजन हो, मुख न खुलता हो तो मलहम लगाकर ऊपर से हमारे "कृष्णविजय तेल" की तराई करने से सूजन और घाव सब आराम हो जाते हैं। साथ ही "अर्क खून सफा" भी पीना ज़रूरी है। दाम १ शीशीका ॥)

गर्मीका बुर्का।

यह सूखा बुरका है। इसके घावोंपर बुरकनेसे घाव-जल्दी

सूख कर आराम हो जाते हैं। इसमें अङ्गरेजी पीली बुकनी की तरह बदबू नहीं आती। दाम ॥) डि०

दादकी मलहम।

यह मलहम दादके लिये बहुत ही अच्छी है। ५।६ बार धीरे-धीरे मलनेसे दाद साफ़ हो जाते हैं। लगती बिल्कुल ही नही। लगाने में भी कुछ दिक्कत नहीं। दाम ।=) शीशी

कर्पूरादि मलहम।

यह मलहम खुजली पर, जिसमें मोतीके समान फुन्सियाँ हो जाती हैं, अमृत है। आज़माकर अनेक बार देख चुके हैं, कि इसके लगानेसे गीली खुजली, जले हुए घाव, छाले, कटे हुए घाव, मच्छर आदि ज़हरीले कीड़ों के दाफड़, फोड़े फुन्सी तथा औरतोंके गुप्त स्थानकी खुजली और फुन्सियाँ निश्चय ही आराम हो जाती हैं। क़लममें ताक़त नहीं है, जो इसके पूरे गुण वर्णन कर सके। दाम १ शीशीका ।=) हर गृहस्थको पास रखनी चाहिये।

शिरशूल नाशक लेप।

इसको ज़रासे जलमें पीसकर मस्तक पर लेप करनेसे मनभावन सुगन्ध निकलती है और गरमीका सिर-दर्द फ़ौरन आराम हो जाता है। गरमीके बुख़ार और गर्मीसे पैदा हुए सिर दर्दमें तो यह रामवाण ही है। दाम १ डि० ॥)

असली बङ्गेश्वर।

असली बङ्गसे मनुष्यका बल बढ़ता है, खाना पचता है, भूख खुलती है, भोजन पर रुचि होती है और चेहरे पर कान्ति और तेज छा जाता है। यह भस्म तासीरमें शीतल है। मनुष्यके शरीरको आरोग्य रखती है, धातुको गाढ़ा करती, जल्दी बूढ़ा नहीं होने देती

और क्षय रोगको नाश करती है। अनुपान और विधि-सहित हमारा बंगेश्वर सेवन करनेसे २० प्रकारके प्रमेह नाश होते हैं और इसके सेवन करने वालोंका वीर्य सुपनेमें भी नहीं गिर सकता। ज़ियादा क्या लिखें, स्त्री वश करने वाली और कामिनियोंका घमण्ड नाश करनेवाली इसके समान दूसरी चीज़ नहीं है। इसे बेखटके सेवन कीजिये। यह हमने स्वयं सेवन किया है और अनेक धनी-मानी लोगोंको खिलाया है। इसीलिये इतने ज़ोरसे लिखा है। दाम २), ४) और ८) रुपया तोला।

शिरशूलान्तक चूर्ण।

बहुत लिखना व्यर्थ है, आपने आजतक सिरका दर्द नाश करने वाली ऐसी जादूके समान चमत्कारी दवा देखी न होगी। आपके सिरमें दर्द हो, आप एक पुड़िया फाँक कर घड़ी देखलें, ठीक पन्द्रह मिनटमें आपका सिर-दर्द काफूर हो जायगा। आप ८ मात्राकी एक शीशी अवश्य पास रखिये, न जाने किस समय सिरमें दर्द उठ खड़ा हो। इस दवामें एक और भी गुण है वह यह कि आपके बदन में दर्द हो या हलका सा ज्वर हो, आप एक मात्रा खाकर सोजावें फौरन पसीने आकर शरीर हलका हो जावेगा। दाम ८ मात्राकी शीशीका १) और चार मात्राका ॥)